प्रधान सम्पादक

डॉ धर्मचन्द्र

सम्पादक मण्डल

डॉ किरणचन्द नाहटा

डॉ चन्द्रा छलाणी

योगेन्द्रकुमार रावल

मनोहरलाल भादाणी

श्री भैरूदान छलाणी स्मृति-ग्रथ समिति
दियातरा (श्री कोलायत बीकानेर)

अध्यक्ष
डॉ धर्मचन्द्र

सचिव
श्री मनोहरलाल भादाणी

सदस्य
श्री भवरलाल छलाणी
श्री सोहनलाल मोदी
श्री रतनलाल चौपडा
डॉ चन्द्रा फूसराज छलाणी
श्रीमती नयनतारा धनराज छलाणी
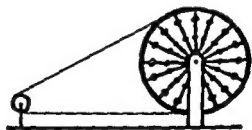
मगरे का गांधी

श्री भैरूदान छलाणी स्मृति-ग्रथ

प्रकाशक
भैरूदान छलाणी स्मृति ट्रस्ट
दियातरा (राजस्थान)

प्रथम सस्करण वि स 2057
ई सन् 2000

आवरण अडिग

मुद्रक
साखला प्रिण्टर्स सुगन निवास
चन्दनसागर बीकानेर

मगरे का गाधी
श्री भैरूदान छलाणी स्मृति-ग्रथ

अन्नपूणा मातुश्री श्रीमती जेठी देवी

को समर्पित

भवरलाल—रतनी देवी छलाणी

फूसराज—डॉ चन्द्रा छलाणी

मीना—रतनलाल चोपड़ा

पुष्पा—कमलचन्द पुगलिया

ललित—ज्योतिबाला छलाणी

जयदीप—दिव्या छलाणी

गुञ्जन—सोनम छलाणी

प्रकाशकीय

पूज्य श्री भैरूदानजी छलाणी जिनसे परिवार को, अचल के समाज को और रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं को पितृवत् वात्सल्य, सर्वोदय का पाठ और उनके जीवन में राम, गीता और गाधी का व्यवहार रूप दर्शन मिला, उन बापूजी का श्रद्धा स्मरण 'मगरे का गाधी' स्मृति ग्रथ, अन्नपूर्ण मातुश्री श्रीमती जेठी देवी को समर्पित है।

मूल्य निष्ठा ओर निष्काम सेवाकर्म की प्रेरणा ओर सम्बल प्राप्ति ही इस ग्रथ का प्रयोजन है।

ग्रथ समिति के अध्यक्ष और प्रधान सम्पादक डॉ धर्मचन्द्रजी के सकल्प निष्ठा और श्रम का प्रतिफल यह कृति है। डॉ धर्मचन्द्रजी के बापूजी के साथ तीन दशक से आत्मीय सम्बन्ध रहे हैं, उन्होंने पिताजी को निकट से देखा जाना और समझा है। उनके द्वारा सम्पादन से ही यह ग्रथ इस रूप मे सभव हो सका है अन्य के लिये शायद यह दुष्कर होता। अत ग्रथ म दिया गया वृत्त, विवरण टिप्पणी और सपादित सामग्री निरपेक्ष यथार्थ और प्रामाणिक है।

गीता, रामचरित और गाधी के मर्म को जीवन के कर्म और यथार्थ धर्म के रूप म घटित करने वाले प्रयोक्ता की जीवनी को स्मृति ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत करने का विचार उनके 19 दिसम्बर, 1995 को निधन के पश्चात किया जाता रहा और अतत जून 1998 मे इस हेतु स्वर्गीय श्री भैरूदानजी छलाणी स्मृति ग्रथ समिति का गठन किया गया। ग्रथ सम्पादन का दायित्व सम्पादक मण्डल को दिया गया। जिसमें समिति के तीन सदस्यो डॉ धर्मचन्द्र डॉ चन्द्रा छलाणी एव श्री मनोहरलाल भादाणी के अतिरिक्त हिन्दी एव राजस्थानी के विद्वान प्राध्यापक डॉ किरणचन्द नाहटा और गाधी शोध प्रतिष्ठान के निदेशक श्री योगेन्द्रकुमार रावल ने सम्पादक मण्डल में सम्मिलित होना स्वीकार किया।

अपने को सदेव सामान्य बनाये रखने के असामान्य साधक के जीवन और व्यक्तित्व और कर्तृत्व को इस ग्रथ म प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस ग्रथ की सामग्री का स्रोत पूज्य पिताजी के प्रम परिवार के सदस्यो के सस्मरण स्मृति अनुभूत प्रसग तथा उनकी कुछ उपलब्ध डायरिया एव पत्र ही हैं। स्वतत्रता सेनानी सार्वजनिक व रचनात्मक क्षेत्र के कार्यकर्त्ता मित्र सम्बन्धी के अतिरिक्त पिताजी के ससर्ग में रहे सामान्य से सामान्य व्यक्तियो ने अपने विचार और सस्मरणो के द्वारा अपनी श्रद्धा और भावनाओ को व्यक्त किया है। उन सबके आलेखों के आधार पर बापूजी के जीवन और दर्शन का सही और सुन्दर चित्र मगरे का गाधी' प्रकट हो सका है। उन सबके प्रति हृदय से आभारी हैं।

मगरे का गाधी प्रकाशित कर आपके हार्थो मे देते हुए कृतकृत्य अनुभव कर रहे हैं। स्व श्री भैरूदानजी छलाणी स्मृति ग्रथ समिति ओर मगरे का गाधी के सम्पादक मडल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनके दो वर्ष के अथक परिश्रम से यह ग्रथ तैयार हुआ है।

श्री मनोहरलाल भादाणी को ग्रन्थ समिति एव सम्पादन में सहयोग की अनुमति देने हेतु श्री इन्दुभूषण गोइल एव खादी मन्दिर के प्रति आभारी है।

आवरण पृष्ठ के कलाकार श्री अडिग तथा साखला प्रिंटर्स और श्री दीपचन्द साखला धन्यवाद के पात्र हैं।

भवरलाल छलाणी
फुसराज छलाणी
भैरूदान छलाणी स्मृति ट्रस्ट

सम्पादकीय

'मगरे का गाधी' श्री भैरूदानजी छलाणी का स्मृति ग्रन्थ है। दियातरा निवासी स्वर्गीय सेठ श्री भैरूदानजी छलाणी का जीवन दर्शन जीवन कर्म ओर जीवन शैली यथार्थ मे गाधी विचार की साधना के प्रयोग का प्रत्यक्ष उदाहरण है। जीवन के चार पुरुषार्थो की सिद्धि उसका ध्येय है। व्यक्ति रूप में उनके जीवन की सारी दिशा व्यापक सामूहिक हित साधना की रही है। उन्होने मात्र जीव की ही नही जीवन की मुक्ति को साध्य बनाया। अपने स्व को सर्व मे समाहित करने का उपक्रम किया। सत्य सयम त्याग और सेवा के द्वारा मगरा क्षेत्र मे ग्राम जीवन के समग्र विकास को आत्म विकास का साधन बनाया। दियातरा को केन्द्र बनाकर अपने जीवन और कार्य क द्वारा गाधी का जीवन्त स्वरूप प्रस्तुत किया। 'मगरे का गाधी उनके जीवन मूल्यों व्यक्तित्व ओर कर्तृत्व की सार्थक अभिव्यक्ति है।

श्री छलाणीजी एक सफल समर्थ वणिक व्यवसायी थे परन्तु स्वेच्छापूर्वक ग्राम एव कृषक का श्रम एव सेवानिष्ठ जीवन जीना श्रेयस्कर समझा। वे भूमिपुत्र थे जिन्होने गाव और अन्चल को आत्मा का ही विस्तार और स्वय को उसका अश माना। कृषि, गोसेवा खादी समाज सुधार, शिक्षा प्रसार, पचायत समग्र विकास के शोध प्रयोग, परोपकार एव सेवा के द्वारा व्यक्ति स्तर पर किये गये कार्यो का हेतु ग्राम जीवन की भौतिक एव नैतिक समृद्धि रहा। इस माध्यम से सामूहिक ग्राम्य जीवन म सरसता और आनन्द का सृजन किया। सुख को बाट बाट कर बहुगुणित किया।

आजीवन रचनात्मक सेवाकार्य मे लगे रहे परन्तु पद प्रतिष्ठा प्रसिद्धि और प्रचार से सर्वथा दूर रहे। उनका जीवन सामान्यता की असामान्य साधना हे। अपनी असाधारणता को सामान्यता के अवगुठन मे सजोकर रखा। अपनी महानता को सादगी, विनम्रता और निरभिमानता से सजाया। कहीं अह और स्पृहा का भाव उत्पन्न नहीं हुआ। सारे कार्यो में आत्म गोपन प्रकट हुआ।

अपने श्रम, कौशल, व्यावसायिक प्रवीणता और व्यावहारिक प्रामाणिकता के द्वारा उपार्जित सम्पदा का मान स्वय और अपने परिवार की ही सम्पत्ति नहीं मानकर वास्तव में धन के स्वेच्छया न्यासी के रूप म सर्वहिताय उपयोग किया।

श्री छलाणीजी का जीवन वास्तविक अर्थो मे समृद्धि के साथ सत्य, सादगी, सयम और सेवा की साधना मे सलग्न गाधीवादी, कर्मनिष्ठ, गृहस्थ सन्यासी का जीवन है।

श्री भैरूदानजी की जीवनी के सम्बन्ध म सामग्री एकत्रित करने में सम्पादक मडल के समक्ष प्रारभ में ही कठिनाई की स्थिति आई। उसका कारण भी श्री छलाणीजी की चारित्रिक विशेषतायें ही थी—असामान्य रूप से सामान्य बने रहने का स्वभाव ओर बिना किसी प्रचार व ढिढोरे के मूक सेवाकार्य करते रहने की प्रवृत्ति। वे कर्मनिष्ठ थे। आजीवन सेवाकार्य में लगे रहे, परन्तु फोटो खिचवाये नही अखबारों

म छप नहीं मचों पर आय नहीं। इस कारण म उनके सम्बन्ध में लिखित विवरण उपलब्ध नहीं था। उनकी कुछ डायरिया (मात्र 18) और थोड़े से पत्र भी काफी प्रयास के बाद विलम्ब से प्राप्त किये जा सके। उनमें भी अपने परहित और सेवा के कार्यों का अत्यल्प उल्लेख किया है। सस्थाओं की बैठकों, छोटे बड़े लोगों से मिलन का घटना रूप म उल्लेख मिलता है। कोई विचार प्रतिक्रिया स्वय क गुण अथवा पर दोष का लेशमात्र भी उल्लेख नहीं मिलता है। कृषि कर्म को जीवन धर्म के रूप में अगीकार किया था अत उसका उल्लेख प्राय हर रोज किया है। अत उनके जीवन कार्य का लिखित विवरण और सामग्री जो उपलब्ध हो सकी, वह न के बराबर थी।

उनमें सम्पर्क सवाद और सम्बन्ध बनाने की अद्वितीय वृत्ति थी। स्नेह और सम्मान के साथ अतिथि सत्कार के लिये दिल और द्वार खुला रखना सहज स्वभाव था। उनके सम्पर्क म आने वाला और एक बार भी आतिथ्य पाने वाला उनकी वत्सलता गुण ग्राहकता और निश्छलता से अभिभूत हुए बिना नहीं रहा। उनके प्रेम परिवार का सदा के लिये अग बन गया। उन्होंने अपने धन साधन और जीवन का उपयोग अचल के वासियों के दुख दर्द और जरूरत में काम आने में किया। परिणामत अचल के समाज में उनकी प्रसिद्धि मगरा के भामाशाह सेठ के रूप में रही। कृषि के क्षेत्र म नये नये प्रयोगों के कारण कृषि पण्डित के रूप में प्रतिष्ठा रही।

आजीवन रचनात्मक सेवाकार्यों म लगे रहे। इस क्षेत्र मे गाधीवादी आदर्शों से अनुप्राणित समाज सेवक के रूप में उनका परिचय और प्रतिष्ठा व्यापक थे।

उनके सम्पर्क और सान्निध्य में जो जितना आया उसने उतना ही अधिक उनकी महानता आत्मीयता एव ऋजुता का अनुभव किया। उन्होंने कभी अपना विज्ञापन नहीं किया। अपने आपको दर्शाया नहीं कोई छवि उभारी नहीं। लोगों ने उनको जैसा देखा उनके विचार, वाणी और व्यवहार से समझा जो प्रभाव पड़ा उसी से श्री छलाणीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की जानकारी प्राप्त करना सही चित्र बनाना सभव लगा। उनकी स्मृति सस्मरण और घटना प्रसगों की सौरभ आज भी जन मन म व्याप्त है। यही स्मृति ग्रथ का सामग्री स्रोत है।

श्री भैरूदानजी के बड़े पुत्र श्री भवरलालजी ने उनके जीवन एव कार्य का बिन्दु रूप में सक्षिप्त विवरण 1996 97 म तैयार किया था एव पत्रक रूप में श्री छलाणीजी के परिचय म आये सार्वजनिक राजनैतिक सर्वोदय, खादी सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं सरकारी अधिकारियों शिक्षकों पचायत प्रधानों पच सरपचों, मित्रों समधियों सम्बन्धियों को भेज कर श्री छलाणीजी के जीवन की जानकारी एव सस्मरण भेजने का निवेदन किया था। उसका प्रतिसाद अपेक्षित रूप में प्राप्त नहीं हुआ। अत 1998 में स्मृति ग्रथ समिति ने पुन पत्रक भेजकर छलाणीजी के जीवन कार्य के सम्बन्ध में लेख सस्मरण तथा गाधीवादी चिन्तन ग्रामो के समग्र विकास और आर्थिक स्वावलम्बन के विषयों पर ग्रन्थ के विचार खण्ड के लिये आलेख भेजने का अनुरोध किया। इस प्रयास से कुछ सामग्री प्राप्त हुई परन्तु वह इतनी अपर्याप्त थी कि उससे श्री छलाणीजी की जीवनी और दीर्घ जीवन के कार्य का

आधा अधूरा चित्र भी नहीं उभर सकता था। ऐसा लगा कि जीवन व कार्य से अधिक विचार खण्ड के मौलिक या सकलित लेखो से ग्रन्थ की औपचारिक्ता पूरी करनी पड़ेगी। परन्तु ऐसे ग्रन्थ से गाधीनिष्ठ समाज रचना के श्री छलाणीजी के जीवन कार्य और प्रयोगो में रुचि रखने वाली पीढ़ी को उसकी मूल्यवत्ता आकने ओर नइ पीढ़ी ओर समाज को नई प्रेरणा पाने की अपेक्षा पूरी नहीं हो सकती थी। सम्पादक मण्डल को भी सन्तोष नहीं होता।

अत उनके परिचय और प्रेम परिवार के सज्जना से बार बार सम्पर्क करने स्मरण कराने एव लेखन के लिये प्रेरित करने का क्रम अनवरत चलाया। चाहते हुए भी भावा को भाषा देना समयाभाव या सकोच के कारण लिखने में हिचक का अनुभव सामान्य लगा। हमने निवेदन किया कि आप कैसे भी लिख द आपक भावों को भाषा देने का श्रम हम कर लगे। जिन लोगो को फिर भी लिखना कठिन लगा उनसे भेट वाता करके उनकी भाषा म टिप्पण लेने का कार्य किया। बीकानेर कोलायत दियातरा में कई बार जाकर, लोगो से बाते करके उनकी स्मृतियो को कुरेद कुरेद कर प्रसग एकत्र किये।

इन प्रयासों के फलस्वरूप ऐसे लोगो के जो श्री छलाणीजी के घनिष्ट सम्पर्क म रहे जिनके अनुभव गहरे थे, परन्तु लिख नहीं सकते थे, उनके प्रसग इस ग्रन्थ म आ सके है जो श्री छलाणीजी के अन्तरग को प्रकट करते है ओर कुछ लेखन समर्थ व्यस्त लोगो के आलेख भी आ सके हैं जो बिना भेटवार्ता के नहीं आ पाते।

दो वर्ष की अवधि म किय गये इन प्रयासा का फल इस ग्रन्थ म सगृहीत 80 से अधिक आलेख हैं। श्री छलाणीजी से बहुत निकटता रखने वाले सज्जनों म से कुछ के आलेख अपेक्षित थे परन्तु सारे प्रयासा के बावजूद भी प्राप्त नहीं किय जा सके।

इन प्राप्त आलेखा मे स कुछ आलेख तो लेखन समर्थ लोगा क हैं। लेकिन अधिकाश आलेखा का सम्पादन करना आवश्यक हुआ। यथासभव लेखक की भाषा मे भावा को सुभाषित, सुलिखित और व्यवस्थित किया गया है।

इन आलेखो के अतिरिक्त श्री छलाणीजी की (18) डायरियो, उनके द्वारा लिखित पत्रा एव निधन पर प्राप्त श्रद्धाजलियो तथा उनके जीवन एव परिवार स सम्बन्धित चित्र तथा दियातरा व अञ्चल के इतिहास व सस्कृति तथा छलाणी वश का इतिहास एव वश परिचय से सम्बन्धित सामग्री ग्रन्थ म सम्मिलित की गइ है।

इस समस्त सामग्री को (1) जीवन वृत्त एव व्यक्तित्व (2) अञ्चल व वश परिचय (3) सस्मरण (4) पत्र (5) डायरी (6) श्रद्धाजली एव (7) चित्र खण्डा मे व्यवस्थित किया गया है।

जीवनवृत्त

श्री भैरूदानजी के जीवनवृत्त को तेयार करना इस ग्रन्थ का सबसे कठिन श्रम और समय साध्य कार्य रहा है। लिखित विवरण एव सूचनाओ के अभाव म जन मन में विद्यमान उनकी स्मृति एव सस्मरण की सोरभ ही स्रोत बने है।

उनके बड़े पुत्र श्री भवरलालजी ने 1996 97 म जो संक्षिप्त परिचय तैयार किया वह तो आरम्भ बिन्दु मात्र था उसमे वृत्त पूरा करना कठिन था। श्री भवरलालजी से अपने पिताश्री का जीवनवृत्त तैयार करने का निवेदन किया गया तो उनका प्रत्युत्तर था मेरे पिताजी के बारे म लिखना मेरे लिये भी सभव नहीं है क्योंकि 35 वर्ष की आयु तक पिताजी अधिकाश तेजपुर म रहे और मै गाव म नानाजी दादीजी के पास ही रहा। वे गाव भी आते तो दूर दूर ही रहते। जब गाव म रहने लगे तब म पिताजी का जो जीवन और गुण देख उनको भी लिख पाना मेरे लिये सभव नहीं है।

श्री छलाणीजी के छोटे पुत्र श्री कुम्भराजजी ने भी लिखा 'पिताजी के बारे म लिखना मेरे लिये असभव है। दोनो पुत्रों म अपने पिता की तरह ही आत्म विज्ञापन करने की प्रवृत्ति नहीं है। अपने ही पिताजी के बारे में वे क्या लिखें? फिर भी श्री भवरलालजी से आग्रह किया कि वे सकोच छोड़कर जो भी उनको ज्ञात है औरों से सुना है उसी के आधार पर तथ्यात्मक जानकारी अवश्य दें। बिना सूचनाओं के तो जीवन वृत्त तैयार नहीं हो सकता और बिना जीवन वृत्त के ग्रथ अलूणे भोजन की तरह होगा। इस पर उन्होंने जो विवरण भेजा उसमें सामान्य बात ही थीं। उन्हें कुछ सस्मरण एव स्मरणीय प्रसग और जोड़ने का आग्रह किया। कुल तीन बार म कुछ कुछ करके जो लिखा वही जीवन वृत्त का आधार बिन्दु बना। इस आधार पर जीवन वृत्त का बिन्दु चित्र तैयार हुआ उसी से सागोपाग चित्र बनाना सभव हुआ। उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व के सम्बन्ध म अन्य लोगों से प्राप्त आलेखो म प्रचुर मात्रा में सूचनाये तथ्य घटनाए और प्रसग है इनमे वृत्त के बिन्दुओ को जोड़ने रिक्त स्थानो की पूर्ति करते हुए रेखा चित्र और उसम रग भरने का प्रयास किया गया है। इससे वृत्त का व्यास और परिधि का विस्तार हुआ। जीवन वृत्त में जोड़ी गई सामग्री की प्रामाणिकता की पुष्टि के लिये सन्दर्भ तत्स्थल सम्बन्धित लेखक का नाम कोष्ठक में दिया गया है। ऐसे प्रसगो की सविस्तार जानकारी सदर्भित लेखक के आलेख से की जा सकती है।

जीवन वृत्त का कलेवर बड़ा हो गया है। फिर भी श्री छलाणीजी जैसे कर्मनिष्ठ गृहस्थ सन्यासी के जीवन कर्म की तुलना म पूरा नहीं है। इसकी पूर्णता की परीक्षा तो पाठकों की सहृदयता और अनुभूति की उदारता से ही हो पायेगी।

सस्मरण

इस स्मृति ग्रन्थ म श्री छलाणीजी के जीवन मूल्यो व्यक्तित्व और कर्तृत्व का श्री जिनेन्द्र कुमारजी जैन (प्रधान सम्पादक यगलीडर, अहमदाबाद) श्री सोहनलालजी मोदी श्री मूलचन्दजी नौलखा श्री मूलचन्दजी पारीक श्री उम्मेदसिहजी भाटी एव डॉ धर्मचन्द्र के आलेखो म समग्र आकलन किया गया है। उनके सान्निध्य में रहे शिक्षकों श्री बनेसिहजी बीठू श्री मुरलीधरजी सक्सेना श्री भूपसिहजी श्री सुशीलप्रकाशजी श्री धूड़ारामजी प्रजापत और श्री भैरारामजी उपाध्याय ने उनके शिक्षा प्रसार, शिक्षार्थी और शिक्षक तथा विद्यालय के प्रति पितृवत् स्नेह और सरक्षण क्षमा अपरिग्रह आतिथ्य सत्कार गो सेवा अकाल राहत

गाव ही परिवार और सतवृत्ति के मार्मिक एव प्रेरक प्रसगो का उल्लेख किया है। व्यवसाय एव कृषि कार्य मे उनके यहा कर्मचारी रूप म सहकर्मी रहे श्री मालचन्दजी शर्मा, श्री वशीधरजी जोशी, श्री पूनमरामजी उपाध्याय एव श्री बेजनाथजी सिद्ध ने उनकी व्यवसाय मे प्रमाणिकता प्रवीणता, दूरदृष्टि कर्मचारियो की पारिवारिक सदस्य की तरह भौतिक व नैतिक समृद्धि, बोनस उदार सहयोग दरिद्र व असमर्थ के प्रति करूणा आदि के भावपूर्ण प्रसगो का उल्लेख किया है। सरपच व पचायत प्रधानकाल म उनके आदर्श व्यवहार अचल के समग्र विकास क कार्य जन और जमीन से परिचय ओर प्रेम सुधार ओर प्रगति के लिये देशज समझ और परिवर्तन के लिये वेज्ञानिक दृष्टि के प्रत्यक्षसाक्षी रहे सरकारी अधिकारी श्री सौभाग्यमलजी सिघवी श्री आर के रगा, श्री इन्द्र शर्मा एव श्री मूगेलालजी सुरेका तथा पूर्व सरपच श्री बृजलालजी सेठिया ने उन्हे मगरे का गाधी भूगोल से इतिहास बनाने वाला ग्राम विकास के लिये नये प्रयोगो का प्रयोक्ता व सुधारक सेवा, सादगी और त्याग की मूर्ति के रूप मे चित्रित किया है। उनके घर और खेत में आश्रम और उनमें तपनिष्ठ ऋषि के दर्शन श्री मनोहरलाल भाखाणी ने किये है।

आयुर्वेद एव प्राकृतिक चिकित्सा म अटूट आस्था, विषम से विषम परिस्थिति मे समवृति एव सहिष्णुता, स्वादजय और गुणग्राहकता सर्वधर्म समादर के प्रसगो का वृतान्त चिकित्सका—वैद्य श्री दयालजी स्वामी, श्री महावीर प्रसादजी स्वामी, ठाकुर प्रसादजी शर्मा एव डॉ कालीचरणजी माथुर—के सस्मरणो म है। सन्त प्रकृति के साथ राजनीति दलित उत्थान और गोभक्ति की घटनाओ का वर्णन श्री लूणारामजी, श्री फरसारामजी ओर पूर्णारामजी चौहान ने किया है।

समधियों के साथ सगा सम्बन्ध बिन बताये सहयोग, सम्बन्धो को तोड़ने वाले के साथ भी आत्मीयता के अटूट सम्बन्ध की विशिष्ट घटनाओ का जिक्र श्री चनणमलजी, श्री सन्तोकचन्दजी गोलछा श्रीमती चम्पाकुवर नाहटा तथा डॉ धर्मचन्द्र के सस्मरणों में भावपूर्ण रूप मे हुआ है। पुत्र वधुओ श्रीमती रतनी देवी श्रीमती नयनतारा, डॉ चन्द्रा पोत्र वधू श्रीमती दिव्या एव पुत्री श्रीमती पुष्पा पुगलिया ने उनके दैनन्दिन जीवन ओर व्यवहार के विविध पक्षों समाज सुधार स्त्री शिक्षा परिवार मे प्रेम सस्कार सयुक्त परिवार बटवारे श्वसुर, बापूजी श्रम सेवा स्वाध्यायी वृत्ति आदि आदि उनके जीवन के अतरग पक्ष को बहुत सटीक रूप मे व्यक्त किया है। श्री कमलचन्दजी पुगलिया ने उनके कृषि ज्ञान न्यायवृत्ति शोध प्रयोगो का वृत्तान्त दिया है।

स्वाधीनता सेनानी सर्वोदय, खादी भूदान निष्काम सेवा, निर्भीकता लोकमान्य न्यायाधीश गाधीवादी आदर्शो के प्रयोक्ता अतिथि सत्कार घर कार्यकर्त्ताओ की छावनी प्रचार प्रसिद्धि से निर्लिप्तता रचनात्मक सेवक गाधी और खादी चिन्तन और कार्य के मर्मज्ञ के रूप म श्री छलाणीजी क जीवन का श्री दाऊदयालजी आचार्य श्री राधाकृष्णजी बजाज श्री जवाहरलालजी जैन श्री भीमसेनजी चोधरी श्री मालचन्दजी बायरा श्री बद्रीप्रसादजी स्वामी

श्री रिखबराजजी कर्णावट एवं श्री सत्यनारायणजी पारीक ने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित रूप में स्मरण किया है। उनके गांधीपन का यथार्थ चित्र उतारा है।

असाधारण सामान्यता, सामान्यता के असामान्य साधक, आदर्श श्रावक, गो भक्त गृहस्थ संत, अपनी सम्पत्ति को सर्वहिताय न्यस्त करने वाले गृहस्थ सन्यासी का अति उज्ज्वल पक्ष श्री बन्नेसिंहजी बीठू, श्री वीरसेनजी पुगलिया, श्री रतनलालजी चौपड़ा एवं डॉ. धर्मचन्द्र के आलेखों में प्रकाशित हुआ है। अनेक परिवार जन ने अपने प्रति श्री छलाणीजी के प्रेम और उनके प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति भावपूर्ण ढंग से आलेखों एवं कविताओं द्वारा दी है। मगरा अंचल और दियातरा के ऐतिहासिक सांस्कृतिक पक्ष का सरस एवं शोधपूर्ण विवरण भंवर पृथ्वीराजजी एवं श्री कृष्णकुमारजी शर्मा के आलेखों में है।

पत्र खण्ड

श्री मूलचन्दजी नौलखा ने अपनी टिप्पणी सहित, श्री भैरूदानजी छलाणी के पत्र, में श्री नौलखाजी तथा श्री भवरलालजी छलाणी के नाम लिखे पत्र दिये हैं। एक पत्र मूल हस्तलेख में छलाणीजी का दिया गया है। श्री फूसराजजी छलाणी के आलेख पत्रम् पुष्पम् में सन् 1980 से 1986 के बीच उनको लिखे पत्रों के अंशों में जीवन, वर्णाश्रम धर्म, अर्थ, कृषि और स्वास्थ्य आदि पर श्री भैरूदानजी की दृष्टि और दर्शन उन्हीं के शब्दों में संकलित है। इसी भांति पुत्री श्रीमती पुष्पा पुगलिया द्वारा प्रस्तुत पत्रों में भी पत्र सार दिया गया है। इस खण्ड में श्री छलाणीजी के विचार उन्हीं की भाषा में मौलिक रूप में प्रस्तुत हुए हैं। पत्राचार करना और पत्रों में थोड़े में सभी तरह के परिवार, समाज, देश, जमीन और जमाने के समाचार के साथ संस्कार देने की स्वाभाविक शैली प्रशस्त है।

डायरी खण्ड

गांधी युग में जीवन को नियमित, संयमित एवं समयबद्ध करके अधिकतम सेवा कर्म में समय शक्ति नियोजित करना अभीष्ट था। धन, समय और दैनन्दिन जीवन चर्या का लेखा जोखा डायरी में रखने की प्रवृत्ति थी। श्री छलाणीजी की सन् 1960 से 1990 तक की अवधि की मात्र 18 डायरियां उपलब्ध हुईं। डायरी में से सार्वजनिक जीवन, व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन की घटनाओं, कृषि, सर्वोदय, भूदान, खादी एवं श्री रघुवरदयालजी गोयल से सन्दर्भित अलग अलग बिन्दुओं के अन्तर्गत डायरी के लेखन को मूलरूप में संकलित किया गया है। सारी डायरियों एवं लेखन के सम्बन्ध में सम्पादकीय टिप्पणी दी गई है। इनमें उनके चिन्तन एवं चर्या की एक प्रारूपिक झलक प्राप्त होती है।

श्री छलाणीजी का पत्र और डायरी लेखन इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि उनमें कथनी और करनी की एकता है। उनका शब्द प्रयोग द्वारा परीक्षित और आचरित है। मन, वचन और कर्म का अभेद उसमें दृष्टव्य है। सम्यक ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र की त्रिपुटी सिद्ध हुई है।

श्रद्धाजलिया

श्री छलाणीजी के निधन के अवसर पर प्राप्त सस्थाओ सामाजिक कार्यकर्त्ताओ व कुछ सम्बन्धियो के श्रद्धाजली पत्रो को सकलित किया गया है।

चित्र खण्ड

श्री छलाणीजी के सार्वजनिक व पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित कुछ चित्र यथा स्थान दिये गये हैं जिनसे उनके दैहिक स्वरूप, सेवा कार्य और सम्बन्धो का सीमित दृश्य समक्ष होता है।

स्मृति ग्रन्थ के लिये सामग्री जुटाने और सम्पादित करने म दो वर्ष का समय लगा। श्री मनोहरलाल भादाणी ने श्री छलाणीजी से सम्बद्ध व्यक्तियो से सम्पर्क करन, भटवार्ता करने और टिप्पण तैयार करने में अथक श्रम किया है। श्री योगेन्द्र कुमार रावल ने टिप्पणियो व कच्चे कोरे लेखो को सुभाषित एव व्यवस्थित रूप दिया है। डॉ किरण चन्द नाहटा ने स्मृति ग्रन्थ के कलेवर को कसने, सजाने और सम्पादन को गति देन का कार्य किया है। दूर रहते हुए भी डॉ चन्द्रा छलाणी सामग्री जुटाने मे सतत सक्रिय रहीं।

स्वस्थ, समृद्ध समष्टिगत जीवन और समग्र व्यष्टिगत जीवन की रचना के कार्य म अर्द्ध शताब्दी से भी अधिक लम्बे काल तक सलग्न प्रचार और प्रसिद्धि से परान्मुख गाधीवादी आदर्शों के मूर्त्त रूप इस निष्काम, निस्पृह, ऋषि तुल्य जीवन का विवरण, प्रसग सस्मरण और श्रद्धा—'**मगरे का गाधी** मे समर्पित है। मगरे का गाधी स्मृति ग्रथ है जिसमे सेवा, सयम और त्याग का तत्त्व है स्नेह सम्मान और श्रद्धा का भाव है। यह कोई साहित्यिक कृति नहीं है। एक ही व्यक्ति के जीवन को अनेक लोगों ने अपनी अपनी दृष्टि से देखा और अनुभव किया है। व्यक्तित्व का प्रखर रूप और प्रत्यक्ष कर्म किसी से भी छिपा नहीं रहा। अत आलेखों मे उनके गुण व कर्म की पुनरावृत्ति, भजन मे ध्रुवपद की अवान्तर पुनरावृत्ति की तरह हुई है। साथ ही परिस्थिति, स्थिति और अनुभूति की व्यैक्तिक विशिष्टता के फलस्वरूप श्री छलाणीजी के चिन्तन, चरित्र और चर्या के विभिन्न पक्षों की विविधता रचनाओ मे प्रचुरता के साथ उभरी है।

श्री छलाणीजी सक्षेप में सटीक बात कहने म सक्षम थे। किसी भी विषय में अपना मत अविरोधी एव निर्विवाद रूप मे रखने में कुशल थे, मित एव मिष्ट भाषी थे परन्तु उनके सम्बन्ध मे लिखे गये अधिकाश आलेखो म विस्तार आधिक्य है। लेखक कोई साहित्य क विद्यार्थी या सिद्धहस्त रचनाकार नहीं हे। श्री छलाणीजी के जीवन विचार, वाणी और व्यवहार को जैसा देखा पाया और जो प्रभाव हुआ उसे ही भाव प्रवणता के साथ व्यक्त कर दिया है। अत विस्तार और पुनरावृत्ति इस ग्रन्थ मे स्वाभाविक रूप म है।

अभीष्ट अभिव्यक्ति को यथावत रखते हुए सम्पादन द्वारा सार सक्षेप व विस्तार सकोच करने की असमर्थता स्वीकार करने में सम्पादक मण्डल को कोई सकोच नहीं है। ग्रन्थ की सामग्री के विस्तार तथा ग्रन्थ के आकार की सीमा को देखते हुए विचार खण्ड की सामग्री सम्मिलित नहीं करने की विवशता रही है एतदर्थ क्षमा प्रार्थी हैं।

मन वचन ओर कर्म स भारतीय ऋषि कृषि सस्कृति एव गाधी विचार के जीवन्त रूप मगरे के गाधी निष्काम कर्मनिष्ठ गृहस्थ सत सन्यासी क जीवन और कर्म का स्मृति ग्रन्थ के रूप मे सम्पादित करके हम कृतकृत्य अनुभव करते है।

मगरे का गाधी का स्मृति ग्रन्थ के रूप में मूल्याकन करना पाठक वृन्द का अधिकार है। ग्रन्थ की कमियों व त्रुटिया के लिये ग्रन्थनायक श्री छलाणीजी की क्षमावृत्ति और गुण ग्राहकता के अनुरूप सम्पादक मण्डल को सह्रदयतापूर्वक क्षमा कर देने का पाठकगण से अनुरोध है।

इस स्मृति ग्रन्थ से जीवन के मूल्य निष्ठ समग्र विकास एव शुद्ध जीवन की प्रेरणा मिलने स ग्रन्थ क प्रयोजन और प्रयास की सार्थकता और सफलता सिद्ध होगी।

ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना क प्रारम्भ स पूर्णता तक के सारे कार्य की प्रेरणा और पीठबल श्री फूसराजजी छलाणी रहे हैं। श्री भवरलालजी छलाणी का मार्ग दर्शन मिला है। इस ग्रन्थ क सम्पादन का अवसर देने के लिये श्री भैरूदान छलाणी स्मृति ट्रस्ट के प्रति आभार व्यक्त करते है। गत तीस वर्षों म श्री छलाणीजी का मुझे पितृवत् स्नेह परिवार क सदस्य की भान्ति ही मिला। उससे उऋण होना तो सभव नही। व्यक्तिगत रूप म मेरे लिये ग्रन्थ सम्पादन का कार्य उनका आशीर्वाद एव अमूल्य पुरस्कार है।

इस ग्रन्थ के योगदाता सभी लेखकों को उनक आलेखों के प्रति कृतज्ञता एव साखला प्रिण्टर्स के श्री दीपचन्द साखला को उनके सुझाव एव सहयोग के लिये धन्यवाद ज्ञापित है। श्री साखला मात्र मुद्रक व्यवसायी नही वे उत्तम ग्रन्थ सर्जना के प्रोत्साहक भी हैं।

बीकानेर
रक्षा बन्धन श्रावण शुक्ला 15 2057
15 अगस्त, 2000

सम्पादक मण्डल की ओर से
धर्मचन्द्र
प्रधान सम्पादक

अनुक्रम

मगरे का गांधी

जीवन वृत्त

मगरे का गाधी

श्री भैरूदानजी छलाणी का जन्म 29 नवम्बर, 1909, मिगम्पर बदी 2, सम्वत् 1966 सोमवार को तेजपुर (अस्मम) म हुआ। (पत्र दिनाक 29 11 83)। उनके पिता श्री हजारीमलजी एव माताजी श्रीमती सदकुवर थीं जो चानी गाव के बोथरा परिवार की पुत्री थीं। श्री हजारीमलजी का जन्म वि स 1928 में हुआ था। वे साहसी उद्यमी पुरुष थे जिन्होंने सुदूर बगाल, आसाम में जाकर व्यापार प्रारम्भ किया था। उस समय यातायात की आज की तरह साधन सुविधाए नहीं थीं। ऊट बैलगाड़ी, नाव ही मुख्य साधन थे, रेल की सुविधा कहा कहीं उपलब्ध थी। श्री हजारीमलजी दियातरा से अजमर ऊट से अजमेर से कलकत्ता रेल से नाव द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी पार करके तेजपुर पहुचे थे। इस यात्रा में करीब तीन माह लग गये थे। उस जमाने म मुसाफरी, समय और दूरी दोना तरह से, लम्बी हाती थी। तेजपुर म उन्हाने गल्ले का व्यवसाय प्रारम्भ किया। दूसरी बार मुसाफरी में सपत्नीक तेजपुर गये। यह मुसाफरी पूरी 12 वर्ष की थी। इस अवधि में भैरूदानजी का जन्म हुआ। श्री भैरूदानजी का बचपन और जवानी वहीं बीते और साधारण शिक्षा भी वहीं हुई। श्री छलाणीजी की शादी 14 15 वर्ष की उम्र में फरवरी 1924 में गगाशहर निवासी श्री रावतमलजी बैद की पुत्री जेठीदेवी के साथ तत्कालीन रीति रिवाज के अनुसार ही हुई। उस समय श्रीमती जठीदेवी की उम्र 8 9 वर्ष की थी। उनका बचपन कुछ मगरा क्षेत्र के भाणे के गाव और गगाशहर म बीता। उनकी सगाई भाणे के गाव में रहते हो गई थी। जब वे अपने भाणे के गाव से दियातरा की लाखोलाई तलाई से पानी भरने गाड़ीनो के साथ आती थी तो दियातरा की औरते अपने गाव की भावी बहू को देखने तलाई पर इकट्ठी हो जाती थी। छलाणीजी की शादी गगाशहर मे हुई थी। ससुराल का परिवार तब गगाशहर में बस गया था। बरात दियातरा से ऊटों व बेलगाड़ियो में गई थी। ऊटों और बैलगाड़ियो की दौड़ तथा आगे रहने की होड़ में जान का माहोल निराला ही रहता था। श्री छलाणीजी स्वय दौड़ के रसिया थे।

श्री भैरूदानजी अपने चार भाइयों (भैरूदानजी, दयालचन्दजी आशकरणजी और मुन्नालालजी) में सबसे बड़े थे। छलाणीजी की चार सन्तानो म दो पुत्र

धातव्य (कोष्ठक मे सन्दर्भ ह जिनक आलेख से विवरण और प्रसग उद्धृत किय गय हैं)

श्री भवरलाल व श्री फूसराज तथा दो पुत्रियां श्रीमती मीना रतनलाल चौपड़ा तथा श्रीमती पुष्पा कमलचन्द पुगलिया हैं। एक पुत्री आशा का बचपन में ही देहान्त हो गया।

जीवनचर्या

खान पान

श्री छलाणीजी ने गाधी विचार को आत्मसात् और अगीकार कर लिया था फलस्वरूप उन्होंने अपनी सम्पूर्ण जीवन शैली गाधी विचार, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद के अनुसार ढाल ली।

उनका रहन सहन और खान पान बहुत ही सादा और मर्यादित था। भोजन बिना मिर्च मसाले का होता था। दूध फुलका बाजरी रोटी यदाकदा खिचड़ी या मूग दाल, चावल लौकी और पालक की सब्जी लेते थे। दिन में दो बार लाल बकरी का दूध लेते थे। चाय कॉफी चीनी बिस्कुट का प्रयोग नहीं करते थे। पुराने गुड़ तथा दूध में शहद का प्रयोग कर लेते थे। कभी कभी सर्दी जुकाम मे गुरुकुल कागड़ी या प्राकृतिक चिकित्सालय की अमृत चाय ले लिया करते थे। सब्जी मे घी तेल नाम मात्र का ही होता था। जीवन के पिछले दस वर्ष में घी तो एकदम छोड़ दिया था। फलो में मतीरा और अनार पसन्द करते थे। पान सुपारी कभी नहीं खाई दवा मे च्यवनप्राश वासावलेह ज्वार मोहरा का सेवन करते थे।

खान पान प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार था। आयुर्वेद में अटूट आस्था थी। श्वास कफ की उनकी प्रकृति थी। बचपन मे 11 वर्ष की उम्र में उन्हें चेचक का प्रकोप हुआ और उसका फेफड़ा पर असर जीवन भर रहा। खासी या कफ की शिकायत होने पर दूध में लहसुन तथा गुर्दे की सफाई के लिए कुल्थी की दाल का प्रयोग करते थे। वे पानी कोलायत के कुए का ही पीते थे।

> आज कोलायत का पानी नहीं था। घर के कुए का ही पीया, हल्का लगा।
>
> डायरी (16 9 85)(श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

स्वादजयी

एक बार श्री भैरूदानजी करीम गज आये थे तो मेरी मा ने उनसे पूछा आपके लिये खाना क्या बनाऊ? उन्होंने कहा घी तेल मीठा और नमक को छोड़कर कुछ भी बना देना खा लूगा? उबली हुई सब्जी व रोटी खा लूगा। कोई मिर्च मसाले की जरूरत नहीं। (श्री दीपचन्द भूरा)

उनके खान पान की सादगी और सयम स्वाभाविक थे। कोई एक दो या कुछ दिन नहीं अपितु वर्षों से उनका यही भोजन था। ऐसा करना सामान्य बात नहीं है।

किसी स्वादजयी के लिये ही सभव है। स्वादजयी की रुचि अरुचि मिट जाती है। किसी का निराहार रहना, उपवास करना फिर भी सरल है परन्तु रसना का रस छूट जाना स्थितप्रज्ञ की अवस्था मे ही सभव है। गीता के स्थितप्रज्ञ के लक्षणो में कहा है—

विषया विनिवर्तन्ते निराहास्य देहिन
रस वर्ज रसोप्यस्य पर दृष्ट्वा निवर्तते।

खान पान के सम्बन्ध म उनका विचार था कि भोजन शुद्ध, सात्विक और पौष्टिक होना चाहिए। गरिष्ठ भोजन के पक्ष मे वे नहीं थे। अतिथियों के लिए वे खूब अच्छा स्वादिष्ट व परम्परागत भोजन बनवाते थे—गेहू, बाजर की रोटी, देशी सब्जिया–ग्वार फली, फोफलिया, खीच, दही, खीर, गुड़, घी आदि। खूब प्रेम से खिलाते थे। अपने छोटे लड़के श्री फूसराज की शादी में उन्होने गुड़ का हलवा, पकौड़ी, पूड़ी और सब्जी ही बनवाई थी। ठूस ठूस कर खाने और खिलाने के पक्ष में नहीं थे। भोजन के समय कोई कभी भी आया हो, उसको भोजन करने का आग्रह अवश्य करते। (श्री मुरलीधर सक्सेना, डॉ चन्द्रा छलाणी)

वे मितभोजी थे। युक्त आहार विहार के साधक थे। वे कहते थे 'कम खाना है तो अधिक खाओ, अधिक खाना है तो कम खाओ अर्थात् ठूस ठूस कर खायेंगे तो अस्वस्थ होंगे, आयु कम होगी, कम खा पायेगे। अगर कम भोजन करेंगे तो स्वस्थ रहेंगे, दीर्घायु होंगे अधिक खा पायेगे।' (श्री राईचरण देवनाथ, डा चन्द्रा छलाणी)

गाधी विचार के प्रभाव में आने से पूर्व अपनी तरुणावस्था में अपने काकासा श्री अमोलखचन्दजी के साथ बड़े बड़े भोजों में जाते थे और खूब खाया करते थे।

सर्वश्रेष्ठ परहेजी

सम्वत् 1997 मे उन्हे लम्बा मोतीझरा हुआ। दादूपथी वैद्य श्री किसनदासजी बीकानेर के प्रसिद्ध वैद्य थे जिनके आयुर्वेदिक उपचार में औषधि से भी ज्यादा प्रधानता रखा' यानि परहेज पर रहती थी। श्री छलाणीजी उनके निर्देशों का कठोरता से पालन करते थे। परहेज में वे इतने खरे उतरे कि वैद्य श्री किसनदासजी और श्री केवलरामजी उन्ह सर्वश्रेष्ठ परहेजी मानते थे। इसका प्रभाव पूरे परिवार के खान पान और रहन सहन पर पड़ा। इनके दोनों भाई और पुत्र भी बिना मिर्च मसाले का सादा भोजन लेते हैं। बाद के वर्षों में छलाणी परिवार से इन वैद्यों का उपचार चलता तो वे कह देत तुम्हारा तो परहेजी परिवार' है। खाने के विशेष निर्देश की जरूरत नहीं।

वैद्यश्री किसनदासजी के सम्पर्क और चिकित्सा में रहने से वैद्य से सम्बन्ध और आयुर्वेद में अटूट आस्था स्थापित हो गई। (वैद्य श्री दयाल स्वामी)

असीम सहिष्णु

मोतीझरा के इलाज के समय सुधार होते होते किसी बदपरहेजी (अपनी मा की दी हुई मिठाई खा लेने) के कारण स्थिति बिगड़ गई और गभीर हो गई। खून के दस्त पर दस्त होने लगे। ऐसी दस्तो को देखकर दूसरा का दिल काप उठता था। जीवन पूरी तरह सकट म था परन्तु उनके मुख से उफ का शब्द तक नहीं निकला। बीमारी में मनुष्य का चित्त अस्थिर हो जाता है और हायतौबा मचा देता है चिड़चिड़ापन और क्रोध हो जाता है। परन्तु छलाणीजी बिल्कुल शान्त बने रहे और अधीर नहीं हुए। उनके धीरज और तनमन की सहिष्णुता असीम थी।

उस जमाने मे दियातरा तक सड़क बस तार टेलीफोन नहीं थे। सबसे तेज सवारी ऊट ही थी। रात पड़ते बीकानेर का परकोटा बन्द हो जाता था। बस्ती परकोटे के भीतर ही रहती थी। वैद्यजी को लाने एक तज तर्रार ऊट पर सवार को बीकानेर भेजा गया। दरवाजे बन्द होने से पूर्व ऊट सवार बीकानेर पहुच गये। वैद्यजी को छलाणीजी की बीमारी की गभीर हालत की सूचना दी गई। वैद्यजी श्री किसनदासजी बीकानेर स श्री कोलायत बस से पहुचे। उन दिना बसे भाप से चलती थीं। वहा से ऊट पर दियातरा रात में 3 4 बजे पहुचे दवा दी और चले गये। श्री छलाणीजी को लाभ हुआ। दवा ने अचूक असर दिखाया। धीरे धीरे छलाणीजी स्वस्थ हुए। उसके बाद भी उन्ह दो तीन साल तक मोतीझरा निकलता रहा परन्तु उन्होंने एलोपेथिक दवा का सेवन नहीं किया। अपनी किसी भी बीमारी मे आयुर्वेदिक प्राकृतिक तथा स्वमूत्र और गौ मूत्र चिकित्सा का प्रयोग करते थे।

आयुर्वेद मे अटूट आस्था

आयुर्वेद मे उनकी अटूट आस्था थी। सन् 1985 में कुल्हे की हड्डी टूट गइ थी। एलोपेथिक उपचार ट्रेक्शन पट्टा आदि से विशेष लाभ नहीं हुआ तो नागौर के किसी देशी तबीब से भी उपचार करवाया परन्तु अपगता म लाभ नहीं हुआ। फिर भी उनकी आस्था अटल रही।

1987 से उनको कण्ठबेल की गभीर बीमारी हुई। उसके कारण कण्ठ म गाठ और फेफड़ों व श्वसन सस्थान पर घातक प्रभाव पड़ा। फरवरी 88 म श्वास व कफ ने अति उग्र रूप धारण कर लिया। वैद्य श्री दयालजी स्वामी की आरोग्यशाला म उपचार हेतु आवास किया। उपचार चलते चलते स्वास्थ्य की स्थिति अत्यन्त गभीर हा गई। यक्ष्मा रोग प्रकट हो गया। जीवन के लिए सकट की स्थिति खड़ी हो गई। ऐसी घड़ी में सम्पूर्ण परिवार ने और खुद वैद्यजी ने चाहा कि यक्ष्मा रोग विशेषज्ञ से परामर्श किया जाये। श्री छलाणीजी को इसका आभास हो गया। वे इसके लिए तैयार नहीं थे। वैद्यजी से दृढ़ता और निष्ठा के साथ कहा वैद्यजी आप दवा चालू रखिये मुझे विश्वास है कि मैं इस स्थिति से ऊबर जाऊंगा। इतना दृढ़ सकल्प लिया हुआ

निर्भय व्यक्ति और स्वय चिकित्सक को चिन्ता से ऊपर उठने का अवसर, उत्साह और शक्ति देने वाला आरोग्यार्थी अन्य काई नही मिला।'

'छलाणीजी के पाचन सस्थान कफ और कास सम्बन्धी बीमारी मे बहुत समय तक मेरा इलाज चलता रहा। मेरे बताये हुए नियम, खाने पीने मे सयम, पथ्यापथ्य का ध्यान जैसा मैंने छलाणीजी म देखा तो दग रह गया। जीवन भर दृढ़ता से सयम नियम के पालन करने की दृढ़ता मैंने अन्य किसी व्यक्ति में नही देखी। आयुर्वेद का ऐसा आज्ञाकारी, नियमपालक धैर्यवान, दृढ़निष्ठावान रोगी चिकित्सा क्षेत्र मे खोजने पर भी नहीं मिलेगा। श्री छलाणीजी जैसे आरोग्यार्थी को पाकर मेरा चिकित्सक हृदय नत मस्तक था।' (वेद्य श्री दयाल स्वामी)

श्री छलाणीजी के जीवन पर आइ रोग की इस गभीर स्थिति में वैद्यजी की सहमति से उनको बताये बिना क्षय रोग विशेषज्ञ डा कालीचरणजी माथुर के द्वारा ऐलोपेथिक दवाए आयुर्वेदिक कैप्सूल के रूप मे दी गई। इजेक्शन तो फिर भी नहीं ही लिये। इस उपचार से रोग पर नियन्त्रण हुआ और स्वास्थ्य लाभ होने लगा। तब उन्हे वास्तविक स्थिति बताई गई।

उनकी आयुर्वेदिक चिकित्सा में अटूट आस्था थी यहा तक कि बहुत समझाने पर भी मेरी बताई हुई ऐलोपेथी की औषधिया लेने को तैयार नहीं हुए तब उनके ही आयुर्वेदिक चिकित्सक के माध्यम से मुझे उन्हे अपनी औषधि (केवल गोली) देनी पड़ी। कुछ समय बाद स्वास्थ्य लाभ करने पर उनको सब कुछ बता दिया गया। उसके बाद तो उनकी मुझ म इतनी आस्था हो गई कि किसी प्रकार की भी व्याधि हो, सर्वप्रथम मुझ से परामर्श करते।' (डॉ कालीचरण माथुर)

'स्वास्थ्य लाभ होने पर उन्होने अपने भतीजे डॉ धनराज छलाणी को कहा जानते हो धनराज। मैने एक सपना देखा, पहले जैसे मैं जमीन पर चल रहा था और अचानक एक गहरे कुए म डूब गया' यह उनकी आयुर्वेद मे आस्था के विपरीत लगे आघात की मानसिक मजबूरी थी। पर उनकी आस्था अटूट थी।'

(श्रीमती नयनतारा छलाणी)

शान्त योगी

इस चिकित्सा के समय पूरे परिवार सहित ही औषधालय म लम्बे समय तक रहना हुआ। उस समय औषधालय मे एक ऐसा पारिवारिक वातावरण बना रहा जिसमें सत्सग अध्यात्म चर्चा, रामायण पाठ, भजन कीर्तन की धाराए बहती रहीं। सारे तीज त्यौहार परिवार की तरह औषधालय म मनाये जाते रहे। ऐसा लगता था मानो कोई रोगी नहीं बल्कि कोई स्वास्थ्य साधक शान्त योगी चारपाई पर लेटा शान्ति और आनन्द बिखेर रहा है। (वैद्य श्री दयाल स्वामी)

जीवन की विषम स्थिति में भी सम रहना रुग्णावस्था में भी जीवन की सरसता और आनन्द का सृजन और उसे खुले मन से उलीचना जीवन मुक्त व नित्य ही सम्भव है। श्री जयशंकर प्रसाद की पंक्तियां

हंसो और हंसाओ मनु अति सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत करलो, सबको सुखी बनाओ।

उनके जीवन का संगीत थी।

स्वास्थ्य दृष्टि

चिकित्सा के लिये आयुर्वेद में आस्था थी। स्वस्थ जीवन के लिये प्राकृतिक चिकित्सा के भक्त थे। उनकी पूरी दिनचर्या खान पान और पहनावा सब एकदम सादा सयमित था। प्राकृतिक चिकित्सक वैद्य महावीरप्रसादजी से उनकी घनिष्ठता थी। उनसे चर्चा होती रहती थी। उनका पक्का विश्वास था कि शारीरिक श्रम, मर्यादित खान पान और प्राकृतिक वातावरण ही हम इक्कीसवीं सदी में हृदय रोग से बचायेगा। युक्त आहार विहार योग और प्रणायाम तथा ध्यान के द्वारा हृदय और रक्त संचालन को स्वस्थ रखना सीखलें। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी गहरी आस्था थी। जीवन की सध्यावेला में क्षयग्रस्त हो गये थे परन्तु सयमित जीवन के कारण उस पर काबू पा लिया। मनोबल उनका बड़ा दृढ़ था। (वैद्य श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा)

श्री छलाणीजी, गांधीजी की रचनात्मक प्रवृत्तियां (स्वच्छता गो पालन मद्य निषेध खादी, ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता निवारण वन रक्षा साक्षरता आदि) में प्राकृतिक चिकित्सा को मध्यवर्ती भूमिका में रखते हुए गांव व कस्बों में प्राकृतिक चिकित्सा अपने आस पास की जड़ी बूटियों के द्वारा बिना खर्च के व बिना आडम्बर के अपने परिवार को स्वस्थ सुखी रखने के पक्षधर थे।

(वैद्य श्री महावीरप्रसाद शर्मा)

'और स्वास्थ्य के नियम जानने में तो हमारे सामने कोई कठिनाई ही नहीं क्योंकि पूज्य गांधीजी के विचारों की जानकारी हमें है ही। हां पालने में जरूर कठिनाई है। जितना पाल सकेंगे उतना ही फायदा है।

(श्री भवरलाल छलाणी को लिखे पत्र से)

स्वास्थ्य का ख्याल तो पहले से ही रखने पर तोहमत कम होती है। इसका पहला साधन है दीर्घ श्वास जिससे भीतरी अवयव सचेत रहते हैं, पाचन ठीक रहता है। दूसरा हे मनोबल का विकास, फिर शरीर बल तो सहज बढ़ सकता है।

(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनांक 2 11 83)

'स्वास्थ्य बिगड़ जाना तो हमारी दिनचर्या की ढिलाई का ही परिणाम है। मैं तो फिर भी परहेज से 75 साल तक पहुंच गया हू। चेचक में रही खराबी शरीर में 64 साल

से चल रही है। मनुष्य शरीर के लिये सम श्वास का बड़ा महत्त्व है परन्तु इस प्रकार की जानकारी सबको कहा है? युवाचार्य ने बताया है कि बालपने में तो श्वास सम ही रहता है। आयु बढ़ने के बाद क्रोध, मोह जैसे आवेगो से श्वास छोटा हो जाता है जिससे हृदय के कोशो मे कई अवरोध आ जाते है। श्वास प्रेक्षा यानि ध्यानपूर्वक दीर्घ श्वास से (श्वास) सम की जा सकती है। दीर्घ श्वास का अभ्यास तो सब कोई कर सकते है इससे फायदा ही है। (पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 20 2 84)

पहनावा

उनका पहनावा बहुत ही सामान्य था। खादी का व्यवहार 1936 से पूर्व ही आरभ कर दिया था। सफेद खद्दर का कुर्ता या कमीज, ऊची धोती उनका लिबास था। सर्दी में सूती और ऊनी खद्दर का कोट, चद्दर रखते थे। जूते देशी चमड़े के पहनते थे। पिछले 25 30 वर्षों मे चमड़े के जूते भी छोड़ दिये थे। कपड़े व रबड़ के गोरखपुरी जूते ही पहनते थे। सम्वत् 1928 तक पीली पगड़ी धारण करते रहे। उसके बाद पगड़ी पहनना भी छोड़ दिया। शुभ अवसरो पर पगड़ी पहन लेते थे। मगरे के आम किसान की तरह ही लगते थे। उनको हाथ पैर के मौजे पहनते नहीं देखा। चार पोशाको और एक जोड़ी जूते से अधिक नहीं रखते थे। कपड़ों पर कभी इस्तरी नहीं करवाते थे। यही उनकी नित्य की पोशाक थी। शादी विवाह, सभा, अधिकारियों मन्त्रियो से भेंट, सभी जगह यही वेश, कभी कोई और दिखावा नहीं। नाक मे बाली उनकी पहचान बन गई थी। नाक की बाली मयूर पख से निकले सोने की थी।

खादी की आधी बाहो का कुर्ता, ऊची सी धोती नाक में बाली सावली देह, चेहरे पर सरलता भोलापन और जानी पहचानी मुस्कान तथा मन्द गति में उठते दृढ़ कदम चेहरे से सहज उद्दीप्त सौम्यता लिये हुए एक ठेठ ग्रामीण के दर्शन उनमें होते थे।' (डॉ धर्मचन्द्र)

स्वाध्याय वृत्ति

'प्रथम दृष्ट्या यह अनुमान तो नहीं लगता था कि यह अनपढ़ गवार नहीं अपितु सुसस्कृत विचारशील प्रबुद्ध और समृद्ध ग्रामवासी वणिक है। गाधी और सर्वोदय विचार के मात्र चिन्तक नहीं अपितु स्वशिक्षित व्यावहारिक प्रयोक्ता है। व्यक्ति व्यवस्था और परिस्थिति के पारदर्शी विश्लेषण की विवेक बुद्धि और समाधान हेतु अनुभव सिद्ध देशज सूझबूझ के धना हैं। (डॉ धर्मचन्द्र)

स्वाध्याय उनकी वृत्ति थी। उनके दैनिक जीवन का आवश्यक अग था। पुस्तका का अध्ययन एक तरह से उनका व्यसन ही था। घर पर खाली समय और रेल मे बस में यात्राओं का समय पुस्तकें पढ़ने म ही लगता था। वे पुस्तकें खरीदते और मगवाते थे। अनेक धार्मिक एव सर्वोदय पत्रिकाओ के नियमित ग्राहक और पाठक

थे। उनके संग्रह में धार्मिक गांधी जीवन दर्शन, स्वास्थ्य और कृषि सम्बन्धी साहित्य का प्राचुर्य था। किसी भी विषय से सम्बन्धित पुस्तक को ध्यान से पढ़ते। उस पर घर के सदस्यों व मिलने वालों से चर्चा करते। अपनी टिप्पणी भी करते थे। उनके द्वारा लिखे पत्रों में पढ़ी पुस्तकों पर उनकी टिप्पणियां बहुत ही सटीक और प्रेरक हैं। बातचीत और पत्र लेखन के द्वारा वे शिक्षा और संस्कार दे दिया करते थे।

(डॉ चन्द्रा छलाणी)

जब से गांव में अखबार आने लगा उसे पढ़ना उनका नियम ही था। राजस्थान में आकाशवाणी से प्रसारण प्रारंभ होने लगा तबसे खबरें सुनना भी उनके दैनन्दिन कार्य का आवश्यक क्रम हो गया। वे खबरों घटनाओं का विश्लेषण करते उनका समाज जीवन व्यापार व्यवसाय पर क्या प्रभाव और परिवर्तन होगा अपना निष्कर्ष निकालते थे जो बहुत ही तर्क संगत और समीचीन होता था। उसी के अनुसार जीवन पद्धति में परिवर्तन का मार्ग दर्शन और सुझाव देना उनकी प्रवृत्ति थी। सभी गांव समाज के लोग उनसे चर्चा करने परामर्श लेने आते थे। वे उनका समाधान करते और मार्गदर्शन करते थे।

(डॉ चन्द्रा छलाणी)

उनकी दिनचर्या बहुत ही नियमित थी। बड़े सवेरे उठ जाना नित्य कर्म से निवृत्त होकर सवेरे ही पैदल घूमने जाना और खेतों को देख आते थे। गाय बैलों के बाड़े में जाकर उन्हें संभालना सहलाना रोज करते थे। भोजन आदि सब नियमित निश्चित होता था।

निधन

श्री छलाणीजी ने संयम नियम के पालन और स्वाध्याय के साधन में 84 वर्ष की वय प्राप्त की तब तक उनकी नजर एकदम सही थी चश्मे की जरूरत नहीं पड़ी। पूरे दांत स्वस्थ थे। बचपन में चेचक के कारण रही खराबी का जीवन भर असर श्वास कफ, कास तथा पाचन पर रहा। 1985 में बैल की टक्कर से कुल्हे की टूटी हड्डी की अपंगता, 1987 में कंठ बेल 1988 में क्षय रोग से ग्रस्त होने के कारण अन्तिम दस वर्ष बिस्तर में ही निकाले उसके उपरान्त भी दीर्घायुष्य प्राप्त किया। संयम सहिष्णुता समवृत्ति स्वाध्याय और दृढ़ मनोबल के द्वारा ज्ञान कर्म और भक्ति की साधना की सतत सजग और कर्मनिष्ठ बने रहे। कृषि गो सेवा खादी आदि के कार्यों के द्वारा सेवामय सक्रिय जीवन व्यतीत किया। पोष कृष्णा 12, 2052 मंगलवार 19 दिसम्बर, 1995 को आत्मा देहमुक्त हो गई।

उनके स्वादजय, सहिष्णुता और समवृत्ति तथा स्वाध्याय का प्रभाव जीवन के हर कर्म हर क्षेत्र में प्रकट हुआ।

धर्म वृत्ति सर्वधर्म समादर

वे जन्म से जैन थे परन्तु साम्प्रदायिक सकीर्णता से सर्वथा दूर थे। जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के साधु साध्वियो और सनातनी सन्तों का उनके घर मे समागम होता रहता था। सभी का समान आदर करते थे। रामचरित मानस के उदात्त भाव और गीता के कर्मयोग मे उनकी निष्ठा थी। उन्होने नैतिकता से जीवन जीने के लिये गाव के जीवन कृषि, गो सेवा और परोपकार को साधन बनाया। व्यवहार शुद्धि एव 'परहित सरिस धर्म नही भाई उनकी धर्म की कसौटी थी। उनकी वर्णाश्रम धर्म मे आस्था थी। उनके जीवन का लक्ष्य चार पुरुषार्थो की सिद्धि था। इसलिए उनका धन कमाने का तरीका और सम्पन्नता को भोगने का तरीका धर्म और मोक्ष के पुरुषार्थो से निर्धारित था। (श्री वासुदेव विजय वर्गीय)

रामचरित मानस उनके दर्शन और व्यवहार का दिशा बोधक था।

मै तो इन वचनो को ही ज्यादा धारने योग्य मानता हू

धर्म न अर्थ न काम रुचि,
गति न चहऊ निरवान।
जनम जनम हरि पद भगति,
यह वरदान न आन।।

(डायरी 1960 स्मरण पृष्ठ पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 18 6 86)

ये पक्तिया उनकी अध्यात्म वृत्ति को प्रकट करती है। उनकी धार्मिक वृत्ति, जीवन दृष्टि और दैनन्दिन व्यवहार के आधार को व्यक्त करती है।

रामचरित मानस उन्हें कण्ठस्थ थी। तजपुर मे उनके यहा एक रामायण प्रेमी नौकर था जो निरक्षर था, नाम भी नहीं लिख सकता था। परन्तु रामचरित मानस का पाठ कर लेता था। वह हृदय से इसे गाता रहता था। उनके मुनीम श्री मोटारामजी जोशी भी राम भक्त थे। छलाणीजी उनको भाई के समान मानते थे। ये सब प्राय रामायण का पाठ किया करते थे। श्री छलाणीजी को रामचरित मानस कठाग्र ही नहीं हृदयगम हो गई थी। रामायण उनको सब से प्रिय थी। उसका पाठ करते और कराते रहते थे। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

वे जीवन मे घटती घटनाओं और परिस्थितियों की व्याख्या और किसी को समझाने, सीख देने मे रामायण के प्रसगो, दोहों और चोपाइया का ही उद्धरण देते थे। कठिन से कठिन परिस्थिति में रामायण से समाधान दे देते थे। समाधान प्राप्त कर लेते थे। स्वास्थ्य की गभीर और अति कष्टमय अवस्था में वे अत्यन्त शान्त और सन्तुलित रहते और रामचरित मानस का पाठ करते और सुनते थे। 1988 मे पैर से अपगता के साथ यक्ष्मा से ग्रस्त थे कई बार स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो

गई एसी विकट और अत्यन्त कष्टप्रद स्थिति म दिन रात रामायण पाठ ही करवाया करत थ। (श्रीमती नयनतारा, डॉ चन्द्रा छलाणी)

रामायण उनका सबस प्रिय धर्म था। रामचरित मानस उनका सबसे प्रिय ग्रन्थ था। वास्तव म रामचरित उनका मानस था। (डॉ धर्मचन्द)

उनका विश्वास ऐस पूजा उपासना और अनुष्ठानों में नहीं था जो धन धान्य की वृद्धि या फल प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। उन्होंने ऐस भजन, प्रार्थना जप नहीं किय। सर्वोदय के भजन जैसे बराबर, म्हे बाण्ट लस्या अमीरी न, गरीबी, न खुद गाते और खेत और यात्रा में जाते तब बच्चा स भी खूब सुनते गवात थ।

(श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

व साधु सन्तों क प्रवचन सत्सग म सद्गुण व सदाचार के सस्कार और प्रेम क लिय जाते थे। देव देवी दर्शन और तीर्थ यात्राए भी की थीं। इनमें देवी देवता व तीर्थों की स्थापना के कारण उनके गुण कर्म के महत्त्व को जानना और उनस प्रेरणा प्राप्त करना ही हेतु रहता था। लोक देवता रामदवजी के प्रति श्रद्धा रखत थे और रुणेचा की यात्रा पैदल बैलगाडी और अन्य वाहनों से भी अनेक बार की। गले में गाण्ठ हो जान पर रामदवजी की मनौती की। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

श्री कालायतजी के मेले में तो सपरिवार सम्मिलित होते थ उसका धार्मिक और सामाजिक महत्त्व मानते थ। ग्राम समाज के दर्शन मल मिलाप परस्पर जमाने की जानकारी और क्षेत्र की गतिविधि परिस्थिति का ज्ञान मेल क माध्यम से करते थ। पचायत प्रधान काल म तो मेले क माध्यम से ग्रामों में सुधार, शिक्षा और विकास की चेतना के जागरण का काम भी किया करते थ। उनका धर्म मनुष्य की सेवा और अच्छाई का विकास करना था।

1956 म पवनार (विनोबा) आश्रम, पचवटी पाण्डु गुफा साबरमती आश्रम और द्वारकाधाम की यात्रा तथा 1964 में बद्रीनाथ जोशीमठ व हरिद्वार की तीर्थ यात्राओं का वर्णन इन वर्षों की डायरी में है। वे अपन परिवार के साथ ही समाज के असमर्थ अशक्त ग्रामजनों को तीर्थयात्रा म साथ ले जाते थे। जहा कहीं किसी भी व्यावसायिक या सामाजिक कार्य स यात्रा पर जाते तो वहा के प्रमुख मन्दिरों तीर्थ स्थलो के दर्शन अवश्य करते थे।

उनका पुनर्जन्म म विश्वास था। परिपक्व उम्र में किसी की मृत्यु होन पर कम ही दुख प्रकट करते थे। दुर्घटना और अकाल मृत्यु होने का कारण वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के दुरुपयोग और व्यवस्था को मानते थे। (डॉ चन्द्रा छलाणी)

दैवी शक्ति और सिद्ध सन्तों की योगशक्ति म उनकी आस्था थी। देवताओं के प्रसाद आरती हवन पूजन, रात्रि जागरण और सत्सग करवाते थे। कुए के काम,

शरीर मे बीमारी व कष्टो के समय साधु सन्तो व देव दर्शन के उल्लेख उनकी डायरी व पत्रो मे है।

महाराज (नारायणदासजी) की बरसी 6 1 84 को अबके अपने यहा भी करेगे। आजकल प्रसाद मे ही 2 3 हजार खर्च हो जाते होगे। कहते है कोई खाकर राजी होता है कोई खिलाकर राजी होता है। इस पद्धति से मानवीय स्नेह तो बढ़ता ही था। पहले वक्त मै पिताजी एसे अनुष्ठान करते थे। पत्रम् पुष्पम् (पत्र 26 12 83) 13 12 85 को हड्डी टूटने के बाद बीकानेर से वापिस गाव आने पर, टोकले वाले बाबा का जमा लगाया चूरमा किया। पहले दियातरा मे एक मन्दिर का निर्माण कराया था। (डायरी 13 12 85)

ज्योतिष, ग्रह नक्षत्रो की स्थिति, शकुन, स्वर, स्वप्न फल आदि म भरोसा करते थे। पशु पक्षियों की स्थितियो बोलियों, दीपावली पर दीपक, होली पर ज्वाला के लक्षणों एव हवामान आदि से आने वाले शुभ अशुभ का अनुमान करने का स्वभाव था। इन सबका उल्लेख डायरी व पत्रो म खूब किया है।

बीकानेर के प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री रामप्रसादजी सहल के प्रति सम्मान और आस्था थी। सभी शुभ कार्य व्यवसाय आदि का प्रारभ उनके बताये वेला पुल म करने से कार्य ठीक होता है ऐसा अनुभव करते थे। (पत्रम् पुष्पम् पत्र 8 11 83)

कुए मे से जल निकलने पर पूजा करके मढ़ के मन्दिर म चढ़ाया।

(डायरी 4 अगस्त, 85)

वे आडम्बर मे विश्वास नहीं करते थे। साधु वेष और कर्मकाण्ड म श्रद्धा नहीं थी। परन्तु साधु चरित्र के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे। सन्त श्री नारायणदासजी के प्रति गहरी आस्था और प्रेम था। बाबा ग्राम सिडा के वासी थे, दियातरा के भाणजे थे। वे सन्यासी थे फिर भी गृह त्याग नहीं किया था। उन्होंने वर्षों फल फूल खाकर मध्य प्रदेश म 12 वर्षो तक कठोर तपस्या की थी। उन मे योगबल और आध्यात्मिक शक्ति थी। जिसके बल पर उन्होंने श्री छलाणीजी और उनकी धर्म पत्नी को कई बार कष्ट मुक्त किया था। मोतीझरा की गभीर स्थिति में नारायणदास बाबाजी ने श्री छलाणीजी के मुह मे अपना अगूठा दिया जिसे चूसकर छलाणीजी ने शक्ति के सचार का अनुभव किया और स्वस्थ हो गये। श्रीमती जेठीदेवी छलाणी को भी रोग मुक्त किया। (श्रीमती पुष्पा छलाणी, डॉ चन्द्रा छलाणी)

कोई भी शुभ कार्य, यात्रा आदि से पूर्व तथा कठिनाई मे नारायणदासजी महाराज के दर्शन करते थे। नारायणदासजी किसी से दान दक्षिणा नहीं लेते थे फिर भी जगह जगह शालाए खुलवाने गरीब कन्याओं के विवाह दीन दुखी का मदद रोग कष्ट मुक्ति और यज्ञ के कार्य करवाते थे। उनमे चमत्कारिक शक्ति थी।

श्री छलाणीजी के प्रति उनका प्रेम था और छलाणीजी की उनके प्रति अटूट श्रद्धा थी। किसी भी कठिनाई के अवसर पर श्री छलाणीजी बाबा के पास जाते थे। बाबाजी समाधान के रास्ते का सकेत कर देते थे। 30 जून 1961 को बाबाजी के देवलोक होने पर श्री छलाणीजी ने दोहा लिखा—

द्वैत गया दुख देवन हारा
चित चमक्या अद्वैत उजारी।
स्थिर करो सिद्धा रा श्याम
भैरू करै लाख प्रणाम।।

इस प्रकार द्वैत से अद्वैत की ओर स्थिर होने का भाव लक्षित होता है।

भादरिया महाराज (सत श्री निरजनसिहजी) के प्रति भी उनकी श्रद्धा थी। भादरिया महाराज गो सेवा विद्या प्रसार और लोकहित के कार्य में सलग्न योगसिद्ध सन्त हैं।

श्री छलाणीजी की श्रद्धा के केन्द्र ऐसे सन्त महात्मा बने जो अपनी साधना के साथ लोक उपकार, सामाजिक कल्याण और कर्म में जुटे रहते हैं। वे परहित को ही धर्म मानते थे। दूसरों के दुख निवारण स्वय कष्ट और हानि उठाकर भी करने को तत्पर रहते थे।

वास्तव म उन्होंने अहिसा अपरिग्रह, करुणा धैर्य सहिष्णुता निष्काम कर्म और परहित को जीवन में साध लिया था। ये उनके सहज स्वभाव थे, इसका अभ्यास उन्हें नहीं करना पड़ता था। ऐसी सहज वृत्ति विरले सन्तों को ही प्राप्त होती है। वे गृहस्थ थे परन्तु सन्त थे।

उन्होंने वर्णाश्रम धर्म में अपनी आस्था के अनुसार 15 6 75 की डायरी में उल्लेख किया है– मिथुन सक्रान्ति दिवस जेठ सुदी 6 2032 यह पर्व–कल्पित दिन सम्बल और खुशी का कारण हो। मानसिक दृष्टि से मैं आज से निवृत्त जीवन जीने की कोशिश करूगा।

निवृत्ति का अर्थ सासारिक कार्य त्याग करके कर्म छोड़ देना नहीं था। अपितु व्यवसाय और अर्थोपार्जन स्वय के लिये नहीं करके घर में रहते हुए समाज सेवा के कार्य में प्रवृत्त होना था। इस प्रवृत्ति के द्वारा कर्मफल त्याग, निष्काम कर्म की साधना करना था।

मै आश्रम व्यवस्था का हामी हू तथा यह भी मानता हू कि मनुष्य शरीर 75 साल का हो जाय तो सन्यास ले लेना चाहिए। यह सन्यास शास्त्र सम्मत भले ही

न हो व्यक्ति के मन सम्मत तो होगा। वानप्रस्थ मे मैंने मन से खेती और समाज सेवा पर मन लगाने का तय किया था। (पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 17 12 81)

इधर विवकानन्दजी के साहित्य को पढ़ने स आत्म दर्शन की तरफ भी बढ़ा हू। मानव योनि म क्या चाहिये।' (पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 22 11 81)

मानसिक सन्यास तो हो ही सकता है और उसके लिए 75 साल की उम्र की हद भी जरूरी नही है। सन्यास में तो देना अधिक, लेना कम मुख्य है। अनुभव का लाभ दिया जाये तो नई पीढ़ी का उत्साह बढ़ता है।

(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 29 12 83)

उन्हाने इसीलिये अपने प्रत्येक कर्म मे व्यवहार शुद्धि की सतर्कता बरती। नैतिकता की पूरी पालना करते हुए ही कर्म किया। नैतिकता धर्माचरण की अनिवार्य शर्त है। उसके अभाव में धर्म आडम्बर प्रवञ्चना और धोखा होता है। श्री छलाणीजी ने धन की लालसा या प्रसिद्धि, प्रचार और प्रतिष्ठा की लिप्सा नही रखी। कर्म का लक्ष्य रखा वह था परहित। दीन दुखी का, समाज का व्यापक हित जिससे सधे–उसी कर्म को धर्म मानकर किया।

इसलिए उनकी धर्म दृष्टि गीता के यथार्थ कर्म और फल त्याग से निसृत सचालित थी। उनकी पुरुषार्थ साधना को गीता दिशा देती थी। रामायण सम्बल देती थी। वे घर मे सभी आवश्यक वस्तुए पर्याप्त मात्रा में रखते थे। परन्तु अपने लिये खादी की कमीज धोती, कोट और जूते की जोड़ी से अधिक नहीं। मितव्ययी थे। बहुत सादा बिना मिर्च मसाले की उबली सब्जी दूध उनका भोजन था–मितभोजी थ। बहुत मीठे बोलते थे और सक्षेप मे परन्तु सारगर्भित बोलते थे–मित्त और मिष्ठ भाषी थे। (श्री भूपसिह श्री बनेसिह, वैद्य श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा)

वे शरीर रक्षा के लिये कम से कम वस्तुओं का स्वय के लिये उपयोग करते थे। घर की अन्य उपयोगी वस्तुओ और सम्पत्ति को समाज की बताते थे उनका समाज हित म उपयोग हो। अगर लक्ष्मी मिली है तो उसका जन जन को लाभ मिलना चाहिए। ऐसी धारणा थी और आचरण था।

पानी बाढ़े नाव मे, घर में बाढ़े दाम।
दाऊ हाथ उलीचिये, यही सज्जन को काम।।

(श्री भूपसिह श्री कमलचन्द पुगलिया, श्री मुरलीधर सक्सेना)

उन्हाने घर के बर्तनो पर कोई नाम नहीं खुदवा रखे थे। इसका कारण पूछा तो बोले घर में अनेको लोगो का आना जाना है किसी को आवश्यक्ता हो ले जाये तो उसके काम आये उसके मन मे अपराध बोध नहीं हो। (श्री मुरलीधर सक्सेना)

उन्होंने जो भी जनहित के काम किये कुआ, तालाब, विद्यालय, आतिथ्य गा सेवा जरूरत मन्द की मदद, इस ढग मे किया जिससे उनका नाम प्रचार नहीं हो, उन्हें उनका बखान पसन्द नहीं था। गुरु नानक देव ने कहा है—

राम की चिड़िया राम का खेत, खाओरी चिड़िया भर भर पट

उन पर सही चरितार्थ हाती है। (श्री भूपसिंह श्री मुरलीधर सक्सेना)

वे सही अर्थों में जैन थे—अपरिग्रह क्षमा अहिंसा, निस्पृहता की मूर्ति थे। आचार्यश्री तुलसी ने कहा था 'आपको यदि सच्चे श्रावक से प्रेरणा लेनी है तो श्री भैरूदान छलाणी आपके सामने बैठे हैं। मै उनकी सेवा भक्ति और जीवन का देख गद गद हू। (श्री वीरसेन पुगलिया)

श्री कोलायत मेले म श्री भैरूदानजी का मच पर अपने पास बैठाकर—स्वामी रामसुखदासजी ने उनके लिए कहा— भैरू गो भक्त है गृहस्थ, सन्यासी और सत है। (श्री बनसिंह, श्री बशीधर जोशी)

वे तत्वत' और आचरण स जैन थ। सभी आचार्यों, सन्तो, साध्वियों का दर्शन सेवा करते थे। अणुव्रत व जैन विश्वभारती के लिये आर्थिक योगदान दिया करत थे परन्तु जैन धर्मावलम्बियों के सिद्धान्त और आचरण में भेद की आलाचना भी कर देते थे— जैन में तेरह पथ के प्रभाव से खिलाकर राजी होने की बात लुप्त हो गई
(परम् पुष्पम् पत्र 26 12 83)

उनके काकाजी का देहान्त गगाशहर में 3 10 78 को हो गया था। वे वृद्ध थे और रुग्ण थे। अन्तिम समय म सथारा करा दिया गया था। श्री छलाणीजी इस के पक्ष म नहीं थे। इसलिये शोक पत्र में अपना नाम नहीं देने दिया क्योंकि उसम सथारे का उल्लेख था।

मिलने वाले आये। सथारे की खूब चर्चा रही। असल में शरीर अन्न पानी न मागता हो तो उसका त्याग बेमानी और मजाक सा है।

परचावनी के कार्डों में उसका जिक्र था इसलिए मैंने अपना नाम नहीं रखने दिया सिर्फ चतुरभुज का ही रखा। (डायरी 4 10 78)

आचार्य देव नाल से मील में (छलाणी वुलन मिल बीकानेर) पधारे। उनक साथ साधु साध्विया 23 की सख्या मे रहे। मिल वाले कुल 10 12 की सख्या में हागे। रसोई बूदी भुजिया पूड़ी की थी। आचार्य देव ने पूछा कि इस भोजन बनाने म हमारे भाव तो नहीं भेले हैं क्या? (अर्थात भोजन हमारे लिए तो नहीं बनाया है) अवश्य दूसरे गृहस्था की तरह मिल वाला ने भी ना में ही कहा क्योंकि इसे धर्म पालन के नाम स समझाया गया है (कि जैन साधु के लिये आहार नहीं बनाया जाना चाहिए। अपने लिये बनाये हुए मे से भिक्षा दी जाये नहीं तो साधु को आहार नहीं कल्पता) लेकिन धर्म पालन के नाम पर झूठ इतनी सहलाई से सिखा दी जाती है तो उस समाज

मे उच्च आचार की तो नींव किस आधार पर रखी जाय। जो बच्चा गुरुदेव के सामने झूठ का पाठ पढ़ लेता है वह अपनी आयु मे किस को धोखा नही दे सकेगा इसका क्या पता है। (श्री भैरूदानजी छलाणी की हस्त लिखित टिप्पणी)

श्री छलाणीजी त्याग, सत्य तथा मानवीय स्नेह की तात्विक सूक्ष्मता एव व्यावहारिक शुद्धता को लक्षित करते हैं। स्वधम की पालना के प्रति उनकी सूक्ष्म आलोचक दृष्टि रही है।

उनका धर्म मत और ग्रन्थों में बधा नहीं था। उनका धर्म मन में बसा और कर्म मे व्यक्त होता था। इसलिये वे सभी धर्मों के तत्त्व सार को ग्रहण कर लेते और समान आदर करते थे।

सब गुणो के अलावा सबसे बड़ा गुण था–सर्व धर्म समभाव। स्वय जैन धर्म के अनुयायी थे लेकिन किसी भी धर्म और सत् साहित्य के प्रति उनकी श्रद्धा थी। मुझ से उन्होंने दादू ग्रन्थावलियों को मगवाया और उनका गहराई से अध्ययन किया। इस धार्मिक समादर भाव के लिये मेरे मन में ऊचा स्थान बना हुआ है।

(वैद्य श्री दयाल स्वामी)

दियातरा में उनके निवास स्थल पर मेरा कई बार जाने का काम पड़ा। तब मेरा जैन दर्शन पर उनसे वार्तालाप हुआ। उनकी आध्यात्मिक क्षेत्र में गहरी पैठ को देखकर मैं उन पर गर्व करने लगा। उनको शुद्ध गाधीवादी सन्त ही मानता था।'

(श्री उम्मेदसिह भाटी)

श्री भैरूदान छलाणी अपने और अपनी साधना के बारे में कुछ नहीं बोले। उनका जीवन ही बोलता है। कथनी और करनी की एकता, स्व और सर्व की एकात्मता उनके जीवन में सिद्ध हुई है। (डॉ धर्मचन्द्र)

सुधार सस्कार

भैरूदानजी का जन्म जिस समय हुआ वह सामन्ती युग था। तत्कालीन समाज में शिक्षा का प्रसार कम था तथा समाज अनेक कुरीतियों और रूढ़ियों से ग्रस्त था। उनका पालन पोषण भी ऐसे ही वातावरण में हुआ था जिसमे पर्दा प्रथा दहेज मृत्युभोज स्त्रियों के प्रति विषम दृष्टिकोण, छुआछूत आदि दूषण भूषण के रूप म मान्य थे। श्री छलाणीजी भी उन सबको उसी रूप मे मानते, सम्मान देते थे। परन्तु ज्यों ज्यो आजादी के मूल्यो और गाधी विचार से जुड़े उनके विचारो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। समाज सुधार के लिये परिवर्तन उन्होंने स्वय और स्वय के परिवार से ही प्रारभ किये।

सन् 1936 स उन्होने खद्दर पहनना शुरू कर दिया था। (पत्र दिनाक 17 9 1943) और उनके भाइयों श्री आशकरणजी व मुन्नीलालजी ने उनका अनुसरण किया। घर मे

सुधार व परिवर्तन की शुरूआत हुई। इसके साथ ही खान पान रहन सहन और जीवन शैली मे बदलाव पूरे परिवार मे आया। बिना मिर्च मसाले का भोजन हाथ से काम करना कुरीतियो छुआछूत आदि का निवारण तथा भारतीय ग्राम संस्कृति और गाधी विचार के अनुरूप जीवन व्यवहार विकसित हुआ। उनके लड़के श्री भवरलाल फूसराज भी खादी पहनते हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन का चरखा केन्द्र बना। छलाणी परिवार मे खादी परिवर्तन का प्रतीक बनी।

उनमे परम्पराओं के प्रति गहरी आस्था थी। जब तक किसी परम्परा की बुराई और अनौचित्य समझ मे नहीं आया उसका पालन किया। परन्तु बुराई समझ में आ जाने के पश्चात् उसके त्याग का पूरा प्रयास किया। किसी भी बात को बिना तर्क सगत कारण और प्रयोग से प्राप्त अनुभव के बिना स्वीकार या अस्वीकार नहीं किया। परिवर्तन की शुरूआत वे स्वय से ही करते थे। सुधार किसी पर भी थोपने के पक्ष मे वे नहीं थे। (डॉ धर्मचन्द्र)

तत्कालीन परम्परा के अनुसार सिर पर पगड़ी रखते थे। कहीं भी बिना पगड़ी आते जाते नही थे नगा सिर रखना गलत मानते थे। परन्तु बाद में उन्होने सम्वत् 1928 से पगड़ी रखना और उसका आग्रह छोड़ दिया।

उस समय में स्त्री का सम्पत्ति पर्दा और लाज का सम्मान सूचक माना जाता था।

प्रथा के अनुसार माता पिता बड़े बूढ़ो के सामने अपने बच्चो को गोद मे लेकर खेलाना तो दूर बच्चे जिस कमरे मे हो उस मे दिन मे पैर तक नहीं रखते थे। श्री भवरलालजी छलाणी बताते है कि उनके पिताजी की 35 वर्ष की उम्र तक के जीवन की उनको प्रकट जानकारी कम ही हुई क्योकि श्री छलाणीजी अधिकाशत तेजपुर रहे। 1935 36 मे मा (श्रीमती जेठी देवी) को भी तेजपुर साथ ले जाने लगे थे। श्री भवरलालजी अपने दादाजी दादीजी के पास ही रहते। उनके पिताजी जब भी तेजपुर से आते तो उन से दूर ही रहते। दादाजी दादीजी (1942 43) के देहावसान के बाद ही वे पिताजी के पास बैठने उठने लगे। उसके बाद छलाणीजी ने अपने बच्चो के पालन पोषण शिक्षण और सस्कार की ओर पूरा ध्यान दिया। पुत्री मीना (चौपड़ा) के सिवाय दोनो पुत्र पुत्री पुष्पा व पौत्रियों को उच्च शिक्षा दिलवाई।

श्री छलाणीजी पर्दा प्रथा और दहेज के विरोध मे थे। उन्होंने अपने सभी पुत्र पुत्रियो की शादी बिना पर्दा और बिना दहेज व बिना किसी आडम्बर के की थी। सन् 1955 में बड़े पुत्र श्री भवरलाल की दूसरी शादी परिवार में पहली सुधारक शादी का अवसर था। जो उस समय की आदर्श शादियो मे थी। परन्तु पुत्रवधु रतनीदेवी तत्कालीन ग्रामीण समाज के वातावरण मे घूघट रखने को विवश थी।

(श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, श्रीमती रतनी देवी)

बड़े पुत्र श्री भवरलाल ने अपनी दूसरी शादी के बाद पर्दा उन्मूलन के लिये प्रतिज्ञा कर ली थी कि उनकी पत्नी श्रीमती रतनीदेवी अगर मुह ढकती है तो वे अपना मुह नहीं दिखायगे। श्री छलाणीजी ने लिखा है– भवर की बहू को पर्दा रखने की हम किसी न आज्ञा नहीं दी है। ता भी वह सारा के साथ मुह ढके तो हम फर्जियात रूप से मुह खोलने का दबाव नहीं दे सकत क्योंकि विवाह की शर्तो मे पर्दा नहीं था। इसी तरह किसी पर प्रेम विहीन दबाव डालकर होने वाला सत्याग्रह दुराग्रहमात्र है। तर्क और व्यावहारिकता में समन्वय रखे बिना, तक का गाड़ा बहुत दूर जाय ऐसा मै तो नहीं मानता। हमारी तरफ से भवर की बहू को मुह खुला रखने की छूट है लेकिन भवर इस छूट का उपयोग न करे तो शोभनीय माना जाये।'

(श्री मूलचन्द नौलखा भेरूदानजी के पत्र 27 2 55)

सामाजिक दोषा के सुधार मे छलाणीजी स्वेच्छया सुधार के पक्षधर थे। दबाव व जबर्दस्ती को उचित नहीं मानते थे।

वे परम्परा और रूढ़ि मे भेद करने की विवेक बुद्धि से सम्पन्न थे। अच्छे रीति रिवाज और परम्पराओ के पालन में व्यवहार का सन्तुलन रखते थे। परिवर्तन के अनुकूल मानस व वातावरण प्रेम व धैर्य के साथ तैयार करते थे। उसमे वे किसी के विरोध की भी परवाह नहीं करत थ।

विवाह शादी और तीज त्यौहार खूब आनन्द के साथ मनाते थे। उनमे पूरा रस लते थे। सभी प्रसगों पर सगे सम्बन्धिया और मित्रो को याद करके बुलाना और उनके यहा जाना बहुत अच्छा लगता था। इन अवसरों पर गरिष्ठ भोजन के पक्ष म नहीं थ, परन्तु विविध प्रकार के परम्परागत व्यजन बनवाते थे। परम्परा व पव के महत्त्व रुचिकर सात्विक एव पौष्टिक व्यजना के वैविध्य का ज्ञान व परिचय नई पीढ़ी को देते रहने का शिक्षण होता था। स्वय सादा भाजन करत थे परन्तु स्वजनो अतिथिया को प्रेमपूर्वक खिलाने से खूब आनन्दित होते थ।

(श्रीमती पुष्पा पुगलिया डॉं चन्द्रा छलाणी)

दीपावली पर परम्परागत रूप से घर आगन व झोपडों की गोबर मिट्टी, धोलक आदि से पुताई करवाते तथा माडणे मण्डवाते। जिनमें स्वस्तिक, रुपये लड्डू, पगलिये आदि अकित करवाते। अपने हाथो से शुभ चिन्ह व रामायण के दोहे लिखते। दीपावली का पूजन विधिपूर्वक करते और दापको के जलने बुझन के आधार पर आगामी वर्ष में जमान का अनुमान करते थे। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

होली के अवसर पर अच्छे सामूहिक गीतो का आयोजन करवाते थे जिसमें गाव के लोग सम्मिलिन होते।

शरद पूर्णिमा की रात में मतीरों का चादनी में रखा जाता और दूसरे दिन परिवार को सम्बन्धिया व मित्रों को विशेष रूप से आमन्त्रित करके अपने हाथा

स मतीर गिलात और गूब प्रपुल्लित हात। गिलावर गुश हाग उनका स्वभाव था।

घर के बच्चों बहुओं व किसी का भी सत्कार, शिक्षित वर्ग का उनका ढंग अत्यन्त सरल स्वाभाविक और सटीक हाता था। किसी का भी ताना या उपदेश नहीं देत थे। रामायण के दोहा कथा प्रसगा लाकाक्तिया व बड़ छोट लागों के सग हुई वाता अथवा घटना महापुरुषा क जीवन प्रसगा क द्वारा व बात का मन में उतार देते थ। बच्चों को खूब प्यार करते व कथाए सुनाकर खूब हसाते और स्वय भी हसत थे। कथा वार्ता सुनने सुनाने की उनकी वृत्ति थी।

(डॉ चन्द्रा छलाणी श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

श्री कुमराज एव चन्द्रा जब जयपुर म पढ रहे थ तब कुमराज को लम्बा मातीझरा हा गया। बहुत कमजार हा गय थ। श्री छलाणीजी न महात्मा गाधी के उपवास व बीमारी के समय कस्तूरबा द्वारा की गई सेवा और रखे गये सयम का प्रसग सुनाकर पुत्रवधू का सारा सन्देश दे दिया। (डॉ चन्द्रा छलाणी)

वे अपनी पुत्रवधुओं को बेटियों और बेटों की तरह ही लाड़ प्यार देत थे और सभी विषयो पर चर्चा करते थे। लड़के और लड़कियों के बीच भी कोई भेदभाव नहीं रखत थे। पौत्री ऋता के जन्म होने पर दीनहट्टा म थे। पत्र लिखा पुत्र होने पर जो उत्सव हाते हैं यथा गुड़ बटवाना बधाई देना आदि सब किया जाये। किन्तु उसी दिन परिवार में कुन्दनमलजी की लड़की क गुजर जाने से नहीं हो पाये। दोना का ही पढने खेलने खाने और सब तरह स समान अवसर देते थे। इसी का परिणाम रहा कि घर की सब बच्चियों ने स्नातक और अधि स्नातक उपाधिया प्राप्त की। अपनी पुत्र वधुओं—श्रीमती नयनतारा और श्रीमती चन्द्रा को विवाह क बाद आगे पढ़ाई की सारी सुविधाए उपलब्ध कराईं। छोटी पुत्र वधू के लिय तो जयपुर और बीकानेर में अध्ययन हेतु मकान किराये पर लेकर सपरिवार रहने की व्यवस्था की। वह एम ए और पीएच डी उपाधि प्राप्त कर तिनसुकिया (असम) में हिन्दी की प्रोफसर है।

(श्रीमती नयनतारा, डॉ चन्द्रा छलाणी)

स्वस्थ परम्परा एव अच्छे रीति रिवाज के पालन सात्त्विक भाजन स्वास्थ्यपूर्ण रहन सहन और अतिथि सत्कार की उत्तम व्यवस्था का पूरा ध्यान रखते थे। उस पर उदारतापूर्ण खर्च करते थे। किसी भी आवश्यक वस्तु की कमी सहन नहीं होती थी। आवश्यकताओं को सीमित रखने के पक्षधर थे अत घर म अनावश्यक वस्तुए और अनावश्यक शौक नहीं रहे। रहन सहन और पहनावें में एक दम सादगी रही। परन्तु रूढ़ियों पर तथा अनावश्यक खर्च करना उन्हें अखरता था। इन पर खर्च करने वालो की सहज व सरल मन से आलोचना भी करत थे।' (डॉ चन्द्रा छलाणी)

सात्विक पोषण के लिये घर में गाय रखना आवश्यक समझते थे। इसलिए घर मे खूब गाय, बैल व पशु रखे। दूध, दही, घी भरपूर रहा।

गाव के जो भी लोग आते उनके लिये छाछ खुले हाथ उपलब्ध कराते थ। किसी दिन छाछ की हुई नहीं होती तो वे कह देते थे, दही दे दो। इनके लगावण की जरूरत पूरी होगी।

घर में काम पर रहने वाले आदमी औरतो व बच्चा का घर के सदस्यों की तरह ही ध्यान रखते। उनके भोजन वस्त्र के अतिरिक्त घर के बच्चो बूढ़ो की भी चिन्ता रखते। उन्हे यथोचित मदद बिना मागे ही कर देते थे।

घर मे खूब गाय बैल बछडे ऊट रखते थे। खेत व खेती खूब थी जो उनके दैनन्दिन जीवन का अग ही थी। हाली बालदी आदि रखते थे फिर भी छलाणीजी स्वय अपने हाथा से गाय दूहते उन्हे पुजालना सहलाना, नहलाना चारा नीरा देना खेत म काम आदि छलाणीजी स्वय करते थ। परिवार के सभी सदस्यो को श्रम का सस्कार सहज प्राप्त होना था।

घर के बच्चा म ऊच नीच का भेद तथा नौकर मालिक का भेदभाव उत्पन्न नहीं हो, इसके लिए घर में रहने वाले हाली बालदी को वे सम्मान और जी के साथ सम्बोधित करते थे और बेटे बेटियो को उनके साथ एक ही थाली मे भोजन कराते जिससे समानता और स्नेह का सस्कार बनता।

(श्री फूसराज, श्रीमती रतनी देवी)

समस्त तीज त्यौहार, पर्व उत्सव, प्रसगों का खूब आनन्द के साथ मनाते थे। अच्छे गीत, लोकगीत, सगीत, नृत्य का आयोजन करवाते थे। खूब आनन्दित होते थे। खेत या यात्रा मे जाते समय बच्चों से सर्वोदय के गीत और भजन गवाया करते थे। राम लीला गाव मे आती तो उसका खेल अवश्य कराते। सारे परिवार सहित खुद सम्मिलित होते थे। रामायण के प्रेमी थे रामलीला के द्वारा सुन्दर पारिवारिक सस्कार उनका प्रयोजन रहता था। स्कूल के बच्चो के कार्यक्रम व नाटक आदि को प्रोत्साहित करते थे, बच्चा को पुरस्कृत करते।

(श्री भूपसिह, श्री मुरलीधर, श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

पूरे गाव म परिवार भाव के सस्कार का ध्यान रखते। घर मे गीत और नृत्य हो रहे होते और अगर गाव में किसी की मौत हो जाती तो वे घर पर गाना नृत्य एकदम से बन्द करवा दते। कहने दूसरों के दुख को अनुभव करना और उसके लिए अपनी खुशियों पर अकुश रखना चाहिए।' (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

श्री छलाणीजी ने अपने विचारा क अनुरूप अपने जीवन मे आचरण किया। सादगी, सयम, सेवा और श्रम का सस्कार परिवार को बहुत प्रेम के साथ दिया। इस प्रकार के सिद्धान्तनिष्ठ जीवन में भी खूब प्रेम और आनन्द का सृजन किया। परिवार

के प्रति उनका प्रेम गहरा था। उसका प्रमाण है कि बिना किसी दबाव और जबर्दस्ती के स्वेच्छया उनके निर्णयों को सभी परिवारजन सहर्ष स्वीकार करते थे। नई पीढ़ी में विरोध का भाव उत्पन्न नहीं हुआ। पत्नी पुत्र पुत्रियों और पुत्रवधुओं में उनके संस्कारों की गहरी छाप है। (श्री बनेसिंह बीठू)

घर परिवार में अप्रिय प्रतिकूल या तनाव की स्थितियों में भी समभाव बना रहता था। मन में कुछ आये तो बाहर फटने नहीं देना चाहिए। दूध में उबाल आना स्वाभाविक है परन्तु बर्तन से बाहर उफान नहीं आना चाहिए। वे गांधी विनोबा की प्रतिमूर्ति थे। (श्रीमती रतन देवी)

संयुक्त परिवार के मुखिया बापूजी

उनका पितृतुल्य प्रेम हर किसी को मिला। सबके लिये बापूजी थे।

छलाणिया के छः भाईयों का व्यवसाय तो संयुक्त था ही परिवार भी संयुक्त था। व्यवसाय में मुखिया के साथ संयुक्त परिवार के भी वे मुखिया थे। वे बड़े भाई थे परन्तु उन्होंने पिता के धर्म का निर्वाह परिवार के संचालन में किया।

1955 में जब बड़ी पुत्रवधू विवाह के बाद ससुराल आई। संयुक्त परिवार के वातावरण के बारे में लिखती है जब मैं ससुराल पहुंची तो वहां का माहौल देखकर और ही दंग रह गई। श्वसुरजी चार सगे भाई एवं दो चचेरे भाई थे। 6 भाइयों का परिवार जो लगता था कि एक ही भाई का परिवार है। पता नहीं लगता था कि कौन साथ है कौन अलहदा (श्रीमती रतनीदेवी छलाणी)

भाइयों के प्रति उनका प्रेम राम के भातृ प्रेम का अनुसरण था। किसी भी भाई परिवार के सदस्य और घर व्यवसाय में काम करने वाले हाली मुनीम किसी को भी कड़ु शब्द या उलाहना तक उन्होंने नहीं दिया। संयुक्त परिवार के हर सदस्य की आवश्यकता पूर्ति का सामान रूप से ध्यान रखते थे। किसी भी भाई को दिसावर जाने के लिये बाध्य नहीं किया। परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार संयुक्त परिवार के व्यवसाय को बढ़ाया और संभाला। बदलती परिस्थितियों में आवश्यक लगा तब संयुक्त परिवार की सम्पत्ति और व्यवसाय का बंटवारा भी बहुत प्रेम से कर दिया। वे स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों की प्रसन्नता का ध्यान रखते थे।

परिवार में उनका स्थान और सम्मान विशिष्ट था। परिवार के सभी लोग उनको पूरा सम्मान देते थे। उनका निर्णय सर्वमान्य होता। एक बार भाईजी (श्री भैरूदानजी) ने जो कह दिया वही शिरोधार्य होता था। वे कभी कोई निर्णय थोपते नहीं थे। अपनी बात को बहुत ही धैर्यपूर्वक मधुरवाणी में रामायण या महापुरुषों के प्रसंग अथवा किसी लोकोक्ति अथवा घटना के दृष्टांत में समझा देते थे। (श्रीमती

हारी बीमारी और बिना प्रसगा के भी मिलने बिना किसी औपचारिकता के स्वय कष्ट उठाकर भी उपस्थित हो जाते थे। सम्वत् 1997 में गभीर बीमारी से उठे थे, पूर्ण परहेज चल रहा था फिर भी अपने छोटे साले की शादी में उपस्थित हुए।

श्री सन्तोकचन्द गोलछा परीक्षा के कारण बहन की शादी में नहीं पहुच सके परन्तु सगों के यहा शादी म दीनहट्टा से नाखा अस्वस्थता के बावजूद लम्बी यात्रा करके पहुचे। (श्री चनणमल गोलछा श्री सन्तोकचन्द गोलछा)

उन्होने अपने पुत्र पुत्रियों के सगाई सम्बन्ध मे धन और आर्थिक स्थिति को कभी माप दण्ड नहीं बनाया। सगाई सम्बन्ध का आधार गुण व प्रेम सस्कार और योग्यता को ही रखते थे।

वे ध्यान रखते थे कि सम्बन्धियों को कोई कष्ट न हो। सगे सम्बन्धियों की जरूरत को स्वत ही समझ कर उनको बताये बिना ही सहयोग करवा देते और स्वय कर देते थे।

इस सदर्भ मे बड़े पुत्र श्री भवरलाल (श्री चनणमलजी गोलछा श्री जिनेन्द्रकुमार जैन श्रीमती रतनीदेवी) श्री फूसराज (डॉ धर्मचन्द्र डॉ चन्द्रा छलाणी) डॉ धनराज (श्रीमती नयनतारा) एव पुत्री श्रीमती पुष्पा (श्री कमलचन्द पुगलिया) आदि के विवाह सम्बन्धों के उल्लेखनीय प्रसग हैं। श्री चनणमल गोलछा व डॉ धर्मचन्द्र के मन में छलाणीजी के यहा सम्बन्ध का प्रस्ताव करते भारी सकोच था कि छलाणीजी इतने सम्पन्न और वे साधारण स्थिति के बीच सम्बन्ध कैसे होंगे। परन्तु छलाणीजी ने तुरन्त स्वीकृति द दी।

श्री भैरूदानजी व आशकरणजी डॉ धनराज की सगाई के लिये नयनतारा के घर सहज भाव में चले आये थे और सम्बन्ध तय कर दिया था। उनके मन में यह दभ कभी नहीं रहा कि लड़के वाले चलाकर सम्बन्ध तय होने से पहले लड़की वाले के यहा बिना आमन्त्रण के कैसे जायें।

लड़की वाले के घर लड़के वालों का बिना आमत्रण आना वह भी तब जबकि रिश्ता तय होना बाकी था अटपटा सा लगता था। परन्तु उनकी यह सादगी और समभाव ही था। आपसी रिश्ते में दभ को त्याग कर मधुरता और सहजता ही कायम की। सगाई सगुन के रूप में मात्र दो रुपये व नारियल स्वीकार कर फिर पूर्ण सादगी किन्तु आत्मीय भाव से मुझे अपने परिवार की पुत्रवधू बनाकर लाये।

(श्रीमती नयनतारा छलाणी)

पुत्री पुष्पा की सगाई के लिये मात्र चार बिन्दु देखे—(1) परिवार में स्त्री स्वतन्त्रता हो (2) गरीबों के प्रति आदर हो (3) लड़का निर्व्यसनी हो (4) उद्यमशील हो। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया भैरूदानजी का पत्र दिनाक 12 1 75)

छोटे पुत्र श्री फूसराज की सगाई के लिए उनकी शर्त थी गांधी विचारों का आदर हो, पर्दा व दहेज नहीं हो, पांच सौ रूपए से अधिक खर्च नहीं हो।

(रिखबराज कर्णावट)

'16 मई को देखा और कह दिया– बात पक्की। 17 मई को सामान्य औपचारिकता से मेरा विवाह सम्पन्न हो गया। अत्यन्त सादगी पूर्ण ढंग से बिना बाजे बरात आई। खाने में कच्ची रसोई बनाई गई। बराती भी सहज सामान्य दिखावट का नाम नहीं मेरी बरी की साड़ी सफेद जरी की थी जिसे बापूजी लाये थे।

बहू की सामान्य अगवानी के बाद बड़े रूप में स्वागत समारोह हुआ जिसमें गुड़ का हलुवा पकोड़ी, सब्जी, पूड़ी का सादा भोजन रखा गया था। उस समय चीनी का कण्ट्रोल था। काले बाजार से सामान लाकर मिठाई बनाने के पक्ष में श्वसुरजी (छलाणीजी) नहीं थे।'

(डॉ चन्द्रा छलाणी)

श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन ने श्री भवरलालजी से उनकी बहन रतनीदेवी से सगाई विवाह के सन्दर्भ में लिखा है–'श्री भवरलालजी की बरात में कुल पच्चीस बराती ढोलकिये समेत लाये थे, क्योंकि बरात में बेण्ड बाजा उन्हें पसन्द नहीं था। दहेज में एक पैसा भी नहीं लिया। दुल्हन के लिये खादी के साड़ी, ब्लाऊज लहगा लेकर आये थे, उसे ही पहनाकर दुल्हन को घर ले गये। दियातरा में पहली खुले मुह आई नई बहू को देखने झुण्ड के झुण्ड लोग आये।'

(श्री जिनेन्द्रकुमार जैन, श्रीमती रतनीदेवी)

पुत्रों की शादियां उन्होंने बहुत सादगी एवं बिना दहेज के की। विवाह में आडम्बर पर्दा प्रथा और दहेज के विरोधी थे। उनका नियम था कि छलाणी परिवार के युवक की शादी में 25 से अधिक बराती नहीं होंगे। शादी में किसी प्रकार का लेन देन स्वीकार नहीं करते थे। (श्री जिनेन्द्रकुमार जैन श्री दीपचन्द भूरा)

लोग सगाई सम्बन्ध के समय कहते तो यही है कि कुछ नहीं चाहिए घर घराना देखते हैं परन्तु उस में निहित भाव कुछ और ही रहते हैं। परन्तु श्री छलाणीजी की कथनी और करनी में यह भेद नहीं था।

समधियों से उनके सम्बन्ध वास्तव में 'सगा सगे की जड़' को ही चरितार्थ करते है श्री चनणमलजी गोलछा ने उल्लेख किया है कि उनको बिना बताये ही उनके कर्ज को चुका दिया। पिताजी के औसर के समय उपस्थित होकर पहले तो मौसर नहीं करने का ही परामर्श दिया परन्तु उनकी (गोलछाजी) स्थिति को समझते हुए रकम साथ लाये थे। श्री फूसराजजी छलाणी के श्वसुर श्री गोपीचन्दजी नाहटा रेल से गिर कर दुर्घटनाग्रस्त हो गये। श्री फूसराजजी की सासु श्रीमती चम्पाकुवर लिखती हैं उन दिनों चन्द्रा के पिताजी रेल से गिरकर दुघटना ग्रस्त हो गये। तीन बच्चे पढ़ रहे थे मैं अकेली असहाय अनुभव कर रही थी। श्री भैरूदानजी ने कहा आप किसी बात

की चिन्ता मत करो हम सब संभाल लेंगे। उन्होंने संभाल लिया उनके ही आशीर्वाद से और सहयोग से नाहटाजी स्वस्थ हुए और नेहरू गांधी व्यापार में सफलता पूर्वक खड़ा ही नहीं हुआ—चल निकला। (श्रीमती रम्भा कुमार)

डॉ धर्मचन्द ने छलाणीजी के हृदय की विशालता और सम्बन्धों की अक्षुण्णता का मार्मिक प्रसंग दिया है।

अपनी बहन के छलाणीजी के छोटे लड़के श्री पुखराज से सगाई सम्बन्ध तय होने और विवाह के आमन्त्रण पत्र बंट जाने के उपरान्त विवाह से पूर्व ऐन वक्त पर उनकी (लड़की वालों की) ओर से सगाई सम्बन्ध तोड़ दिया गया। ऐसी परिस्थिति में लड़की वालों की ओर से सम्बन्ध तोड़ देने से छलाणीजी के समक्ष अत्यन्त विकट संकट की स्थिति खड़ी हो गई। ऐसी परिस्थिति में सम्बन्ध ही नहीं टूटता बल्कि स्थायी कटुता पैदा हो जाती है। परन्तु श्री छलाणीजी ने उसमें अटूट सम्बन्ध जोड़कर अपने परिवार का आत्मीय अंग बना लिया। छलाणीजी के लड़के की शादी उसी मुहूर्त में 17 मई 67 को चन्द्रा नाहटा के साथ हुई। बाद में श्री छलाणीजी ने यह कहकर कि आपकी बहन से सम्बन्ध का संयोग नहीं था किसी प्रकार का विचार मन में नहीं रखें अब चन्द्रा आपकी बहन है। छलाणीजी ने तोड़ने वाले को भी अपने स्नेह के बन्धन में जोड़ लिया। सम्बन्ध को आत्मीय और अटूट बना दिया।

(डॉ धर्मचन्द)

व्यवसाय वृत्ति प्रवृत्ति

श्री छलाणीजी का बचपन और जवानी अधिकांशतः तेजपुर में बीते। 14 15 वर्ष की उम्र में ही अपने पिताजी के तेजपुर में गल्ले के व्यवसाय हजारीमल भैरूदान को सभालना प्रारभ कर दिया था। 19 वर्ष की उम्र में सारा व्यापार पूरी निपुणता और परिश्रम पूर्वक करने लग गये थे। दुकान के सारे कार्य बारियों को ढिग में जमाना सफाई करना और रोज आंकड़ा मिला कर ही सोना आदि सारे कार्य खूब रस लेकर करते थे। तेजपुर का यह कार्य सम्वत् 1985 में छोटा ही था। बिक्री करीब डेढ़ लाख सालाना होती थी जो आज 1½ करोड़ के बराबर होगी। उस में खर्च बाद देकर 15 हजार का लाभ हुआ था। अपने पिता की तरह उनका भी आग्रह रहता था कि दुकान में ग्राहक मागे वह वस्तु होनी चाहिए। (परम् पुष्पम् दिनांक 19 4 85)

छत्तीस वर्ष की उम्र तक वे तेजपुर में रहे। अपने माताजी व पिताजी के देहावसान (सन् 1942 43) के बाद सन् 1945 से गाव दियातरा में ही रहना प्रारभ कर दिया। (प्रतापसिंह वैद)। गाव में रहने का कारण स्वास्थ्य के अतिरिक्त पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार की सभाल गाव के प्रति लगाव तथा गाधीजी के विचारों के अनुरूप जीवन शैली को अगीकार करना था। गाव में रहते हुए कृषि कार्य और ग्राम रचना को अपना जीवन कर्म बनाया।

औपचारिक शिक्षा सामान्य हुई परन्तु व प्रगर बुद्धि के मालिकी उद्यमशील एव व्यावसायिक प्रतिभा स सम्पन्न थ। परिस्थितिया व घटनाआ क कारण और प्रभाव के विश्लेषण की कुशाग्रता, अग्रिक्रम क लिय निर्णय की क्षमता तथा दृढ सकल्प क द्वारा गाव में रहत हुए व्यवसाय एव उद्यम का विस्तार और सचालन किया। हिसाब किताब करन, लेखा जोखा मिलान म और स्मरण शक्ति म उनका दिमाग कम्प्यूटर की तरह था। जबानी ही सारी गणित जोड़ हिसाब तुरंत स कर देत थे। (श्री बनेसिह बीठू श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

अपन तीन सगे व दो चचेर भाइयो म सबस बड़ थ। अपन असमय दिवगत भाई श्री दयालचन्दजी सहित सभी भाइयो का सम्मिलित करते हुए छलाणी परिवार के सयुक्त व्यवसाय का सचालन पिता तुल्य भावना क साथ सम्वत् 1996 स करना शुरू किया। परिवार की बढ़ती आवश्यकताओ एव बच्चो क व्यवसाय क लिय तेजपुर के बाद श्री गगानगर (राजस्थान) म अनाज, सम्वत् 2007 म दीनहट्टा (प बगाल) में तम्बाखू तथा सन् 1962 म भारत चीन युद्ध के उपरान्त बीकानेर म छलाणी वुलेन मील की स्थापना सफलता पूर्वक की।

व्यवसायिक दूरदर्शिता

बीकानेर कच्ची ऊन की विश्व प्रसिद्ध मण्डी रहा है। परन्तु उसके द्वारा उद्योग और खादी क्षेत्र में ऊनी उत्पादन (धागा, कम्बल वस्त्र आदि) करने की पहल उनकी ही सूझबूझ थी। (डॉ धर्मचन्द्र)

गाव में रहते हुए विभिन्न जगहों पर चल रहे व्यापार म लेन देन खरीद बिक्री, लेखा आदि की साप्ताहिक रिपोर्ट मगवात और आवश्यक दिशा निर्देश देते थे। वर्ष के अन्त मे रामनवमी क आस पास व्यापार व कर्मचारियो को देखने असम व बगाल जात थे। उनकी प्रबन्ध कुशलता स व्यवसाय और उद्यम हमेशा उन्नति करते रहे और लाभ देते रहे। (श्री मालचन्द शर्मा श्री बशीधर जोशी)

दिनहट्टा में जब नया काम प्रारभ करने का तय किया तो अपने मौसेरे बड़े भाई के परामर्श से भविष्य को दृष्टि मे रखकर मौके की बड़ी जगह महगे भाव देकर खरीदी। (श्री धूड़चन्द बैद)

सम्वत् 2078 में दीनहट्टा के अपने कार्यकर्ताओं को हर पत्र म निर्देश दिया कि तम्बाखू का जितना भण्डार कर सकते हो करो। दो महीने तक बिल्कुल मत बेचो आग भाव बढ़गे। वास्तव म उस साल तम्बाखू से लाख डेढ़ लाख का टोटा एक दो लाख क लाभ म बदल गया। उनको व्यावसायिक सोच पैनी थी और आत्म विश्वास प्रबल था। बाजार मे तेजी मन्दी व उलट फेर म छलाणी स्टोर्स दुष्प्रभावित नहीं हुई और सदैव लाभ ही कमाती रही।

(श्री बशीधर जोशी पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 27 12 81)

व्यापार व्यवसाय में श्री छलाणीजी व्यवहार शुद्धि का सदा आग्रह विशेष रूप से रखते थे। उनकी प्रामाणिकता सच्चाई और शुद्धता की व्यापारिक, राजकीय एव आमजन में गहरी प्रतिष्ठा थी। व्यवसाय म केवल कमाई ही साध्य नहीं थी बल्कि उसके द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज का हित भी साध्य था।

सेठों (श्री भैरूदानजी) का अपने सभी कर्मचारियो को निर्देश था पूरा तालो,
सही सही हिसाब रखो सच बोलो आये हुए का मान दो मीठा बोलो।

(श्री पूनमराम)

द्वितीय विश्व युद्ध (सम्वत् 1999) का प्रसग उल्लेखनीय है। तेजपुर म राशन का काम फर्म हजारीमल भैरूदान के पास था जिसे बहुत ईमानदारी से किया जाता था। एक गरीब आसामी सज्जन न परिवार की रूग्ण व दारूण अवस्था में दूकान स चीनी देने का आग्रह किया। कर्मचारी ने मना कर दिया कि भाई राशन का माल ऐसे नही द सकते। उसकी आखों में आसू देखकर श्री छलाणीजी ने आधासर चीनी मुफ्त देने की अनुमति दे दी। अनुचित लाभ उठाना चाहने वाले ईर्ष्यालुओं न उस आसामी का राशन की चीनी सहित पकड़ कर रसद अधिकारी को शिकायत कर स्थल पर बुला लिया और फर्म के विरूद्ध कार्रवाई क नारे लगाने लगे। अधिकारी ने हकीकत पता की और छलाणीजी का दण्ड नहीं धन्यवाद दिया। (श्री पूनमराम)

छलाणी परिवार के सयुक्त व्यवसाय की सम्वत् 1999 से पूरी देखरेख वे ही करते थे। इस व्यवसाय में सभी 6 भाइयो की हिस्सेदारी रखी थी। जिसम दिवगत भाई श्री दयालचन्दजी का परिवार भी था। व हर एक की आवश्यकताओ की पूर्ति का ध्यान समान रूप से रखते थ। जिसकी जितनी जरूरत होती उतनी हिसाब में आमदनी की व्यवस्था करते। इस बात का विचार भी नहीं करते थ कि किसी ने कम काम किया या नहीं भी किया, मन्द बुद्धि है या कर्मठ नहीं है। चचेरे भाई पाचीलालजी भोले स्वभाव के थे, उनकी आय व खर्च के सन्तुलन का ख्याल वे ही रखते थे। किसी भाई को कभी मुसाफरी पर जाने का नहीं कहा स्वय ही भाई लोग अपनी इच्छा व सुविधा से आते जाते थे। भाई श्री आशकरणजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। उनको कभी दिसावर जाने का जोर नहीं दिया। सन् 1942 में विश्व युद्ध के समय लोग असम, बगाल छोड़कर भाग कर आ रहे थे तब छलाणीजी अस्वस्थ थे फिर भी खुद ही व्यवसाय सभालने तेजपुर गये सन् 1962 म भारत चीन युद्ध के समय चीनी घुसपैठ अन्दर तक हो गई और तेजपुर खाली प्राय हो गया। उस समय भी अस्वस्थ होते हुए भी खुद ही जाने को तैयार हुए बड़े बेटे श्री भवरलालजी क आग्रह पर कि वहा अभी विशेष काम नहीं है आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है अत श्री भवरलालजी को जाने की अनुमति दी।

दिनहट्टा फार्म मे गाय का पालन नियमित किया जाता था। एक अच्छा साड बनाकर छोड़ा गया था जिस के द्वारा लोगो को किये गये नुक्सान व उलाहना का भा सहन करना पड़ता था परन्तु गो सेवा का भाव अविचलित बना रहा। गाय तथा खेती का खर्च धन्धे म परोपकार के रूप मे किया जाता था। (श्री मालचन्द शर्मा)

उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के 10? सम्पत्ति दान का सकल्प ले रखा था जिसे उन्हाने आजीवन निभाया। (श्री कन्हैयालाल टाटिया)

बटवारा

सम्वत् 1999 स व्यवसाय की देख रेख के बदले मे आय में से 10° हिस्सा अधिक था। बदली हुई परिस्थितियों मे अपने परिवार के विस्तार और बढ़ी हुई आवश्यकताआ की पूर्ति के लिये अतिरिक्त आय जुटाने की जरूरत अनुभव हुई तब सम्वन् 2024 की चेत्र शुक्ला 8 से आगे व्यवसाय में अपना बढ़ा हुआ 10% हिस्सा स्वत ही कम कर दिया और भाइयो से इसे मान लेने का आग्रह किया चूकि अब उतने मनोयोग से व्यवसाय में पूरा ध्यान नहीं दे पाऊगा फिर भी यथा शक्ति योग देता ही रहूगा। (श्री मूलचन्द नोलखा, भैरूदानजी का पत्र सम्वत् 2023)

छलाणी परिवार का सयुक्त व्यवसाय व परिवार व्यवस्था इस व्यक्तिवादी युग में एक उदाहरण रही है। पहले अपना हिस्सा कम कर देने के बाद सयुक्त व्यवसाय का बटवारा भी श्री छलाणीजी की उदारता और भाइया के प्रेम का नमूना रही। छ हिस्सेदार भाई और तीन जगह (तजपुर दिनहट्टा बीकानेर) काम थे। दो दो भाइया के एक एक मुकाम आया। सबसे छोटे को उच्छल पान्ती (पहला अवसर) दी एव खुद के कम कमाई वाले दिनहट्टा का काम रहा तथा कमजोर भाई को अपन साथ रखा। किसी भाई को कोई शिकायत का अवसर नहीं दिया। बटवारे की खबर कानोकान किसी अन्य को नहीं हुई।

(श्री मूलचन्द नौलखा, श्री बशीश्वर जोशी, श्रीमती नयनतारा छलाणी)

कर्मचारियो के प्रति व्यवहार

व्यवसाय म नियुक्त मुनीम गुमाश्ते और अन्य कर्मचारिया के साथ पारिवारिक सदस्यों की तरह ही व्यवहार करते थे। मालिक और नौकर का भेद नहीं था। व्यवसाय भी एक परिवार था जिसके मुखिया छलाणीजी थे। श्री मोटारामजी जोशी (छापर निवासी) का भाई की तरह सम्मान देते थे। सभी के खाने—रहने की सुविधा का ध्यान रखते। जब भी वे देश दिसावर से मुकाम (दिनहट्टा तेजपुर) आते सभी कार्यकर्ताओ के घर परिवार सुख दुख की पहले जानकारी लेते और व्यक्तिगत व पारिवारिक समस्याओं का समाधान करते। कार्यकर्ता भी बेझिझक उनके सामने अपनी बात रख देते थे। सभी कार्यकर्त्ताआ को उनका पितृवत स्नेह मिलता था। कार्यकर्त्ता के आर्थिक योगक्षम और आध्यात्मिक गुण विकास का ख्याल रखते थे।

20 22 वष उनके यहा काम करने वाला को कभी दो कड़ शब्द भी छलाणीजी की आर स सुनने को नहीं मिले। उन्हाने अपने कार्यकर्त्ताओ को पारिवारिक सदस्य की तरह खरीद बिक्री, महाजनी हिसाब किताब प्रेम क साथ सिखाकर, स्वतन्त्र व्यवसाय करने म समर्थ बनाया। स्वतन्त्र धन्धा करन क लिए आशीर्वाद, मार्गदर्शन और मदद की। (श्री मालचन्द शर्मा, श्री बशीधर जोशी श्री पूनमराम उपाध्याय)

व्यवसाय में छलाणीजी की प्रबन्ध कुशलता पारस्परिक पारिवारिक भावना और प्रेम म निहित थी। उस समय वे अपने सभी कार्यकर्त्ताआ को फर्म में हुए वार्षिक लाभ को अनुपात म 20/ से 100 तक वार्षिक आय क बराबर बोनस दिया करते थे उनक यहाँ काम करने वाले अटनढारे जो नियमित नौकरी म नहीं हाते (मजदूर हम्माल) को भी बोनस दन की प्रथा छलाणीजी ने डाली।

(श्री मालचन्द शर्मा श्री बशीधर जोशी)

उनक यहा कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओ का शादी विवाह मकान जमीन आदि की व्यवस्था क लिये यथावश्यकता मदद देने का उल्लेख श्री मालचन्द शर्मा ने किया है। उनक स्वय के लड़के क विवाह प्रसग पर 5000 रु वार्षिक वेतन हाते हुए भी 12500 रुपय फर्म की आर से अनुदान दिया। शनिराम नामक नोकर जिसका वेतन मात्र 50 रु मासिक था एक हजार रुपय कन्या की शादी के लिये मुनीम द्वारा दे देने का अनुमोदन व प्रशसा ही की। इसी प्रकार श्री सुखदेव गोस्वामी को मकान जमीन के लिय सात हजार रुपये बदायू मिया को तीन हजार रुपय दकर उनके आवास की स्थायी व्यवस्था करवाई। (श्री मालचन्द शर्मा)

विक्रम सम्वत् 2025 म सेठजी (छलाणीजी) श्री मोटारामजी जोशी स मिलन छापर गये। श्री बशीधर जोशी न बताया कि उनक खेत के पास से राहगीरा की आवाजाही बहुत है परन्तु काकड़ में दूर दूर तक पीने क पानी की व्यवस्था नहीं है। सेठजी न कुड और प्याऊ क लिये तुरन्त एक हजार रुपय दे दिये जिससे प्याऊ की व्यवस्था हो गई। (श्री मालचन्द शर्मा श्री बशीधर जोशी)

श्री छलाणीजी ने कृषि गो सेवा, खादी और ग्रामोद्योग के द्वारा आर्थिक सामाजिक विकास को अपनी जीविका नहीं, जीवन म धर्म साधना के साधन के रूप मे अपनाया था। साथ ही सेवा और सहयोग के साथ आथिक समृद्धि क लिय भी सदैव सचेष्ट रहे। हमशा नया नया उद्यम एव व्यवसाय करन का चिन्तन एव प्रयास करते रहते थे। 1973 में दियातरा के श्री मूलचन्दजी नौलखा बीकानेर वासी असम प्रवासी श्री मूलचन्दजी बड़ेर क साथ अनूपगढ़ म फैक्ट्री की योजना बनाई जो सयोग से कार्य हुआ नहीं। (श्री मूलचन्द नौलखा भैरूदानजी के पत्र दिनाक 7 व 8 11 73)

सन् 1981 में फरणी गम फैक्ट्री के नाम से दियातरा में उद्यम लगाने का प्रयास किया। (1 व 14 जनवरी 81 डायरी) आपके मार्गदर्शन से छोटे पुत्र श्री फूसराजजी ने

तिनसुकिया एव अन्यत्र व्यवसाय एव उद्योग विस्तार किया है और पिताजी की तरह प्रतिष्ठा अर्जित की है।

आर्थिक दृष्टि

15 जून 1975 (डायरी से) उन्होने मानसिक रूप से निवृत्त जीवन जीने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। निवृत्त वानप्रस्थ जीवन मे कृषि और समाजसेवा मे ही मन लगाने का उद्यम किया। (पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 17 12 81) अब मैं वापस व्यापार तो नहीं कर सकता पहले भी ढीले ढग से धन्धा करता रहा हू। मन पर अच्छे चरित्र व किसी को कष्ट न पहुचाने का असर ही छाया रहा है।'

(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 29 12 83)

अर्थोपार्जन म ढिलाई या सजगता दोनो रही जिस से खूब सम्पन्नता नही आई या यू भी मान सकते हैं कि अर्थ की खच (खीच) ही रही तो भी अच्छी जगह खर्च करना अन्यो का उपकार करना होता रहा। आय से खर्च कम करने का मजबूत पक्ष हमारे घर म ढीला रहा है। इसी स आज की परेशानी है। हमारा काफी खर्च गो पालन पर हुआ, जमीन पर, खेती पर हुआ। वह (खर्च) तो कीमत बढ़न से सम्पत्ति मे बदल गया है।

'उत्तम ठामे खर्चे वित्त, करे उपकार सदा मन चित्त'

(पत्रम पुष्पम् पत्र दिनाक 2 11 83)

जमीन से उत्पादन करना, देश के लिये, जगत के लिये भला काम है। इसमें महनत ज्यादा और आय कम तो रहगी ही। हा इसमे कुशल अकुशल सबको काम मिल जाता है। कपट, फरेब कम से कम होता है।

(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 10 11 83)

श्री छलाणीजी का जीवन व्यवहार और व्यवसाय जीवन के चार पुरुषार्थों की सिद्धि का दृष्टि में रखकर हुआ। अत साधन और साध्य की शुद्धता अर्थ के सही मार्ग से उपार्जन और सर्व हिताय विसर्जन ही उनके जीवन म प्रत्यक्ष हुए है।

अतिथि सत्कार

अपन आदश और अभिन्न मित्र स्वतन्त्रता सेनानी बाबू रघुवरदयाल गोयल के प्रति अपने स्नेह, श्रद्धा और स्मृति के स्वरूप कढ खेत में गोइल कुटीर बनवाई हुई है। उसम अपन हाथो से रामचरित मानस का दोहा लिखा है—

प्रभुता तजि प्रभु किन्ही सनेहू।
आज पवित्र भया यह गेहू।।

अतिथि क आगमन में उन्हें प्रभु क दर्शन होते थे। आतिथ्य स उनकी भक्ति व्यक्त होती थी।

उनका अतिथि सत्कार निराला ही होता था। अतिथि के पास बैठकर अपने हाथो से परोसते थे। जब तक अतिथि पूरा भोजन नही कर लेता उसे छोड़कर बाहर नहीं जाते थे। छलाणीजी के सम्पर्क में एकबार कोई भी आया हो बड़ा अथवा सामान्य जन उनके प्रेम पगे आतिथ्य को नहीं भूला। वे बड़े आदमी को जितना आदर देते, मनुहार करते उतना ही सत्कार वे साधारण बटाऊ का भी करते थे।

उस समय जब गावो मे ढाबे होटल नहीं हुआ करते थे तब छलाणीजी शाम को गाव मे घूम घूम कर देखते थे कि गाव में कोई भूखा प्यासा बटाऊ तो नही है। बटाऊ है तो उसे घर लाकर भोजन करवाते और रात्रि विश्राम बिस्तर आदि की व्यवस्था करते। (श्री भवरलाल छलाणी श्रीमती तारादेवी बाठिया)

अकाल के समय घास चारा केन्द्रों या पशु शिविरो मे पशुओं के चारा पानी के साथ ही आगन्तुकों के भोजन की व्यवस्था भी छलाणीजी द्वारा की जाती थी। चारा तौलने वालों को ऐसे निर्देश दे रखे थे कि कोई भूखा न जाये।

अतिथि सत्कार की यह परम्परा उनके पिताजी के समय से ही चली आ रही थी। तब इसका खर्च सभी छलाणी परिवारो के सहयोग से होता था। बाद में छलाणीजी ने सयुक्त प्रथा के स्थान पर स्वय द्वारा ही करना प्रारभ कर दिया था।

(श्री भवरलाल छलाणी)

सन् 1979 तक चौमासे मे पूरे परिवार सहित खेत पर ही रहते थे। वहा रहने के लिये रसोई गुव्वार भण्डार आदि के साथ अतिथियो के लिये दो गोल सुन्दर हवादार झोंपड़े बनवा रखे थे जिनमें से एक गोईल कुटीर थी। जो अतिथिशाला ही थी। खेत जब पूरे यौवन पर होता तब सम्बन्धियों मित्रों सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ, बड़े लोगो अधिकारियों को विशेष रूप से दियातरा आने गाव और खेत के जीवन का आनन्द उठाने के लिये आमत्रित करना उनका स्वभाव ही बन गया था। खेत में जो रसोई थी उसमें भी गाव मे घर की रसोई की तरह निर्धूम चूल्हा था। खेतों की हरियाली, कुआ गाय बैलों के बीच गोबर मिट्टी से पुते साफ सुन्दर झोपड़ा और छलाणीजी के निस्वार्थ निश्छल स्नेह में जो आनन्द वर्षा होती हिरण पशु पक्षियों आकाश में तारे स्वच्छ हवा, जल मे जो अनुभूति होती वह पाच सितारा होटलो मे अलभ्य है।

(श्री राईचरण देवनाथ श्री सुमतिलाल बाठिया श्री लक्ष्मीचन्द सेवग डॉ धर्मचन्द्र)

कातीसरा के लिये रिश्तेदारा मेहमानों को आमन्त्रित करते थे। शरद पूर्णिमा के अवसर पर तो मतीरे रात मे चान्दनी मे रखवाते और दूसरे दिन अपने हाथों से काटकर खिलाते। खिलाकर खुश होते। बढ़िया मतीरों के पारखी थे और छाण्ट कर रखते थे।

विवाह एव अन्य प्रसगो पर सभी स्वजन स्नेहीजन को बुलाना उनक आराम व व्यवस्थाआ की छोटी छोटी चीजा का वे पूरे रस रुचि के साथ बारीकी से ध्यान रखते। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

वे अतिथि सत्कार मे परम्परागत सात्विक बानगिया हलवा, लापसी खीच राब, बाजरे ज्वार की रोटी गुड़, घी, दूध, दही छाछ और खेत की हरी ताजी सब्जिया–काकडिया, मतीरी, टींडा, गवारफली का साग, कढ़ी आदि जो भी उनके खेत व गाया से निपजे हुए स्थानीय उपलब्ध सामग्री से तेयार करवाते थे। अतिथि को ग्रामीण जीवन में सुख का बोध करवाने का भाव रहता था। गाव में घर परिवार के लोग, जवाई अतिथि आदि को बेलगाड़ी से गाव से खत ले जाकर घूमाते, उनके लिये झूले डलवाते। गाव म किसी के भी सगे दामाद सम्बन्धी आते उनको घर पर आमत्रित करके भोजन करवाते। उन्हें खेत दिखाते और ज्यादा रुकने का आग्रह करते। (डॉ चन्द्रा छलाणी श्रीमती पुष्पा पुगलिया, श्रीमती ललिता)

श्री छलाणीजी द्वारा अत्यन्त प्रम से घी, गुड़ और बाजरे की रोटी और दही खिलाकर जो हमारा आतिथ्य किया वह आज भी याद है (श्री बद्री प्रसाद स्वामी)

क्षेत्र, गाव या विद्यालय सम्बन्धित किसी भी राजकीय या अन्य कार्य से आनवाला अधिकारी अध्यापक, कर्मचारी और खादी, सर्वोदय व सेवा सस्थाओ के कार्यकर्त्ता को उनके यहा आतिथ्य स्वीकार करना ही पड़ता था। वे बिना किसी अहभाव के विनम्रता से आग्रह करते थे भोजन तो करके ही जाइये' शायद ही कोई उनके आमत्रण को अस्वीकार कर सकता था। इनकी आत्मीयता पूर्ण मेजबानी सबको आत्मीय बना लेती थी। उनकी धर्म पत्नी का वात्सल्य तो अभिभूत कर देता था। एक बार जो सम्पर्क में आया उनके प्रेम परिवार का सदस्य हो जाता था। उसे किसी भी समय वहा पहुचने में हिचक नहीं होती थी।

(श्री मुरलीधर सक्सेना, श्री भागीरथ स्वामी, श्री भूपसिह, श्री बनेसिह बीठू, सौभाग्य मल सिघवी, श्री धूड़ाराम प्रजापत)

जैसलमेर बीकानेर सड़क पर दियातरा होने से उनसे मिले बिना आने जाने की हिम्मत नहीं होती थी। रात हो या दिन बिना ख्याल किये उनके यहा सहज भोजन व्यवस्था हो जाती थी और हम लोग बिना सकोच अनेक मित्रों के साथ भोजन लेते। उनका घर कार्यकर्त्ताओं की छावनी था।

(श्री भगवानदास महेश्वरी श्री मालचन्द बायरा)

श्री सुन्दरलालजी बहुगुणा, श्री सोहनलाल मोदी कई अन्य लोग जैसलमर जाते हुए घास देखने दियातरा आये। (डायरी 21 9 85)

सभी दलो के लोग बिना पक्ष विपक्ष का ध्यान किये उनके यहा आने और खाने म सकोच नहीं करते थे। राजनैतिक विचारो में अलग होते हुए भी जब भी दियातरा जाते तो छलाणीजी के यहीं ठहरते। छलाणीजी बड़े प्रेम से सत्कार करते।

रोत म उनके झोपड़े में ही ठहरते और खाना खाते। 1965 में चुनाव के समय कार्यकर्त्ता पच सरपचो के ठहरने खाने की व्यवस्था श्री छलाणीजी के सुपुर्द थी।

(श्री लक्ष्मीचन्द सवग)

विद्यालय म बाहर से आने वाले अध्यापको के लिये दियातरा आना भारी लगता था कि गाव में खाने पीने रहने की कैसी व्यवस्था होगी गाव में मन कैसे लगेगा परन्तु आने के बाद उसकी सारी आशकाए निर्मूल हो जाती जब वे छलाणीजी से उनके घर मिलते। मिलते ही छलाणीजी कहते भोजन तैयार है पहले भोजन करिये। बातचीत म थोड़ी देर लगती तो अन्दर से बुलावा आ जाता मास्टर साहब के लिये भोजन तैयार है। श्रीमती छलाणी और परिवार के सदस्यों के आदर व प्रेम पूर्ण व्यवहार से मन का भ्रम मिट जाता। कोई सठाई का दम नहीं। सहज सरल स्नेह मिलता। अध्यापक के आवास खाट बिस्तर बर्तन आदि की व्यवस्था बिना कहे करवा देते। पितृवत् व मातृवत् वात्सल्य पाकर वे पारिवारिक सदस्य जैसा ही अनुभव करते। (श्री सुशील कुमार गायल श्री भूपसिंह श्री मुरलीधर सक्सेना)

15 अगस्त व 26 जनवरी को विद्यालय के अध्यापको को भोजन तथा विद्यार्थियो को मिठाई व पुरस्कार वितरण नियमित किया जाता था। (श्री भूपसिंह)

दिल्ली विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी प्रो गोयल एव शिविर को दियातरा म आमन्त्रित किया और शिविरार्थियो व शिक्षको को पूरे समय आतिथ्य दिया। (श्री वी के जैन)

जिला स्तरीय शिक्षा एव शिक्षा अधिकारी सगोष्ठी तथा प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशको के प्रशिक्षण शिविर एन सी सी के शिविरार्थियों को भोजन दिया करते थे। (श्री भैराराम उपाध्याय श्री भूपसिंह)

अतिथि देवो भव भारतीय सस्कृति का एक विशिष्ट मूल्य है। बिना किसी अपेक्षा प्रसिद्धि या स्वार्थ भाव के आदर पूर्वक आतिथ्य श्री छलाणीजी के सर्वोत्तम स्नेह से प्रसूत था।

उनसे एक बार प्रश्न पूछ लिया आप दूसरो को बुलाकर बाहरवालो को क्यो खिलाते हो? क्या प्रसिद्धि के लिये आप ऐसा करते हैं? ऐसे तीखे और कटाक्ष प्रश्न का उत्तर अन्य कोई देता तो और भी तीखा होता। परन्तु उनका बहुत ही शान्त भाव से सन्तुलित उत्तर था प्रसिद्धि हो जाये तो हो लेकिन उस से कोई लाभ नहीं। आपस म मेल मिलाप हो जाये भाई चारा बढ़े यह खास बात है। ये लोग भी गाव के सुखी और आनन्दमय जीवन को देखे और आनन्द लेवें। यह बात उनके लिये नवीन होगी। इन शहर के लोगों को गाव के जीवन का असली आनन्द और मौज का पता तो पड़े। (श्री बनेसिह बीठू)

खादी मन्दिर की जिसके वे सस्थापक सदस्य ट्रस्टी और 1974 से 1990 तक अध्यक्ष रहे, बैठकें उनके यहा आमत्रित होती थीं। उनके आवास भोजन की व्यवस्था श्री छलाणीजी के यहीं होती।

सम्वत् 2007 वि (सन् 1950) में बाबू रघुवरदयाल गोइल तत्कालीन गणपूनाना के प्रथम मत्रिमण्डल के खाद्य मत्री के रूप मे विश्राम के लिये दियातरा मे उनके अतिथि बने। उनके लिये एक चल शौचालय बनवाया जिसमे शौच पात्र व जल की व्यवस्था थी।

(श्री मूलचन्दजी नौलखा भवरलाल छलाणी के नाम पत्र वि स 2007)

सन् 1961 मे डॉ दयानिधि पटनायक के नेतृत्व मे बीकानेर ग्रामदान ग्राम स्वराज्य समिति एव सभाग के रचनात्मक कार्यकर्ताओ का दो दिवसीय अभ्यास शिविर दियातरा में हुआ जिसे श्री छलाणीजी ने आतिथ्य दिया।

(श्री रामचन्द्र मक्कासर)

1969 70 में भीषण दुष्काल के समय श्रीमती इन्दिरा गाधी इस क्षेत्र के दौरे के समय दियातरा से गुजरी तब श्री छलाणीजी ने स्थानीय आकड़ा के फूलों की माला से स्वागत किया। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

1973 74 मे बीकानेर जिला ग्रामदान सम्मेलन एव कार्यकर्त्ता शिविर श्री रघुवरदयालजी गोयल श्री सोहनलाल मोदी श्री छलाणीजी की अगुआई मे दियातरा के विद्यालय में आयोजित किया गया जिसके मेजबान श्री छलाणीजी थे।

(डॉ धर्मचन्द्र)

27 10 77 को श्री गोईल कुटीर मे ग्रामीण विकास की योजना ग्रामीण परिस्थिति में ही बनाने के लिये बैठक श्री गोकुल भाई भट्ट, खादी ग्रामोद्योग कमीशन के श्री माधावास भाई तथा अन्य प्रमुख कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। श्री छलाणीजी ने पूर आतिथ्य के साथ मीठे छटे हुए मतीरे अपने हाथ से खिलाय।

(डॉ धर्मचन्द, डायरी, दिनाक 27 10 77)

14 2 80 को सर्वोदयी विख्यात विचारक विमला बहन ठकार ने दियातरा म अपने दल सहित श्री छलाणीजी के आतिथ्य को स्वीकार किया। (पत्राश 13 2 80)

उनके हार्दिक स्नेहपूर्ण आतिथ्य से कोई भी अभिभूत हुए बिना नहीं रहा। उनके वात्सल्यपूर्ण आतिथ्य का प्रसाद जिसने भी प्राप्त किया वे सब स्मरण करते है। आतिथ्य की यह वृत्ति परिवार में कायम है।

अन्नपूर्णा धर्मपत्नी श्रीमती जेठीदेवी

श्री भैरूदानजी छलाणी का विवाह 14 15 वर्ष की उम्र म गगाशहर आकर बस श्री गवतमलजी बैद की पुत्री जेठीदेवी के साथ हुआ तब उनकी उम्र 9 वर्ष की थी।

श्री भैरूदानजी ने गाधी विनोबा विचार को अपने जीवन में मूर्तरूप दिया। वे मात्र परिवार के होकर नहीं रहे अपितु पूरे गाव को परिवार मानते, पूरा मगरा क्षेत्र उनका कर्म क्षेत्र था। कृषि, गो सेवा खादी ग्राम सुधार और विकास तथा समाज सेवा के कार्यों में प्रयोग व शोध किये परदुख निवारण परउपकार में दिन रात आजीवन लगे रहे। उनके पास जो भी आया कभी खाली और निराश नहीं लौटा। सबको वाछित सहयोग समाधान मिला।

(श्री मूलचन्द नौलखा, श्री घूड़ाराम श्री मालचन्द शर्मा, श्री बनेसिह बीठू)

उनके घर ही नहीं गाव म जो भी राजनेता अधिकारी अध्यापक या अन्य कोई बटाऊ भी आया, श्री छलाणीजी का आतिथ्य पाये बिना जा नहीं सका। उनका द्वार और रसोई 24 घटे खुली रही।

उन्होंने समृद्ध होते हुए भी ग्रामीण जीवन सादगी श्रम और सयमित जीवन स्वभाव से स्वीकार किया था।

गाव और समाज में सुधार के लिये परिवार के जीवन में भी उसी के अनुरूप जीवन शैली और सस्कार का निर्माण छलाणीजी के द्वारा किया गया उसे पूरे परिवार द्वारा सहर्ष अपनाया गया।

श्री छलाणीजी के पर्दा प्रथा और दहेज उन्मूलन छुआछूत रूढि व कुरीति निवारण तथा नारी शिक्षा प्रसार सार्वजनिक सेवा के कार्य उनकी अपरिग्रहीवृत्ति और दानवृत्ति में उनके परिवार का पूरा सहयोग समर्थन और प्रेम उनको खूब मिलता रहा। उनके निर्णय को परिवार के हर सदस्य ने शिरोधार्य किया।

वे मगरे के गाधी थे। उनके इस गाधी निष्ठ जीवन और कार्य में उनकी जीवन सगिनी श्रीमती जेठीदेवी का सहयोग गाधीजी के जीवन मे कस्तूरबा की भाति रहा है। छलाणीजी ने जैसा जीवन जिया उसका बड़ा श्रेय उनकी अन्नपूर्णा स्वरूप इस देवी को है। जिसने छलाणीजी की हर रुचि कार्य गतिविधि आज्ञा और निर्णय का ज्यों का त्यों पालन किया। कभी विरोध नहीं किया अपितु सहर्ष साथ दिया।

(श्रीमती पुष्पा पुगलिया श्रीमती नयनतारा छलाणी, श्री भूपसिह श्री बनसिह, श्री सौभाग्य मल सिघवी)

घर में दिन रात कभी भी कोई अतिथि आये उनके लिए तुरन्त भोजन तैयार कर देना और पूरे स्नेह के साथ भोजन कराने की सदैव तत्परता उनका स्वत सहज स्वभाव है। अतिथियों के सत्कार म वे भी छलाणीजी से अधिक आनन्द का अनुभव करती। उनको यह पसन्द नहीं है कि गाव में आया कोई भी दूसरो के यहा भोजन करे।

घर के सभी सदस्यों, आये हुए सम्बन्धियो मेहमानो तथा घर के काम मे लगे हाली बालदी व लड़के लड़कियों के खाने पीने और हर सुविधा का ध्यान मा की तरह रखती। खेती व पशुओं के कारण घर में हर समय काम ही काम रहता। श्रीमती

जेठीदेवी सुबह से शाम हर समय काम मे ही लगी रहती उनकी कृष देह में थकान का नाम नहीं होता। काम और अतिथि का नही होना उनको नहीं सुहाता नहीं भाता। आज 85 86 वर्ष की उम्र में एक वक्त थोड़ा सा भोजन करके भी काम में लगी रहती है। श्री छलाणीजी के बाद भी आतिथ्य की उनकी प्रवृत्ति यथावत है।

जिस तरह से छलाणीजी सबके लिए खर्च करते जरूरत मन्द को देते एक तरह से ओगड़ दानी की तरह लुटाते थे—ऐसे म कोई भी नारी कितनी ही सहनशील क्यो न हो कभी तो विचार आ ही जाता है परन्तु श्रीमती जेठीदेवी ने अपने पति श्री छलाणीजी से कभी विरोध या टकराहट का अवसर ही नहीं आने दिया।

(श्री बनेसिह बीठू)

स्वय श्री छलाणीजी उनके बारे मे कहते थे 'तुम्हारी मा लोहे की बनी है आराम का तो नाम ही नहीं, दुनिया में मैने ऐसी औरत नहीं देखी जिसे रुपये पैसे का मोह नहीं परन्तु ये अपने पास एक पैसा भी नहीं रखती।' (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

पूज्य बापूजी सच्चे समाज सेवी के रूप मे क्रियाशील थे तो मा भी अन्नपूर्णा की तरह मेहमानों की आवभगत सेवा सुश्रुषा एव पारिवारिक रिवाजों को आत्मीयता से निभाने में लगी रही। कही कहीं कुछ सामजस्य न होने पर भी वे एक दूसरे के पूरक थे, पर एसे अवसरा पर बापूजी का ही फैसला अन्तिम हुआ करता था। पुत्रवधू चन्द्रा को डॉक्टरेट कराने का फैसला उनका अटल था। (श्रीमती नयनतारा छलाणी)

सौ चन्द्रा के शोधकार्य के लिए ही बीकानेर मे घर किराये लेकर भी रहे। तब पू मा ही घर का सारा कार्य देखती व सौ चन्द्रा की अध्ययन सुविधा का बेटी की तरह ख्याल रखती। मै इसका प्रत्यक्ष साक्षी रहा हू। मै सन् 1971 72 मे रागड़ी चौक में स्थित खजाची भवन में उनके साथ ही रहा था।' (डॉ धर्मचन्द्र)

उनकी (छलाणीजी की) सादगी, सच्चाई व चरित्र की छाप उनकी पत्नी, सन्तान व परिवार पर स्पष्ट रूप से दृष्टव्य है। सौभाग्य से उनको अन्नपूणा धर्मपत्नी मिली जिन्हें कस्तूरबा कहना उचित होगा। इस महान् नारी में समता, आतिथ्य सेवा और नम्रता अभिभूत करने वाली थी। उनकी रसोई हर भूखे प्यासे बटाही के लिये 24 घट खुली मिलती। हर आगन्तुक अतिथि को मातृवत् स्नेह, सम्मान और अपनत्व का बोध कराती। मुझे उनसे अनेक बार प्रसाद प्राप्त करने का अवसर मिला।'

(सौभाग्यमल सिघवी)

मैंने दादी मा (श्रीमती छलाणी) को हमेशा उनके (श्री छलाणीजी के) पैर दबाते हुए देखा है। चाहे रात के दो बज हो या सुबह चार कभी भी सोया नहीं देखा

(श्रीमती दिव्या छलाणी)

कृषकाय देह पर परम्परागत घाघरा ओढ़ना और सिर पर बोर हाथा में चूड़िया और हृदय में अपार वात्सल्य श्रम, सहिष्णुता एव धैर्य का मूर्तिमन्त रूप मा श्रीमती जेठीदेवी बापूजी (भैरूदानजी) की छाया के रूप में छायी रही हैं।

जेठीदेवी सुबह से शाम हर समय काम मे ही लगी रहती उनकी कृष देह मे थकान का नाम नहीं होता। काम और अतिथि का नही होना उनको नहीं सुहाता, नहीं भाता। आज 85 86 वर्ष की उम्र मे एक वक्त थोड़ा सा भोजन करके भी काम मे लगी रहती है। श्री छलाणीजी क बाद भी आतिथ्य की उनकी प्रवृत्ति यथावत है।

जिस तरह से छलाणीजी सबके लिए खर्च करते जरूरत मन्द को देते एक तरह स ओगड़ दानी की तरह लुटाते थे—एसे मे कोई भी नारी कितनी ही सहनशील क्यो न हो कभी तो विचार आ ही जाता है परन्तु श्रीमती जेठीदेवी ने अपने पति *श्री छलाणीजी से कभी विरोध या टकराहट का अवसर ही नही आने दिया।*

(श्री बनसिह बीठू)

स्वय श्री छलाणीजी उनके बारे मे कहते थे 'तुम्हारी मा लोहे की बनी है आराम का तो नाम ही नहीं, दुनिया म मैंने ऐसी औरत नहीं देखी जिसे रुपये पैसे का मोह नहीं परन्तु ये *अपने पास एक पैसा भी नही रखती।' (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)*

'पूज्य बापूजी सच्चे समाज सेवी के रूप मे क्रियाशील थे तो मा भी अन्नपूर्णा की तरह मेहमानों की आवभगत, सेवा सुश्रुषा एव पारिवारिक रिवाजो को आत्मीयता से *निभाने म लगी रही। कहीं कही कुछ सामजस्य न होने पर भी वे एक दूसरे के पूरक* थ, पर ऐसे अवसरा पर बापूजी का ही फैसला अन्तिम हुआ करता था। पुत्रवधू चन्द्रा को डाक्टरेट कराने का फेसला उनका *अटल था। (श्रीमती नयनतारा छलाणी)*

सौ चन्द्रा के शोधकार्य के लिए ही बीकानेर मे घर किराये लेकर भी रहे। तब पू मा ही घर का सारा कार्य देखती व सौ चन्द्रा की अध्ययन सुविधा का बेटी की तरह ख्याल रखती। म इसका प्रत्यक्ष साक्षी रहा हू। मै सन् 1971 72 में रागड़ी चौक म स्थित खजाची भवन म *उनके साथ ही रहा था। (डॉ धर्मचन्द्र)*

उनकी (छलाणीजी की) सादगी, सच्चाई व चरित्र की छाप उनकी पत्नी सन्तान व परिवार पर स्पष्ट रूप स दृष्टव्य है। सौभाग्य से उनको अन्नपूर्णा धर्मपत्नी मिली *जिन्हे कस्तूरबा कहना उचित होगा।* इस महान् नारी मे समता आतिथ्य, सेवा और नम्रता अभिभूत करने वाली थी। उनकी रसोई हर भूखे प्यासे *बटाऊ के लिये 24 घटे खुली मिलती। हर आगन्तुक अतिथि को मातृवत्* स्नेह सम्मान और अपनत्व का बोध कराती। मुझे उनसे अनेक बार प्रसाद प्राप्त करन का अवसर मिला।

(सौभाग्यमल सिघवी)

मैन दादी मा (श्रीमती छलाणी) को [illegible] नो के) पैर दबाते हुए देखा है। चाहे रात के दो बजे हो [illegible] सोया नहीं देखा [illegible]

कृषकाय देह पर परम्परागत घाघरा चूड़िया और हृदय मे अपार वात्सल्य श्रम श्रीमती जठीदेवी बापूजी (भेरूदानजी)

श्री भैरूदानजी छलाणी परिवार व ग्राम के बापूजी है तो श्रीमती जठीदेवी अन्नपूर्णा देवी है पूज्य मा है। बापूजी के चिन्तन और चर्या आस्था और आचरण, कार्य और गति की शक्ति और सहायक मातृ शक्ति है।

मूक स्वतन्त्रता सेनानी

असम मे अंग्रेज हुकूमत थी। उस राज के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा चलाये जा रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रभाव और गतिविधिया व्यापक थी। उस समय बीकानेर और अन्य रियासतो मे राजाओ के राज मे आजादी के आन्दोलन का प्रभाव बहुत कम या नहीवत् था। श्री छलाणीजी पर स्वतन्त्रता आन्दोलन के मूल्यो और गाधी विचारो का प्रभाव ही अधिक पड़ा क्योकि उनका बचपन और यौवन अधिकाशत तेजपुर मे ही बीता। उनका जन्म तेजपुर मे 29 नवम्बर 1909 को हुआ। 36 वर्ष की उम्र तक वे असम मे रहे। 1945 मे उन्होने तेजपुर छोड़ दिया और अपने पैतृक ग्राम दियातरा मे रहने लगे। (श्री प्रतापसिह बैद)

तेजपुर मे अपने पिताजी द्वारा जमाये गये गल्ले के व्यवसाय (फर्म हजारीमल भैरूदान) को सभालते हुए आजादी के आन्दोलन मे मूक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप मे सक्रिय रहे। उन्होने तथा उनके दो भाइयो श्री आशकरणजी व मुन्नीलालजी ने सन् 1935 से ही खादी पहनना प्रारभ कर दिया था। (भैरूदानजी का व्यवस्थापक खादी मदिर को लिखा पत्र दिनाक 17 9 43 श्री प्रतापसिह बैद) इसके साथ अपने और परिवार के रहन सहन—खान पान रीति रिवाज और व्यवहार में सुधार और परिवर्तन प्रारभ कर दिया।

मै तो खादी मानस का ही था। सक्रिय भाग तो असम मे खादी बेचता था तब लेता था। वहा मे कांग्रेस के नेताओ मे आता जाता था। कइयो से अच्छी दोस्ती थी। गाधीजी नेहरूजी, आते तब श्री द्वारकाप्रसादजी व मै वहा के लोगो के बराबर कार्यक्रमो मे हिस्सा लेते थे। धन्धे वाले थे सो जेल जाने की जोखम से तो बचते थे।
(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 29 11 80)

श्री द्वारकाप्रसादजी, छलाणीजी के अनन्य मित्र थे। दोनो असम मे आजादी की गतिविधियो मे खुले रूप मे भाग लेते थे। श्री द्वारकाप्रसादजी तब सामान्य व्यवसायी उद्यमी थे। बाद मे असम के स्टील सम्राट् के रूप मे प्रख्यात उद्योगपति हुए। श्री छलाणीजी को वे अपने बड़े भाई के रूप मे सदा सम्मान देते रहे। उनके प्रति अगाध श्रद्धा और प्रेम था। एक बार पूज्य स्वामी रामसुखदासजी के समक्ष अकाल के प्रसग मे द्वारकाप्रसादजी ने कहा था—मै भाइजी (छलाणीजी) की बात टाल नहीं सकता। श्री द्वारकाप्रसादजी और श्री छलाणीजी के आजादी के आन्दोलन मे सहभागी व्यवसाय मे सहयोग स्नेह सम्मान के सम्बन्ध आजीवन बने रहे। क्षेत्र मे

अकालो के समय श्री छलाणीजी गो रक्षार्थ आर्थिक सहयोग दुर्गाप्रसादजी से जुटवाया करते थे। (डायरी खण्ड)

असम के स्वतन्त्रता सेनानियो बाबू अमियकुमारदास श्री कामख्याप्रसाद त्रिपाठी, श्री विजय भागवती आदि से उनके सम्पर्क और घनिष्ठ सम्बन्ध थे। स्वतन्त्रता सेनानियो के साथ सम्पर्क, सवाद और सहयोग एव स्वतन्त्रता सेनानी जब जेल मे होते तो उनके परिवारो के बीच चिट्ठी पत्री एव सन्देश पहुचाने का कार्य गोपनीयता और विश्वसनीयता के साथ करते थे। वे सेनानियो के विश्वस्त आश्रय थे। खादी की बिक्री खुले आम करते थे जो आजादी का हथियार थी। स्वतन्त्रता के बाद जब असम के स्वतन्त्रता सेनानी असम व केन्द्र मे मत्री पद पर रहे तब भी उनके सम्बन्ध बने रहे। एकबार श्री भगवती बाबू ने जब वे केन्द्र मे मत्री थे श्री छलाणीजी के आमत्रण पर दियातरा प्रवास का कार्यक्रम बनाया था परन्तु किसी कारण से उनका आना नहीं हो सका।

आजादी के पूर्व और बाद मे भी काग्रेस के अधिवेशनो मे भाग लिया करते थे। काग्रेस मे उनकी आस्था आजादी के कुछ वर्ष बाद तक बनी रही। परन्तु बाद मे भ्रष्टाचार और कुटिलता के कारण मोह भग हो गया।

(श्री लक्ष्मीचन्द, श्री उम्मेदसिह भाटी श्री महावीर प्रसाद शर्मा, डायरी 1977)

आजादी के बाद सर्वोदय सम्मेलनो मे स्वय भाग लेते थे तथा परिवार के सदस्यो तथा गाव के लोगो को भी साथ सम्मेलन मे ले जाया करते थे। 1948 के काग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे सम्मिलित हुए तब श्री भवरलालजी छलाणी भी साथ थे।

असम की जलवायु स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं रहने के कारण तथा 1942 43 मे माताजी पिताजी के देहावसान के बाद 1945 से पैतृक गाव दियातरा मे रहना प्रारभ कर दिया।

आजादी के आन्दोलन के मूल्यो और गाधी विचार को उन्होने आत्मसात् कर लिया था। गाव मे रहकर ग्राम रचना, कृषि, गो सेवा खादी और समाज सेवा के माध्यम से उन मूल्यो को जीवन मे मूर्त्तरूप देना उनके जीवन का ध्येय और लक्ष्य बन गया था।

उस समय बीकानेर मे आजादी के आन्दोलन की हलचले प्रजा परिषद तथा खादी और गाधीजी के रचनात्मक कार्यो के माध्यम से प्रारभ हुई। यहा प्रजा परिषद के जनक अध्यक्ष बाबू रघुवरदयालजी गोयल के सम्पर्क मे आये और एक दूसरे के चित्त मे उतर गये। 1943 मे स्थापित खादी मदिर के श्री गोयलजी के साथ छलाणीजी सस्थापक सदस्यो मे थे। (श्री दाउदयाल आचार्य वासुदेव विजयवर्गीय)। 'इस सस्था के द्वारा सभी खादी धारियो के लिये हाथ कती, हाथ बुनी खादी की व्यवस्था

की जाती थी। 1942 म रियासती राज द्वारा बीकानेर का खादी भण्डार बन्द करा दिया गया था। सचालक श्री दयीन्द्रजी पत को देश निकाला द दिया गया था।

(श्री सोहनलाल मोदी)

ये अत्यन्त साहसी और निर्भीक थे। 1944 म स्वतन्त्रता सेनानी शेर बीकानेर श्री रघुवरदयालजी का (बीकानेर महाराजा सार्दुलसिंहजी द्वारा) लूणकरणसर कस्बे म नजरबन्द कर दिया गया था। एक दिन उनका स्वास्थ्य इतना बिगड़ा कि डॉक्टर स्वय चिन्तित होने लगा। दवा का रुक्का लिखा, पर दवा मगाये कैसे? सह अन्धारी रात म श्री छलाणीजी निर्भयतापूर्वक अचानक आ पहुचे और उनके द्वारा रुक्का बीकानेर भेजा जा सका और शकर महाराज की हिम्मत से इजक्शन लूणकरणसर पहुच गया।

(श्री दाऊदयाल आचार्य)

प्रजापरिषद क नायक श्री गोयल क प्राण बचाने म श्री छलाणीजी का सक्रिय योगदान रहा। आज क समय म ऐसी मानवीय सहायता मामूली बात परन्तु महाराजा सार्दुलसिंहजी के उस क्रूर राठोड़ी निरकुश शासन म यह सहयोग कितना महत्त्वपूर्ण रहा इसका मूल्याकन तो तत्समय के आतकराज म काम करने वाले कार्यकर्ता ही आक सकते है।

(श्री दाऊदयाल आचार्य)

श्री छलाणीजी ने असम मे रहते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन एव बीकानेर में प्रजापरिषद आन्दोलन म योगदान किया और राष्ट्रीयत्व व गांधीवादी विचारो के प्रसार के कार्यक्रमो म आजीवन लगे रहे।

(श्री भीमसेन चौधरी)

बापू की सत्य और अहिंसा की नीति अपना राजनीति म भाग लिया। आप दलगत राजनीति के कीचड़ म कभी नहीं फसे। अहिंसा के पुजारी होने के कारण निर्भयतापूवक कार्य करते रहे।

(श्री वासुदेव विजयवर्गीय)

श्री छलाणीजी आजादी के पूर्व स्वाधीनता के लिये तथा स्वाधीनता के बाद राष्ट्र के निर्माण के लिये रचनात्मक राजनीति म आजीवन सक्रिय रहे। विकास के लिये वे राजनीति मे भाग लेना आवश्यक मानते थे। ग्रामीण आर्थिक प्रगति के आधार कृषि गो पालन, खादी और ग्रामोद्योग, शिक्षा तथा सुधार और सेवा के माध्यम से आर्थिक और नैतिक स्वाधीनता के कार्यो को जीवन धर्म ही बना लिया था।

सार्वजनिक सेवावृत्ति

महात्मा गाधी ने देश की स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र को नैतिक और आर्थिक आजादी के लिए ग्राम गणराज्यो की रचना परिस्थितियो एव आवश्यकताओ के अनुरूप स्थानीय ससाधनो, शिल्प देशज ज्ञान और लोगो के अपने श्रम और अभिक्रम के द्वारा आर्थिक स्वावलम्बन और सत्ता के विकेन्द्रीकरण का विचार प्रस्तुत किया था। यह अपेक्षा की गई थी कि सत्ता की राजनीति को छोड़कर लोक सेवक

की जाती थी। 1942 में रियासती राज द्वारा बीकानेर का खादी भण्डार बन्द करा दिया गया था। संचालक श्री देवीदत्तजी पंत को देश निकाला दे दिया गया था।

(श्री मोहनलाल मोदी)

ये अत्यन्त साहसी और निर्भीक थे। 1944 में स्वतन्त्रता सेनानी शेरे बीकानेर श्री रघुवरदयालजी को (बीकानेर महाराजा सार्दुलसिंहजी द्वारा) लूणकरणसर कस्बे में नजरबन्द कर दिया गया था। एक दिन उनका स्वास्थ्य इतना बिगड़ा कि डॉक्टर स्वयं चिन्तित होने लगा। दवा का रुक्का लिखा पर दवा मगाये कैसे? मध्य अन्धारी रात में श्री छलाणीजी निर्भयतापूर्वक अचानक आ पहुंचे और उनके द्वारा रुक्का बीकानेर भेजा जा सका और शंकर महाराज की हिम्मत से इंजेक्शन लूणकरणसर पहुंच गया।

(श्री दाऊदयाल आचार्य)

'प्रजापरिषद के नायक श्री गोयल के प्राण बचाने में श्री छलाणीजी का सक्रिय योगदान रहा। आज के समय में ऐसी मानवीय सहायता मामूली बात, परन्तु महाराजा सार्दुलसिंहजी के उस क्रूर राठौड़ी निरंकुश शासन में यह सहयोग कितना महत्त्वपूर्ण रहा इसका मूल्यांकन तो तत्समय के आतंकराज में काम करने वाले कार्यकर्त्ता ही आंक सकते हैं।

(श्री दाऊदयाल आचार्य)

श्री छलाणीजी ने असम में रहते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं बीकानेर में प्रजापरिषद आन्दोलन में योगदान किया और राष्ट्रीयत्व व गांधीवादी विचारों के प्रसार के कार्यक्रमों में आजीवन लगे रहे।

(श्री भीमसेन चौधरी)

बापू की सत्य और अहिंसा की नीति अपना राजनीति में भाग लिया। आप दलगत राजनीति के कीचड़ में कभी नहीं फंसे। अहिंसा के पुजारी होने के कारण निर्भयतापूर्वक कार्य करते रहे।

(श्री वासुदेव विजयवर्गीय)

श्री छलाणीजी आजादी के पूर्व स्वाधीनता के लिये तथा स्वाधीनता के बाद राष्ट्र के निर्माण के लिये रचनात्मक राजनीति में आजीवन सक्रिय रहे। विकास के लिये वे राजनीति में भाग लेना आवश्यक मानते थे। ग्रामीण आर्थिक प्रगति के आधार कृषि, गो पालन, खादी और ग्रामोद्योग, शिक्षा तथा सुधार और सेवा के माध्यम से आर्थिक और नैतिक स्वाधीनता के कार्यों को जीवन धर्म ही बना लिया था।

सार्वजनिक सेवावृत्ति

महात्मा गांधी ने देश की स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र को नैतिक और आर्थिक आजादी के लिए ग्राम गणराज्यों की रचना, परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप स्थानीय संसाधनों, शिल्प, देशज ज्ञान और लोगों के अपने श्रम और अभिक्रम के द्वारा आर्थिक स्वावलम्बन और सत्ता के विकेन्द्रीकरण का विचार प्रस्तुत किया था। यह अपेक्षा की गई थी कि सत्ता की राजनीति को छोड़कर लोक सेवक

खेली आदि के निर्माण करवाये। जब दियातरा गाव म बस आन लगी तब घर के बच्चो (श्री भवरलालजी आदि) अथवा हाली मजदूर को घड़े लेकर यात्रियों को पानी पिलाने भेजते। दियातरा बस स्टेण्ड पर एक स्थायी प्याऊ बनवाई और उस पर श्री टीकमदास साध को जीवन पर्यन्त रखा। 1973 म लोहिया गाव म वहा सार्वजनिक व्यवस्था कुण्ड, तालाब, कुआ आदि नहीं था। छलाणीजी न कुआ कोठा खेली बनवाई। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

सार्वजनिक सेवा उदारता और दयावृत्ति गाव तक सीमित नहीं थी। तेजपुर और दिनहट्टा मे भी उन्होंने इसी प्रेम भाव से लोकहिताय कार्य किये। राजस्थान मे रेगिस्तान होने के कारण पानी की कमी है तो असम बगाल मे भी सब जगह नदी तालाब नही है। दिनहट्टा और आसपास के गावा म पीने के पानी की भारी कमी थी। औरता बच्चा को दूर दूर तक पानी क लिए जाना आना पड़ता था। हर कोई इतना समर्थ नहीं था कि हैण्ड पम्प लगा सक। आपने आस पास के गावो मे गरीबो के मोहल्लों म हैण्ड पम्प लगवा दिये। (श्री धूड़चन्द बैद)

दिनहट्टा म खेती के लिए जमीन खरीदी। वह सस्ने भाव में मिल रही थी परन्तु आपने उस गरीब किसान को दबाया नहीं, ऊचे भाव से दाम दिय। (श्री धूड़चन्द बैद)

खेत की बाड़ बनात समय खेत का कुआ बाड़ के अन्दर आ रहा था। उस कुए स आस पास के लोग पानी भरते थे, उनका कुए से पानी भरना बन्द होते देखकर लाग गुस्से म आ गये। छलाणीजी के आदमियों से कहा बुलाओ अपने सेठ को, हम निपट लेंगे। श्री छलाणीजी आये और सारी बात समझी ता निर्णय द दिया कि बाड़ इस तरह बनाओं कि कुए तक रास्ता खुला रह सके और लोग पानी भरत रह। व लाग सेठजी का देखकर और निर्णय को सुनकर पानी पानी हो गये। (श्री बशीधर जोशी)

दिनहट्टा म खेत के पास एक मालबाबू ने खेत की मिट्टी खादकर अपने मकान की जमीन ऊची करली जिससे वर्षा के समय उस क मकान म पानी नहीं आय सुरक्षित रहे। मिट्टी खाद लन से खेत की बिण्डी (दीवार) गिर गई। छलाणी स्टोर्स के व्यवस्थापकों ने मालबाबू पर मुकदमा कर दिया। सेठजी तब देश में थे। दिसावर म आये और खेत की तरफ गये तो माल बाबू ने बताया कि मुनीमा ने उस पर मुकदमा कर रखा है। श्री छलाणीजी ने घर आकर उपवास कर दिया। जब तक मालबाबू पर स मुकदमा नहीं उठाया जायगा अनशन रहेगा। मुकदमा उठा लिया गया। छलाणीजी न कहा अगर इस तरह गरीब पड़ोसी पर मामले करेंगे तो कौन गरीब पड़ोस म रहेगा। मुझे ता गरीबों का पड़ोस चाहिए।

सभी को अपना मानना और गरीब की मदद मित्रभाव से करना सामूहिक हित क लिए सदैव तत्पर रहना उसक लिए शक्तिभर अपना सहयोग बिना किसी व्यक्तिगत फायदे का ख्याल करके शुद्ध सेवा भाव से करना—यह उनके स्वभाव और चरित्र का प्रकृति प्रदत्त गुण था।

ग्राम ही परिवार

श्री छलाणीजी ने गाव के जीवन को किसी विवशता म स्वीकार नहीं किया था बल्कि उनके लिए गाव ही जीवन था। और ऐसा जीवन जो गाव को आनन्द और समृद्धि से परिपूर्ण करता था। उन्हाने सम्पूर्ण गाव को अपना परिवार माना। गाव के हर व्यक्ति को पितृवत् स्नेह दिया। गाव के जीवन म सामूहिकता म परस्पर सहयोग मे पर्व और त्योहारो म सुख म दुख में सब म अपने आपको एकात्म कर दिया।

उनका पहनावा उनकी भाषा उनका खान पान, सब अपने गाव के आम आदमी की तरह थ। गाव की हर चीज मे वे प्यार करते थे। वे गाव के जीवन को आर्थिक और नैतिक सब दृष्टियो से समृद्ध और उन्नत करने मे अपनी समृद्धि पाते थे।

गाव के हर कौम हर मोहल्ले और घर के हर बच्चे बुढ़े से उनका परिचय और सहज सवाद था। उनके दुख दर्द में खुशी में सम्मिलित होते। किसी क यहा कोई बीमार होता तो वे अपने यहा से देशी औषधिया केशर कस्तूरी जैसी महगी चीजें स्वत ही भिजवा देते। ग्रामीण घरेलू इलाज बता देत और व्यवस्था करवा देते उस समय मगरा के गावो में कोई सरकारी औषधालय नहीं थे। यह काम वे सहज स्नेह से करते थे। घर आये को सही राय व सहयोग देकर आश्वस्त करते।

(श्री बनेसिह बीठू)

गाव के आर्थिक जीवन की समृद्धि के लिए उन्हाने कृषि गोपालन अपनाया। खादी और गाव क उत्पादकों को बल दिया।

गाव की सामूहिक समस्याओ के समाधान के लिए उनकी तड़फ ऐसी होती जैसे उनकी व्यक्तिगत समस्या हो। यह पीड़ा और चिन्ता केवल भाव और शब्द में सीमित नहीं रहती थी बल्कि घनीभूत होकर बह निकलती थी उसके निवारण के प्रयास के रूप में। वे किसी अन्य की प्रतीक्षा किय बिना उसम जुट जाते थे।

अकाल के समय गाव ओर क्षेत्र की गायों और पशुओं की रक्षा के लिए चारे पानी की व्यवस्था चारा केन्द्र और पशु सेवा शिविर स्वय के खर्च से चालू कर देते थ। हर अकाल में लोग आश्वस्त रहते थे कि भैरूदानजी के होते पशुओ की रक्षा अवश्य होगी।

सूखा पड़ने पर जब तालाबों का पानी सूख जाता तब मिट्टी खुदाई का काम खुद करवा देत थे। उस समय जब पचायती राज नहीं था तब यह काम गाव द्वारा सामूहिक रूप से किये जान के लिए लागों को जुटाकर प्रवृत्त करते। अपनी ओर से खर्च करके मजदूरों से भी यह कार्य करवाते जिससे जरूरतमन्दा को रोजगार मिलता और तालाब की खुदाई भी हो जाती। (श्री बनेसिह बीठू)

पानी की कमी के समय लोगो के लिए पीने के पानी की सामूहिक पियाई करवाते। विशेषतौर से साधनहीन लोगो के प्रति उनका विशेष ध्यान रहता था कि उनके लिए व्यवस्था अवश्य हो। उनके लिए वे अपने पास से पानी चारे का भुगतान कर देते थे।
(श्री बनेसिंह बीठू)

आजादी के बाद जब पचायतो की व्यवस्था प्रारभ हुई तब स्वय उसमे सक्रिय भाग लिया, सरपच व पचायत समिति प्रधान के रूप मे पूरे क्षत्र मे तालाबो कुओं के सरक्षण और निर्माण का कार्य किया। बाला चेलासर लोहिया आदि में कुए उनके प्रयास से बने, लोहिया में तो कुआ उन्होने अपने खर्च से बनवाया और देख रेख के लिए श्री पूनमराम उपाध्याय व श्री भवरलाल छलाणी को लगाया।
(श्री पूनमराम उपाध्याय)

वे गाव के लोगो को अपने हक समझने, विकास का लाभ लेने के लिए खुद परिश्रम करने और हक का खाने की सीख देते। वे चाहते थे कि लोग परस्पर प्रेम से रहें झगड़ा फसाद नहीं हो। अत वे उनके झगड़े खुद निपटा देते थे—वास्तव मे वे अपने छलाणी सयुक्त परिवार के ही मुखिया नहीं थे, अपितु ग्राम परिवार के भी लोकमान्य मुखिया थे। उनकी राय और निर्णय को लोग मान्य करते थे।
(श्री धूड़ाराम, श्री दाऊदयाल आचार्य)

गाव में परस्पर प्रेम के लिए दीपावली व होली पर सामूहिक राम राम उनके यहीं होता था। प्रतिमाह सामूहिक सत्सग का आयोजन करते थे जिसमे गाव के सब कौमा के लोग भाग लेते। रामलीला, वॉलीबॉल एव अन्य खेलों व नाटको के आयोजन सार्वजनिक तौर पर करवाते उसमे भाग लेने के लिए दूसरे बच्चों को प्रोत्साहित करते और खुद सपरिवार सम्मिलित होते। गाव के जीवन की सरसता और आनन्द को बनाने और बढ़ाने के हर अवसर पर्व और त्यौहार को मनाते उसमे अधिकाधिक लोगो को प्रेरित करते, सम्मिलित करते, आनन्दित करते।

गाव व क्षेत्र म होने वाले मेले मगरियों म खूब खुशी के साथ भाग लते थे। अपने घर पर बैला की जोड़ी, ऊट आदि पालते थे। मेले के समय बैली सजाई जाती, उसमें परिवार व मोहल्ले के बच्चों के साथ बैठकर जाते। वे मेले में होने वाली बैलगाड़ियों ऊटों की दौड़ में खुद भाग लेते। उनको सबसे आगे रहने का शोक था। इसके लिए उन्होंने नागौर म दौड़ वाले अच्छी नस्ल के बैलों की जोड़ी महगे भाव से खरीदी थी। उस समय सामान्य कीमत 100 125 रु थी उन्होने 400 रुपये में महगी जोड़ी खरीदी। बैला की जोड़ी बहुत सुन्दर व उत्तम नस्ल की थी लोग उसे देखने आते।
(वैद्य ठाकुर प्रसाद शर्मा डायरी पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 19 4 85)

गाव सस्कृति स प्यार था। उनका प्यार केवल साहित्यिकों की तरह नहीं था जो शहरों में रहकर गावों की स्वप्निल कल्पनाओं को चित्रित करते है अथवा

राजनेताओं की तरह जो शहर के वातानुकूलित महलों में रहकर गाव के विकास पर योजना बनाते और धुआधार भाषण करते हैं गाधी और विनोबा के दर्शन के शास्त्रियों की तरह भी नहीं था जो ग्रामराज की चेतना शहर में करते थकते नहीं, उनका ग्राम प्रेम आत्मज था नगरों म व्यवसाय से समृद्धि के प्रचुर साधन और शहर के जीवन को उपलब्ध करने भोगने की सामर्थ्य होते हुए भी गाव और उसके जीवन से समरस हो जाना आजीवन ग्राम में ही रहकर उसी म सुख का सृजन करना और आनन्द की अनुभूति करना पूरी आत्मा से ग्राम जीवन की स्वीकृति स ही सभव होता है। गाधीजी का गावो में जाकर गाव के होकर उसम समरस होने का आह्वान छलाणीजी ने स्वीकार किया। गाव को ही अपने अस्तित्व का विस्तार माना और उसके हर स्पन्दन से आत्मा म ग्राम का ही सगीत गूजा।

गाव ही उनका परिवार था। गाव उनके अस्तित्व का वृहद स्वरूप था। गाव उनका शरीर था व उसकी चेतना थे।

एक बार दियातरा के कई लोगो पर सहकारी समिति का ऋण नहीं चुका पाने के कारण कुर्की के आदेश हो गये। अकाल से मारे लोग ऋण अदा करने मे असमर्थ थे। श्री छलाणीजी को यह चिन्ता हो गई कि उनके गाव की प्रतिष्ठा का प्रश्न है कुर्की नहीं होनी चाहिए। श्री लूणाराम (1984 86) जो उपसरपच थे बुलाकर कह दिया कि भले ही रकम (मेरे) पास से भरनी पड़े परन्तु किसी गाव वाले के घर की सम्पत्ति की कुर्की नहीं हो। उनके बल से सभी का बचाव हो गया। (श्री लूणाराम)

दियातरा गाव की गायो को बीठनोक गाव म फाटक में बन्द कर दिया। इससे गाव के लोग नाराज हो गये और जुर्माना भर कर गायें नहीं छुड़ाने पर अड़ गये। श्री छलाणीजी से यह नहीं सहा गया कि गाय भूखी मरे। उन्होने खुद जुर्माना भर कर गायो को छुड़वा दिया। (श्री लूणाराम)

दियातरा गाव म देशी शराब का ठेका खुल गया था। गाव के लोग अपने गाव और पास म ठेका नहीं चाहते थे। गाव के लोगो और पचायत के प्रयास के बावजूद ठेका नहीं उठा। श्री छलाणीजी ने प्रयास किये राज्य के अधिकारियों मत्रियो व सर्वोदय सेवको को पत्र लिखे। उनके अथक प्रयास से शराब का ठेका उठा।

एक समय दियातरा गाव को फौज के चान्दमारी क्षेत्र मे लेने का प्रस्ताव हो गया था। ऐसी स्थिति में गाव की बस्ती उठती और लोग उखड़ते। इस गभीर खतरे से आशकित लोग श्री छलाणीजी के पास आये। बोले सेठजी गाव पर सकट आ गया है। गाव उठने की नौबत आ पड़ी है। श्री छलाणीजी ने कहा मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता है? उन्होने अपने प्रयास किये और अधिकारियो को समझाने मे सफल हुए। दियातरा उखड़ने से बच गया। (श्री लूणाराम)

बिजली की लाइन दूर सड़क पर थी जिससे गाव को बिजली नहीं मिलती थी। आपने श्री गोकुलभाई भट्ट व अन्य लोगो से आग्रह किया उनके प्रभाव व प्रयास से दियातरा को बिजली मिली।

पहले निजी बस गाव के अन्दर आती थीं। परन्तु राजस्थान राज्य परिवहन निगम की बसो ने जब इस मार्ग पर आना शुरू किया तो वे दूर सड़क पर ही रुकने लगी तथा कोलायत से जितनी दूरी दियातरा की सड़क मार्ग से है उससे एक रुपया ज्यादा टिकट भाड़ा लेती रही। श्री छलाणीजी ने इस दिशा म बार बार परिवहन विभाग व निगम का ध्यान आकृष्ट किया परन्तु कोई परिणाम सामने नहीं आया। 1977 म जनता पार्टी का शासन आने पर फलौदी के विधायक श्री बालकृष्ण थानवी के ध्यान मे यह तथ्य ला कर कि वर्षो से दियातरा ग्राम आने वाले यात्रियो से हजारो रुपए अधिक वसूल जा चुके है। उनके प्रभाव से दियातरा का बस किराया कम हुआ।

ग्राम परिवार के भौतिक विकास के साथ चेतना और नैतिक विकास के लिए वे उतने ही उत्सुक रहे। गावों की स्वस्थ परम्पराओ, परस्पर पारिवारिकता और सामूहिकता का भाव, सामूहिक सम्पत्ति तालाब, कुआ ओरण के सरक्षण, सफाई, गाव म सभी कौमो में परस्पर मेलजोल तथा पचायत म निर्विरोध निर्वाचन, गाव के झगड़े गाव में निपटाने के साथ कुरीतिया ओसर मौसर बन्द करने, जाति पाति भेद और छुआछूत को मिटाने दलित वर्ग को ऊपर उठाने एव शिक्षा के प्रसार और विकास के कार्यों म सबकी भागीदारी को पुष्ट करने क वे केन्द्र थे।

वे पचायत में किसी पद पर रहे या नहीं रहे फिर भी सदैव ग्राम परिवार के सामुदायिक हित के लिए सदैव सक्रिय रहे। राजनैतिक पदलिप्सा, दलगत राग द्वेष और प्रचार प्रसिद्धि से सर्वथा दूर वे ग्राम कुल के पिता तुल्य थे।

ग्राम जीवन के वास्तविक अभावो और कष्टों में भी स्वेच्छया जीवन पर्यन्त गाव में रहकर ही आनन्द की आत्मिक अनुभूति करते रहे। गाव के जीवन को अधिक सुन्दर व सुखमय बनाने में जीवन की सार्थकता पायी। वे नगर के लोगो को इस आनन्द का बोध कराने के लिए आमत्रित करते थे और उस सुख को बाटते थे। अपने घर पर आये अतिथि की तरह ही गाव म आये किसी के जवाई, सगे सम्बन्धी को घर बुलाकर उनका स्वागत सम्मान करते और उनको रुकने और साथ रहने का आग्रह करते।

गाव ही परिवार गाव ही जीवन गाव का सुख उनका सुख उनका सुख सबका सुख गाव का दुख उनका दुख था। गाव मे गाव के लिए गाव के होकर रहे। गाव को दिया स्नेह, सहयोग और दिशा बदले में लिया कुछ नहीं मात्र विश्वास और श्रद्धा।

कर्तव्य परायणता गावो में है। मानव शरीरों के लिए—श्री गाव का जीवन सुरक्षित है।

(श्री भैरूदानजी छलाणी डायरी)

श्री भैरूदानजी छलाणी गाधीजी के विचारों को उनके रचनात्मक कार्यों के द्वारा व्यवहार में परिणत करते थे। एकादश व्रतों म मे स्पर्श भावना के अनुरूप छूआछूत निवारण और दलितो के उत्थान के लिये सदैव सचेष्ट रहे। उन्होंने छूआछूत और जाति पाति के भेद को नहीं माना, उसका विरोध किया और दलितों म चेतना और आत्म सम्मान जागरण का कार्य किया।

जिस समय दलित व हरिजनों के स्पर्श करने पर जल छींटा देकर शुद्ध होना सामाजिक दृष्टि से अनिवार्य माना जाता था श्री छलाणीजी ने इसे अपने परिवार में बन्द करा दिया। श्री छलाणीजी उनके घरो में जाकर उनके दुख दर्द और सुख खुशी मे सम्मिलित होते उनके सहयोगी बनते थ। अछूत माने जाने वाले बन्धु उनके घर में बेहिचक प्रवेश पाते थे एक ही पक्ति में बैठकर भोजन पाते औरों के समान ही आदर और सम्मान पाते थे। ग्राम के रूढ़िवादी लोग उनसे नाराज होते, उनका विरोध करते परन्तु वे शान्त भाव से सहन करते हुए दलितोत्थान के कार्य अविचलित करते रहे।

छूआछूत, दहेजप्रथा पर्दाप्रथा उन्मूलन औसर मौसर प्रतिबन्ध तथा ग्रामीण शिक्षा एव स्त्री शिक्षा के प्रसार के द्वारा समाज सुधार के साहसिक कार्यों में आजीवन लगे रहे। (श्री पूर्णाराम श्री फरसाराम श्री लूणाराम राधाकृष्ण बजाज) राजस्थान में मृत्यु भोज पर प्रतिबन्ध कानून बन जाने के बाद श्री छलाणीजी ने सरपच व प्रधान के समय में औसर मौसर नहीं होने दिये। कानून बनने से पहले ही उन्होंने इन अवसरों में सम्मिलित होना बन्द कर दिया। दूसरो को भी यह नहीं करने के लिये प्रोत्साहित करते। (श्री वासुदेव विजयवर्गीय)

दियातरा मे सार्वजनिक कार्यों व कुए की सामूहिक व्यवस्था में हरिजन व मुसलमान तेली तथा सभी जातियों को सम्मिलित रखने का उनका आग्रह सदैव रहता था। उनके प्रभाव से भेदभाव नहीं रह पाता था।

दियातरा से तीन कोस दूर लोहिया गाव मे पीने के पानी का कुण्ड कुआ बावड़ी तलाई कुछ भी सार्वजनिक साधन नही था। औरत मर्द दियातरा से पानी लेने आते थे। विक्रम सम्वत 2027 (सन् 1970) में छलाणीजी ने लोहिया गाव म कुआ बनवाया। इस कार्य की देख रेख के लिये श्री भवरलालजी छलाणी व श्री पूनमराम उपाध्याय को लगाया। कुआ खुदकर तैयार होने पर कोठा खेली बनने के वक्त ऊची जाति वालों ने शूद्र जाति को एक ही कोठे खेली से साथ पानी नहीं भरने देने की ठान ली। सेठ श्री भैरूदानजी ने तुरन्त काम बन्द करवा दिया और लोगों से कह दिया कि एक साथ सब बिना भेदभाव के पानी भरने को राजी होंगे तभी काम पूरा होगा। आखिर लोगो के एक साथ पानी भरने के लिये राजी होने पर ही छलाणीजी ने काम पूरा करवाया। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

ऊच नीच छूत अछूत, जात पात के भेदभाव से दुखी होते थे और भाई चारा और एकता चाहते तथा उसके लिये दिल और जान से प्रयास करते थे।

हरिजन मेघवाल एव अन्य दलित जातियो के लोगो मे लम्बे समय से चले आ रहे सामाजिक भेदभाव के कारण उनमे हीन भावना सस्कारबद्ध हो गई थी। श्री छलाणीजी ने उनको हीन भावना से ऊपर उठाने के लिये उनके अभिक्रम को जाग्रत करने के वास्तविक प्रयास किये। इस दृष्टि से उन्होने इस वर्ग के लोगो को पचायत, विधानसभा, ससद में प्रतिनिधित्व करने के लिये प्रोत्साहित किया और अपना सहयोग व समर्थन दिया। पचायतों मे जब दलित जातियो के लिए अलग आरक्षण नहीं था तब उन्होने सवर्ण जाति बन्धुओं का बहुमत होते हुए भी हरिजन श्री रूपाराम पवार को सरपच बनवाया। श्री धर्माराम पवार को भी आपने राजनैतिक क्षेत्र म आगे बढाया। श्री लूणाराम मेघवाल को भी पच, उपसरपच बनवाने का श्रेय श्री छलाणीजी को है। बीकानेर क्षेत्र क दलित वर्ग के सासद पन्नालाल बारूपाल को भी आपका स्नेह और आशीर्वाद रहा। (श्री फरसाराम श्री लूणाराम मेघवाल)

श्री छलाणीजी मगरा क्षेत्र में दलित जातियों मे सामाजिक राजनैतिक चेतना के अग्रदूत रहे हैं। (श्री पूर्णाराम चोहान)

एक बार बीकानेर के चौखूटी क्षेत्र में रहने वाली उनके मिल में काम करने वाली मेहतरानी किसी सज्जन को मुह छूट गालिया दे रही थीं। उसके बुरा बोलने की बात उनके पुत्र श्री भवरलालजी ने छलाणीजी ने कही। श्री छलाणीजी की प्रतिक्रिया थी, 'इन लागों पर जितने सामाजिक अत्याचार हुए हैं उनकी तुलना मे इनका गाली गलौज करना तो रत्ती मात्र नहीं है।

गाधीजी की दृष्टि में सवर्णों द्वारा हरिजनोद्धार का कार्य, पीढ़ियो द्वारा किये पापा का प्रेमपूर्ण प्रायश्चित ही है। छलाणीजी ने दलितोद्धार का कार्य इसी प्रेम भावना से किया निस्वार्थ और निश्छल।

खादी कार्य

श्री छलाणीजी ने 1935 से ही खादी पहनना प्रारभ कर दिया था। तेजपुर में वे अपने गल्ले के व्यवसाय के साथ आजादी के आन्दोलन से जुड़े हुए थे। खादी उस समय आजादी का बाना थी। उसे पहनने का एक विशेष महत्त्व था और उसके पीछे गांधी विचार का दर्शन था जो जीवन के हर क्षेत्र में स्वावलम्बन, श्रम, सेवा और अहिंसक सघर्ष का प्रतीक था। इसलिये स्वय खादी पहनते थे। साथ ही खुले रूप में खादी बचते थे। अपने परिवार व पास पड़ौस के सम्पर्क मे आने वाले लोगों को खादी पहनने के लिये प्रोत्साहित करते थे। उनके दो भाइयों और तेजपुर के अनेक युवक उनसे खादी पहनने को प्रेरित हुए।

तेजपुर (असम) म 1934 म मेरा सम्पर्क पूज्य भाईजी श्री भैरूदानजी म हुआ जब वे एक युवक थे और श्री दुर्गाप्रसादजी बगड़िया, श्री मूलचन्दजी बडर और भैरूदानजी के साथ घूमने जाता। तभी उनके गाधीवादी विचार का प्रभाव पड़ा। वे खादी पहनते थे और खादी बेचते थे। उन्हाने युवका के जीवन का निर्माण किया।

(श्री प्रतापसिंह बेद)

1943 मे श्री रघुवरदयालजी गोयल के साथ मिलकर खादी मन्दिर की स्थापना की। उसके आजीवन ट्रस्टी रहे। जब कभी भी इस सस्था को आवश्यकता हुई अपने पास से भरपूर सहयोग दिया। सस्थापक अध्यक्ष श्री रघुवरदयालजी के निधन के बाद 1974 से 1990 तक खादी मन्दिर के अध्यक्ष रहे। इनके कार्यकाल म खादी मन्दिर म ऊनी वस्त्र उत्पादन के अतिरिक्त सुथारी, लौहारी तेलघाणी, साबुन चूना क्रॉकरी आदि उद्योगों का बहुआयामी विकास हुआ।

(श्री कमलचन्द पुगलिया डॉ धर्मचन्द श्री इन्दुभूषण गोइल)
पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 10 11 83)

अक्टूबर 1985 में कुल्हे की हड्डी टूट जाने और उसके कारण हुई अपगता के बावजूद अध्यक्षीय दायित्व का निर्वाह सक्रियता स किया। खादी मन्दिर के ट्रस्ट मण्डल की बैठक अनेक बार उनके घर व खेत पर ही बुलाई। बैठका का उल्लेख उनकी डायरी में मिलता है।

वे ऊनी खादी सस्थान बीकानेर तथा श्री गगानगर की खादी सस्थाओं से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। राजस्थान के खादी जगत मे उनकी ख्याति एक निष्ठावान कार्यकर्त्ता और ऊनी खादी के विशेषज्ञ के रूप म थी। बीकानेर की ऊन स खादी और उद्याग के क्षेत्र मे उत्पादन की पहल प्रयोग करने वालों म स थे। उनमें खादी के विचार की सही समझ थी वहीं उसके उत्पादन प्रचार और बिक्री का व्यावसायिक विवेक था। जन्मजात वणिकवृत्ति और सेवावृत्ति का अपूर्व सगम छलाणीजी थे। गाव गाव में घूम घूम कर चर्खे व खड्डिया लगवाने कताई व बुनाई का प्रशिक्षण देने की तत्परता और कत्तिन बुनकरो के दुख दर्द को समझने की हार्दिकता उनम थी वहीं खादी सस्थाओं में उत्पादन को सुयोजित करने कच्चे माल की सही खरीद और पक्के माल की बिक्री के विशेष उपाय करने की उनकी सूझ बूझ अप्रतिम थी।

अकाल पीड़ित इस मगरा क्षेत्र में घर बैठे साधनहीन औरतों और पुरुषो को कम से कम लागत मे घर बैठे स्वाभिमानपूर्वक रोजी रोटी जुटाने मे तत्काल मदद खादी ही दे सकती है—इसी आस्था के साथ छलाणीजी ने खादी को अपने जीवन कर्म का अग बनाया।

'खादी विचार के लोग तो कम रह गये और अब खादी विचार की चीज न रह कर व्यापार की चीज बनती जा रही है। फिर भी कम पूजी म ज्यादा नौकरी देने की ताकत इसी काम में है। (पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 22 8 84)

छोटे बड़े सभी कार्यकर्त्ताओ के साथ उनका व्यवहार बड़ा ही सौहार्दपूर्ण रहा। अत वे सभी म लोकप्रिय रहे। कार्यकर्त्ता अपनी समस्यायें उनके सामने बेहिचक रख सकते थे। विवाद क विषया को वे ध्यान से सुनते थे खुद प्राय मोन ही रहते। अपनी निष्पक्ष राय बहुत कम शब्दों म मिठास के साथ रख देते थे। सस्थाए उनसे उचित मार्गदर्शन प्राप्त करती थी। (श्री दाऊदयाल आचार्य श्री जवाहरलाल जैन)

खादी आजादी को चाहने वाला का बाना, आजादी की लड़ाई का अहिंसक हथियार, सत्य और अहिसा म आस्था के अनुरूप विचार आर वृत्ति का प्रतीक रही है। श्री छलाणीजी का सारा जीवन खादी के विचार, वृति और व्यवहार का जीवन्त प्रतिदर्श था।

मगरा क्षेत्र मे कृषि और पशुपालन (गाय व भेड़) ही आर्थिक जीवन के आधार हैं। उस जमाने में इस क्षेत्र मे नहर ओर सिचाइ की कल्पना करना मुश्किल था, उसकी आथिक उन्नति क लिये खादी आर ग्रामोद्योग के द्वारा ही सम्बल देने का प्रयास व्यक्तिगत और सस्थागत स्तर तथा पचायत समिति क माध्यम से सरपच, प्रधान के पद पर रह कर किया। इस क्षेत्र मे ऊनी कताई व खड्डिया पर बुनाइ के लिये उनके प्रयास स हजारा कतिन बुनकरो को रोजगार मिला।

खादी एव सर्वोदय जगत की प्रसिद्ध विभूतियों—श्री गोकुलभाई भट्ट, श्री सिद्धराजजी ढड्ढा, श्री राधाकृष्णजी बजाज श्री जवाहरलालजी जैन, श्री रघुवरदयालजी गोयल श्री भगवानदासजी महेश्वरी, श्री तिलोकचन्दजी जेन, श्री सोहनलालजी मोदी आदि से उनक गहरे सम्बन्ध थे।

1977 म खादी ग्रामाद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री गाकुलभाइ भट्ट एव अन्य प्रमुख लोग ग्रामीण विकास के लिये योजना बनाने के लिये दियातरा मे उनके खेत पर एकत्र हुए थे। आपन अपने यहा उन्नत निर्धूम चूल्हे, शौचालय, गोबर गेस सयत्र, कृषि मे विकसित किये उन्नत बीजा, उन्नत नस्ल के बछड़ो, गाया तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध सिणक आदि से रस्सी उत्पादन के वास्तविक प्रयोग दिखाये थे। खादी ग्रामोद्योग द्वारा ग्रामीण समग्र विकास के व्यवहारिक प्रयोगकर्त्ता श्री छलाणीजी थे।

(श्री बैजनाथ सिद्ध, डॉ धर्मचन्द्र श्री सोहनलाल मोदी)

सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान

देश और विशप रूप स ग्रामा क उत्थान और समग्र विकास के लिये गाधी विनोबा के ग्राम स्वराज और सर्वोदय के विचार को हा सही हल मानते थे। (वैद्य महावीरप्रसाद) आचार्य विनोबा भावे से बहुत प्रभावित थे। व केवल वेचारिक प्रशसक और सैद्धातिक समर्थक मात्र नहीं थे अपितु उन्होने भूदान, ग्रामदान, ग्राम स्वराज और सर्वोदय के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया। आचार्य विनोबा भावे का छलाणीजी पर गहरा प्रभाव था।

1957 म कोलायत तहसील में भूदान पद यात्रा म सम्मिलित हाकर पूरी सहभागिता की। स्वय न भूमिदान किया तथा लागों को भूदान करने क लिय प्रेरित किया। स्वय ने 10 सम्पत्ति दान का सकल्प लिया जिस जीवन पर्यन्त निभाया। धन और धरती बट क रहगी के नारे के साथ हुए इस अभियान म दियातरा के श्री छलाणीजी जैसलमेर के श्री भगवानदासजी महेश्वरी फलौदी के श्री बालकृष्णजी थानवी भी साथ थे।

(श्री कन्हैयालाल टाटिया श्री वासुदेव विजयवर्गीय)

इस अभियान म दियातरा से देदावतों क बरे तक की भूदान पद यात्रा मे छलाणीजी साथ रह थे। देदावतों के बेरे का ग्रामदान हुआ। श्री छलाणीजी 27 4 61 को बीकानेर से रवाना होकर तेजपुर पहुचे। श्री द्वारकाप्रसादजी के साथ कार से रवाना हाकर 14 5 61 को असम के पदमपुर म आचार्य विनोबा भावे की असम पद यात्रा में सम्मिलित हुए। 17 5 61 को हिन्दी की गीता प्रवचन की चार प्रतियों पर बाबा के हस्ताक्षर लिए। बिहुपुरिया पड़ाव तक साथ रहे।

(डायरी 14 15 16 17 मई 1961)

दिसम्बर 1961 म गठित बीकानर क्षेत्रीय ग्रामदान ग्राम स्वराज्य अभियान समिति के आप प्रमुख सदस्य थे। 1962 म वैज्ञानिक सर्वोदयी विचारक ठा दयानिधि पटनायक के मार्गदर्शन म दा दिन का कार्यकर्त्ता शिविर श्री छलाणीजी के आमत्रण पर दियातरा के विद्यालय भवन में आयाजित किया गया था जिसमें सर्वोदय जगत के बड़े और छाट कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए थ। दा दिन क विचार व प्रशिक्षण के बाद भूमिदान—ग्रामदान क सकल्प पत्र भरान के लिये कार्यकर्त्ताआ की टोलिया निकाली थीं।

(श्री रामचन्द्र मक्कासर)

1970 म बाबू जयप्रकाश नारायण के बीकानेर जिलादान के आह्वान पर ग्रामदान—भूमिदान का अभियान खादी मन्दिर के अध्यक्ष श्री रघुवरदयालजी गायल मत्री साहनलालजी मोदी तथा श्री भैरदानजी छलाणी की अगुआई म ग्रामदान ग्राम स्वराज सम्मेलन व कार्यकर्त्ता शिविर का आयोजन दियातरा म किया गया था। इस शिविर के बाद कार्यकर्त्ता सारे क्षेत्र म ग्राम स्वराज्य समितियों एव ग्राम सभाये गठित कराने के अभियान पर गाव गाव में गये। गाव के लोगों द्वारा ही गाव का राज और अपन ही ससाधनों और श्रम से विकास के लिये लाग सहमत हो गये थ। एसा लगने लगा था कि अब गावा में सरकार की क्या भूमिका रहेगी। अकाल से पीड़ित जनता ने इस ग्राम स्वराज्य म समाधान देखा था। इस कार्यक्रम म श्री छलाणीजी ने तन मन धन स सक्रिय भागीदारी की। दुर्भाग्य से खादी मन्दिर और अन्य सस्थाआ द्वारा इस अभियान स हाथ खींच लेने से कार्यक्रम पुष्ट नहीं हो सका अकाल काल में समा गया।

(श्री सोहनलाल मोदी डॉ धर्मचन्द्र)

बीकानेर जिले के ग्रामा का स्वावलम्बी बनाने एव जिलादान के अभियान में व अग्रणी थ।

(श्री मालचन्द बोथरा)

श्री छलाणीजी सर्वोदय सम्मेलनों मे स्वय सम्मिलित होते थे और साथ ही परिवार के सदस्या व ग्रामवासियों को भी साथ ले जाते थे जिससे सर्वोदय के विचार और कार्यक्रमो की समझ सस्कार बनता और महान् विभूतियों के दर्शन का लाभ मिलता। (श्री वासुदव विजयवर्गीय)

अजमेर सर्वोदय सम्मेलन एव उसके पूर्व आचार्य विनोबा भावे की भूदान पद यात्रा म सपरिवार सम्मिलित हुए जिनमें धमपत्नी श्रीमती जेठीदेवी, पुत्र श्री भवरलाल, पुत्री कु पुष्पा तथा श्री लालूराम मेघवाल भी थे। इस अवसर पर श्री जवाहरलालजी नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गाधी भी सम्मिलित हुए थे। पदयात्रा के समय श्री छलाणाजी की विनोबाजी के साथ घनिष्ठ श्रद्धा का परिचय इस यात्रा म मिला। इस पद यात्रा के रास्ते में बड़ा कीड़ीनगरा आ गया था। बाबा ने तुरन्त रास्ता बदल दिया और लम्बे रास्ते से यात्रा की। 'बाबा चींटी को भी कष्ट नहीं देता' प्रत्यक्ष हुआ। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

5, 6 व 7 जुलाई 77 को बीकानेर व छत्तरगढ़ में आयाजित सर्वोदय सम्मेलन में श्री छलाणीजी सपरिवार सम्मिलित हुए जिसम छोटे पुत्र श्री फूसराज भी साथ थे। आचार्य श्री राममूर्तिजी, श्री सिद्धराजजी ढड्ढा, श्री नारायण देसाइ, श्री गोकुलभाई भट्ट आदि की अगवानी में श्री छलाणीजी रहे थे। (डायरी 5, 6, 7 जुलाई '77)

श्री छलाणीजा ने स्वय भूमिदान किया व भूदान यात्राय की।'

(श्री राधाकृष्ण बजाज श्री जिनेन्द्रकुमार जैन)

श्री छलाणीजी सर्वोदय विचार और काम के अच्छे कार्यकर्ता और विचारक थे। सस्था को उनका मार्ग दर्शन सयमित और विचारपूर्ण रहता था। छलाणीजी समग्र दृष्टि से सर्वोदय क विचार और कार्यक्रम को आगे बढ़ाने मे आजीवन लग रहे।' (श्री जवाहरलाल जैन)

लोकमान्य न्यायाधीश और मार्गदर्शक

श्री छलाणीजी का दियातरा गाव ही नहीं पूरे क्षेत्र और उसके लोगो से परिचय व्यापक था। उनकी सादगी, सज्जनता और दयालुता की प्रसिद्धि खूब थी। चौखले के लोगा के वे मार्गदर्शक थे। लोग अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक तथा सामूहिक समस्याआ के समाधान क लिये उनके पास आते थे। लोग उनकी राय को मानते और सम्मान देते थे। व पूरे गाव को एक परिवारिक इकाई मानते थे। परिवार के मुखिया और ग्रामपिता की भूमिका, बिना किसी औपचारिक पद के निभाते थे।

निष्पक्ष निर्वैर निर्भय और न्यायबुद्धि से अपना परामर्श और निर्णय देते थे। प्रसिद्धि और प्रचार की चाह नहीं रखते हुए परोपकार के द्वारा मगरा के लोगा क हृदय में अपना स्थान बना लिया था। (श्री धूड़ाराम प्रजापत)

व न्याय प्रिय व्यक्ति थ। लागा का हमशा हक की स्वान की सलाह दते थ। अनेक परिवारों के सम्पति के बटवारे परस्पर मन मुटाव और झगड़ा का बिना किसी को पता बताये ही निपटा दिया करते थे। इस काम क लिये व कई दिन और देर रात तक घर से बाहर रहते थे। उनक पिताजी को सन्देह हुआ कि दर रात तक कहा जात ह? गोपनीय रूप स पता लगवाया तो सही स्थिति जानकर प्रसन्न हुए कि व ता विवादा को निपटाने म लगे है। (श्री भवरलाल छलाणी)

गाव या आस पास के गावा म कहीं कोई झगड़ा फसाद हो जाता तो उनको बहुत दु ख होता था। व चाहते थ कि लोग आपस में प्रेम से मिलकर रहें। गाव के झगड़े गाव म ही निपटाने और थाने कचहरी से दूर रहन के समर्थक थ। लोग अपने झगड़ आपस म सलटाने में असफल हो जाते ता अत में सठजी के पास आत और उनका फैसला सबको मान्य हाता। वे लोक मान्य सुप्रीम कोर्ट का कार्य करत थे। उन्हाने सैकड़ा लोगो को हजारा लाखा रुपयो क अदालती खर्च से बचाया।
(श्री बृजलाल सठिया श्री धूड़ाराम श्री कमलचन्द पुगलिया)

एक मा के लड़ नही थाड़ा कम बेसी हुआ ता किसी दूसरे के तो गया नहीं। धन के लिये लड़ना कोई बुद्धिमानी की बात नही है। धन के लिय न लड़ यही अपरिग्रह वृत्ति का सबूत है। (श्री भैरूदानजी का पत्र दिनाक 11 3 83)

दियातरा गाव म रियासती राज क समय पुलिस थाना था। परन्तु उनके प्रभाव से झगड़ों टण्टा की सख्या नगण्य हो जाने से पुलिस थाना मात्र चौकी म बदल दिया गया। (श्री कमल पुगलिया)

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी आपकी तरफ से दियातरा ग्राम को एक एसी अद्भुत और अभूतपूर्व की सवा प्रदान की गई जिसकी जोड़ की मिसाल शायद कही नहीं मिलेगी। जब तक जीवित रहे तब तक गाव क लोगों को किसी भी क्षत्र की किसी शिकायत और तनाजे को आप बीच म पड़ न्यायपूर्वक निपटा देते थे। दियातरा गाव एक प्रकार से एक छोटा सा जीता जागता कल युगी राम राज्य ही बन गया था।
(श्री दाऊदयाल आचार्य एडवाकेट)

वे व्यवसाय कृषि पशु पालन स्वास्थ्य और समाज के विभिन्न क्षेत्रा से प्राप्त अनुभव जन्य ज्ञान को सब म बाटते थ। देश और क्षेत्र मे चल रही आर्थिक राजनेतिक घटनाओं और परिस्थितिया घटनाआ गतिविधिया की रेडियो और अखबार द्वारा पूरी जानकारी रखते ओर पैनी दृष्टि से उनका जीवन पर वर्तमान व भविष्य म पड़ने वाले प्रभावो एव निष्कषा स सबको अवगत कराते थे।

वृद्ध युवा बालक सभी उनके पास निस्सकोच आते मार्ग दर्शन पाते थे।
(श्री बृजलाल सेठिया श्री भैराराम डॉ चन्द्रा छलाणी)

निर्भीक और साहसी

श्री छलाणीजी म भय नाम की कोई चीज नहीं थी। बचपन म तेजपुर मैं आजादी के सेनानियों के सम्पर्क और गाधी विचार के प्रभाव से निर्भयता का सस्कार प्राप्त हुआ लगता है। वे महाराजा गगासिहजी क कठोर रियासती राज मे भी राज कर्मचारियो के द्वारा किये गये अत्याचारो का डटकर विरोध कर लेते थ।

रियासती काल में दियातरा गाव मे राजकीय पुलिस थाना था। सिपाही गाव के लोगो को भय दिखाते और मनमानी कर लिया करते थे परन्तु आम प्रजा राजभय को सहन ही कर लती थी। दियातरा म पीने के पानी के लिये तलाई और कुआ भी था। पानी की कमी के दिनो मे पानी भरने और पशुओ को पिलाने की बारी बन्ध जाती थी। चार पाच परिवारों क पास ही पानी खींचने के लिये तगड़े बैल थे जो यह व्यवस्था करते थ। थाने के सिपाही इस बारी को भग करते और दूसरे लोगों को पानी नहीं लेने देते। छलाणीजी ने इन सिपाहियो का मना किया और महाराजा गगासिंह तक शिकायत का साहस किया। फलत सिपाही को दण्डित किया गया।

सन् 1944 मे श्री रघुवरदयालजी गोइल लूणकरणसर में नजरबन्द थे। उनके स्वास्थ्य की स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई। डॉक्टर ने दवा इजक्शन लिख दिया परन्तु उसके मगवाने की कोई व्यवस्था नहीं हो सकती थी। उनसे मिलने का पता लगने पर राजा के कुपित होने और दण्डित होने का भय था। ऐसे आतक की अवस्था में घोर अन्धेरी रात में श्री छलाणीजी वहा निर्भयतापूर्वक गय और दवाई का रुक्का बीकानेर ले आये। श्री शकर महाराज के हाथो दवा लूणकरणसर समय पर पहुचा दी गई। श्री गोइलजी की प्राण रक्षा हो सकी। (श्री दाऊदयाल आचार्य)

सन् 1951 52 में इस क्षेत्र म डाकुओ का भय एव आतक व्याप्त था। डाकू लोग लूट या अपहरण कर फिरौती वसूलते थे। इस तरह की धमकी दियातरा म भी आई। सरकार ने सुरक्षा के लिय घर पर सिपाही नियुक्त किये। परन्तु छलाणीजी ने कह दिया किसी एक की सुरक्षा उचित नहीं है। सरकार कब तक सरक्षण देगी। उन्होंने अपनी सुरक्षा हटवा दी और बिना भय के रहे।

रात के घोर अधेरे, मेह पानी में रोही जगल या कहीं भी जाने मे उनको कोई भय नहीं लगता था। व बच्चो को भी साहस की कहानिया सुनाकर निर्भयता का सस्कार देते थे। घर में बहुत से पशु रहते उनमें कई अड़ियल व उपद्रवी मारने वाले होते। अपनी जवानी और प्रौढ़ उम्र म उनको बेहिचक बिना मारे पीटे वश म कर लेते थ। पचायत प्रधानकाल में कुआ क निर्माण और मरम्मत कार्य का निरीक्षण करने स्वय 300 400 फीट नीचे उतर जाते उन्हे भय नहीं लगता था। गाव और क्षेत्र की समस्याओं और शिकायतो को मत्रियो अधिकारियो के समक्ष स्पष्ट रखने म कोई भय या सकोच नहीं करते थे। निर्भयता के साथ विनम्रता और दृढ़ता उनमे मूर्तिमत हुई थी।

सन् 1988 म वैद्य श्री दयानजी स्वामी द्वारा श्वास कफ और कास की चिकित्सा के चलते स्थिति अत्यन्त गभीर हो गई और क्षय रोग प्रकट हो गया। वैद्यजी चिन्तित और परिवार वाले सब भयभीत और आशकित हो गय। क्षय राग विशेषज्ञ ऐलोपेथिक डॉक्टर का इलाज अपरिहार्य था। जीवन पर सकट की विकट स्थिति मे भी छलाणीजी विचलित नही हुये और निर्भयतापूर्वक दृढ़ता क साथ कहा वैद्यजी आप उपचार चालू रखिये। मेरा विश्वास है कि में इस स्थिति स उबर जाऊगा। यह अदम्य साहस विरल ही होता है।

पचायत प्रधान

मगरा क्षेत्र और उसके लोगो मे उनका व्यापक परिचय था। यहा की परिस्थितिया समस्याओं, और आवश्यकताओं तथा स्थानीय ससाधनो से ही उनक समाधान की उनकी समझ गहरी थी। ग्राम्य जीवन को स्वावलम्बी सुखी ओर समृद्ध बनाने के लिए तथा अपेक्षित परिवर्तन के लिये उन्हाने स्वय प्रयोग करके व्यवहारिक उदाहरण प्रस्तुत करने का आजीवन अभिक्रम निरन्तर किया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन क विचारों को स्वीकार करन और उसमे सहयोग की सक्रिय भूमिका के सस्कार के फलस्वरूप उनका विश्वास था कि आजादी के आन्दोलन की पयाय भारतीय राष्ट्रीय काग्रेम आजाद भारत को गाधीजी क माग से विकसित करगी और गावों के आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य लोगा के अभिक्रम का जगाकर कृषि पशु पालन खादी ग्रामोद्योग तथा देशज उपयुक्त तकनीक के द्वारा करेगी। लेकिन आजादी के बाद सत्ता के साथ आये साच में बदलाव और भ्रष्टाचार वृत्ति स उनका काग्रेस से मोह भग हुआ और निराशा हुई।

ग्रामों के विकास के लिये वे राजनीति मे भाग लेना आवश्यक मानते थे। स्वाधीनता के बाद गाधीजी की जन सेवा की रचनात्मक राजनीति के द्वारा देश म उपलब्ध सरकारी ससाधनो और व्यवस्था का पूरा पूरा सहयोग ग्राम विकास और जरूरतमद ग्राम जन के हित म अधिकतम सार्थक रूप मे करने को आवश्यक समझते थे। इस उद्देश्य की पूति के लिये उन्होने ग्राम और क्षेत्र के विकास कार्यक्रमा और राजनीति में रुचि ली। प्रसिद्धि पदलिप्सा और प्रचार से सर्वथा दूर रहकर क्षेत्र के विकास में सकारात्मक भूमिका अदा की। परन्तु दलगत राजनीति के दलदल मे कभी नहीं फसे।

उन्होंने 1951 में आजाद देश के प्रथम आम चुनाव 4 12 51 से 20 12 51 म निर्दलीय उम्मीदवार के रूप म विधान सभा का चुनाव लड़ा था। तब नोखा कोलायत सयुक्त विधान सभा क्षेत्र था। काग्रेस क श्री रामरतनजी कोचर, राम राज्य परिषद के श्री कानसिहजी रोड़ा निर्दलीय श्री भैरूदानजी छलाणी एव मनीरामजी विश्नाई उम्मीदवार थे।
(श्री लक्ष्मीचन्द सेवग)

कांग्रेस की ओर से श्री छलाणीजी को कांग्रेस के पक्ष में बैठ जाने का कहा गया। उनका जवाब था 'महाभारत मे पाण्डु के पाण्डव पाच और कुन्ती पुत्र कर्ण हुए हैं। में हार गया तो पाण्डव पाच होंगे और आप हार गये तो भी पाण्डव ही होंगे।'

श्री छलाणीजी और कोचरजी दोनो ही हार गये। रामराज्य परिषद के श्री कानसिंह रोड़ा विजयी हुए थे। कोलायत क्षेत्र मे श्री छलाणीजी की लोकप्रियता प्रचुर थी। चुनाव हारने के बाद वे निष्क्रिय होकर नहीं बैठे बल्कि क्षेत्र के सुधार, समाधान तथा लोगों की मदद के कामो मे पूरे उत्साह और मनोयोग से लगे रहे।

राजस्थान मे 1955 में ग्राम पचायतो का गठन हुआ। आप दियातरा के निर्विरोध सरपच बनाये गये। 1958 म नये पचायत अधिनियम के अतर्गत पचायत समितियाँ तथा उनमें प्रधान पद का प्रावधान किया गया। ग्राम सरपचो, पचो और लोगो के आग्रह पर आपने प्रधान पद का उम्मीदवार होना स्वीकार किया। अपने निस्वार्थ सेवा कार्यों के बल पर कोलायत पचायत समिति के निर्विरोध प्रथम प्रधान चुने गये। (श्री भीमसेन चौधरी, श्री परसाराम, श्री लक्ष्मीचन्द सेवग, श्री बृजलाल सेठिया, श्री वासुदेव विजयवर्गीय)

दो अक्टूबर 1959 को नागौर मे पचायत राज सम्मेलन हुआ जिसमे तत्कालीन प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू सत्ता के विकेन्द्रीकरण की विधिवत घोषणा करने आये थे। गाधीजी के ग्राम गणराज्यो और आर्थिक स्वावलम्बन की विकेन्द्रित व्यवस्था की दिशा मे इस कदम से श्री छलाणीजी आशान्वित और प्रसन्न थे। इस सम्मेलन म इनके साथ झझू के सरपच श्री बृजलाल सेठिया और विकास अधिकारी श्री आर के रगा भी साथ थे। (श्री बृजलाल सेठिया, श्री आर के रगा)

श्री छलाणीजी का पचायत प्रधान काल 1959 से 1962 तक रहा। उनके प्रधान काल में कार्यशैली और आचरण शुद्धता के सम्बन्ध मे उनके साथ म काय करने वाले विकास अधिकारी श्री सौभाग्यमल सिघवी (1959 60) तथा श्री आर के रगा (1960 62) तथा झझू के तत्कालीन सरपच श्री बृजलालजी सेठिया ने मार्मिक और प्रेरक प्रसगों का उल्लेख अपने सस्मरणो मे किया है।

सच्चाई सादगी और गाधी निष्ठ विचार के अनुरूप ही उनका व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन रहा। पचायत समिति के प्रधान पद पर आदर्श आचरण क विलक्षण उदाहरण थ। (श्री सौभागमल सिघवी श्री उम्मेदसिह भाटी)

उस समय प्रधान को मासिक भत्ता एव जीप आदि की सरकारी सुविधायें मिलने लगी था। परन्तु उन्होंने सरकारी सुविधाओ का त्याग किया। मानदेय मासिक भत्ता अथवा यात्रा व्यय का भुगतान कभी नहीं उठाया। सरकारी जीप या साधन सुविधा का कभी निजी काय के लिये उपयोग नहीं किया। यहा तक कि अपने

गाव दियातरा से पचायत समिति कार्यालय पैदल उट बैलगाड़ी अथवा उस से ही आते जाते थ। उन्होने सरकारी सुविधाओ का त्याग किया।

(श्री सुशीलप्रकाश गोयल श्री मूलचन्द मठिया श्री परमाराम श्री उम्मेदसिंह भाटी श्री पूनमराज छगाणी)

गाव के लोगो की तकलीफो की वास्तविक जानकारी स्वय गाव गाव घूम घूम कर करते थ। लोगो स सीधा सम्पर्क और सवाद करते थ। उनके दुःख दद के निवारण के लिये अपने पास से मदद कर देते थे। उन्हे सदा गावो में घूमते हुए देखा गया।

(श्री आर के रगा श्री सौभागमल सिघवी)

उनको गावो की समस्याओ की जमीनी जानकारी और समझ थी। उनका अनुभवजन्य ज्ञान और समस्याओ के समाधान की देशज सूझ बूझ व्यवहारिक और निराली थी। सामूहिक समस्याओ के समाधान के लिये व गाव के लोगों को स्वय प्रयास करते रहने का आग्रह किया करते थे। लोगो के श्रम और स्वेच्छया जन सहयोग को जुटाकर निर्माण कार्य करवा देते थ। पचायत समिति और लोगो के द्वारा किये जाने वाले कार्य का स्वय निरीक्षण करते और उचित दिशा निर्देश दिया करते थे। 300 400 फीट गहरे कुओ में भी वे बेधड़क उतर जाते थे और किये गये मरम्मत कार्य की जाच स्वय कर लेते थ।

पचायत समिति के सभी सदस्यों ग्राम पचायत के सरपचो पचो सबकी एक राय करने की उनकी अद्भुत क्षमता थी। वे पचो सरपचों और ग्राम के प्रतिष्ठित और सामान्य लोगो को एकजुट करके ग्राम सभाओ के माध्यम से निर्माण और अन्य काय कराते थे। (श्री सौभागमल सिघवी आर के रगा)

सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियो को सरकारी नियमो के पालन और नियमानुसार कार्य करने की सलाह देते थे। उनके कार्यकाल में अच्छी गुणवत्ता और अधिक उपयोगिता वाले अधिक कार्य और कम लागत में हुए जो आज की स्थिति में अकल्पनीय हो गये हैं।

गाव गाव में बच्चो और विशेष तौर से बच्चियो की शिक्षा के लिये प्रेरणा देते थे। जाति पान्ति और छुआछूत तथा औसर मौसर नही करने के लिये लोगो को समझाते रहते थे। गाव या गावो के लोगों के विवादो का स्वय निपटारा कर देते थे। थाना और अदालत में जाने का मौका नहीं देते थे।

उन्होने अपने घर मे निर्धूम चूल्हे गोबर गैस सयत्र तथा खेत में डोली बन्दी मेड़ बन्दी करके वर्षा के जल सञ्चय और उससे कृषि करने, कृषि में उन्नत बीज व खाद के उपयोग के प्रयोग स्वय किये और अपने प्रयोग ज्ञान और अनुभव को क्षेत्र के लोगो में बाट देते थे। वे लोगों से जो करने की अपेक्षा रखते वह स्वय पहले करते

और लोगों के समक्ष बातों से नहीं प्रत्यक्ष काम से उदाहरण प्रस्तुत करते थे। इससे उनका सीधा प्रभाव लोगों पर पड़ता था। लोग अपनी प्रेरणा से सुधार और विकास के लिये सक्रिय होते थे और सहभागी बनते थे।

मगरा क्षेत्र में स्थानीय संसाधनों से सिंचाई के द्वारा गेहूं पैदा करने के उनके सफल प्रयोगों का आकाशवाणी जयपुर से प्रसारण हुआ। उनके कार्यकाल में मगरा क्षेत्र महिला शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, चर्खा, खादी, निर्धूम चूल्हा कृषि विकास की नई तकनीक अपनाने में मगरा विकास खण्ड जिले में अग्रणी रहा।

(श्री सोभागमल सिंघवी)

जिले में विकास की कोई योजना बनती तो जिले के अधिकारी उनसे राय लेकर कार्यक्रम बनाते थे। उनकी राय इतनी विलक्षण और व्यवहारिक होती थी कि उच्च शिक्षित अधिकारी और विशेषज्ञ भी हतप्रभ हो जाते थे। (श्री इन्द्र शर्मा)

मगरा क्षेत्र में उस समय नहर और कुओं से सिंचाई की कल्पना नहीं की जा सकती थी तब उन्होंने खेती, पशु पालन को आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभकारी बनाने के लिए वर्षा के जल के अधिकतम संचय के प्रयोग किये। कोई भी नया बीज, खाद निर्धूम चूल्हा अथवा अन्य कुछ भी गावों में प्रयोग, प्रदर्शन और प्रसार के लिये सरकारी स्तर पर आता, सबसे पहले श्री छलाणीजी के यहां उसका प्रयोग के लिये किया जाता। श्री छलाणीजी ने पशुओं की अच्छी कीमत का लाभ गोपालक को दिलाने के लिये अच्छी नस्ल के सांड स्वयं तैयार किये और हर गांव के लिये अच्छे सांडों की व्यवस्था की। इसके परिणाम स्वरूप गाय बछड़ों की अच्छी कीमत आने लगी। (श्री सोहनलाल मोदी श्री विजय कुमार जैन श्री इन्द्र शर्मा)

अपने प्रधान काल में गांव गांव में पाठशालाओं का प्रारंभ करने के पुख्ता प्रयास किये। साथ ही ग्रीष्मावकाश के स्थान पर वर्षाकाल में अवकाश की व्यवस्था की जिससे कृषकों के कृषि कार्य में बच्चों का सहयोग भी मिलता रहे और शिक्षा में भी व्यवधान नहीं पड़े अन्यथा अभिभावक खेती के समय बच्चों को शाला भेजने में आपत्ति करते थे। दूसरे बच्चों में भी कृषि कार्य और श्रम का संस्कार दृढ़ होने और जमीन से जुड़े रखने की दृष्टि थी।

अकाल के समय कुओं की मरम्मत, तालाबों की खुदाई का कार्य करवाते थे। इस कार्य के लिये सरकारी धन नहीं भी होता तो अपने पास से तथा अन्य सम्पन्न लोगों से व्यवस्था कर लेते थे। अकाल के समय कोई गाय और पशु भूखा नहीं रहे और गांव के लोगों को गांव छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना पड़े इसके लिये घास चारे के केन्द्र, पशु शिविर और पीने के पानी की व्यवस्था की ओर पहले से ही ध्यान देते थे। ग्राम पंचायतों में विकास और ग्रामजन के हित में जो भी सरकारी योजनाएं आती उनकी दृष्टि रहती थी वास्तव में जो जरूरतमंद है वह उससे वंचित नहीं रहे।

प्रधानकाल म सिचाई स भी अधिक पीने के पानी क इन्तजाम की दूरदृष्टि रखी। बाला चेलासर लाटिया आदि अनक गावा म सरकारी व निजी सहयाग म कुओ तालाबा व कुण्डा के निमाण करवाने का प्राथमिकता दी।

तालाबा में जब पानी कम होना तो उसमें कीड़ पैदा हा जाते। पशुआ में उसके पीने से बीमारिया हा जाती थी। श्री छलाणीजी ने पशुपालन विभाग से विशषज्ञों को बुलवाकर पशुओं क टीके लगवान की व्यवस्था की और पशुआ को रागो स बचाव की व्यवस्था की। (श्री इन्द्र शर्मा)

क्षेत्र के प्रसिद्ध तालायत मले में हमेशा सपरिवार भाग लते थ। जब प्रधान थे तब मेले की सारी योजना बनात और व्यवस्था को खुद देखते थे। मेले के अवसर पर बच्चो की शिक्षा महिला व प्रौढ़ शिक्षा समाज सुधार और विकास के प्रति लोक चेतना क कार्यक्रम आयोजित करते।

(श्री बशीधर जोशी, श्री सौभागमल सिघवी श्री इन्द्र शर्मा)

गाधीजी ने लाठी लगोटी और चादर धारण करके भारत की आत्मा को प्रकट किया। छलाणीजी न खद्दर की ऊची धाती कमीज और पीली पागड़ी धारण करके मगर के ग्रामजन से आत्मीयता स्थापित की। मगरे में गाधी क स्वरूप को प्रकट किया बाहरी रग ढग से नहीं बल्कि अतरग भाव से भाषा से और अपन आचार और व्यवहार से। (श्री सौभागमल सिघवी श्री आर के रगा)

क्षेत्र की पचायतों के कार्य म उन्होंने जीवन पर्यन्त रुचि ली। पद पर रहे या नही रहे उनकी रुचि और कार्य में अतर नहीं आया। क्षेत्र क विकास और जनहित के प्रत्यक्ष कार्य म उनका परामर्श ओर सहयाग पच सरपच ओर सरकारी अधिकारियों को सहज ही उपलब्ध होता था। (श्री इन्द्र शर्मा)

पचायत के चुनावों में वे पूरी रुचि लेते थे। उनकी डायरियों में क्षेत्र की सभी पचायता के पच उपसरपच व सरपच पद के उम्मीदवारों के नाम विजयी लागों की सूचियो का विस्तार से उल्लेख हुआ है। उनका प्रयास रहता था कि चुनाव निर्विरोध हो। इसके लिय वे पूरी शक्ति लगा देते थे। अच्छे लोगों को आग आन के लिय प्रेरित करते और बिना किसी जातिगत राजनीति का विचार किये पूरा समर्थन दिया करते थे। श्री पूनमचन्द छलाणी को निर्विरोध दियातरा का सरपच बनवाया। श्री हीरालाल छलाणी को पचायत चुनाव में खड़े होने की प्रेरणा दी।

(श्री मूलचन्द नौलखा छलाणीजी के पत्र दिनाक 4 12 81)

महिलाओ और दलित वर्ग के लोगों को भी इस क्षत्र में सक्रिय होने के लिये प्रेरणा समर्थन और सहयोग दिया। उन्होंने अपन प्रयास से सवण बहुल पचायत मे भी दलित वर्ग के बन्धुआ श्री रूपाराम पवार श्री लूणाराम आदि को पच व सरपच बनवाये। (श्री लूणाराम श्री फरसाराम)

'श्री छलाणीजी विचारशील समाज सेवक थे और विशेष तौर से गांवों के समग्र विकास के लिये उपयोगी व व्यवहारिक दृष्टिकोण रखते थे। उन्होंने दियातरा को आधार बनाकर कार्य किया। गांधीवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण सदा दलगत राजनीति से दूर रहे और रचनात्मक कामों में सदा रुचि लेते रहे। कृषि, खादी ग्रामोद्योग एवं सर्वोदय के क्षेत्र में तथा भूदान यज्ञ में सक्रिय भागीदारी निभाई व यात्रायें की। स्त्री शिक्षा, जल संकट निवारण, हरिजनोद्धार, नसल सुधार आदि अनेक रचनात्मक काम किये। (श्री बद्रीप्रसाद स्वामी)

श्री भैरूदान छलाणी ने अपने क्षेत्र की कठिन परिस्थितियों में पंचायत समिति का नेतृत्व किया। भूगोल इतिहास के निर्माण में किस प्रकार योगदान देता है, इसका उदाहरण श्री भैरूदान छलाणी का जीवन स्पष्ट प्रस्तुत करता है।'

(श्री मूलालाल सुरेका)

गांधी विनोबा के ग्राम स्वराज्य को पंचायतों के माध्यम से साकार करने का प्रयोग मगरा क्षेत्र में किया जिसका तत्कालिक प्रभाव उस विचार की सार्थकता सिद्ध करता है। परन्तु गांधी का काम गांधी बनने से ही होता है। छलाणीजी ने मगरे के गांधी बनकर ही इसे प्रमाणित किया।

शिक्षा प्रसार

श्री छलाणीजी के बचपन के समय (1909) में आजकल के विद्यालयों की व्यवस्या नहींवत् थी। इसलिये उनकी शिक्षा भी मामूली हुई जिसमें हिन्दी लिखना पढ़ना और महाजनी हिसाब किताब करना पर्याप्त समझा जाता था। उनकी संस्थागत शिक्षा नहीं हुई। परन्तु उनकी बुद्धि कुशाग्र थी एवं प्रज्ञा प्रखर थी। शिक्षा के महत्त्व को वे भली भांति आंकने में समर्थ थे।

उन दिनों गांवों में निरक्षरता व्यापक थी और पढ़ाई के प्रति कोई रुझान नहीं था बल्कि उसकी आवश्यकता का बोध भी कम ही था। यह कहना चाहिये कि आधुनिक शालाकीय शिक्षा का विरोध था। ऐसे वक्त में उन्होंने सन् 1950 में दियातरा में प्राथमिक शाला का प्रारम्भ करवाया। उसके लिये भवन बनवाया एवं राजकीय प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की।

गांव गांव में लोगों में बच्चों को पढ़ने भेजने के लिये प्रचार किया। इसके लिये वे ऊंट पर अपने बड़े लड़के श्री भंवरलाल और श्री धूड़ाराम को गांवों में भेजा करते थे। बाहर गांवों से आने वाले बच्चों के लिये छात्रावास बनवाया। (श्री धूड़ाराम)

अपने पंचायत प्रधानकाल में गांव गांव में बच्चों के साथ बच्चियों को पढ़ाने के लिए ग्रामीण अभिभावकों को समझाते थे तथा सरकारी स्कूल खुलवाने में अग्रणी रहे।

दियातरा के प्राथमिक विद्यालय में जब पर्याप्त संख्या होने लगी तब उसे उच्च प्राथमिक स्तर तक क्रमोन्नत करने का निश्चय 20 10 60 को दीपावली पर सामूहिक राम राम के अवसर पर किया गया। इस हेतु इन्तजामिया कमेटी में श्री अमोलखचन्दजी छलाणी श्री गंगादासजी चारण, श्री ऊकारमलजी ब्राह्मण, श्री ईशरदानजी लखमेरा और श्री लालूराम मेघवाल को रखा गया। (डायरी 1960)

शिक्षा अधिकारी श्री कल्ला ने शर्त रखी कि पक्का भवन बनाने की जिम्मेवारी लेते हो तो आठवीं तक की कक्षा की स्वीकृति देते है। श्री छलाणीजी ने तुरन्त उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया। विद्यालय हेतु भूमि भागता श्री गंगादानजी व श्री ईशरदानजी ने दी। भवन के निर्माण के लिये सार्वजनिक चन्दा किया गया परन्तु उसमें अधिकांश योगदान श्री हजारीमल छलाणी चेरिटेबल ट्रस्ट का ही रहा।

(श्री बनेसिंह बीठू)

श्री छलाणीजी ने सार्वजनिक जनहित के कार्य करायें उनमें मुख्यत उनका ही योगदान होता परन्तु उन्होंने कभी अपना नाम नहीं दिया। इस ढंग से कार्य किया जैसे लोगों के सामूहिक योगदान से ही हुआ है। वे दूरदृष्टि रख कर कार्य की योजना बनाते थे। उच्च प्राथमिक की मान्यता के लिये जो भवन बनवाया वह आगे माध्यमिक स्तर और आज उच्च माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत हो चुका है।

(श्री भैंराराम श्री बनेसिंह)

भवन की नींव 10 मई 1963 को श्री द्वारकाप्रसादजी जोशी श्री मांगीलालजी चलवा एवं श्री रिद्धकरणजी भादाणी के हाथो लगवाई। (डायरी 1963)। 1963 64 में शाला उच्च प्राथमिक (आठवी कक्षा) तक क्रमोन्नत हो गई। 1966 67 में माध्यमिक शाला भवन पूरा हो गया। (श्री धूड़ाराम) 1971 में माध्यमिक स्तर तक की मान्यता मिली। तत्कालीन उपमंत्री श्री मनफूलसिंहजी भादू से इसका उद्घाटन करवाया गया था इसे माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत कराने मे श्री मालचन्दजी छाजेड़ के राजनैतिक प्रभाव व प्रयास का योगदान रहा। अपने असम के मित्र श्री दुर्गा प्रसाद जी बगड़िया से भी आर्थिक सहयोग प्राप्त किया।

विद्यालय का भवन बनाकर सरकार को सौंपने के बाद सामान्यत दानदाता निश्चित हो जाते हैं और फिर सरकारी तन्त्र के भरोसे छोड़ देते हैं। परन्तु श्री छलाणीजी के लिये यह विद्यालय राजकीय दायित्व नही था बल्कि उनके गांव का अपना विद्यालय था और सतत विद्यालय के संरक्षक बने रहे। छलाणी परिवार अभी भी यह भूमिका निभा रहा है।

श्री छलाणीजी ने विद्यालय में छात्रों की पर्याप्त संख्या बनाने के लिये आस पास के गांवों के छात्रों के लिये छात्रावास की व्यवस्था पुराने प्राथमिक शाला भवन में की और उसके अभिभावक संरक्षक की तरह देख रेख करते रहे। छात्रों का पितृवत्

स्नेह और सहयोग दिया। कुछ छात्रों को तो उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों की तरह घर पर रखा। उनके अध्ययन की सारी व्यवस्था उन्होंने की। अनेक छात्र उनके यहा रहकर पढाई कर सके। दसवीं के बाद आगे की पढाई की व्यवस्था गाव म नहीं थी। तब श्री फूसराजजी छलाणी के साथ गाव के अन्य छात्रा के भोजन आवास व पढाइ की व्यवस्था बीकानेर म मकान किराये पर लेकर की व पूरी पढाई का सारा खर्च वहन किया। आज उनके आशीर्वाद से अनेक ग्रामीण युवा अध्यापक, तहसीलदार और उच्च पदो पर आसीन है। (श्री धूड़ाराम, श्री भैराराम, श्री भूपसिंह)

उनका प्रयास था कि जब युवक पढ लिखकर राजकीय एव अन्य कार्यो में पद स्थापित और प्रतिष्ठित होग तब शिक्षा के प्रति लगाव स्वत ही प्रेरित हो जायेगा। उनका यह प्रयास आज फलीभूत हो रहा है।

वे विद्यार्थी, विद्यालय और शिक्षकों की असुविधाओ समस्याओं के समाधान के प्रति एक सरक्षक की तरह रुचि लेते थे।

जरूरतमद विद्यार्थियो के विद्यालय शुल्क, पुस्तकें, वस्त्र आदि की अपने ट्रस्ट के माध्यम से व्यवस्था कर देते थे। विद्यालय में एक हजार रुपये से एक निधि की व्यवस्था कर दी थी जिसके उपयोग का अधिकार प्रधानाध्यापक को दे रखा था। उसके माध्यम से छात्रा को पाठ्य सामग्री सस्ते दाम पर उपलब्ध करवाई जाती थी। (श्री मुरलीधर सक्सेना)

विद्यालय म फर्नीचर, भवन मरम्मत, रगाइ पुताई आवश्यकतानुसार व करवा देते थे। बस उनके पास जाकर निवेदन करने मात्र से समस्या का समाधान मिल जाता था। माध्यमिक विद्यालय स्तर तक क्रमोन्नति होने पर विद्यालय म छात्रा के लिये शौचालय स्नानगृह, अध्यापकों के लिये आवासगृह का निर्माण छलाणीजी ने ट्रस्ट के माध्यम से करवाया। (श्री मुरलीधर सक्सेना, श्री सुशीलप्रकाश गोयल)

'परिवार में शादी के समय प्राथमिक शाला के कच्चे भवन में जूट की टाट पट्टिया मेहमानो की सुविधा व सुन्दरता के लिये लगाई गई थीं। विवाह के बाद टाट उतारना था। मैंने उनसे कहा कि इनसे छात्रो को आराम रहेगा। उन्होने तुरन्त कहा पट्टिया विद्यालय में रहने दो। भाई स वह दिया खर्च मेरे नाम लिख देना।'

(श्री मुरलीधर सक्सेना)

विद्यालय की कोई आवश्यकता और अड़चन हो, श्री छलाणीजी उसका हल निकाल देते थे।

कोई भी अध्यापक दियातरा के राजकीय विद्यालय में आता उसे अपने भोजन मकान बर्तन आवास किसी की कोई असुविधा नहीं होने देते थे। उनके यहा मिलने जाने क लिये साथी अध्यापक कहते कि एक बार सेठजी के दर्शन अवश्य करलो, वे

ऐसे सेठ है जो शिक्षक का सम्मान करते है और उसकी सुविधा का स्वत ही ध्यान रखते हैं। नये आनेवाले व्यक्ति को यह लगता कि सेठा से वह क्यों मिले सेठ होंगे तो अपने घर मे। मुझे क्या हाजरी देनी? परन्तु मिलने पर उसको अपने भ्रम और भूल का आभास स्वत ही हो जाता। उनके व परिवारजन के व्यवहार और स्नेहपूर्ण आतिथ्य से नये आये शिक्षक का भ्रम ध्वस हो जाता और उनसे सदैव के लिये व उनके परिवार से जुड़ जाता। उनके प्रेम परिवार का अग बन जाता। उनसे पिता तुल्य स्नेह और सरक्षण पाता। गुरुओ के दिल मे छलाणीजी की गुरु मूर्ति स्थापित हो जाती। (श्री मुरलीधर सक्सेना श्री सुशीलप्रकाश गोयल श्री भूपसिह श्री बनेसिंह बीठू श्री धूड़ाराम)

दियातरा मे जो भी अध्यापक आया छलाणी परिवार के स्नेह सम्मान व सहयोग का कायल हो गया।

विद्यालय मे 15 अगस्त और 26 जनवरी के अवसर पर नाटक और खेलकूद के आयोजन में सपरिवार सम्मिलित होते। ऐसे अवसरो पर बच्चों को मिठाइ और पुरस्कार तथा अध्यापकों को बढ़िया भोजन कराना उनका नियम था। पुरस्कार वितरण आज भी श्री भवरलालजी छलाणी एव परिवार द्वारा यथावत किया जाता है। (श्री भूपसिह श्री बनेसिह, श्री मुरलीधर सक्सेना)।

विद्यालय में किसी भी विशेष आयोजन सम्मेलन आदि मे सम्मिलित होने वाले शिक्षको अधिकारियो प्रतिभागियों को उनका सहज ही आतिथ्य मिलता था। विद्यालय में आने वाले हर नये शिक्षक निरीक्षक अधिकारी को श्री छलाणी के आतिथ्य को स्वीकार करना पड़ता था। 1978 मे विद्यालय की रजत जयन्ती समारोह मे सभी पूर्व विद्यार्थियों शिक्षको व प्रधानाध्यापको को आमन्त्रित करके सम्मानित किया एव सम्मान में भोज दिया।

(श्री भैराराम श्री धूड़ाराम श्री मुरलीधर सक्सेना)

वे छात्रों के लिये गुरु को पिता तुल्य मानते थे। छात्र की भूलों व गलतियो का सुधारना गुरु का कत्तव्य है। इसके लिये वे दण्ड देना अनुचित मानते थे। एक बार प्रधानाध्यापकजी द्वारा उद्दण्ड व उधमी छात्रों का शारीरिक दण्ड कठोरता से दिया गया। उनको इसका पता बेटी पुष्पा दोहिती बेगी से मिला। आपने प्रधानाध्यापकजी को पत्र लिखा और प्यार से समझा दिया। शारीरिक दण्ड का इस जमाने मे कोई औचित्य नहीं। अत छात्रों को प्रेम से समझाना चाहिये। (श्री सुशील प्रकाश)

शिक्षा के लिये चेतना जागरण प्रचार और पढ़ाई की प्रवृत्ति प्रेरित करने का काम आजादी से पूर्व ही प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने बच्चियो व स्त्रियो की शिक्षा का पूरा समर्थन किया। अपने घर की बच्चियों पुत्रियो पोतियो दोहितियों को स्नातक एव अधिस्नातक स्तर की शिक्षा का अवसर दिया। घर मे आई बहुओ को भी लड़कों की

भ्रान्ति ही पढ़ाई का अवसर दिया। घर की बच्चियो से कहते थ कि नहीं पढ़ोगी तो जल्दी शादी कर दगे। पढ़ोगी तो जितना चाहोगी उतना पढ़ायगे (श्रीमती लीला कोठारी)। दोनो लड़के श्री भवरलाल, फूसराज, पुत्री पुष्पा तथा पौत्रियाँ, दोहितिया उच्च शिक्षित है। अपनी छोटी पुत्रवधू को तो विवाह क बाद एम ए और पीएचडी करवाइ। डॉ चन्द्रा छलाणी तिनसुकिया (असम) म प्राध्यापिका है। उनका सदैव प्रयास रहा कि गावों का कोई भी बच्चा या बच्ची बिना पढ़े नहीं रहे। शिक्षित होकर ही वे परिवार और समाज की सवा भली भाति प्रकार कर सकेगे।

शिक्षा का उद्देश्य वे देश और समाज की सेवा के लिये योग्य होना मानते थे। श्री भवरलाल छलाणी को लिखे पत्र म लिखा।

शिक्षा के बिना तो देशसवा भी नहीं हो सकती।'

शिक्षा प्राप्त करना व्यवसाय से भी अधिक महत्त्व रखता है।'

(भैरूदानजी क पत्र पुत्र श्री भवरलाल के नाम)

उन्होने शिक्षा के द्वारा सादगी, श्रम, स्वावलम्बन तथा समानता के सस्कारो की अपेक्षा रखी। अपने पुत्र श्री फूसराज का गाव क अन्य छात्रों के साथ ही पढ़ाया तथा बीकानेर में भी गाव के छात्रों को पढ़ने के लिये उनक साथ रखा। बीकानेर म पढ़ाई के साथ गो सेवा के लिये गाय भी रखी।

उन्होने स्वय सस्थागत शिक्षा नहीं पाई थी। परन्तु उनकी शिक्षा सस्कारगत थी। शिक्षा के द्वारा उन्होंने घर परिवार के ही नहीं गाव और क्षेत्र के लड़के, लड़किया और युवकों के जीवन का निर्माण किया। (श्री सन्तोकचन्द गोलछा, श्री धूड़ाराम)

शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन तथा सुधार का महान कार्य किया जिसका प्रभाव अब ग्राम समाज मे दृष्टव्य है।

कृषि कर्म

श्री भैरूदानजी छलाणी एक वणिक जैन परिवार में जन्म थे और स्वय एक कुशल व्यवसायी थ। उनके व्यवसाय कौशल का ही परिणाम छलाणी परिवार के तेजपुर म फर्म हजारीमल भैरूदान मे गल्ले का व्यापार, दिनहट्टा मे छलाणी स्टोर्स मे तम्बाखू का व्यापार और बीकानेर म छलाणी वुलेन मिल म ऊनी उत्पादन उद्योग रहे है। इन सभी के द्वारा प्रचुर लाभ के साथ सचालन मे श्री छलाणीजी का मार्ग दर्शन ही मुख्य था। व्यवसाय के माध्यम से खूब अर्थ कमाने की उनकी योग्यता स्वय सिद्ध थी परन्तु उन्होने 1945 मे ही तेजपुर छोड़कर दियातरा मे ही रहना प्रारम्भ कर दिया। यहीं से व्यवसाय का सचालन किया। रामनवमी के आस पास मुकामा पर जाकर व्यवसाय के लेन देन हिसाब किताब और कर्मचारियों की सभाल करते थे।

शहर में जमीन मकान लेकर समस्त शहरी सुविधाओं को जुटाने भागने की पूरी सामर्थ्य होते हुए भी उन्होंने शहर के बजाय गाव म रहना ही श्रेयस्कर समझा। उन्हे उत्तम जीवन के लिय गाव का जीवन ही श्रेष्ठ लगता था। उन्होंने व्यवसाय विस्तार भी तेजपुर दिनहट्टा तिनसुकिया जैसे कस्बा में किया बड़े शहरों म नहीं किया। उन्होने आवास क लिए शहर म कोई भूखड या मकान नहीं लिया।

कृषि को उन्होने जीवन कर्म के रूप में अपनाया। जमीन स उत्पादन करना देश के लिये भला काम है इस में मेहनत ज्यादा और आय कम तो रहेगी ही। हा इसमें कुशल अकुशल सबको काम मिल जाता है। कपट फरब कम से कम होता है।' (पत्रम पुष्पम् पत्र दिनाक 10 11 83) जीविकोपार्जन म व्यवहार शुद्धि एव स्वय की आय के साधन क साथ अधिकाधिक परोपकार की भावना स्पष्ट रूप से लक्ष्य रहा। अत कृषि को उन्होंने जीवन साधना क साधन क रूप म ही स्वीकार किया।

गाधीजी के विचारो के अनुरूप ही इस बात में उनकी पूरी निष्ठा थी कि भारत ग्रामों मे बसता है और ग्रामोन्नति ही भारत की उन्नति है। ग्रामा की उन्नति का अर्थ ग्रामो की आर्थिक सम्पन्नता और ग्रामीणों के सुख सयमपूर्वक रहन की व्यवस्था करना है। मगरा क्षेत्र म उस समय दूर दूर बसे गाव सड़कों का नाम नही अत्यलप वर्षा ककड़ीली या रेतीली जमीन सिचाई का कोई साधन नहीं और अकाल की बार बार पड़ती छाया की परिस्थितिया थी। मगरा क्षेत्र मे जीवन की एसी भीषण अवस्था म आर्थिक जीवन के दो प्रमुख आधारो में एक कृषि दूसरा गो पालन या पशु पालन ही थे। अत कृषि और गो सवर्द्धन को उन्होने अपनाया ओर इसमे सुधार और विकास के प्रयोग किय जिनस ग्रामजन का अधिक उत्पादन और उससे अधिक उपार्जन हो। इसके सहायक धन्धे के रूप में खादी और ग्रामोद्योग का बढ़ाने का अभिक्रम हाथ में लिया।

ठेठ ग्रामीणों के जैसा पहनावा धोती कमीज पगड़ी और देशी जूत धारे। कृषि के लिये स्वय भाणे के गाव (कढ़) तथा धुराले (सड़क के चौराहे के पास जिसमें अब श्रीमती जेठी देवी कृषि फार्म है) 6 मुरब्बे जमीन खरीदी तथा माधोगढ़ में अपने कई सम्बन्धियों के लिये भी मुरब्बे लिये। वे चाहते थे कि सम्पन्न लोग गावों म जमीन ल ओर जमीन से जुड़ें। व्यवसाय स की गई कमाई में स कृषि पर खर्च कर—जिसस गाव के लोगों को रोजगार मिले, कृषि म नये नये पयोग हों जिनका उपयोग करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दूसरे लोगो को मिले। गावों से पलायन रुक।

(श्रीमती पुष्पा श्री कमलचन्द पुगलिया)

खती के लिये जमीन के बाद पानी सर्वोपरि है। उन्होंने अपने दोना खेतों (कढ़ ओर धुराले) में मड़ बन्दी और डोला बन्दी करके वर्षा क व्यर्थ बहते जल को रोक्कर जमीन मे रिसने और सूखने देकर उसस जमीन में सग्रहीत नमी से सर्दी मे गेहू

सरसों व चने की खेती करने की मगरा में पहल की। इस गेहूं सरसों की खेती के समाचार आकाशवाणी जयपुर से भी प्रसारित हुए। इसको देखकर दूसरे किसानों ने भी यह प्रयोग करने का साहस किया। (श्री आर के रगा)

वर्षा के जल के बाद पानी का दूसरा स्रोत कुए हैं। इस क्षेत्र में पानी बहुत गहरा है। 400 500 फीट गहराई पर पानी निकलने की सम्भावना होती है। कुआ बनाना व्यय और कष्ट साध्य कार्य है। सामान्य किसान साहस नहीं करता। उस समय ड्रिलिंग मशीनों और बोरिंग तकनीक की सुविधा इस क्षेत्र में आज की तरह उपलब्ध नहीं थी। इन कठिन परिस्थितियों में उन्होंने खुला कुआ खुदवाने का कष्ट साध्य और व्यय साध्य कार्य करने का साहस किया।

सन् 1973 में वढ़ में पहला कुआ तथा नलकूप बनवाना प्रारम्भ किया। इसके पीछे सिंचित खेती की आर्थिक सम्भाव्यता तथा इसके लिये खुले कुए और नलकूप दोनों का प्रयोग करके देखने की दृष्टि रही। साथ ही खुले कुए की खुदाई में स्थानीय मजदूरों को रोजगार देने की दृष्टि स्पष्ट रही। नलकूप तो बोरिंग मशीन के द्वारा ही बनता है। इस कार्य में भारी बाधाएं आईं। अचानक आई अतिवृष्टि के कारण खुले कुए में वर्षा का पानी तथा मिट्टी भर गई और बड़ा कड़ाव फस गया। सारा श्रम और धन व्यर्थ हो गया। परन्तु धैर्य और दृढ़ सकल्प के साथ आप सिंचाई के साधन के विकास में लगे ही रहे। ट्यूब वेल भारी खर्च और कठिनाइयों के होते हुए भी बनवाया।

जनवरी सन् 1985 में धुगले में फिर खुला कुआ खुदवाना शुरू किया। 400 फीट खुदवाने के बाद भी पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं आया। इस बीच 13 अक्टूबर, 1985 को कुल्हे की हड्डी टूट जाने और उसके ठीक नहीं होने से अपगता आने के बावजूद दिसबर, 1985 तक खुदाई का काम चलता रहा। परम्परागत सुगनों और शकुन देखकर (सूंघ कर) जमीन के अन्दर पानी बताने वाले की राय से 400 फीट के बाद बोरिंग कराने का विचार किया। तकनीकी विशेषज्ञ की राय ली। बोरिंग का काम मशीनों की उपलब्धि व वित्त की व्यवस्था व अन्य व्यवधानों के चलते रुक गया। परन्तु सकल्प अटल रहा। सन 1988 में पुन बोरिंग का कार्य करवाना शुरू किया जो अनेक अकल्पनीय बाधाओं से झूझते हुए 1989 में पूरा हुआ। कुए की खुदाई नापने के लिये एक छड़ी बना रखी थी। वह नापते समय टूट गई। आपने सहज भाव से कहा जकारे हुवे, जकारे टूटे कृषि सम्बन्धी कुए के काम में होने वाले खर्च को वे निवेश मानते थे। इसमें हुए नुकसान को नजर अन्दाज कर देते थे।

(श्री बैजनाथ, श्री कमल पुगलिया)

जब उन्होंने दियातरा में कोलायत तहसील का प्रथम ट्यूब वेल चालू किया, उसमें उन्हें बहुत कष्टों का सामना करना पड़ा। खूब समय लगा और अत्यधिक खर्च हुआ। मगर वे अति निष्ठावान, दृढ़ विचार शक्ति धुन के धनी थे। अन्तत सफल

होकर ही रहे। यह साठ व सत्तर के दशक का समय था जब ग्रामों में ट्यूब वेल तकनीक का नामो निशान नहीं था। (श्री उम्मेदसिंह भाटी)

सिंचाई के बाद कृषि उत्पादन में बीजों का महत्त्व है। आपने खेत में नये उन्नत बीजो के प्रयोग किये। सरकारी विभागों में जब प्रयोग और प्रदर्शन के लिये कोई भी बीज खाद या तकनीक आती सबसे पहले अधिकारी श्री छलाणीजी से ही सम्पर्क करते थे। वे प्रयोग करके उसका विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालते और अपने प्रयोगों और परिणामों के आधार पर दूसरे किसानो को राय देते।

(श्री आर के रंगा श्री इन्द्र शर्मा)

उन्होंने अपने स्तर पर उन्नत बीजों का विकसित किया। विशेष रूप से मुरकी ग्वार काले ग्वार और काली कानी के मतीरे उल्लेखनीय हैं। आण्टकी ग्वार जिसकी आण्टीदार फली होती है जो सब्जी के लिए भी स्वादिष्ट ओर बिना रेशे वाली तथा जल्दी पकने वाली होती है। उसमें कम्पी नहीं होती जिससे फली तोड़ना सुविधाजनक होता है। उनके ग्वार की बाजार में अपनी अलग पहचान थी। कोई चोरी भी कर लेता तो बाजार में पकड़ आ जाता। वे ग्वार का इस क्षेत्र में कृषि की रीढ़ मानते थे क्योंकि यह कम पानी में भी पैदा हो जाता है। इसका हर हिस्सा फली फलगट और चारा अच्छी आय देने वाला होता है। कम पानी मे होने वाली यह पैदावार इस क्षेत्र के लिये वरदान है। वे ग्वार की खेती बड़े क्षेत्र में पूरी योजनापूर्वक करवाते थे।

(श्री कमल पुगलिया)

उन्होंने काली कानी के मतीरों के बीजो का विकास किया जिसकी बेलो में ज्यादा और खूब मीठे फल होते है। इन मतीरों को वे अपने हाथों से सम्बन्धियों और मेहमानों को बुलाकर खिलाते थे। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया श्री बैजनाथ सिद्ध)

1977 मे जब गोइल कुटीर में श्री गोकुलभाई भट्ट आये तब आण्टकी ग्वार फली का साग ओर बढ़िया मतीरे अतिथियों को खिलाये। (डॉ धर्मचन्द्र)

बीजों की खूब सावधानीपूर्वक छटाई करना कच्चे बीजों को पक्के बीजों से अलग करना बीजों को अच्छी तरह सूखाना उनको सुरक्षित रखना उनको उपचारित करना आदि सब अपने हाथों से करते और अपनी देख रेख में करवाते थे।

(श्री बैजनाथ सिद्ध श्री कमलचन्द पुगलिया)

वे कृषि विज्ञानियों द्वारा की गई खोजो की जानकारी रखते थे। उनका प्रयास रहता था कि ऐसे बीज हों जो अल्प वर्षा वाले क्षेत्र में अधिक उपज कम पानी और खाद के दे सके। जापान से मतीरों के बीज तथा मोर्वी (गुजरात) तथा नागौर से एरण्ड के बीज मगाकर उन्होंने प्रयोग किये। खेत की बाड़ पर एरण्ड बोई जो कम पानी में उग जाती है। दो तीन साल फसल देती है और जानवर भी नहीं खाते।

खेती म ट्रेक्टर का प्रयोग भी इस क्षेत्र मे सर्वप्रथम उन्होन किया और उसक प्रचलन का मार्ग प्रशस्त किया। ट्रेक्टर क प्रयोग का उनका निष्कर्ष रहा कि इससे ज्यादा जमीन तो जुतती है परन्तु जमीन की खुदाई गहरी हो जाती है उससे पैदावार शुरू म बढती है परन्तु पाला व घास के बीज समाप्त हो जाते हैं उसस पशुचारे की उपलब्धता कम हो जाती है जो इस क्षेत्र के पशु पालन क लिये आवश्यक है। ट्रेक्टर से खेती मे ज्यादा उपज के लिये गहरी बुआई, ज्यादा पानी और खाद की जरूरत होती है खर्च अधिक पड़ता है। जो इस कम पानी वाले क्षेत्र के लिये आर्थिक दृष्टि स अन्तत अलाभकर ही साबित होती है।

इस क्षेत्र के लिये कुल मिलाकर सामान्य कृषक के लिये मेड़ बन्दी, बैल और ऊट से खेती तथा देशी खाद और अच्छे देशी बीज कम लागत म अधिक लाभप्रद हैं। उन्हाने ट्रेक्टर के साथ बेल व ऊट भी रखे और प्रयोग से प्राप्त अनुभव के बाद ट्रेक्टर का छोड़ दिया।

उन्होने अपने खेत में किये प्रयोगों को क्षेत्र क दूसरे सभी किसाना के लिए प्रदर्शित किया और उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया। जन्म म वणिक और व्यवसायी होते हुए भी कृषि के पडित माने जाते थे। उनका व्यवहारिक ज्ञान किसी विशेषज्ञ से कहीं अधिक सार्थक था।

उनका कृषि सम्बन्धी ज्ञान उनकी विलक्षण प्रज्ञा का प्रतीक है। खेत पर वे जल्दी पहुच जाते। खेत पर स्वय हाथो से काम करते। उनका ज्ञान अनुभव जन्य था। जमीन मे घास की मात्रा जमीन की उर्वरता बता देती है। एक बीघ में ग्वार 1½ 2 किलो, बाजरी 1/4 किलो बीजना पर्याप्त होता है, अधिक से नुकसान होता है। मुह से भाप जमने लगे तब गेहू की बीजाई के लिये उपयुक्त समय होता है। उससे पहले बोने से वह लाभ नहीं मिलता जो मिलना चाहिये।' (श्री बनेसिह बीठू)

उन्होने कृषि और ग्राम्य जीवन को समृद्ध और आनन्द पूर्ण बनाया और उसका अनुभव शहर के लोगों को कराते रहते थे। वे चातुर्मास मे सपरिवार खेत मे रहते थे जहा रहने के लिये सुदर झापड़, अतिथिशाला रसोई भडार आदि सब थे। अपन मित्र श्री रघुवरदयाल गोयल की स्मृति मे गाडल कुटीर का निर्माण करवाया जिसमें अतिथि आवास और सस्थाओ की बैठकें व अन्य कार्यक्रमो का आयोजन करते रहते थे। श्री छलाणाजी का खेत एक आश्रम का सा दृश्य और ग्राम्य जीवन के आनन्द का अनुभव देता था। (श्री मनोहर लाल भादाणी)

खेतों म मेड़ बन्दी करवाने उन्नत बीजो से फसल लेने और पैदावार बढाने के सफल प्रयोग किये। (श्री मूलचन्द सुरेका)

कृषि के पारगत पडित थे। उन्नत बीज और तकनीक का विवेकपूर्ण प्रयोग व परीक्षण किया व अपने द्वारा विकसित बीज और ज्ञान को कृषकों में वितरित किया। ग्वार की आण्टी फली लम्बी फली आदि उन्नत बीज उल्लेखनीय देन है।

(श्री भैरूराम उपाध्याय)

शहरी जीवन जीने की सामर्थ्य होते हुए भी खेत और खेती से जुड़े रहे और खेत को ऐशो आराम या अतिरिक्त आय का फार्म हाउस नहीं बनाया।

(श्री बनेसिंह बीठू श्री कमल पुगलिया)

स्वय खेत पर काम करते। ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को मजबूत करने के लिए वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढग से खेती करते। अच्छे बीजों का चयन करते। स्वय ने काले ग्वार के उत्तम बीज विकसित किये। (श्री कमल पुगलिया)

एक व्यापार प्रधान समाज में जन्म लेने के बावजूद अपनी धरती की जरूरत पर उन्होंने किसान और उससे सम्बन्धित कृषि पर अपना ध्यान लगाया और ध्यान ही नहीं लगाया उन्होंने पूरा जीवन ही खपा दिया। (श्री उम्मेदसिह भाटी)

उनकी डायरी में कृषि और कुए के सन्दर्भ में प्राय रोज प्रचुरता से उल्लेख मिलता है। उससे विदित होता है कि कृषि उनके लिये एक आध्यात्मिक साधना की युक्ति ही थी सामान्य अन्न उपजाना मात्र हेतु नहीं था। यह तो उस तप का फल मात्र था।

खेती बाड़ी धन्धा ही एसा है जिससे नैतिकता से जीवन यापन किया जा सकता है। जीवन को सपूर्ण बनाने के लिये भी खेती सर्वोपरि है।

(श्री भैरूदानजी डायरी से)

वानप्रस्थ में मैंने मन से खेती और समाज सेवा पर ही मन लगाने का तय किया। (पत्रम् पुष्पम् पत्र दि 17 11 81)

गो सेवा पशु प्रेम अकाल राहत

पशु प्रेम

गाव के जीवन का खेती के अतिरिक्त प्रमुख अग पशुपालन है। श्री छलाणीजी गाव के जीवन के लिये पशुपालन आवश्यक मानते थे। पशुपालन भी ग्रामीण आर्थिक जीवन का आवश्यक आधार है। कृषि और पशुपालन दोनों परस्पर पूरक हैं। साथ ही पशुपालन से मानवीय प्रेम के साथ मनुष्य से इतर प्राणियों में भी उसी ब्रह्म की अनुभूति और प्रेम का विस्तार होता है। श्री छलाणीजी का मनुष्यों की तरह पशुओं से भी अतिशय प्रेम था। अपने यहा गाय बैल बछड़े भैंस ऊट बकरिया बड़ी सख्या में रखते थे। ऊपर में उनके यहा 50 100 तक एक साथ पशु रहते थे।

कृषि के पारगत पडित थे। उन्नत बीज अ।
परीक्षण किया व अपने द्वारा विकसित बीज और
ग्वार की आण्टी फली लम्बी फली आदि उन्नत

शहरी जीवन जीने की सामर्थ्य होते हुए
खेत को ऐशो आराम या अतिरिक्त आय का फा
(श्री

स्वय खेत पर काम करते। ग्रामीण अथ
वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढग से खेती करते। ऽ
काले ग्वार के उत्तम बीज विकसित किये।

एक व्यापार प्रधान समाज म जन्म लेन
पर उन्होने किसान और उनसे सम्बन्धित कृषि
ही नही लगाया उन्होने पूरा जीवन ही खपा दिग

उनकी डायरी म कृषि ओर कुए के सम्
मिलता है। उससे विदित होता है कि कृषि उनक
युक्ति ही थी सामान्य अन्न उपजाना मात्र हेतु
मात्र था।

खेती बाड़ी धन्धा ही ऐसा है जिसस -
सकता है। जीवन को सपूर्ण बनाने के लिये भी र

वानप्रस्थ म मैने मन से खेती और समा
किया।

गो सेवा पशु प्रेम अकाल राहत

पशु प्रेम

गाव के जीवन का खेती के अतिरिक्त प्रमुख
गाव के जीवन के लिये पशुपालन आवश्यक मानते थ
जीवन का आवश्यक आधार है। कृषि और पशुपालन
पशुपालन से मानवीय प्रेम के साथ मनुष्य से इतर
अनुभूति और प्रेम का विस्तार होता है। श्री छलाणीजी
भी अतिशय प्रेम था। अपने यहा गाय बैल बछड़े भ
म रखते थे। ऊपर म उनके यहा 50 100 तक एक सा

की कीमत मात्र 100 125 रुपय होती होगी तब उन्होंने नागोरी उत्तम किस्म के बेल 400 रुपय देकर खरीदे। यह बहुत तेज दौड़ने वाले बैल थे। (श्री भैरूदानजी पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनांक 19 4 85)। बैलो की जोड़ी गाड़ी को लेकर निकलती तो लोग दरशन आते थे। दियातरा से गजनेर बहुत कम समय में पहुचा दिया करते थे। (वैद्य टाकुर प्रसाद शर्मा)। उन्हे मेल मगरिया म बैलो पर जाने, दौड़ म भाग लेने का शौक था और प्रथम रहने का गौरव प्राप्त होता था। सवत् 1997 मे गभीर बीमारी से उठ थे फिर भी अपने छोटे साले की शादी मे बेलगाड़ी मे दियातरा से गगाशहर गये। वापसी म एक नागोरी दौड़ा बैल खरीद लाये थे।

गायो के प्रति उनका लगाव विशेष था। वे अपनी आखो के सामने या आस पास दूर भी किसी गाय को भूखी प्यासी और असहाय नही देख सकते थे। गाव म, गह म या रोही म कही भी अपाहिज बीमार, असहाय और भूखी गाय होती उस घर ले आते अगर खड़े होने चलने म असमर्थ होता तो गाड़ा और आदमी भेजकर मगवा लेते, उसको चारा पानी देकर और सेवा सुश्रुषा करके स्वस्थ होने पर मालिक को सभला देते थे। रोही म चरने गई कमजोर गाय अगर एक दो दिन नही लौटती तो उसकी खोज म अपने घर के सदस्यो बेटे श्री भवरलाल या हाली आदि को ढूढने भेज देते थे। कहा कमजोर गाय बैसक पड गई हो, तो उठ नहीं पायेगी, भूखी प्यासी तड़पती मर जायेगी, उसकी खोज खबर करवाकर उसे खड़ा करने, गाव लाने की व्यवस्था करते फिर सेवा करके स्वस्थ करते। गाय किसी की भी हो, भूखी नही मरनी चाहिये। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

अच्छी नस्ल की दूधारू गायो के पारखी थे और उनको घर पर रखना अति प्रिय था। वैसे गाय कैसी भी हो उनको मा के समान ही उनको प्रिय थी।

अच्छी नस्ल का पशु कहीं भी होता तो वे उसे देखने जाते और नस्ल सुधार के लिये प्रेरित करते।

अकाल राहत

मगरा क्षेत्र अत्यल्प वर्षा का क्षेत्र है। उसमे अकाल तो भाग्य रेखा ही है। अकाल और सूखे के समय पशुओ के लिये चारे और पानी का नितान्त अभाव, इस क्षेत्र के लिये हर नहीं तो हर दो तीन वर्ष बाद अकाल का वर्ष होता है। पशुओ के जीवन पर भीषण सकट आ जाता है। 50 वर्ष म हुए विकास म स्थितियो म सुधार होने के बावजूद आज भी मगरा और राजस्थान के अन्य रेगिस्तानी क्षेत्रो म अकाल वास्तविकता है।

श्री भैरूदानजी छलाणी अकाल की स्थिति की गभीरता से निपटने के लिये किसी सरकार, संस्था या जनता के आगे आने की प्रतीक्षा नहीं करते थे। वे अपने ही साधन स्रोतो से पशुओ के लिये चारा केन्द्र पशु सेवा शिविर प्रारभ कर देते थे। संस्थाओ सरकार और जनताओ को भी वे सक्रिय करने के लिये सजग करके

उनका सहयोग सयाजित कर लेत थे। गायो और पशुपालको पर आय सकट की पीड़ा की अनुभूति उनका ऐसे हाती थी जैसे उन पर ही चाट पड़ी है। ऐसी निष्ठा, पीड़ा की अनुभूति तथा पीड़ा के निवारण की उत्कठा उनका स्वभाव ही थी।

अकाल क सम्बन्ध म वे जिल के अधिकारियों जन प्रतिनिधियो राज्य सरकार गा सेवा सघ व दानदाताओ से पत्राचार सम्पर्क और सवाद निरन्तर करत और सही कदम उठने तक अपना प्रयास नहीं छोड़ते थ। उनके द्वारा प्रस्तुत अकाल की स्थिति और समाधान को सही माना जाता था।

हर अकाल के समय वे गो रक्षा और अकाल राहत के काम म तन, मन और धन से जुट पड़ते थे। उनका भाव रहता था कि दियातरा और उसके आस पास की ही नही पूरे मगरा क्षेत्र का एक भी गोवश चारे पानी के अभाव म मरने नहीं पाये।

लोग इस बात म आश्वस्त रहते थे कि सेठ भैरूदानजी के रहते अकाल से अवश्य ही राहत मिलेगी। लाग कहते भगवान रूठा तब तो अकाल पड़ा है वह तो पता नहीं कब तुष्ट हागा। परन्तु भैरू तो बरसेगा ही।

(श्री मूलचन्द नालखा श्री फरसाराम श्री पूनराराम उपाध्याय श्री भैराराम श्री धूड़ाराम प्रजापत श्री वशीधर जोशी)

एक अकाल के समय सहज भाव से कहा— वैद्यजी अकाल बड़ा भयकर पड़ा है। आपके देखने म जो भी भूखी प्यासी गाय नजर आय आप मेरी तरफ से उनकी व्यवस्था कर देना। गाव भिजवा सके तो भिजवा दना। शहर मे व्यवस्था बने तो बना देना सारा खर्चा मे वहन करुगा परतु गाय माय को तड़पने मरने मत दना।

(वैद्य श्री दयाल स्वामी)

19 6 61 मे भीषण अकाल था। श्री छलाणीजी पचायत समिति के प्रधान थे। उन्होने अकाल की स्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव कराने के लिये समाज सेवी श्री बद्रीप्रसादजी सोडाणी का बुलाया। श्री सोडाणीजी को विकास अधिकारी श्री आर के रगा के साथ सूखे और भूखे का दर्शन कराया। श्री सोडाणीजी ने खादी के काम और राहत तुरन्त पहुचाने की व्यवस्था की। (श्री आर के रगा)

श्रीमती कान्ता कथूरिया विधायक थीं। दुष्काल के समय दियातरा म श्रीछलाणीजी के यहा भोजन की व्यवस्था स्वाभाविक रूप म हुई। श्री छलाणीजी ने लोगा के अनाज के अभाव का अनुभव कराने के लिये लाल ज्वार की राटी वह भी लूखी परोसी और कहा कि लोगा को तो यह भी नहीं मिलती। श्रीमती कथूरिया ने राशन भिजवाने के लिये अपने प्रभाव का उपयोग किया। फरसाराम)

इसी भाति श्री जगन्नाथ प[illegible] [illegible] काल क्षेत्र के दौरे के समय दियातरा क[illegible] आर से

थी। तूम्बे के बीज व भरूट के बीज की रोटिया परोसी और भान कराया कि लोग क्या खाने को विवश है। (श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

1969 70 में भी भीषण अकाल था। श्रीमती इन्दिरा गांधी अकाल क्षेत्र और पारवरण के दौरे पर आई तब श्री छलाणीजी द्वारा अकाल राहत में चारा केन्द्र एव अकाल राहत कार्य चलाया जा रहा था। ग्रामीणो द्वारा अकाल की स्थिति और छलाणीजी के कार्य से प्रधानमत्री को अवगत कराया गया। जिस पर श्रीमती गांधी ने श्री छलाणीजी की प्रशसा की और धन्यवाद दिया। (डॉ धर्मचन्द्र)

सन् 1967 68 सवत् 2025 मे मगरे मे दुष्काल था। इस मध्य एक अच्छी वर्षा हो जाने से दियातरा के तालाब भर गये परन्तु पशुओ के लिये चारा बिल्कुल नहीं था। लोग अपने पशुओ को तालाब के पानी के भरोसे छोड़ गये। सैकड़ो प्राय 1500 गाय भूख से मरने की स्थिति में आ गई। श्री छलाणीजी ने इन गायो के लिये अपनी ओर से चारे और देखभाल की व्यवस्था कर दी। किसी गाय को भूख से मरने नहीं दिया। (श्री वशीधर जोशी)

इन गायो में कई बीमार अपाहिज गाये भी थी। उनको कौए तग करते थे। सेठजी ने गायो को कौओ के उपद्रव से बचाने के लिये मजदूरो को वेतन पर रखा जिनका काम कौओ से गायो को बचाना था। (श्री लूणाराम श्री वशीधर जोशी)

1981 में भी अकाल के समय पशु पोषण आहार केन्द्र व चारा केन्द्र का सचालन श्री छलाणीजी ने किया। जिसमे 15 रुपये मन चूरा बेची जाती था। (डायरी 1981)

1987 88 भीषण अकाल के वर्ष थे जिसका असर 1990 तक रहा। अन्य क्षेत्रो में लाखो गोवश अकाल में काल कवलित हुए। श्री छलाणीजी ने अपने ही बूते पर चारा केन्द्र का सचालन शुरू किया। एक हजार पशुओ की योजना थी परन्तु 2000 पशुओ की व्यवस्था छलाणीजी ने की। (श्री बैजनाथ)

अन्य अकाल की तरह इस दुष्काल के समय भी चारा डिपो की [illegible] वाली को स्पष्ट निर्देश थे कि कोई भी पशुपालक खाली नहीं जाय। अगर उसके पास पैसे नहीं हैं तो भी चारा अवश्य दे दिया जाय। गाय भूखी नहीं रहे। वे [illegible] लिये अपनी तरफ से पर्ची दे देते थे। उसका अर्थ होता था कि उनके नाम राशि [illegible] जाय। वे उनका हिसाब भी नहीं रखते थे। कोई पैसे दे गया तो ठीक [illegible] तकाजा नहीं करते थे। अन्त में हिसाब किया तो जो राशि बकाया [illegible] से [illegible] भर दी।

(श्री वशीधर जोशी श्री [illegible] श्री [illegible] [illegible])

इस अकाल के समय श्री छलाणीजी द्वारा सचालित चारा केन्द्र पर तूड़ी श्रीरामनारायण राठी ट्रस्ट के मार्फत आती थी। राठी ट्रस्ट ने तूड़ी के भाव बढ़ा दिये थे परन्तु श्री छलाणीजी पहले से ही तय भाव पर तूड़ी विक्रय करते रहे। राठी ट्रस्ट को इससे आपत्ति थी। उन्होने तूड़ी भेजना बन्द कर दिया। सारा जमा चारा तूड़ी वितरित हो गई और गायो के भूख मरने की स्थिति आ गई। सेठजी ने प्रधान मत्री राष्ट्रपति लोक सभा अध्यक्ष, मुख्यमत्री अकाल आयुक्त सभी को तार चिट्ठिया दे दी कि पशु मर रहे है चारे के अभाव मे। फिर भी कोई कार्रवाई नहीं होने पर स्वय उपवास प्रारभ कर दिया। अगर गाय माता भूखी है तो वे कैसे खा सकते हैं। उस समय श्री छलाणीजी पैर से तो अपग थे ही श्वास की गभीर बीमारी से भी ग्रस्त थे फिर भी गायो के शिविर और चारा केन्द्रो का सचालन अपनी बैठक मे वे लेटे बैठे करते थे। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

अस्वस्थता और अपगता की कोई चिन्ता नहीं। मूक गोवश की चिन्ता और उसके लिये उपवास। करुणा और अहिसा के तप की शक्ति मे आस्था का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। लोगो ने बहुत आग्रह किया कि उपवास नहीं करे पर वे दृढ़ रहे। (श्री मनोहरलाल भादाणी)

राजस्थान गो सेवा सघ के श्री सोहनलालजी मोदी ने जैसलमेर मे सीवण घास कटाई और उसको चारा केन्द्रो तक पहुचाने का विकट अभिक्रम उस अकाल मे किया। बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री राजीव महर्षि के समक्ष श्री भैरूदानजी के उपवास व चारे के अभाव की स्थिति मोदीजी ने रखी। जिलाधीश स्वय राठी ट्रस्ट से 7 ट्रक तूड़ी लेकर पहुचे। श्री छलाणीजी का उनको यही निवेदन था कि चारा आवश्यक मात्रा मे नियमित मिलना चाहिये। क्या एक बार खाकर कोई कई दिन निकाल सकता है।

उसके बाद चारे तूड़ी की व्यवस्था राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम से कर दी गई। इस अकाल के समय जैसलमेर के सीवण घास और पजाब के हरे गन्ने के चारे से हजारो पशुओ की रक्षा हुई। (श्री बैजनाथ सिद्ध श्री पूनमराम उपाध्याय)

इस दुष्काल के समय चारे तूड़ी के भाव कम कराने के लिये प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी को पत्र लिखे। भाव 40 रु मन कर दिया गया। इसके लिये वे श्री राजीव गाधी को कृष्ण गोपाल मानते थे। (श्री कमल पुगलिया)

एक अकाल के समय गुजरात की तरफ के 100 125 पशुपालको की कोई 2500 3000 गाये जैसलमेर से बीकानेर राजस्थान गो सेवा सघ के राहत शिविर मे जा रही थी। रास्ते चलते गाये भूखी और कमजोर थीं। चारे की कहीं कोई व्यवस्था नहीं हुई। भाव भी 300 रुपये क्विटल थे जो उपलब्ध नहीं था और खरीदना पशुपालको के बूते मे भी नहीं था। न्यियातरा मे पहुचने पर लोगो ने कहा कि सेठ भैरूदानजी से मिल

इस अकाल के समय श्री छलाणीजी द्वारा सचालित चारा केन्द्र पर तूड़ी श्रीरामनारायण राठी ट्रस्ट के मार्फत आती थी। राठी ट्रस्ट ने तूड़ी के भाव बढ़ा दिये थे परन्तु श्री छलाणीजी पहले से ही तय भाव पर तूड़ी विक्रय करते रहे। राठी ट्रस्ट को इससे आपत्ति थी। उन्होंने तूड़ी भेजना बन्द कर दिया। सारा जमा चारा तूड़ी वितरित हो गई और गायों के भूख मरने की स्थिति आ गई। सेठजी ने प्रधान मत्री राष्ट्रपति लोक सभा अध्यक्ष मुख्यमत्री अकाल आयुक्त सभी को तार चिट्ठिया दे दी कि पशु मर रहे है चारे के अभाव मे। फिर भी कोई कार्रवाई नहीं होने पर स्वय उपवास प्रारभ कर दिया। अगर गाय माता भूखी है तो वे कैसे खा सकते हैं। उस समय श्री छलाणीजी पैर से तो अपग थे ही श्वास की गभीर बीमारी से भी ग्रस्त थे फिर भी गायो के शिविर और चारा केन्द्रों का सचालन अपनी बैठक मे वे लेटे बैठे करते थे। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

अस्वस्थता और अपगता की कोई चिन्ता नहीं। मूक गोवश की चिन्ता और उसके लिये उपवास। करुणा और अहिंसा के तप की शक्ति में आस्था का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। लोगों ने बहुत आग्रह किया कि उपवास नहीं करे पर वे दृढ रहे। (श्री मनोहरलाल भादाणी)

राजस्थान गो सेवा सघ के श्री सोहनलालजी मोदी ने जैसलमेर से सीवण घास कटाई और उसको चारा केन्द्रो तक पहुचाने का विकट अभिक्रम उस अकाल मे किया। बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री राजीव महर्षि के समक्ष श्री भैरूदानजी के उपवास व चारे के अभाव की स्थिति मोदीजी ने रखी। जिलाधीश स्वय राठी ट्रस्ट से 7 ट्रक तूड़ी लेकर पहुचे। श्री छलाणीजी का उनको यही निवेदन था कि चारा आवश्यक मात्रा मे नियमित मिलना चाहिये। क्या एक बार खाकर कोई कई दिन निकाल सकता है।

इसके बाद चारे तूड़ी की व्यवस्था राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम से कर दी गई। इस अकाल के समय जैसलमेर के सीवण घास और पजाब के हरे गन्ने के चारे से हजारों पशुओ की रक्षा हुई। (श्री बैजनाथ सिद्ध श्री पूनमराम उपाध्याय)

इस दुष्काल के समय चारे तूड़ी के भाव कम कराने के लिये प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी को पत्र लिखे। भाव 40 रु मन कर दिया गया। इसके लिये वे श्री राजीव गाधी को कृष्ण गोपाल मानते थे। (श्री कमल पुगलिया)

एक अकाल के समय गुजरात की तरफ के 100 125 पशुपालकों की कोई 2500 3000 गायें जैसलमेर से बीकानेर राजस्थान गो सेवा सघ के राहत शिविर में जा रही थी। रास्ते चलते गाये भूखी और कमजोर थी। चारे की कहीं कोई व्यवस्था नहीं हुई। भाव भी 300 रूपये क्विटल थे जो उपलब्ध नहीं था और खरीदना पशुपालको के बूते मे भी नहीं था। दियातरा में पहुचने पर लोगो ने कहा कि सेठ भैरूदानजी से मिलें

वे ही आपकी मदद करेगे। पशुपालका ने श्री छलाणीजी को बताया कि पशु भूख है और इस कमजोर स्थिति मे बीकानेर पहुचना मुश्किल है। आप बचाये। सेठजी ने अपने गुज्जार खोल दिये कहा भरपेट चराओ गाया को। पशुपालक कुछ राशि देने लगे। सेठ जी ने मना कर दिया। पशुपालक दग रह गये। सेठजी की अपरिग्रह उपकार और गो भक्ति से अभिभूत हो गये। (श्री भैराराम, श्री बनेसिह)

चारा केन्द्रो पर घास चारा, तूडी आदि तौलन वालो को पूरा तोलने, निर्धारित दर पर ही कीमत लेन की कम्म और किसी पशुपालक के पास पैसे नही या कम हो ता भी चारा अवश्य देने की हिदायत दे रखी थी। काइ भी गाय भूखी नहीं रहनी चाहिये।

एक बार अकाल के समय एक बूढ़ा पशुपालक दूर से आ गया। उसने सेठजी से कहा कि गायें भूख से तड़प रही हैं उसको तुरन्त पर्ची लिख दी। जाओ चारा लेओ गाय भूखी नहीं रहनी चाहिये। उस चारे का पैसा सेठजी ने भर दिया।

सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान या सस्था द्वारा निर्धारित भाव से भी कम भाव पर पशुपालको को चारा उपलब्ध कराने, अधिक पशुआ को गो शिविरा म पालने से जो भी खर्च होता व स्वय वहन करते थे। (श्री बनेसिह बीठू श्री पूनमराम)

एक बार एक अन्य ग्राम के पशुपालक ने चारा तुलवाया और पैसे चुकाने सेठजी के पास उनकी बैठक में गया तो चारे का कम तौल बताकर कम पैसे दे दिये। घास तोलने वाला रामू चौधरी भी उसी वक्त वहा पहुच गया। उसने पशुपालक को पकड़ लिया कि झूठा तोल बता रहा है। सेठजी स कहा कि यह झूठ बाल रहा हे इससे चारा वापिस रखवाने का आग्रह सेठजी स किया। परन्तु सेठजी ने कहा कोई खास बात नहीं है, जितना चारा है उतने पैसे पास हा तो दे जाओ गाय भूखी मत रखना। सेठजी से तौलिये व दूसरे लोगों ने कहा यह क्या किया झूठ बोलने वाले को तो सजा मिलनी चाहिये। सठजी ने कहा झूठ बोलने के बहाने धर्म तो हो जाता है, गाय का पेट तो पालेगा ही अकाल का मारा हे झूठ विवशता मे बोला है किसी गरीब का दिल अधिक नही दुखाना चाहिये। (श्री बनेसिह बीठू)

उनके लिये गाय रक्षा ही मुख्य लक्ष्य था अन्य चीजो, दोषा को वे गो सेवा मे आड़े नही आने देते थे। यह दयालुवृत्ति अनन्य थी। एक बार दूसरे गाव के लोगो को चारा देने पर विवाद हो गया क्योकि वे दियातरा के राहत केन्द्र से सस्ते म चारा ले जाकर महगे भाव मे बेच रहे थे। श्री छलाणीजी ने कहा इस बहाने ही सही वहा की गायों को घास तो मिल जाता है और चारा देने से मना नहीं किया। (श्री बनेसिह बीठू)

उनके बाड़े मे तूड़ी का भण्डार था। उसम आग लग गई। आदमी दौड़ कर सेठजी के पास आये आग की सूचना दी। सेठजी ने कहा कोई बात नहीं। गाय क

इस अकाल के समय श्री छलाणीजी द्वारा सचालित चारा केन्द्र पर तूड़ी श्रीरामनारायण राठी ट्रस्ट के मार्फत आती थी। राठी ट्रस्ट ने तूड़ी के भाव बढ़ा दिय थे परन्तु श्री छलाणीजी पहले से ही तय भाव पर तूड़ी विक्रय करते रहे। राठी ट्रस्ट को इससे आपत्ति थी। उन्होंने तूड़ी भेजना बन्द कर दिया। सारा जमा चारा तूड़ी वितरित हो गई और गायो के भूखे मरने की स्थिति आ गई। सेठजी ने प्रधान मंत्री राष्ट्रपति लोक सभा अध्यक्ष मुख्यमंत्री अकाल आयुक्त सभी को तार चिट्ठिया दे दी कि पशु मर रहे है चारे के अभाव में। फिर भी कोई कार्रवाई नहीं होने पर स्वय उपवास प्रारभ कर दिया। अगर गाय माता भूखी है तो वे कैसे खा सकते हैं। उस समय श्री छलाणीजी पैर से तो अपग थे ही श्वास की गभीर बीमारी से भी ग्रस्त थे फिर भी गायो के शिविर और चारा केन्द्रो का सचालन अपनी बैठक मे व लेटे बैठे करते थे। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

अस्वस्थता और अपगता की कोई चिन्ता नहीं। मूक गोवश की चिन्ता और उसके लिये उपवास। करुणा और अहिंसा के तप की शक्ति म आस्था का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। लोगो ने बहुत आग्रह किया कि उपवास नहीं करे पर वे दृढ रहे। (श्री मनोहरलाल भादाणी)

राजस्थान गो सेवा सघ के श्री सोहनलालजी मोदी ने जैसलमेर मे सीवण घास कटाई और उसको चारा केन्द्रो तक पहुचाने का विकट अभिक्रम उस अकाल में किया। बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री राजीव महर्षि के समक्ष श्री भैरूदानजी के उपवास व चारे के अभाव की स्थिति मोदीजी ने रखी। जिलाधीश स्वय राठी ट्रस्ट से 7 ट्रक तूड़ी लेकर पहुचे। श्री छलाणीजी का उनको यही निवेदन था कि चारा आवश्यक मात्रा मे नियमित मिलना चाहिये। क्या एक बार खाकर कोई कई दिन निकाल सकता है।

उसके बाद चारे तूड़ी की व्यवस्था राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम से कर दी गई। इस अकाल के समय जैसलमेर के सीवण घास और पजाब के हरे गन्ने के चारे से हजारों पशुओं की रक्षा हुई। (श्री बैजनाथ सिद्ध श्री पूनमराम उपाध्याय)

इस दुष्काल के समय चारे तूड़ी के भाव कम कराने के लिये प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी को पत्र लिखे। भाव 40 रु मन कर दिया गया। इसके लिये वे श्री राजीव गाधी को कृष्ण गोपाल मानते थे। (श्री कमल पुगलिया)

एक अकाल के समय गुजरात की तरफ के 100 125 पशुपालको की कोई 2500 3000 गायें जैसलमेर से बीकानेर राजस्थान गो सेवा सघ के राहत शिविर म जा रही थी। रास्ते चलते गायें भूखी और कमजोर थीं। चारे की कहीं कोई व्यवस्था नहीं हुई। भाव भी 300 रुपय क्विटल थे जो उपलब्ध नहीं था और खरीदना पशुपालको के बूते म भी नहीं था। दियातरा म पहुचने पर लोगों ने कहा कि सेठ भैरूदानजी स मिल,

वे ही आपकी मदद करेंगे। पशुपालका ने श्री छलाणीजी को बताया कि पशु भूखे है ओर इस कमजोर स्थिति म बीकानेर पहुचना मुश्किल हे। आप बचाये। सठजी ने अपने गुज्जार खोल दिये कहा भरपेट चराओ गायो को। पशुपालक कुछ राशि देने लगे। सेठ जी ने मना कर दिया। पशुपालक दग रह गये। सेठजी की अपरिग्रह उपकार और गो भक्ति से अभिभूत हो गये। (श्री भैराराम, श्री बनेस्मिह)

चारा केन्द्रा पर घास चारा, तूड़ी आदि तौलने वाला को पूरा तौलने, निर्धारित दर पर ही कीमत लेन की कसम और किसी पशुपालक के पास पैसे नही या कम हा तो भी चारा अवश्य देने की हिदायत दे रखी थी। कोई भी गाय भूखी नहीं रहनी चाहिये।

एक बार अकाल के समय एक बूढ़ा पशुपालक दूर से आ गया। उसने सेठजी से कहा कि गायें भूख मे तड़प रही हैं उसको तुरन्त पर्ची लिख दी। जाओ चारा लेओ गाय भूखी नही रहनी चाहिये। उस चारे का पैसा सेठजी ने भर दिया।

सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान या सस्था द्वारा निर्धारित भाव से भी कम भाव पर पशुपालकों को चारा उपलब्ध कराने अधिक पशुआ को गो शिविरा म पालने से जो भी खर्च होता वे स्वय वहन करते थे। (श्री बनेसिह बीठू श्री पूनमराम)

एक बार एक अन्य ग्राम के पशुपालक ने चारा तुलवाया और पैसे चुकाने सेठजी के पास उनकी बैठक में गया तो चारे का कम तौल बताकर कम पैसे दे दिये। घास तौलने वाला रामू चौधरी भी उसी वक्त वहा पहुच गया। उसने पशुपालक को पकड़ लिया कि झूठा तौल बता रहा है। सेठजी से कहा कि यह झूठ बोल रहा है, इससे चारा वापिस रखवाने का आग्रह सेठजी स किया। परन्तु सेठजी ने कहा कोई खास बात नहीं है जितना चारा है उतने पैसे पास हा तो दे जाओ गाय भूखी मत रखना। सेठजी से तौलिये व दूसरे लोगा ने कहा यह क्या किया झूठ बालने वाले को तो सजा मिलनी चाहिय। सेठजी ने कहा 'झूठ बोलने के बहाने धर्म तो हो जाता है, गाय का पेट तो पालेगा ही, अकाल का मारा हे, झूठ विवशता मे बोला है किसी गरीब का दिल अधिक नही दुखाना चाहिये। (श्री बनेस्मिह बीठू)

उनके लिये गाय रक्षा ही मुख्य लक्ष्य था अन्य चीजा दोषा को वे गो सेवा म आड़े नहीं आने देते थ। यह दयालुवृत्ति अनन्य थी। एक बार दूसरे गाव के लोगों को चारा देन पर विवाद हो गया क्योकि वे दियातरा के राहत केन्द्र से सस्ते में चारा ले जाकर महगे भाव मे बेच रहे थे। श्री छलाणीजी ने कहा इस बहाने ही सही, वहा की गायों को घास तो मिल जाता है और चारा देने से मना नही किया। (श्री बनेसिह बीठू)

उनके बाड़े म तूड़ी का भण्डार था। उसमें आग लग गई। आदमी दौड़ कर सेठजी के पास आये, आग की सूचना दी। सेठजी ने कहा कोई बात नही। गाय के

भाग्य की है बच जायेगी। ऐसा उपाय करो जिसने लोगो की बाड़ा को आग नहीं लगे। अपने नुकसान की उनको कोई चिन्ता नहीं, दूसरो की चिन्ता पहले की।

(श्री भैरराम उपाध्याय)

अकाल के समय केवल अपने गाव की गायों की ही रक्षा नहीं करते थे बल्कि क्षेत्र के अन्य गावो म भी गो वश की रक्षा के लिये लोगों को सहायता और प्रेरणा देकर चारे पानी की व्यवस्था करवाते थे। दानी मानी सेठो, राजस्थान गो सेवा सघ व सरकार सभी स्रोतो से राहत उपलब्ध कराते थे।

इस क्षेत्र म गोवश के सरक्षण व सवर्द्धन के लिय उन्होने कोई कसर नहीं छोड़ी। अकाल के स्थायी समाधान के लिये उनका विचार था कि सरकार, सस्थाय और गाव चारा बैंक बनाय। यह सुझाव उन्होंने जनता शासन में योजना आयोग को भेजा। इस क्षेत्र म चारे की कमी का कारण वे गोबर को उपलो के ईंधन रूप में दुरूपयोग और ट्रैक्टर द्वारा खेती को मानते थे। उनका अनुभव था कि अगर गोबर को जमीन म बिखरे ही पड़े रहने दिया जाये तो भी उसमें रहे घास के बीजों से ही थोड़ी वर्षा होते ही घास उग आती है। किसी जमीन का उपजाऊपन का पता भी उसमें पैदा होने वाली घास से लग जाता है।

(श्री कमल पुगलिया)

व ऐसे गो भक्त नही थे जो शहरो में रहते हुए गो रक्षा के भाषण और प्रचार तो करते हैं खुद घर पर गाय नहीं पालते। वे तो गाव में रहे गायों और पशुओं को अपने परिवार की तरह पाला गो सवर्द्धन के लिये बढ़िया नस्ल के साण्ड बछड़े और गाये विकसित की एव हर अकाल म गो माता की रक्षा के लिये प्राण प्रण से जुटे बिना विलम्ब किये बिना सहायता की प्रतीक्षा किय। दाताओ सस्थाओं और सरकार को भी राहत के लिये जगाया जुटाया।

गो माता के वध के समाचारो और गो मास के विज्ञापन से उनको क्षोभ होता था। उनकी आत्मा तड़प उठती थी। वे दूध में प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट केलोरी आदि के प्रमाणिक आकड़ों तथा अडा व मास के आकड़ों की तुलना करके अडा व मास न खाने का तार्किक कारण समझाते थे।

(श्रीमती पुष्पा पुगलिया)

1987 88 म दूधारू गो धन को राजस्थान से औरगाबाद अवैध ढग से भेजे जाने की सूचना मध्य प्रदेश के श्री अब्दुल सदीक गाधी स मिली। श्री छलाणीजी ने उज्जैन व सोजत की चैक पोस्ट पर अवैध पारगमन को रुकवाने के तुरत प्रयास किये और सफल हुए।

(श्रीमती पुष्पा)

प्राय गावों में अकाल की स्थिति अति भीषण होने पर जब मनुष्यो पर सकट आता है तब ही सरकार चेतती है। लेकिन श्री छलाणीजी इन मूक पशुओ के चारे पानी और जीवन सकट की आशका होते ही उस को बुलन्दी से वाणी देते और लोगो

तथा सक्षम अधिकारियो को चेताते। 1990 म 'मगर में पशुओ को घास चारे क अभाव की ओर तहसीलदार जिलाधीश का आगाह किया। (डायरी 1990)

गाव के पच सरपचा ने गाचर भूमि समाप्त करने का निर्णय कर लिया। श्री छलाणीजी न इसका प्राण प्रण म विरोध किया और गाचर भूमि को बचाया। (श्री धूड़ाराम)

वे गाय और गाव के श्री कृष्णगोपाल ही थे। श्री कृष्ण ने इन्द्र के कोप से हुई अतिवृष्टि से गो रक्षा के लिये गोवर्द्धन पर्वत उठाया, श्री छलाणीजी न अनावृष्टि और अकाल से त्राण के लिये गोरक्षा और गो सवर्द्धन का भार उठाया। उनकी अनुपस्थिति इस भीषण अकाल म मगरे क गोपालक और आमजन अनुभव करते हैं।

इस गो भक्त का गो प्रेम, सेवा की तीव्र भावना, धैर्य और सहिष्णुता निस्पृहता और समवृति किसी सत में भी दुर्लभ है। 13 अक्टूबर, 1985 को एक अड़ियल बैल की गानी सींग स फस रही थी, बैल कष्ट पा रहा था। अन्य किसी के बैल ताबे नहीं आ रहा था। श्री छलाणीजी गानी ठीक करने स्वय बैल के पास बाड़े में गये। बैल की 'गानी ज्योंही निकाली त्योंही बैल की टक्कर छलाणीजी को लगी। वे गिर पड़े दाय पैर के कुल्हे की हड्डी टूट गई। उनकी यह हड्डी सारे आधुनिक व दशी इलाज उपचार के बावजूद ठीक नहीं हो पाई। 1985 से 19 दिसम्बर, 1995 तक उन्होंने इस अपगता को भोगा जिसके कारण खड़ा होना भी सभव नहीं रहा। उनको गोदी में उठाकर ही इधर उधर ले जाना पड़ता था। नित्यकर्म भोजन, स्नान भी उसी लेटी बैठी अवस्था में ही करवाना पड़ता था। ऐसी शारीरिक स्थिति में भी उनका मनोबल स्वस्थ और चेतना प्रखर थी। वे इस अवस्था म भी गो सेवा, कृषि और सेवा की गतिविधियों का सचालन पूरे मनोयोग के साथ करते रहे। 1988 में तो फेफड़ों, श्वास और कफ की गभीर बीमारी यक्ष्मा से ग्रस्त हो गये थे परन्तु अकाल राहत गो शिविर और चारा केन्द्र का सचालन सब तरह की कठिनाइयों के बावजूद कुशलता से किया।

एक दुर्योग ही कहे कि गो भक्त को गो वश से लगी चोट से स्थायी अपगता और शारीरिक व्याधिया भोगनी पड़ीं परन्तु उनके मन की स्थिति सदैव शान्त और सम बनी रही। उस बैल के प्रति लेश मात्र भी क्रोध नहीं किया। कहते थ कि बैल मेरे पास आ रहा था उससे टक्कर लग गई। अपनी रुग्णावस्था में उस बैल को पास बुलाकर पुचकारते थे। बैल भी प्यार से उनके पास आने स्पर्श पाने की चेष्टा करता। (डॉ चन्द्रा छलाणी)

गाय के प्रति श्री छलाणीजी का माता की भान्ति पूज्यता और सेवा का सच्चा धार्मिक भाव था। श्री भैरूदानजी छलाणी की स्मृति म परिवार द्वारा गोपालन गो सवर्द्धन और गो रक्षा के प्रोत्साहन का कार्य पुरस्कार एव गो सेवा के द्वारा किया जा रहा है।

व्यक्तित्व

श्री भैरूदान जी छलाणी का जीवन दर्शन जीवन कर्म और जीवन शैली यथार्थ रूप में गाधी विचार की साधना के प्रयोग का प्रत्यक्ष उदाहरण है। जीवन के चार पुरुषार्थों की सिद्धि उसका ध्येय है। व्यक्ति रूप में उनके जीवन की सारी दिशा व्यापक सामूहिक हित साधना की रही है। उन्होने मात्र जीव की नहीं जीवन की मुक्ति को साध्य बनाया। अपने स्व का निरन्तर सर्व म समाहित करने का अभिक्रम किया। सत्य सयम त्याग और सेवा के द्वारा मगरा क्षत्र म ग्राम जीवन के समग्र विकास को आत्म विकास का साधन बनाया। दियातरा को केन्द्र बनाकर मगरा क्षत्र म अपनी जीवन चर्या से गाधी का स्वरूप प्रस्तुत किया।

मगरे का गाधी" उनके मन वचन और कर्म विचार वाणी और व्यवहार व्यक्तित्व और कर्तृत्व की सार्थक अभिव्यक्ति है। यह श्री भैरूदानजी का सम्बोधन और सर्वनाम ही नहीं सज्ञा और विशेषण भी है।

महात्मा गाधी क जीवन का अन्तिम साध्य उस सत्य को प्राप्त करना था जिसे आत्मा की मुक्ति या ईश्वर प्राप्ति कहते हैं। सत्य अहिसा के शाश्वत मूल्यों क आधार पर जीवन मुक्ति के लिये स्वाधीनता स्वावलम्बन और नैतिक उन्नति का उसका साधन बनाया। साधन और साध्य की शुद्धता कथनी और करनी की एकता, व्यष्टि और समष्टि की समानता जीव और जीवन के नैतिक और भौतिक उत्थान की निष्ठा का व्यक्त रूप गाधी है। गाधी व्यक्ति नहीं सत्य सयम त्याग और सेवा के द्वारा आत्म मुक्ति एव जीवन के समग्र विकास की आध्यात्मिक आस्था है। गाधीजी न इन्हीं नैतिक निष्ठाओं के अनुरूप व्यक्तिगत चर्या और सार्वजनिक चरित्र का गठन किया।

भारत की राजनैतिक स्वाधीनता और उसके माध्यम से मानवता की सेवा उनकी आत्म मुक्ति क साधन और सोपान थे। स्वाधीनता मात्र अन्तिम लक्ष्य नहीं उनकी नैतिक निष्ठाओ और मूल्यों की स्थापना का माध्यम था। राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक पराधीनता से मुक्ति के लिए राजनैतिक आन्दोलन को नैतिक मूल्यों का दृढ़ आधार दिया। इस हेतु व्यक्ति के स्तर पर सत्य अहिसा अपरिग्रह श्रम सयम आदि ग्यारह व्रता और सामाजिक स्तर पर कृषि गो सेवा ग्रामाद्योग खादी अस्पृश्यता निवारण आदि अनेक रचनात्मक सवा कार्य को उपकरण बनाया।

ग्रामवासी भारत की आत्मा के समग्र विकास, सर्वोदय और रामराज्य स्वाभाविक और स्थायी विकास स्थानीय ससाधना एव परिस्थिति के अनुरूप दशज श्रम शिल्प और कौशल के उपयोग ग्राम स्वराज्य और ग्राम गणराज्य की विकेन्द्रित आर्थिक राजनैतिक व्यवस्था की कल्पना गाधीजी ने की। ग्रामों की आर्थिक सामाजिक पुनर्रचना एव लोक अभिक्रम को जाग्रत करन के लिए लोक सवकों से

ग्रामा में जाकर बसन और उनके साथ समरस होकर जीवन समर्पण की अपेक्षा की थी।

श्री भैरूदानजी ने गाधी विनोबा के विचारा को केवल सिद्धान्त रूप मे ही स्वीकार नहीं किया अपितु आदर्शों को आत्मसात् करक जीवन व्यवहार म घटित किया। अपनी सूझबूझ और विवेक से गाधी को अपने अन्तरग वृत्तियो और बहिरग व्यवहार, मन, वचन और कर्म में उतार लिया। उनके जीवन वृत्त म स्पष्ट होता है कि दियातरा को केन्द्र बनाकर मगरा को अपना कर्म क्षेत्र बनाया और गाधी विचार के व्यवहारिक प्रयोग किये। गाधी बनकर ही गाधी को समझा और जिया जा सकता है। गाधीवाद के विचारक और विद्वान तो अनेक हैं हुए है, परन्तु उसके अनुरूप सम्पूर्ण जीवन को गाधी का प्रतिदर्श बनाने वाले विरले हुए है। गाधी की चर्चा करना सरल है परन्तु गाधी की चर्या उतनी ही कठिन है। श्री छलाणी जी उन असाधारण लोगों म थे जो गाधी को समझकर और उसी रूप म जीकर गाधी जैसे ही बन गये।

श्री छलाणीजी की शिक्षा बहुत साधारण हुई थी परन्तु वे गभीर स्वाध्यायी थे। गाधी विनोबा और रामचरितमानस का गहन अध्ययन किया। उनकी प्रज्ञा प्रखर थी। गीता रामचरित्र और गाधी निष्ठा के अनुरूप जीवन मूल्यो और जीवन शैली म आमूल चूल परिवर्तन किया।

तेजपुर (असम) में बचपन और युवाकाल बीता। अपने पैतृक व्यवसाय को सभालते हुए असम क स्वतन्त्रता सेनानियों और काग्रेस के सम्पर्क में आये। महात्मा गाधीजी जवाहर लाल नेहरू जी व काग्रेस के नेताओं को देखने सुनने और मिलने के अवसर मिले और काग्रेस के आजादी के कार्यक्रमों मे भाग लिया। राजनैतिक आन्दोलन के निमित्त से गाधी विचार और मूल्यों का चित्त पर असर हुआ। असम में व्यवसाय के साथ खादी पहनना शुरू किया और खादी की खुली बिक्री की। बीकानेर में भी प्रजा परिषद् की गतिविधियों को सहयोग और बल दिया। स्वतन्त्रता सेनानी बाबू रघुवरदयालजी के सम्पर्क में आए। उनके विश्वस्त सहयोगी बनकर 1943 मे खादी मन्दिर की स्थापना की और एक मूक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप म सक्रिय रहे। खादी मन्दिर के आजीवन न्यासी और 1990 तक उसके अध्यक्षीय दायित्व का निर्वाह तन मन से किया। बीकानेर जिले में अकाल क्षेत्र के पीड़ित लोगो के ऊनी कताई, बुनाई और ऊनी उत्पादन क खादी कार्य के माध्यम से रोजगार तथा चेतना जागरण में लगे रहे। श्री छलाणीजी खादी विचार और खादी कार्य के मर्मज्ञ थ।

(श्री जवाहरलाल जैन)

स्वाधीनता सग्राम काल में खादी कोरा वस्त्र नही थी। यह राष्ट्रीय भाव और स्वाधीनता के मूल्यो की द्योतक थी। यह राष्ट्रीयता का बाना, सत्य अहिसा सयम असग्रह और स्वावलम्बन के जीवन मूल्यों व तदनुरूप जीवन शैली की सूचक थी।

श्री छलाणीजी स्वाधीनता सग्राम के सहयोगी और खादी कार्यकर्त्ता के रूप म गाधी मार्ग क पथिक बन और आजीवन उसी दिशा में आग बढ़ते रह।

मैं ता खादी मानस का ही था। सक्रिय भाग ता आसाम म खादी बचता था तब लेता था। वहा मै काग्रेस क नेताआ में आता जाता था। कइया से अच्छी दोस्ती थी। गाधीजी नेहरूजी आते तब श्री द्वारकाप्रसादजी व मै वहा के लागा के बराबर कार्यक्रमों में हिस्सा लेते थे। धन्धे वाले थे सा जेल जान की जोखिम से बचते थ।

(श्री भैरूदान छलाणी पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 22 8 84)

उनका जीवन मूल्य निष्ठा और निष्ठा मूलक कर्म की एकता और अद्वैत का अप्रतिम उदाहरण है।

जीवन के चार पुरुषार्थों की सिद्धि उनका परम लक्ष्य था। अर्थ आर काम का व्यवहार धर्म और मोक्ष से अनुप्राणित था। उनका धन कमान का तरीका और सम्पन्नता को भोगने का तरीका धर्म और मोक्ष के पुरुषार्थ से निर्धारित था।

(श्री वासुदव विजयवर्गीय)

मैं तो कुन्ती के इन वचना को ही ज्यादा धारने याग्य मानता हू।

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चाहू निरवाण।
जनम जनम हरिपद भक्ति यह वरदान न आन।।

(श्री भैरूदान छलाणी डायरी 1960 स्मरण पृष्ठ
पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 18 6 86)

नास्थे धर्मे न वसु निचय नैव कामापभोगे
यद् भाव्य तद भवतु भगवन् पूर्व कर्मानुरूपम्।
एतत् प्रार्थ्यं मम बहुमत जन्म जन्मान्तरं अपि
त्वत्पादाम्भो रूहयुग गता निश्चला भक्तिर् अस्तु।। (मुकुन्द माला)

उन्होने निरवाण क लिये भी हरिपद भक्ति को ही परम साधन स्वीकार किया। सम्पूर्ण जीवन और जगत में सम्पूर्ण समाज म हरिदर्शन करते हुए समाज की सेवा को प्रभु की पूजा और हरिपद भक्ति क रूप म साधा।

आस्था और आचार के अभेद एव कथनी करनी की एकता उनकी अन्तरग वृत्तियों और बहिरग कर्म म सिद्ध हुई।

सर्वप्रथम महात्मा गाधी की राह पर ग्यारह व्रतों सत्य निष्ठा और अहिसा के शाश्वत मूल्या को जीवन कर्म में प्रतिष्ठित प्रमाणित और पुष्ट किया। जीवन क लिये जीविकोपार्जन अनिवार्य है अर्थोपार्जन के लिय निरन्तर उद्यम और सफल पुरुषार्थ की उत्कट प्रवृत्ति उनमें थी। अपने सयुक्त परिवार के व्यवसाय को तेजपुर (असम)

दिनहट्टा (प बगाल) बीकानेर गगानगर (राजस्थान) म मफलता के साथ विस्तृत और विकसित किया। उन्हाने व्यावसायिक दूरदृष्टि और प्रवीणता के साथ व्यवहार शुद्धि का आग्रह रखा और उसका पूरा पालन किया। (श्री पूनमराम उपाध्याय)

व्यवहार शुद्धि और सत्य निष्ठा केवल व्यवसाय मे ही नहीं दैनन्दिन व्यवहार म भी सजगता के साथ रखी। (श्री सत्यनारायण पारीक)

जीवन क प्रत्येक क्षेत्र म नैतिकता के साथ जीवन यापन की दृष्टि से 1945 म 36 वर्ष की वय मे नगरा के व्यावसायिक जीवन को त्याग कर ग्राम का जीवन स्वीकार किया। अपन व्यवसाय का नियन्त्रण, निर्देशन ग्राम दियातरा म बैठकर किया। केवल वर्ष के अन्त मे हिसाब देखरेख के लिये ही मुकामा म जाना आना रखा।

जमीन से उत्पादन करना देश क लिये, जगत के लिये भला काम है। इसमे मेहनत ज्यादा और आय कम तो रहेगी ही। हा इसमे कुशल अकुशल सबको काम मिल जाता है। कपट, फरेब कम से कम होता है।'

(पत्रम् पुष्पम् पत्र दिनाक 10 11 83)

जन्मजात कुशल व्यवसायी तथा व्यापार द्वारा खूब समृद्धि पाने की प्रमाणित क्षमता एव नगर जीवन की समस्त सामग्री और सुख सुविधाओं को उपलब्ध करने की सुनिश्चित सामर्थ्य के हाते हुए भी अत्यलप वर्षा और अकाल की छाया मे मगरा क्षेत्र में जीवन की भीषण परिस्थितिया म गाव के जीवन को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार करने के पीछे दो लक्ष्य स्पष्ट रूप से रहे। नैतिकता और साधन शुद्धि के साथ जीवनयापन जो जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करने में साधक हो। ग्रामों के समग्र विकास में सहायक जीवन पद्धति हो जिससे ग्रामीणा की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ हो और ग्राम जीवन म सुख समृद्धि की वृद्धि हो। सुविधापूर्वक अधिक आय देने वाले व्यापार के स्थान पर कम आय देने वाले और श्रम साध्य ग्रामीण कृषक जीवन को अपनाना, धन और सुख के लाभ और प्रलोभन का सवरण करना उनकी असग्रहवृत्ति, दृढ मनोबल और सत्य सयमपूर्वक श्रमनिष्ठ जीवन जीने की वैराग्यवृत्ति का प्रमाण है।

उनकी अर्थ दृष्टि मे वयैक्तिक उत्कर्ष के साथ निश्रेयस अभ्युदय के साथ लोकमगल साधने का सम्यक् दर्शन है। उनके सारे कार्यों मे व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ सिद्ध करने की नहीं बल्कि सामूहिक लाभ और परहित की व्यापक दृष्टि रहती थी।

व्यवहार शुद्धि के साथ ही उपार्जन इच्छित था और इस तरह उपार्जित सम्पत्ति के उत्तम स्थान और आवश्यकता के अवसर पर खर्च करने का स्वभाव था।

उत्तम ठामे खर्चे वित्त, करे उपकार सदा मन चित्त

मैं बचपन से ही पिताजी के (द्वारा) बोले जाने वाले स्तवन में यह वाक्य मनोयोग करता था। इसका असर भी जीवन में हुआ। व्यवहार में कम बुराई आई। परिवार अपेक्षाकृत सज्जनता की श्रेणी में रहा। हम साधारण कार्यकर्ताओं की तरह अर्थोपार्जन में सजगता या ढिलाई दोनों रही जिससे खूब सम्पन्नता नहीं आई या यूं भी मान सकते हैं कि अर्थ की खेंच ही रही फिर भी अन्यों का उपकार करना होता रहा। आय से कम खर्च करने का मजबूत पक्ष हमारा ढीला रहा है इसी से आज की परेशानी है। हमारा काफी खर्च गोपालन पर हुआ जमीन पर खेती पर हुआ वह (खर्च) तो कीमत बढ़ने से सम्पत्ति में बदल गया है।

(श्री भैरूदानजी छलाणी परम पुष्पम पत्र दिनांक 2 11 83)

उनका ग्राम्य जीवन ध्येय निष्ठ था। मगरा क्षेत्र के गावों के समग्र विकास की प्राथमिक आवश्यकता आर्थिक जीवन के आधार कृषि एव गोपालन को अधिक लाभदायक बनाना तथा लोगों में स्वाभिमान और स्वअभिक्रम को जगाना था। सुधार और परिवर्तन के लिये चेतना और प्रेरणा जागरण करना अभीष्ट था। गावों की आर्थिक समृद्धि के लिये कृषि गोपालन गोसवर्द्धन खादी समाज सुधार और शिक्षा प्रसार को अपना जीवन कर्म और जीवन धर्म ही बना लिया।

अल्प वर्षा आधारित बारानी खेती को लाभकारी बनाने के लिये मेड़बन्दी डोलाबन्दी के द्वारा जल सरक्षण 300 400 फीट गहरे भूमि जल से सिचाई के लिये कुए और ट्यूब वैल उत्तम बीज विकास तथा गो वश के नस्ल सुधार के प्रयोग उनकी देशज समझ वैज्ञानिक दृष्टि और विवेक के परिचायक है। 1960 70 में मगरा क्षेत्र की अति अभावपूर्ण एव विकट स्थितियों में भारी व्यय और बाधाओं के बावजूद उनके द्वारा किये गये ट्रेक्टर कुए सिंचित खेती और ज्वार मतीरे सरसों आदि के बीज विकास के प्रयोग उनकी दूरदृष्टि और दृढ़ सकल्प के प्रमाण हैं। जमीन और कृषि तथा गोपालन पर उन्होंने जो व्यय किया और अथक श्रम किया वह उनके लिये आर्थिक दृष्टि से प्रत्यक्षत अति हानिकर ही था। कोई भी समर्थ किसान या व्यवसायी इसे बुद्धिमानीपूर्ण नहीं मानता सहन भी नहीं करता और प्रयोग का साहस नहीं करता परन्तु श्री छलाणीजी धुन के धनी थे। वे इन प्रयोगों पर हुए खर्च को निवेश ही मानते थे। अपना ही उदाहरण प्रस्तुत करके पूरे क्षेत्र के किसानों को अपने प्रयोगों और अनुभव सिद्ध निष्कर्षों को सबके उपयोग के लिये उपलब्ध कराया। सभी को मार्गदर्शन प्रेरणा प्रोत्साहन और सहयोग दिया। पूरे क्षेत्र के किसानों को प्रभावित किया। उन्नत कृषि और उत्तम नस्ल के द्वारा उत्पादन व आय वृद्धि के मार्ग को प्रशस्त किया। वे जन्मजात कृषक नहीं थे फिर भी अपने क्षेत्र में कृषि पण्डित के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनका किया गया श्रम और लगाया गया धन समस्त मगरा के जन और जमीन को फलीभूत हुआ। एक व्यापार प्रधान समाज में जन्म लेने के बावजूद अपनी धरती की जरूरत पर उन्होंने किसान व

उससे सम्बन्धित कृषि पर अपना ध्यान लगाया और ध्यान ही नही लगाया उन्होंने पूरा जीवन ही खपा दिया। (श्री उम्मेदसिंह भाटी)

गावो के समग्र विकास और सुधार के लिये निर्धूम चूल्हे गोबर गैस सयत्र, गोबर खाद, सुधरे शौचालय के प्रयाग की पहल की। आधुनिक वैज्ञानिक व उन्नत तकनीक के प्रयोग प्रदर्शन और परामर्श के लिये पचायत और विकास से जुड़े अधिकारी उनको ही सर्वप्रथम सम्पर्क करते रहे। निष्णान्त लोग भी उनके तर्क सगत अनुभवजन्य ज्ञान की प्रशसा किये बिना नहीं रहते।

व्यक्ति, व्यवस्था और परिस्थिति के पारदर्शी विश्लेषण की विवेक बुद्धि और समाधान की देशज सूझबूझ के धनी, सामाजिक रूढ़ियो और साम्प्रदायिक आग्रहो से मुक्त सामाजिक सुधार एव धार्मिक आस्था से सचालित परन्तु प्रगति के लिये नये परिवर्तन और प्रयोग के लिये सदैव तत्पर रहने वाला दृढ व्यक्तित्व था। वे किसी बात को प्रयोग और परीक्षा करके ही स्वीकार या अस्वीकार करते थे। उनके दृष्टिकोण मे और व्यवहार म देशज समझ और वैज्ञानिक सोच का तार्किक सामजस्य होता था।

परम्परा और रूढ़ि म भेद करने की उनमें अद्भुत कुशलता थी। वे स्वस्थ परम्पराओं को पुष्ट करते थे और रूढ़ियों व कुरीतिया का विरोध करते थे। सुधार का कोई भी कार्य वे दूसरों से नहीं स्वय से और स्वय के परिवार से प्रारम्भ करते और वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत करते थे। कृषि, गोपालन के अतिरिक्त खादी के विकास को साधनहीनों के लिये सहायक साधन के रूप में मान्य किया और क्षेत्र के असमर्थ और साधनहीन परिवारों के लिय रोजगार सुलभ कराने में निरन्तर सक्रिय रहे। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा छूआछूत, ऊच नीच भेदभाव, सामाजिक विषमता औसर मौसर उन्मूलन के द्वारा समाज सुधार के कार्य दृढ़ता परन्तु प्रेम के साथ किये। स्त्री शिक्षा के लिये घर की बच्चियों बहुओं को उच्च शिक्षित किया और क्षेत्र के लोगों को उसके लिये प्रेरित किया।

अपने श्रम कौशल और व्यावसायिक प्रवीणता तथा व्यावहारिक सच्चाई से उपार्जित सम्पदा को मात्र स्वय और अपने परिवार की ही सम्पत्ति नहीं मानकर वास्तव म धन के स्वेच्छया न्यासी के रूप में सर्वहिताय न्यस्त करने के कारण अचल के समाज मे मगरे के सेठ के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की जो उनके प्रति स्नेह और सम्मान से सहज उद्भूत है।

छलाणीजी आचार्य विनोबा भावे से प्रभावित एव प्रेरित थे अत सर्वोदय के लिये प्रतिबद्ध थे। दस प्रतिशत सम्पत्तिदान का तो उनका व्रत था ही परन्तु उससे कहीं अधिक उनका खर्च सार्वजनिक हित के कार्यों—कुए व तालाब खुदाई, सफाई, मरम्मत प्याऊ निर्माण आदि म लगता था। प्रगति और विकास के लिये वे शिक्षा

और विद्या प्रचार को आवश्यक मानते थे। अत गावा म विद्यालय खुलवाने के लिये समर्थ लोगो को प्रेरित करते अपने सरपच व पचायत प्रधान काल म गाव गाव में सरकारी विद्यालय प्रारम्भ किये। दियातरा म तो उन्होंने प्राथमिक एव माध्यमिक विद्यालय भवन निर्माण कराये गावो स आने वाले छात्रों के लिये छात्रावास बनवाया और सचालन किया तथा अनेक छात्रो को वर्षों तक अपने परिवार में सदस्य की तरह रखकर आवास एव भोजन आदि की व्यवस्था करते रहे। विद्यालय के विकास छात्र व शिक्षको की सुगम सुविधा और जरूरतमद छात्रो की आवश्यकताओ एव शाला की बहुविध गतिविधियो के लिये एक स्वैच्छिक सरक्षक सदैव बने रहे। उनके शिक्षा प्रसार और चेतना जागरण के फलस्वरूप आज दियातरा ही नहीं पूरे क्षेत्र म प्रसार हुआ है। अनेक युवक उच्च पदो पर पहुच हैं। शिक्षा रुचि नहीं आवश्यकता बन गई है।

इस क्षेत्र के अल्प उत्पादन और अकाल अभाव पीड़ित दरिद्र दलित लोगों व जरूरतमद ग्रामवासियो को हारी बीमारी आवश्यकता और सकट के समय आर्थिक और अन्य मदद करने में उनका खुला दिल और द्वार था। जो भी उनके पास आया उसका समाधान ही मिलता था। रकम लेन देन का व हिसाब भी नहीं रखते और कभी चुकाने का तकादा नहीं करते थे। गरीब के स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा करते हुए सहयोग करना उनकी प्रकृति ही थी। लोग अपने सकट के समय उनके पास विश्वास के साथ आते समुचित समाधान पाते। उनके द्वार से कोई खाली नहीं गया। वे अपनी समृद्धि के कारण सेठ नहीं बल्कि समृद्धि को सर्वहिताय बिना किसी अपेक्षा के सहयोग की उदारवृत्ति के कारण मगरे के सेठ आदृत थे। वे मगरे के भामाशाह थे।

(श्री मूलचन्द नौलखा)

पूरे गाव को वे अपना परिवार मानते थे। अत आर्थिक सामाजिक एव राजनैतिक उत्थान के लिये सतत सक्रिय रहे। आजादी से बहुत पहले स उन्होंने सेवा और सुधार के कार्य शुरू कर दिये थे। स्थानीय ससाधनो के अधिकतम उपयोग तथा सामूहिक श्रम और अभिक्रम के लिये लोगो को सदैव सचेत और प्रेरित किया। गाव के जीवन म सुख सुविधा और सरसता में वृद्धि के लिये सचेष्ट रहे। ग्रामों की सामूहिक सम्पत्ति तालाब कुआ गोचर की रक्षा तथा तीज त्यौहार पर्व समारोह मेले मगरियों में खूब प्रसन्नता के साथ भागीदारी निभाते रहे।

गावों के लोगो की हसी खुशी म उनके दुख दर्द में परिवार के सदस्य की तरह ही रुचि लेते और सबके हालचाल जानते योग्य निर्देश और समाधान देते। गावों के लोगों विशेष रूप से साधनहीन दरिद्र व दलित के प्रति उनके मन म सवेदना, सहानुभूति और सम्मान था। हरिजनों एव दलितो की उनके सामाजिक आर्थिक उत्थान और राजनैतिक जाग्रति के लिये सम्बल और समर्थन दिया। गाव के सामूहिक कार्य—तालाब कुए के रख रखाव पीने के पानी की पियाई पचायत या किसी भी गवाई समस्या और हित के कार्य म बिना ऊच नीच और जाति पाति के

भेदभाव के सबको साथ रखकर कार्य मे सबका सहयोग लेते। सभी सार्वजनिक हित के कार्यों में मुख्यत उन्हीं का योगदान होता परन्तु वे इस प्रकार काय करते जिसमे सभी की भागीदारी प्रकट होती। गाव म सामूहिक भावना व पारस्परिकता के भाव के सवर्द्धन के लिये वे समर्पित रहे। अपना नाम नही आने देते हुए पद नाम और प्रचार से दूर रहते हुए कार्य करते। उन्हे आत्म ज्ञापन की इच्छा ही नहीं थी।

वे भूमि पुत्र थे जिन्होने गाव और अचल को आत्मा का ही विस्तार माना और स्वय को उसका अश माना। स्व को सर्व मे समाहित किया। गाव की कोई भी समस्या होती तब उन्हे एसा अनुभव होता जैसे उनकी ही पीड़ा है। उनकी आत्म सवेदना इतनी विकसित थी। वे बिना किसी की प्रतीक्षा किये समाधान के लिये कटिबद्ध हो जाते ओर अपने अर्थ व सामर्थ्य से जुट पड़ते। अकालो के समय गाव व क्षेत्र की एक एक गाय की रक्षा के लिये, चारे पानी की व्यवस्था के लिये हर सभव प्रयास करते, स्वय के स्रोता क साथ अन्य धनी मानी दानियो, सस्था व सरकार को प्रेरित और सक्रिय कर दते।

वे जब तक रहे कोई अकाल ऐसा नहीं गया जिसम छलाणीजी द्वारा गोरक्षा चारा पानी पशु सेवा का काय नही हुआ हो। क्षेत्र के लोग इस बात से आश्वस्त रहते थे कि सरकार और सस्थायें दूसरे दानदाता नहीं जाग परन्तु भैरूदानजी तो राहत दगे ही। 'इन्द्र तो रूठा है, पता नहीं कब बरसेगा, भैरू बाबा तो बरसेगा ही (श्री मूलचन्द नौलखा श्री लूणाराम) कर्मनिष्ठा और सेवावृत्ति, परदुख कातरता और परहित की भावना के वे मूर्तिमन्त रूप थे।

1985 मे कुल्हे की हड्डी टूटने के समय बीकानेर छलाणी वुलेन मील मे 54 दिन रहे। उस स्थिति म अन्य शारीरिक व्याधियो से ग्रस्त होते हुए भी सामाजिक सेवा (अकाल के समय गो सेवा, खादी कार्य) विचार ही नहीं करते रहे रूग्णावस्था मे भी सचालन करते रहे। जब कभी भी अधिक पीड़ा होती अत्यन्त धैर्य और शान्त भाव से रात रात भर रामायण पाठ करते। राम में उनकी अटूट आस्था थी।

(श्रीमती नयनतारा)

1988 में दुष्काल भयकर था। श्री छलाणीजी स्वय श्वास व वक्ष रोग से गभीर स्थिति म थे। उस समय भी अपगता और रुग्णता के बावजूद अपनी बेठक मे लेटे रहते हुये भी चारा केन्द्र और पशु शिविर का सचालन अपने बूते पर ही करते रहे। हजारा गाया का बचाने और पालने का कार्य सफलता के साथ किया।

गाय को वे माता स्वरूप मानते थे। उसका पालन, सवर्द्धन और रक्षण सर्वभावेन उनक जीवन धर्म को अग ही थे।

मगरा क्षेत्र म उनकी सत्य निष्ठा निष्काम सेवावृत्ति और गाव और गाय के प्रति उनके आत्मीय प्रेम और जनजीवन के विकास के कार्यो के फलस्वरूप खूब प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा थी।

क्षेत्र की निस्वार्थ सेवा के द्वारा निर्विरोध सरपच और पचायत समिति प्रधान चुन गये। पूरे क्षेत्र के विकास के लिये दिन रात एक किया। गाव के लोगा के साथ वेश भाषा भूषा और व्यवहार से एकात्मता स्थापित की। पचायत प्रधानकाल म अपने आचार और व्यवहार स सच्चे गाधीवादी का उदाहरण बने। किसी सरकारी सुविधा का उपयोग नहीं किया। भत्ता नहीं उठाया। गावा म घूम घूम कर सम्पर्क साधा कष्टों और समस्याओ को खुद जाना समझा और अपनी अनूठी सूझ बूझ म समाधान किया। सरकारी अधिकारियो को नियमा का पालन करते हुए कार्य करन का परामर्श देते थे। सभी पचा सरपचा को विश्वास म लेकर कार्य म सम्मिलित रखते थे। लोगा का अपने सम्माधना श्रम व सहयोग स स्वय कार्य के लिये अभिप्रेरित करते थे। अपनी स्वय की ओर स अर्थ सहयोग से काम करवा दते थे। उनके कार्यकाल म गणना गुणवत्ता और मितव्ययिता स जितना कार्य हुआ वह आज अकल्पनीय है।

वे दलगत राजनीति से दूर रहे। अपनी सत प्रकृति से राजनीति के रचनात्मक स्वरूप का स्थापित किया। उनका प्रयास सदैव सर्वसम्मति स कार्य का रहता। श्री छलाणीजी ने अपने क्षेत्र की कठिन परिस्थितिया म पचायत का नेतृत्व किया। भूगोल इतिहास के निर्माण म किस प्रकार योग देता है उसका उदाहरण श्री छलाणीजी का जीवन प्रस्तुत करता है।

(श्री मूगालाल सुरेका)

श्री छलाणीजी विचारशील समाज सेवक थे और विशेष रूप से गावों के समग्र विकास के लिये उपयोगी व्यवहारिक दृष्टिकोण रखते थे।

(श्री बद्रीप्रसाद स्वामी)

वे पचायत में किसी पद पर रहे या नहीं रहे क्षेत्र के विकास कार्यों में सदैव रचनात्मक भूमिका निभाते रहे। मगरा के जन और जमीन से उनका गहरा परिचय समस्याओ की समझ और समाधान की सूझ थी।

वे अपने सम्बन्धियों समधिया के सम्मान व स्थिति का पूरा ध्यान रखते। उनके प्रसगा पर तकलीफ उठाकर भी उपस्थित होते और बिना प्रसग के भी मिलने पत्राचार करके स्नेह सम्बन्ध दृढ़ रखन का स्वभाव था। अपने बच्चा की शादिया बिना दहेज पर्दा और आडम्बर के की। परिस्थिति और कठिनाई को भाप कर बिना बताये ही सहयोग कर देना उसकी चर्चा तक नहीं करना उनकी विशेषता थी।

(श्री चन्दनमल गोलछा)

सम्बन्धियों मित्रा और सार्वजनिक क्षेत्र के नेताओ अधिकारियों कर्मचारियो और कार्यकर्त्ताओं के आतिथ्य के लिये उनकी रसोई सदैव दिन हो या रात खुली ही रहती। कार्यकर्त्ताओं के लिय तो उनका घर छावनी ही था। गाव में आने वाले किसी का भी उनका आतिथ्य स्वीकार करना ही पड़ता था। उनका उनकी धर्मपत्नी उनके परिवार के आदर स्नेह और आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य को पाकर कोई भी उनके परिवार का अपना ही हो जाता था। गाव के परम्परागत सरस भोजन खेत और गाव के

जीवन के सुख और आनन्द का अनुभव और बोध करने म उनको आत्मिक प्रसन्नता हाती थी।

उनके सम्पर्क म एक बार भी आने वाला व्यक्ति उनकी निश्छता निर्मलता ऋजुता, वत्सलता से अभिभूत हुए बिना नही रहता। एक बार सान्निध्य म रहा सदैव के लिये उनके प्रेम परिवार का अग बन जाता। परिवार के सदस्या की भान्ति अनेक छात्र शिक्षक, कार्यकर्ता कर्मचारी ओर मित्र सम्बन्धी सभी ने उनम पितृवत् वात्सल्य का अनुभव किया है। बड़े भाई हाते हुए भी सयुक्त परिवार में पितातुल्य सबका आवश्यकताआ की पूर्ति का ध्यान दिया चाहे किमी ने काम कम किया या कम योग्य था। बटवारा भी किया तो अपना हिस्सा स्वत कम करक किया व छाटे को उछल पाती दी। बापूजी सम्बोधन उनके सर्वात्म स्नेह से निकला है। घर के हाली बालदी व्यवसाय और कृषि म उनके यहा काम करने वाले मुनीम गुमाश्ते और सेवको के प्रति भी उनका पिता तुल्य स्नेह था। उनक भौतिक और नैतिक समृद्धि का स्वत ही ध्यान रखते थे। कर्मचारियों और मजदूरों को भी प्रतिवर्ष बोनस देना परिवार के योगक्षेम की चिन्ता करना उनके स्वाभाविक सरक्षक न्यासी चरित्र का उदाहरण है।

परिवार गाव, सार्वजनिक और व्यवसाय सभी क्षेत्रो म उनकी सत्य निष्ठा न्याय बुद्धि, उदारवृत्ति, निष्पक्षता और आत्मीयता के प्रति स्नेह और श्रद्धा थी लाक प्रीति और प्रतिष्ठा थी। वे अपना निर्णय किमी पर थापते नहीं थे, परिवार म तो उनका निर्णय अन्तिम हाता ही था परन्तु समाज म भी उनका निर्णय मान्य होता था। अनेक परिवारों के सम्पत्ति विवाद और आपसी झगड़ो को व निपटा देते थे। गाव के और दूसरे गावो के झगड़े जब परस्पर नहीं निपटते थे तो लोग उनके पास आते उनका निर्णय मान्य होता था। वे लन देन क झगड़ा मे तो निर्धन पक्ष की देनदारी भी खुद चुका देते थे। अनेक वर्षो तक आस पास का कोई झगड़ा थाने कचहरी में नहीं गया। वे लोक मान्य न्यायाधीश थे।

श्री छलाणीजी का जीवन वास्तविक अर्थो में समृद्धि क साथ सादगी और सेवा मे सलग्न गृहस्थ सत, सन्यासी का जीवन है।

सम्पदा के उपार्जन एव वृद्धि के लिये उद्यम और पुरुषार्थ की उत्कट प्रवृत्ति और शुद्ध साधन से उपार्जित सम्पत्ति के सर्वहिताय उदारतापूर्वक खर्च करने ओर सतत सेवा म कर्म प्रवृत्त रहने की सहज वृत्ति थी। निष्काम प्रवृत्ति और सकारात्मक निवृत्ति सम्पत्ति के प्रति निरासक्ति, अपरिग्रह वृत्ति और सर्वात्म स्नेह का भाव जीवन कर्म से व्यक्त हुआ है।

गाव के विकास और समृद्धि के लिये गाव के जीवन को आत्मसात करना उनकी भारतीय तत्त्व दृष्टि की व्यवहारिक समझ का परिचायक है।

उनका जीवन महात्मा गाधी द्वारा स्वीकृत ग्यारह व्रता की साधना की प्रयोगशाला है। सत्यनिष्ठा का अर्थ जीवन की आस्थाओ के अनुरूप आचरण,

विचार वाणी और व्यवहार म एकरूपता कथनी करनी की समानता है जिसे श्री छलाणीजी के द्वारा अपन अर्थोपार्जन म व्यवहार शुद्धि और प्रमाणिकता नगर जीवन और व्यवसाय छोड़कर ग्राम जीवन और कृषि गोपालन का स्वीकार करने और चार पुरुषार्थो की सिद्धि के अनुरूप जीवन मूल्यों और जीवन कर्म का निधारण करन से उनकी सत्य निष्ठा प्रमाणित होती है।

अधिक आय और नगर जीवन के सुख के प्रलोभन से दूर रहना व्यक्तिगत उपभोग व स्वामित्व के बजाय सम्पत्ति के समाज हित मे उपयोग और स्वेच्छया न्यासी वृत्ति धारण करना परोपकार और सहयोग म धन की सार्थकता देखना समृद्धि होते हुए भी सादगी मितव्ययिता और सग्रह के प्रति अनासक्ति उनकी अपरिग्रहवृत्ति के द्योतक हैं।

उनकी सारी जीवन चर्या अहिसा के सूक्ष्म और स्थूल दोनो रूपो म साकार हुई है। अपने स्व को सर्व मे समाहित करना स्व अर्थ को सर्वार्थ के लिये समर्पित करना व्यक्तिगत उत्कर्ष भी सामूहिक मगल के लिय निर्दिष्ट करना दूसरों की पीड़ा एव गरीबी के प्रति सवेदनशीलता, सब में एक ही हरि के दर्शन सबको आत्मवत् सर्वात्म स्नेह देने का सहज स्वभाव अहिसा मूलक जीवन दर्शन से निसृत होते हैं। मनुष्य ही नहीं सभी प्राणियों के प्रति करुणा और प्रमभाव सबके उत्थान में अपना उत्कर्ष समझना अहिसा की उच्च भूमिका है।

सत्य अहिसा और अपरिग्रह को धारण करने के लिये आत्म नियत्रण दृढ सकल्प और निर्भयता अनिवार्य है। वे सत्य निष्ठ थे अत निर्भीक थे। राजशाही, नौकरशाही और समाज की रूढ़ियो का विरोध करने का साहस था। रियासती शासन में सिपाहियों की मनमानी की शिकायत महाराजा श्री गगासिह से करके दडित कराने में भय नहीं किया। लूणकरणसर में कैद स्वाधीनता सेनानी श्री रघुवरदयालजी गोईन्द से निर्भयता के साथ मिलने पहुचे। स्वाधीन भारत में भी नौकरशाही के अनाचार अत्याचार का विरोध दृढ़ता से करते थे। व्यावसायिक लाभों को छोड़ना और कृषि कर्म का स्वीकारना अपने आप में निर्भीकता और साहस का कार्य है। डाकुओं की धमकी के बावजूद पुलिस की सुरक्षा हटवा दी थी। उनका मनोबल ऊचा था और सकल्प दृढ़ता थी। जीवन के लिये गभीर स्थिति में भी आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा मे आस्था अटूट रही। बीमारी की गभीर एव मरणान्तक कष्ट की स्थिति में बिना विचलित हुए शान्त व सन्तुलित बने रहना और घोर पीड़ा की स्थिति में रामायण पाठ सुनना उनकी दृढ़ता एव अतिशय सहिष्णुता के उदाहरण हैं।

अपमान की कटु स्थिति में भी कोई प्रतिक्रिया नहीं होना और सहजभाव सन्तुलन के साथ हित चिन्तन ही करने की दुर्लभ सतवृत्ति उनमें सहज थी। किसी भी अप्रिय और कटु स्थिति में रच मात्र भी क्रोध करते नही देखा।

अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् अकाम गोध नाभता।
भूत प्रिय हिता च धर्मोऽयं सर्ववार्णिकम्।।

क्योंकि, नाम पद मान और यश की लालसा का कारण सन्यासियों में भी सुलभ नहीं होता। श्री छलाणीजी पद व यश लिप्सा से सदैव दूर रहे। उन्होंने अपने सेवा कार्यों का विज्ञापन और प्रचार नहीं किया बल्कि आत्मगोपन किया। सदैव सामान्य बने रहना ही उनका स्वभाव था। उनमें अहं और स्पृहा उत्पन्न नहीं हुई।

उनका जीवन अत्यन्त सादगीमय था। भोजन, वस्त्र सब कुछ एकदम सादा संयमित और नियमित था। वे मितभाषी मितभोजी और मितव्ययी थे। उनमें निरभिमानता और ऋजुता सहज संतों की सी थी।

उनके जीवन में गीता का निष्काम कर्म रामचरित्र की मर्यादा, गांधी की व्रत निष्ठा सिद्ध और फलित हुई है। धर्म सिद्ध हुआ है।

दिखने में सादगीपूर्ण साधारण लगते थे परन्तु सम्पूर्ण रूप से समाज के लिये गांधी के आदर्शों के लिये, गो रक्षा के लिये समर्पित थे। उनके गांधीवादी विचार अटूट आत्म विश्वास, जीवन की और लगातार काम करने की तीव्र उत्कंठा उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता है।

दृढ़ निश्चयी आडम्बरहीन, परिग्रह के प्रति अनासक्ति एवं संग्रह के लोकमंगल के लिये उपयोग की दृष्टि से सम्पन्न अति सरल व्यक्तित्व में आध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण चिन्तक व समाज सेवक की देदीप्यमान छवि है।

(श्रीमती नयनतारा)

यह निश्छल व्यक्तित्व वैज्ञानिक दृष्टि लिये था तो आध्यात्मिकता में भी दृढ़ विश्वास प्रकट करता था।

नीचे से ऊपर तक अत्यन्त ही सादगी से ओत प्रोत विनम्रता और शालीनता मूर्तिमत होकर साकार मेरे सामने खड़ी है। यह दिखावटीपन नहीं हो सकता। अहंकार का लेशमात्र भी नहीं। राजनैतिक पद लिप्सा का बिल्कुल अभाव। मैं देखता रहा। भाषा ठेठ देशी मगरा क्षेत्र की।

अगर किसी को अहिंसा का साकार रूप देखना हो तो भैरूदानजी को देख मात्र लेता। उसकी शंका का समाधान हो जाता। उससे पहले मैं उनके गांधीवादी दर्शन और क्रियाकलापों का कट्टर आलोचक था। मैं उनको गांधीवादी संत ही मानता हूं।

(श्री उम्मेदसिंह भाटी)

'श्री छलाणीजी सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। झूठ छल कपट दिखावा प्रपंच उन्हें पसंद नहीं था। पूज्य छलाणीजी के जीवन और व्यक्तित्व पर महात्मा महावीर महात्मा गांधी और महात्मा विनोबा भावे का गहरा असर था।

(श्री जिनेन्द्र कुमार जैन)

श्री भरूदानजी सीधे सादे और सरल व्यक्ति थे जो गांधीवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण सदा दलगत राजनीति से दूर और रचनात्मक कामों में सदा रुचि लेते रहे। कृषि ग्रामोद्योग एवं सर्वोदय के क्षेत्र तथा भूदान यज्ञ में सक्रिय भागीदारी निभाई। स्त्री शिक्षा जल संकट निवारण हरिजनोद्धार नस्ल सुधार आदि का काम किया। (श्री बद्रीप्रसाद स्वामी)

सदा ही प्रसिद्धि से पराङ्मुख रहकर सार्वजनिक जीवन की हर शाखा में योगदान दिया। राजनैतिक सामाजिक खादी गो सेवा और राहत आदि क्षेत्रों में ठोस सेवाएं दी। प्रदर्शन बिना मूक रहकर सक्रियता से कार्य करना उनकी मूल प्रकृति में समाविष्ट था। (श्री दाऊदयाल आचार्य)

अपने नाम की भूख उन्हें कभी नहीं रही। बहुमुखी क्षेत्रों में तन मन धन तीनों से जितना उत्सर्ग उस व्यक्ति ने किया उतना करके भी न अखबारों में छपने की न सेवा कार्य करते हुए फोटो खिंचवाकर यादगार रखने की ओर न ही दिखावे की लालसा थी न ही अपने दानदाता नाम की पट्टिका लगवाई और न कहीं भाषण देने वालों में मंच पर स्थान बनाया। ऐसा अनाम उत्सर्ग करने वाला यह व्यक्ति बीकानेर के ग्रामीण अंचल में जब भी कोई संकट आया झूझने में अग्रणी रहा।

(श्री रिखबराज कर्णावट)

वे कम से कम बोलते थे परन्तु जो कुछ कहते उसमें अर्थ गांभीर्य रहता था भाव प्रवणता रहती थी। वे प्रचार से सदा दूर रहे। (वैद्य ठाकुर प्रसाद शर्मा)

साधारण व्यक्ति जिनका सोच और व्यवहार कितना महान था जो छोटे से गांव दियातरा में रहते हुए भी कितने व्यक्तियों के दिल में एक अमिट छाप छोड़ गया, वह वर्णनातीत है। व्यापार में प्रमाणिकता सहयोगियों के प्रति सहानुभूति एवं देश प्रेम का बीज निरन्तर विकसित होता गया। (श्री रतनलाल चौपड़ा)

खादी की आधी बांहों का कुर्ता, ऊंची सी धोती, नाक में बाली सांवली देह चेहरे पर सरलता भोलापन और जानी पहचानी मुस्कान मदगति से उठते दृढ़ कदम चेहरे पर सहज उद्दीप्त सौम्यता लिये हुए एक ठेठ ग्रामीण के दर्शन स्वाभाविक रूप से उनमें होते थे। प्रथम दृष्टया यह अनुमान नहीं लगता था कि यह अनपढ़ गंवार नहीं अपितु सुसंस्कृत विचारशील प्रबुद्ध और समृद्ध ग्रामवासी वणिक है। गांधी और सर्वोदय के मात्र चिन्तक नहीं व्यावहारिक प्रयोक्ता है। व्यक्ति व्यवस्था और परिस्थिति के तलस्पर्शी विश्लेषण की विवेक वृद्धि और समाधान हेतु अनुभव सिद्ध देशज सूझ बूझ का धनी व्यक्तित्व है। (डॉ धर्मचन्द्र)

श्री छलाणीजी का जीवन अत्यन्त सादा भोजन सयमित और नियमित था। सौम्यवाणी गहन गंभीर विचार सरणी व्यवहार में ऋजुता स्नेह सेवा सहयोग की सहजवृत्ति तथा विज्ञापन और अहंभाव से विरत वे एक मूक निस्पृह गृहस्थ साधक थे।

उन्होने अपनी असाधारता को सामान्यता के अवगुठन मे सजाकर रखा और महानता को सादगी, विनम्रता और निरभिमानता से सजाया। उनका जीवन सामान्यता की असामान्य साधना है। कहीं भी अह और स्पृहा का भाव उत्पन्न नहीं हुआ। सारे कार्यों में आत्मगोपन ही प्रकट हुआ। सम्पर्क और सान्निध्य मे जो आया उसने ही उनकी असामान्य ऋजुता, आत्मीयता ओर महानता का अनुभव किया।'

(डॉ धर्मचन्द्र)

श्री छलाणीजी ने 66 वर्ष की उम्र मे वानप्रस्थ जीवन का अभ्यास प्रारभ कर दिया और 70 वर्ष की उम्र से निवृत्त जीवन की ओर बढ़ना शुरू किया। निवृत्ति का अर्थ कर्म से विरत होना नहीं बल्कि फलासक्ति से विरत होने का प्रयास था। ऐसे जीवन मे अर्थोपार्जन के लिये व्यवसाय नही करने और कृषि और समाज सेवा पर ही मन लगाने का सकल्प लिया। (डायरी दि 15 7 75 पत्रम् पुष्पम् पत्र दि 17 12 81)

सन्यास जीवन मे देना अधिक और लेना कम है। अनुभव का लाभ दिया जाये तो नई पीढ़ी का उत्साह बढ़ता रहता है।'

(श्री भैरूदानजी पत्रम् पुष्पम पत्र दिनाक 29 11 83)

सन्यास का अर्थ कर्म से विरक्ति नहीं अपितु जीवन और जगत की सेवा मे स्वय को भली प्रकार से लगाना है।

अगर गृहस्थ कहें तो कम ही सन्यासियो मे पाये जाने वाला वैराग्य, निस्पृहता और ऋजुता उनमे थी। पद प्रचार व प्रसिद्धि की ऐषणा नाम मात्र को भी नही थी। सम्पत्ति के प्रति मोह नहीं था, न्यासीवृति थी, मान अपमान और सम विषम स्थिति मे भी समवृति थी। सन्यासी कहे तो सन्यासी में न पाये जाने वाली उत्कट कर्म निष्ठा उद्यम और पुरुषार्थ की प्रबल प्रवृत्ति मनुष्यों और जीवों के प्रति वत्सलता और सेवावृत्ति थी।

वे जन्मणा ही नहीं कर्मणा भी सच्चे जैन थे, सब धर्मों के प्रति समादर और रामचरित्र और सत वृत्ति से विशेष प्रेम था। वे धार्मिकता के जीवन्त रूप थे। आचार्यश्री तुलसी ने उनके लिये अपने प्रवचन में कहा—

आपको सच्चे श्रावक की प्रेरणा लेनी है तो श्री छलाणीजी आपके सामने बैठ हैं। मै इनके सेवा भक्ति और जीवन को देख कर गद् गद हू।

(श्री वीरसेन पुगलिया)

कोलायत मेले के अवसर पर स्वामी श्री रामसुखदासजी ने कहा भैरू गो भक्त है दानी और त्यागी है, गृहस्थ सत है।

(श्री बनेसिह बीठू श्री वशीधर जोशी)

गुणातीत कर्मयोगी इस मगरा क्षेत्र मे है वह है सेठ भैरूदानजी छलाणी।

(प श्री बालूराम श्री बनेसिह बीठू)

श्री छलाणीजी का जीवन वास्तविक अर्थों म मत्य सादगी सयम त्याग ओर सेवा म स्वभावत सलग्न गृहस्थ सत सन्यासी का जीवन है।

कहते है सघर्ष ही जीवन है। श्री छलाणीजी कहते 'जीवन अगर सघर्ष है ता प्रम ही उसका आधार है। श्री छलाणीजी का जीवन सर्वोदय व्यष्टि के उत्कर्ष समष्टि की समृद्धि सृष्टि के मगल और परमेष्ठी की सिद्धि के लिये प्रेमाधारित सघर्ष है।

श्री भेरूदानजी का जीवन और दशन ईशावास्य उपनिषद के मत्र से अनुप्रणित और भावित था।

इशावास्यम् इदम् सर्वम्, यत्किञ्च जगत्या जगत ।
त्येन त्यक्तेन भुजीथा मा गृध् कस्यस्विद् धनम्।।

श्री भेरूदान छलाणी

जन्म
मार्ग शीर्ष कृष्णा द्वितीया
वि स 1966
29 नवम्बर 1909
सोमवार

निधन
पोष शुक्ला द्वादशी
वि स 2052
19 दिसम्बर 1995
मगलवार

अपन अध्ययन कक्ष म श्री भग दान गि छवाणी
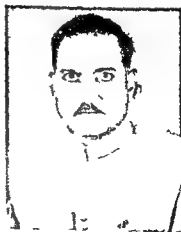
पूज्य पिताश्री
श्री हजारीमलजी छलाणी

श्री भम्वानजी छलाणी

श्री आशाकरणजी

श्री मुन्नीलालजी
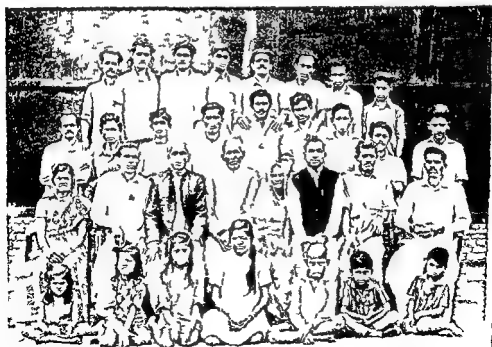
ज्येष्ठ पुत्र श्री भवरलाल छलाणी परिवार सहित

प्रथम पंक्ति — नेमीचद बोहरा स्वदेश उषा कल्पना ज्योति शानू ललित (सुपुत्र भवरलाल छलाणी)

दूसरी पंक्ति — कुर्सी पर बैठे—श्रीमती रतनीदेवी श्री भवरलाल छलाणी खड़े—कान्हवा चारुवी लाहित

तीसरी पंक्ति — यानू पियूस अशुल गुनीशा श्रुति

अपने खेत में बनी स्वधरत्यान गोल कुटीर

पुत्री परिवार के साथ
श्री कमनचन्द श्रीमती पुष्पादवी पुगलिया श्री भैरदानजी श्रीमती जेठीदेवी
श्रीमती मीनादेवी श्री रतनलाल चोपड़ा
बैठे इन्दिरा पूर्णिमा बेगी बरखा (नातिनिया)
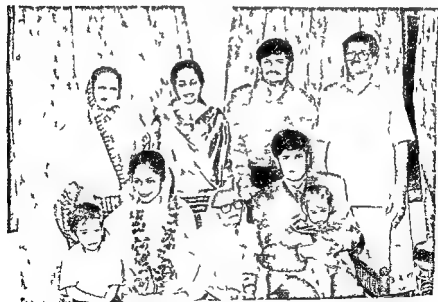
द्वितीय पुत्र फूसराज छलाणी अपनी मा व परिवार के साथ
बैठे हुए—नमो श्रीमती सानम श्रीमती जठीदवी गुञ्जन गोद मे मनन
खड़े—श्रीमती चन्द्रा श्रीमती दिव्या जयदीप फूसराज छलाणी

श्री हजारीमल छलाणी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित माध्यमिक स्कूल भवन दियातरा
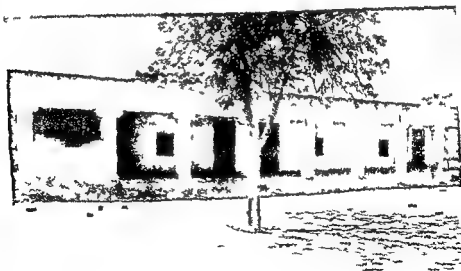
छात्रों की सुविधा हेतु बनवाया छात्रावास भवन दियातरा

गाव दियातरा का भवन
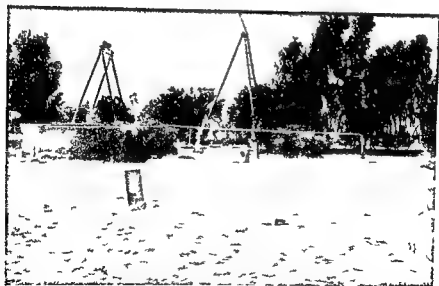
धुराला खेत म ट्यूब वैल हौज व हरियाली का दृश्य
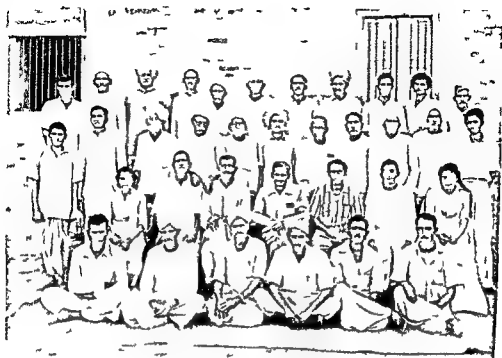
पचायत समिति अध्ययन केन्द्र बीकानेर—आठवा सत्र 1960 61 (20 6 60 से 29 6 61)

सर्वोदय नवयुवक मण्डल दियातरा के वार्षिकोत्सव 1960 61 मे मुख्य अतिथि कालायत
पचायत समिति के प्रधान श्री छलाणीजी

न्यातरा म श्री गाकुल भाई भट्ट का डोरिया दिखात हुए
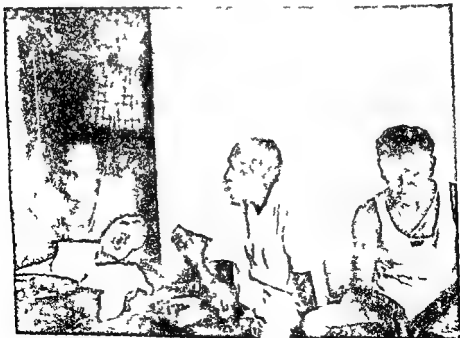
श्री गाकुल भाई भट्ट व श्री मानचन्दजी हिमारिया के साथ
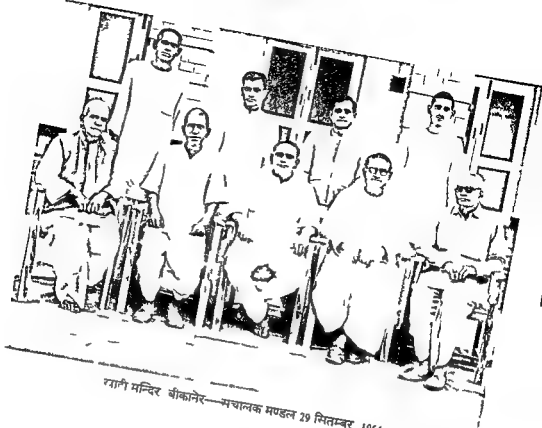
खादी मन्दिर बीकानेर—सचालक मण्डल 29 सितम्बर 1964
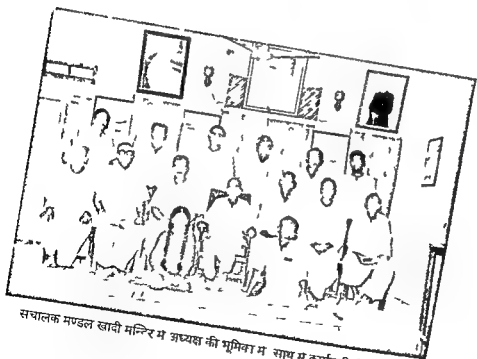
सचालक मण्डल खादी मन्दिर म अध्यक्ष की भूमिका म साथ म कार्यकारिणी सदस्य
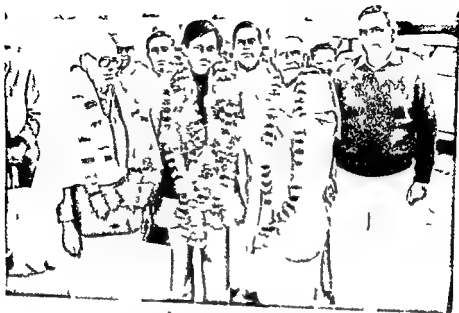
श्री फूलचन्दजी अग्रवाल
श्री जगपतजी दुब (अध्यक्ष खादी ग्रामाद्याग आयाग)
श्री भरूदानजी (अध्यक्ष खादी मन्दिर)
श्री इन्दुभूपणजी (मत्री खादी मन्दिर)

श्री रघुवरदयालजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करते हुए

श्री भैरूदान छलाणी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे सेवा कार्य की एक झलक 000

श्री भैरूदानजी छलाणी

खेत मे चिन्तन की मुद्रा मे
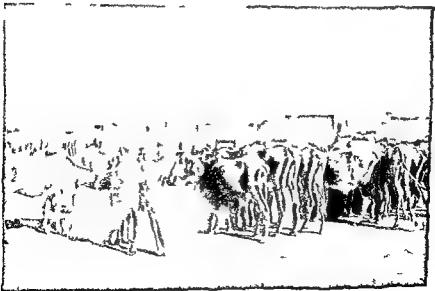
अकाल राहत मे श्री छलाणीजी द्वारा गोशाला का सचालन

नतूलच किए इस स्वीकार करते थे। कहा गया है कि शकरसिहजी चौहान के पुत्र गुणरावजी के वशज धाड़ावत कहलाए। धाड़ावतो का आदिपुरुष रामधरजी को माना गया। यह विक्रम सवत् 322 की बात है। सवत् 1233 तक धाड़ावत आसिया मे ही रहे। विक्रमी सवत् 1233 मे कृपारामजी धाड़ावत नागौर आ कर बस गए।

विक्रम सवत् की 14 वीं सदी मे छजमलजी नाम के एक महापराक्रमी व उदारमना धाड़ावत हुए। उनके पुत्र गरीबदासजी विक्रमी सवत् 1370 मे थे और लोग उन्हे छजमलजी वाले कहते कहते छजलानी कहने लगे। गरीबदासजी के वशज दो सौ वर्ष तक नागौर मे ही रहे। नागौर मे आज भी निशान स्वरूप छलाणी छतरी है। किन्तु विक्रमी सवत् 1571 मे धनरूपजी छजलानी बीकानेर आ कर बसे।

विक्रमी सवत् 1638 मे जब धनजी के पोते पड़पोते धर्मसिहजी व अमरसिहजी गाव गुड़ा मे आकर बसे। गुड़ा गाव कपिलदेवजी कोलायत के पास पश्चिम की तरफ मे है।

गाव गुड़ा से 1742 विक्रम सवत् मे जैतसिहजी छजलानी दियातरा आ कर बसे। जैतसिहजी के पुत्र करनीदानजी थे उनके ज्येष्ठ पुत्र गुलाबचदजी थे। उनकी सहधर्मिणी का नाम दायकवर भूरा था। उनके एक पुत्र हुआ जिनका नाम छोटूमलजी था। उन्होने दो शादिया कीं। पहली शादी फलौदी के बाफना परिवार की मदनकवरी से हुई जिसकी पाच सतान हुई, जो क्रमश बख्तूदेवी हजारीमलजी केवलचदजी मगलचदजी एव गोनलबाई थीं।

हजारीमलजी का जन्म विक्रम सवत् 1928 यानी सन् 1870 71 मे हुआ। आप उद्योगी पुरुष थे। आपने ही बगाल असम जा कर व्यापार आरभ किया। आप जिस समय बगाल असम गए उस समय जाने आने के साधनो मे बैल ऊट नाव तथा कहीं कहीं रेलगाड़ी भी थी। अत आप दियातरा से अजमेर तक ऊट पर गए वहा से रेलगाड़ी द्वारा कलकत्ता पहुचे वहा से फिर नाव द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी से तेजपुर पहुचे। कहते है कि उन्हे तेजपुर पहुचने मे तीन महीने के करीब समय लग गया था।

तेजपुर मे गल्ले का कार्य आरभ किया। दोबारा गए, तो सपत्नीक गए ताकि खाने की सुव्यवस्था रहे। हजारीमलजी की पत्नी का नाम सदुकवर था जो कोलायत के पास गाव चानी के बोथरा परिवार की पुत्री थी। श्री हजारीमलजी के चार पुत्र हुए। श्री भैरूदानजी, श्री दयालचन्दजी, श्री आशकरणजी एव श्री मुनीलालजी।

तेजपुर मे ही पूज्य पिताजी श्री भैरूदानजी का जन्म विक्रम सवत् 1966 की मिगसर बदी 2 अर्थात् दिनाक 29 11 1909 को हुआ।

संस्मरण

मगरा अचल की गौरवपूर्ण परम्परा

■ भवर पृथ्वीराज ■

विलुप्त परम पावन सरस्वती नदी की एक शाखा की गोद मे स्थित मगरा क्षेत्र गौरवपूर्ण परम्पराओ का सवाहक रहा है। मगरा का अर्थ पथरीली (कठोर) धरती से है, परन्तु यहा की परम्पराए अत्यन्त उदात्त और उज्ज्वल रही है।

पौराणिक काल मे पावन सरस्वती नदी का तटवर्ती होने के कारण यह क्षेत्र ऋषि मुनियो के आश्रमो और गुरुकुलो से सुशोभित था। कोलायत मे कपिल मुनि का आश्रम, चानी गाव मे च्यवन ऋषि का आश्रम, जागीरी में याज्ञवल्क्य ऋषि का आश्रम, दियातरा गाव मे दत्तात्रेय ऋषि का आश्रम आदि अनेक ऋषि मुनियो के आश्रम इस क्षेत्र मे स्थित थे। इन आश्रमो मे निवास कर वे महान मनीषी विद्यादान, ज्ञानदान और परमार्थ करते हुए विश्व कल्याण के लिए सतत् चिन्तन करते थे। यज्ञ धूम से, वेद मत्रो से और उनकी सतत् तपस्या से यह समस्त मगरा क्षेत्र सुरभित और सुशोभित होता था।

सनातन धर्म के हमारे चौबीस अवतारो मे वर्णित एक अवतार भगवान दत्तात्रेय की तपोभूमि दियातरा गाव है। उनका आश्रम यहा होने के कारण ही इस गाव का नाम दत्तात्रेयरा से लोक भाषा मे दियातरा हुआ। भगवान दत्तात्रेय अत्रि ऋषि और अनुसूया माता के पुत्र थे। अनुसूया कर्दम ऋषि की पुत्री थी। कर्दम ऋषि के आठ कन्याए थीं, अनुसूया उन सबमे बड़ी थी, जिनका अत्रि ऋषि के साथ विवाह हुआ। कर्दम ऋषि के पुत्र श्री कपिलदेव हुए जिन्होने साख्य शास्त्र की सरचना की। भगवान दत्तात्रेय कपिल मुनि के भाणजे थे। साख्य शास्त्र की रचना श्री कपिलदेव ने अवश्य की लेकिन उस दर्शन का लोक मे प्रचार श्री दत्तात्रेय ने ही किया। इस प्रकार साख्य शास्त्र के प्रचारक भगवान दत्तात्रेय की तपोभूमि होने के कारण इस गाव का नाम दियात्रा या दियातरा पड़ा।

प्राचीन समय से इतने महान सतो की जन्म कर्म भूमि की यह सत प्रसविनी परम्परा अभी तक यथावत प्रवाहित है। भगवान दत्तात्रेय और कपिलदेव से प्रारम्भ

सत परम्परा म इस युग के विश्वविख्यात सत स्वामी श्री कृष्णानन्दजी सरस्वती और स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज भी विश्व को मगराक्षत्र की ही दन है। यहा कोलायतजी म कपिल सागर के तीर पर प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को जुड़न वाले मेले म दश दशातर के साधु सन्यासी पधारत हैं और इस पावन स्थल को पुन गरिमा प्रदान करत है।

मगरा क्षेत्र मे दियातरा गाव अगूठी क मध्य जड़ नग की तरह स्थित है। इसके उत्तर म पथरीली भूमि है तो दक्षिण म सुकोमल बालू क धार हैं।

भूगर्भीय उथल पुथल से इस क्षेत्र म निरतर प्रवाहित सरस्वती नदी सूख गई। यह समस्त क्षेत्र जलहीन होने के कारण उजाड़ और शुष्क हो गया। निरतर पड़ने वाले अकालो न इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को तोड़ मरोड़ दिया। काल अगर नहीं तोड़ पाया तो केवल उन प्राचीन सस्कारो को उन उदात्त परम्पराओ को।

मगरा क्षेत्र के लोग अत्यन्त सवेदनशील अतिथिसेवी और बात क धनी होते है। जब इस क्षेत्र म पानी का अभाव था, बूद बूद पानी क लिए लोग तरसते थे गर्मी की ऋतु म यहा के साठीका कुआ में (साठ पुरुष गहरे) पानी टूट जाता था उन कुओ को लूली लगा कर चलाया जाता था (दो जोड़ी बैल जुड़ते एक जोड़ी आधी दूर दूसरी उससे आगे उसे लूली लगाना कहा जाता अर्थात् एक पानी का चड़स चार बैलो द्वारा ऊपर आता)। उस विषम परिस्थिति म भी गोल जाने वाले पशुधन को (यात्री पशु), मार्ग चलने वाले पशुओ को जो बाहर से आते जाते रहते थे उन पशुओ को गाव के कुओ पर नि शुल्क और सर्वप्रथम पानी पिलाया जाता। गाव का पशुधन तब तक प्यासा खड़ा रहता। गोरी उन पशुओ को पानी पीने से रोकते रहते। पानी खारा होता या कम पड़ जाता तो पानी म छाछ और दूध मिला कर पानी पिलाया जाता। गोल के पशुओ को प्यासा नहीं रहने दिया जाता यह मगरा की परम्परा थी। अतिथि के आ जाने पर सतकाली के समय भी भुरट के दाने और खेजड़े की छाल मिली रोटिया अपने परिवार को भूखा रख कर भी अतिथि को खिलाई जाती।

दुश्मन भी अगर दुर्वस्था म शरण आ जाता तो सारा द्वेष भुला कर उसे शरण दी जाती। अपन प्राणो की बाजी लगा कर उसकी सुरक्षा की जाती यह मगरा की परम्परा थी।

यहा के लोग आन बान क लिए मर मिटते। दियातरा से पश्चिम म स्थित धनेरी तलाई पर राड़ लगी ही रहती लोग आन बान के लिए जूझते। धरा और धेनु (गायो) के लिए लोग मगल मरण चुनते मरने के लिए पर्वो की प्रतीक्षा करते। शीश गिर पड़ते और उनका धड़ जूझता रहता। उनके शीश गिरने और धड़ पड़ने के दोनो ही स्थानो पर अभी तक वीर पूजाए होती है। यहा सत और शौर्य का सगम था। जीवन को जी भर कर जीकर तिनके की तरह न्यौछावर कर दिया जाता। यहा के लोग जीवन और मरण दोनो को ही भरपूर जीते और तृण की तरह त्याग देते। जीवन और मरण दोनो का इनका अपना दर्शन था। जीवन जीते, रवायणे होती हथाईया जुड़ती और

अपने दैनिक अभावो को लोग मिल बाट कर हास उल्लास म भूलने का प्रयास करते। कुआ पर मधुर स्वर मे खुड़कारा कर गासी , बारा आने की उद्घोषणा करता पनिहारिन तलाइयो से पानी लाती हुई गीत गाती।

मगरा क्षेत्र म भरन वाले मेलो मगरियो का अपना अलग ही रग है। ये क्षेत्र क सास्कृतिक पक्ष के दपण है। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को कोलायतजी का मेला, आश्विन व चैत्र नवरात्रि म करणी मढ़ गिण के मेले, तीज पर मगरिये, गवर इत्यादि के मेले अपना अलग ही उल्लास बिखेरते हैं। इन मेला मे ऊटा और बैलगाड़ियो की दौड़, सगीत सम्मेलन, मिलन और सम्बन्ध बनाए जाते है। यहा के लोक कलाकार ढाली दमामी, भोपा, लगा आदि सारगी, हारमोनियम, ढोल, गवण हत्था आदि वाद्यो पर चिरपरिचित माढ़ राग म स्वर लहरियो से समा बाध देते है। यहा के लोग मगरेची कहलान म गर्व का अनुभव करते हैं। मगरो मगरेचिया री है।' यह पुराना नारा है।

यहा पर पशुधन मे भेड़ बकरिया ऊट तथा गाये अधिक हैं। मगरे की भेड़ो की ऊन विश्वप्रसिद्ध है। भेड़ पालन और ऊन का व्यवसाय यहा के लोगो का आर्थिक आधार है। मगरे की ऊन को विश्व म ख्याति दिलाने म दियातरा के छलाणी परिवार का बहुल योगदान है।

यहा की लोकदेवी करणी माता जन जन की कल्याणकर्ता है तो गाया की रक्षा श्रीमूलजी जूझार करते है, सापो से सुरक्षा श्री भभूता सिद्ध करते हैं, नखतबना करते है। उनके स्थानो पर चिरजाए, छावलिया आदि गाई जाती हैं, जात दी जाती हैं। कोड़मदेसर और सीयाणा के भैरव जन जन के रक्षक हैं। वीर भूमि होने के कारण गाव गाव म जूझार भोमिया और सतिया के थान है।

मध्ययुग मे यह क्षेत्र पवार शासको के राज्यातर्गत था। जागळू यहा की राजधानी थी। जागळू मे पवारा की एक शाखा साखला का राज्य था। वस्तुत यह समस्त प्रदश उस समय पवार शासको के प्रभाव मे था। जागळू, पूगल, लोद्रवा, ऊमरकोट, किराडू, आबू, भटिण्डा इत्यादि राज्यो पर पवार शासको की भिन्न भिन्न शाखाओ का शासन था।

13वीं शताब्दी मे जागळू के शासक खीमसी साखला ने धूगेड़ा से आये चारण बीठू को 12 गावा की जागीर प्रदान की। चारण बीठू ने मगरा क्षेत्र मे बीठनोक गाव बसा कर उसे अपना मुख्यालय बनाया। उन 12 गावो की जागीर म एक दियातरा गाव भी बीठू की ताजीम में आया।

उस समय दियातरा और इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे पल्लीवाल ब्राह्मणो की काफी आबादी थी। पल्लीवाल इस पूर क्षेत्र मे, पाली परित्याग कर जैसलमेर, सिन्ध तक बसत थे। पल्लीवाल बड़े धर्मनिष्ठ कर्मठ किसान और व्यवसायी थे। कहावत है कि पल्लीवाल का खत निवाण बिना नहीं। अर्थात् प्रत्येक पल्लीवाल के खेत म छोटा बड़ा तालाब तलाई अवश्य होती थी।

गाव दियातरा लोक भावनाओ के कुछ सन्दर्भ

■ कृष्णचन्द्र शर्मा ■

प्राचीन लोक मान्यताओ के अनुसार इस क्षेत्र म प्रवाहित रही सरस्वती नदी के किनारे किनारे महर्षि कपिल के सग सग दत्तात्रेय, याज्ञवल्क्य और च्यवन ऋषि की तपोभूमि भी इसी परिक्रमा म रही है। आज भी गाव के बड़े बुजुर्ग गाव के तालाब लाखोलाइ पर बने कुछ प्राचीन निर्माणो को भगवान दत्तात्रेय की कर्मस्थली धाम कह कर पुकारते है। यद्यपि इसकी पुष्टि हेतु कोई प्रमाण नही उपलब्ध है फिर भी जन भावनाओ की उपेक्षा भी तो उचित नही।

उत्तर मध्यकाल के रियासती अभिलेखो म यह गाव जिस रूप म सज्ञापित एव सम्बोधित किया गया है वह भी कुछ ऐसा ही आस्थापरक सम्बोधन ही कहा जा सकता है—दयालदास ने अपनी ख्यात देस दरपण, जिसे हम बीकानेर राज्य का पारम्परिक रूप म लिखा गया इतिहास कह सकते है, मे इस गाव का नाम 'देवायतड़ो' लिखा है। राजस्थानी भाषा के क्रम मे यदि हम देखे तो 'तड़ो' का एक दूसरा रूप लोक भाषा में 'तणो' के प्रयोग का भी मिलता है यदि यही शब्द सदर्भ जोड़ कर हम नाम सकेतिकता की ओर ध्यान देवे तो पता लगेगा कि 'तड़ो' या 'तणो' म पूर्व म उल्लिखित शब्द 'देवाय' है अत इस रूप मे शाब्दिक अर्थ जो उभरता है वह देवायतड़ो देवायतणो अर्थात् देवताओ का (वास) पवित्र भूमि स्थली अथवा धाम देवत्व या देव तत्त्व से युक्त स्थल।

ऐतिहासिक अभिलेखो म विक्रम सवत् 1818 की एक विवाह बही म, जो कि बीकानेर के महाराजा गजसिहजी के विवाह की बही है—म उनके जैसलमेर बारात लेकर जाने के समय गाव दियातरा म पड़ाव करने और वहा के मुखियाओ से भेट नजराना इत्यादि लिए जाने का उल्लेख भी मिलता है।

मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था म यह गाव पठान गुरेज खा को विक्रम सवत 1897 म पटे पर दिये जाने का उल्लेख मिलता है। तत्पश्चात् सवत् 1909 विक्रमी म भाई गुणपतसिह जी को दिए जाने का उल्लेख है, विक्रमी सवत् 1920 के साल मे इसके हकदारो म चारण फतो, खूमो, के भगवाने और भगवाने चावड़दान के गिरधारी और पदमे को दिए जाने के सदर्भ मिलते है। अभिलेखो म उपाध्याय ब्राह्मणो और चारणो को सम्मिलित रूप से इस गाव की हासल के हक दिये जाने के साथ साथ ही एक जियाल साहब के नाम का सदर्भ भी है, तत्पश्चात् पुन यह उपाध्याय ब्राह्मणो को ही दिया जाना उल्लिखित है। इस प्रकार गाव मुखिया के रूप म चारण और उपाध्याय ब्राह्मण इस गाव के मुखिया प्रतिस्थापित माने जा सकते है।

वर्तमान म गाव म मौजूद चारण बनजी ने महाराजा गगासिह के सस्मरण आज भी बड़े चाव से सुनाते है। उनके अनुसार महाराजा के समय इस क्षेत्र म

महाराजा गगासिह द्वारा निर्माण करवाई गई कोठी—उस समय मे महाराज की रुचि का शिकार क्षेत्र था। उस समय यहा चिकारा तिलाड़ और सूअर तथा डक इस क्षेत्र म बहुतायत से मिलते थे, गाव के आस पास के तालाबो और ताल तलैया म विशेषत सर्दियो म पक्षी भी बहुत उपलब्ध रहते थे अत शिकार के लिए यह स्थल अनुपम था, उनक अनुसार तब क्योकि सड़क नहीं थीं इसलिए यहा आवागमन भी कम था। जिससे वन्य जीव यहा निवाध विचरण करते थ। उन्ही दिना की सुनी सुनाई बातो को याद कर महाराजा के प्रजाहित के सस्मरण सुनाते वे कहते हे कि एक बार महाराजा जी ने शिकार क्षेत्र म पानी की प्रचुर व्यवस्था के लिए कुछ बधे बनवाने शुरू किये जिससे कि यहा भराव कर के कोठी के समीप के क्षेत्र को शिकार सुविधा के लिए पूरे वर्ष काम म लिया जा सके—जब गाव वालो को यह बात अपन खेता मे पानी जाने की व्यवस्था में व्यवधान रूप मे महसूस हुई तो राजाजी स भट कर निवेदन करना उचित समझा और ऐसा किया भी गया। श्री बनजी कहते है कि महाराजा न इस कठिनाई को समझा सुना और निर्माण तुरत बद करवा दिये। इस क्षेत्र म आज भी ऐसे निर्माणा के आधे अधूरे अवशेष देखे जा सकते है।

सन्दर्भ

1 ख्यात दस दर्पण सिढाचय दयालदास कृत बीकानेर राज्य का इतिहास निदशालय राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर द्वारा प्रकाशित 1998 ई । (पृ 77)

2 जसलमर महाराजा श्री गजसिहजी परणीजिया तैरे खर्च री बही 1818 विक्रम सवत (बीकानेर बहियात क्रम 145)।
निदेशालय राजस्थान राज्य अभि लेखागार बीकानेर

3 ठिकाना रजिस्टर बीकानेर अभिलेख
पृ 2 क्रम सख्या 58।
निदेशालय राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर

एक मूक स्थितप्रज्ञ लोकसेवक

■ सोहनलाल मोदी ■

आज के इस भोगवादी व्यक्तिवादी काल म किसी भी पुरुष के बारे म ये शब्द प्रयोग मे लेना एक अतिशयोक्ति ही मालूम होगी। पर राजस्थान क उत्तर पश्चिम के मगरा क्षेत्र में एक ऐसे महापुरुष हुए हे जिन्ह कड़ाई से कसौटी पर कसकर भी मूक स्थितप्रज्ञ लोकसेवक कहना एक सच्चाई है।

बीकानेर जिले के कोलायत तहसील के दियातरा गाव के श्री भैरूदानजी छलाणी एक ऐसे ही व्यक्तित्व वाले मूक स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे।

उनका जन्म दियातरा गाव के एक जैन परिवार क सठ श्री हजारीमलजी छलाणी क घर म आसाम के तजपुर कस्ब म हुआ। आप क पिताजी का तजपुर म पैतृक व्यवसाय तथा मकान भूमि आदि थी। आपकी शिक्षा दीक्षा तजपुर म ही हुई। उन दिनो देश म स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा था। आप युवा अवस्था म ही उससे जुड़ गये पर आपक मन म यश, प्रशसा और मान सम्मान की भूख बिल्कुल नहीं थी। अत आपने अपने लिय मूक सेवक का कार्य चुना। आप क्षेत्र क स्वतन्त्रता सग्राम म लगे लोगा के घरा को सम्हालने एव मदद करने क कार्य मे लग गये। साधारण कार्यकर्ताओ से लेकर वहा के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी श्री भगवती बाबू, श्री कामख्या प्रसादजी त्रिपाठी एव अमियकुमार दास आदि के सम्पर्क म भी रहे और उन्हे सहयोग करते रहे। आपकी रुचि एव निष्ठा व्यापार म रह कर अर्थ लाभ कमाने की बजाय सादा जीवन और उच्च विचार म रही। आप आसाम छाड़कर अपने गाव दियातरा आ गये। मोटी खादी आप शुरू म ही पहनने लग थ। आपने गाव म आकर कृषि, पशुपालन और ग्राम सेवा के कार्य को अपनाया। आप शोध कार्यों म गहरी रुचि लेते थे। आपने कृषि म अनेक प्रयोग किये। आपने अपन खेत म बाजरा सरसो तिल, मोठ काली कानी के मीठे मतीरे आदि के उन्नत बीजा का भी उत्पादन किया। कोलायत तहसील म खेत मे सबसे पहला ट्यूबवेल भी आपने ही लगवाया। बरसात के पानी के सग्रह हेतु तालाब तलाइयो को भी आपने गहरा कराया। सरकारी मेड़बन्दी की योजना से पहले आपन ही अपने खेता म मेड़बन्दी कर बरसात का पानी रोककर फसल लेन का कार्य शुरू किया। आप एक विवेकवान शोधकर्त्ता थे। आप अपने यहा सर्वप्रथम ट्रेक्टर लाये। उसके गुण दोषा से ग्रामीण लोगा को परिचय कराया।

पशुधन के विकास मे भी आपने अनेक प्रयोग किये। नागौरी और हरियाणा के साड क्षेत्र म लाकर आपने गोधन का भी विकास किया। आपने अपने क्षेत्र के बछड़ो की कीमत मे 10 गुणा वृद्धि की। हर अकाल मे आपने गायो की रक्षा हेतु राज्य सरकार गो सेवा सघ एव अपने अभिक्रम म कैटल कैम्प सस्ते चारा डिपो और पशु पोषण केन्द्र चलाकर क्षेत्र के गोधन की रक्षा की। गावो मे गोधन के रक्षण और पोषण मे हमेशा प्रेरणास्रोत रहे।

शिक्षा के क्षेत्र मे भी आपकी विशेष रुचि थी। आपने अपन गाव म पहले प्राईमरी स्कूल का निर्माण कराया। फिर हायर सेकण्डरी स्कूल के भवन का निर्माण करवाया। तहसील के अन्य युवको को दियातरा म हेतु छात्रावास भी बनवाया। गावो के गरीब छात्रो को आप के रूप मे भी मदद देते रहे।

महिला शिक्षा एव बालिका शिक्षा म भी आपने अपने परिवार की बच्चियो को भी उच्च शिक्षा का

शादी के बाद भी केवल उच्च शिक्षा ही नहीं पीएच डी भी कराई है। आप पर्दाप्रथा के भी विरोधी थे। आपने अपने घर में पर्दा हटवाया। आपने सभी लड़कों के शादी विवाह बिना दहेज के ही किये। आपके सभी कर्म और व्यवहार विवेकपूर्ण रहे।

खादी ग्रामोद्योग के कार्य में भी आपकी गहरी रुचि एवं निष्ठा थी। श्री रघुवरदयाल गोयल के सम्पर्क में आकर खादी मन्दिर संस्था के निर्माण में भी हिस्सा लिया। आप बीकानेर की खादी संस्था खादी मन्दिर के संस्थापक सदस्य जीवन पर्यन्त रहे। आप वर्षों तक खादी मन्दिर संस्था के अध्यक्ष भी रहे। आखिर बुढ़ापे की स्थिति में आपने स्वयं ही संस्था के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

आप हमेशा से ही दलगत राजनीति से दूर रहे। आपने निर्दलीय के रूप में ही राजस्थान विधान सभा का चुनाव स्वतन्त्र रूप से लड़ा। दियातरा पंचायत के निर्विरोध सरपंच एवं कोलायत पंचायत समिति के निर्विरोध प्रथम प्रधान भी रहे।

गावों में विकास कार्यों में आपका बहुत योगदान रहा। एक कर्मयोगी की तरह रचनात्मक कार्यों से सदा जुड़े रहे। साथ ही आपकी गाधी विनोबा और सर्वोदय विचार में गहरी निष्ठा थी। श्री विनोबाजी द्वारा प्रणीत भूदान आन्दोलन में भी आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बीकानेर जिले में ग्रामदान आन्दोलन भी सर्वप्रथम दियातरा ग्राम से ही शुरू हुआ। उस समय तक राजस्थान में ग्रामदान एक्ट नहीं बना था। बिना कानून के ही पूरे जिले में डीफैक्टो ग्राम दान कराये गये। उसके पश्चात् राजस्थान सुलभ ग्रामदान एक्ट बना।

सत्य अहिंसा और प्रेम में आपकी गहरी आस्था थी। आप निष्ठावान लोक सेवक थे। आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। निरन्तर कर्मयोगी का जीवन जीते हुए आपको कभी धैर्य खोते और किसी प्रसंग में कभी भी उत्तेजित और नाराज होते हुए नहीं देखा गया।

परिवार में सम्पत्ति और कामकाज के बटवारे तथा शादी विवाह के कठिन प्रसंगों में भी आप कभी उत्तेजित नहीं हुए। हमेशा आपका व्यवहार समता और त्यागमय रहा। आपने सत्साहित्य एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया। रामायण और गीता का तो आपको गहन अध्ययन था। जीवन के अनेक प्रसंगों का तो आप रामायण की चौपाई सुनाकर समाधान करते रहते थे।

एक ऐसे मूक, स्थितप्रज्ञ लोकसेवक श्री भैरूदानजी छलाणी थे जिनका सानी आज भी दुर्लभ है।

गाधी भक्त जनसेवक

■ वासुदेव विजयवर्गीय ■

सृष्टि मे मानवो का आना जाना तो निरतर चलता ही रहता है, पर कुछ लोग ही ऐसे होते है जो परजन सेवा के द्वारा नर स नारायण बनते है। नम्रता, सहिष्णुता तथा जन कल्याण के प्रतीक बन जात है और दूसरा की पीड़ा को अपनी ही पीड़ा समझते है। परपीड़ा निवारण करक भी मन म जरा भी अभिमान नहीं करत है। ऐसे उच्च विचार और सादा जीवन जीने वाला का घर, गली, गाव, तहसील, प्रदेश व देश मे उनके सम्पक म आने वाले लोग सदैव स्मरण करते है।

जनसेवक

यद्यपि एक जैन और व्यवसायी परिवार म जन्म लेने क कारण किशार अवस्था मे पहुचते पहुचते वे अपने व्यवसाय म जुट गये और ईमानदारी क साथ व्यवसाय का विस्तार करके आसाम म सच्चे श्रेष्ठी बने। उनका धन कमान का तरीका और सम्पन्नता को भोगने का तरीका धर्म और माक्ष के पुरुषार्थ से निर्धारित था। यही कारण था कि उन्हे जनसेवक बनने म देर नहीं लगी। आसाम म व्यवसाय करते करते वे प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी श्री भगवती बाबू, कामाक्षाप्रसाद त्रिपाठी और आमियकुमार दास के निकट सम्पर्क मे आये। एक निष्ठावान स्वतन्त्रता सेवक के रूप मे उन लोगो को साधना का सहयोग देते रहे। इस प्रकार जनसवक क रूप म उन्हाने राजनीति मे पदार्पण तो किया पर गाधी विचारा के होन के कारण वे दलगत राजनीति से दूर रहे। सत्य अहिसा की नीति से कभी डिगे नहीं। एक सच्चे सेठ का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होने बगाल के कूचबिहार जिले के दिनहटा कस्बे क आस पास जहा शुद्ध पानी के अभाव मे लोग कष्ट पा रहे थे वहा कई स्थाना पर हैण्ड पम्प लगवा कर जनसेवा का आदर्श प्रस्तुत किया। इसके साथ साथ हाथ से कती बुनी खादी को बेचकर कातने बुनन वाले गरीब कामगारो को भरसक सहयोग दिया।

अपनी आयु के 86 वर्षों में छलाणीजी मात्र 36 वर्ष की आयु तक व्यवसाय मे रहे। 36 वर्ष की आयु के बाद छलाणीजी अपन पैतृक गाव दियातरा मे आ गए और अपनी आयु के शेष 50 वर्ष अधिकाशत यहीं सार्वजनिक सेवा में लगे रहे। अपने प्रेम और सहयोगपूर्ण व्यवहार से हर दिल अजीज बन गए।

बीकानेर के स्वतन्त्रता सनानियो से जुडाव

देशभक्ति स आत प्रात होने क कारण बीकानेर म जो आजादी के आन्दोलन चल रहे थे उनसे जुड़न के लिए अपनी तरफ से पहल करके वे बीकानेर आये और

बीकानेर प्रजा परिषद के अध्यक्ष श्री रघुवरदयाल गोइल से मिले। प्रथम भेंट में ही वे गोइलजी के चित्त चढ़ गए और उनकी अध्यक्षता में आजादी की पोषक संस्था खादी मंदिर के संस्थापक सदस्य के रूप में जोड़ लिये गये। इस प्रकार भेरुदानजी एक व्यापारी सेठ होते हुए भी देशभक्त जनसेवक की भूमिका में जीवन जीते रहे।

गो सेवा के अग्रदूत

बीकानेर, कोलायत और दियातरा में हर वर्ष गर्मियों में चारे का अभाव तथा हर दूसरे तीसरे वर्ष भयंकर अकाल के कारण गांवों के लोग अपनी गायों को आवारा छोड़ देते थे। गायें भूख के मारे इधर उधर भटकती फिरती थीं, कमजोर हो कर पड़ जाती थी और वापिस उठ नहीं पाती थी तथा बीमार होकर मौत के मुंह में चली जाती थीं। छलाणीजी ने गायों की इस पीड़ा से छटपटाहट अनुभव की और उसके निवारण में जुट गये। वे गायों की सेवा के लिए तहसील में गांव गांव जाते। आवारा गायों को अपने गांव लाते, उनके चारे पानी का प्रबन्ध करते, बीमार गायों को दवा दारू देकर उनकी सेवा करते। जब गायें ठीक हो जाती तथा चारा मिलने लग जाता तब उन गायों को उनके मालिकों को लौटा देते।

सस्ते चारे का वितरण

अकाल और चारे के अभाव में जब भीषण संकट के दौर से बीकानेर गुजरता तब छलाणीजी खुद अपनी तरफ से तथा अन्य दानवीरों से धन जुटाकर कोलायत तहसील के अनेक स्थानों पर सस्ते चारे के डिपो खुलवाने में मदद करते थे।

भेरूदान छलाणी स्मृति गो सेवा पुरस्कार

गोवंश नस्ल सुधार की प्रवृत्ति को मगरा क्षेत्र कोलायत तहसील के गोपालकों में सतत बनाये रखने के लिए उनके पुत्रों ने भी प्रतिवर्ष छलाणीजी की पुण्य तिथि पर गोपालकों को सम्मानित करने व सबसे श्रेष्ठ गोपालक को प्रथम पुण्य तिथि पर 11000/- रुपये का पुरस्कार दिया था। यह गो सेवा प्रोत्साहन का कार्यक्रम परिवर्तित रूप में लगातार चल रहा है।

कृषि क्षेत्र में अनेक सुधार

उस जमाने में कृषि क्षेत्र में अनुसंधान करने की प्रवृत्ति नहीं थी और रियासत में इस तरह की योजनाओं का कोई प्रचलन नहीं था लेकिन वैसे वातावरण में भी छलाणी जी ने वर्षा के पानी से अधिक लाभ उठाने के लिए मेड़बंदी की शुरूआत की। उन्नत बीजों को काम में लेकर उत्पादन बढ़ाने में तरह तरह के प्रयोग किये। ग्वार की फली और मोठ मतीरे के उत्पादन की नई खोज करके तहसील के अन्य किसानों के सामने उनका प्रदर्शन करके उन्हें अपनी फसलें सुधारने तथा उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

सच्चे सुधारक और शिक्षाप्रेमी

अग्रेजी म एक कहावत हे कि Charity Begins at Home। इस कहावत का मूर्तिमान स्वरूप हम भैरूदानजी छलाणी के व्यक्तित्व मे साफ नजर आता है। उनके मन म समाज सुधार के प्रति और रूढ़िया का दूर करने के प्रति जो आग प्रज्वलित थी उसका सीधा प्रभाव उन्होने अपने घर परिवार पर दिखलाया। जहा उस जमाने म लड़के लड़की का भेदभाव समाज मे सिर चढ़कर बोलता था वहा छलाणीजी ने अपने लड़क लड़किया को समान रूप से पढ़ाई के अवसर दिये। यहा तक कि अपने दूसरे पुत्र के विवाह क बाद भी अपनी पुत्रवधू को एम ए और पीएच डी करने की सुविधाए प्रदान की। आश्चर्य था कि स्वय मामूली पढ़े लिखे छलाणीजी अपनी पुत्रवधू की पीएच डी की सामग्री जुटान मे स्वय सम्पर्क कर करके बीकानेर क विद्वाना और सस्थाओ से सहयोग जुटाकर पुत्रवधू के काय को आसान कराते थे। उस जमाने मे ऐसा शिक्षाप्रेमी ससुर किस्मत वाली बहुओ को मिलता था।

इसके साथ साथ समाज की पदा और दहेज जैसी कुरीतियो को आज भी हमारे समाज के अनेक परिवार दूर करन की हिम्मत नही जुटा सके वहा दियातरा गाव के ग्रामीण वातावरण मे छलाणीजी जैसे व्यक्ति ने जबरदस्त हिम्मत करके अपने लड़के लड़कियो की शादी म न तो दहेज का लेन देन किया और न पर्दे की प्रथा को स्वीकार किया।

जब ओसर मोसर के खिलाफ कानून बन गया तब उन्हे अपने समाज सुधार के विचारो मे बल मिला क्योकि उस कानून के बनने के बाद छलाणीजी ने परिवार म एक भी ओसर मोसर नही होने दिया। समाज के अन्य लोगो के औसर मौसर म भी सम्मिलित होना बद कर दिया तथा इस रूढ़ि के प्रति अन्य लोगो को भी खुलकर हतोत्साहित करते रहे। समाज सुधार के प्रति इतनी दृढ़ लगन और इतना तीव्र आग्रह उनके अपने समय मे बहुत महत्त्व रखते थे।

शिक्षा के प्रति प्रेम

केवल अपने परिवार तक ही शिक्षा का प्रेम सीमित नही रखा बल्कि आज से 50 साल पहले उन्होने अपने ग्रामवासियो की शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालय का भवन बना कर दिया। सन् 1965 66 मे सैकेण्डरी स्कूल का भवन भी बनाकर दिया। आश्चर्य और प्रेरणा का विषय है कि सैकेण्डरी स्कूल खोलने के लिए छात्रो की सख्या नियम के अनुसार पूरी करन के लिए तहसील के अन्य गावो स अपने खर्च पर छलाणी जी छात्रो को लाये। छात्रो की फीस और पुस्तको क लिए भी आर्थिक सहायता देते रहे, जिससे कि सैकेण्डरी स्कूल की छात्र सख्या बनी रहे। गाव म छात्रावास भी उन्होने बनवा कर दिया।

राजनीति मे गाधी भक्ति

सन् 1952 के प्रथम आम चुनाव म कोलायत नोखा के मिले जुले क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव भैरूदानजी ने लड़ा। तिकड़म की राजनीति उन्हे रास नही

आर्या। अत सफल नहीं हुए। सन् 1958 म ग्रियातरा ग्राम पचायत क सरपच चुन गये और 1959 म बालोतरा पचायत समिति क उद्द निर्विरोध प्रधान चुन लिया।

तहसील क विकास का उन्होंने खूब काम किया। आश्चर्य और प्रसन्नता का विषय है कि कुआ की मरम्मत व मरम्मत क काम क निरीक्षण क लिए व स्वय कुआ म उतर जाया करत थ। प्रधान चुन जान स पहल भी तालाब और कुआ की मरम्मत म व सदा स ही रुचि रखत थ।

सर्वोदयी सवक

छलाणी जी गाधी विचारधारा क निरन्तर पाठक व प्रचारक रह। अत गाधी विचार प्रवाह न उन्ह खादी स्वतन्त्रता सग्राम सत्य निष्ठ राजनीति और सर्वोदय की गतिविधिया स जोड़ा। मर सम्पर्क म आन क बाद उन गतिविधिया म और भी तजी आई क्याकि विनाबा जी द्वारा मुझ बीकानेर जिल का सवादाता नियुक्त किया गया था। छलाणी जी न बालोतरा तहसील म भूदान क लिए की जान वाली पदयात्राआ म मर साथ घूम घूम कर प्रचार म सहयाग दिया तथा सर्वोदय विचार प्रचार म हाथ बटाया। बाबू जयप्रकाश क नेतृत्व म होन वाल अनक अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलना म सहभागी बन।

लागा क दिला म आज भी बस ह

यद्यपि छलाणी जी 19 दिसम्बर 1995 को अपनी नश्वर दह त्याग कर भगवदलीन हा गय पर व आज भी उनस सम्पर्क म आये लागा क दिला म बसे हे और व लोग कहत है कि कौन कहता कि व मरहूम है व जिन्दा है उनकी नकियाँ बाकी उनकी अच्छाइया बाकी।

मेरे गुरु ओर मार्गदर्शक

■ जिनेन्द्र कुमार जेन ■

भगवान महावीर और उनके द्वारा प्रदत्त जैन धर्म क अनुसार मानव जब सम्यग् दर्शन सम्यग् ज्ञान सम्यग् चारित्र की उपासना करके उच्च गुणा का प्राप्त कर लेता है तब वह मुक्ति का अधिकारी हा जाता है। मनुष्य म जब तक पक्षपातरहित सम्यग् दृष्टि सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र नहीं हा तब तक वह मोक्ष का अधिकारी नहीं हा सकता। दृष्टि ज्ञान और चारित्र के साथ 'सम्यग्' विशेषण महत्त्वपूर्ण है। सबस पहल मनुष्य की दृष्टि पक्षपातरहित होनी चाहिए तभी वह निष्पक्ष दृष्टि स विवेकपूर्ण निर्णय लेन म सक्षम हा सकता है।

स्वनामधन्य परमपूज्य भैरूदानजी छलाणी साहेब (ग्राम दियातरा श्री कोलायतजी बीकानेर) इन्हीं उच्चगुणा से सुसम्पन्न महान् व्यक्ति थ। जेन धर्म म इस प्रकार के गुणा को जीवन म धारण करने वाले व्यक्ति को धार्मिक कहा गया है। व एक सच्चे जेन श्रावक की तरह निरभिमानी सतत् जागरूक, मोह माया से निर्लिप्त, दृढ़प्रतिज्ञ, आत्मबली और मूधन्य चिन्तनशील धार्मिक व्यक्ति थे। उनके जीवन पर महात्मा महावीर, महात्मा गाधी और महात्मा विनोबा भाव के विचारो का गहरा प्रभाव था। अत वे अपने जीवन म ही मोक्ष के सच्चे अधिकारी बन गये थ।

उन्होने समाज की समस्याओ को निकटता से अनुभव किया था। अपनेजीवन म जो सिद्धान्त और आदर्श निर्धारित किये थे, उन पर दृढ़ सकल्पी और अडिग रहे। आदर्शो के खिलाफ समझौता उन्हे पसद नही था।

महामना स्व श्री छलाणीजी मेरी मझली बहन श्रीमती रतनीदेवी (नोहर निवासी स्व मालचन्दजी छाजेड़ की सुपुत्री) के पूज्य ससुरजी थ। मेरी सबसे कनिष्ठ बहिन श्रीमती कमलादवी भी दियातरा ही विवाहित ह। इस बहिन के ससुरजी समाजरत्न स्व श्री घेवरचन्दजी नौलखा (नौलखा आयल दाल मिल बीकानेर) जब अपने वरिष्ठ साथी और मित्र भैरूदानजी के व्यक्तित्व की चर्चा करते थे तब आत्मविभोर हो जाते थे—वे कहते थे—भैरूदानजी को अपने निर्धारित आदर्शो और सिद्धातो के विरुद्ध समझोता पसन्द नहीं है। वे ऐसा कोई कार्य नही करते जिससे उन्हे या उनके सुपरिचितो को लज्जा महसूस होती हो। बल्कि उनकी दृढ़तापूर्वक निर्णय लेने की क्षमता पर हम सबको गव होता है। यद्यपि स्व छलाणी साहेब मेरी मझली बहिन रतनीदेवी के ससुरजी थे। लेकिन उनका और मेरा सबध सगा समधी जैसा नही था। मैंने हमेशा उन्हे पितातुल्य ही माना था। वे हमारे परिवार के शुभचितक, मेरे पिताजी समाजसेवी स्व मालचन्दजी छाजेड़, (नोहर हनुमानगढ़) के परम मित्र और हम भाई बहिनो के मार्गदर्शक थे।

वे ह्रदय से निर्मल सरलस्वभावी, मृदुभाषी अल्पभाषी और उदार व्यक्ति थे। मेरे सहित जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क मे आता था उनके मार्गदर्शक विचारो से प्रभावित होकर नतमस्तक हो जाता था। व समाज, व्यक्ति, कमजोर और महिला वर्ग के प्रति शुद्ध ह्रदय से समर्पित व्यक्ति थे। मेरे पूज्य पिताजी साहेब श्रीमान् मालचन्दजी छाजेड़ जब तब उनकी चर्चा करते थे तो गद्‌गद् हो जाते थे।

मेरे पिताजी चाहते थ कि उनकी मझली बेटी श्रीमती रतनीदवी का शुभ विवाह उनके सुपुत्र मान्यवर भवरलालजी छलाणी के सग हो जाये। दशनोक बीकानेर के स्व ईश्वरदासजी छलाणी (फर्म ईश्वरदास तारकेश्वर कलकत्ता) मेरे पिताजी के सुपरिचित थे, और उन्होने ही पूज्य श्री भैरूदानजी साहेब और श्रीमान भवरलालजी साहेब के बारे मे बताया था। मेरे पिताजी चाहते थ कि उनकी बेटिया ऐसे परिवारो म ब्याही जाए जहा उन्हे सास ससुर की ओर से माता पिता जैसा प्यार और स्नेह

प्राप्त हो। अत उन्होने पूज्य भैरूदानजी साहब से और आगे बात चलाने के लिये मुझे उनकी सेवा म भेजा।

उस समय मैने युवावस्था म कदम रखा ही था। मै समाजवादी आन्दोलन के प्रणेता डा राममनोहर लोहिया के क्रातिकारी विचारो से प्रभावित था। मैं भी चाहता था कि बहिन का सम्बन्ध एसे परिवार म हो जो सामाजिक अधविश्वासो कुरीतियो से मुक्त और सेवाभावी हो। इस दृष्टि से मेरी उनके दर्शन करने मिलने और चर्चा करने की आतुरता बहुत बढ़ गयी। पूजनीय भैरूदानजी साहेब अपने व्यावसायिक केन्द्र तेजपुर से बीकानेर पधार रहे थे। उन्होने पत्र लिख कर पिताजी को अपने बीकानेर पहुचने की जानकारी दी थी। इससे पूर्व मैने न कभी उनके दर्शन किये थे, और न ही उनका कोई चित्र देखा था। लेकिन पिताजी द्वारा उनके बारे म जो बताया गया था उसके आधार पर मैने अपने मन मस्तिष्क मे उनका चित्र बना लिया था, और रेलगाड़ी म तलाशते तलाशते उनके डिब्बे म पहुच गया। उन्हे पहचानने म भी विशेष दिक्कत नही हुई। व कृषकाय दुबले पतले सावले व्यक्ति थ। उनकी वेशभूषा बहुत साधारण थी। अत्यन्त आवश्यक्ता होने पर ही वे मुह स शब्द निकालते थे, अत कम समय मे उनके विचारो को जानना भी मुश्किल था। इसके विपरीत मेरी आदत ज्यादा बोलने की थी। रतनगढ स बीकानेर तक तीन चार घटा मे उन्होने मेरी बाते ही ज्यादा सुनी। स्वय न के बराबर ही बोले। लेकिन खास बात यह रही कि मेरे प्रत्येक शब्द पर उनका ध्यान रहा। बीकानेर स्टेशन पर उन्होने कहा— अगर भवर (बहनोईजी साहब) के जच जायेगी तो हमारी स्वीकृति समझे। आप श्रीगगानगर जाकर उससे मिल लेना।

बाद मे सीधे सादे सरल आत्मा जिनके समूचे व्यक्तित्व के रोम राम मे अपने पिताश्री के गुणो की गहरी छाप रची बसी है माननीय श्री भवरलालजी साहब को मुझे साला बनाना पसन्द आ गया और इसके साथ ही हमारे परिवार को श्री भैरूदानजी साहेब के रूप मे एक सच्चा हितैषी सहयोगी और मार्गदर्शक प्राप्त हो गया।

पूज्य भैरूदानजी साहेब महान् आदर्शवादी थे। उनकी कथनी करनी म भेद नहीं था। उनका प्रण था कि वे छलाणी परिवार के किसी युवक की भले ही वह उनका पुत्र ही क्यो न हो पच्चीस से अधिक बरातियो वाली शादी मे सम्मिलित नहीं होगे। कहना नही होगा वे अपने पुत्र के विवाह म अपने और दुल्हे सहित पच्चीस बराती लेकर ही आये थे। इन बरातियो मे ढोलकिया भी था क्योकि बैड बाजा भी उन्हे पसद नहीं था। दहेज मे उन्होने एक पैसा भी नहीं लिया यहा तक कि अपने साथ दुल्हन के लिये खादी की साड़ी ब्लाउज लहगा लेकर आये थे उसे ही पहना कर मेरी बहन को ले गये। विवाह प्रसग पर कोइ निरर्थक व्यय नहीं होने दिया। अपने जीवनकाल मे सदेव बहिन को बेटी की तरह ही लाड प्यार दिया।

पूज्य छलाणीजी साहेब सच्चे समाज सुधारक और क्रांतिकारी थे। कम पढ़े लिखे होने के बावजूद वे देश की स्वतन्त्रता का मूल्य अनुभव करते थे। स्वतन्त्रता सग्राम के दिनों म उन्होंने असम और राजस्थान के अनेक स्वतन्त्रता सेनानियो से निरन्तर सम्पर्क रखा। उनकी आर्थिक सहायता की और अपने तरीके से स्वतन्त्रता आन्दोलन म गहरी आस्था और रुचि प्रदर्शित की। देश के आजाद हो जाने के बाद पूज्य भैरूदानजी साहेब अपने ग्राम दियातरा (श्री कोलायतजी) के विकास और उत्थान म अधिक समय लगाने लगे। सन् 1958 म ग्रामवासियों ने उन्हे ग्राम पचायत का सरपच निर्वाचित किया। उनकी सेवाभावना से प्रभावित होकर क्षेत्र के लोगो ने सन् 1959 मे उन्हे श्री कोलायतजी पचायत समिति के प्रधान पद पर निर्विरोध चुना। राजनीति म दलबदी, गुटबाजी, साम्प्रदायिकता, जातिप्रथा आदि बुराइया उन्हे नापसद थी। समय समय पर कांग्रेस और अन्य दलो ने उन्हे साथ लेने का भरसक प्रयास किया, लेकिन व दलगत राजनीति की बुराइया को भाप गये थे। लोगो की निर्मल भावना से सेवा करना उनका प्रथम और अतिम लक्ष्य था, इस कारण कोई भी स्वार्थ उनके व्यक्तित्व पर हावी नहीं हो पाया। वे कहते थे कि स्वय को विजयी बनाने के लिये दूसरे को हराना उन्हे स्वीकार नहीं है।

पूज्य भैरूदानजी साहब ज्ञान को कर्म समझते थे और कर्म को धर्म। सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। झूठ, छल कपट दिखावा प्रपच उन्हे पसद नहीं था। शिष्य तो डॉ लोहिया का मैं था, परन्तु उनके जीवन दर्शन को देखने समझने के पश्चात मैंने अनुभव किया कि मैंने तो लोहियाजी के विचारो को पढ़ कर मानसिक सन्तुष्टि भर प्राप्त की थी, जिया तो उन्होने था। वे सच्चे अर्थों म लोहियावादी समाजवादी थे।

पूज्य छलाणीजी साहेब केजीवन और व्यक्तित्व पर महात्मा महावीर महात्मा गाधी और महात्मा विनोबाजी का गहरा असर था। पठन पाठन म उनकी गहन रुचि थी। सम्पूर्ण गाधी विनोबा साहित्य और सर्वोदयी साहित्य से उनकी लाइब्रेरी ठसाठस भरी रहती थी। बहुत कम पढ़े हुए थ, परन्तु शिक्षा के प्रचार प्रसार म सदैव सक्रिय बने रहे थे। मेरे बहनोइजी साहब श्री भवरलालजी छलाणी और उनके द्वितीय पुत्र श्री फूसराजजी साहेब छलाणी अपने पिताजी और माताजी के पदचिह्नो पर चलने में गर्व अनुभव करते है। पिता ने विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, तो उनके पुत्रो और द्वितीय पुत्रवधू डॉ चन्द्रादेवी छलाणी ने यह कमी पूरी कर डाली। बहनोईजी साहेब ने तो विभिन्न विषयों मे कितनी ही बार एम ए की परीक्षाए दी है। बाद मे माननीया चन्द्राजी (पूज्य मामा साहेब गोपीचन्दजी साहेब नाहटा बीकानेर की सुपुत्री) उनके परिवार मे आयी और विवाह के बाद डॉक्टरेट करने की इच्छा व्यक्त की और ससुरजी साहेब के सहज रूप म प्रोत्साहन मिलने पर यह साहित्य शोधन किया।

मेरी बहिन के विवाह के वक्त उनके छोटे भाई मान्यवर मुन्नीलालजी साहेब छलाणी और मान्यवर आसकरणजी साहेब छलाणी उनके साथ ही तेजपुर

(कूचबिहार) और दीनहट्टा मे व्यापार सम्भालते थ। दोना भाई अपने बड़े भाई क कार्या और विचारा से प्रभावित और उनके कार्यक्रमा के प्रति समर्पित थे। दाना छाट भाइया के पुत्र पुत्रियो पर भी अपन महान् बाबा साहब का प्रभाव सहज प्रलक्षित होता है। पूरा का पूरा परिवार अति सहृदयी विनम्र सहिष्णु और चिन्तनशील है।

पूज्य छलाणी साहेब खादी को ग्राम स्वराज का आधार मानते थे, अत खादी का प्रचार भी आपका व्रत था। क्षेत्र क सुप्रसिद्ध बीकानेर खादी मदिर क सस्थापका म आप भी एक थे। स्वतन्त्रता सग्राम के दिनो म पूज्य रघुवरदयालजी गोयल शेरे बीकानेर के नाम से सुप्रसिद्ध थे। श्री गोयल साहब जब मच पर प्रवचन दते थ तो वह इतना जोशीला और मार्मिक होता था कि श्रोतागण ब्रिटिशशाही और राजशाही के खिलाफ सीना तान कर उठ खड़े होते थे। स्व गोयल पूज्य छलाणी साहेब के अभिन्न मित्र थे और दोनो मित्रो न क्षेत्र के गरीबों दलितो और महिलाओ के उत्थान के लिये अनेक प्रेरणादायक कार्य पूरे किये थे।

पूज्य छलाणीजी साहेब समाज के सभी वर्गों का उत्थान चाहते थे। वे व्यक्ति व्यक्ति म ऊच नीच जाति पाति के भेद क सख्त खिलाफ थे। सन् 1959 में आपश्री ने दियातरा ग्राम पचायत के सरपच पद पर हरिजन भाई को आसीन करवाने हेतु ग्रामवासियो को राजी करने मे सफलता प्राप्त की थी। जब विनोबाजी ने भू दान आन्दोलन का शुभारम्भ किया तो आपश्री भी उस आदोलन से जुड़ गय। स्वय ने भी भूमिदान किया और क्षेत्र के अन्य लोगो का भी भू दान करने की प्रेरणा दी। पूज्य विनोबाजी के दर्शन करने और कुछ मिनट बातचीत करने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था और मैंने अपने परिचय म पूज्य छलाणीजी के साथ अपनी रिश्तेदारी का हवाला दिया था। व पूज्य छलाणीजी साहेब को तत्काल पहचान गये।

आपश्री ने अपने धन का समाजहित म विसर्जन करन म कभी काई कजूसी नहीं की। सन् 1950 मे आपश्री ने दियातरा ग्राम मे प्राथमिक शाला का भवन बनाया। सन् 1965 66 मे सेकण्डरी स्कूल का भवन बनाया। सरकारी नियमों को पूरा करने के लिये आपश्री ने आस पास के गावा से छात्रो को जुटाया। उन्हे अपने पास रखा, उनकी पढ़ाई और पुस्तकों का खर्चा आदि वहन किया। कुछ छात्र तो ऐसे भी थे जो अपने माता पिता के साथ खेतो मे काम कर परिवार सम्भालने मे सहकार करते थ। उन्हे लाने के लिये पूज्य छलाणीजी साहेब को उनके परिवारजनो की भी आर्थिक मदद करनी पड़ी थी।

महिला शिक्षा के आप प्रबल पक्षधर थ। उनकी सुपुत्री श्रीमती मीना देवी चौपड़ा (जैन तेरापथ समाज मे समाज भूषण पदवी से सुविख्यात महामानव पूज्य छोगमलजी साहेब चोपड़ा की पौत्र वधू और मान्यवर गोपीचदजी साहेब चौपड़ा गगाशहर की पुत्र वधू) का आपश्री ने अपने बेटो की तरह ही पालन पोषण किया।

आदरणीया मीनाजी आज भी अपने स्वर्गीय ससुरजी और पिताजी के चरण चिह्नो पर सजगता से चल रही है।

पूज्य छलाणीजी साहेब धन पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार उचित नहीं मानते थे। गाधीजी के ट्रष्टीशिप के सिद्धात को उन्होने अपने जीवन म लागू किया। समाज के कमजोर वर्ग की आर्थिक सहायता करने म उन्हे आत्मसतोष प्राप्त होता था। जब आप दीनहट्टा (प बगाल) म व्यवसायरत थे, और वहा पेयजल का सकट था, तब आपश्री ने लोगो को पेयजल आपूर्ति के लिए अनेक हेड पम्प लगवाये थे। श्री कोलायतजी क आसपास के गावा की तलाई, तालाबा की सफाई और खुदवाई मे भी विशेष रुचि लेते थे। जब सरकार ने कुए का निर्माण काय हाथ मे लिया तब आपश्री कोलायतजी पचायत समिति के प्रधान थे और जीवन जोखिम उठाकर स्वय कुओ के अन्दर पहुच कर मरम्मत कार्यो का जायजा लिया करते थे।

पूज्य छलाणीजी साहेब समाज मे व्याप्त कुरीतियो, ढोग और आडम्बर से सदैव विरक्त रहे। उत्तरदायित्व निभाने के लिये आपको जब तब क्रातिकारी कदम उठाने पड़ते थे।जीवन के अतिम दिना म आपश्री लम्बे अर्से तक अस्वस्थ रहे थे और शारीरिक दृष्टि से काफी कमजोर हो गये थे। लेकिन एलोपथिक दवाओ मे उन्ह हिसा और परिग्रह प्रतीत होता था। हम सभी उन्हे स्वस्थ सक्रिय बने हुए ही देखना चाहते थे अत जब तब एलोपेथिक चिकित्सा करवाने का विनम्र आग्रह करते रहते थे। परन्तु उन्होने जीवनपर्यन्त सिर्फ आयुर्वेदिक और प्राकृतिक चिकित्सा को ही स्वीकार किया। जन जन को वे प्यार करते थे लेकिन अपने जीवन से उन्हे शायद ही कभी मोह रहा होगा।

मेरी माननीया मीनादेवी चोपड़ा (धर्मपत्नी श्रीमान् रतनलालजी चोपड़ा) के पूज्य ससुरजी स्व गोपीचन्दजी साहेब चोपड़ा, से एक बार पूज्य छलाणीजी साहेब के जीवन प्रसगो पर विस्तृत चर्चा हुई थी। उन्हाने बताया कि उनके जीवन और कार्यो पर भी छलाणीजी के व्यक्तित्व का असर पड़ा है। मैने उनसे पूछा था कि अति दुर्बल और सीधा साधा व्यक्ति इतनी शक्ति कहा से एकत्रित करता है। तब चोपड़ाजी ने बताया कि सगीजी सा (बहनोईजी की मातुश्रीजी) ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति है। बाद मे मैने भी अनुभव किया कि उनके साहसपूर्ण निर्णयो मे हमारी पूज्यनीया सगीजी साहेबा श्रीमती जेठीदेवी की अनूठी भूमिका है। उन्होने अपने जीवन की आवश्यकताआ को बहुत सीमित कर लिया था, और पति की इच्छाओ आकाक्षाओ के प्रति सहजभाव से समर्पण भावना अपना ली थी। सगीजी साहेबा उनका साथ देने मे सदैव आगे रहती थीं। इस कारण समूचे परिवार का साथ भी उन्हे प्राप्त हो जाता था।

पूज्य छलाणीजी साहब का जीवन वृत्तात अपने आप मे एक इतिहास है। *इतिहास कभी सम्पूर्ण नहीं होता और जितना लिखा जाय, उतना ही अधिक विशाल* हो जाता है। पूज्य सगीजी साहबा का जीवन भी इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ है।

इतनी निष्कपट निरभिमानी और सदाचारी महिलाए बहुत कम है समाज म। मीठी वाणी बोलना विनम्र व्यवहार रखना उनकी खास पहचान है। शायद पूज्य छलाणीजी साहेब जैस श्रेष्ठ मानव की सहायता की भगवान का भी आवश्यकता पड़ गई हागी। वे हमसे बहुत दूर चले गये है। लेकिन उनकी प्रतिमूर्ति पूज्य सगीजी साहबा श्रीमती जठीदेवी हमार बीच म मौजूद है। वे आज भी अपन पति द्वारा स्थापित परम्पराआ का जी जान से निभा रही है। बहुत बड़ी उम्र म भी जब तक आठ दस ग्रामवासिया का अपने हाथो मे भोजन पका कर नहीं खिलाती तब तक उन्हे चैन नहीं मिलता। भोजन के समय इधर उधर से दियातरा पहुचे लोगा की भोजनशाला है उनका घर। जहा सबको न केवल भोजन, अपितु आदर सम्मान और भरपूर प्यार भी प्राप्त होता है। म जब तब दियातरा जाता हू पूज्य सगीजी साहेबा के हाथा का बनाया हुआ अमृत प्रसाद ही ग्रहण करता हू। आज मेरी मा भी इस धरती पर नहीं है। लकिन जब मैं सगीजी साहबा को निहारता हू तो उनम सहजरूप मे अपनी स्वर्गीया मा की छवि प्रलक्षित होती है।

परम पूज्य छलाणीजी साहब कोई ऐसी चीज नहीं है जिन्हे खोया या भुलाया जा सकता है। लोग कहते है वे मोक्षगामी हो गय है स्वर्ग सिधार गये हैं। लेकिन मेरी मान्यता है कि पूज्य छलाणीजी साहब जैसे व्यक्ति कभी नहीं मरते कभी मर भी नहीं सकते। उनके जीवन उनके सिद्धान्त उनके आदर्श उनके कार्यकलाप सदैव मानव समाज को प्रेरणा देते रहते हैं। इस ससार म काफी व्यथाए और पीड़ाए है। सुख और शाति इतनी सी है कि पूज्य छलाणीजी साहब जैसे महामानव इस धरती पर जन्म लेते रहते है कभी महावीर के रूप मे कभी गाधी के रूप म तो कभी पूज्य छलाणीजी के रूप म। उनके जीवन से हम कितना सीख पाते है, यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है। इन्हीं शब्दो के साथ मे अपने परमपूज्य गुरु मार्गदर्शक हितैषी और कर्णधार को अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित कर रहा हू।

त्येन त्यक्तेन भुजीथा

■ डॉ धर्मचन्द्र ■

बीकानेर जिले मे कपिलमुनि की तपोभूमि श्री कोलायत इस क्षत्र का तीर्थ स्थल है जिसके सरोवर म अवगाहन के पश्चात् ही समस्त तीर्थों की यात्रा सपन्न होती है। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के मृदा खनिजो की सम्पदा से सम्पन्न है। जमीन पथरीली और मरुस्थली है। दूर दूर स्थित छोटे छोटे गाव है अत्यल्प होने वाली वर्षा पर अवलम्बित कृषि और पशुपालन इस सीमाई तहसील के आर्थिक जीवन का आधार है।

भौतिक ससाधनो की विरलता और वर्षा के अभाव से होने वाले अकाल के आक्रमणो से सघर्ष करने मे सक्षम साहसी और सरलता व सादगी से सम्पन्न लोगो की यह धरती मगरा क नाम से भी जानी जाती है।

इसी मगरा के ग्राम दियातरा के वासी स्व॰गीय भैरूदानजी छलाणी मगरा के सेठ क रूप म प्रतिष्ठित रहे है। श्री छलाणीजी ने यह प्रतिष्ठा मात्र उनके धन सम्पदा के कारण नहीं, बल्कि सुदूर असम मे तेजपुर और बगाल के दिनहट्टा मे अपने श्रम, कौशल और व्यावसायिक प्रवीणता तथा व्यावहारिक सच्चाई के द्वारा उपार्जित सम्पदा को मात्र स्वय और अपने परिवार की ही सम्पत्ति नहीं मानकर वास्तव मे धन के स्वेच्छया न्यासी के रूप म सर्वहिताय न्यस्त करने के कारण अपने कार्यक्षेत्र और अचल के समाज मे उनके प्रति स्नेह, सम्मान और श्रद्धा से सहज उद्‌भूत है। ऐसी लोक प्रदत्त प्रतिष्ठा विरल जन को ही प्राप्त होती है। सन्यास का अर्थ विरक्ति और पलायन नहीं अपितु जीवन और जगत् म स्वय को भली प्रकार से सलग्न करना सन्यस्त करना होता है। श्री छलाणीजी का जीवन वास्तविक अर्थों म समृद्धि के साथ सादगी और सेवा की साधना म स्वभावत सलग्न गृहस्थ सन्यासी का जीवन रहा है।

खादी का आधी बाहा का कुर्त्ता ऊची सी धोती, नाक में बाली सावली देह चेहरे पर सरलता भोलापन, सहज उद्दीप्त सौम्य मुस्कान तथा मद गति से उठते दृढ़ कदम, एक ठेठ ग्रामीण का दर्शन उनम स्वाभाविक रूप म होता था। प्रथम दृष्टया यह अनुमान ही नहीं लगता था कि यह कोई अनपढ़ गवार नहीं, अपितु सुशिक्षित, विचारशील, प्रबुद्ध और समृद्ध ग्रामवासी वणिक है। गाधी और सर्वोदय विचार के मात्र चितक नहीं अपितु सुशिक्षित व्यावहारिक प्रयोक्ता है। व्यक्ति व्यवस्था और परिस्थिति के पारदर्शी विश्लेषण की विवक बुद्धि और समाधान हेतु अनुभव सिद्ध देशज सूझबूझ के धनी है। सामाजिक रूढ़िया एव साप्रदायिक आग्रहा से मुक्त सामाजिक सुधार व धार्मिक आस्था से सचालित किन्तु प्रगति के लिए नए परिवर्तन और प्रयोग के लिए सदैव तत्पर रहने वाले प्रखर व्यक्तित्व है।

एक सफल व्यवसायी क रूप में व्यापार के द्वारा धनोपार्जन ही उनके जीवन का ध्येय नहीं रहा, अपितु इसके माध्यम से परिवार व समाज के बधुओ का उत्थान साध्य रहा। व्यापार करते हुए असम बगाल और बीकानेर म स्वतत्रता आन्दोलन को बल देने का महत् कार्य किया। स्वतत्रता सेनानियो को आर्थिक योगदान के साथ उनके परिवारा के योगक्षम की व्यवस्था भी की। गोपनीयता और श्रेष्ठता के साथ स्वाधीनता सेनानिया के मध्य सदेश व सवाद के विश्वस्त माध्यम बन। सेनानियो के लिए गुप्त व सुरक्षित विश्वस्त आश्रय के पात्र रहे।

रूढ़िचुस्त ग्रामीण वणिक परिवार से होत हुए भी स्वाधीनता आन्दोलन क मूल्या व गाधी विचार को हृदयगम कर अपने जीवन म घटित करन का हर क्षेत्र मे

साहस किया। सारे प्रयोग दूसरो पर नहीं अपितु स्वय और परिवार पर करके व्यावहारिक उदाहरण द्वारा प्रसारित करने का उपक्रम किया। बिना किसी पद और प्रचार के आत्मस्फुरणा मे गीता और गाधी को अपना कर खादी और स्वदेशी को धारण किया। खादी के विस्तार के लिए खादी बिक्री का कार्य अपने व्यापार के साथ साथ किया। यह आर्थिक दृष्टि से हानि और राजनीतिक दृष्टि से खतरे का कार्य था। अपनी व परिवार की सम्पूर्ण जीवन शैली को स्वाधीनता आदोलन के आदर्शो के अनुरूप ढालने का उन्होने हरचद प्रयास किया। राष्ट्रीय व सामाजिक जागृति का लक्ष्य करके परिवार ग्राम और पूरे क्षेत्र मे शिक्षा के प्रसार के लिए सतत सचेष्ट रहे। हजारीमल छलाणी ट्रस्ट का सचालन कर उसके माध्यम से दियातरा ग्राम मे प्राथमिक विद्यालय का प्रारभ किया और धीरे धीरे उसे माध्यमिक विद्यालय मे क्रमान्नत कराया। इस हेतु ट्रस्ट के माध्यम मे भवन का निमाण कराया। क्षेत्र के ग्रामो मे शिक्षण कार्यो को प्रेरित किया। मगरा क्षेत्र के अनेकानेक छात्रो को उनके खाने, रहने व पढ़ने की व्यवस्था परिवार के सदस्य के रूप मे रखकर वर्षों तक करते रहे। अनेक ऐसे व्यक्ति आज शिक्षक व राजकीय व अन्य कार्यो मे ऊचे ऊचे पदो पर आसीन है। शिक्षा व समाज के प्रति प्रेम का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

इनकी दूरदृष्टि का परिणाम है कि छलाणी परिवार के लड़के ही नहीं लड़किया भी उच्च शिक्षा प्राप्त है। अपनी छोटी पुत्रवधू को विवाह के पश्चात् एम ए तथा पीएच डी का उच्च अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। आज वह असम मे हिन्दी की प्रोफेसर डाक्टर चन्द्रा छलाणी के रूप मे सवारत है।

उनका जीवन भारतीय जीवन मूल्यो को सतत विकसित करने की प्रयोगशाला रहा। गाधी के स्वदेशी व स्वावलबन के विचार को व्यावहारिक रूप प्रदान करने की दृष्टि से इस क्षेत्र मे उपलब्ध कच्चे माल (ऊन) के आधार पर अकाल पीड़ित क्षेत्र के ग्राम्य समाज को सफलतापूर्वक आथिक सम्बल देने के लिए बीकानेर के अपने अनन्य मित्र और स्वतत्रता सेनानी बाबू रघुवर दयालजी गोइल के साथ कधे से कधा मिलाकर खादी मदिर की स्थापना की एव उसके माध्यम स ऊनी कताई बुनाई के कार्य को विस्तृत किया। खादी मन्दिर के आजीवन न्यासी और बाबू गोइलजी व लाला ईश्वर दयालजी के बाद कई वर्षो तक सस्था के अध्यक्ष रहे। शारीरिक असमर्थता के कारण सन् 1989 90 मे अध्यक्ष पद का त्याग किया। बीकानेर की खादी प्रतिष्ठान व अन्य खादी सस्थाओ को भी सक्रिय सहयोग देते रहे।

सुदूर असम और बगाल मे व्यवसाय को सफलता से विकसित व नियत्रित किया और सच्चे व सफल व्यवसायी के रूप मे प्रतिष्ठा अर्जित की। बीकानेर के ऊन व्यापार को स्थानीय ऊनी उत्पादन उद्योग मे बदलने की पहल उन्होने छलाणी वूलन मिल का प्रारभ करके की। इसका परिणाम बीकानेर मे खादी क्षेत्र के साथ ऊनी उद्योग का विकास है। देशज परिस्थितियो के अनुरूप परपरा को विकसित करने और समय

की आवश्यकताओ के अनुरूप नए को स्वीकार करने का अनूठा अभिक्रम श्री छलाणीजी का जीवन रहा है।

देश के सुदूर असम व बगाल प्राता म स्थापित सफल व्यवसाया म ही लगे रह कर धनापार्जन एव खूब सुख सुविधाओ का शाही जीवन व्यतीत करने म समर्थ हात हुए भी इन सब से लुब्ध नहीं हुए और स्वच्छया ग्राम्य जीवन का वरण किया। व्यवसाय सभालने मात्र के लिए तजपुर व दिनहट्टा जात, परतु मुख्यतया दियातरा म ही निवास किया। गाव म रहकर वहा क जीवन और लागा स जुड़कर ही ग्रामीण भारत का पुनर्निर्माण करने की ऊची बात करने वाले विचारक बहुत है परतु गाधीजी की अपक्षाओ क अनुरूप सामाजिक रचना क लिए गाव के जीवन को स्वीकार करने वाले बहुत कम लोगा म स श्री छलाणीजी एक थ।

गाव मे रहकर वहा कृषि गा सवा खादी, शिक्षा और समाज सुधार के लिए प्रयाग स्वय और परिवार स प्रारभ किया और ग्राम विकास का यथार्थ प्रतिदर्श प्रस्तुत किया। आजादी स पूर्व स्वाधीनता आदालन की गतिविधिया म यथाशक्ति बल दिया। आजादी के बाद गाधी क सपना का भारत अर्थात् ग्रामात्थान क कार्य को सक्रियता से हाथ म लिया।

आजादी क पूर्व राजशाही के सदा विराध म सक्रिय रह, वहीं आजादी क बाद जब पचायत राज की व्यवस्था लागू की गई तब दियातरा क सरपच और मगरा पचायत समिति, श्रीकोलायत तहसील क प्रथम प्रधान निर्विराध निर्वाचित हुए और ग्रामा में चेतना जागृति और विकास के कार्य म जुट गए। गावा की समस्या क समाधान के लिए लोगा को जगाने एव स्वय समाधान हेतु सक्रिय करने की दृष्टि रखी। सरकारी साधना क ही भरासे नहीं रहकर यथाशक्ति स्वय ने साधन उपलब्ध कराये और लागा को भागीदारी के लिए प्ररित किया। उनक कार्यकाल म कम लागत पर जितना अधिक कार्य हुआ वह स्मरणीय और आदर्श है।

आजादी के बाद काग्रेस म आयी स्वार्थवृत्ति और सरकारी तत्र मे बढ़े भ्रष्टाचार का अनुभव होने पर काग्रेस से विरक्ति ले ली, लेकिन ग्राम कल्याण के कार्य के लिए अपने व सस्था के स्तर पर सदैव सक्रिय रहे।

श्री छलाणीजी ने अपनी जमीन पर खेती के नए नए प्रयोग किए। इस हेतु घर म बड़ी सख्या म गाय और खती के लिए बैल रखे एव गाव के जरूरतमद लागो को इस कार्य मे लगाया। सरकारी कृषि वैज्ञानिको द्वारा दिए गए परामर्श की परीक्षा स्वय प्रयोग करके करते रहे। उन्हाने इस सदर्भ मे सर्वप्रथम ट्रेक्टर खरीदा। स्वय प्रयोग कर खेती म काम लिया और साथ ही गाय बैलो का त्याग नही किया। उनका अनुभव रहा कि इस अल्पवषा वाले क्षेत्र म खेती की ज्यादा जमीन ता ट्रेक्टर से जोती जा सकती है परतु इससे जमीन व खेती की प्रकृति पर क्षतिकारी प्रभाव होता है। ट्रेक्टर स खेती जोतने से ज्यादा जमीन जुतती है गहराई से जुताई होती है, खाली जमीन

नही छूटती। अत शुरू मे पैदावार बढ़ती है, परतु जमीन की उपजाऊ ऊपरी परत दब जाती है नीचे की परत ऊपर आती है। इसके लिए बाहर से खाद देने की जरूरत पड़ती है। गहराई से जमीन जोतने से घास व बेर (पाल) के बीज नहीं रहते और परिणामत खाली समय म पशुआ के लिए घास और पाला पैदा नहीं हा पाता। इस क्षेत्र म ट्रेक्टर से खेती कुल मिलाकर लाभकारी नहीं हा सकती। साथ ही केवल कृषि इस क्षेत्र मे पूर्ण आर्थिक आधार नही है, बल्कि पशुपालन मुख्य और कृषि सहायक आधार है। अत अन्य आपूर्ति एव पशुपालन के लिए बैला मे ही खेती लाभप्रद हा सकती है।

ट्रेक्टर से खेती का यह भी प्रभाव होगा कि खेती से बैल हटते जाएगे। गो पालन छूटता जाएगा और गो रक्षा कठिन हा जाएगी। उनके निष्कर्षों के परिणाम अब आते जा रह है। भारत जहा गाय गो माता के रूप मे अर्थ और धर्म के लिए पालनीय और पूजनीय रही है वहा गा मास का निर्यात और उसके लिये गो हत्या बढ़ रही है।

सिचाई के द्वारा इस क्षेत्र म कृषि के महगे प्रयोग भी किए। अपने खेत म कुए पहले श्रमिको के द्वारा परम्परागत तरीके से खुदवाए—इसलिए कि गाव के लोगो को ही काम मिले। परतु गहराई तक खोदने पर पर्याप्त जल नहीं आने पर यत्र से बोरिंग करवाई और सिंचित कृषि के प्रयोग किए जो उनके जीवन के अतिम काल तक चलते रहे। उनका अनुभव रहा कि सिंचित खेती तो मिश्र बीजो और रासायनिक खाद के बिना लाभकारी नहीं हा सकती। इस अचल मे पशुआ का गोबर छाण के रूप म जलाने के ही काम आता है। सोना माटी के मोल जाता है परतु गोबर गैस व कम्पोस्ट के रूप में प्रयाग पानी की उपलब्धता वाले क्षेत्र म ही सफल हो सकते हैं। इस क्षेत्र म कम पानी मे ही पैदा हो सकने वाली बैर एरन्डी आदि की खेती सामान्य कृषि के साथ सहायक हा सकती है। उन्होने अपनी सूझबूझ से देशी बीजा की अधिक पैदावार देने वाली गवार बाजरी व सरसा के बीज विकसित किए। उन्होने यह गहराई से अनुभव किया कि बोरिंग से कुआ और नलकूपो की खुदाई और सिचाई बिजली बीज और रसायनो पर होने वाले खर्च के कारण अनार्थिक एव क्षतिकारक है।

सरकारी अधिकारिया की समझ का वे एक उदाहरण बताया करते थे। जब वे पचायत प्रधान थे, तब सरसो के उत्तम बीज तैयार किये थे। एक बोरी भरकर तत्कालीन जिलाधीश को इस आशय के साथ भेट किया कि इन सुधरे बीजो का सही उपयोग करें यानि किसाना म वितरित कर दे जिससे इस बीज का विस्तार हो तथा किसान लाभान्वित हो। जिलाधीश के पिता वृद्ध थे उनके घुटना मे दर्द रहता था। जिलाधीश ने सरसा पिलवाकर तेल निकलवाया। उन सुधरे बीजों का उपयाग खेती की बजाए घुटना मे मालिश और भाजन म करवाया। सरकारी तत्र मे विकास बीज का स्वार्थी तेल ही निकलता है। सरकारी योजनाओ मे भ्रष्टाचार की खेती होती है।

श्री छलाणीजी एस गो भक्त और गो सेवक नहीं थ जो गाया को माता कहते और उसकी पूजा करते है परतु घरो मे गाय नही पालते। वास्तविक अर्थो म ऐसे गो सेवक थे जो गो रस का प्रयोग करते हे ओर स्वय घर पर गो पालन करके गो वश की सेवा हाथो स करते है राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम स गो सेवा के कार्य म योग दिया। स्वय ने अपने घर म गायो को पाला और गो सवर्द्धन, नस्ल सुधार के प्रयोग किए। उत्तम साड तैयार किए और पूरे क्षेत्र की सवार्थ उपलब्ध कराए।

इस क्षेत्र मे वर्षा के अभाव म बार बार अकाल पड़ते रहे है। जब जब भी अकाल पड़े सरकारी या सस्था की मदद की प्रतीक्षा किए बगैर अपनी ही पहल व साधना से गायो के चार पानी के लिए विशाल अकाल राहत शिविरो का सचालन किया। हजारो गायो को मोत के घाट जाने से बचाया और क्षेत्र की गो पालक प्रजा को दुष्काल मे भरपूर मदद का सम्बल प्रदान किया। कम खर्च मे बहुत ही कुशलपूर्वक गो रक्षण का कार्य हुआ।

इस क्षेत्र के लोगो ओर यहा की जमीन स उनका परिचय और स्नेह तथा समस्याओ की जड़ से समझ थी। किसी भी अकाल रोग सामाजिक व पारिवारिक और आर्थिक कठिनाइ के समय लोग बहिचक इनके पास नि सकोच आते, उनके द्वार सदा खुले मिलते उनसे सही मार्गदर्शन और यथोचित समाधान पाते। उन्होने बिना किसी ढिढोर के चुपचाप लोगो की हर समय मदद की इसलिए लोग उन्हे श्रद्धा से मगरा के सेठ के नाम से सम्बोधित करते थे और अब स्मरण करते है।

वे उदारचित्त गुणग्राहक निरभिमानी व्यक्ति थे। किसी के भी दोष का नहीं अपितु उसके गुण को ही देखते। दोष पता हो जाने पर भी क्षमा कर देते। घर म काम करने वाले कार्यकर्ता को चोरी का पता लगने के बावजूद उसे कार्य पर लगाए रखते।

उनका घर अतिथियो के स्वागत सत्कार के लिए सदा खुला रहा। इस क्षेत्र और गाव मे आने वाले सरकारी अधिकारी नेता सामाजिक कार्यकर्ता और किसी भी परिचित अपरिचित के लिए भी श्री छलाणीजी का आतिथ्य अयाचित ही उपलब्ध रहता और उनके सान्निध्य में वत्सलता, आत्मीयता और उनके नि स्वार्थ प्रेम से अभिभूत हुए बिना नही रहता।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जेठीदेवी उनकी प्रतिछाया है। वे वास्तविक रूप मे अन्नपूर्णा देवी माता है। घर के हर सदस्य, हाली कर्मचारी सगे सबधी अतिथि आदि कोई भी कभी भी घर आए तो उसको अपार वात्सल्य से सराबार करके ही प्रसन्नता अनुभव करती है।

श्री छलाणीजी का अपना जीवन अत्यत ही सादा भोजन सयमित और नियमित, सौम्यवाणी और गहन गभीर विचारसरणी व्यवहार म ऋजुता, स्नेह सेवा

और सहयोग की सहज वृत्ति तथा विज्ञापन और अहम् भाव म विरत व एक मूक निस्पृह गृहस्थ साधक थ।

शहरा म अधिक साधन सुविधाए और धनोपार्जन क विपुल अवसरा क कारण गाव छोड़कर नगरा म रहन की प्रवृत्ति सामान्य है। गाव का जीवन असुविधापूर्ण होन क साथ ज्यादा खर्चीला है। श्री छलाणीजी जैस सम्पन्न समर्थ लोगो के लिए तो गाव का जीवन और इस प्रकार किया जाने वाला धन का व्यय (सुविधाओ और अतिथि सत्कार म उनका घरलू खर्च भारी था) प्रवर्तमान आर्थिक मापदण्डो म एकदम अनार्थिक अबुद्धिमत्तापूर्ण और शौक पूर्ति या सनक ही समझा जाता है। परतु श्री छलाणीजी जैसे सफल समर्थ व्यवसायी न स्वेच्छापूर्वक ग्राम का जीवन ही जीना श्रेयस्कर माना।

व भूमिपुत्र थ जिन्होने गाव और अञ्चल को आत्मा का विस्तार और स्वय को उस विराट अस्तित्व का अग माना।

श्री छलाणीजी के जीवन दर्शन की भित्ति रामचरित मानस थी। उनको यह ग्रथ कठस्थ था और व्यक्ति व्यवस्था व परिस्थिति का विश्लेषण रामचरित मानस क आधार पर सटीक रूप म करते थे। रामचरित उनका मानस था। वे मानस पढ़ते ही नहीं थे। बल्कि उस बरतते थ। उनकी चिन्तनचर्या का स्रोत रामचरित मानस था इसलिए विचार और चर्या का अभेद तथा कथनी व करनी की समानता व्यष्टि और समष्टि की एकता उनक जीवन व्यवहार म सहज व्यक्त हुई।

उनसे जब यह कहा जाता कि आप गाव म रहकर घर परिवार गो पालन करते है ग्राम कार्यो और अतिथियो म जितना खर्च करत ह ग्राम जीवन की कठिनाई एव अभाव को सहन करते ह तो बहुत कम खर्च म शहर म आपको सब कुछ आराम के साथ उपलब्ध हो सकते है। यह आपकी फिजूलखर्ची है। परतु श्री छलाणीजी की आर्थिक दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट थी। उनका उत्तर होता था कि गाव म गो कृषि व घर परिवार तथा आतिथ्य के खर्च कम करने की मत सोचो अधिक कमाने का पुरुषार्थ करो बाजार म मूर्ख मत बनो खूब देख परख कर सही दाम म उत्तम वस्तु खरीद करो। शहरो म उद्योग व व्यवसाय म नैतिकता और व्यापक हित को ध्यान म रखकर कमाई बढ़ाओ और गावो मे रहकर उसे खर्च करो। इसी से ग्राम सम्पन्न होग और व्यक्ति और समाज का जीवन सुख शाति और समृद्धिशाली बनेगा। व इसी जीवन दर्शन और तदानुरूप जीवनचर्या के प्रत्यक्ष प्रमाण थे।

भारतीयता और आधुनिकता के मनीषी और ऋषि थे। स्वतत्रता आदोलन के गाधी निष्ठ मूल्यो और विनोबा के सर्वोदय के विचार क वे केवल प्रशसक और समथक ही नहीं रह अपितु उनको इस प्रकार आत्मसात् कर लिया कि वे उनक

विचार वाणी और व्यवहार के सहज स्वभाव बन गये। सौम्यता और ऋजुता के वे एक असामान्य साधक थे। उन्होने अपनी असामान्यता को सामान्यता के अवगुण्ठन मे सजाकर महानता को सादगी विनम्रता और निरभिमानता से सजाया। उनका जीवन सामान्यता की असामान्य साधना रहा। कही भी अहम् और स्पृहा का भाव उनमे उत्पन्न नहीं हुआ। सारे कार्यो मे आत्मगोपन ही प्रकट हुआ। उनके सम्पर्क और सान्निध्य मे जो आया उन्होने ही उनकी असामान्य ऋजुता, आत्मीयता और महानता का अनुभव किया। उनकी सहज सामान्यता मे ही असामान्यता स्वत ही व्यक्त हुई। श्री भेरूदानजी छलाणी का समग्र जीवन और दर्शन ईसावास्य उपनिषद् के मत्र से अनुप्राणित था मत्र

> इशावस्य इदम् सर्वम् यत्किञ्च जगत्या जगत।
> त्येन त्यक्तेन भुजीथा! मा गृध कस्यस्विद् धनम्।।

व्यक्ति नही, एक सस्था थे

■ मूलचन्द नौलखा ■

> जिण दिन जोगी जलमियो उण दिन हुयो आनन्द।
> सदेह स्वर्ग सिधारग्यो नामी भेरानन्द।।

मरूधरा के सपूत प्रातस्मरणीय पूज्य श्री भरूदानजी छलाणी समाज मे शिक्षा, सेवा एव सच्चाइ की त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले सेवानिष्ठ सौजन्य मूर्ति निष्काम कर्मयोगी शुद्धि और कौशल के प्रतीक थे। आपका सम्पूर्ण जीवन उत्तम आदर्श, उदात्त सिद्धाता एव शाश्वत मूल्यो के प्रति समर्पित था। सरलता उदारता स्पष्टवादिता एव समर्पण के प्रतीक के रूप मे आप चिर स्मरणीय थे। समाज के हित चिन्तक साहित्य उपासक एव बहुआयामी व्यक्तित्व उनमे देखा जा सकता था।

माथे पर भगवा रग की राजस्थानी पगडी एव साधारण खादी का आधी बाजू का कमीज खादी की ऊची धोती जैसा देशी परिधान एव चेहरे पर गाभीर्य मुस्कान व ओज की त्रिवेणी। जीवटपूर्ण फक्कड़ स्वभाव विनोदी, धुन के धनी कठिन परिश्रमी कर्त्तव्यनिष्ठ परन्तु उनका असली परिचय तो उनके जन कल्याणकारी काय है।

आप गाधीवादी एव सर्वोदयी सिद्धान्तो के पक्के समर्थक थे, पक्षधर थे। आपका श्री गोकुल भाई भट्ट के साथ अच्छा सम्पर्क था। श्री भट्टजी कई बार आपके गाव घर दियातरा आकर ठहरा करते थे। काफी विचार विमर्श होता। खादी से विशेष लगाव व प्रेम के कारण आप राजस्थान खादी मदिर से जीवनपर्यन्त जुड़े रहे। आप लम्बे समय तक खादी मदिर बीकानेर के अध्यक्ष रहे। आप ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान बीकानेर के भी सदस्य रहे।

आपने विधानसभा के लिए एम एल ए का चुनाव स्वतन्त्र रूप से लड़ा। आप अपने गाव दियातरा के निर्विरोध सरपच रहे और पचायत समिति श्री कोलायत के प्रथम प्रधान निर्विरोध रूप से चुने गये।

आपने अपने गाव मे प्राइमरी स्कूल एव सैकण्डरी स्कूल के लिए भवन बनाकर शिक्षा के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया। आप समय समय पर या यू कहू कि सदैव गाव एव पड़ोसी गावो के निर्धन एव जरूरतमद छात्रो का पर्याप्त वस्त्र बिस्तर पुस्तके फीस रहने की सुविधा एव खाने पीने की व्यवस्था अपने घर पर करते उसी घर मे जिस घर मे आप परिवार सहित रहते। अपने साथ अपने घर गरीब छात्रो को रखकर सब तरह की सुविधा प्रदान करना पढ़ाना सब तरह का खर्च वहन करके—यह बहुत बड़ी बात है। बच्चो का विद्यार्थियो को पितृतुल्य स्नेह प्रदान करना तो उनका स्वभाव था। भगवान के घर का दिया हुआ वरदान था।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी इस महापुरुष की खेती मे तो बहुत ही रुचि थी। आपने इस पिछड़े एव बारानी धरती में सबसे पहले खेती के लिए ट्रेक्टर लाकर क्रान्ति पैदा की एव सिचाई के लिए खेत मे ट्यूबवेल लगाया। आप खेती के कार्यो मे नयी नयी तकनीक का प्रयोग करते थे। लोग उन्हे आदर्श किसान भी कहा करते थे।

आपने जीवनपर्यन्त सत्य अहिसा के सिद्धातो का पालन किया। आपने गरीब अमीर छूत व अछूत मे भेद नही समझा। आप सादा जीवन उच्च विचार की मूर्ति थे। आपको आडम्बररहित जीवन पसन्द था। आपने समाज मे व्याप्त कुरीतियो के उन्मूलन के लिए भी सघर्ष किया। आप मृत्युभोज एव पर्दा प्रथा को अच्छा नही समझते थे। आपने अपने पुत्रो का दहेजविहीन विवाह करके एव अपने परिवार से पर्दा प्रथा हटाकर एक उच्च आदर्श स्थापित किया।

आपके व्यक्तित्व एव कृतित्व पर सिडा गाव निवासी सन्त श्री नारायणदासजी महाराज की अमिट छाप थी। आप इनके परम भक्त रहे एव आपके प्रत्येक कार्य में इनका आशीर्वाद रहा।

आपकी प्राकृतिक चिकित्सा मे बड़ी आस्था थी। आपने प्राकृतिक चिकित्सा के कुछ सिद्धात भी प्रतिपादित किये। स्वमूत्र पान मिट्टी की पट्टी धोरो की बालु फाकना

आदि प्राकृतिक चिकित्सा के उपाय उन्होने अपने शरीर पर लागू किये। नाक एव लिग मे साने की बाली धारण करके भी वे रोग का इलाज किया करते थे।

गो सवा मे आपकी बहुत ज्यादा रुचि थी। अलग अलग नस्लो की गाया बछड़ो को रखना, पालना उनका एक शौक था। आप अनाथ पशुआ से भी इतना ही मोह रखते थे जितना निजी पशुओ से। कई बार वे अनाथ बीमार पशुओ को घर बाड़े म लाकर उनका इलाज करवाते, चारे पानी की व्यवस्था करवाते। गोवश वर्धन हेतु अच्छी अच्छी नस्ल के साडो का भी पालन पोषण करने म गहरी रुचि रखते थे। सदैव अकाल के दोरान आप अपने गाव व आसपास चौखले के गावा के मवेशियो की रक्षा व चारे की व्यवस्था के लिए नि शुल्क गो शाला खुलवाकर गाया मवेशियो की तन मन, धन से सेवा करते थे।

चौखले मे अकाल पर अकाल पड़ते परन्तु चौखल के रहने वाला को कभी भी यह चिता नहीं हुई कि अब क्या होगा। आपके रहते सब निश्चित थे। सोचते कि सब वक्त पर ठीक होगा। भगवान नहीं बरसेगा तो भैरू बरसेगा। आपने कभी किसी को विचलित नहीं होने दिया। चौखले के इतिहास मे आपके जेसा आपके जैसी चमक वाला व्यक्ति कम ही होगा।

उन दिशाआ को शत शत नमन।
जिन दिशाओ मे पड़े तुम्हारे चरण।।

उनका जीवन एक खुली किताब था। मन के साफ ओर स्पष्टवादी एव सुलझे हुए इन्सान थे। उनके अपने सिद्धात थे विचार थे ओर जीने का अपना अनोखा तरीका था। उन्होने अपना व्यापार, व्यवसाय अपने बलबूते पर बराबर सभाला सवारा। उनम स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करने की क्षमता थी। वक्त पर तुरन्त निर्णय लेने मे कोई झिझक नही रखते। वे आगे से आग कुछ करने की धुन लिये रहते। परिवार म तड़ ओर फड़ देखना पसन्द नहीं था।

आप किस्मत के दास नहीं थे। कर्म के स्वामी थ। उन्ह अधिक बोलना पसन्द नहीं था किन्तु बड़े प्रेम के साथ सभी की बात सुनते थे। उनकी मान भाषा मे ही समझता था और वो यू थी—

कर्म मेरा अच्छा हे तो किस्मत मेरी दासी हे।
दिल मरा साफ है तो घर म मथुरा कासी हे।।

आपका हमारे नौलखा परिवार के साथ अनन्य अगाध प्रेम था। हमारे परिवार को उन्होने सदैव अपना परिवार समझ कर प्यार दिया। हमारे परिवार के रग रग मे उनके प्यार का, उपकार का खून भरा पड़ा है। आज हम उनक बताये हुए रास्ते पर चलकर आग विकास का रास्ता तय कर रहे है। वे हमारे नौलखा परिवार के मर्मीहा

थे गुरु थे। वे हमारे लिए प्रेरणा के रथ के घोड़े थे। उनके द्वारा किये गये उपकार हमारे परिवार पर गिनाये नहीं जा सकते।

> गिन जाये मुमकिन है, सहरा के जर्रे,
> समदर के कतरे, फलक के सितारे।
> मगर तेरे उपकार ओ मेरे जीजा,
> ना गिनती में आये कभी भी हमारे।।

उनके साथ हर बार की मुलाकात उनके अनुभवों में से कुछ न कुछ नई प्रेरणा और शिक्षा गांठ बांधकर ले जाने को प्राप्त होती रही।

आपकी जीवन यात्रा के पड़ाव जन साधारण को हम सबको प्रेरणा देने एवं राह दिखाने वाले थे। आपसे मिलने का एक ऐसा आनन्द था जिसे गवा देना गलत होता था।

उन्होंने जीवन को जिया और उसकी सम्पूर्णता के साथ जिया। श्वास का कष्ट साध्य रोग उनके शरीर को तो सताता रहा पर उनके मन को व्यथित नहीं कर पाया। कभी भूले से भी उन्होंने अपने मुख को मन का दर्पण नहीं बनने दिया।

सोम्य एवं शांत प्रकृति मरुधरा के उज्ज्वल रत्न पूज्य श्री भैरूदानजी को आतिथ्य सत्कार में अत्यन्त हर्ष व आनन्द आता था। शुभ कार्यों में सहायता देने में वे बहुत प्रफुल्लित होते थे। ऐसे उदारमन, सेवा व शक्ति के संगम का कवि मैथिली शरण गुप्त ने यूं ठीक ही कहा है—

> मान लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
> मरो परन्तु यो मरो कि याद जो करे सभी।
> हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिये
> मरा नहीं वही जो कि जिया न अपने लिये।।

वे पढ़े लिखे जरूर कम थे लेकिन ज्ञान और अनुभव इतना अधिक था कि उनके सामने अच्छे पढ़े लिखे सब बौने दिखलाई पड़ते थे। फिजूल खर्च से वे कोसों दूर रहते थे। सरल स्वभावी, मितभाषी, मिलनसार और गहरे विचारवान व्यक्ति थे आप। आप दियातरा गांव के भामाशाह थे। उनके यहां उपस्थित होने वाला आदमी कभी भी खाली हाथ नहीं लौटता था। करुणा की साक्षात् मूर्ति थे। वे मन वचन, कर्म से शुद्ध थे। हमेशा धीमी आवाज में वार्तालाप करते थे। वचन और कर्म से किसी को भी दुःखी करना उनके स्वभाव में कतई नहीं था। नेकी कर दरिया में डाल वाली कहावत उनके जीवन में चरितार्थ थी। मरु प्रदेश का दियातरा गांव ऐसे मानव मणि महान् विभूति का निवास स्थान धन्य है, धन्य है।

वे चिन्ताओं और दुःखों में से भी सुख के क्षण ढूंढ लेते थे और फिर वही चिर परिचित मुस्कराहट उनकी मुख मुद्रा पर नाचने लगती थी। उनके विचारों का अनुमान

ल ा लेना सहज शक्य नही था। व भाप लेते थे पर भापे नहीं जा सकते थ। सच तो यह है कि वे एक एसी किताब की तरह थ जिसे पूरी पढ़ लेने का दावा कोई कर नही सका। एक बार और—उनके प्रति जितना भी लिखू कम है—

व महापुरुष थे। लोह पुरुष थे।
एक अद्भुत प्रेरणा के स्रोत थे।
समाज क स्तम्भ थ।
दियातरा गाव के गौरव थे, नर रत्न थे।
मेरे तो वे जीजा ही नही गुरु भी थे।
जन सेवा के मसीहा थे।
खादी के पुजारी थे।
उदारता की प्रतिमूर्ति थे।
चौखले के सजग प्रहरी थे।
प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर थे।
समन्वय की अनूठी मिसाल थे।
सेवा एव सौजन्य क प्रतीक थे।
प्रखर प्रतिभावान थे।
चौखले का चानणा थे।
अविस्मरणीय परम पूज्य थ।
प्रात स्मरणीय सदैव स्मरणीय थे।
स्वभाव म समता की सौरभ थे।
ता दीनो के दर्द निवारक स्तम्भ थे।
समाज सुधारक थे।
प्रगति पथ के पथिक थे।
आदर्श एव पूज्य थे।
व्यक्ति नही एक सस्था थे।
अपने म बेजोड़ थे।

आपका आदर्श सदा हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा। जो भी कार्य करे उसम श्रेष्ठता प्राप्त कर, आपकी यह प्रेरणा ही हमारा लक्ष्य हो। उनके बताये मार्ग पर चलने का सकल्प लेते हुए मुझे यह प्रसन्नता है कि प्रिय बन्धु श्री भवरलालजी एव चि फूसराज आपके दोनो सुपुत्र उनकी यश पताका को फहराने म अग्रणी होकर कार्य कर रहे है।

फूला सागे निभा सके बे मिनख माफला मिलसी।
काटा मागे जका निभाल बे सान स्यू तुलसी।।

अत म—हे मानस के ज्यातिपुज लौह स्तम्भ तुझे शत् शत् सलाम। कोटिश सलाम।

आख्या मे आव आसूड़ा म लिख न सकू और आगे।
माफ करीज्यो हुई जो गल्ती आ हे बडी श्रद्धाजलि थान।।

मगरे का प्रथम प्रधान

■ उम्मेदसिह भाटी ■

मै उनसे पहले पहल मिला वह दिन था वर्ष 1962 का जब श्री चन्द्रसिह भाटी चान्दी कोलायत पचायत समिति के तत्कालीन निवर्तमान प्रथम प्रधान श्री भैरूदानजी छलाणी दियातरा से प्रधान पद का कार्यभार लने जा रहे थे। मै पचायत समिति कार्यालय म ही मिला था। उससे पहले मै गाधीवादी दर्शन व उनके क्रिया कलापा का कट्टर आलोचक था। किन्तु मै क्या देखता हू कि अत्यन्त ही नीचे से ऊपर तक सादगी से ओतप्रोत, विनम्रता और शालीनता मेरे सामने मूर्तिमत होकर अपने साकार रूप मे खड़ी है। नहीं नहीं यह दिखावटीपन नहीं हो सकता। अहकार लेश मात्र नही। राजनीतिक पद लिप्सा का बिलकुल अभाव। मै उन्हे देखता रहा। वह शुद्ध खादी की धोती एव कुर्ते म थे। भाषा ठेठ देशी मगरा क्षेत्र की। अगर किसी को अहिसा को साकार रूप मे देखना हो तो वह भैरूदानजी का देख मात्र लेता उसकी शका का समाधान हो जाता।

उन्होने केवल समय सुविधा के अनुसार या युग आवश्यकता के रूप म नहीं अहिसा व गाधीवादी दर्शन को व्यावहारिक जीवन म ढाल लिया था। उसके बाद दियातरा मे उनके निवास स्थल पर मेरा कई बार जाने का काम पड़ा। तब मेरा जैन दर्शन पर उनसे वार्तालाप हुआ। उनकी आध्यात्मिक क्षेत्र मे गहरी पैठ को देखकर मै उन पर गर्व करने लगा और उस शुद्ध सच्चे गाधीवादी को मै सत ही मानता था।

इसके अलावा उनके दो बड़े गुणो की पहचान मुझे तब हुई जब उन्होने दियातरा म कोलायत तहसील का प्रथम ट्यूब वैल चालू किया। उसमे उन्हे बहुत कष्टों का सामना करना पड़ा। वह साठ व सत्तर का दशक था तब ग्रामो मे तकनीक

का इतना अधिक प्रसार नहीं हो पाया था। अत समय एव अत्यधिक धन खर्च हुआ। मगर वह अति निष्ठावान दृढ़ विचार शक्ति के धुन के धनी थे। अन्तत सफल होकर ही रहे। इसके पहले भी वे उन्नत बीज प्रणाली पर अपनी शोध जारी रख हुए थे। इस पर उनके सम्बन्ध मे पूरे मगरे के क्षेत्र म किस्से मशहूर थे। एक व्यापार प्रधान समाज म जन्म लेन क बावजूद अपनी धरती की जरूरत पर उन्होने किसान व उससे सम्बन्धित कृषि पर अपना ध्यान लगाया और ध्यान ही नहीं उन्होने पूरा जीवन ही खपा दिया। मुझे उन्होने उन्नत कृषि बीजो को किस प्रकार सहेज कर रखना चाहिए—यह भी विस्तार से बताया। इस सम्बन्ध मे उनका ज्ञान किसी पारगत किसान से इक्कीस ही बैठता था। उसके बाद मे जब मगरे के जगतसेठ कहे जाने वाले सुप्रसिद्ध अमोलकचदजी छलाणी के पुत्र पूनमचद के सरपच के चुनाव समय पर उनसे मिला तो बदली हुई परिस्थितियो मे काग्रेसियो के पतनशील सत्तामोह क चरित्र पर उन्हे दु खी पाया किन्तु उनक गाधीवादी चरित्र मे कोई बदलाव नहीं आया। वे अन्त तक शुद्ध गाधीवादी बने रहे।

आखिरी बार मै जब उनसे मिला। तब वे बीमार थे। उनकी सेवा एक लड़की जिसका नाम पूर्णिमा (छलाणीजी की दोहिती) कर रही थी। वह जब हमे चाय देकर लौटी तो उन्होने बताया कि यह एम ए म पढ रही है। नारी शिक्षा क बारे मे तब उन्होने सविस्तार अपने परिवार क बारे मे बताया तो मै उस गृहस्थ सत के चरणो मे नतमस्तक हो गया। कभी मगरा क्षेत्र का तटस्थ इतिहास लिखा गया तो इस सत का नाम चद गिने चुने नामो म लिखा जायेगा। एक अनुकरणीय अनुपमेय चरित्र। ऐसा था वह अद्भुत व्यक्तित्व। उनक जाने से पुरानी पीढ़ी का वह गाधीवादी सत परम्परा का अतिम अवशेष भी उठ गया।

उन्हे शत शत नमन।

मेरे अभिभावक

■ इन्दुभूषण गोइल ■

आदरणीय स्व सेठ श्री भेरूदानजी छलाणी को मेरा शत शत प्रणाम। श्री छलाणीजी के बारे मे मेरी जानकारी सन् 1952 53 से हुई है। उस समय व मेरे पिताजी स्व बाबू रघुवरदयालजी गोइल के पास आते जाते थे। हमारे परिवार का ध्यानाकर्षण इस कारण से हुआ कि वे उस समय नाक म बहुत बड़ी व मोटी बाली

पहनत थे। मेरे पिताजी जिनको हम बाबूजी कहते थे, उन्होने श्री छलाणीजी का परिचय उस समय यह कहकर करवाया था कि वे उनके अभिन्न मित्र हैं। कोलायत तहसील की नाक है तथा ग्राम विकास के बारे में बहुत अच्छा सोच है, गांधीवादी है तथा भूदान आन्दोलन से जुड़े हुए है। घर पर जब भी आते बाबूजी के साथ कोलायत तहसील के गावो की समस्याओ के बारे मे विचार विमर्श करते। कोलायत मे मेला किस तरह से स्वच्छ व साफ हो तथा मेले मे आने वाले यात्रियो को शुद्ध भोजन कैसे उपलब्ध हो इस बारे मे विचार कर उसकी क्रियान्विति की योजना बनाई जाती थी। खादी मंदिर के कार्यकर्ताओ के सहयोग बीकानेर के सेवादल का सहयोग व छलाणीजी के सहयोग से कोलायत मेले के समय कोलायत की साफ सफाई व शुद्ध भोजन की उपलब्धता कराई जाती।

एक बार मै बाबूजी के साथ दियातरा गाव गया। उस समय बाबूजी ने बताया कि सेठ श्री छलाणीजी ने स्वयं के पैसे व जनता के सहयोग से एक स्कूल का निर्माण करवाया है जिसका उद्घाटन किया जायेगा। उद्घाटन के समय छलाणीजी ने बताया कि आस पास के 50 किलोमीटर क्षेत्र मे यह पहला विद्यालय है जहा छात्र छात्रा की पढ़ाई एक साथ होगी। उस जमाने मे गाव के लोग व शहरी लोग भी सह शिक्षा के पक्ष मे नहीं थे। लेकिन छलाणीजी का विचार था कि सह शिक्षा से ही छात्र छात्राओ का विकास होता है तथा आपस मे विचार विमर्श से ही उनके विचार खुलते है।

बाबूजी ने एक बार जानकारी दी कि छलाणीजी ने धुआ रहित चूल्हे का निर्माण किया है जिससे कि औरतो को धुए से बचाव होगा। ऐसा एक चूल्हा श्री छलाणीजी ने अपनी देख रेख मे हमारे यहा निर्माण करवाया और बाद मे ऐसा ही चूल्हा भाई श्री आसकरणजी द्वारा निर्मित करवाया। उस समय श्री आसकरणजी को उन्होने उन्नत चूल्हा धुआ रहित बनाने मे माहिर बना रखा था तथा श्री आसकरणजी गाव व शहरो मे जगह जगह इस उन्नत चूल्हे का निर्माण करते थे।

सेठ श्री छलाणीजी जब कभी बाबूजी के पास आते तो बाद मे मालूम पड़ता कि गाव से पैदल चल कर ही हमारे यहा आ गये है। वे ज्यादातर पैदल ही चलते थे। बाबूजी के पास एक बार उन्होने आकर मतीरो का उन्नत बीज जो उन्होने तैयार किया था, उसकी जानकारी दी तथा उन्नत मतीरे उन्होने हमे खिलाये जो उस जमाने मे खूब मीठे व रसीले थे।

कृषि क्षेत्र मे उन्होने बरसाती फसल के लिए बीकानेर इलाके मे जो ग्वार मोठ बाजरा होता था उसके उन्नत बीज तैयार किये जिससे कि किसानो को फसल ज्यादा मिले तथा दाम भी ज्यादा मिले। गो संवर्द्धन का काम भी उन्होने हाथ मे ले रखा था। दियातरा मे वे अच्छे नसली सांड लेकर आये जिससे कि उस इलाके की गाय की अच्छी नस्ल तैयार होती थी।

श्री छलाणीजी खादी मन्दिर के सस्थापक सदस्य थे। 25 1 1973 को वे सस्था के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मै बाबूजी के स्वर्गवास के बाद सस्था का (13 3 74) मन्त्री बना लेकिन सहायक मन्त्री का निर्वाचन छलाणीजी की अध्यक्षता के साथ हो गया था। खादी मन्दिर के मन्त्री बनने के बाद मेरा ओर छलाणीजी का सपर्क बहुत अधिक हो गया। बाबूजी के स्वर्गवास के बाद म उन्हे अपने बाबूजी के स्थान पर पाता था। उन्होने भी उसी स्नेह भाव से पितृवत् सरक्षण दिया। शुरू शुरू मे मेरे व सस्था के विशेष अधिकारी के बीच मे कुछ बातो को लेकर अनबन हो गई थी। विशेष अधिकारी का भी सपर्क श्री छलाणीजी स काफी था। उन्होने अपनी बात श्री छलाणीजी को कही होगी लेकिन छलाणीजी का तरीका बड़ा विचित्र था। उन्हाने कभी मुझस जानकारी लेते वक्त यह नही कहा कि उन्हे विशेष अधिकारी ने यह कहा है। वे अपने ढग से ही जानकारी लेत थे। विशेष अधिकारी न सस्था के बारे म कई स्थानो पर शिकायत की। भारत मे उस समय आपातकाल लागू था। ऐसे समय म उनसे कई समस्याओ को लेकर मिला। तब उन्होने मुझे एक उदाहरण दिया कि जगल मे बहुत सारे पेड़ होते है। तूफान आने पर कौन से पेड़ उखड़ते है उसकी जानकारी तुम्हे है क्या? मैंने कहा—'नही!' तो उन्होने कहा कि झझावत के समय वे पेड़ ही उखड़ते है जो अन्दर से खोखले होते है। इसी तरह अन्दर स जो इसान खोखला होता है वह दुनिया की समस्याओ का सामना नही कर पाता, भाग लेता है पागल हो जाता है या आत्म हत्या कर लेता है।

इसी प्रकार सस्थाए भी एक इसानी रूप है। अगर व अन्दर से कमजोर नहीं है तो कितने भी झझावत व परशानी आये डरने की आवश्यकता नहीं है। उनका डट कर सामना किया जाये। माकूल जवाब दिया जाय। इस बात को मैने अच्छी तरह से आत्मसात कर लिया तथा उसके बाद सस्था मे जब कभी भी परेशानी आई, उसका मुकाबला किया।

बाबूजी व अम्मा के स्वर्गवास के बाद म और मेरा भाई बहनो की शादी के लिए चिंतित थे। इस समस्या को लकर मे उनसे एक बार मिला तो उन्होने कहा—दुनिया म कोई लड़का लड़की बिना शादी के नही रहता है, जोग सजोग, देर सवेर होता है यह अलग बात है। अपनी बहनो का भी जोग सजोग आने पर शादी हो जाएगी। इससे मुझे व हमारे परिवार को आत्म बल मिला तथा समय आने पर बहनो की शादी हो गई।

सस्था म मेरे व मेरे वरिष्ठ कार्यकर्ताओ व सस्था के ट्रस्टियो के बीच कुछ बातो को लेकर मतभेद हो गये थे उस समय छलाणीजी ने उनकी पूरी बात सुनकर मुझसे बात की तथा मुझस भी पूरी जानकारी ली उसके बाद सस्था की साधारण सभा मे सदस्यो को कहा गया कि व अपनी बात रखे फिर मुझे कहा कि आप भी अपनी बात रखे।

छलाणीजी ने अध्यक्षता के नाते दोनो को सुनकर उचित निर्णय दिया कि सदस्य लाग व वरिष्ठ कार्यकर्ता मर्यादा मे रहकर कार्य करे तथा मन्त्री को भी मर्यादा मे रहकर कार्य करना चाहिए तभी सस्था सही रहेगी व प्रगति करेगी। उस निणय क बाद उन्हाने सबको सामूहिक भोजन कराया तथा सभी के बीच मैत्री भाव पैदा करा दिया।

श्री छलाणीजी सन् 1972 से 89 तक अध्यक्ष रहे। स्वास्थ्य खराब होने के कारण से स्वय ने आगे चलकर अध्यक्षता का त्याग किया। शुरू शुरू मे वे सस्था की मीटिग मे गगाशहर से पैदल ही आते जाते थे। हम सस्था की आर से गाड़ी भी देत तो वे इन्कार करते थे कि मै अभी पैदल चलने मे सक्षम हू। जब तक कूल्हे की हड्डी नहीं टूटी थी तब तक वे ज्यादातर पैदल ही चलत थे। उनकी अध्यक्षता मे सस्था ने बहुत विकास किया है। उद्योग परिसर के छ प्लाटो मे केवल एक प्लाट मे छोटी सी बिल्डिग बनी हुई थी। जबकि उनकी अध्यक्षता के अन्त तक सभी प्लाटा म विशालकाय भवन निर्माण हुए है। ग्रामोद्योग मे साबुन ग्लेज पाटरी की शुरुआत इनके मार्ग दर्शन म हुइ।

सस्था के लिए ऊनी फिनिशिग प्लाट की आवश्यकता थी। इसमे कुछ सदस्यो का विचार भेद था कि ऊनी फिनिशिग प्लाट नहीं खरीदा जाय व चलाया जाये पर छलाणीजी का नेतृत्व था कि खादी मे विकास होना चाहिए और उसके लिए जो भी आवश्यक कार्य है वे किये जाने चाहिए। आपकी अध्यक्षता काल मे सस्था द्वारा गरीब बच्चा व कार्यकर्ताआ के बच्चो के लिए मानव भारती स्कूल घड़सीसर गाव म सन् 1982 मे स्थापना की गई। इस स्कूल मे भी सह शिक्षा रखी गई।

छलाणीजी ने गाव दियातरा मे अपने कृषि कार्य पर बाबूजी की याद मे एक गाल झोपड़ा बनाया तथा उन्हाने कहा कि इसमें बाबू स्व श्री रघुवरदयाल गोइल से सबधित स्मृति चिह्न व ग्रथ रख जाए। लेकिन सजाग स ऐसा नहीं हो सका। कृषि फार्म पर ही बाद मे एक आपन ट्यूब वैल खोदा गया। इसमे मेरी और उनकी राय मे कुछ फर्क था, मैने कहा आज के जमाने म ओपन ट्यूब वैल सही नहीं रहता है पाईप वाला ट्यूब वैल लगाया जाए। उनका कहना था कि ओपन वैल की सफाई हा सकती है तथा खुदवाने मे लोगा को राजगार प्राप्त हाता है। गाव म रोजगार कैसे बढ़े इस बात को लेकर वे हमेशा चितन करते थ। गाव म उनके घर पर बाहर स कोई भी मिलने वाला पहुच जाय तो पूरा आतिथ्य सत्कार करते थे। भाजन व नाश्ता कराकर ही विदा करते थ।

श्री छलाणीजी ने सस्था को 27 4 88 को छोड़ दिया था लेकिन सस्था ने उनक स्वर्गवास तक उनका ही अध्यक्ष माना तथा उपाध्यक्ष श्री मालचन्दजी हिसारिया को कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया लेकिन छलाणीजी की मौजूदगी मे ही सस्था की बैठक हाती थीं। अगर वे बीकानेर नही आ सकते तो दियातरा मे मीटिग हाती थी।

सस्था को कठिन क्षणो मे कभी भी विचलित नहीं होने दिया। सदा धैर्यशील व दृढ़ रहे। मुझे भी धैय व विवेक सम्पन्न बनाये रखा। उनकी अध्यक्षता म प्रगति के आकड़ उल्लेखनीय है—

खादी मन्दिर, बीकानर — उत्पादन बिक्री आकड पचवर्षीय तुलनात्मक

बिक्री	74 75	79 80	84 85	89 90	उत्पादन	74 75	79 80	84 85	89 90
खादी बिक्री	48 25	37 85	102 05	125 00	खादी उत्पादन	36 50	46 90	92 25	120 90
ग्रामो बिक्री	4 35	20 05	68 50	100 40	ग्रामो उत्पादन	3 80	22 85	62 25	87 30
कुल	52 60	57 90	170 55	225 40	कुल	40 30	69 75	154 50	208 20

श्री छलाणीजी की अध्यक्षता मे सन् 1974 75 से वर्ष 1989 90 तक सस्था की वार्षिक विकास दर 10% रही।

सन् 74 75 का उत्पादन 40 लाख 15 वर्षो मे बढ़कर 210 00 लाख, 5 गुना वृद्धि हुई है तथा बिक्री म भी 74 75 की तुलना मे वर्ष 89 90 तक 4 गुनी वृद्धि होकर 225 लाख तक हो गई।

सस्था स्थापित के स्वर्ण जयती काल इतिहास मे स्वर्ण युग था।

गृहस्थ सन्यासी

▪ बनेसिह बीदू ▪

या याद ये आसू

सन् 1939 का भयकर अकाल था। दियातरा से छ किलोमीटर दूर 'कन्या बधा' नाम से अकाल राहत का काम चल रहा था। महाराजा श्री गगासिह के समय की बात है। बध पर हजारो स्त्री, पुरुष और बच्चे काम कर रहे थे। छोटे छोटे दुध मुहे बच्चे भी अपने मा बाप के साथ थ। कोई सयोग की बात कि हमारे गाव दियातरा म सेठ श्री भैरूदानजी के पिता श्री हजारीमलजी का ब्रह्मभोज कराया जा रहा था। सेठजी के चाचा श्री अभालखचन्दजी छलाणी भी मगर का राजा नाम से जाने जाते थे। व ब्रह्मभोज की व्यवस्था कर रहे थे। उनके कारोबार के सभी आस पास के गावो को न्योता दिया हुआ था। उस दिन सवेरे से लोग भारी सख्या म आते जा रहे थे और भोजन स तृप्त हो होकर लौटते जा रहे थ। करीब दिन के बारह बजे कन्या बध के लोग बाल बच्चो सहित काफी सख्या म बिना न्योता दिये आ गये। गाव के प्रबन्धक

और कार्यकता उस भीड़ से घबराकर अमोलखचन्दजी के पास पहुचे। व भी हालात देखकर अवाक् रह गये। उनके मुह से तुरन्त यही निकला कि भैरू का बुलाओ। आजकल जो पुराना घर मुन्नीलालजी का हे उस म स निकल कर भैरूदानजी मोक पर पहुचे।

वह क्षण था जब मैन सेठ भैरूदानजी को पहली बार देखा। मेरी उम्र सात आठ साल की थी पर उस क्षण भैरूदानजी का स्वरूप और बिना न्याती उस भीड़ का स्वरूप मेरी आखो मे आज सन् 1998 म भी लिखत समय ज्यो का त्यो उतर आया है मानो मै सन् 1939 की वह रील देख रहा हू। म अभी देख रहा हू कि सिर पर सफेद दुपट्टा बधा हुआ श्याम वर्ण मुह पर चेचक के दाग, लम्बी पतली काया कध कुछ आगे झुके हुए एक सपाट धीमी बोली और मधुर मुस्कान के साथ सेठ अमोलखचन्दजी का बुलाया हुआ भैरू आया। उसने भी भीड़ क हालात देखे। व्यवस्था करने वाले सब तरह तरह की बात कर रहे थे और ओर उधर दूर स उन भूखे अधनगे मजदूरो के मुह मे आवाजे आ रही थी— सेठ सा ब। म्हे सिगळा लुगाई टाबरा समत रात भर सू आधा भूखा अर निरण काळज (यानी खाली कलेजा) आप रै दरबार म आया हा। आपरै नाव (नाम) सुण के अठे आया हा। आप पितरीजग (पितृ यज्ञ) कर रया हो। आज जिमाय कर (भोजन कराके) म्हारी भूख मेटो (मिटाओ)। सेठ सा म्हे मगता कोनी छिनम रै काळ रा कुटीजियाड़ा (मारे हुए) अधमरिया भूखा माणस हा—किरपा करौ सेठा किरपा करौ।

मै एक तरफ भैरूदानजी को देख रहा था और दूसरी तरफ उस अधनगी भूखी भीड़ का जबरदस्त रोना चिल्लाना—करळाना सुन रहा था। मै सात आठ साल का बनसिह आज उसी गाव का प्रधानाध्यापक उस समय बड़ी आतुरता के साथ निगाहे गाड़े देख रहा था और सोच रहा था कि निर्णय देने के लिए बुलाया गया भैरू क्या निर्णय देता है? कुछ क्षण गुजरे होगे कि भैरू का फैसला सुनने का मिला— इया सिगळा ने चोखी तरया (अच्छी तरह) बैठा के चाखी तरया जीमाय दौ। अमोलखचन्दजी ने पूछा— सामान कितना है? भैरू का जवाब मिला— कन्दोई (हलवाई) अठइज (यहा ही) है काई बात की चिन्ता मत करो। इतनी बात उन भूखे मजदूरो के कान म गई तो एसे खुश हुए जैसे पानी स बाहर निकाली तड़पती मछली को वापस पानी मिल गया हो—जीने का सहारा मिल गया हो।

मैने भी उस क्षण पहली बार सेठ भैरूदानजी छलाणी के बाहरी और भीतरी व्यक्ति को देखा सोचा समझा और इन पक्तियो को लिखते हुये क्षण तक भूल नहीं सका। भूख से व्याकुल उन प्राणियो को सब को पक्तिया बनाकर बैठाया गया। भरपेट भोजन और पानी देकर तृप्त किया गया। सेठजी की वाहवाही और जै जैकार की ध्वनि स भोजन स्थल गूज उठा और वापस वह भीड़ कन्या बधे की आर मुड़ गई। कुछ लोग मूक आशीर्वाद देकर हाथ जोड़कर सिर नीचा करके प्रणाम करके चले गये। आज भी सेठ भैरूदान छलाणी की मेरे जीवन म पहली पहचान तथा उन भूखे

न्ग मजदूरो का दृश्य और उन भूख बच्चो के करलाने की आवाज आदि को याद करके इस घटना को लिखते समय मेरी आखो मे आसू आगये। जब करुण दृश्य का वेग शान्त हुआ तब सभल कर फिर आगे लिखना शुरू किया।

आगे चलकर दियातरा की स्कूल का प्रधानाध्यापक भी कई वर्ष रहने के कारण श्री भैरूदानजी के साथ मेरा सपर्क बहुत निकट का और बहुत सक्रियता से उनकी गतिविधियो से जुड़ा रहा। अत अत्यन्त अतरग क्षण उनके साथ मैने गुजारे थे। ग्राम सुधार, परस्पर व्यवहार, कर्त्तव्यपालन, धर्म, दर्शन आदि अनेक सदर्भो मे मेरी यादगार उनके साथ जुडी हुई है। मै आज भी कई बात उनके बताये अनुसार अपने जीवन मे निभाने की कोशिश करता हू इससे मेरा जीवन अच्छा बना है—ऐसा मै महसूस करता हू। मै मन ही मन उन्हे आदर्श गुरु मानता हू।

बोलने का लहजा

वे धीरे बोलते थे, सक्षेप मे बात कहते थे। जिस किसी से बात करते थे तो पहले धीरे से मुस्काते, फिर सार रूप मे थोड़ा बोलकर बात समझा देते। मेरे से तो जब भी मिलते तो मुस्करा कर कहते आओ बनजी। उनके इस सबोधन और बोलने के लहजे मे इतना अपनापन और मिठास भरा होता था कि मै बहुत ही श्रद्धा भाव से उनको नमस्कार करके बैठ जाता।

उदाहरण लायक

केवल दियातरा ही नही बल्कि पूरे मगरा के क्षेत्र मे गावो के लोग अच्छे काम के लिए भैरूदानजी का उदाहरण दिया करते थे। मुझे आज भी याद है कि उनके अन्तिम दर्शन करने के लिए जो महिलाए और पुरुष आये थे उन सब के मुह से मैने सुना था कि सेठ भैरूदानजी के दर्शन देवता या महात्मा के दर्शनो के बराबर है।

जन्मजात गुण

मै अपने छोटे मुह क्या कह सकता हू फिर भी कहे बिना रहा भी नही जाता। भैरूदानजी मे जो भी विशेषताए थी, वे जन्मजात थी। उदाहरण के लिए उनकी विलक्षण बुद्धि और स्मरण शक्ति बड़ी गजब की थी। बड़े से बड़ा हिसाब वे कम्प्यूटर की तरह मुह जुबानी कर देते थे। मेरे बचपन मे उनका यह गुण देख कर मै दग रह जाता था। मुझे आज भी याद है, हजारीमलजी के गुजरने के बाद दान पुण्य करने के लिए लाखोलाई तलाई की खुदाई का काम शुरू हुआ। रेत डालने वाले लोगो को एक कढ़ाइ पर एक कौड़ी दी जाती थी। दिन भर काम हो जाने पर कौड़ियो को गिनकर उनके दाम धरकर प्रति सप्ताह रुपये चुकाये जाते थे। यह सारी गणना जब दूसरे लोग करते थे तो बहुत देर लगाते थे। लेकिन जिस दिन भैरूदानजी हिसाब करते, उस दिन सबका चुकारा इतनी फुर्ती से किया करते थे कि सब लोग दग रह जाते थे। उस समय मै यह सोचा करता था कि सेठजी पढ़े लिखे ज्यादा है इसलिए वे हिसाब जल्दी

कर लेते है। जब मै बड़ा हुआ तब मेरे समझ मे आया कि उनके पास कोई डिग्री नहीं थी। यह तो उनकी विलक्षण बुद्धि के कारण सभव होता था। उनमे ऐसे जन्मजात गुण थ जो केवल सीखने मात्र स नहीं आते।

प्राणिमात्र पर दया

सेठ भैरूदानजी के हृदय का प्रेम मानव मात्र क प्रति तो था ही किन्तु जीव मात्र के प्रति भी था। एक बार एक शादी की व्यवस्था म हम लोग पानी छिड़कवा रह थे, तालाब मे पानी कम था इस कारण पानी के साथ छोटे मोटे जीव भूमि पर पड़कर पानी सूखने पर मर जाते थे। ऐसा देखकर उन्होने पानी छिड़क्वाना ही बन्द करवा दिया और बोले— जीव मर रहे है, ऐसी व्यवस्था नहीं सही।

गाव ही परिवार

गाव के लोगा के साथ भी उनका प्रेम प्रगाढ़ था। किसी क भी घर पर कोई दुखद घटना हो तो तुरन्त पूछताछ करके स्वय जाकर या किसी को भेजकर हर तरह से उसकी मदद करते थे। आवश्यकता पड़ने पर केशर कस्तूरी, लौग आदि महगी वस्तुए भी बिना मूल्य लिए तुरन्त काफी मात्रा मे देते थे। यह बात उस समय की है जब दियातरा मे चिकित्सा का कोई साधन नही था। इस काम को वे प्रेम भाव, आदर सत्कार और सहानुभूतिपूर्वक करते थे यह उनका सहज स्वभाव था।

परिवार प्रेम भी कम नहीं

गाव और समाज तो उनके प्रेम म पगा रहता ही था लेकिन परिवार भी उनक प्रेम से सराबोर रहता था। उनके घर म उनकी धर्मपत्नी जिन्ह हम मासीजी कहते थे वे भी उनक हर काम और निर्णय का ज्या का त्यो स्वीकार करती थी। हमने कभी उनको विरोध करते हुए नहीं देखा। ऐसा ही स्वभाव उनके पुत्रो और पुत्रियो का हो गया था। आज भी भवरलालजी और फूसराजजी उनक पुत्र उनकी रीति नीति पर ही चल रहे हैं। बिल्कुल वैसे ही सरल नम्र और मिलनसार। इस प्रकार सामाजिक और धार्मिक कार्यो मे परिवार वालो का ढल जाना और नई पीढ़ी म आलोचना का भाव जाग्रत न होना भैरूदानजी के पारिवारिक प्रेम व श्रद्धा का ऐसा उदाहरण है जो टूटते बिखरत परिवार वाला के लिए सोचने समझने का विषय है।

गाव ही जीवन है—जीवन ही गाव है

मैने अपने विद्यार्थीजीवन म पढ़ा था कि भारत के ग्राम्यजीवन को समझने वाले दो ही व्यक्ति थे—साहित्य मे प्रमचद और राजनीति मे गाधी। मैने महादेवी वर्मा के सस्मरण भी पढ़े जिनमे घीसा' और उसके गाव का मार्मिक चित्रण पढ़ने साचने और समझने का मिला। टैगोर ने भी गाव नदी समुद्र और आकाश को आध्यात्मिक स्वरूप दिया। अपनी सात आठ साल की उम्र से भैरूदानजी छलाणी के जीवन को प्रत्यक्ष देखा तो मेरे मानस पर एक नये सोच और एक नई समझ का प्रभाव पड़ा। म

यह सोचने के लिए मजबूर हुआ कि वे सभी महापुरुष गाव के प्रति सहानुभूति और सोच जगाने मे तो सफल रहे किन्तु शहरा मे रहकर गाव की बात करना और गाव मे रहते हुये, उसके यथार्थ को भोगते हुये, गाव की जिन्दगी को जीने लायक बनाये रखना—इन दोनो बाता मे जमीन आसमान का फर्क है। और और फिर राजस्थान मे बीकानेर के सूखे भूखे, जलते तपते दूर दराज के गाव मे जलन और तपन के साथ तपस्या करने वाली तपस्वी ग्रामीण विभूति भैरूदान छलाणी के रूप मे मिली। इस व्यक्ति के लिए गाव ही जीवन था और जीवन ही गाव था। आसाम, बगाल और राजस्थान मे जिस व्यक्ति के और जिसके परिवार के इतने उद्योग, व्यवसाय और व्यापार चल रहे हो तथा जिसके जीवन मे शहरी जीवन का उपभोग करने की हर सभावना निश्चित हो किन्तु फिर भी उस व्यक्ति ने अपने निवास की कोई भूमि और प्लाट शहरा मे नहीं खरीदा तथा मरते दम तक अपने गाव की भूमि को नहीं छोड़ा, उस व्यक्ति को जीवनभर देखकर साहित्य व राजनीति के दिग्गजा से कुछ ऊपर उठकर मेरी श्रद्धा ऐसे ग्रामपिता भैरूदान छलाणी के चरणा मे नत मस्तक होती है तो कोई आश्चर्य नही। मेरी बात को प्रमाणित करने के लिए भैरूदानजी के जीवन की ही कुछ और प्रत्यक्ष झलकिया लिखना चाहता हू।

गाव मे प्राय तालाब और बावड़िया सूख जाते थे, कुए का पानी भी साठ पैंसठ पुरुष यानि 350 400 फीट गहरा था। तब गाव के कुछ सम्पन्न लोग सेवा भावना से सभा करके सारे गाव को उचित कीमत पर पानी पिलाने का प्रबध करते थे जिसको पिआई तेहना कहते थे। उसमे भैरूदानजी सबसे आगे होकर सबको बुलवाते थे। उस सभा मे दियातरा के अमालखचन्दजी, भैरूदानजी रामूरामजी कुम्हार, मन्दरूपाराम कुम्हार जलालखा तेली, रतनाराम मेघवाल, सावताराम कुम्हार, *लागीदानजी चारण और गाव के भोगता भभूतदानजी, गगादानजी, आईदानजी आदि* के साथ अन्य बासा के मुख्य मुख्य पचलोग भी शामिल होते थे। ये सब एक पशु या एक पलिदा यानि घर पर पीने के पानी का आदा (दर) तय करके कुआ जातते थे। पूरी गर्मी मैं जब तक वर्षा होकर तलाई भर न जाए तब तक पानी पिलाते थे। कभी उस बधी हुई आदा के रुपये कुछ लोग उन पियाई करने वालो को नहीं देते या कम देते तो सेठ भैरूदानजी अपने घर से या अपनी पियाई की पाति में से अन्य हिस्सेदारो को देकर उनका हिसाब पूरा करवा देते थे किन्तु काम चालू रखते थे। इस काम मे कभी पानी की कमी आने पर शरारती लोग गालिया भी दे देते तो भी उन पियाई तेहने वालो को समझा बुझा कर शान्त रखते थे लेकिन इस काम को इतनी लगन और प्रयत्न से करते रहते थे जैसे कोई उनका निजी काम हो।

एक बार भयकर गर्मी मे कुए का पानी भी सूखकर कम पड़ गया। पानी की भारी किल्लत आ गई तब प्रत्येक घर के लिए घड़ा के भरने की सख्या बनाई गई। यह सिलसिला चल रहा था। उधर पियाई तेहने वालो के घर दो कलशियो वाला पानी का

गाडीणा (पानी ढोने का वाहन) लाने की बात उस म तय की गई थी। जब सेठ भैरूदानजी का गाडीणा तीन चार दिन बाद आया ता लोगा ने व्यग्य कसा कि देखो कइ लाग ता दा दा कलशिया के गाडीण ले जा रहे है और हम एक घड़ा भी पानी नहीं मिल रहा है। इस पर सेठजी के हाली ने स्पष्ट किया कि यह ता चार दिन के बाद एक गाडीणा लने आया था। इस बात पर लाभीदानजी भभूतदानजी और गगारामजी आदि गाव के मौगताओ ने तथा रामूजी कुम्हार आदि लोगा ने कहा कि गाडीणा भर दो क्योकि यह सही बात है और ऐसा तय भी किया गया है। परन्तु फिर भी कुछ लोग बकते रहे और विरोध करते रहे। इस बात पर भैरूदानजी का हाली खाली गाडीणा लिये हुए बिना पानी भरे उनके घर चला गया। भेरूदानजी का गाडीणा खाली चले जाने पर उनके सत्य के प्रति समर्थन म पियाई तहने वाले लाग भी नाराज हो गये। ऐसी अफवाह सारे गाव म बिजली की तरह फैल गइ कि कल से पियाई तहनी बद हो जायगी अब सब प्यासे मरेगे। तब ता बकने वाले भी भयभीत होकर चुप हो गये। उन बकने वालो को कई लोगो ने फटकारा भी। दूसरे दिन इसी बात को लेकर सारे गाव की बैठक हुई जिसमे गाव के सभी बासो से खास खास लोगो को बुलाया गया और पियाई तेहने वाले सात आठ सदस्या को भी बैठक म बुलाया गया। जब सब आ गये और बात चली तो सभी पियाई तेहने वालो ने एक स्वर से कह दिया कि हम पियाई नहीं तहेगे। जब यह तीन चार दिन बाद गाडीणा भरने की बात तय हुई थी तब फिर उसमे टोका टोकी और गाली गलौज क्यो करते है? चाहे बस्ती प्यासी मर तो मरे किन्तु हम पियाइ नहीं तहेगे। हम पर काई अहसान नहीं है हमने बस्ती के कहने पर पियाई तेही है।

यह सब बात होती रही। भेरूदानजी चुपचाप सुनते रहे कुछ भी नहीं बोले। अमोलखचन्दजी भी कुछ क्रोध म आ गये थे और पियाई तेहने वाला की बात का समर्थन कर रहे थे। कुछ देर तक सब लोग चुप हो गये तब कुछ गाव वालो ने यही बात भैरूदानजी को ही सबोधित करके पूछा— सेठा आपरे घर री बात है, आप कई कैवा हो? तब भैरूदानजी बोले— आ तो कोई खास बात कोनी कोई कै दियो तो बीरे जसो अपाने नहीं हुवणा चइजे। इसा लोग तो आपरे मा बाप नेई गालिया दे दिया कर है जणे पानी वास्ते इता कै दियो तो बीरी गिनत नहीं करनी चइजे। पिआई तो चलानी ही है। जका रे घर म बैलगाड़ी कोनी जका बेसरतनिया (असमर्थ) है बे लोग और बारा पशु प्यासा मर जासी, सरतनवाला (सामर्थ्यवान) तो चेलासर (भाणेक गाव के कुए) सू, के (या) जोगी रे तालाब सू पानी ले आसी पण बेसरतनिया बापड़ा कई करसी?

इतनी बात सुनते ही सब के सब भैरूदानजी की तरफ आखे गड़ाकर बड़े प्रेम से देखने लगे। सबका चेहरा हरा हो गया। यह बात काफी पुरानी है जब कि मै छोटी उम्र का ही था पर मेने स्वय देखा भी और सुना भी।

जब जब हमारे इस क्षेत्र म गायो पर आफत आती लगता जैसे श्री भैरूदानजी पर ही आफत आ गई हो और वे उसके निराकरण के लिये नगे पैरो भाग पड़ते थ और अकाल से झूझने के लिये कमर कस लेते थे। आप स्वय अपने रुपयो से गायो के चारे पानी का प्रबन्ध कर देते थे। किसी सहायता की प्रतीक्षा नहीं करते। अपने मित्रो, दानदाताओ गो सेवा सघ जैसी संस्थाओ सरकार आदि स सहायता लेकर अकाल के समय तक चलाते। ऐसे कार्य प्रत्येक अकाल के समय जो इस क्षेत्र की भाग्य रेखा ही है, जीवन भर चलाते रहे। इस कार्य को अपने अन्तिम दिनो म जबकि कुल्हे की टूटी हड्डी की अपगता के कारण चलने फिरने म समर्थ नही थे शरीर भी अस्वस्थ था, फिर भी अपने कमरे म बैठे बैठे भी करते रहे थे। गायो के प्रति उनका प्रेम और उनके रक्षण का स्वभाव आत्मीय था। गाव के ही नहीं पूरे मगरे क्षेत्र के लोग उनके होते अकाल मे राहत के प्रति आश्वस्त रहते थे। उनकी सच्चे गो सेवक गो रक्षक की छवि और प्रतिष्ठा पूरे बीकानेर क्षेत्र म थी। लोग कहते थे गायो को बचायेगा—सेठ भैरूदान। भगवान तो रूठ गया कब वर्षा करेगा। भैरू तो बरसेगा।

एक बार अकाल के समय जैसलमेर, बाड़मेर की तरफ स बीकानेर गो सेवा सघ के गो शिविर म जाती हुई 100 125 पशुपालको की सैकड़ो गाय दियातरा आ गईं। वे भूखी प्यासी निर्बल थीं। चारा कही उपलब्ध नहीं था। बीकानेर पहुचने स पहले भूख प्यास स मरने की स्थिति खड़ी हो गइ। पशुपालको के पास चारा खरीदने को पैसे नहीं थे। सेठजी ने अपने गुव्वार खोल दिये और गायो को भर पेट दो वक्त चारा मुफ्त दे दिया।

गावो के बेसरतनियो के प्रति उनकी सहानुभूति गजब की थी। एक बार अकाल के समय मे (अकाल तो इधर के गावो की सुनिश्चित भाग्यरेखा है) चारा वितरण डिपो स बाहर के गाव वालो को भी चारा देने की शर्त पर गाव वालो म मतभेद हो गया। बाहर के गाव वाले दियातरा से तूड़ी (चारा) ले जाकर महगे भाव से बाहर बेचने लगे। गाव वालो ने उन्हे चारा देना बन्द कर दिया तब भैरूदानजी बोले—अरे बाहर के गावो की गाय भूखी मर जायगी। जैसे तैसे होता है—होने दो। गायो का जीवन तो बच ही रहा है। मै उस समय चारा वितरण की व्यवस्था म लगा हुआ था। यह सब कुछ देख रहा था सुन रहा था और सोच रहा था कि गाधी ने जिन हालात म अपने किन्हीं सदर्भो मे कहा होगा कि मेरा धर्म न्याय नहीं, करुणा है' तो वे सन्दर्भ मुझे नही मालूम लेकिन जिस भैरूदान की जिन्दगी म गाव ही जीवन था और जीवन ही गाव था उसके सोच और उसके निर्णयो म साफ दिखाई दे रहा था— मेरा धर्म न्याय नहीं है, करुणा है।[1]

वणिक कृषक

'गाव ही जीवन और जीवन ही गाव' अधूरी रह जाती यदि मै दो चार बात भैरूदानजी के कृषि ज्ञान के बारे में नहीं लिखता। मै प्राय खेती के बारे म कइ बार

कई तरह की बात पूछता रहता था। उन सब का वर्णन सभव नहीं है परन्तु चार पक्तिया म सकेत दना काफी हागा। उनका कहना था (उनके अनुभव क आधार पर) कि अपन यहा की जलवायु म बाजरी का बीज 1/4 किलोग्राम और ग्वार डढ या दा किलोग्राम प्रति बीघा से ज्यादा अपनी जमीन म ठीक नहीं है। चणक बाने का उचित समय वह हाता है जब सर्दी के कारण सुबह क समय मुह से भाप निक्ले। उससे पहले चणक बाने स वह लाभ नहीं मिलता जो मिलना चाहिये इत्यादि। इस प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान वे अपन साथ रहन वाला का बाटत रहत थ। उन्हाने खेती म आधुनिक मशीना का उपयोग भी करके दखा और दिखाया। अनुभव करने और कराने क लिए एक बार वे ट्रक्टर भी खरीद कर लाये लकिन थाड ही दिन बाद गाव वाला ने देखा कि ट्रेक्टर बेच दिया गया। मर पूछने पर जवाब मिला कि बैल बकार हा जायग। मन देखा कि भैरूदानजी मशीनी साधन रखते ता आसानी म रख सकत थ, क्याकि आपकी हैसियत हमेशा ऊची थी किन्तु उन्ह एसा पसन्द नहीं था। व तो स्वय गाये भैंसे, गाधा (साड), ऊट ऊटगाड़ा बैल बैलगाड़ा आदि पूरेजीवन भर रखते आय। ग्रामीण जीवन म पशुआ का पालन करना वे आदर्श रूप स तथा सिद्धान्त रूप स व्यावहारिक मानत थे। गाव व गाया का श्रीकृष्णगापाल भैरूदानजी को कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं हागी। गाव म खेत लेना तथा खुद खेती करना और करवाना नए उन्नत श्रेणी के बीज बा कर अधिक फसल प्राप्त करके फिर उन्ही बीजा को लोगा म बाटना और प्रचार करना उनका जीवनक्रम था। यदि भैरूदानजी चाहते तो शहर की तरफ कभी भी जा सकते थ। वहा हवेलिया बनाकर शहरीजीवन बसर कर सकत थे लेकिन उन्हाने ता गाव के जीवन रहन सहन वेशभूषा और भाजन आदि को ही पसन्द किया। उन्हाने अपने आराम के क्षणो के लिए या छुट्टिया बिताने के लिए आधुनिक फैशन के तौर पर किसी फार्म हाउस का निर्माण नहीं करवाया जिसे यदि वे चाहत तो कर सकते थ। पर उनकी तो रग रग म गाव बसा हुआ था।

आनन्दमय जीवन

सेठ भैरूदान छलाणी का जिस किसी ने भी प्रस्तुत किया उसने उन्ह गाव और गाया के केवल अकाल के दु ख दर्द का मसीहा बताया लेकिन उस व्यक्ति को गाव के सुख सन्ताष मौज मस्ती और गाव की हसी खुशी का सगा साझीदार पाया। दूर शहर म बैठे हुए गाव के जीवन का वर्णन और चित्रण करना कलम का खेल हो सकता है लेकिन शहरा को छोड़कर गाव के खेल कूद तीज त्यौहार और मनोरजन मे जीवन का आनन्द मानसिक रूप से स्वीकार कर लेना एक अलग बात हाती है। सेठ भेरूदानजी छलाणी के जीवन की यह झलक भी देखने लायक है। हमारे गाव म गणगौर का मगरिया (मेला) होता है। इस मगरिये म बैलगाड़िया ऊट घाड़े आदि वाहनो और पशुओ की दौड़ हाती थी तो सेठजी ने भी दो बैला की एक सुन्दर

आवाजदार बग्घी बनवाई थी। अपने परिवार के और अपने बास (मोहल्ले) के बच्चो को चढ़ाकर राजू चौधरी के खाड़ेतिपन (सचालन) मे दौड़ाया करते थे। हम बच्चे उसे बड़े आनन्द से देखते थे और आश्चर्य से कहते थे कि देखो–देखो सठो की बग्घी आई—दौड़ो–दौड़ो देखो देखो। इस प्रकार गाव के सुख मे सुखी और दुख म दुखी दियातरा का भरू जैसा व्यक्ति न साहित्य मे मिलेगा, न राजनीति मे। वह दियातरा क गाव की मिट्टी मे ही दिखाइ दिया था और उसी म विलीन हो गया।

गाव के जीवन का आनन्द मेले मगरिया और स्कूल क बच्चो की वालीबाल प्रतियोगिताओ आदि मे प्राप्त करना उनका स्वभाव था तो उससे ज्यादा आनन्द गाव के मतीरो को खाने खिलाने म उन्ह मिलता था बल्कि म तो यह कहूगा कि उन्ह खाने से ज्यादा खिलाने म आनन्द आता था। भैरूदानजी शहरो से बड़े बड़े लोगो को, नेताओ को और अधिकारियो को विशेष तौर पर दियातरा म बुलाते, लेकर आते और उन्हे भोजन मे बाजरी का खीचड़ा, बाजरी की रोटी, मोगरी का चूरमा सादा गुड़ का हलुआ, बेसन की रोटी, ग्वार फली की सब्जी, काचर की सब्जी गेहू की रोटी, दही आदि का भोजन बड़े चाव से कराते और उसमे उन्हे जो आनन्द और रसानुभूति होती थी उसका वर्णन नही किया जा सकता। भोजन के बाद मतीरे खिलाने मे उन्ह जो आनन्द आता था वह आनन्द तो दवराज इन्द्र को स्वर्ग मे भी नहीं आता होगा।

व्यजना का जवाब अभिधा मे

लेकिन एक बार मै उनसे अचानक पूछ ही बैठा कि आप दूसरो को बुलाकर, बाहर वालो को क्या खिलाते हो? क्या आप प्रसिद्धि के लिए एसा करते है? ऐसा व्यग्यभरा प्रश्न इस तरह के किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति से मै करता तो शायद वह सहन नहीं कर पाता और वह मेरे व्यग्य का जवाब अधिक तीखे व्यग्य मे देता लेकिन सेठ भैरूदानजी का जवाब व्यग्य के बदले व्यग्य म नहीं बल्कि अभिधा मे मिला—'प्रसिद्धि तो अपने आप हो जाये तो हो जाये लेकिन उससे तो कोई लाभ नहीं होता। आपस मे मेल मिलाप हो, भाईचारा बढ़े यह खास बात है। ये लोग भी गाव के सुखी जीवन और आनन्दमय जीवन को देखे और आनन्द लेवे तो यह बात उनके लिए नवीन बात है। इन शहर के लोगो को गाव के जीवन का असली आनन्द और मौज का सही पता तो पड़े। उस व्यग्य का जवाब सेठ भैरूदान क सीधे और सरल निश्छल शब्दो म पाकर आज तक यह सोच सोचकर हैरान हू कि आखिर वह व्यक्ति वास्तव मे कोई लौकिक प्राणी मात्र था या कोई अलौकिक अवतरण था। प्रसिद्धि तो अपने आप हो जाय तो हो जाय किन्तु उससे तो कोइ लाभ नहीं होता।'—इस वाक्य मे यथार्थ की स्वीकृति और आदर्श की अनुकृति का मणिकाचन सयोग कितने सरल और सहज रूप म प्रस्तुत हुआ है उस पर विचार कर करके मे आज भी आश्चर्यचकित हो जाता हू।

पूर्णरूप से सकारात्मक जीवनदृष्टि

नकारात्मक प्रश्नों का अन्तःकरण से सकारात्मक उत्तर देना भैरूदानजी का सहज स्वभाव था। इस प्रसंग में एक घटना लिखे बिना नहीं रहा जा सकता। गायों के चारा डिपो पर तोल तोल कर चारा दिया जा रहा था। मैं भी उस व्यवस्था में लगा हुआ था। एक बाहर के गाव के व्यक्ति ने झूठ बोलकर सेठजी को कम पैसे चुकाये। संयोग से तोलकर देने वाला चौधरी और मैं वहा पहुच गये तो चौधरी ने उस झूठे ग्राहक को तेज आवाज में फटकारा अन्य लोगों ने भी उससे चारा वापस लेने को सेठजी से कहा परन्तु सेठजी का जवाब सुनकर सब स्तब्ध रह गये। जवाब था— कोई बात नहीं आदमी से भूल हो जाती है। अब आप रुपये दे दो जितना चारा लिया है। रुपये देकर वह तो चला गया। हम सबने सेठजी से कहा आपको इसे फटकारना चाहिये था जिससे भविष्य में झूठ नहीं बोले। इस प्रश्न और आक्षेप का जवाब भी भैरूदानजी का लाजवाब था— अरे भई झूठ बोलने वाला अपना स्वभाव एक दिन में नहीं छोड़ता, फिर गरीब आदमी था। अकाल में रुपयों की कमी के कारण लोग झूठ बोल जाते है। चारा आखिर गायों के खातिर ही ले जाता है ले जाने दो फिर मारवाड़ी में बोले— जे कोई झूठ बोलर ले जासी तो ईरे निमित्त सू ही धर्म हुय जासी गरीब और दुखीरा जीव घणा नहीं दुखावणा। मैं आज तक इस उत्तर को भूल नहीं सका। उत्तर तो सीधा और सरल था लेकिन उसकी गहराई में उतरना बहुत मुश्किल था। सेठजी का सीधा संकेत यही था कि जो लोग परिस्थितियों और विधाता की चपेट से पहले ही दुखी है उनके स्वभाव और सम्मान की जलालत करके उन्हे अधिक दुखी नहीं करना चाहिये। सेठ भैरूदानजी के विचार की इस गहराई और व्यवहार की उस ऊंचाई को नापने का सामर्थ्य ना मुझ में था ना उस समय पास में खड़े लोगों में था।

गृहस्थ सन्यासी

प्रसिद्धि की तनिक भी लालसा नहीं रखने वाले सेठ भैरूदानजी केवल हमारे गाव में ही नहीं बल्कि आस पास के गावों यानि चोखले में भी प्रसिद्ध हो चुके थे। एक बार करीब दो साल के लिए तबादला होकर दियातरा विद्यालय से भाणके गाव में कार्यरत था। उस गाव में वृद्ध ब्राह्मण बालूरामजी धर्म और ज्ञान की चर्चा किया करते थे। स्कूल समय के बाद मैं उन्हीं के पास जाता और गीता का पाठ उनकी रुचि के अनुसार सुनाता था। एक दिन गीता के चौदहवे अध्याय के श्लोक 23 से 25 तक टीका सहित मैं उन्हें सुना रहा था जिसकी टीका भाषा थी— जो निरन्तर आत्मभाव में स्थित मिट्टी पत्थर और स्वर्ण में समान भाव वाला निन्दा स्तुति में भी समान भाव वाला जो मान अपमान में भी सम है मित्र और बैरी के पक्ष में भी सम है एवं सम्पूर्ण आरम्भों में कर्त्तापन के अभिमान से रहित है वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है। इस भाषा टीका को पढ़कर चौदहवे अध्याय के पाठ को मैने जब पूरा किया तो बालूरामजी महाराज ने मुझे कहा— मास्टरजी ऐसा आदमी हमारे यहां चोखले में

कौन है?' मैं कुछ देर तक सोचता रहा। मुझे फिर भी ऐसा आदमी ध्यान में नहीं आया तो फिर बालूरामजी ने पूछा— वैसा आदमी आपके ध्यान में आया कि नहीं आया? मैंने कहा कि मेरे ध्यान में तो नहीं आया तब बालूरामजी बोले— सेठ भैरूंदानजी छलाणी।' बालूरामजी फिर बोले— वे आपके गांव वाले हैं कि नहीं?' तब मैंने जोर से कहा हां हां आपने ठीक कहा है। बालूरामजी बोलते चले गये कि मैंने नब्बे वर्ष लेकर ऐसा गुणातीत कर्मयोगी गृहस्थ महापुरुष न देखा, न सुना है। पंडिताई तो बहुत से लोग करते हैं और ज्ञान की बात कहते हैं पर व्यवहार में धारणा करने वाले विरले ही होते हैं। बालूरामजी ने फिर मुझे पूछा— क्या यह बात ठीक है कि नहीं मास्टरजी? तब मैं बोला, बिल्कुल ठीक है। आपका सोचना सही है। मैंने थोड़ी देर तक चुप होकर मन में विचार किया तो मेरा मन श्रद्धा से भर गया और मन उन्हें मन ही मन प्रणाम किया।

एक बार सालासर के मेले में स्वामी रामसुखदासजी महाराज के पास सेठ भैरूंदानजी पधारे तो उन्होंने सेठजी का बड़ा सत्कार करके अपने पास मंच पर बैठाकर अपने हाथ से छूकर कहा— यह दियातरा का दानी सेठ भैरूंदान है जो दानी एवं गायों का सेवी है तथा यह मेरे जैसा ही त्यागी है और गृहस्थी महात्मा भी है।' रामसुखदासजी महाराज की बात सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि हमारा गांव भी ऐसे महान महात्मा से और गृहस्थ सन्यासी से गौरवान्वित हुआ है।

साचो महाजन गुरु

■ श्री पूनमराम उपाध्याय ■

गांव र मिनखा सूं अपणायत

[illegible] भी आसाम प्रान्त र [illegible]पुर नगर सूं गांव दियातरा आवता तो गांव रे [illegible] आर सब तर सूं बात्या हुवता, सब रा हाल चाल पूछता, घर [illegible] काम धंधा सब सूं बातचीत हुवती रैवती। [illegible] प्राय सेठा [illegible] आवता [illegible]। सेठा न [illegible] कथा [illegible] भी [illegible]पुर ले हाला थारे अठे काम [illegible]। [illegible] काम मांगणा चाऊ [illegible]।

[illegible] आछी [illegible] और काम धान सिखावणा

[illegible] 13 14 बरसां रा हा। आ बात विक्रम संवत 1996 री है। सेठ मन [illegible] धंधा [illegible]। [illegible] तेजपुर [illegible]

सप्लाई को काम इनाकी फर्म हजारीमल भैरूदान के पास था। सब सू पहली सीख सेठा री आ थी कि इये बाता रो खूब पालण करणा है—खरा तोलना सच्चा बोलणा हिसाब किताब सही सही राखणो। आयं आदमी सू भलो व्यवहार करणा। आय न माण देवणा मीठो बोलणो। सेठा रो काम काज बहुत आछ ढग सू चालतो। बे म्हने हिसाब किताब यानि महाजनी लेखे जोख रो, बही खात रो काम सीखावता, म्हनै हिसाब किताब र काम म चोखो हुशियार कर दियो। बे म्हारा साचा गुरु था।

उण रे दयालूपण री घटना—आख्या म आसू झर आया

म्हन सवत 1999 री एक घटना याद आवे है। सेठ नियमा रा बड़ा पक्का था। आपर राशनिग सप्लाई रा काम म थोड़ी भी गड़बड़ हेराफेरी कोनी हुवण देवता। सरकारी अफसरा ओर अन्य लोगा र दबाव में कोनी आवता। सदा ही अभय रैवता। इया रै ईमानदारी ओर नेकी र व्यवहार सू उठै रा घणा लाग, जका गलत काम करता, राशन स्यू झूठा फायदो उठावणो चावता था बे इया सू नाराज था। इणासू राशनिग रो काम छीननो चावता था। हर बखत उणा रा आदमी खुफियापणो करण म लाग्योड़ा रेवता कि म्हान कोई एड़ो मौको मिलै तो म्ह सेठा री शिकायत करा।

एक दिन री बात हे। एक गरीब आसामी मीनरा मैला फटा पुराणा कपड़ा पैरणने बो आयर सेठा न कया हू बहुत ही गरीब हू, म्हारे घर मे टाबर, टींगर घरवाली सब बीमार पड्या है म्हारे खने फूटी कोड़ी कोनी सब सर्दी म ठिठुर रेया है भूखा प्यासा है। चाय पत्ती तो बची खुची थोड़ी पड़ी है। आप मनै चीनी दे दवा तो बड़ी मेहरबानी हुयसी। म्है बीनै नहीं रा कैय दियो के भाई म्हे यूहीं चीणी दे सका कोनी। सरकारी राशन सप्लाई रो माल हे। बीने घणो ही समझायो। पर बा गरीब आदमी गिड़गिड़ाटी करण लाग्यो उणरी आख्या मे आसूड़ा झर आया। उण री आख्या रा आसूड़ा ढलता देखन सेठा रो दयालु हृदय उमड़ पड्यो। म्हाने आधा सेर चीणी मुफत मे देवण रो हुकम दे दियो। म्है बीनै तोल आधा सेर चीणी दे दी।

डिपो रे आगे पीछे खुदक राखणिया कई आदमी खड़ा था। बियो क्या कियो? उण गरीब आदमी ने पकड़ घेरर खड़ा हुय गया और उण माहसू एक जणे जायने रसद अधिकारी ने फोन कर दियो के डिपो पर सेठ चीणी बेचे है। म्ह रगे हाथा पकड़ राख्या है। डिपो आगे हो हुलड़ करण लाग्या। और भी लोग भेला हुयग्या। बी गरीब आदमी री बात कोई सुणे नही इतणे मे रशद अधिकारी भी आय पहुच्यो। जका घातीले लोगा बीय गरीब ने पकड़ राख्यो बै अफसर आगे आपरी बात बताई कै देखो साहब म्हे इने चीणी समेत पकड़ राख्या है। रशद अधिकारी भरी भीड़ म उण गरीब आदमी ने पूछ्यो के क्या बात है? साची साची बात बताय दे नहीं तो तने पुलिस मे पकड़ाय देसू। बीये गरीब आदमी आख्या मे आसूड़ा बैवाते सारी बात बताय दी। ऊमोड़ा भला आदमी भी बीरी बात रो साथ दियो और सेठा री भलमानसता रा बखाण करण लाग्या। अफसर भी इण बात सू घणा प्रभावित हुयो और सेठा ने धन्यवाद दियो और

उण बदमाश आदमिया ने फटकार भगाया। अफसर उठे उभेड़े आदमिया म, बाजार रे व्यापारिया म सेठा री शोभा बखाणतो के इसा भला, नेक और दयालु सेठ ता देखण ने थोड़ा ही मिलसी आपरे दफतर चलो गयो।

इण भात सेठ दीना पर बड़ा दयालु था। सदा सच्चा बालता और हमशा सच्च तोलण खातर, सच्चा बोलण, मीठो बालण खातर म्हानै आछी आछी सीख देवता रेवना। सरकारी कोटे मे बड़ी ईमानदारी सू काम करता और करावता था।

गरीब रा पडोस

एड़ी एक घटना और बखाण करू। एक साधारण माल बाबू दिनहाटा म इणारी जमीन मायास्यू माटी खोद आपरे घर न ऊचो कर लिया। बरसात रा पानी उणर घर म चल्यो जातो थो। बरसात हुई जद सेठा रे खेत री बिण्डी गिर गयी। इण पर फर्म व्यवस्थापका माल बाबू पर मुकदमा दायर कर दियो। जद ढाई तीन महीना बाद सेठसा दीनहाटा आया और घूमता आपर खेत र कनै स्यू पसार हुया तो वा मालबाबू उणा पर मुकदमे री बात बताई ओर आपरा सारो दुखड़ो सेठा ने सुणाया। सारी बाता जाणता सेठो री करुणा, भलमानसता उमड़ पड़ी। घर आयर सबन आलभा दियो और प्रतिज्ञा करली 'जद ताई उण गरीब मालबाबू पर दायर मुकदमा पाछा उठायो नहीं ज्यासी म्है अन्न जल ग्रहण कोनी करू'। सेठा रे अनशन री बात स्यू ताबड़ ताड़ मचगी ओर उणी दिन मामलो उठा लिया गयो। सेठ छलाणीजी सभी कर्मचारिया न समझायो के ईया गरीब पड़ासी पर मामला मुकदमा करणे स्यू कुण गरीब पड़ोस्य म बस सकेगा। म्हने तो गरीब को पड़ास चाहिजे।

एक बखत री बात है—मगरा क्षेत्र रे राणासर गाव री रोइ म आजू बाजू रे गावा रा मारग पड़ता था। दस बारह कोस ताई राहगीर मानखा खातर तथा ढाण्ढा वास्ते पानी पीवण रो कोई ठावठीकाणा थो कोनी। एक मुसलमान भाई उण मारग म प्याऊ बणवावण खातिर चन्दो इकट्ठो करतो करता दियातरा गाव सेठो खनै आय ढुक्यो। चदो 1) 1) व 2) 2) रु चौपड़ी में दर्ज थो। सेठा बीन समझायो भाई इण तरह चन्दे सू तो प्याऊ बणनी मुश्किल है। म्हनै जायग्या बता। उण समय सेठजी पेर स्यू लाचार था, तो भी ऊट गाड़ा पर बैठर बा जायग्या देखणने गया। मौको देखर नक्शो बनवायो जिणमे एक धर्मशाला खुद की तरफ स्यू जिण म एक रसाइ, एक कमरो 10'×15' तथा एक कुड तथा प्याऊ बणवाणे रो नक्की कर दियो। उण मुसलमान भाई ने उणा कयो कि थारे खेत री या जमीन धर्मादे र नाम रजिस्ट्री करवादे। बटाइयारी सुविधा सारू सार्वजनिक स्थान बण ज्यावे। पण बा भाई राजी नहीं हुयो। सेठा ने इण बात रो भारी दुख हुयो। उण काल मे ऐड़ो आछो काम हुवणो रय गयो।

जात पात र भद भाव सू दूर समभाव

विक्रम सवत् 2027 यानि सन् 1959 री बात है गाव सू तीन कोस दूर लोहिया गाव है। गाव म पीण रे पाना रा कोई साधन नही थो। न तालाब कुड बावड़ी कुछ भी

सार्वजनिक रूप सू नही थो। गाव रा मनख और औरता काख म टाबरिया लियाड़ी प्यास बुझावण ने दियातरे गाव सू भयकर गर्मी म पानी लेजण आवता, आधी प्यास बुझावता।

सेठ भैरूदानजी आप खुदरे अथक प्रयास सू कुआ बणवाण रो काम चलू करवायो। आप रे बड़े लड़के भवर न ब मनै कुव रो काम सभला दिया। आप भी काम देखण बराबर आवता। कुओ बणर तैयार हुय गयो। जद काठा तथा खर्ला बणावण री बेला आई तो गाव री ऊची जाति रे लागा एतराज उठायो के शुद्र जाति रे लोगों रे साथे एक ही काठ पर पानी कोनी भरा। उण लोगा ने इण काठे पर पानी कोनी भरण दा। गाधीवादी छुआछूत जातपात रे भेद मिटावण वाले सेठा रे मन म इण बात सू बड़ो दुख हुयो। और कोठो खेली बणावण रा काम बन्द करवा दियो। समजावण बुजावण सू जद सैग जणा गाव रा एक ही कोठे पर बिना भेदभाव सू पानी भरण ने राजी हुय गया आप काठो खेली बणवावण रो हुकम दे दियो। कोठो खेली बणपरी तैयार हुयगी। कुवे रे माय मीठे जलरी धार मानो लोहिया गाव मे गगा उतरगी। मीनखर डागर प्यास बुझावे। तन मन दोनू चगा हुवे। सारो गाव पावन बणग्यो। सेठ लोगा रे प्यास बुजावण वालो मन रो मैल धोवणवालो अर मनरो मेल मिलावण वालो भागीरथ थो।

ओ मगर रो बापू सारा गाववालो म ऊच नीच जात पात रा भेदभाव मिटाय सारे मानखो ने भाईचारे रो पाठ पढ़ाय घणी खुशी और शान्ति रा अनुभव करतो।

सेठा ने मानखे प्रति बड़ा प्यार थो। गाव रे लोगो ने तकलीफ मे देख बड़ा दुखी हुजावता और दुखड़ा दूर करण रो खूब प्रयास करता। सेवा रो भाव निष्काम ही रैवतो।

अकाल मे गाय माता री सेवा

सेठा ने गाय सेवा रो बड़ो ही लगाव था। गाय ने माय समान मानता था। जद जद भी अकाल पड़तो गाया रे खातिर सेठा रो ह्रदय तड़प उठतो। गाया रे खातिर सस्ते भाव रा घासरा डिपो चलावता। पास पास रे गावा सू, ढाणिया सू लोग तूड़ी घास लेवण आवता। दूर दूर सू दुष्काल स्यू मारयोड़ा लाग चिलचिलाती धूप, रात बिरात झाझरक गाड़ा लेकर तूड़ी लेवण आय जावता। काम करणवाला सारा ने एक ही बात रा आदेश थो, सेवा री सीख थी कि आयेड़े मानखे न कदई खाली हाथ नहीं जावण देवणो है। भूखे प्यासे री रोटी पानी सू सेवा करता। तोलण वाला ने खरा तोलण री एक ही निरधारण भाव सू देवण री रामजी री आण दरायोड़ी थी। कोई गरीब रे पईसा नही देवण हुवता तो बीने आपरे हाथ री परची दे देवता। बाद मे सारी परचीया रा पईसा (रुपया) आप रे खनै सू जमा कराय देवता। हमेशा दुखी हुय केवता के म्हारे मगरा क्षत्र रे गावा मे एक भी गाय भूख प्यास सू नही मरणी चइजे। गाय और

माय एक समान है। गाय री सेवा सबसू अच्छी सेवा है। भूखी प्यासी, मिले जसो घास खावे, अमृत सरीसो दूध पिलावे। 'गाया री बखाण करते सेठा रो हृदय भर आवता कंठ भारी हुय जावता आखिया में करुणा रा आसूड़ा ढल आवता। एड़ा सेठा रो गायो रे प्रति सच्चा प्रेम थो।

एक घटना और याद आवे के आप सेठया जद प्रधान था आप कोलायत सू मिटिंग मे जायर पैदल ही गाव आय रैया था। मारग म भूखी प्यासी गाय बेसक पड़ियोड़ी देखी। गाय सड़क रे एक किनारे पड़ी सिसक रही थी। आप गाय रौने जाय उठावण री घणी कोशिश करी, गाय सू उठीजियो कोनी, आप गाव आया, आदमी लिया, गाड़ो लिया युतर अर पाणी रा घड़ा, बाल्टी ली। गाय न गाड म बैठाकर गाव लाया। आपरे हाथ सू गाय री सेवा करता ग्वार म घी घाल खवावता, आपरे अनुभव अनुसार बणायोड़ी देशी दवा देवता, उण रे घावा पर मल्लम लगावता। आछी भलीकर तैयार कर दी। खाजतो घूमतो उण रा धणी (मालक) आया, बीनै सभला दी। दे पाडिया आशीष हू कई देऊ म्हारी आतड़िया दसी' कहावत घटित करते मालिक और मूक धन गाय माता आपरी आखा में आसू ढालती दोरा दोरा पग उठावती, बिरे पगा री चाल सू पतो पड़तो क गाय किते दोरे मन सू जाय रई थी। मालिक भरे मन सू सेठा न आशीष देवता गया। गाय आता सू आशीष देवती पाछे पाछे देखती मारगड़ा लियो। एसा दयावान गऊसेवक सेठ भैरूदानजी था।

सत्याग्रह

बीकानेर सू राठी ट्रस्ट स तूड़ी रा ट्रक आवता था। तूड़ी आयोड़ी थी। सेठ भैरूदानजी रे तो एक ही भाव तय कियोड़ा था, सारे गाव वाला ने ठीक उणी भाव सू तूड़ी देवता था। राठीजी रे प्रबधका रो सदेश आया क तूड़ी रा भाव मोह बढ़ाय दिया है। थे भी भाव बढ़ार तूड़ी बेचसो। सेठा फरमायो म्हारे जक भाव सू तूड़ी आयाड़ी है और म्हारे जको भाव तय कियोड़ो है म्ह ता इये भाव सू ही तूड़ी वितरण करसा। ट्रस्ट रा प्रबधकों तूड़ी रा ट्रक भेजणा बद कर दिया। स्टॉक म थी उती तूड़ी वितरण हुयगी। आजू बाजू रे गावा मे गाया रे खावण ने तूड़ी नहीं। गाया भूखी रैवण री नौबत आयगी।

सेठ भैरूदानजी इये घटना सू घणा दुखी हुय गया। गो सेवा सघ बीकानेर सू तूड़ी मगावण रा खूब प्रयास शुरू कियो। तूड़ी शीघ्र आवण री आश कोनी बणी। सेठजी बहुत ही सतप्त होय गया। सेठा रे कानो मे भूखी गायो री करुण भाय भाय हुकार, आखा मे बियारा चिपकयोड़ा पेट भूखे बछड़ा रो भाय भाय भुखार दिखण लाग्यो। सेठा कठोर व्रत धारण री घोषणा कर डाली। जद ताई म्हारी गाय माय, बछड़ा बछड़ी भूख्या ढहकारता रैसी हू 'अन्न ग्रहण कोनी करू अनसन व्रत धारण कर बैठ्या। लोगो घणा ही केया सेठा अन्न ना छोड़ो। आगे ही शरीर कमजोर है। प्रेम री करुणा री मूर्ति भरे हृदय सू, रून्धाड़ा कण्ठा सू आख्या मे आसूड़ा ढलकावता

धीरे, शात मीठी वाणी मे आपरा दृढ़ सकल्प—दोहराय दियो जद ताई तूड़ी नहीं आवे म्हारी गाय माय भूखी खड़ी है, हू अन्न ग्रहण कोनी करू गो सबा मध वाला न जद आ ठाह पड़ी कि सठा अनसन व्रत धारण कर लिया तुरता फुरत व्यवस्था कर तूड़ी रा ट्रक गाव भिजवा दिया। तूड़ी आई गायो रै ठाणा म डालीजी जद ही आप अन्न ग्रहण किया। इण वास्ते ही लोग उनोने बापूजी कवता था।

गृहस्थ सत

भैरूदानजी री स्वामी रामसुखदासजी म घणी घणी श्रद्धा थी। इण अकाल बाद स्वामीजी कोलायत पधारोड़ा था। सेठ दशन करण गया म्हे भी साथे था। जद लोगा आ घटना स्वामीजी रे सम्मुख राखी तो स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुया। गाय र प्रति ओ भाव सुणर कवण लाग्या भेरू तू सच्चो गाय रा सेवक है भक्त है, गृहस्थी सत है।

रामायण भक्त

जद हू तेजपुर मे थो एक बार कई धर्मांरा आदमी सेठारे अठे बैठा था। धर्म ध्यान री आछी बात्या हुय रेई थी। सेठजी सब धर्मा न समान आदर सू देखता था। सब रा आदर करता था। सब सेठा सू प्यार करता श्रद्धा सम्मान राखता, आदर देवता। धर्मारी आछी आछी बात्या हुवती। कई एक आदमिया पूछ्यो सेठा थानै सब सू आछा किसा धरम लागे। सेठा सहज ही जबाब दिया मनै तो रामायण सबसू आछी लागे। सेठा ने रामायण कठस्थ थी। घणी बार रामायण रा अखड पाठ भी करावता। काइ भी होणी म अणहोणी मैं गृहस्थ म परिवार मे समाज म गाव म विवाद मे सुख मे दुख म सब मौका पर आप रामायण री चोपाइया सुणाय एड़ी एड़ी बात्या सुलझावता, आछी आछी सीख आली रामायण री चोपाइया सुणा देवता।

साचा गुरु

सेठसा साचा गुरु था। सबने चोखी चाखी सीख देवता। म्हे तो बियान म्हारा गुरु मानू। चोखी बात्या सिखाई महाजनी मुनीमपणा सिखाया बड़ो लाड दुलार दियो। सेठसा सबारे प्रति समान व्यवहार करता। जद हू तेजपुर थो मन लेकर गया था उमर म छोटा ही थो। टाबर जिया दुलार करता। म्हनै घरवाला री याद ही कोनी आवण दी। घर मा बाप सो लाड मिलतो। सेठ मे सठाइपण री थोड़ी भी बू कोनी थी। अहम् कोनी थो। उण समय सतरा चोखा आवता था। आप परिवार मे सब खातर सतरा मगवाया। खवावड़ पियावण रो बड़ो शौक थो। परिवार जनो मे सब ने दो दो सतरा बाट दिया। एक सतरो बचम्या। सठा बा सतरो मन दे दियो और बड़े ही दुलार सू बोल्या ओ आपा म सबसू छोटा हे। इरो हक है। हू आ सोच आज अचभा करू हू के सेठा रो हू तो नौकर थो। पर बे सबने समान दृष्टि सू देखता प्यार देवता। अरे! भवर लाडलो बेटा भी खने बैठो थो पर हू बीसू छोटा

थो लडके समान प्यार दियो। अ गुण आज बहुत ही कम लोगा म देखणने मिले है। सेठा र गुणा न झुरा हा याद आवे जणे आख्या मे आसू झर आवे। इसा महाजन सठ कोई बिरला ही हवे है।

दृढ सकल्पी कृषक गोसेवक

■ वैजनाथ सिद्ध ■

बापूजा भरूदानजा के साथ मेरा सर्वप्रथम मिलना तब हुआ जब मै आषाढ शुक्ला सप्तमी सम्वत् 2034 दिनाक 23 जुलाई, 1977 को ट्रेक्टर लेकर बुवाइ करने आया। सबसे पहल बुवाइ इनके गाव दियातरा के समीप ही कढ मे की थी। वहा बुवाई के बाद हमको खेत ही पान्ती पर दे दिया गया और हम खेत मे ढाणी म रहन लगे। सेठ साहब को खेती से बहुत लगाव था। खेती मे नई नइ किस्म के बीज बोया करते थे। हमेशा गाड़े पर खेत म आते खत मे नागोर के भूरजी चौधरी रहते थे। आते ही भूरजी से कहने आओ भूरजी माथ खास्या। घटा भर ठहर कर वापिस आ जात। मेरा इनके साथ धीर धीर स्नेह हा गया। खेत मे आते हा हस कर कहते बेजनाथजी कइ हुवै। व चार महीने चौमासे मे ढाणी मे ही रहत थे। बाहर से खादी मदिर से, सर्वोदय, भूदान वाले लोग आप से मिलन खेत म आते ता इन लागो को आप खेत का मतीरा बड़े चाव से खिलाते। आप के खेत के मतीरो का मिठास ही और था। खेती मे अलग अलग किस्म क बढिया बीज ही बोया करत थे। पचायत समिति मे जो भी उन्नत बीज प्रयोग के लिए आते, विकास अधिकारी और ग्राम सेवक सबसे पहले उनको दत। छलाणीजी उनका प्रयोग करते।

14 जनवरी 1979 के बाद आप ने चार महीना चौमासे मे खेत जाना छोड़ दिया था। सठ साहब हर साल कोलायत के मेले मे जाया करते थे। पहले तो ऊट गाड़े पर जाया करते थे लेकिन ट्रक्टर आने के बाद हम लोग ट्रेक्टर पर ही मेल म जाने लग।

सन् 1981 मे जो अकाल पड़ा उस के बाद नवम्बर म बारिश हुई जिसम लोगो न तारामीरा की बुवाई की। उस वर्ष अच्छी फसल हुई तब आपकी कुआ खुदवाने की लगन हो गइ। भूराराम चौधरी जमीन मे पानी बताने वाला नागौर स बुलाया गया, उन्होंने सड़क क पास कुए की नीव डलवाई। कुआ खोदना शुरू हुआ। हर रोज कुए पर दो बार आपका आना होता था कुए क अन्दर 6 फीट की पतली लकड़ी रखते थे जो एक दिन टूट गइ। तब उन्होने अपने अमोलखचन्दजी काकाजी के कथन को

दोहराया कि जकारे हुवे जकारे टूटे । उस दृश्य पर सब हस पड़े। कुआ खुदत खुदत 1985 म तीन सौ फीट खुद गया तब झरने का पानी आया।

धुराल खेत म आपने रघुवरदयालजी की स्मृति म एक झापड़ा बनवाया। जिसम सगमरमर पत्थर का आला बनवाकर तथा उस आले म बहुत ही श्रद्धा के साथ उन की भस्मी को रख चित्र को स्थापित किया। उस झापड़े पर उन्हाने एक दोहा लिखवाया—

खाद देवो मल मूत्र की उपजे सागर सवाय
उधारो चुका देवो कोठा लेवो भराय

इस झापड़े म आप जागरण तथा सस्थाओ की बैठक करवाते। 1977 म राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष स्वाधीनता सेनानी सर्वोदयी आदरणीय श्री गोकुलभाई भट्ट रियातरा आये और इसी झापड़े म खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा ग्रामो के आर्थिक सुधार के बारे में बैठक की थी। श्री छलाणीजी न गोकुल भाई को स्थानीय उपज स झापड़ी बनाने व रस्सियो के बारे म विस्तार से जानकारी दी थी।

गायो और पशुओ की देखभाल आपका हमेशा का प्रथम कार्य था। आप के बाड़े मे एक नागौरी साड रखते थे। सन् 1985 के अक्टूबर म आप अपने बाड़े म घर के बैल के नाक की रस्सी की गाठ घुमा रहे थे कि बैल ने उन्हे धक्का दे दिया जिस से वे गिर पड़े और उनके पैर की हड्डी टूट गई बीकानेर म पक्का प्लास्टर पैर पर बधवाया लेकिन पैर की हड्डी टेढ़ी जुड़ गई। नागौर से हड्डी जोड़ने वाला बुलवाया गया हड्डी तो वापिस जुड़ी लेकिन सेठ साहब का चलना फिरना बद हो गया। उस समय पच्चीस दिन बाद सबसे पहला पत्र उन्होने मुझे लिखा जिसमे उन्होने खुद लिखा था कि पच्चीस दिन बाद मै पहला पत्र आप को लिख रहा हू। वह पत्र पढ़कर मेरा मन खुशी से भर गया और मुझे कितना अपनेपन का माहौल मिला उसका वर्णन नहीं कर सकता।

वर्ष 1985 87 म राजस्थान मे भयकर अकाल का समय था जिस मे लाखो गायो का जीवन सकट म पड़ा हुआ था। श्री भैरूदानजी को गायो की रक्षा की चिन्ता हुई। उन्होने अपने बूते पर खेत म चारा डिपो खोल दिया। श्री सोहनलालजी मोदी की अगुआई मे राजस्थान गो सेवा सघ के द्वारा जैसलमेर क्षेत्र से सीवण घास की व्यवस्था करवाई। 1986 87 म आपने चारा डिपो खुलवाया जिस म रामनारायण राठी ट्रस्ट से चारा आता रहा। परन्तु कुछ दिनो बाद मे माल भेजने म कमी कर दी क्योकि श्री भैरूदानजी राठी ट्रस्ट से कम दाम पर तूड़ी देते थे जो ट्रस्ट को स्वीकार्य नहीं था। श्री छलाणीजी से पशुओ व पशुपालको की स्थिति देखी नहीं गई। उन्होंने तहसीलदार कलैक्टर, प्रधानमत्री व लोकसभा अध्यक्ष को तार दे दिये कि पशु पक्षी भूख स मर रहे है और मनुष्य भी पेड़ पौधो के साथ सूख रहे है। स्वय न उपवास

रखना शुरू कर दिया कि 'जब तक तूड़ी की व्यवस्था नही होगी भोजन नहीं करूगा। जब गाय भूखी मर रही है तो मै भाजन कैसे करू।' लागा न समझाया भी कि आप उपवास नहीं करेगे। चार दिन बाद ट्रस्ट स सात ट्रक तूड़ी लेकर स्वय कलेक्टर पीछे पीछे आये। श्री छलाणीजी ने कहा 'क्या आप एक बार खाकर चार दिन भूखे रह सकते है। घास नियमित आना चाहिये।

आपने गो सेवा सघ के माध्यम से चारा डिपो खुलवा लिया तब चारे तूड़ी की बराबर पूर्ति होने लगी। दूर दूर से लोग तूड़ी व गन्ना के लिए आते, उनको माल मिल जाता। इन दिनो म डिपो पर चारा तौलने पर कार्यरत नागोर का हेमाराम चौधरी एक हजार मण चारा गन्ना तौल देता था।

आपको एक हजार पशुओ के सेवा शिविर की स्वीकृति मिली थी परन्तु आपने अपने खर्चे म दो हजार गायो को शिविर म रखा और पाला पोसा। अकाल समाप्त होने पर पशु पालको को पशु सोप दिये।

अकाला के समय आपने मनुष्यो के दु ख दर्द मे सहारा दिया व गाया का भूखा नही मरने दिया। वे बताते थे कि सम्वत् 2025 (सन् 1967 68) मे एक बार अच्छी वर्षा हुई जिसमे गाव का तालाब भर गया परन्तु फिर वर्षा नहीं हुई और अकाल पड़ा। लाग गायो को पानी की शरण मे छोड़ गये। उन्होने उन सब पशुआ का शिविर म रखकर रक्षा की व भूख से मरने नहीं दिया।

गो सेवा की भाति खती से भी उतना ही लगाव था। पहल खुदवाये गये खुले कुए मे पर्याप्त पानी नही आने से 1989 म उनक पास ट्यूब वैल खुदवाया। उसम अनेक बाधाओ व कठिनाइया का सामना करना पड़ा। भारी खर्च हुआ परन्तु उनका दृढ सकल्प अन्तत सफल हुआ जब पाना निकल आया। ध्यान देन की बात है कि पैर की हड्डी टूटी हुई थी चलना फिरना समव नही था, अपनी बेठक मे बैठे बैठ ही कार्य करवाया। वही बेठे बैठ खती की बाते बताते रहत थ। उनका खर्च का दर्शन ही अनोखा था। कहत थे कि उससे जरूरतमद को काम व पोषण मिलना चाहिये।

एक बार ईंट भट्टे वाले नल कूप से खूब पानी ले गये थे। मैने कहा ईट भट्टो के बीच म छोटी जमीन लेकर ट्यूब वैल खुदवाले, वहा पानी की बिक्री अच्छी हो जायगी। उनका सरल सपाट उत्तर था 'बादल टूटे खेती कोनी हुवै।' उनकी बाते आत्मज्ञान एव अनुभव स निकलती थीं जो मार्गदर्शक एव प्ररणा देने वाली होती थीं। उनको मौसम व फसल का ज्ञान व्यापक और गहरा था।

मै अठारह वष तक उनके साथ रहा—परिवार के सदस्य की तरह। मैने उनसे खूब प्यार और शिक्षा पाई। मै धन्य हुआ। उस महाप्राण को प्रणाम।

गिरा अनयन नयन बिनु बानी

■ मालचद शर्मा ■

मर पूज्य पिता श्री खुमानीरामजी सिकनाड़िया बहुत पहल स ही बगाल म आप्रवासी मारवाड़ी के रूप मे श्री दुलीचन्द गिरधारीमल सामाणी, दीनहटा जिला कूचबिहार की फर्म म काम करत थ। मरा युवा एव उत्साही मन भी आप्रवास के लिए आतुर हो उठा। पिताश्री की अनुमति प्राप्त कर आसाढ़ बदी 3 स 2004 म मै भी पिताश्री के पास उनक निर्देशन म उसी फर्म म काम करने लगा एव जठ बदी 12, स 2009 तक वहीं कार्यरत रहा।

श्री जुहारमलजी छलाणी की प्ररणा एव प्रोत्साहन पाकर जेठ वदी 13, स 2009 को छलाणी स्टोर्स म मैनजर के पद पर कार्य करने हतु मरा पदस्थापन किया गया। प्रारभ में घनिष्ठता के अभाव म अनेक विचार उत्पन्न और समाप्त होत रह। कालचक्र के परिभ्रमण स समय बीतता चला और अनुभव एव घनिष्ठ सम्पर्क से यह महसूस हुआ कि मैं अतीव भाग्यशाली हू कि एक एसी फर्म म कार्य कर रहा हू जहा मानवीय गुणो उच्चादर्शों सद्व्यवहार ईमानदारी जैस ईश्वरीय नियमो क प्रति पूर्ण आस्था एव विश्वास पाया जाता है।

हम सभी कर्मचारी एक परिवार की तरह प्रम विश्वास, सहृदयता, सहयाग एव सद्भाव के आधार पर कार्य करते रह। बाबू श्री भैरूदानजी छलाणी को हम सभी परिजन अपने परिवार का मुखिया मानते और बझिझक अपनी सभी समस्याओ को बाबू के सम्मुख प्रकट कर समाधान पात रहे। बाबू सभी के साथ पितृवत् व्यवहार करते एव सभी की सुख सुविधाओ उन्नति विकास म वरदहस्त प्रदान कर अपनी भागीदारी निभाते रहे।

बाबू एव उनक परिजनो के साथ जो सहृदयी एव स्नेहिल व्यवहार स्थापित हुआ उसे यावतजीवन भुलाया जाना सभव नहीं है क्योकि मेरे लिए उनका जीवन आदर्श एव अनुकरणीय रहा है। मेरे ज्ञान और व्यवहार का बहुत बड़ा भाग उन्हीं की देन है। अत आज भी मेरी अनेक समस्याओ का समाधान एकलव्य की तरह उन्हे उपस्थित मानकर पा लेता हू। वह धरती धन्य है जिस पर ऐसा महामानव पैदा हुआ। आओ, हम सब उस मा को भी शतशत नमन कर जिसकी कोख स ऐसा नर रत्न उत्पन्न हुआ।

1 उदारता एव सहृदयता

मै स 2028 मे मेरे पुत्र चि जगदीश के विवाह के लिए देश आते समय बाबू स विवाह पर पधारने का आग्रह करके आया था परन्तु व्यस्तता के कारण विवाह के बाद

ही पधार सके। वार्तालाप मे विवाह मे व्यय आदि के बारे मे विवरण प्राप्त किया। मे वेतन के अलावा फर्म से 12500/— रुपये विवाह खर्च हेतु अधिक लेकर आया था। बाबू ने उक्त राशि की जानकारी प्राप्त कर उदारतापूर्वक पूर्ण राशि ही फर्म की ओर से अनुदान के रूप मे देने की घोषणा कर हम सब को आश्चर्य मे डाल दिया, क्योकि मेरा वार्षिक वेतन उस समय 5000/ रुपये के लगभग ही था। अनुदान का यह क्रम सभी के साथ आवश्यकता के समय समान रूप से व्यवहृत होता रहा क्योकि बाबू स्वभाव से ही उदारमना व्यक्तित्व के धनी थे।

2 गो सेवक के रूप मे

गो सेवा मे बाबू की रुचि प्रारम्भिक काल से ही बनी हुई थी। इसी के तहत फर्म मे एक गाय सदा रखी जाती थी। जिसकी सेवा मे कोई कोरकसर नही निकाली जा सकती। एक बार बाबू ने एक बछड़ को साण्ड बनाने का विचार प्रकट किया। अनेक व्यावहारिक कठिनाइयो के कारण मेरी सहमति नहीं थी परन्तु शुभ मुहूर्त मे पूर्ण तैयारी (आवश्यक पूजा सामग्री) के साथ साण्ड की पूजा करके बाबू ने शुभ योजना को कार्यरूप मे परिणत कर दिया। वह साण्ड लगभग 16 वर्ष तक रहा। इस अवधि मे साण्ड के द्वारा किये नुकसान एव उलाहनो से कठिनाइयो का सामना करना पड़ा परन्तु गो सेवा के भाव यथावत बने रहे। हमारा अनुभव रहा कि इन 16 वर्षो मे व्यापार मे अनेक फर्मो को उतार चढ़ाव एव घाटा मुनाफा देखना पड़ा (तजी मदी के कारण) परन्तु छलाणी स्टोर पर इसका कोई प्रभाव नही पड़ा। बाबू की गो सेवा की भावना का ही परिणाम था कि भारी उलट फेर मे भी फर्म अप्रभावित रही।

3 सहृदयी व्यक्तित्व

मैने मिति जेठ बदी 13, स 2009 से फर्म मे काम शुरू किया और मिति फागण बदी 3 स 2031 तक लगभग 23 वर्षों तक फर्म की सेवा मे कार्यरत रहा। इतने लम्बे समय मे एक बार भी कोई अप्रिय घटना या विवाद का न होना एक सुखद आश्चर्य नही तो और क्या कहा जाये। चेत बदी 3 स 2031 को बाबू से आशीवाद एव प्रेरणा पाकर निजी कार्य की शुरूआत की गई जो बाबू के ही सद्भाव एव सहृदयता, सहयोग से फलीभूत होता रहा है।

4 सहयोगी एव सहज सतवृत्ति

ये दोनो ही गुण बाबू के चरित्र मे समन्वित और सहज रूप से समाये हुए थे। उनके द्वारा किसी को भी उत्पीड़ित करने या अनुदारता का एक भी कृत्य 23 वर्षो के अतराल मे कभी देखने को नही मिला। अपने सहकर्मी को सदा अपना परिजन समझते और उसकी कठिनाइयो का समाधान जिस सहज व्यवहार द्वारा करते उसे देखते ही बनता था। सहकर्मी के मन मे फर्म के प्रति अनुराग उत्पन्न करने उसकी क्षमता का विकास करने आर्थिक, सामाजिक आत्मिक उत्थान की गत्यात्मकता प्रदान करने की अद्भुत क्षमता बाबू मे देखने को मिली—उदाहरणार्थ

1 एक नौकर जिसका नाम सनिराम बिहारी था। उसकी लड़की के विवाह के सम्बन्ध म घर से पत्र आया। सनिराम पत्र को पढ़कर रोने लगा। पूछने पर पता चला कि लड़की के विवाह क वास्ते रुपय 1000/ मगाये हे। जबकि उसका वेतन रुपये 50 प्रतिमाह था। बाबू देश गय हुए थ, अत बड़ी कठि परिस्थिति का सामना करना पड़ा। विश्वास एव व्यवहार के आधार पर सनिराम को रुपय दे दिय गये। विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ। बाबू क आने पर सारी बात बताते ही पहले ही वाक्य म कहा बहुत अच्छा किया और रुपयो का भुगता दिया जाय। बाबू की उदारता से हम सभी अभिभूत हो गये।

2 श्री सुरदेव गोस्वामी, जो अग्रेजी खातो का काम करते थे वे बगला दश से यहा आये थे। गोस्वामी न अनुनयविनयपूर्वक बाबू से जमीन व मकान बनवाने के लिए प्रार्थना की क्योकि उनके पास व्यय के लिए रकम का पूण अभाव था। उनका वेतन उस समय करीब 150/ रुपये था। बाबू ने उनकी कठिनाई को समझते हुए जमीन व मकान के लिए 7000/ रुपये अनुदान के रूप मे प्रदान कर उन पर अनुग्रह किया। यह घटना स 2010 की है।

3 बुदाइ मिया जो दानहटा गोदाम मे 100/ रुपये माह पर काम करता था, जमीन व मकान के लिए रुपय 3000/ का अनुदान देकर उसकी एक बड़ी समस्या का समाधान किया गया था। पुन बुदाई मिया को अवसर आने पर अजमेर शरीफ की दरगाह की यात्रा एव जियारत करन का अवसर प्रदान किया गया था।

4 जाति धर्म सम्प्रदाय म ऊपर उठकर बाबू सवथा अपन सहकर्मियो को आर्थिक सामाजिक धार्मिक सभी प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहते थे। वर्षान्त मे बोनस के रूप म एक वर्ष के वेतन का कभी 25% कभी 50% कभी 100% तक देने की उदारता दिखाते थे और प्रतिवर्ष सभी की आर्थिक सहायता करते थ। इस कार्य मे यह भाव छिपा होता था कि मेरे सहकर्मी सतुष्ट होकर काय करे और आथिक रूप से सभी समर्थ बन। इस प्रकार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता प्राप्त कर की क्षमता का विकास करत रह।

5 स 2025 की घटना है कि श्री बशीधर शर्मा निवासी छापर जिला चूरू (राज) ने प्रार्थना की कि बाबू मेरे खेत म से राहगीरो की आवाजाही बहुत होती है एव आस पास मे कही पानी की कोई सुविधा नहीं है। यह सुनकर उदारमना बाबू द्रवीभूत हो गये और राहगीरो एव बशीधर की कठिनाई का निवारण करने के लिए एक सार्वजनिक प्याऊ एव एक बड़ा कुण्ड बनवाया जिस पर करीब 1000/ रुपय खच हुआ।

बाबू श्री भैरूदानजी छलाणी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थ। उनके व्यक्तित्व पर कितना भी लिखा जाय वह कम ही होगा क्योकि एक प्रकार स सूर्य को

दीपक दिखाने जैसा ही प्रयास होगा। सत बाबा तुलसीदास ने ठीक ही कहा है कि—
गिरा अनयन, नयन बिनु बानी। और यही कहकर इतिश्री करना चाहूगा।

अत मे मै बाबू के आदर्शो, सद्व्यवहार, सद्भावो एव सद्कार्यो मे विश्वास प्रकट करता हुआ परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हू कि उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे एव सभी परिजनो को उनके कृत्यो आदर्शो से सबल प्रदान करे जिससे उनके सुझाये रास्ते पर चल कर अपना जीवन धन्य कर सके।

प्रभु से मेरी कामना है कि ऐसा महामानव प्रभु पुन इस धराधाम पर अवतरित करे जिससे यह पृथ्वी स्वर्गीय सुखो से ओत प्रोत होती रहे एव मानवीय गुणो, आदर्शो की स्थापना सभव हो सके।

उदारता की प्रतिमूर्ति

■ बशीधर जोशी ■

प्रात स्मरणीय बाबू श्री भैरूदानजी छलाणी के सम्पर्क मे या यू कहिये कि उनकी छत्रछाया मे मै तभी आ चुका था जब केवल आठ दस वर्ष का था। वे उन दिनो छापर मे गोपालपुरा के बालाजी मन्दिर का दर्शन करने आया करते थे। मेरे काकाजी श्री मोटारामजी उनकी फर्म हजारीमल भैरूदान, तेजपुर (असम) मे काम करते थे। उनका बहुत आदर करते थे। मै सम्वत् 2006 मे काकाजी के साथ तेजपुर गया। उसी समय से छलाणीजी के साधु स्वभाव ने मुझे आकर्षित किया।

मै अनपढ़ था लेकिन छलाणी परिवार की प्रेरणा और सहयोग से मैने लिखना पढ़ना सीखा जिसे मै जिन्दगीभर नहीं भूल सकता। छलाणीजी की मेहरबानी से मैने पहले माडिया मे महाजनी खाता का काम सीखा उस के बाद अग्रेजी मे सेन्ट्रल एक्साइज का काम सीखा। बाद मे लगातार तेजपुर तथा दीनहट्टा मे मैने आपके यही सर्विस की। इस अवधि मे भैरूदानजी की व्यावसायिक दूरदर्शिता देखते ही बनती थी—जिसका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। वे खुद फर्मो मे वर्ष मे एकबार रामनवमी पर ही रहते थे बाकी ज्यादातर दियातरा मे ही खेती और गो पालन मे लगे रहते थे। व्यवसाय उनके आदेश से पत्राचार द्वारा ही चलता था।

मुझे व्यापारी बना दिया

एक बार तेजपुर की बात है मुनीमजी उस दिन बाहर गये हुए थे। एक व्यापारी तम्बाकू लेने आया मैने दस किलो तम्बाकू 50 पैसे प्रति किलो ज्यादा भाव करके दे

दिया। मुनीमजी ने इसे सीमा का उल्लघन माना कि मैने बिना उनको पूछे बिक्री कैसे कर दी। इसकी शिकायत बाबू श्री भेरूदानजी के कानो तक गई। मे डर गया लेकिन सेठजी ने मुनीमजी को इस तरह समझाया कि उनके सम्मान को ठेस नहीं लगे और दूसरी तरफ मेरा हौसला इतना बढ़ाया कि मै खरीददारी और बिक्री करने लगा। बाद मे मुझे दीनहट्टा भेजा। वहा सेठ साहब के छोटे भाई श्री मुन्नीलालजी ने मुझे खाते बही का काम उन्ही के आदेश से सिखाया।

उन दिनों सबेरे दो मील घूमने जाते समय सेठजी मुझे साथ ले जाते और घूमते घूमते ही मुझे आचार विचार व्यवहार और व्यापार के सस्कार देते। मै उनके विचार व्यवहार और सीख से अत्यधिक प्रभावित हुआ। मुझ मे स्वय अपना व्यवसाय करने की समझ विश्वास और कुशलता उनके द्वारा ही प्राप्त हुई। इधर सतरह साल से अपना खुद का व्यवसाय कर रहा हू। छल्लाणीजी ने मुझे व्यापारी बना दिया लेकिन उनके स्नेह उनकी आशीष और उनके पथ प्रदर्शन मे कभी कोइ कमी नहीं आई।

व्यावसायिक दूरदर्शिता

व्यापार मे लम्बी आइडिया ही सफल व्यवसायी की पहचान है। सेठजी घर बैठे ही मुकामो की रिपोर्ट हर सप्ताह मगवाकर लेखे जोखे की सारी जानकारी रखते थे। सवत् 2028 के सीजन मे तम्बाकू भाव एकदम कमती थे उनका प्रत्येक पत्र मे यही आदेश आता था कि खूब खरीदो। दो महीने मे भाव दूने हो जायगे। माल बेचने की एकदम मनाही करदी थी। मुझे आज भी याद है कि उस वर्ष तम्बाकू की बिक्री खूब लाभ देकर हुई।

झट परची लिख कर दे दी

सवत् 2025 के भयकर अकाल मे 1500 गायो को सेठजी ने मरने से बचाया। मैं गायो के उस शिविर को देखकर दग रह गया। उस शिविर मे चारे की व्यवस्था करना उसके लिये रुपये जुटाना आधे दामो मे गाव वालो को चारा देना—सारा काम उनकी ही देख रख मे हो रहा था। जबकि उस समय सेठजी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। उस शिविर मे एक दिन बाहर के गाव से कोई बूढ़ा आकर सेठजी के सामने हाथ जोड़कर तीन दिन की पन्द्रह बीस भूखी गायो का दुख सुनाने लगा और बोला मुझे सब कह रहे है— सेठो खनै जावौ । उस की बात पूरी भी नही हुई थी कि सेठजी ने झट परची लिखकर बूढ़े गोपालक को देकर कहा कि जाओ जल्दी से तूड़ी लेकर गायो को खिलाओ। वह बूढ़ा और बाहर से आये हुये दूसरे आदमी भी यह देख सुनकर गद्‌गद् हो गये और उनकी आखो से आसू छलक पड़े मै यह सब देखता का देखता रह गया।

बोनस बनाम ट्रस्टीशिप का नमूना

दीनहट्टा मे जो अटनदार (मजदूर) तम्बाकू गाधते थे उन सब का हित भी छलाणीजी अपना हित समझते थे। दीनहट्टा मे जब भी वे आते तब एक एक का हालचाल पूछते। उनका बुदाई मिया अटनदारो का एक दलाल था उस को जमीन तथा मकान बनाकर दे दिया। वर्षभर मे जो मुनाफा ठीक बैठता तब अटनदारो को और सारे गुमाश्तो को कइ बार बोनस के रूप मे मुनाफा बाँट दिया। बिना किसी लड़ाई झगड़े बिना किसी माग के अपने आप अटनदारो को बोनस देने की पहल भैरूदानजी ने ही की थी। अटनदार उनकी नियमित नौकरी मे नहीं होते, केवल रोज मजदूरी करने वाले हमाल होते है। गरीब और दुखी चाहे कोई भी हो पर उन्हे कभी निराश नही लौटाया। जिसको दिया उन्मे से तकाजा भी नही किया। जो चुकाने मे समर्थ दिखाई देता उसका वे नाम लिख लेते और असमर्थ का नाम भी नहीं लिखते। एक व्यापारी सेठ की साधारण तौर पर मुनाफा चूसने की जो छवि समाज मे बनी हुई है उसका एक दूसरा ही स्वरूप भैरूदानजी मे देखने को मिला जो ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का व्यावहारिक व प्रत्यक्ष प्रमाण था। यदि हर व्यक्ति उनकी तरह ही अपनी सम्पत्ति और लाभ को स्वेच्छा से समाजहित मे विसर्जित वितरित करे तो समाज मे दरिद्रता अभाव, विषमता कम हो और वर्गभेद शोषण और संघर्ष का अहिंसक ढग से समाधान सहज हो सकता है।

किसी को कहने का मौका ही न मिले

भाइयो का प्रेम तथा भाइचारे की भावना भी उनमे उच्च कोटि की थी। जब भाई भाई का बटवारा हुआ तब किसी को पता भी नहीं लगा, ऐसे ही उनके छोटे भाई उदार दृष्टिकोण के थे। कमजोर भाई को मै मेरे साथ रखूगा ऐसी उनकी भावना थी जिससे दूसरो को कुछ कहने का मौका ही नहीं मिले। श्री पाचीलालजी छलाणी को अपने साथ रखने का यही कारण था। सेठजी के जीते जी उनके किसी भी भाई के यहा कुछ भी काम हुआ तो सबसे पहले हाजर होने वालो मे भैरूदानजी छलाणी होते थे। ऐसे मिलनसार व्यक्ति कम ही होते है यद्यपि यह प्रसग उनके व्यक्तिगत और परिवार की सीमा का है लेकिन मुझे उनके निकट रहते हुए उनके इस स्वरूप ने इतना प्रभावित किया जिसकी तुलना मे उनका अन्य कोई भी स्वरूप वजनदार नही पड़ता, क्योकि गाव समाज और राजनीति मे सभी व्यक्ति अपना प्रभाव दिखाते है लेकिन घर परिवार के मोर्चे पर मैने बहुतो को असफल होते देखा। अपने भाइयो अपनी सन्तानो, अपने सगे सम्बन्धियो और अपने रिश्तेदारो के बीच भैरूदानजी छलाणी ने आचार विचार और व्यवहार का जो सतुलन साधा वह उन्हे बहुत ऊचे स्थान पर बैठाता है।

सर्वधर्म समभाव

बाबू श्री भैरूदानजी एक ऐसे व्यक्ति थे जो सर्वधर्म को मानत थ। वे स्वय आसवाल जैन थे। मन्दिरमार्गी बाइस पथी तेरापथी सभी सम्प्रदाया क साधु साध्वियो का सत्कार गाव म होता ही रहता था। उनके घर म सनातनी धर्माचाया का आवागमन भी बहुत था। तुलसीकृत रामायण की चोपाइया और दाह उन्हे कठस्थ थ। गीता का पाठ और ज्ञान भी उनके पास कम नहीं था। धार्मिक पुस्तक पढने का उन्ह बहुत शौक था और प्राय काई न कोई धार्मिक पुस्तक उनके हाथ म ही रहती थी। एस मन्त पुरुष कम ही होते है।

जहा जाते वहीं से जुड जाते

बाबू श्री भैरूदानजी म सहयोग की भावना बड़ी गजब की थी। एक बार हमारे खेत म कुड बनाने की जरूरत पड़ी हमारे खेत म पास के गाव का रास्ता है बीच म दो कास तक पानी का कोई प्रबन्ध नहीं था। सम्वत् 2025 की बात है। बाबू श्री मुन्नीलालजी के साथ दीनहट्टा स गाव आते समय बाबू श्री भैरूदानजी को छापर हाकर आने का मने आग्रह किया साथ मे सानीराम देशवाली भी आये। तब उनको छापर स्टेशन से खेत होकर हम लोग ल गय। रास्त म भैरूदानजी को वह सारी हालत बताई गई। सेठजी न उसी वक्त एक हजार रुपया हमारे खेत म कुड बनान के लिए दिला दिया। वास्तव मे उनका यह सहयाग न होता ता उस समय वह कुड नहीं बनता। सभी की सुख सुविधाआ का पूरा पूरा ध्यान रखना उनका बहुत बड़ा गुण था ऐसे महापुरुष कम ही होते ह। वास्तव म वे उदारता की प्रतिमूर्ति थ।

मै वर्ष म एक बार उनसे अवश्य मिलता था। कभी कभी दो तीन बार मिलने का भी सयोग हो जाता था। उनके दर्शन से मुझ आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती थी। मगरा क्षेत्र के लाग उनको मगरे का सेठ नाम से सम्बोधित करते थे। (1) स्नेहशील (2) राजनीतिज्ञ (3) कुशल व्यवसायी (4) शिक्षा प्रेमी (5) समाज सुधारक (6) प्रगतिशील कृषक (7) गा भक्त (8) देश भक्त (9) परहितकारी पराये दुख मे दुखी तथा दूसरा की उन्नति मे प्रसन्न (10) असहाय ओर कमजोर के सहयोगी एव भाईचारे से भरपूर (11) सर्वधम समभावी ओर रामायण के मर्मज्ञ। शब्द बिन्दु मे सिन्धु को बाधना कठिन है।

उस गुण सागर को बूद का नमन।

मेरा निदर्श (Specimen) व्यक्ति

■ योगेन्द्र कुमार रावल ■

श्री भैरूदान छलाणी स्मृति ग्रथ के परम पावन सम्पादन काय म जब मुझे भी सौभाग्य मिला तब तक म छलाणीजी से बिल्कुल परिचित नहीं था क्योकि उनक जीवनकाल म उनसे कभी मेरी बात या मुलाकात तक नही हुई थी। म अपनी कलम से उनके बारे म क्या लिखू—कुछ समझ म नही आ रहा था किन्तु जब सम्पादन कार्य के दौरान समस्त आलेख मैंने पढ़े समझे तो मेरा मानस आश्चर्यचकित रह गया। उनके जीवन की घटनाए, उनकी विचार प्रणाली, कार्यप्रणाली, उनका आचार व्यवहार सब समझने के बाद म यह सोचने के लिए मजबूर हो गया कि यह सब वर्णन सच है या कवि कल्पना। मे अपनी दृष्टि से भैरूदानजी का विश्लेषण और मूल्याकन कर रहा था। मेरी मूल्याकन दृष्टि को स्पष्ट करने के लिए म मेरी ही पुस्तक 'व्यक्ति की तलाश' के पृष्ठ 9 की पक्तिया प्रस्तुत करना चाहूगा—

'आख की शर्म, सम्बन्धो का लिहाज और पारस्परिक कृतज्ञता का एहसास—इन तीना मूल्या के अभाव और अवमूल्यन ने व्यक्ति को व्यक्ति क स्तर पर तोड़ा है। उधर, व्यक्ति समाज सरकार की त्रयी के सामजस्य के अभाव ने व्यक्ति को सामूहिक स्तर पर तोड़ा है। अत जुड़कर और जोड़कर जीने की आस्था नई पीढ़ी के लिए एक प्रश्नवाचक बन रहा है।

इस प्रश्नवाचक का बहुत ही प्रत्यक्ष, मधुर, महिमामडित, विश्वास भरी सम्भावनायुक्त उत्तर श्री भैरूदान छलाणी का जीवनवृत्त दे रहा है जिसमे डॉ धर्मचन्द्र जैन की बहिन के विवाह प्रसग मे छलाणीजी का जुड़कर और जोड़कर जीने का वह स्वरूप उभरकर आया ह जिसे समाज मे देखने के लिए मेरी झुरती तरसती कलम ने सन् 1966 म एक जगह लिखा था—

ज्ञानी देखे, ध्यानी देखे देखे करतब धारी।
टूटा मानस जाड़ सके जा, मिला नहीं व्यवहारी।।

वह व्यवहारी अब मिला किन्तु मिला कहते हुए कलम कसक रही है।

यद्यपि अन्य अनेक व्यक्तियो के समाज सवी राजनेतिक तथा परोपकारी व्यक्तित्व मेरे जीवन म उल्लेखनीय रहे है, लेकिन भैरूदान छलाणी को मैने मेरा निदर्श व्यक्ति (Specimen Layman) स्वीकार किया ह। सन् 1976 77 में आकाशवाणी बीकानर ने वार्ता की एक सिरीज चलाई थी—जीवन के विभिन्न क्षेत्रा म व्यक्ति की तलाश जिसम तीन वार्ताए मेन प्रस्तुत की थी। उनम मैने यही प्रश्न खड़ा किया था कि व्यक्ति समाज सरकार की त्रयी म सकारात्मक सामजस्य भरा

जीवन जीने वाले निदर्श व्यक्ति क्या कभी मिलगे या तैयार किये जा सके? छलाणीजी के जीवन वृत्त मे मेरी आस्था को मजबूत होने का मानसिक सुख मुझे मिला कि निराश हताश होने की आवश्यकता नहीं। इस धरती पर ऐसे व्यक्ति को जब तलाशना सम्भव है तो तराशना भी सम्भव है।

मैने बचपन से समाज म दो अतियां (Extremes) देखीं। साधु सन्यासी बन जाने पर तो हम इतने त्यागी बैरागी बन जाते है तथा हममे इतना त्यागी बैरागी बन जाने की आशा की जाती है कि वृत्ति प्रवृत्ति सम्पत्ति सब का मोह छोड़ किन्तु गृहस्थी है तो इतने रागी भोगी बन कर जीवन जिएगे कि सारी रीति नीति की मर्यादाए ताक पर रखकर हर तरह का झूठ फरेब अनाचार भ्रष्टाचार और अनैतिक व्यवहार करने मे कोई कसर नहीं छोड़ेग और यह कह कर स्वय को क्षमा करते रहेगे कि भाई व्यापार म और गृहस्य म यदि सत्य सदाचार और ईमानदारी बरत तो चल नहीं सकता। मेरा किशोर मानस सोचा करता था कि मनुष्य के गृहस्थी और सन्यासी स्वरूप म इतनी गहरी खाई क्या? तब एक बार के लिए मेरा दृष्टि गाधी कबीर नानक आदि की तरफ जाती थी किन्तु मेरा मन शान्त सन्तुष्ट नही हो सका। ये सब अपनी अपनी भूमिकाओ मे असाधारण श्रेणी म पहुच गये। सत भी न बने न कहलाए और गृहस्थ सीमाओ म ही मरते दम तक ऐसा व्यवहार करे कि मनुष्य की सच्चाई, ईमानदारी, सूझबूझ धैर्य सहनशक्ति क्षमा आदि पवृत्तिया मूर्तिमान साकार हो उठे—ऐसा सम्भव क्यो नहीं?

भैरूदान छलाणी—एक वूलन मिल चलाने वाले उद्योगपति आसाम म व्यापार चलाने वाले पूजीपति गाव म खेती करने वाले भूमिपति मजदूरो कारीगरो नौकरो मुनीमो से काम लेने वाले मालिक अधिकार पति, लेकिन कहीं आचार विचार व्यवहार म झूठ नहीं फरेब नहीं, घाट की चिन्ता से मुक्त होने के लिए कोई छल कपट नहीं। ईमानदारी से जो मुनाफा मिल गया वह स्वीकार।। उसम से भी जमा पूजी अपने नाम यश के लिए किसी मन्दिर धर्मशाला या अस्पताल को दान मे नही दी बल्कि उस मुनाफ को जिनके बल बूते पर कमाया था उन्हीं मजदूरो नौकरो मुनीम गुमाश्तो, यहा तक कि दैनिक मजदूरी वाले हमालो मे वात्सल्यभरी भावना स उनके हित पर खर्च किया उनसे हट कर नहीं। डली बजेज वाले हमाल को भी बोनस दिया। जिस ट्रस्टीशिप को मखौल बना कर उड़ा दिया गया वह ट्रस्टीशिप भैरूदान छलाणी म जन्मजात प्रवृत्ति के रूप म साकार और सफल नजर आइ। साम्यवादी दर्शन म व्यक्तिगत अभिक्रम पर आघात पहुचा। व्यक्तिगत अभिक्रम बना रहे जिसकी बुनियाद पर पूजी अर्जित हो किन्तु जिनके बल पर अर्जन हुआ उन्ही मे उसका विसर्जन भी हो—बिना किसी विरोध के बिना किसी हड़ताल के, बिना किसी भय के। गाधी ने बहुत बढ़िया बात कही थी— यदि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता छीन ली जाय तो व्यक्ति स्वचालित यन्त्र बन जाता है। अबाध व्यक्तिवाद भी वन्य पशुओ का

यम है। सामाजिक सयम के आग स्वेच्छापूर्वक सिर झुकान म व्यक्ति और समाज नो का कल्याण है।

व्यक्ति और समाज क ऐस कल्याणकार जिसम मेरे निदर्श व्यक्ति की ल्पना हो उठी साकार—उस भैरूदान छलाणी का मेरा नमस्कार—इस कसक के य कि काश। मेरे उस निदर्श (Specimen) व्यक्ति से मेरी बात या मुलाकात ता ई होती।

मगरे का प्रकाश-स्तम्भ

■ धूडाराम प्रजापत ■

मगरा क्षेत्र के प्रसिद्ध गाव दियातरा म जन्मे सेठ श्री भैरूदानजी छलाणी का व्यक्तित्व और कृतित्व किसी से छिपा नही है। वे एक आदश महापुरुष एव युगपुरुष थे। आपकी कथनी और करनी म कोइ अन्तर नहा था। आप सादा जीवन उच्च विचार सिद्धान्त के हामी व पोषक थे। आपको गो प्रेम के अग्रदूत सत्य और अहिसा की प्रतिमूर्ति और पीड़ित मानवता के प्रतिनिधि के रूप म हमेशा याद किया जाता रहेगा।

आपका मगरा क्षेत्र के सभी लोगा से बड़ा स्नेह था। आप उनकी तकलीफ व पीड़ा को अपनी तकलीफ व पीड़ा समझते थ। समय समय पर जरूरतमद लोगो की मदद किया करते थे। व एक अच्छ सलाहकार थे। अत दियातरा गाव के निवासी ही नहीं बल्कि पास पड़ौस व दूरदराज के ग्रामीण व शहरी लोग उनस सलाह लेने आया करते थ। आप इस क्षेत्र के लोगा के लिए आशा की एक किरण थे।

शिक्षा के प्रति आपका बहुत लगाव था। वे चाहते थे कि लाग पढ़ लिख कर आगे बढ़े। इसीलिए उन्होने सन् 1951 52 मे दियातरा म प्राइमरी स्कूल के लिए भवन बनाकर उपलब्ध करवाया। आपके प्रयास से ही गाव म सन 1963 64 मे उच्च प्राथमिक विद्यालय खुला। आपने देखा कि आठवी पास करने के बाद गाव के गरीब छात्र आग की शिक्षा नहीं ले पात अत आपन गाव मे दसवीं तक का स्कूल खुलवाने का प्रयास किया। आपने सैकण्डरा स्कूल के लिए सन् 1966 67 म नया भवन बनवाया एव आपके प्रयास से ही गाव म सन् 1971 मे सैकण्डरी स्कूल खुला। आपने शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए व जरूरतमद छात्रा के लिए निवास, पुस्तका व शुल्क की अपनी तरफ से व्यवस्था की। मुझ याद ह कि इस काय के लिए भाइ श्री भवरलालजी व मेने

ऊट पर पास के गावो मे घूम घूम कर इस बात का प्रचार प्रसार किया कि आप अपने लड़को को शिक्षा के लिए दियातरा भेजे। हम उनकी शिक्षा सम्बन्धी व्यवस्था करेगे।

मेरा इनके परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मै इसे प्रभु की कृपा ही मानता हू कि एक अच्छे व आदर्श परिवार की मदद व प्रेरणा स मै भी कुछ बन सका। मैने जब आठवीं कक्षा गाव के स्कूल से उत्तीर्ण की तो मुझे अपना भविष्य अस्पष्ट सा लगा क्योकि गाव मे आगे की शिक्षा का कोई स्कूल नही था एव बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण करना मेरे सामर्थ्य से परे था लेकिन शीघ्र ही भाई फूसराज व भवरलालजी ने बताया कि मुझे पढ़ने के लिए बीकानेर चलना है व उनकी मिल मे रहना है एव पढ़ना है। मुझे बड़ा आश्चर्य व खुशी हुई कि यह सब कैसे हुआ? लेकिन यह सब उनकी ही कृपा थी। मै तीन वर्ष तक बीकानेर मे अध्ययन के समय इनके ही घर पर रहा। वहा मेरे अलावा तीन चार छात्र और भी रहते थे। उस समय आप गाव म रहते थे एव भाईजी भवरलालजी व फूसराजजी बीकानेर मे रहते थे। आप सप्ताह मे एक बार अवश्य बीकानेर आते थे तब हम अच्छी बाते बताया करते थे। हमारे लिए वह स्थान (बीकानेर वाला घर) साबरमती व सेवाग्राम आश्रम जैसा ही था। श्री भैरूदानजी व भवरलालजी हमारे गाधी थे। हमने इनसे बहुत कुछ सीखा। वहा मेरा कार्य गो सेवा का था। हम लोग 2 3 गाये वहा रखते थे उनका जिम्मा मेरा ही था। सेठजी जब भी बीकानेर आते थे तो वे कई बार मुझ से कहते थे गायो को अच्छा खिलाओ, पिलाओ, गर्मी मे स्नान कराओ। गायो की सेवा करना उत्तम सेवा है। मेरे लिए तो वास्तव मे ही वह गो सेवा अति उत्तम साबित हुई। वह सच्ची गो सेवा थी जो मै प्रात 5 बजे उठकर अपनी पढ़ाई व गऊ सेवा के कार्य मे लगता था।

वे चाहते थे कि हमारे गाव के नवयुवक ज्यादा से ज्यादा शिक्षित होकर रोजगार प्राप्त करे एव आगे बढ़े। इसका ज्वलन्त उदाहरण मै खुद व कई अन्य साथी भी है। जब मैंने 1967 मे सेकण्डरी परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की तो भाईजी श्री भवरलालजी मुझे पॉलिटेक्निक कॉलेज मे प्रवेश दिलाना चाहते थे। मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी कि मै तीन वर्ष का खर्च वहन कर सकता। भाईजी ने पिताजी से इस बारे मे विचार विमर्श किया एव स्वीकृति चाही तो उन्होने सहर्ष स्वीकृति दे दी। इसके पीछे उनका एक दृष्टिकोण यह भी था कि गाव का एक लड़का जब नौकरी लगेगा तो लोगो का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। यद्यपि परिस्थितिवश मै वह ऑवर्सियर का कोर्स नहीं कर सका लेकिन एक वर्ष बाद जब शिक्षक प्रशिक्षण लेकर गाव मे ही अध्यापक लगा तो ऐसा लगा मानो शिक्षा के क्षेत्र मे एक क्रान्ति आई हो क्योकि साधारण परिवार से नौकरी लगने वाला मै पहला व्यक्ति था और स्कूल म छात्रो की सख्या दुगुनी हो गई।

गाव के सभी व्यक्तियो पर उनका प्रभाव था। गाव के लोग उनकी प्रत्येक बात को मानते थे। वे गाव के सभी वर्गों व जाति के लोगो से स्नेह रखते थे। वे गाव को एक

पारिवारिक इकाई के रूप मे मानते थे। यही कारण था कि दियातरा गाव म लडाई झगड़ा व मुकदमे कभी नहीं हुए।

आपका गोवंश के प्रति प्रगाढ़ स्नेह था। आप जब भी कुछ समय के प्रवास के बाद राजस्थान (घर) लौटते तो आप सबसे पहले पशुओ के बाडे म जाकर उनके सिर पर हाथ फेरते और देखते कि उनकी सेवा मे कोई कमी तो नहा रही। जब जब अकाल पड़ता आप गोधन के लिए चारे पानी की व्यवस्था करते थे। दूर दूर स लोग बड़ी आशा करके उनके पास गोधन का बचाने के लिए मदद मागन आया करते थ। उनके हृदय म गायो के प्रति सच्चा प्रेम था। एक बार की घटना है कि (श्री माणकरामजी गेधर के अनुसार) बाठनोक के निवासियो ने दियातरा की सारी गाय फाटक मे डालदी। दियातरा वालो को बहुत गुस्सा आया और गाये फाटक से नहीं छुडाने की बात पर अड़ गए। उनमे काफी गाये दूध देने वाली थीं अत वे बछड़ो के लिए बुरी तरह से रभाने लगीं। सेठजी न यह स्थिति देखी उनसे यह नही सहा गया एव उन्होने अपने पास से फाटक शुल्क जमा करवाकर सारी गाया को मुक्त करवाया।

इसी प्रकार एक दूसरी घटना गगासिहजी के समय मे हुई। (बुजुर्गों के अनुसार) एक बार गर्मी के समय में तालाबा का सारा पानी सूख गया। कुए से बेला द्वारा पानी निकाला जा रहा था एव गायो को पिलाने के लिए कोठे म इकट्ठा किया जा रहा था लकिन उस समय क थानेदार ने गाया को पानी पिलाने मे बाधा डाली। प्यासी गाय चीत्कार करने लगीं। सेठजी से यह नहीं सहा गया, वे तुरन्त बैली चढ़कर कालायत गए व महाराजा श्री गगासिहजी स फोन द्वारा बात की व गायो की स्थिति बताई। कहते है श्री गगासिहजी ने उस थानदार को खूब लताड़ा। अत यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वे गो सेवा मे मा करणी व वीर तेजा से कम नहा थे।

वे बड़े मितव्ययी थे उनका सोचना था कि पैसे का उपयोग लोगा की भलाई व सुधार के लिए होना चाहिए। वे ऐशो आराम म कभी फालतू खर्च नही करते थे। व ग्रामवासियो की आर्थिक स्थिति का भी पूरा ध्यान रखते थे। जब सन् 1978 मे श्री भवरलालजी ने विद्यालय रजत जयती का मानस बनाया ता मैं श्री भूपसिहजी प्र अ व भाईजी उनसे स्वीकृति लने गए तो उनका यही कहना था कि विचार तो बहुत अच्छा है लेकिन समय अच्छा नहीं है क्योकि उस वर्ष अकाल का समय था। फिर भी उन्होने यही कहा कि जैसा आप लोग उचित समझे, करले।

राजा बलि की तरह उनके घर से कोई खाली हाथ नहीं लौटा। जैसी मदद चाही गइ वह उपलब्ध करवाई गई। इनके घर चाहे किसान बीज खाद के लिए आया चाहे बीमार आर्थिक मदद के लिए आया चाहे फकीर फेरी को आया या विद्यार्थी पुस्तक के लिए आया वही उसने पाया।

वे एक प्रकाश स्तम्भ (Light House) के समान थे। जिस तरह से समुद्र म भूले भटके जहाजो नाविको आदि के लिए प्रकाश स्तम्भ एक जीवनदाया व बहुत

उपयोगी वस्तु होता है उसी तरह आप दीन दुखिया भूल भटका व जरूरतमद व्यक्तिया के लिए प्रकाश स्तम्भ थे।

ऐसा ज्योतिपुञ्ज इस धरती पर से सदा सदा के लिए उठ गया। लेकिन उनके कार्यो को उनके त्याग और महान् गुणा को कभी नहीं भुलाया जा सकगा।

हम पूरा भरासा है कि उनके सुपुत्र श्री भवरलालजी व श्री फूसराजजी उन्हीं के बताए रास्ते पर चलकर उनके अपूर्ण स्वप्ना को पूरा करेंगे एव समाज व देश की सेवा मे सहयोग करते रहेंगे।

ऐसी आत्मा को शत् शत् नमन।

भैर भला थे जनमिया करग्या आच्छा काम।
जग थानै नहीं भूलसी जुग जुग अमर नाम।।
माई ऐहड़ा पूत जण जैहड़ा भैरूदान।
भुलाया नहीं भूलसी थ हा मगरै री शान।।

ऐसा मानव सदियो मे एक

■ मुरलीधर सक्सेना ■

दिनाक 6 सितम्बर, 1971 को दियातरा गाव के प्राथमिक विद्यालय म कार्यभार सभाला था। गाव म मै नया ही आया था इसलिए चाय पानी, भोजन और रहने आदि की व्यवस्था के बारे म चिन्तित था। स्कूल म पूरे दिन यही बात चलती रही कि म सेठ साहब से मिल लू तो मुझे कोई कठिनाई नहीं होगी। दिनभर सेठ साहब सेठ साहब सुनकर मै सोचता रहा कि सेठ साहब मरी सुख सुविधा का ध्यान क्या रखेंगे? लेकिन शाम को साथी अध्यापको के साथ मिलने गया तो उनसे मिलते ही मेरी सारी समस्याओ का समाधान हो गया। उस दिन म एक महापुरुष से मिला। वह भेट एक यादगार बनकर रह गई। आज तक उस महामानव को भूल नहीं सका। उन पिता तुल्य सेठ साहब की स्मृतिया को लिखते हुए म गद्गद् हो रहा हू। उनकी मधुर और भावपूर्ण इतनी स्मृतिया हे मेरे मन म कि कहा से शुरू करू—यह तय नहीं कर पा रहा हू।

साधारण रहन सहन और आदर्श उनका जीवन गाधीजी की विचारधाराओ से ओत प्रोत था। वे हमेशा खादी का ही प्रयोग करते थे। उनके रहन सहन को देखकर अजनबी आदमी को शक होता था कि क्या यही सेठ साहब है?

एक स्कूल मास्टर के रूप मे मेरा परिचय उनसे हुआ था। लेकिन उनका अपार स्नेह व्यक्तिगत रूप से मुझे और मेरे परिवार को इतना मिला कि आज वैसा स्नेह तो अतीत की याद बनकर रह गया। मुझे और स्कूल के स्टॉफ को घरेलू कठिनाई किसी भी प्रकार की होती तो जेसे परिवार के मुखिया के पास जाते है वैसे उनके पास जाते थे और कठिनाई तुरन्त दूर हो जाती थी। दूध छाछ और साग सब्जी तो उन के यहा से प्राप्त करने का जैसे हमे अधिकार ही मिला हुआ था।

स्कूल से सबधित या गाव के किसी भी राजकीय काम से आने वाले अधिकारी को सेठ साहब के यहा आतिथ्य पाना ही पड़ता था, जेसे वह उनका घर का सदस्य हो। इस तरह का सत्कार पाकर आतिथ्य पाने वाला धन्य धन्य हो जाता था।

विद्यालय की असुविधाए दूर करने को वे तत्पर रहते थे। स्कूल की मरम्मत, फर्नीचर अलमारी तथा छात्रो के बैठने की व्यवस्था का हमसे ज्यादा वे ध्यान रखते थे। 15 अगस्त और 26 जनवरी के पर्वो पर तो उनकी उदारता देखने लायक होती थी लेकिन उनकी उदारता या उनके द्वारा की गइ मदद का बखान उन्हे पसद नही था। वे आप कहा करते थे— मास्टरजी परमात्मा ने लक्ष्मी की कृपा दी है तो जन जन को उसका लाभ मिलना ही चाहिये क्योकि—

पानी बाढ़े नाव मे, घर मे बाढे दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये यही सज्जन को काम।।

किसी को कहने की बात नही

इस सस्मरण को लिखते हुए मै खुद पता नहीं कहा खो जाता हू। एक बार अकाल के समय दियातरा मे गो सेवा सघ की तरफ से चारे का डिपो सेठजी की देखरेख में खोला गया। चारा तूड़ी आदि का वितरण होता रहा, कोई ग्रामवासी सेठजी के पास आता और कहता कि मेरे पास इस समय पैसे नही हे ओर हमारी गाय भूखी खड़ी है तो सेठजी उसे तूड़ी दिलवा देते और कहते कि पेसे बाद मे दे देना। अगर वह ग्रामवासी पैसे दे देता तो ठीक है पर वे कभी उसका तकाजा नही करते थे। उधार लेन देन का हिसाब भी नहीं रखते थे जो पैसा इकट्ठा होता था उसे गो सेवा सघ मे भिजवा दते थे। वर्षा के बाद राहत कार्य पूरा होने पर उसका हिसाब हुआ तो आठ दस हजार की टूटत रही। अब यह कहने की बात नही है और बहुत ही कम लोगो को मालूम है कि वह रकम सेठ साहब ने चुका दी किसी को पता ही नही चला।

कही किसी को अपराधबोध ना हो जाये

सेठ साहब घर के बरतनो पर नाम नही लिखवाते थे। मैने कारण पूछा तो मै चकित रह गया उस दानवीर के सामने नत मस्तक हो गया। आप भी कारण जानना चाहेगे तो सुनिये—उन के घर मे दिन भर आने जाने वालो का ताता लगा रहता था तो बर्तन इधर उधर हो जाया करते थे और कभी खो भी जाते थे। यदि नाम लिखा

होगा तो बर्तन ले जाने वाले को अपराधबोध होगा। अतः वह बर्तन आसानी से उसका हो जाये—इस कारण नाम न लिखा हो तो ठीक रहे। कमाल की उदात्त भावना।

स्वस्थ जीवन का रहस्य

सेठ साहब के स्वस्थ जीवन का रहस्य था कि वे भोजन साधारण करते थे। पालक और लौकी ही खाते थे भाव चाहे कुछ भी क्यों न हो। मुझे याद है उन दिनों मे एक बार पच्चीस रुपये की एक किलो लौकी लाकर मैंने ही दी थी। सेठजी हमेशा कोलायत के कुए का पानी ही सेवन करते थे।

गुड का हलवा—एक मीठी याद

सेठ साहब के सुपुत्र श्री फूसराज का विवाह हुआ तो संयोगवश चीनी का कन्ट्रोल चल रहा था। लक्ष्मी पुत्र के लिए चीनी प्राप्त करना कठिन कार्य नहीं था फिर भी आपने गुड का शुद्ध हलुवा बनाया तो खाने वाले वाह वाह कह उठे।

दाम मेरे नाम लिख देना

एक बार अपनी पुत्री की शादी के मौके पर प्राथमिक विद्यालय मे मेहमानो को ठहराने की व्यवस्था की गई। विद्यालय के कमरे लकड़ियो से पटे हुए थे। सेठ साहब ने बढ़िया जूट की पट्टिया लगवादी। अगले दिन मजदूर उन जूट पट्टियो को उतारने लगे मैंने सेठ साहब से कहा कि छात्रो को आराम मिलेगा तथा विद्यालय की शोभा बढ़ेगी। तुरन्त ही उन्होने अपने भाई से कहा कि जूट पट्टिया मत उतारो दाम मेरे नाम लिख देना।

विद्यालय की प्रतियोगिताओ तथा पर्व त्यौहारो पर मिठाई तथा पुरस्कार के लिए राशि सेठ साहब की तरफ से होगी—यह तो जैसे एक स्थाई आदेश हो गया था। मदद के लिए कोई भी उनके पास गया वह खाली हाथ नहीं लौटा।

विद्यालय उनका ही परिवार

अध्यापको के लिए आवासगृह तथा माध्यमिक विद्यालय के लिए भवन एव शौचालयों का निर्माण करवाया। एक हजार रुपये की राशि से छात्र हितकारी संस्था की स्थापना की जो मेरी देख रेख मे चलती जिसके द्वारा छात्रो को सस्ती दरो पर पाठ्य सामग्री गाव मे उपलब्ध करवाई जाती। शिक्षा शिक्षक और शिक्षार्थी से उनका प्रेम हार्दिक था। अपने ही परिवार की भाति उनको सरक्षण देते रहे।

रजत जयन्ती का बीडा उठाया

विद्यालय की रजत जयन्ती का समारोह सेठ साहब ने आयोजित किया जिसमे पूर्व तथा कार्यरत शिक्षको व छात्रो को आमंत्रित किया गया। शिक्षको का सम्मान किया गया सारे समारोह का व्यय छलाणी परिवार ने वहन किया।

ऐसा मानव सदियो म एक

कहा तक वर्णन करू शब्दा की भी सीमा होती है परन्तु सेठ साहब के सपर्क म जो भी आया है वही जानता है कि दियातरा ही नहीं बल्कि आस पास के समूचे मगरा क्षत्र म ऐसा मानव सदियो मे एक ही हुआ है। भैरूदान छलाणी की कीर्ति गाथा सदेव अमर रहेगी। मेरा उन्हे कोटि कोटि प्रणाम।

ममतामूर्ति 'बापूजी'

■ सुशील प्रकाश गोयल ■

स्व भैरूदानजी छलाणी, दियातरा (बीकानेर) एक विलक्षण प्रतिभा वाले ऐसे व्यक्ति थे जो समाज मे विरले ही मिलते है। आप मृदुभाषी, गाधीवादी, समाज सुधारक शिक्षा प्रेमी कृषि विशेषज्ञ, कुशल व्यवसायी, आदर्श राष्ट्रभक्त नेता, सौम्यता की साक्षात् मूर्ति थे। आप एक अच्छे पुत्र तथा अच्छे पिता थे। आपके ससर्ग मे आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर आप म सन्निहित आदर्श उदात्त गुण—प्रेम करुणा दया सहानुभूति व सहयोग की अमिट छाप पड़े बिना नहीं रहती थी। इसीलिए आप बापूजी नाम से पुकारे जाते थे।

मुझ आपके प्रथम दर्शन का सौभाग्य 21 जुलाई 1962 को मिला जब मेरी प्रथम नियुक्ति प्रधानाध्यापक राजकीय मिडिल स्कूल दियातरा (बीकानेर) के पद पर हुई। यह सुनकर कि कोई प्रधानाध्यापक शाला म आया है, आप नगे पेर ही शाला पधारे और मुझ स अपने घर चलने का आग्रह करने लगे। उनकी भाषा विचार एव भावनाओ ने मेरे मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनके साथ बातचीत करने मे मुझे आनन्द के साथ ही साथ मेरा ज्ञानवर्धन भी बहुत होता था।

आप छुआछूत, पर्दाप्रथा व बाल विवाह के घोर विरोधी थे। हालाकि इस सबके कारण कुछ रूढ़िवादी ग्रामवासी उनसे नाराज भी हुए और कुछ अवसरवादी लोगों ने इसका कुछ नाजायज लाभ भी प्राप्त किया लेकिन श्री छलाणीजी ने इस सब का डटकर मुकाबला किया और कभी हार नहीं मानी। वह विरोधी विचारो से समझौता करना कायरता और पलायनवाद मानते थे। यह उनके अटूट विश्वास साहस एव विचार दृढ़ता का परिचायक है।

त्याग एव सहनशीलता के तो वे जैसे अवतार ही थे। पचायत समिति के प्रधान पद पर रहते हुए यात्रा भत्ता के रूप म एक नये पैसे का भी आहरण नही करना उनके आदर्श की सूचक है। परिवार या गाव म कभी कोई बात बन बिगड़ जाने पर उनका

मूल वाक्य होता था— कुल मिलार कोई खास बात कानी।' मैंने कभी उनका क्रोध में नहीं देखा।

कृषि क्षेत्र में उनका ज्ञान एवं अनुभव विशेष था। कृषि सुधार के लिए वे ग्रामवासियों को बहुत प्रेरित करते थे। अच्छे बीज प्राप्त करना व सुनियोजित ढंग से खेती करने में उनकी बहुत रुचि थी। इसी के तहत अपने खेत में नलकूप लगवाकर आधुनिक ढंग से कृषि करने का प्रदर्शन कर स्थानीय किसानों को प्रेरित किया।

अशिक्षा को दूर कर शैक्षिक विकास तो उनके जीवन का मूल मंत्र था। प्रौढ़ शिक्षा, बालकों की शिक्षा व नारी शिक्षा के प्रति उनका जीवन ही समर्पित था। दूर दराज दियातरा जैसे गाव में सैकण्डरी तक का स्कूल स्थापित करना उन्हीं की देन है। हजारीमल छलाणी चेरिटी ट्रस्ट द्वारा स्थानीय शाला की समस्त आर्थिक समस्याओं का निराकरण करवाना उनके शिक्षा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम का ही परिचायक है।

समन्वय की भावना आपका एक विशिष्ट गुण था। जैन मतावलम्बी होने पर भी हिन्दू धर्म में आपकी विशेष श्रद्धा थी। रामचरितमानस की अनेक चौपाइयां व दोहे आपको कंठस्थ थे। बातचीत के दौरान आप उनका खूब प्रयोग कर सामने वाले पर अपने ज्ञान व अनुभव की अमिट छाप छोड़ते थे। उनका कमरा भी अनेक पत्र पत्रिकाओं से भरा रहता था जिनका वह खूब अध्ययन करते थे।

आप एक अच्छे शिक्षा शास्त्री भी थे।

बात सन् 1963 के सितम्बर माह की है। कक्षा 6 के कुछ छात्रों ने बार बार कहने के उपरान्त भी फीस जमा नहीं करवाई थी गृहकार्य भी नहीं किया था तथा कक्षा में उद्दण्डता भी कर रहे थे। प्रथम कालांश था। कक्षाध्यापक ने कुछ छात्रों की पिटाई करने के बाद अधिक शरारती छात्रों को मुर्गा बनने का भी आदेश दे दिया। यह बात श्री भैरूदानजी छलाणी की सबसे छोटी पुत्री कु पुष्पा जो कक्षा चार की छात्रा थी और उनकी दोहिती कु बगी ने देखी। वे डर के मारे सहम गईं और छुट्टी के बाद घर जाने पर श्री छलाणीजी को सब बात कही। आप यह सुनकर बहुत दुखी हुए। प्रधानाध्यापक के नाम इस प्रकार पत्र लिखा—

प्रिय श्री गोयल साहब

मुझे यह सुनकर अत्यन्त दुख हुआ है कि अपने विद्यालय में बालकों को अमानुषिक शारीरिक दण्ड दिया जाता है जो किसी भी हालत में ठीक नहीं है आप परिस्थिति एवं स्थिति से मुझे अवगत कराये व आप इसकी पुनरावृत्ति तुरन्त रोकने की कृपा करें ।

दूसरे दिन मुझे वह पत्र मिला। पढ़ कर मैं सन्न रह गया मुझे दुख भी हुआ और शर्म भी। छुट्टी के तुरन्त बाद सदैव की भांति मैं छलाणीजी से मिलने गया। परन्तु पता नहीं क्यों चल आगे को रहा था पैर पीछे को पड़ते नजर आ रहे थे।

प्रतिदिन की तरह मिलने का उत्साह नहीं था। मेरे वहा पहुचने पर बोले, आइये मास्टर साहब, कैसा चल रहा है शाला कार्य? मैने वस्तुस्थिति से उन्हे अवगत कराया। कहने लगे, यह सब कुछ होता ही रहता है। गुरु पिता तुल्य है। बालक मे सुधार लाना उसका नैतिक कर्तव्य है। बस इतनी ही बात है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली मे शारीरिक दण्ड ठीक नही। आज भी उनकी इन बातो को याद करता हू तो मन श्रद्धा से झुक जाता है और उनकी तस्वीर मानस पटल पर अकित होती है। उनके बताये गये मार्ग पर ही चलकर हम अपने जीवन को नया मोड़ दे सकेगे, ऐसी मेरी आस्था एव विश्वास है।

जीवनयुक्त बनाम जीवनमुक्त

■ भूपसिह सोलकी ■

ससार मे सन्त प्रवृत्ति के व्यक्ति स्वभाव से ही जीवनमुक्त होते है। वे ऐषणा से दूर रहकर जो भी कार्य करते है उसमे परहित की भावना का ही प्राबल्य रहता है। उनके पास जो भी भौतिक सामग्री व साधन प्राप्य है वे मानव सेवा या अन्य प्राणियो की सेवा हेतु ही होते है। ऐसे महात्मा पुरुष की उनमे कोई आसक्ति नहीं होती।

ऐसे ही एक गृहस्थी सत का मुझे सान्निध्य प्राप्त हुआ—बीकानेर जिले की तहसील कोलायत के गाव दियातरा मे, उनका नाम था श्री भैरूदानजी छलाणी। मार्च 1976 के प्रथम सप्ताह मे मैने दियातरा के सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक का कार्यभार ग्रहण किया। प्राथमिक शाला के प्रधानाध्यापक मुरलीधरजी सक्सेना और शिक्षक वर्ग ने मुझे यह जानकारी दी कि यह विद्यालय इसका भवन चारदीवारी आवासीय क्वार्टर्स और छात्रावास आदि सब यहा के सेठ भैरूदानजी के ही आर्थिक सहयोग एव अथक प्रयास का परिणाम है। सेठजी के दर्शन करने की मेरी प्रबल इच्छा हुई। बस दूसरे दिन शाम को ही मै उनके पास पहुच गया। एक वयोवृद्ध पुरुष साधारण वेश भूषा मे कमरे मे गद्दे पर बैठे थे। मैने चरण स्पर्श कर उन्हे प्रणाम किया। उन्होने वात्सल्यपूर्ण शब्दो मे मुझे बैठने को कहा। मै बैठ गया तो मेरा परिचय प्राप्त करने के बाद यही पूछा कि आपकी निवास व्यवस्था कैसी रहेगी? मैने सक्षेप मे उन्हे बताया कि मेरे पास न तो चारपाई है और न ही भोजन बनाने के बर्तन। उन्होने केवल इतना ही कहा— सब कुछ हो जाएगा।

थोड़ी देर मे ही एक बालक ने आकर कहा— नानाजी हैडमास्टर साहब को भोजन के लिए अन्दर बुलाया है। मुझ से कहा— जाओ भोजन करो, अन्य बात तो

होती ही रहेगी। मैं भोजन करने अन्दर गया तो सरल स्वभाव की एक वयोवृद्ध माजी ने बड़े स्नेहपूर्ण शब्दों में कहा— आइये। बैठो और भोजन करो। चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त कर भोजन करने बैठ गया। जीवन में पहली बार विविधता लिए हुए ऐसा स्वादिष्ट भोजन प्राप्त हुआ। भोजन करने के बाद उस माँ ने भी मेरे रहने सहने के बारे में पूछा। लगभग एक घंटे वहाँ ठहरा परिवार के अन्य सदस्यों से भी परिचय हो गया।

सामाजिक उदात्त सेवा भाव

उसी शाम को चारपाई और दूसरे दिन भोजन पकाने खाने के बर्तन मेरे पास पहुँच गये। यह तो मेरे स्वार्थ की पूर्ति हुई किन्तु इस सारे व्यवहार के पीछे क्या था? एक सामाजिक उदात्त सेवा भाव।

सब के बापू

यह तो मेरी प्रथम मुलाकात का वर्णन है अपने छः साल छः महीने के दियातरा प्रवास में मैं श्री भैरूदानजी छलाणी को बापूजी ही कहता था क्योंकि परिवार के सभी व्यक्ति उन्हें बापूजी कहते थे। इस सामीप्य के कारण किसी भी काम में सलाह लेने के लिए मैं तुरन्त उनसे मिलने जाता था अन्यथा आठ दस दिन में एकबार तो उनके दर्शन करने अवश्य जाता था।

समस्याओं के समाधान की विचार प्रणाली

छलाणीजी का धैर्य और शान्तिपूर्वक समस्याओं का निराकरण करने का तरीका जो मुझे अनेक अवसरों पर देखने को मिला उससे मुझे जीवनयापन करने की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हुई। सेवानिवृत्त होने के बाद गत पन्द्रह वर्षों में भी मैं अनेक समस्याओं परिस्थितियों का सामना बापूजी की विचार प्रणाली के आधार पर कर सका।

सम्पर्क ही सत्सग

धार्मिक सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में भी उनकी गहरी पैठ थी। वार्तालाप में अल्प शब्दों का प्रभावी प्रयोग करके विषय वस्तु की व्याख्या करना उनका दैवी चमत्कार था। उनकी ही प्रेरणा से मैने दियातरा में रहते हुये रामचरित मानस के तीन चार काण्ड कण्ठस्थ किये थे। गीता को भी पढ़ने और याद करने की ठानी मुझे सफलता भी मिली।

भरत सम भाई

छलाणी परिवार में श्री भैरूदानजी के छोटे भाई श्री आशकरणजी है जो बाहर व भीतर दोनों से ही साधु स्वभाव के है। रामचरितमानस में भरत का स्थान राम से भी ऊँचा कहा गया है। यही भाव श्री आशकरणजी (महाराजजी) में दृष्टिगोचर होता है।

बास न सुवास पाठ विधि पूर्वक

एक बार उन्होने अपने घर रामायण के अखड पाठ का कार्यक्रम रखा। मार्च का महीना था। शाम को महाराजजी ने मेरे पास एक व्यक्ति भेजकर मुझे अखड पाठ के लिए बुलाया। मैने अपनी स्थिति महाराजजी को स्पष्ट कर देने को उसे कह दिया क्योकि मै दारू पिये हुए था। करीब आधा घट बाद वही व्यक्ति फिर आया और बोला कि किसी भी स्थिति मे हो, आप चलिये। मैने स्नान किया और महाराजजी के आगन मे उपस्थित हो गया। उनका आदेश हुआ कि मै रामचरितमानस का पाठ आरम्भ करू।

मैने बालकाड का प्रथम मास पारायण यथास्थान बैठकर विधिपूर्वक पूर्ण किया और आज्ञा प्राप्त कर वापस करणी माता के मदिर मे चला गया। सवेरे चार बजे फिर दो घट के लिए पाठ करने गया, पाठ के पूर्ण होने पर किसी ने मुझे बताया कि कुछ लोगो ने महाराजजी से आपत्ति की कि हैडमास्टर दारू पिये था फिर भी आपने उससे पाठ प्रारम्भ कराया—यह ठीक नहीं हुआ। उन लोगो का उत्तर मिला— अरे, मुझे तो दारू की बास या सुवास कुछ भी नहीं ज्ञात हुई। आप लोग यह बताइये कि पाठ तो विधिपूर्वक हुआ? लोग अनुत्तरित हो गये। मै ऐसा क्या लिख रहा हू? आप सभी पढ़ने वालो तथा सामाजिक लोगो को सीख देने के लिए कि महाराजजी आशकरणजी कितने उदात्त एव साधु प्रवृत्ति के धनी है कि वे तो दोष न देखकर व्यक्ति का कार्य ही देखते है। मुझे उनका भी सान्निध्य मिला। जीवन मे दोनो भाइयो का चरित्र एक से एक बढ़कर अनुकरणीय है। मैने कभी भी उनके मुख से किसी की आलोचना नहीं सुनी। चाहे बात किसी भी विषय की हो—वह सदैव शुद्ध रूप ही होती थी।

श्री भैरूदानजी के बड़े पुत्र श्री भवरलालजी भी बड़े विद्वान, गभीर समाज सेवी व्यक्ति है। वे भी मेरे दुर्गुण जान बूझकर माफ करते रहे। उन्हीं की प्रेरणा से मैने भगवद्गीता को कठस्थ किया है।

विद्यालय के लिए ऐसा परिवार

हर साल 15 अगस्त और 26 जनवरी को माताजी के द्वारा विद्यालय के सारे स्टाफ को घर बुलाकर भोजन कराना इस परिवार का एक अटल नियम था। विद्यालय मे नाटक का आयोजन करना, वॉलीबॉल प्रतियोगिता कराना और फिर छात्रो को पुरस्कार वितरण करना—यह परपरा श्री भवरलालजी द्वारा निरन्तर सम्पन्न होती रही। ऐसी भावना भी सम्पूर्ण जीवन मे केवल इसी परिवार मे मुझे देखने को मिली।

कर्म कर फल की चिन्ता मत कर

मैने तो आज तक धर्माचार्यो के भाषणो मे और बुद्धिवादियो के केवल शौकियाना सूक्ति (कोटेशन) वाचन प्रेम के दौर मे यह वाक्य सुना है कि कर्म करो

फल की चिन्ता मत करो लेकिन इसे शब्दश अपनाया किसने ? लेकिन भैरूदानजी छलाणी के जीवन म मुझे यह साक्षात् साकार देखने को मिला जिसे मै भूल नही सकता। गाव से उत्तर की ओर उनका एक कृषि फार्म है। खेत को बीज देना बल्कि बेहतर से बेहतर उन्नत बीज काम मे लेना वे अपना कर्तव्य समझते थे। उसके बाद क्या पेदावार हुई कितनी हुई और उसका क्या उपयोग हुआ उसकी जानकारी जरूर रखते थे लेकिन इस सबका महत्त्व उनकी दृष्टि म नहीं के बराबर था। नानक की तरह—

राम की चिड़िया राम का ही खेत खाओ री चिड़िया भर भर पेट'

की कहावत ही छलाणीजी पर चरितार्थ होती है।

नीलकठ भैरूदान

मैने इतने साल उनके साथ रहते हुए अच्छी तरह देखा कि बड़े से बड़े अपमान को भी वे शिव के हलाहल की भाति आत्मसात् कर लेते थे और तनिक भी प्रतिक्रिया या व्यथा का आभास प्रगट नहीं होने देते थे। एसे थे प्रातःस्मरणीय वदनीय मार्गदर्शक प्रेरणा के स्रोत श्री भैरूदानजी छलाणी।

शिक्षा और सस्कार

भैरूदानजी हमेशा मानवीय भाव प्रगट करते थे यानि जीवन को सकारात्मक दृष्टि से ही देखते सोचते समझते और प्रस्तुत करते थे। वे साफ कहते थे—कोई भी पुरुष या स्त्री दुष्ट नहीं होता। कुछ परिस्थितिया उसे रास्ते से भटका देती हैं। साधु सत और समाज सुधारक तथा उत्तम शिक्षक ऐसे भटके हुये लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करते रहते हैं। अत समाज म सतुलन बना रहता है। यदि शिक्षा का सुचारु रूप से तथा मूल्यकेन्द्रित (वेल्यूज आरियन्टेड) प्रचार प्रसार किया जाये तो अनेक कुरीतिया तथा दुर्विचार धीरे धीरे नष्ट होते चले जायेंगे। एसी थी उनकी सकारात्मक आस्था और जीवन के सत्य शिव सुन्दरम् के प्रति विश्वास।

अपरिग्रह और ट्रस्टीशिप साकार

जब मै दियातरा आया ओर बापूजी को समीप से देखा परखा तो यह भावना दृढ हो गई कि ये तो अपरिग्रह की साक्षात् मूर्ति हैं। सभी प्रकार की वस्तुओं के भडारण के बाद भी वे केवल शरीर रक्षा हेतु कम से कम वस्तुओं का स्वय के लिए प्रयोग करते थे। खादी की एक दो कमीज धोती एक कोट व कम्बल घर की अन्य वस्तुओं से कोई भी लगाव उन्हे नहीं था। वे अन्य उपयोगी वस्तुओ को समाज की बताते थे तथा समाजहित मे उनका उपयोग हो ऐसी धारणा रखते थे।

आत्मा को साक्षी मान कर कह रहा हू

मैने जो भी लिखा है वह यथार्थ है। यह स्वीकार करने म मुझे सकोच नहीं कि किसी महान व्यक्ति के बारे म कुछ लिखने का मेरा प्रथम प्रयास है। भैरूदानजी के

परिवार म सभी सदस्य अत्यन्त ही विनीत, दयालु व सेवाभावी है और मे अपनी आत्मा को साक्षी मानकर कह रहा हू कि मने एसा सौम्य, सभ्य, सुसस्कृत और उदार परिवार अपने जीवन मे इसस पूर्व कभी नही देखा। यदि मरे लख को स्थान मिल सकेगा तो पूज्य बापूजी भैरूदानजी को मेरा नमन् स्वीकार हो जाएगा।

मगरा के बापू

▪ भैराराम उपाध्याय ▪

गो सेवा

1 अकालो के समय मे स्व श्री भेरूदानजी (बापू) ने अपने ट्रस्ट गो सेवा सघ तथा स्वय के द्वारा सहयोग से मगरे का पशुधन बचाया। एक अकाल के समय मे गुजरात के लोग करीबन 3000 पशुधन को लेकर दियातरा म से पश्चिम से पूर्व की तरफ गुजर रहे थे। उस समय उनकी गाये भूखी थीं, भूख के मारे चलने मे असमर्थ थी। उस समय न तो सरकारी चारा केन्द्र ही खुले थे न ही गाव मे अन्यत्र कहीं तूड़ी घास उपलब्ध था। जो उपलब्ध भी था तो भाव 300 रुपये प्रति क्विंटल था जो पशुपालको की सामर्थ्य के बाहर था। गुजरात के पशुपालको ने सेठ साहब श्री भेरूदानजी से निवेदन किया कि गायो के खाने के लिये द नहीं तो पशु मर जायेग। सठजी ने अपने घास चारे के गुन्जार खोल दिये और कहा पशुओ को खिलाओ। पशुपालका स उस महगे घास की कोई कीमत सेठजी ने लेने से मना कर दिया। 100 125 पशुपालक सेठजी की दयालुता से चकित रह गये। पशु बच गये।

2 गाव के किसी भी बेसहारा पशु का उन्हाने भूख से मरने नहीं दिया। उसे अपने घर लाकर रखते पालत और पशुपालक के आने पर उसे सौप देते। यह थी उनकी नि स्वार्थ गा भक्ति।

3 उन्होंने गा सवर्द्धन एव सरक्षण के लिय गा शालाआ का सुव्यवस्थित सचालन किया।

कृषि व उन्नत बीज

श्री भेरूदानजी छलाणी कृषि के पारगत पडित थे। अपने खेत पर उन्नत बीजा का परीक्षण स्वय प्रयाग करके करते थे। स्वय उत्तम बीज विकसित करके कृपका को वितरित करत और उपयाग के लिये प्रेरित करते। मित्र क कृपका को आवश्यकतानुसार सही मार्ग दर्शन और समुचित सहायता मुक्त हस्त स करते।

मतीरा गवार की आण्टी फली लम्बी फली आदि के उन्नत बीज उनकी उल्लेखनीय देन है।

भेदभाव व छुआछूत को खत्म करना

स्व छलाणीजी ने बापू के सिद्धान्तों के अनुरूप आमजन में व्याप्त छुआछूत एव भेदभाव को मिटाने के लिये सत्याग्रह किया तथा विचार परिवर्तन के लिये सास्कृतिक कार्यक्रम सगोष्ठी आदि के आयोजन किये। लोगो मे गाव के सुधार और देशप्रेम का भाव जाग्रत किया।

देश की जानकारी ओर मार्ग दर्शन

वे देश प्रान्त और अचल में हो रही राजनैतिक आर्थिक घटनाओ गतिविधियो की रेडियो अखबार आदि से पूरी जानकारी रखते एव अपनी पैनी दृष्टि से उनका विश्लेषण करते थे। सभी को उससे अवगत कराते रहते थे। क्षेत्र के लोग उनके विचार जानने तथा जानकारी लेने व परामर्श लेने आते थे। वृद्ध, युवा बालक सभी उनसे योग्य मार्ग दर्शन एव सहायता प्राप्त करते थे। वे हरेक मिलने वाले से पहले घर परिवार की कुशल क्षेम समाचार पूछते जिससे सभी को शाति और शक्ति प्राप्त होती। व हमेशा स्मरणीय रहेग।

धैर्यवान

1 श्रीमान् छलाणीजी को कभी भी कठिन से कठिन किसी समस्या या घटना के समय भी अपने धैर्य से विचलित होते नही देखा। एक बार अकाल के समय मे ही आपके पिछले पुराने बाड़े मे तूड़ी तोलने मे सिडा निवासी रामलाल पूनिया कार्यरत था जो आज तहसीलदार पद पर कायरत है। उस बाड़े की तूड़ी ने किसी कारणवश आग पकड़ली। एक आदमी दोड़ा दौड़ा आया कि सेठ साहब तूड़ी में आग लग गयी। मै उस समय उनके पास ही बैठा था। तब सेठजी ने बड़े धैर्य से कहा कि अपनी तूड़ी है तो बच जायगी अन्यथा जल जायगी परन्तु गाव व जनता की काटो की बाड़े है आग को आगे नही बढ़न देना तुरन्त यह काम करो। कितनी गहरी सोच है कि मेरा नुकसान चाहे हो भी जाये परन्तु जनता का नुकसान नही हो।

2 एक अकाल के समय मे पशुधन को बचाने के वास्ते एक साथ आठ दस ट्रक तूड़ी गो शाला के पास बाड़े मे जो रोड़ पर है खाली करवा लिये थे। दूसरे ही दिन आधी बड़ी तेज गति से आ गयी। दोड़ा दोड़ा एक आदमी आया कि तूड़ी उड़ रही है। बड़े धैर्य से कहा कि गो के भाग की कहीं नहीं जायगी। यदि जायगी तो कोई चिन्ता न करो।

शिक्षा को बढ़ावा देना शाला के छात्र छात्राओ को पुरस्कृत करना

1 स्व सेठ छलाणीजी शिक्षा की दृष्टि से अमर है। जो प्राथमिक विद्यालय से सैकण्डरी विद्यालय तक क्रमोन्नत हुई है सारी उन्हीं की देन है। विद्यालयो के

निर्माण मे अधिकाशत उन्हीं का ही धन लगा है परन्तु आम जनता से भी सहयोग लिया जिससे सभी को जुड़ाव अनुभव हो एव यह नहीं लगे कि केवल उन्हीं ने ही सस्था बनाई है। उन्होने सदैव सामूहिक भावना को विकसित किया। प्राथमिक व सैकण्डरी विद्यालय म आभा स्मृति प्रतियोगिता स छात्र छात्राओ को पुरस्कृत करना तथा गरीब छात्र छात्राओ का सहयोग प्रदान करना उनका स्वाभाविक कार्य था। उनके पुत्र भी शैक्षिक सहयोग क क्रम को यथावत विकसित कर रहे है।

2 प्राथमिक विद्यालय के प्रागण मे जिला स्तर की सगोष्ठी व शिक्षा विकास चर्चा म करीबन 300 कर्मचारी लोग इकट्ठे हुए। उन्होने अपनी तरफ से भोजन सेवा की। आतिथ्य सेवा के कई अन्य उदाहरण भी है जो हमेशा उनकी याद दिलाते है।

सरपच व प्रधान कार्यकाल

स्व छलाणीजी ग्राम दियातरा के सरपच व कोलायत तहसील के प्रधान पद पर भी रह चुके है। पद प्रतिष्ठा व नाम की लेश मात्र भी अपेक्षा रखे बिना ही तहसील व गावो की जनता की जो नि स्वार्थ अहर्निश सेवा की वह ग्रामजन द्वारा सदैव ससम्मान याद की जाती है।

'मगरा रा बापू'

मगरा माही जन्म लिया तब छलाणी वश उज्ज्वल कियो।
गौ वश की सेवा करके मगरे म नाम उजागर कियो।।1।।

गाधी जसे सत्यवादी मगरे रा बापू अमर होय गया।
सादा जीवन उच्च विचार पाठ भला पढ़ाय गया।।2।।

सेवा समता शिक्षा सू भेदभाव अज्ञान मिटायो।
उदार दान न्याय बुद्धि सू अकाल, कलह क्लेश निपटायो।।3।।

गाधी जैस अम्बर चरखे गावा म दिखलाय गये।
उन्नत बीज खेतो म बोना हमको सिखाय गये।।4।।

खादी, भूदान, गोहित मे सदा आप अग्रणी रहे।
सत्य अहिसा के मार्ग पर चरण नित्य बढ़ते रहे।।5।।

सरपच स प्रधान बनकर प्रथम नाम चमकाय गया।
मगरे के जनहित खातर तन मन धन छलकाय गया।।6।।

अपने जीवन कृत्यो मे दण्ड नाम को टाल गये।
गुणो मे धीरज है गुण बड़ा पाठ हमे सिखाय गये।।7।।

अतिम श्वास श्वास तक गो सेवा का गान किया।
उसी गान के सहारे स्वर्गधाम प्रयाण किया।।8।।

सत विनाबा और गाधी से भेरव हमे छोड़ गये।
उनकी करणी की कृतज्ञता म लाखो आसू बह गये।।9।।

गाव गाव और मगरा माही बापू बापू पुकार रहिया।
इस पुरुषोत्तम बापू का उपाध्याय भेरव ने गुणगान किया।।10।।

मगरा के आदर्श प्रधान

■ सोभागमल सिघवी ■

श्री भैरूदानजी छलाणी साहब को सन् 1958 से जून 1960 तक मुझे बहुत नजदीक से देखने का सुअवसर मिला उस वक्त मैं कोलायत विकास खड का प्रथम विकास अधिकारी था।

श्री छलाणी साहब सात्विक प्रवृत्ति वाले गाधीवादी विचारधारा और विनोबाजी के अक्षरश अनुयायी थे। दिन रात गरीबा दलिता के विकास की ओर अपना सम्पूर्ण ध्यान रखने वाले मसीहा थे।

विकास अधिकारी के नाते मैने देखा कि पचायत समिति के प्रधान के रूप म छलाणीजी समिति के सभी सदस्या को साथ म लेकर उनका विश्वास प्राप्त करके चलते थे। समस्त योजनाओ को सबधित सभी सरपचो, ग्रामवासियो और ग्राम सभाओ द्वारा पूर्ण कराना उचित समझते थे। श्री छलाणी साहब प्रत्येक कार्य का निरीक्षण स्वय करके स्वय कार्य योजना बनाते थे।

वे बहुत अनुभवी एव पूर्णतया मानवीय दृष्टिकोण के धनी रहे। पुरानी रूढ़ियो से परे हर एक क्षेत्र म अपने स्वय के सोच विचार से किसी भी कार्य को नया अजाम देते थे।

छलाणीजी दूरदर्शी दृष्टि से निष्पक्ष निस्वार्थ भाव से नियम कानून के अनुसार कार्य करते और करवाते थे। मुझे वे हमेशा मार्ग दर्शन देते रहे कि मै सबधित विषय के विशेषज्ञ (Subject Matter Specialist) और तकनीकी अधिकारियो की राय से अपना काम करू। उनके इस आग्रह ने मेरी विचार प्रणाली और कार्य प्रणाली को बहुत प्रभावित किया।

उनका जीवन सरल गरिमामय, सार्वजनिक जनहित के कायो की आर विशष ध्यान देने वाला था। उस समय प्रधान श्री छलाणीजी क सहयोग स उनके ग्राम दियातग तथा कोलायत मगरा तहसील के अन्य ग्रामो मे डोला बदी मेड़ बदी के विशष कार्यक्रम आयोजित किये गये। रेगिस्तान म बिना पानी के कणक/गेहू की खेती आरम्भ करना और उस म सफलता प्राप्त करना बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। उन कार्यक्रमो का उल्लख आकाशवाणी गजस्थान की न्यूज म प्रसारित किया गया।

कोलायत मगरा तहसील म भेड़ ऊन का विशेष प्रोजेक्ट लिया गया। जिसके सभी टारगेट (लक्ष्य) पूर्ण हुए। पशुपालन एव गोवश सवर्धन का विशेष प्रोजेक्ट लिया गया। यह सब छलाणीजी साहब की सूझ बूझ से हुआ।

छलाणीजी का सामाजिक दृष्टिकोण अद्वितीय था। समाज मे ऊच नीच उन्हे पसद नहा थी। छुआछूत से कोसो दूर थे। असली गाधीवादी दृष्टि उनके सपूर्ण जीवन के प्रत्येक कार्य म विशेषतया दृष्टिगत होती थी। उस समय हमारे समस्त जिला स्तर अधिकारी भी छलाणीजी से राय लेकर, उनसे पृछकर जिले की योजना बनाया करते थे।

कोलायत विकास खड के महिला विकास क कार्य हेतु समाज कल्याण विभाग का अलग स बजट और फड था। महिलाओ की शिक्षा एव उनके उत्थान की योजनाओ म कोलायत विकास खड अग्रणी रहा। चरखा, खादी, धूम्ररहित चूल्हे रात्रि प्रौढ़शाला तथा कृषि विकास की नई तकनीक को प्रोत्साहन देने म भी कोलायत विकास खड अग्रणी रहा—यह छलाणीजी की ही देन थी।

वर्षा ऋतु के समय जब खेतो म फसल बोने, बिजाई करने, आदि के काम अधिक हुआ करते हैं तब उस समय गावो की शालाओ के विद्यार्थियो को छुट्टियो की जरूरत पड़ती थी अत गर्मी की छुट्टिया के बजाय वर्षा म छुट्टिया दिलाने का उनका सोच मौलिक था युक्तिसगत था और गर्मी की छुट्टियो के बजाय वर्षा ऋतु म छुट्टिया दिलाने म वे अग्रणी रहे।

एक बार मेरी धर्मपत्नी ने बीकानेर म मोतियो का जेवर बनाया तो छलाणीजी ने यह देखकर सुझाव दिया कि यह काम आपन ठीक नहीं किया, चूकि इससे समाज मे ईर्ष्या बढ़ेगा ऊच, नीच, घमड और अमीर, गरीब के बीच खाई पैदा होगी इसलिए आप को इस तरह गहने बनाने का शौक नहीं रखना चाहिये। उनकी दृष्टि म मनुष्य का जीवन सरल रहना चाहिये। तड़क भड़क उन्हे पसद नही थी।

छलाणीजी ने विकास खड की जीप कभी भी अपने स्वय के कार्य के लिए तथा व्यक्तिगत कार्य मे कभी काम मे नहीं ली। उस समय जिले मे उन्होने आदर्श स्थापित किया जबकि अन्य कई स्थानो पर जीप का उपयोग शिकार खेलने एव व्यक्तिगत कार्य के लिए खूब हुआ करता था।

छलाणी साहब ने पचायत समिति के बजट से कभी पारिश्रमिक प्राप्त नहीं किया बल्कि वे अपनी स्वय की धनराशि भी विकास कार्यो म खर्च करते रहे।

कोलायत का मेला हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को लगता है। जब वे प्रधान थे तब मेले की सारी व्यवस्था स्वय देखते थे। इस मेले म पजाब, हरियाणा राजस्थान और उत्तर प्रदेश के हजारो लोग सरोवर म स्नान करन के लिए तथा कपिलमुनि के दर्शन हेतु आया करते है। छलाणीजी न अपने प्रधान पद क काल म इस मेल की व्यवस्था नए ढग से कराने के प्रयास किये। जनहित का पूरा ध्यान रखा। आकाशवाणी से प्रसारण करवा करवा कर जन जागृति की ओर ध्यान दिया। एसी महान् विभूति को मेरा शतश प्रणाम।

गाधी की प्रतिमूर्ति

■ आर के रगा ■

सन् 1959 से 1961 तक करीब 2 वर्ष मेरा कोलायत पचायत समिति म रहना हुआ। जब कार्य ग्रहण किया यह कार्यालय विकास खड था। सन् 1959 के 2 अक्टूबर को सत्ता के विकेन्द्रीकरण के अनुसार पचायत समिति बनी। सर्वसम्मति से श्री भैरूदानजी प्रथम प्रधान बने। मुझे उनके साथ नागौर पचायत राज सम्मलन मे जाने का अवसर मिला। रास्त मे वे बहुत उत्साहित थे।

उस समय मगरा अक्सर अकालग्रस्त रहता था। राजस्थान नहर आने की बात दूर थी। अकाल और पयजल का सकट इसान और पशुआ क लिए भयावह था। यह क्षेत्र डाकुआ से भी आक्रान्त था। रोजगार आशिक रूप से अकाल राहत कार्यों से मिलता। यहा भेड़, पशुपालन मुख्य धधा था। आशिक वर्षा से पशुआ को घास उपलब्ध होता। घी के लिए मगरा प्रसिद्ध था।

भैरूदानजी को ग्राम्य विस्तार की कठिनाइयो की बहुत समझ थी। वे बैलगाड़ी या ऊट सवारी स गाव गाव की सार सभाल करते। पचायत समिति की जीप या अन्य सुविधा का उन्हे कोई आकर्षण नहीं था। वे त्याग एव सादगी से जीवन भर चले। हालाकि उनका आसाम मे बड़ा व्यवसाय था लेकिन वे तन मन धन से मगरे के विकास मे समर्पित थ। मैने दो साल तक इन्हे मगरे म घूमते राहत देते ही देखा।

तालाब म जब पानी कम हो जाता तो कीड़े पानी में पैदा हो जाते। इस पानी क सवन से गाय भेड़ मरने लगते। उन्होने पशु पालन विभाग से विशेषज्ञ टीम बुलाकर

रोग ग्रस्त पशुओ के टीके लगवाये। यहा की टाकला नस्ल की भेड़ उन्नत मानी जाती है। इसे रोगमुक्त रखने के लिए विशेष टीके लगाने की व्यवस्था की।

गजनेर म एक पावरलूम फैक्ट्री (शक्तिचालित कर्घा) थी, जहा स्थानीय कारीगर काम करते—इसके माल की कम बिक्री से भी दु खी थ तथा बीकानेर के कार्यालयो एव खादी सस्थानो को बिक्री के लिए प्रोत्साहित करते।

पेयजल का कोलायत क्षेत्र म बड़ा अभाव था। उन्होने ग्रामवासियो को घरो म कुण्ड बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रयास एव प्रभाव से एक अकाल म स्व बद्रीप्रसादजी सोढ़ाणी अकालग्रस्त गावों की स्थिति देखने के लिए आये। श्री भैरूदानजी ने उनको अकाल की भयावह स्थिति स अवगत कराया और उन्होने श्री सोढ़ाणीजी को स्थिति का प्रत्यक्ष जायजा लेने मेरे पास कोलायत भेजा।

शाम को करीब पाच बजे श्री बद्रीप्रसादजी सोढ़ाणी मेरे कोलायत आवास पर आये। उनके पास एक नई जीप थी। उन्होने अपना ससर्ग खादी सस्थानो से बताया। वे बोले भाई क्या मुझे कोई दरिद्र नारायण दिखा सकते हो ?' मै उन्हे झझू की तरफ किसी गाव को दिखाना चाहता था। हमारी बात अग्रेजी म हो रही थी। उनकी बातचीत से अवगत हुआ कि वे छलाणीजी से परिचित थे व प्रभावित भी थे। जीप एक धोरे पर आकर रुकी जिसके नीचे की तरफ एक छोटा सा गाव बसा हुआ था। उन्होने कहा— अरे भाई यहा कहा ले आये ? यह तो उजाड़ सा है वैसे कयास ठीक था क्योकि न तो वहा बच्चे खेल रहे थे न वहा स्त्री पुरुषो की आवाज थी न ही शाम को निकलने वाला धुआ वहा था। मेरे अनुरोध पर वे जीप को गाव की झोपड़ियों के पास ले आये। हम एक घर म गए। एक बूढ़ा आदमी सोया हुआ था, एक औरत भी उसके पास बैठी थी। बच्चे भी गुदड़ी मे सोए पड़े थे। राम राम कर उनसे पूछा— अकाल पड़ा हुआ है, क्या खाते हैं? हमने उनका अनाज भडार देखना चाहा। उन्होने मटकियो की तरफ इशारा किया। सोढ़ाणीजी ने मटकी को टटोला—वहा मुश्किल से दो एक मुट्ठी बाजरी थी और घरों की भी यही हालत निकली। सोढ़ाणीजी गभीर हो गये चेहरा द्रवित लगा। हम चुपचाप मेरे आवास पर आये। उन्होने दो रोटी किसी तरह खायी और रवाना हो गये।

मैने दूसरे दिन यह बात हमारे प्रधान छलाणीजी को बतायी, उनकी आखो मे सतोष था। वे कुछ दिन पहले अकाल की विभीषिका की ओर सोढ़ाणीजी का ध्यान आकृष्ट कर चुके थे। उनके अनुरोध पर ही यह आगमन सभव हुआ था। दो तीन दिन मे कताई केन्द्र की स्वीकृति आ गई। बेरोजगार महिलाओ को गाव गाव मे धधा मिल गया।

कोलायत का क्षेत्र मगरा के नाम से बीकानेर म जाना जाता है। मगरे के एक एक गाव के प्रत्येक व्यक्ति को भैरूदानजी ने जो आत्मीयता प्रदान की उसे देख कर

गाव का व्यक्ति और भैरूदान के रूप मे एकात्म हो जाने वाला यह व्यक्ति—सब एकाकार हो गये। यहा एक विचार उठता है गाधी ने पूरे देश की जनता का प्रतिरूप बनने के लिए माटी और लगोटी धारण की तो इधर भैरूदानजी ने हल्की गुलाबी खादी की पगड़ी खादी का हाफ शर्ट धोती और देशी जूते पहन कर सीधे सादे रूप मे मगरे के आम आदमी का प्रतिरूप धारण किया।

वे मित परन्तु मिष्ट भाषी और गम्भीर थे लेकिन जब बोलते थे तो एक हल्की सी मुस्कान चेहरे पर खिल उठती थी। गभीरता मनहूसियत बनकर उनके पास नहीं आ सकी। सबसे बड़ी उल्लेखनीय विशेषता जो मेरे जीवन पर उनकी अमिट छाप छोड़कर गई—वह थी मुदिता जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य मे बहुत ऊचा स्थान दिया है लेकिन उसी मुदिता को भैरूदानजी छलाणी ने अपनी रग रग मे व्याप्त कर लिया जिस का प्रमाण उस समय मिलता था जब किसी अच्छे व्यक्ति और अच्छे कार्य को देखकर उनके चेहरे पर सन्तोषजनक प्रसन्नता खिल उठती थी मानो अन्दर की मुदिता बाहर आकर उस अच्छेपन को गले से लिपटा कर अपने अन्तस मे मूर्तिमान कर लेना चाहती हो। किन्तु कोई व्यक्ति उनको नहीं जचता तो मौन हो जाते तथा दूसरे व्यक्ति से बातचीत शुरू कर देते। वे अपने चेहरे से एप्रूवल या डिस एप्रूवल प्रकट कर देते। वे स्वय कम पढ़े लिखे थे। उन्होंने पुस्तको के बजाय आदमियो को पढ़ा था। वे अनुभवजन्य ज्ञान से बोलते थे तो बड़े बड़े विद्वान आश्चर्य मे पड़ जाते थे।

गाधी का मानना था जो कहो उसे जीवन मे उतारो लोग सुनने के बजाय देखकर सीखते है। अत छलाणीजी ने स्वय अपने घर और खेत पर वह सब कुछ करके दिखाया जिसे वह दूसरो को सिखाना चाहते थे। भैरूदानजी के खेत पर धूम्र रहित चूल्हा खाद के गड्ढे, हवादार झोपड़ा और उन्नत बीज आदि दिखाई देते थे। वैज्ञानिक साधनो से गाय बैल ऊट और अन्य पशुओ की सार सभाल बहुत प्रेम और उदारता के साथ करते थे।

वे गाव गाव मे शिक्षा की ज्योति जगाने और बालिका शिक्षा के दीवाने थे। ग्रामो की आर्थिक समृद्धि के लिए खादी ग्रामोद्योग, देशज ज्ञान और विज्ञान के सतुलित समन्वय उन्नत कृषि, पशु पालन व नस्ल सुधार के पक्षधर थे।

गाधी का प्रतिरूप भैरूदान छलाणी मगरे का गाधी बनकर दिखाई दिया। यदि कपिल की तपोभूमि के कारण कोलायत प्रसिद्ध है तो रियातरा मगरे के गाधी भैरूदान छलाणी से अमर हो गया। गाधी अन्त्योदय की बात कह कर अमर हो गया। तो मगरे का यह गाधी जो इस क्षेत्र के दर्द को लेकर जिया उसने इस क्षेत्र के निरक्षर, पिछड़े तथा निर्धन समाज के उत्थान के लिए अपना सारा जीवन समर्पित किया।

यह उपमा अतिशयोक्ति नहीं है बल्कि मगरे का एक एक बच्चा जवान और बूढ़ा अपने रोम रोम से बोलता है कि भैरूदान अपने आप मे एक व्यक्ति नहीं थे, एक सस्था थे।

मुझे महात्मा गाधी का तो सान्निध्य नही मिला लेकिन मुझे गौरव है और मेरा सौभाग्य है कि मगर के गाधी का सान्निध्य भरपूर मिला।

उनके जीवन विचार सादगी और सच्चाई से उच्च अधिकारी जन नेता और आमजन समान रूप से प्रभावित थ। उनके व्यक्तित्व की सराहना विद्वानो वकीलो खादी संस्थाना ओर जिले मे सवत्र होती थी।

उनकी सादगी सच्चाई व चरित्र की स्पष्ट छाप उनकी पत्नी सन्तान व परिवार पर स्पष्ट रूप से दृष्टव्य है। सोभाग्य से उनको अन्नपूर्णा धर्मपत्नी मिली जिन्हे कस्तूरबा कहना उचित होगा। इस महान नारी म ममता आतिथ्य सेवा और विनम्रता अभिभूत करने वाली थी। उनकी रसोई हर भूखे प्यासे बटोही के लिए 24 घटे खुली मिलती। हर आगन्तुक यात्री अतिथि को मातृवत स्नेह सम्मान और अपनत्व का बोध कराती। मुझे उनसे अनेक बार प्रसाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

दियातरा आने वाला हर कोई व्यक्ति यही अनुभव करता कि वह गाधी या सत विनोबा के आश्रम म आया है।

गाधी की प्रतिमूर्त्ति का प्रणाम।

सहयोगमुखी प्रयोगशील व्यक्तित्व

■ इन्द्र शर्मा ■

मै पचायत समिति, कालायत मे विकास अधिकारी के पद पर सन् 1972 से 1988 तक रहा हू। इस बीच म तहसील के अनेकानेक व्यक्तियो के सम्पर्क म रहा जिनम से एक स्व भैरूदानजी छलाणी हैं।

श्री छलाणीजी मृदुभाषी सादा जीवन व उच्च विचार के धनी थ। एक सच्चे किसान, गा सेवक तथा तहसील के विकास म प्रयत्नरत थ।

श्री छलाणीजी हमारे लिए एक शोध एव प्रयोगकर्ता थ। हमारी तहसील म कोई भी नई योजना आती तो सबसे पहले मै उन्हीं को बताता। फिर उस योजना के बारे म हमारी चर्चा होती थी कि इस योजना को कैसे लागू किया जाए जिससे हर व्यक्ति को योजना का लाभ मिल सके।

हमारे समय म सबसे पहले निर्धूम चूल्हे की योजना आई उन्होने स्वय निर्धूम चूल्हा लगाकर लोगो को बताया तथा लोगो को लगाने हेतु प्रेरित किया जिससे हम

आता, जो बनता, सहायता देकर उसे सतुष्ट कर भेजते। पारिवारिक सामाजिक, गाव तहसील क्षेत्र की समस्याओं की विषमता मे उलझे जन सलाह लेने आते तो उचित सलाह देकर भेजते। वे नेक मार्ग दर्शक थे। वह तहसील मे मगरा के सेठ नाम से प्रसिद्ध थे।

जब पचायत राज स्थापना हेतु नागौर मे पचायत राज सम्मेलन प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरूजी ने बुलाया था। उस समय श्री भैरूदानजी कोलायत पचायत समिति के प्रधान थे और मै उस वक्त झझू गाव का सरपच था। नागौर सम्मेलन मे उनके साथ गया था। उन्होने अपने प्रधान काल मे कभी कोई भत्ता नही लिया। कभी सस्था का वाहन (जीप) उपयोग मे नही लिया। यह उनकी त्याग भावना का नमूना था। वह आत्मा ऐसी त्यागमय व निष्काम थी।

उनकी गो सेवा मे रुचि अतुलनीय थी। जब जब अकाल पड़ता था तब तब कोलायत तहसील व दियातरा मे गो शाला खोलने का कार्य आप करते थे व सुचारु रूप से चलाते थे। सरकारी सहायता के अतिरिक्त गुड़ व चाटा कमजोर गायो को अपने पास से दिलाते थे।

उनकी खेती व ग्रामोद्योग में बहुत रुचि थी। खेती की उन्नति और विकास के लिए बाहर से अच्छे बीज मगवाते। आधुनिक विज्ञानियुक्त तकनीक अपनाते। लोगो को समझाते ताकि फसल का पूरा पूरा लाभ मिल सके।

वृद्ध व बीमार होते हुए भी उनका उत्साह व मनोबल जो देखा वह बहुत ही अद्भुत था। सादा भोजन खाना खादी के साधारण वस्त्र पहनना इसी म उन्होने अपना सारा जीवन बिताया। सरलता सादगी नम्रता के मूर्त रूप थे।

उनको दहेज प्रथा से बड़ी नफरत थी। उन्होने अपने लड़के लड़किया की शादी बिना दहेज व सादगी के साथ की। बाद मे अपने सगे सम्बन्धिया को गाव दियातरा मे आशीवाद समारोह म बुलाया। साथ सभी जनो स वर वधू को आशीर्वाद दिलवाया, उस मच से दहेज प्रथा पर भाषण हुए। लोगा को दहेज प्रथा बद करने के लिए प्रेरित किया। शादी के मोके पर इस प्रकार का विचारोत्तेजक एव प्रेरक कार्यक्रम रख कर समाज सुधार के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया।

मरा श्री छलाणीजी स बहुत ही नजदीक का सम्पर्क रहा। उन्होने अपन ग्राम म प्राइमरी स्कूल का भवन बनवाकर दिया और स्कूल शुरू करवाई। ऐस अनेक जगहा पर आपका योगदान रहा। वह एक आदर्श व दानदाता महापुरुष थे। हमार बीच म एसे आदर्श पुरुष नहीं रहे। उनक कार्यो का जितना वर्णन किया जाय उतना ही कम है।

अछूतोद्धारक क्रांतिकारी

■ फरसाराम ■

भारत के स्वतन्त्रता सग्राम काल सन 1942 म बीकानेर नगर म प्रजा परिषद क सस्थापक स्वतन्त्रता सग्राम क पुरोधा नायक श्री रघुवरदयाल गोयल के आत्मीय साथी सग्राम के मूक सेवक श्री भैरूदानजी छलाणी के प्रथम सम्पर्क म आया, इनके विचार व व्यवहार का ऐसा प्रभाव पड़ा जो आज तक जीवन ज्योति बने हुए है। अमिट है।

निष्काम भावना के धारक बीकानेर नगर के स्वतन्त्रता सग्राम म मौन सहयोगी साथी बन रहे। आपने तन मन धन से खूब सहयोग दिया। गोयलजी के निवासन काल म जब गोयलजी लूणकरणसर म कैद थे तब बहुत अस्वस्थ थे वहा उनसे मिलने पर पाबदी थी आप उस कड़ाके की सर्दी मे कठिन परिस्थितियो मे उनके पास पहुच गये उस रुग्ण अवस्था की खबर ली और बीकानेर आकर उनके दवा पानी की व्यवस्था की। सभी कार्यकर्ताओं एव नेताओं को वैचारिक एव नैतिक बल देते। गाधीजी के विचारो से श्री भैरूदानजी बहुत ही प्रभावित थे। उनके विचार और व्यवहार को आपने आत्मसात कर रखा था। हर विषमता मे गाधीजी के विचारों को प्रेरणा प्रसगो को सुनाते हुए सत्याग्रह के अहिसक स्वरूप से प्रेरित करते। आपके हर प्रसग मे सत्य प्रेम अहिसा के भाव भरे रहते थे।

आपका उस काल (सग्रामकाल) म श्री रामगोपालजी मोहता कुशालचन्दजी डागा आदि से बड़ा गहरा सबध था। बीकानेर प्रवास मे आप प्रतिदिन उनके सत्सग कार्यक्रम मे जाते विचार मथन होता। दो समान विचारधारा वाले पुरुषो का बड़ा अनोखा सगम था।

आप छुआछूत जातिभेद कुप्रथाओं के कट्टर विरोधी थे। उस काल के समाज मे अछूत समझे जाने वाले दलित जनो को आपने गले लगाया उनको ऊचा उठाया अपने बराबर बैठाया। समाज के लोगो म राष्ट्रभावना भरी उच्च वर्ग के लोगो मे जहा आपकी अच्छी ख्याति थी, इनको अपने विचारो से प्रभावित करते और छुआछूत भेदभाव छोड़ने की प्रेरणा देते। दलित लोगो को अपने साथ लिया। आपने अछूत व हेय माने जाने वाले लोगो को बराबरी का स्थान व सम्मान दिया। ग्राम पचायत में पच, न्याय पच सरपच प्रधान आदि पदो पर सम्पुष्टित कराया। समाज ने जिन्हे अछूत माना और जो स्वय को ही हेय मानने लगे उनमे राष्ट्रीय भावना एव आत्मसम्मान जागृत किया। उनको उत्साहित किया। राष्ट्र के कार्यो म हिस्सा लेने की प्रेरणा दी लोगो मे राजनीतिक चेतना जगाई। लोग आगे आये। इस प्रकार आप इस क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना की जागृति लाने वाले प्रथम पुरुष थे।

आपने उस समय की सामाजिक कुप्रथाओ का घोर विरोध किया जैसे बाल विवाह आसर मासर यानि मृत्युभोज घूघट प्रथा छुआछूत आदि। आपने विधवा विवाह प्रचलन कराया।

आपका स्व पन्नालालजी बारूपाल से बड़ा गहरा सबध था। उनका आपके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। राष्ट्रीय भावनाओ से प्रेरित करते जीवन मे ऊचा उठने आगे बढ़ने को उत्साहित करते। उनकी प्रेरणा से ही आगे बढ़, उनके आर्शीवाद से ही ससद सदस्य बने, जीवन मे सफल रहे। इस प्रकार स्व धर्मपाल पवार (विधायक) एव मढ़ गाव के श्री रूपाराम पवार आपके विचारो से प्रभावित थे। उनको विधायक, सरपच पद के लिए प्रोत्साहित किया।

इस क्षेत्र के किसान मजदूर, हरिजन, मघवाल आदि हर वर्ग के लोग इनके व्यवहार से प्रसन्न थे। किसी भी वर्ग का ग्रामीणजन इनके पास अपनी समस्या लेकर आता आप समाधान करते। असहाय दीन हीन को दवाई का इतजाम कराते। तन मन धन व निष्काम भाव से जन सेवा मे लगे रहते। गाव गाव ढाणी ढाणी जाते लड़के लड़किया की शिक्षा के लिए कहते, माता पिताओ को उन्हे स्कूल भेजने के लिए कहते, जहा बच्चो को पढ़ाने मे जो मा बाप असक्षम थे उनका पढ़ाई का इन्तजाम अपने पास से करते, उनकी शाला की पोशाक की भी व्यवस्था करते थे।

जब पचायत समिति, कोलायत बनी, प्रधान का चुनावकाल आया लोगो ने आपसे अनुरोध किया। लोगो की माग थी आप प्रधान बने। आपने लोगो से निवेदन किया मै तो मात्र सेवा के लिये ही इस क्षेत्र मे आया हू लोगो ने कहा आप सरीखे निर्मल निष्पक्ष स्वच्छ छवि के सबको प्रेम करने वाले दुख सुख के भागीदार जन सहयोगी सेवक की ही आवश्यकता है। आप सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये। आप प्रधान पद को शोभित करते इस क्षेत्र के विकास कार्य मे जुट गये। आप नैतिकता के धनी पुरुष थे। सादगी सरलता गाधीवादी विचारो के मूर्त रूप थे। पचायत समिति की राजकीय सुविधा साधन कभी भी उपयोग मे नहीं लिया। समिति की सभा जब जब भी कोलायत तहसील मे होती आप ऊट गाड़े से ही बैठक मे आते। कभी कभी तो आप भखावटे (पो फटने से पहले) पैदल ही चलकर आ जाते।

आपकी सरलता सादगी के आदर्शो से सभी जन और नेता प्रभावित थे। आपकी गाधीवादी विचारधाराओं की महक प्रधान काल की कार्यप्रणाली जन सेवा कार्यो की खुशबू जन जन ओर राजनेताओ तक पहुची हुई थी। आपके प्रधान काल मे पचायत के समस्त पदाधिकारी कर्मचारी, इस क्षेत्र के ग्रामीण जन बहुत ही सतुष्ट थे।

जब भी कोई पदाधिकारी जन नेता इस क्षेत्र मे आया आपके गाव दियातरा गया। आपके द्वारा स्नेहपूर्ण आतिथ्य एव स्वागत का सौभाग्य मिला।

जब देश स्वतन्त्र हुआ राजस्थान की प्रथम सरकार बनी उसमें स्व श्री रघुवर दयालजी गोयल खाद्य मंत्री बने। बीकानेर आगमन पर गाव दियातरा श्री भैरूदानजी छलाणी की ढाणी भी पहुचे दो तीन दिन का आतिथ्य ग्रहण किया। प्रकृति की गोद म रहकर सद्गुणी विवेकशील, गाधीवादी आदर्श पुरुष श्री छलाणी जी क सग म बिताया। राजनैतिक थकान को दूर कर नई उमग ताजगी लिए बीकानेर पधारते समय इनको भी अपने साथ लाये। दो आदर्श आत्माओ की आत्मीयता का दर्शन देखने योग्य था। जिये मरे तब तक श्रद्धा प्रेम का अनोखा मिलन और वियोग भी इन आखो स देखा। गोयलजी के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी। गोयलजी के ईश्वरलोकगामी होने पर अपने आत्मीय की पावन स्मृति मे श्रद्धा सुमन रूप अपने कृषि फार्म म एक शानदार झोपड़ा निर्माण कर उसमे भस्मी व चित्र प्रतिष्ठित कर उपासना स्थल का निर्माण कराया जो आज भी अपनी पावनता लिए स्थित है। समय समय पर इस स्थान म भजन जागरण कराते रहते थे।

अकाल काल म आप ग्रामीणजनो की गायो की सेवा म जुट जाते। श्रीसम्पन्न लोगो द्वारा अकाल राहत कार्य सस्ते अनाज चारे की व्यवस्था कराते।

एक समय की बात है अकाल के समय श्रीमती कान्ता खतूरिया ग्रामीण क्षेत्रो के सर्वे म आई हुई थी। गावो म धान बाजरा माठ आख देखने को ही नहीं था। लोग ज्वार की रोटी खाकर ऐसा विषम समय बिता रहे थे। गाव दियातरा पहुचने पर अतिथिसेवी छलाणीजी के यहा भी सत्कार म भोजन म ज्वार की रोटी ही परोसी गई जिस घर म अच्छा सात्विक भोजन घी, दूध से स्वागत होता था। यह देख वे बहुत ही अचभित हुईं। आपने बड़े मधुर आर्त्त शब्दो म कहा जब गावो की जनता की बड़ी दारुण स्थिति है म कैसे गेहू की रोटी घृत दूध ले सकता हूँ। आज अतिथि भगवान को कालगत उपलब्ध सामग्री का ही भोजन अर्पण है। उन्होने प्रेम स ग्रहण किया और बहुत ही प्रभावित हुईं। ग्रामीणजनो सहित आपको आश्वस्त किया कि शीघ्र ही अनाज की व्यवस्था का प्रयास करूगी। ऐसे थे आदर्श पुरुष छलाणी जी। छलाणीजी सरलता सादगी के मूर्त स्वरूप थे। दूसरो के दुख को अपना दुख मानते थे। क्रान्तिकारी समाज सुधार कायो का उठाने म इस क्षेत्र के रूढ़िवादी लोगो का कठोर विरोध सहन करके भी आपने प्रेम दिया। मधुर व्यवहार से लोगो का दिल जीता। हृदय परिवर्तन किया। इस क्षेत्र से छुआछूत भेदभाव अशिक्षा गरीबी को मिटाने म भागीरथी प्रयास किया। क्षेत्र मे शाति, प्रेम शिक्षा की गगा बहाई।

कृषि के उत्थान म लगे रह अपने खेत पर बीजो के अनेक प्रयोग किये। गाव वालो को अपने ज्ञान और अनुभव का लाभ उदारमन स दिया।

उस समय पानी की बड़ी किल्लत थी। राज्य सरकार से योजना पास करवा कर गावो मे पानी उपलब्ध करवाया। आपने अपने खर्चे से तालाब कुओ की मरम्मत कराई। तन मन और धन से निस्वार्थ निष्काम जन सेवा म समर्पित अछूतोद्धारक क्रान्तिकारी मगरे के सेठ श्री भैरूदानजी छलाणी को शत शत नमन।

निष्काम कर्मयोगी

■ लूणाराम मेघवाल ■

मगरा भूमि के सत, आदर्श पुरुष, गा सेवक एव दीनबधु स्वर्गीय सेठ भैरूदानजी छलाणी के बारे म जितना लिखा जाये वह शायद कम ही पड़ेगा। उनके गुणो का बखान शब्दो म करना मेरे लिये कठिन है। मै स्वय दियातरा गाव का उप सरपच रहा। मैंने व्यक्तिगत रूप से उनके साथ काम किया और आज अपनी साठ वर्ष की उम्र मे यह महसूस कर रहा हू कि यह धरती सेठजी जैसे व्यक्ति के बिना रीती हो गई है एक रहनुमा से वचित हो गई है। सेठजी ने दियातरा गाव को अपना परिवार माना। अकाल, काल या दुष्काल म गाव के प्रत्येक घर परिवार की सुध ली और खुशी मे खुशी जाहिर की। इसी कारण वे पूरे मगरा क्षेत्र म लोकप्रिय महापुरुष थे।

यह आश्चर्य है कि सत प्रकृति के होते हुए भी वे राजनीति से उदासीन नही थे लेकिन उनकी सत प्रकृति ने छल कपट रहित राजनीति को चाहा, सराहा और सवारा। उन्होने राजनीति की परिभाषा ही बदल दी। उन्होने अपने जीवन व्यवहार स प्रमाणित कर दिया कि अधिक से अधिक सेवा कर सके उसका नाम राजनीति है। यही कारण था कि कोलायत म निर्विरोध चुने जाने पर ही उन्होने प्रधान पद स्वीकार किया। सन् 1984 85 म सेठजी ने ही मुझे पहली बार राजनीति म उतारा और वार्ड पच तथा उप सरपच के लिए मेरा चयन किया और करवाया। इस प्रकार मेरे मेघवाल समाज के नेतृत्व को उन्होने मान्यता देते हुए ऊचा उठाया जबकि दियातरा गाव मे सवर्णों की मुख्यता थी।

गाव की प्रतिष्ठा पर आच नहीं

सेठजी अपने गाव की प्रतिष्ठा को बनाये रखना चाहते थे। एक बार कोऑपरेटिव सोसायटी का ऋण न चुका पाने के कारण गाव के 18 19 किसानों पर कुड़की आ गई। जमाना (फसल) खराब था। सेठजी ने मुझे बुलाकर कहा चाहे मेरे अपने पास स ऋण चुकाना पड़े लेकिन दियातरा गाव क किसी भाई की कोइ चीज कुड़क नही होनी चाहिये। उनक योग से सभी किसान भाई कुड़की से बच गये।

गाव को उठने स बचाया

कई वर्ष पहले सरकार ने एक निर्णय लिया था कि दियातरा व आस पास के गावो को उठाकर वहा सेना का फायरिग एरिया बनाया जाय। गाव वालो को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होने अपनी चिन्ता सेठजी के सामने रखी। सेठजी ने उत्तर दिया कि मुझे आपसे पहले व ज्यादा चिन्ता सता रही है क्योकि इससे गरीब लोगो की स्थिति

और अधिक बदतर हो जायेगी। अन्त म सेठजी ने भरसक प्रयास करके वह एरिया कैंसिल करवाया।

कौए भगाने हेतु एक मजदूर रखा

गो भक्त और गो सेवक के रूप म तो पीढ़ी दर पीढ़ी दुनिया उनको याद करती रहेगी। सवत् 2025 म अकाल के समय एक एक पशु की स्थिति का जायजा लेते थे। आश्चर्य किन्तु प्रसन्नता के साथ सोचने समझने के लिए एक प्रसग याद करने योग्य है। उस समय अकाल राहत कार्य म लगाये गये गायो के शिविर म कमजोर घायल पशुओ को सताने वाले कौओ को भगाने के लिए भी एक मजदूर नियुक्त किया था। एक एक गाय के प्रति उनका प्रेम और सेवाभाव अटूट था। अकाल के समय वे अपने घर पर पशु शिविर लगाते तथा सस्ते भाव पर पशुचारा गाववालो को उपलब्ध करवाया करते थे।

श्री छलाणीजी ने अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगो से कभी छुआछूत नहीं की। उन्होने ऐसे लोगो की हमेशा सहायता की। सेठ जी की बदौलत ही दियातरा गाव म करीब 25 30 साल पहले 12 खदिया लगवाई गई जिन पर आज भी कई परिवार अपनी रोटी रोजी कमा रहे है।

लोहिया गाव म पीने के पानी की कमी थी। उन्होने अपना पूरा सहयोग देकर कुआ बनवा कर लोगो को कष्ट से स्थायी मुक्ति दिलवाई।

शराब के ठेके से गाव को बचाया

छलाणीजी नशे की प्रवृत्ति के खिलाफ थे। एक बार दियातरा गाव म बाहर के किसी व्यक्ति ने शराब का ठेका लगाया। गाव वालो ने ठेका उठाने का प्रयास किया लेकिन वे असफल रहे। बात सेठजी तक पहुची उन्होने तुरन्त अपने प्रयास किये और गाव से ठेका हटाकर ही दम लिया।

विचारशील होने के साथ साथ कर्मशील व्यक्ति जो अपने और अपने परिवार के लिए सीमित न रहकर सारे गाव पूरे मगरा क्षेत्र के विकास व सेवा के लिए जीवन भर सक्रिय रहे ऐसे निष्काम कर्मयोगी को मेरा प्रणाम।

बापूजी जैसा मैने देखा, सुना और समझा

■ मनोहरलाल भादाणी ■

खादी मन्दिर के मत्रीजी न एक पत्र मुझे दिया और कहा कि यह बहुत आवश्यक पत्र है। जैसलमेर से फलोदी जाने वाली बस आपको स्टण्ड पर मिल जाएगी। आप दियातरा पहुच कर यह पत्र छलाणीजी को स्वय देकर आइये। बस से करीब नौ बजे रात को दियातरा बस स्टेण्ड पर म उतरा। ठिठुरान वाली सर्दी घोर अधकार। मै उतर कर घर की राह देखने घूमा तो थोड़ी दूर पर धूणी पर आग सकते हुए गाव के कुछ लोग दिखाई पड़े। दियातरा जान का यह मेरा पहला ही अवसर था। यह बात सन् 1975 की है। गाव क लोगो से पूछा कि भाई भैरूदानजी का घर किधर है? उनका बास या रास्ता बतान की कृपा करेंगे? तुरत एक वृद्ध व्यक्ति उठा और बोला बापूजी अभी घर पर नही मिलगे वे तो ढाणी पर मिलगे, चलो बताये देता हू। थोड़ी दूर चलने पर उसने बताया कि उनकी ढाणी के पास ही जा कर पगडडी समाप्त होगी। सीधे ही चलते जाना है। रास्ते मे चलते समय मेरे विचारो की उथल पुथल चल रही थी। भूख लगी थी। सोच रहा था कि आज रात भूखा ही रहना पड़ेगा। घोर अधेरी रात, चारो ओर सन्नाटा। समय आधी रात का सा लग रहा था। सोचा सब सो गए होगे। थोड़ी दूर पगडडी समाप्त होते ही सामने लोहे की चादर का एक फाटक दिखाई दिया जिसे मैने खटखटाया। खेस ओढ़ एक पुरुष आया और मुझे अदर ले गया। अदर जाते ही मैने देखा कि छलाणीजी रजाई म सोये हुए उठ बैठे। नमस्कार किया। बड़ी मीठी दुलारभरी धीमी वाणी सुनने को मिली— अरे मनोहरजी आओ आओ बैठो। मैने उन्हे पत्र दिया। इतने म तो वह भाई जो दरवाजा खोलने आया था वह सजल गुनगुना पानी पीने के लिए ले आया। कुशल मगल छलाणीजी न पूछा इतने मे तो चाय आ गई। चाय पीने पर आज्ञा मिली जाओ भोजन करो। वह भाई मुझे रसोई की ओर ले गया। उस कड़ाक की सर्दी मे इतनी रात बीतने पर भी गरम गरम भोजन खीचड़ा जिसमे घी की अधिकता तथा कोमल फुल्के फली बड़ी की सब्जी कढ़ी और शक्कर। यह सब कुछ देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कण्डो म भोजन बना था लेकिन कही धुआ नही। छोटा सा साफ सुथरा रसोई घर बैठने को आसन और थाली पाट पर लगाई गई। खाना खाकर कमरे मे आया तो छलाणीजी के पास ही खाट लगी हुई तैयार मिली। खादी का गद्दा और खादी कपड़े की रजाई तथा खेस। आनद की नींद सोया। पौ फटने से पहले उठा तो देखता हू कि सफेद खस ओढ़े शात मुद्रा म छलाणीजी बैठे हुए मुझसे बोले कि चलो घूमने चलें। म उनके पीछे पीछे हो लिया। चारो तरफ हरियाली सरसो, गेहूँ के पौधे लहलहा रहे थे। मीठी माटी सुगध लिए हुए ठण्डी पवन। आकाश मे सूर्योदय की लालिमा। यह सब दृश्य मेरे लिए

तो सब कुछ अनारापन लिए हुए था। आगे आगे छलाणीजी और पीछे मे प्रकृति का आनद लिए चल रहा था। काफी दूरी पार कर एक साफ सुथरे विश्राम स्थल पर हम बैठे जहा ध्यान मुद्रा म लीन छलाणीजी थोड़ी देर म उठ बैठे। सुनने का फिर एक हल्की धीमी किन्तु मधुर आवाज मिली कि देखो उस तरफ हिरणो का प्यारा झुण्ड। मैने देखा तो आनदविभोर हो गया। जिन्दगी का पहला मोका था जब इतने नजदीक से हिरणो को आते देखा। थोड़ा और आगे बढ़ा तो वह सब छलाग मार कर पास की हरियाली की तरफ चौकड़ी भर गए। घूम कर देखा तो एक शात योगी सफेद खादी की ऊची धोती काटे सफेद चादर ओढ़े मधुर मुस्कान लिए खड़ा है। छलाणीजी के साथ साथ वापिस आया। नाश्ता लिया।

मै ध्यान मे बैठे हुए छलाणीजी को देखकर उस समय अपने आपको रोक नही सका और सहस्राब्दियो पूर्व का चिंतन मेरे दिल दिमाग म उभर उठा। मै सोच रहा था कि यह मगरे का इलाका कपिलमुनि और दत्तात्रेय जैसे ऋषि मुनियो की तपस्या का इलाका किसी जमाने म था। ऋषि मुनि और हमारे तपस्वी इसी इलाके मे तपस्या करते थ और ज्ञान की गगा बहाते थे। दत्तात्रेय का ही यह पावन स्थल दियातरा है।

उस समय मुझे वह खेत की हरियाली और उसमे बने झोपड़े एक आश्रम की तरह लग रहे थे।

खादी कमीशन और खादी मन्दिर के पत्र व्यवहार के महत्वपूर्ण कागजो पर छलाणीजी के हस्ताक्षर कराने तथा खादी मन्दिर के अन्य कार्यो के निमित्त से समय समय पर उनकी सेवा मे मुझे दियातरा आने जाने का अवसर मिलता रहा। एक बार उनके पास गया तो उन्होने अपने पास रखी हुई पुस्तक 'चित्त शुद्धि मुझे दी। मेरी पहली मुलाकात म उन्होने ध्यानयोग की अनुभूति का एहसास मुझे कराया ओर इस बार चित्त शुद्धि को समझने का मुझे गभीर मौका मिला। शिक्षा देने का अद्भुत तरीका देखा। झोपड़ो से थोड़ी दूरी पर एक पक्की खुली छोटी सी झीलनुमा तलाइ, थोड़ी दूर पर लोहे का चल शौचालय उधर चार पाच कच्चे लिपे पुते सफेदी किए हुए धवल कमरे जिनके आगे गोबर मिट्टी से लिपा पुता प्रागण और तीन तरफ हजार के फूलो से फले फूले पौधे एक क्यारी मे तुलसी के पोधे—सारा ही दृश्य स्वर्गाश्रम सा प्रतीत हो रहा था। चलते चलते स्मरण हो आया कि कश्मीर को देखकर यदि फिरदौस शाइर को स्वर्ग कश्मीर की जमीन पर दिखाई दिया तो खादी की ग्राम चेतना से अनुप्राणित मेरे जैसे अकिचन व्यक्ति को दियातरा गाव म स्वर्ग धाम नही तो स्वर्ग ग्राम जरूर नजर आया। रास्ते भर भावनाओ से भरा हुआ चला जा रहा था। छलाणीजी के दुलार को देखकर मुझे जिस वात्सल्य का सुख मिला उसका वर्णन शब्दो मे नहीं किया जा सकता। मेरी युवावस्था की देहरी पर पाव रखते ही मेरे माता पिता की मृत्यु हो गई थी। उनके स्वर्गवास के बाद दस पद्रह साल बाद मुझे ऐसा दुलार मिला तो आखो म आसू छलक आए। उनका वह व्यवहार आज भी ताजा बना

हुआ है। उस स्मृति को सजोए हुए हू उन्हे स्मरण करके हृदय भाव विह्वल हो उठता है और मन वाणी हाथ जोड़े नमस्कार कर रहा है। एक उक्ति याद आ रही है— माता रामा मत्पिता रामचद्र' मा जेसा सहलाना पिता जेसा प्यार दोनो ही तत्त्व छलाणीजी म मौजूद थे। यही वह मर्म था कि गाव और परिवार उन्हे बापूजी कह कर पुकारता था। सबके सच्चे माता और पिता थे। रामायण की उक्ति याद आ रही है— तार मर्म नाथ मे जाना ।

श्री भैरूदानजी को समझने के लिए उनके मर्म को उनक द्वारा मानव, समाज, परिवार गाव और देश के लिए किए गए प्रयासा को बारीकी से समझना होगा। उनके जीवन का पूरा तानाबाना इन्हीं बिन्दुओ के इर्द गिर्द घूमता रहा है।

राष्ट्र और समाज की प्रथम इकाई मानव है दूसरी इकाई गाव। इसके उत्थान और पतन पर राष्ट्र और समाज का भविष्य निर्भर है। उन्होने मानव के सर्वांगीण विकास के लिए एक सुविचारित प्रक्रिया प्रारम्भ की उसे 'मानवोत्थान या ग्रामोत्थान प्रक्रिया' कहना अतिशयोक्ति नही होगी।

महात्मा गाधी ने जिस तपस्या और साधना के बाद एकादश व्रत हमारे सामने रखे और उन्होने आशा की कि देश की जनता इन एकादश व्रतो को अपना कर सच्चे स्वराज और सुराज्य की दिशा म आगे बढ़े। महात्मा गाधी की उस आशा और महत्वाकाक्षा को एक नमूने के तौर पर प्रत्यक्ष सफल करके दिखाने वाले व्यक्ति भैरूदान जी छलाणी थ जिनकी गिनती उन गिन चुने गाधीभक्तो म की जाएगी— जिन्होने गाधी दर्शन के अनुसार, अपने जीवन को राष्ट्रसेवा म समर्पित कर दिया। भैरूदान जी ने सही अर्थों म गाधीजी के एकादश व्रतो का जीवन भर पालन किया। यानि सत्य, अहिसा, ब्रह्मचय अस्वाद अपरिग्रह, कायिक श्रम, स्वदेशी अभय अस्पृश्यता निवारण, सर्वधर्म समभाव अस्तेय इन सभी व्रतो को धारे हुए तपोनिष्ठ जीवन जिया। उनके जीवन मे झाकने से महसूस हुआ कि महात्मा गाधी का प्रिय भजन— वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड़ पराई जाणे रे पर दुखे उपकार करे तोए मन अभिमान न आणे रे' को छलाणीजी ने अपने दैनिक जीवन की रग रग मे व्याप्त कर रखा था। उनके निष्काम भाव से आर्त्त प्राणियो (नर नारी, पशु पक्षी यानि जीव मात्र) की सेवारतता मे उनक अत करण की वह उच्च भावना झलकती है दीन दुखियो क प्रति उनकी पीड़ा गाधीजी क प्रात कालीन प्रार्थना के श्लोक म अत्यन्त ही मार्मिक ढग से व्यक्त होती है जो धमराज युधिष्ठर ने प्रस्तुत की थी—

न कामये राज्य न स्वर्गम् न पुनर्भवम।
कामये दुख तप्ताना प्राणिनामार्तनाशनम्।।

अर्थात् अपने लिए मै न राज्य चाहता हू न स्वर्ग की इच्छा रखता हू, मोक्ष भी मै नही चाहता। म तो यही चाहता हू कि दुख से तपे हुए प्राणियो की पीड़ा का नाश हो।

छलाणीजी के जीवन के अनेक प्रसगो, घटनाओ को सुनने व जानने से जब वे असम मे थे और असम से आने के बाद पचास साल गाव मे जीवन जिया और तन मन धन से दीन दुखियो की सेवा मे सेवारत रहे।

भैरूदानजी विनम्र निवेदन करने वाले एक शान्त और कोमलचित्त गृहस्थी सत थे। सम्भवत तत्कालीन अधविश्वास से लदे धर्म और जाति के भेद घृणा मे उलझे परपरागत जकड़े रूढिवादी समाज को दो तरफा उपचार की आवश्यकता थी। उन्होने एक नई दिशा दी।

वे कोई शास्त्रीय विद्वान नहीं थे। उनका ज्ञान उनके अपने आन्तरिक अनुभव पर आधारित था तथा उन्होने अपने गूढ और रहस्यमय अनुभव को बड़े ही सरल स्पष्ट ओर भाव से व्यक्त किया। परमात्मा के एक उच्चतम भक्त और समता, शुचिता नैतिकता ओर प्रेम से सराबोर रसज्ञ जन थे। इनकी प्रेम विह्वल मधुर वाणी हृदय को बरबस आकृष्ट कर लेती थी। सच्चे सन्तोष निष्काम सेवा और प्रभु के प्रति आत्म समर्पण की भावना इनमे कूट कूट कर भरी हुई थी। सरलता शिष्टता और विनम्रता की तो वे साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उनके विचारो मे वाणी मे बनावटीपन या दिखावा लेशमात्र भी नहीं था।

एक वणिक परिवार मे पैदा होकर दीन हीन मलिन शूद्रजनो को गले लगाया। उच्च वर्ग के लोगो को एक नई सोच दी। नर से नारायण के भाव को जगाया। उनके द्वारा लिखे कहे विचार एक दिशा देते है। ससार मे रहते सेवा करते मनुष्य ईश्वर तक कैसे पहुच सकता है। मोह आसक्ति अहकार लोभ से कैसे निर्विकार हो निवृत्त जीवन साध सकता है। सकल्पित जीवन जीते चरमोत्कर्ष तक पहुच सकता है। गृहस्थ मे रहते गृहस्थ आश्रम वानप्रस्थ आश्रम सन्यास आश्रम का जीवन निभाता हुआ आत्मज्योति जगाये ज्योति मे ज्योति लीन हो सकता है।

उन्होने रामायण गीता जैन दर्शन सूत्र, लोकोक्तियो कृषि प्रयोग, स्वप्न सुगन ज्योतिषोक अद्वैत सूत्र (दोहा) गुरु भक्ति राजनैतिक सस्मरण पत्र लिखकर समायोजित कर आने वाली पीढ़ी के लिए दिशा बोध दिया है।

देशभक्ति का दोर

(मगरा क्षेत्र मे बीसवी सदी की राजनैतिक चेतना के अग्रदूत)

भैरूदानजी ने बचपन से ही असम के इलाके मे गाधी नेहरू के देशभक्ति के दौर को देखा और समझा था और वहा से उनमे देशभक्ति की चेतना जाग चुकी थी। फिर जब उन्होने गाव को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और गाव मे ही जीवन जीने का निश्चय किया तब उन्हे इस इलाके—मगरा क्षेत्र के ग्रामवासियो की त्रिविध गुलामी के कष्टो का एहसास हुआ। महाराजा गगासिह का कठोर शासन, ब्रिटिश साम्राज्य के

रियासती नरेशो के भाई बंधु और उनके उत्तराधिकारीगण जागीरदार की संज्ञा से पुकारे जाते थे और सामंत थे। रियासत मे बसने वाले और कड़ी मेहनत से खून पसीना एक करके मानव का पेट भरने वाले असली अन्नदाता गाव के किसान और समाज की सेवा करने वाले धार्मी, सुथार कुम्हार धोरीगर बुनकर और मजदूर छोटे बड़े उद्यमी आदि सब नागरिक गुलाम थे इन तीनो के। आम आदमी इस तिहरी गुलामी के बोझ को ढोने को मजबूर था रियासत मे। इस वातावरण मे महाराजा गगासिंह के कठोर शासन का वर्णन करते हुए कहा जाता है कि उनकी साम से घास जलती थी। उस समय पीड़ित मानवता का सहायक बनने की हिम्मत कौन कर सकता था? इस तिहरी गुलामी के नीचे दब कर मरने वाले किसान मजदूर आदि मे से कोई भी अपने दुख दर्द पर आह निकालने को स्वतंत्र नहीं था। अपने दुख दर्द की आवाज उठाना अथवा आम जनता के दुख सुख की फरियाद महाराजा के प्रशासन मे अर्जी देकर पहुचाना राजद्रोह माना जाता था। ऐसे राजद्रोहियों को जेल नजरबंदी लाता घूसा, डण्डो का पात्र माना जाता था, राज्य की शांति चैन भग करने वाले को देश निकाले का पात्र माना जाता था उस समय आतक घनीभूत हो चुका था।

ऐसे भय और आतक मे भैरूदानजी बीकानेर की राजनीतिक चेतना के ज्योति स्तंभ स्वतन्त्रता सेनानी श्री रघुवरदयाल गोइल (सन् 1943 से 1949 के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनापति) के सपर्क मे आए। भैरूदानजी की राष्ट्रीय भावना असम राज्य के स्वतंत्रता सग्रामियों एव गांधी, नेहरू के आदोलनो मे सक्रियता अनुभव दानशीलता तथा अन्य चर्चाओ से गोइलजी बहुत प्रभावित हुए। ज्योति से ज्योति का मिलन हुआ। मिलन और चिन्तन मे से श्री छलाणीजी गाव और तहसील क्षेत्र मे रचनात्मक सेवा कार्यों द्वारा जनचेतना जाग्रत करने का सेवाकार्य करने लगे।

वे गाव के दुखी जनो के घर घर जाते उनके दुख सुख मे शरीक होते। उनके कष्ट क्लेशो मे रात रात जागते और उन्हे सात्वना देते। अच्छे अच्छे विचार देते। राष्ट्र, नगर मे होने वाली स्वतंत्रता सग्राम की घटित घटनाओं को सरल सुबोध शैली मे किस्से कहानिया सुनाते। जिसे वैचारिक क्रान्ति की दिशा वह जनचेतना अभियान कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। दीन हीन जनो की बीमारी अवस्था मे दवा आदि की व्यवस्था करके उनकी सहायता करते। निर्धन व्यक्ति को कन्यादान (लड़की की शादी) मे अर्थ सहयोग कर गाव की कन्या के भाग्योदय के भागीदार होते। इन के पास आया व्यक्ति इनसे अर्थ सहयोग पाकर सतुष्ट होकर ही गया। किसी भी प्रवृत्ति का याचक आया वह सतुष्ट होकर ही गया। तन मन धन से अपनी सेवा दी। दुष्काल के समय गो सेवा तो मगरा के इतिहास मे सदा सदा के लिए स्मरणीय रहेगी। उनके द्वारा स्थापित गो सेवा कार्य की परम्परा आज भी निबाध गति से चल रही है। देश संस्थाओ से नहीं, स्वस्थ परम्पराओ से चलता है इसी धारणा को धार आपने अनेक स्वस्थ परम्पराओ को स्थापित किया। मगरा

की बारानी खेती को आपने सफल प्रयोगा द्वारा नई दिशा प्रदान की जा गाव समाज मानव राष्ट्र के लिए ग्रामोत्थान समाजोत्थान राष्ट्रोत्थान म अनुकरणीय, अनुसरणीय बनी रहेगी।

उन्होने रचनात्मक सेवा कार्यों द्वारा शिक्षा खादी ग्रामोद्योग, कौमी एकता अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध गाव की सफाई प्रौढ़ शिक्षा, नारी जागृति किसान मजदूर रोगी, विद्यार्थी आदि सब तरफ की दिशाओं म चेतना देकर उनम राजनीतिक चेतना को जगाया। परिणामस्वरूप, तिहरी गुलामी म जकड़े हताश निराश अज्ञान के अधेरे म डूबे हुए लोगो को प्रकाशित और उद्भासित होन का अवसर मिला। लोगो मे आत्म सबल जगा, समझ बूझ बढ़ी और राष्ट्रीय चेतना का सचार हुआ।

इस चेतना की जागृति से गाव म समता और समानता के भाव जागे। छूआछूत का भेदभाव दूर हुआ और आजाद हिन्दुस्तान मे जब पचायत राज का सूर्योदय हुआ तब दियातरा गाव कोलायत पचायत व मगरा क्षेत्र के गाव के लोगो को सविधान के तहत जन नेतृत्व देने का बोध जगा। स्वय भैरूदानजी समग्रराय स पचायत के प्रधान बने। विकास योजनाओ द्वारा भागीरथी प्रयास कर गावों का विकास किया। ग्रामोत्थान प्रक्रिया का उनका सपना साकार हुआ। कितु सबसे बड़ी बात यह है कि उस तिहरी गुलामी से निकले हुए दियातरा मे राजनीतिक चेतना का झडा अपनी ऊचाइयो पर फहराता हुआ तब दिखाई दिया जब भैरूदानजी की प्रेरणा से गाव का एक हरिजन उप सरपच चुना गया। यह स्थिति भैरूदानजी की राजनीतिक चेतना की सफलता थी। उनकी मानवोत्थान प्रक्रिया का भी सपना साकार हुआ।

ज्योति म ज्योति विलीन

स्वतन्त्र मगरा की धरती न 7 अप्रेल 1949 की मगल प्रभात म बीकानेर का नए राजपूताना मे विलीनीकरण के साथ स्वातन्त्र्य के स्वर्णिम सूर्य के दर्शन किये। महात्मा गाधी के ग्राम स्वराज के स्वप्न को साकार करने के लिए आजादी स जीने मे कैसे नागरिको की आवश्यकता होगी ? उसका एक ज्वलत प्रमाण और सफल क्रियान्विति के रूप मे दियातरा के भैरूदान छलाणी सबसे आगे नजर आये। भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे बीकानेर के योगदान क लेखक श्री दाऊदयाल आचार्य द्वारा प्रसन्न मुद्रा और मधुर वाणी में भैरूदानजी के प्रति निकली शब्दावली आज लिखते समय भी गूज रहा है— अरे मनोहर! भैरूदानजी तो वास्तव म एक सत पुरुष था। बड़ा ही दयालु शीतल अहकारमुक्त, निष्काम भाव से सेवारत सच्चा कर्मयोगी था। आज भी इन शब्दो को याद करता हूँ हृदय मे बड़ी ही आनद ज्योति जगती है। लेकिन मगरे की यह ज्योति दिनाक 19 दिसम्बर 1995 को सूर्य की ज्योति मे लीन हो गई। यह ज्योति हमे प्रेरणा देती रहे। उनके जीवनवृत्त से जीवन म सेवा की भावना सजोये। इसी भावना के साथ उस ज्योति पुरुष को नमन।

मौन, सक्रिय, निर्भीक व्यक्तित्व

■ दाऊदयाल आचार्य ■

स्व भैरूदानजी छलाणी के कुछ सस्मरण

स्वर्गीय भैरूदानजी छलाणी तत्कालीन बीकानेर रियासत के सार्वजनिक एव राजनैतिक मच पर एक प्रकाशमान नक्षत्र थे। उन्होने सदा ही प्रसिद्धि पराड्मुख रह कर सार्वजनिक जीवन की हर शाखा म सक्रिय योगदान किया। आपने राजनैतिक, सामाजिक एव खादी, गो सेवा और अकाल राहत आदि सभी क्षेत्रो म ठोस सेवाए प्रदान की। प्रदर्शन बिना मूक रहकर सक्रियतापूर्वक कार्य करना उनकी मूल वृत्ति मे समाविष्ट था। आप सादगी ओर विनम्रता की साक्षात मूर्ति थे।

मै उन दिनो बीकानेर राज्य प्रजा परिषद का एक कनिष्ठ कार्यकर्त्ता था। सन् 1942 म बीकानेर क क्रूर शासन द्वारा अखिल भारतीय चर्खा सघ द्वारा सचालित खादी भडार के ताला लगाकर उसके व्यवस्थापक श्री देवीदत पत को रियासत से निर्वासित कर दिया गया था जिसके कारण आदतन खादीधारी देशभक्तो को कपड़े के सकट का सामना करना पड़ रहा था। ऐसी परिस्थिति म बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के जनक व अध्यक्ष श्री रघुवरदयाल गायल के प्रयत्नो से मई 1943 मे खादी मदिर की स्थापना हुई जिससे खादीधारियो के सकट म कुछ राहत मिली। छलाणीजी उक्त खादी मदिर के सस्थापक सदस्यो मे से एक थे। इसी सिलसिले मे मेरा छलाणीजी से सपर्क हुआ। उम्र मे वे मुझसे दस वर्ष बड़े थे पर छोटे बड़े सभी कार्यकर्त्ताओ के साथ उनका व्यवहार बड़ा ही सौहार्दपूर्ण रहता था और इसलिए वे छोटा बड़ा सभी म लोकप्रिय रहे। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भी आपने दस पन्द्रह वर्ष तक खादी मदिर के अध्यक्ष पद को बखूबी सम्हाला था।

राजनीति के क्षेत्र मे आपने आसाम मे रहते हुए ही देशभक्ति के सस्कार प्राप्त कर लिये थे और बीकानेर मे आने के बाद आपने बापू की सत्य और अहिसा की नीति अपना कर राजनीति म भाग लिया। आप दलगत राजनीति के कीचड़ म कभी नहीं फसे। अहिसा के पुजारी होने के कारण आप हर क्षेत्र मे निर्भयतापूर्वक कार्य करते रहे।

सन् 1944 मे श्री गोयल को लूनकरणसर कस्बे म नजरबद कर दिया गया था। उस काल म शासन की तरफ से जो सख्ती बरती जा रही थी उसम अच्छे अच्छे लागो को श्री गोयल स सपर्क करने मे डर लगता था पर आप उस आतक के बीच भी लूनकरणसर पहुच ही गये। आपका वहा पहुचना बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ क्योकि आपके माध्यम से श्री गोयल एक ऐसी राहत प्राप्त कर पाए जिसके फलस्वरूप उनके

जीवन की रक्षा हो पाई। इस प्रसग का जिक्र भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे बीकानेर का यागदान नामक इतिहास ग्रथ म पृष्ठ 239 पर श्री गोयल की विदुषी पुत्री चन्द्रकला गोयल के तत्समय लिखे गये सस्मरणो स उद्धृत किया जा रहा है—

लूनकरणसर मे बाबूजी शारीरिक रूप म अधिक बीमार हो जाते ह तो भी शात रहते है पर हमारा धैर्य छूटने लगता है। कभी कभी डॉक्टर भी डिस्पेसरी मे मिल जाता हे पर वह भी दवा लिखकर चला जाता है क्याकि डिस्पेसरी म तो कुछ है ही नहीं। अब दवा प्राप्त करना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। हम कह तो किससे कह और कौन उस आतकपूर्ण माहौल म बीकानेर जाकर दवा लाकर देवे। एसे म हमे तभी सहारा मिलता है जब मूलचद मुशी लुक छिप कर रात को पहुच जाता है और किसी तरह दवा बीकानेर से आ जाती है। अभी कुछ समय स बाबूजी का स्वास्थ्य बहुत गिर गया है। एक दिन स्वास्थ्य इतना बिगड़ा कि डाक्टर स्वय चितित लगा। दवा के रुक्के मे इजेक्शन लिखा गया पर मगावे कैसे? उसी (मह अधेरी) रात को सौभाग्य से दियातरा के भैरुदानजी छलाणी निर्भयतापूर्वक अचानक आ पहुचे और उनके द्वारा वह रुक्का बीकानेर तक भेजा जा सका और शकर महाराज की हिम्मत से वह इजेक्शन लूनकरणसर पहुच गया।

इस तरह बीकानेर प्रजा परिषद के नायक श्री गोयल के जीवन को बचाने मे छलाणीजी का सक्रिय योगदान रहा जिसके लिये हम सभी कार्यकर्त्ता उनके ऋणी है।

आज के स्वतन्त्र भारत म तो इस तरह की सहायता एक साधारण मानवीय कर्त्तव्य ही कही जा सकती है पर महाराजा सादुलसिह के उस क्रूर राठौड़ी निरकुश शासन म यह सहयोग कितना महत्त्वपूर्ण रहा इसके मूल्याकन को तो तत्समय के आतक राज म काम करने वाले कार्यकर्त्ता ही आक सकते है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी आपकी तरफ से दियातरा ग्राम को एक ऐसी अद्भुत और अभूतपूर्व सेवा प्रदान की गई जिसकी जोड़ की मिसाल शायद कहीं नहीं मिलेगी। जब तक जीवित रहे तब तक आपने गाव के लोगो को किसी भी क्षेत्र की किसी भी शिकायत को लेकर थाने या कचहरी तक जाने की नौबत नहीं आने दी क्योकि हर शिकायत और तनाव को आप बीच मे पड़कर न्यायपूर्वक निपटवा देते थे। दियातरा गाव एक प्रकार स एक छोटा सा जीता जागता कलियुगी राम राज्य ही बन गया था। एसे महापुरुष को शत् शत् प्रणाम।

त्यागमूर्ति

■ दीपचन्द भूरा ■

राजस्थान प्रदेश अनेकानेक वीरा एव महापुरुषा की जन्मस्थली हे। इन्ही महापुरुषा म एक स्व भैरूदानजी छलाणी थ। इसी प्रदेश के बीकानर क्षेत्र म एसी महान विभूतिया ने देह धारण कर आध्यात्मिक धार्मिक एव सामाजिक जीवन मे अद्वितीय कीतिमान स्थापित कर बीकानर का नाम गौरवमय किया है। कपिलायतन ऋषिश्रेष्ठ श्री कपिल मुनिजी की वह तपोभूमि है जहा उन्हाने साख्य योग दर्शन ज्ञान का प्रतिपादन किया था। इसी कोलायत क पास दियातरा गाव के श्री छलाणीजी निवासी थे। स्व भैरूदानजी छलाणी का रहन सहन महात्मा गाधी व विनोबा भावे जैसा था।

एक बार स्व भैरूदानजी करीमगज आये थे तो मेरी मा न उनसे पूछा कि आपके लिए खाना क्या बनाऊ ? उन्होने कहा कि घी, तेल मीठा नमक छोड़ कर कुछ भी बना देना। घी तेल, मीठा, नमक के बिना क्या चीज बनेगी ? उन्हान कहा कि उबली हुई सब्जी व रोटी खा लूगा। कोइ मिर्च मसाले की जरूरत नहीं है उनके खाने पीने व पहनन मे बहुत ही सादगी थी।

स्व छलाणीजी विवाह म आडम्बर व दहज के बहुत ही खिलाफ थे। उन्होने अपने पुत्र की शादी म साहजी को कह दिया था कि मै कोई दहज नहीं लूगा एव दूल्हे के साथ 8 10 व्यक्ति ही बरात मे आयेग। उन्हे भी खाने म कोई वस्तु नही चाहिए। केवल पेय पदार्थ दे देना। आज के युग म ऐसे आदर्श पुरुषो के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

स्व छलाणीजी त्याग की मूर्ति थे। उन्होने अपने जीवन म सम्पत्ति का अधिकाधिक त्याग कर दिया था ऐसे त्यागी महापुरुषा को मै शत शत नमन करता हू।

स्व छलाणीजी एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होने अपने जीवन म एक बार एम एल ए का चुनाव भी लड़ा था।

> वो काम कर कि उम्र खुशी से कटे तेरी
> वो काम कर कि याद तुझे सब किया करे।
> जिस लब पे तेरा जिक्र हो हो जिक्र ए खेर ही
> और नाम तेरा वे अदब से लिया करे।

मेरी मान्यता है कि स्व छलाणीजी का जीवन एक प्रेरणास्रोत के रूप म सदैव हमारे मध्य रहेगा और आने वाली पीढ़िया उनके जीवन से प्ररणा पाती रहेगी।

कथनी करनी एक

■ रिखवराज कर्णावट ■

हमारे भारत देश में सिर की पगड़ी का बड़ा महत्व रहा है। पगड़ीधारी की सत्यता, सहनशीलता, परोपकारिता, समाजसेवा, राष्ट्रप्रेम एवं सादगी सदा चर्चित रही हैं। कई बार न्यायालयों में भी अनेक साक्ष्यों की अपेक्षा पगड़ी वाले की साक्षी को अधिक मान्यता मिली है। यद्यपि पगड़ीधारियों की वह महत्ता अब वैसी नहीं रही फिर भी अपेक्षाकृत वजनदार तो आज भी है। कारण स्पष्ट है कई पगड़ीधारी व्यक्ति (यानि महाजन कहलाने वाले) अपनी बात के, अपनी आन के, अपने कार्य के प्रति सत्यनिष्ठा बनाये रखते हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति स्व. भैरूदानजी छलाणी थे।

श्री भैरूदानजी का नाम तो मैंने सुन रखा था पर उनसे विशेष मुलाकात करीब 1967 में पहले जोधपुर में हुई थी। उस समय वे अपने पुत्र का संबंध ढूंढने के लिए अपनी कार लेकर जोधपुर आये थे। उनका पुत्र स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त, उनके आसाम में चल रहे व्यापार को संभालने वाला, चरित्र सम्पन्न व्यक्तित्व का धनी था। छलाणीजी की एक ही शर्त थी कि कन्या शिक्षित हो और गांधी विचारों का आदर करने वाली हो। उसके अभिभावक विवाह में लेन-देन समेत पाँचसो रुपयों से अधिक व्यय नहीं करे यानि विवाह बिना किसी आडम्बर दिखावे के, सादगी से सम्पन्न हो। उन्होंने वैसा ही किया। कथनी व करणी की यह मिसाल बहुतों के लिए प्रेरणादायी बनी।

सीधे सादे स्वरूप को धारण करने वाले श्री भैरूदानजी बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। यही कारण था कि वे अपने गांव में कृषि कार्य, असम व बंगाल में व्यापार व बीकानेर क्षेत्र में अपनी सार्वजनिक सेवाओं का बखूबी अंजाम देने में सफल रहे। समाज सुधारक के रूप में, गो सेवा के क्षेत्र में, नशाबंदी एवं नशा निवारण के कामों में, खादी एवं ग्रामोद्योगों को प्रोत्साहन देने में उन्होंने जीवनपर्यन्त अनवरत श्रम किया।

अनाम उत्सर्ग

अपने नाम की भूख उन्हें कहीं नहीं रही। बहुमुखी क्षेत्रों में तन, मन और धन तीनों से जितना उत्सर्ग उस व्यक्ति ने किया उतना करके भी न अखबारों में छपने की, न ही सेवा कार्य करते हुए फोटो खिंचवा कर यादगार रखने की और न ही दिखाने की उसे लालसा थी। न कहीं अपने दानदाता नाम की यशपट्टिका लगवाई और न कहीं भाषण देने वालों में मंच पर अपना स्थान बनाया। ऐसा अनाम उत्सर्ग करने वाला यह व्यक्ति बीकानेर में ग्रामीण अंचल में जब भी कोई विपदा आई तो संकट से जूझने में अग्रणी रहा।

वे वास्तव में अपने नाम से भैरू (भैरव) को सार्थक करते रहे। यह अजीब संयोग ही है कि मै भैरूदान नाम के जिन व्यक्तियो के सम्पर्क में आया वे सभी अपनी धुन के पक्के निस्वार्थ भाव से अपने सेवा के कार्य में संलग्न रहे। बीकानेर शहर के ही एक भैरूदानजी सेठिया का स्मरण आता है। जो जैन धर्म साहित्य और सदाचार के प्रचार प्रसार में अपने बलबूते पर लगे रहे। ऐसा लगता है कि भैरूदान नाम में ही कोई विशेषता है। इस नाम के अधिकाश व्यक्ति अनाम किन्तु विशिष्ट सेवाओ मे निमग्न रहे है। स्व भैरूदानजी छलाणी उनमे अपना विशिष्ट स्थान बनाने मे सफल रहे। *कइयो ने उनसे प्रेरणा पाई और भविष्य मे भी भावी पीढ़ी को उनसे प्रेरणा* मिलती रहेगी।

मंगलमूर्ति भाईजी

■ प्रतापसिंह वैद ■

'आज महत्त्व इस बात का नहीं है कि उम्र कितनी लम्बी होती है, बल्कि महत्त्व इस बात का है कि हम उम्र को कैसे जीते हैं।' सचमुच। जीना भी एक कला है। जब तक जिए, सुख, शांति और आनन्द को बटोरते हुए जिए जीवन में कुछ कर गुजरते हुए आगे बढ़े साध्वी राजीमतीजी का यह वाक्य हमारे अन्तर्मन में उतर जाता है भाईजी श्री भैरूदानजी छलाणी का स्मरण आते ही।

भाईजी श्री भैरूदानजी से मेरा प्रथम परिचय हुआ सन् 1934 में। तब मै तेजपुर (आसाम) अपने पूज्य पिताजी के साथ व्यापार सम्बन्धी कामकाज सीखने गया था। हमारे बगल के मकान में मेरे अग्रज भाई द्वारकाप्रसादजी बगड़िया तथा भाई मूलचन्दजी बडेर का व्यापार तथा निवास था। हम लोग सवेरे घूमने जाया करते थे। भाईजी के विचारो तथा शिक्षाओ का हमारे जीवन में बहुत प्रभाव पड़ा। वे गांधीजी के उपदेशो से बड़ा प्रभावित थे तथा शुद्ध खादी पहनते थे।

गांधीजी के विचार सेवा करते करते अपने आपको खपा देने में हर्ज नहीं यह शरीर उसी के लिए तो मिला है को भाईजी ने अपने जीवन में उतार लिया था। उनकी संगत से हम लोगो में भी कुछ सेवा की भावना आई।

सन् 1945 में आप आसाम छोड़कर अपने पैतृक गाव रियातरा (बीकानेर राजस्थान) पधार गए तथा अपना पूरा जीवन ही सेवा में खपा दिया। आपसे मेरा सम्पर्क पत्रो द्वारा हमेशा बना रहा।

मेरी हार्दिक इच्छा पूज्य भाईजी के दर्शन करने जाने की हमेशा बनी रहती लेकिन जा नहीं सका।

आपने दियातरा मे समाज सुधारक गो सेवक कृषि सुधारक, खादी प्रचारक शिक्षा प्रेमी तथा सर्वोदयी के रूप म आजीवन काम किया, यह पढ़कर और सुनकर आख खुशी से भर आती है। ऐसे बिरले ही पुण्य पुरुष होगे जिन्होने इस नर चोले को पाकर उसे सेवा धर्म म लगाया हो जो जन जन के दुख दर्द म शामिल होकर उनकी आर्त्तवाणी स द्रवीभूत हुए हो और 'तेन त्यक्तेन भुजीथा' की वेदवाणी को दैनिक व्यवहार म उतार कर अपने जीवन सुमन की सौरभ चारो ओर फैलाई हो। स्वर्गीय भाईजी उन्हीं महान् आत्माओ म से थे और एक दिन उन्होने अपने निर्मल चोले को प्रभु के समक्ष रख दिया और हम असहाय की भाति देखते ही रह गए।

ऐसी महान आत्मा का साथ जीवन मे मुझे मिला इसलिए मे अपने आपको धन्य मानता हू। आशा करता हू कि उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक होगा। उनके जीवन से हम प्रेरणा लेकर अपने जीवन म सेवा कार्य करे।

पूज्य भाईजी की स्मृति म ग्रथ प्रकाशित करने की योजना बनाने के लिए उनके पुत्रो को बधाई।

सर्वस्नेही सेवामूर्ति

■ राधाकृष्ण बजाज ■

भाई भैरूदानजी छलाणी से भाई की तरह का सबध रहा। उनके दियातरा गाव मे भी दो बार जाने का मौका मिला। उनके देहाती भोजन का एव स्वागत का आस्वाद भी मिला। उनके साथ उनका खेत भी देखा। वे सामाजिक सुधारक थे। घूघट दहेज आदि से परहेज करते थे। स्त्री शिक्षा के पक्षपाती थे। देहात म होते हुए भी परिवार की बहनो को उच्च शिक्षा दिलायी। निरर्थक रूढ़ियों को कभी नहीं माना। वे भीतरी मन स सच्चे गो सेवक थे। घर मे गाये रखकर सेवा करते थे। अकाल के दिनो मे गो सेवा मे पूरी शक्ति लगा देते थे। नस्ल सुधार के लिये भी उनका प्रयास रहा। खेतो मे पानी सग्रह हेतु मेड़बदी, उन्नत बीजो द्वारा उपज बढ़ाने के प्रयास किये। वहा सब्जी मे भी सुधार किया। उनके घर म प्रदर्शनी लगी रहती थी। निधूम चूल्हा तथा कई प्रयोग चलते रहते थे।

ऊना खादी सस्थान के वे अध्यक्ष थे। मे भी उनकी समिति का एक सदस्य था। उस निमित्त दो एक बार दियातरा जाना पड़ा। खादी मदिर के व करीब 16 साल

अध्यक्ष रहे। सम्था की खूब उन्नति की। अपने गाव मे भी ऊनी कताई कन्द्र चलाया। वे दिमाग से पूरा तरह गाधी विनोबा विचार के थ।

भूदान म खुद ने भी भूमि दी ओर लोगो को भी प्रेरित किया। जल सकट निवारण की दृष्टि से तलाई तालाबा की सफाइ कुआ की मरम्मत करवात थ। सरकारी योजनाओ म भी काफी कुओ का निर्माण किया। सरपच के नाते पचायत समिति के प्रधान क नाते देहात मे काफी सुधार किये। उनका स्वभाव इतना आकषक और स्नेहिल था कि एक बार जिनका सबध आया वह कभी छूटता ही नहीं था। इनसे मिलकर इतनी खुशी हाती थी कि इनके पास बैठ रहो ओर इनकी बात सुनते रहो। हरेक को ऐसा लगता था कि उनका मुझ पर अधिक प्रम हे। हमारा ता उनसे पारिवारिक सम्बन्ध ही हा गया था।

इन वर्षो म मेरा स्वास्थ्य कमजोर हाने के कारण बीकानेर की तरफ अधिक जाना नहीं हा सका ओर उनसे मिलन के मौके कम आये। फिर भी उनका स्मरण आज भी ताजा है। उनका विस्मरण कभी हो ही नही सकता। इतना स्नेह वे बरसाते थे। ऐसे समर्पित सेवक ही दुनिया का मार्गदर्शन दे सकते है।

चौबीस घट उनका दिमाग समाज सेवा के लिए चलता ही रहता था। ऐसे सेवक जाते है तो उनका स्थान लने के लिए आज क युग मे कोई आग आता नही। इसी कमी के कारण ही आज देश की दशा गिरती जा रही है। भगवान ऐस सेवक भेजगा तभी दश ऊपर उठ सकता है। गतात्मा के चरणा म शतश प्रणाम।

विचारवान सर्वोदयी कार्यकर्ता

▪ जवाहरलाल जेन ▪

श्री भैरूदानजी छलाणी सर्वादय विचार और काम के बहुत अच्छे कार्यकर्ता आर विचारक थे ओर सस्था को उनका मार्गदर्शन सयमित और विचारपूर्ण रहता था। हम लोग तो अनेक बार उनके ग्राम के स्थान पर ही सस्थान की सभाए करते थे। छलाणीजी स्वतन्त्रता सग्राम के मूक सेवक थे। वे अपने गाव की पचायत के सरपच चुने गय। वे कोलायत पचायत समिति के प्रधान चुने गये और अपने कार्यकाल म उन्हाने दियातरा ग्राम और अपनी पचायत समिति की बहुत निष्ठा के साथ सेवा की।

गो सेवा के काम म उनकी विशेष रुचि थी। वे अपन गाव की आवारा गाया को घर पर लाकर चारा पानी देते थे। वे बीमार गाया की सेवा सुश्रुषा करते ओर

ठीक होने पर मालिक को सभला देते थे। उन्हाने 1959 मे दियातरा गाव का सरपच एक हरिजन को बनवाया था। उनकी हरिजन समाज के उत्थान मे बहुत रुचि थी।

शिक्षा मे भी उनकी रुचि सराहनीय थी। अपने गाव म प्राथमिक स्कूल का भवन उन्हाने बनवाकर दिया। बाद म माध्यमिक विद्यालय का भवन भी उन्हान बनवाया। वे गरीब छात्रा को बाहर से लाकर अपने खर्च पर हास्टल में रखते थ। गरीब छात्रो की फीस ओर किताबा की सहायता देना उन्हे अच्छा लगता था।

श्री छलाणीजी समग्र दृष्टि से सर्वादय के विचार और कार्यक्रम को आग बढ़ाने म आजीवन लगे रह। उनके सुझाए हुए ओर चलाए गए कार्यक्रम को उनके उत्तराधिकारी बराबर आगे बढ़ाते रहं तो गाव और समाज की उनके द्वारा सच्ची सेवा हागी।

कथनी-करनी की एकता के धनी

■ बद्रीप्रसाद स्वामी ■

स्वर्गीय श्री भैरूदानजी छलाणी से मेरा वर्षों पुराना परिचय ही नही रहा है बल्कि मै उनके जीवन और विचार दोना से ही काफी प्रभावित रहा हू। बीकानेर म तो अनेक बार उनसे मिलने का और बातचीत करने का अवसर मिलता ही रहता था परन्तु एक बार दियातरा मे घर पर भी उनक साथ रहने का अवसर मिला था। उनका निवास खान पान और रहन सहन उनके सात्विक विचारा के अनुकूल मैन प्रत्यक्ष रूप से वहा देखा ता मुझे लगा कि यह सज्जन जैसा सोचते हैं वैसा कर भी रह है। श्री छलाणीजी द्वारा अत्यन्त प्रेम से घी गुड़ और बाजर की रोटी और दही खिलाकर जा हमारा आतिथ्य किया गया वो आज भी याद है। श्री भैरूदानजी एक सीधे साद और सरल स्वभाव के सच्चे सज्जन थ जो गाधीवादी विचारो से प्रभावित होने के कारण सदा दलगत राजनीति स दूर रहे और रचनात्मक कामों म सदा रुचि लेते रहे। व गो भक्त तो थ ही परन्तु साथ साथ गावभक्त भी थ। इसलिये क्षेत्र क सब लोगा न उन्ह सरपच भी चुना था, इतना ही नहीं, बल्कि वो कोलायत पचायत समिति के निर्विरोध प्रधान भी चुने गय। उन्हाने अपन जीवन म समाज सुधार के अनेक काम किये। कृषि खादी ग्रामाद्योग एव सर्वादय के क्षेत्र मे भूदान यज्ञ म सक्रिय भागीदारी निभाई व अनक यात्राए की। इसके अलावा स्त्री शिक्षा जल सकट निवारण हरिजनोद्धार, नस्ल सुधार आदि अनेक रचनात्मक काम अपने जीवन म उन्हाने किए। वे वास्तव म एक मूक स्वतन्त्रता सेनानी थे। उनके जीवन से सभी नवयुवक और नर नारियो को सदा प्ररणा मिलती रहेगी ऐसी मेरी शुभकामना है।

ग्राम स्वराज्य के नक्षत्र

■ महालचन्द बोथरा ■

स्वतन्त्रता सग्राम के अनेकानेक सहयोगी जब अपने कष्टा की दास्तान सरकारी अनुदानो से भुनाने मे लगे है तब भी ऐसे निस्पृही कार्यकर्ताआ की भी कमी नहीं है जिन्होंने गाधी और विनोबा की साख को हूबहू कायम रखने म अभूतपूर्व भूमिका निभाई। श्री भैरूदानजी छलाणी बीकानेर सभाग के ऐसे ही मूक सेवक थे।

बीकानेर के मगरा क्षेत्र मे बसा दियातरा ग्राम आज भी भैरूदानजी के युवाकाल मे आज से 40 वर्ष पूर्व गाधीजी की प्रेरणा से किए निर्धूम चूल्हे और कम्पोस्ट खाद के प्रयोगो का साक्षी बना हुआ है। सादा जीवन उच्च विचार' को जीवन का प्रेरक सूत्र मानकर छलाणीजी ने खादी विचार को इस तरह हृदयगम किया कि वे खादी भडार और उसकी बहुआयामी गतिविधियो के सूत्रधार बन गए। अपनी नि स्वार्थ लगन से ही वे खादी मदिर बीकानेर के अध्यक्ष चुने गए। अपने अनन्य साथी श्री रघुवरदयाल गोयल के साथ मिल कर उन्होने स्वतन्त्रता की जग तो लड़ी ही शराब बन्दी और गो रक्षा के लिए आन्दोलन भी सचालित किये। अपने ग्राम का सरपच चुने जाकर अपनी महती सेवाआ से लाभान्वित किया। वस्तुत उनका घर ही कार्यकर्ताओ का निवास था। उनके दर्शनीय झोपड़ मे सैकड़ो कार्यकर्ता एक साथ बैठ कर योजना क्रियान्वयन मे सहभागी तो होते ही साथ ही छलाणीजी के आतिथ्य सत्कार से भी अभिभूत होते।

बीकानेर जिले के ग्रामो को स्वावलम्बी बनाने एव जिलादान के अभियान म वे अग्रणी थे। उनका अथक योगदान स्पृहणीय था। मेरे तो वे अनन्य मित्र थे। सन् 1995 मे उनके निधन से ग्राम स्वराज्य के स्वप्निल आकाश का एक नक्षत्र अस्त हो गया।

एक सप्राण व्यक्तित्व

■ भगवानदास माहेश्वरी ■

सिर पर पगड़ी और सामान्य खादी वस्त्रा मे परिवेष्ठित कृशकाय श्याम वर्ण उम्र ग्रामजन का नाम था भैरूदानजी छलाणी। बीकानेर के स्वनामधन्य नेता स्व रघुवरदयालजी गोयल ने एक बैठक मे उनका परिचय मेरे से करवाया था। म

जेसलमर का होने के नाते उनकी पक्ति का ही व्यक्ति ह, वे जब मिलते अत्यन्त मैत्री भाव से यहा का हालचाल व जमाने की स्थिति देते थे। वह निश्छल व्यक्तित्व वैज्ञानिक दृष्टि लिये था तो आध्यात्मिकता में भी दृढ़ विश्वास प्रकट करता जेसलमेर बीकानेर सड़क पर स्थित होने से उनसे बिना मिले आने जाने की हिम्मत नहीं होती। रात हो या दिन हर समय का बिना ख्याल किये उनके यहा सहज भोजन व्यवस्था हो जाती और हम लोग बिना सकोच अनेक मित्रों के साथ भोजन लेते स्त्री पुरुष सभी से पारिवारिकता आ हो गई थी। छलाणीजी का घर रचनात्मक कार्यकर्ताओ की छावनी हो गई थी। वैसे जब वे बीकानेर में अपने स्वजनों के यहा ठहरे रहते भोजनादि की व्यवस्था वहा भी स्नेहपूर्वक होती खादी संस्थाओं की बैठक भी उनके यहा रख ली जाती।

मैंने उन्हें दुर्बल तबियत में ही देखा। विवादास्पद विषयो में प्राय वे मौन रहते, सभी कार्यकर्ता उन्हें समान रूप से आदर प्रेम देते। जैसलमेर में जे सपरिवार आये तो रुग्णावस्था के नाते विशेष व्यवहार व्यवस्था की अपेक्षा उन्होंने प्रकट की, घटो साथ बैठ सभी तरह की चर्चाओं को वे मुक्त मन से करते। अपने पुत्र भवरलालजी व फूसराजजी से तो उन्होंने मुझे परिचय कराया ही था उन्होंने अपने परिवार के प्राय सभी से परिचय कराया था सुशिक्षित लड़कियों ने तो मेरे से एक शिविर लेने की आकाक्षा भी प्रकट की थी।

> जिसका जन्म इस जगत् मे अनिवार्य उसकी मौत है
> करती नियति नाटक सदा फिर भी नियम की आट है
> जर्जर काया से छुड़ा उपकार करती मौत है
> नवजन्म की वह वाहिनी तब मौत का क्या सोच है।'

उनके पारिवारिक जनो मे अपना नाम जुड़ाने मे गौरव लगता है उस सप्राण व्यक्तित्व को शतश प्रणाम।

विन्दु मे सिन्धु

■ शरद कुमार साधक ■

दियातरा निवासी होते भी छलाणीजी जल सकट दूर करने, भूमि हीनता मिटाने बेकारो के लिए खादी ग्रामोद्योगो मे काम दिलाने कृषि गो सेवा शिक्षा के क्षेत्र मे नई और प्रासगिक विधाए शामिल करने तथा समाज सुधार को प्रोत्साहन देने मे जुटे रहे। वे जितना पढ़ते थे उससे दुगुना चितन एव चौगुना आचरण करना चाहते

थ। स्वतत्रता, स्वावलम्बन, स्वाध्याय स्वदेशी और सर्वोदय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता मे सत्य जीवन का लक्ष्य सयम जीवन की पद्धति एव सेवा जीवन कार्य बन गया और इस तरह उनसे एक्ट लोकली थिंक ग्लोबली की भूमिका प्रशस्त हुई। उनकी स्मृति से भारतीय सभ्यता एव सम्पनता को अधिष्ठान को प्रभावी बनाना चाहिए।

सुलभ व्यक्ति दुर्लभ विभूति

■ रामचन्द्र मक्कासर ■

आदरणीय श्री भैरूदानजी छलाणी बीकानेर ग्रामदान अभियान समिति के वरिष्ठ सदस्य थे। मेरा परिचय उनके गाव वियातरा म उनके द्वारा पूछ गये सवाल जवाब के बाद ही हुआ—

औसत उत्पादन प्रति बीघा कितना?

बीज का चुनाव?

मने तरबूज का बीज जापान स मगाया है।

छलाणीजी दुर्लभ विभूति थे। अत्यन्त सादे मितभाषी और अल्पाहारी जीवन। चमक दमक स व दूर रहे, लेकिन विचारो की गहराइ मे व डूब रहते। गावो का विकास ग्रामदान स ग्राम स्वराज्य की सक्रिय विचारधारा से होगा एसी उनकी मान्यता थी। उन्हाने अपनी पाठशाला के प्रागण मे डॉ दयानिधि पटनायक (वैज्ञानिक सर्वोदयी) की देख रेख म पहले दो दिन का प्रशिक्षण शिविर लगाया। ठड के दिन थ फिर भी दूर दूर स मेर जैस छोटे बड़े कार्यकर्ता लोकसेवक और पचायतो क सदस्य उसम भाग लेन आये थ। वह नान वोलियट रिवोल्यूशन की चिनगारी सी थी।

तीसरे दिन हम टोलियो म बट गये और ट्रको बसो व पद यात्रा क द्वारा श्री कोलायत पचायत समिति के गावो म सकल्प पत्र भरवाने पहुच। ?? तीन दिन गावो के मध्य खेतो, ढाणियो म जनसम्पर्क किया। गोष्ठिया करन की कोशिश की नुक्कड़ सभा की। खेद हुआ कि देहातो म खेत खलिहानो म शुद्ध पानी नहीं। हमने लोगो म ?? मिश्रित बाजरे की रोटी खाई। मुसलमान भाई भेड़ चराता है। कहीं हिन्दू कुछ रोटी गायो क साथ उनके भरण पोषण क लिए घूमता है। पानी के लिए दूर दूर कुण्ड ?? थ। व भी आधे पक्के कच्चे। चूने और रा?? स लिपे पुते। ?? ?? ?? ?? ?? दिल्ली जयपुर प्रकाश म ?? ?? ?? देहातो म अधेरा।

बीकानेर की धरती पर चारो पचायत समितियो म हमने उन दिनों में ग्रामदान की मुहिम छेड़ी। सैकड़ा लोगा म अहिसक क्राति की लहर सी आई। इसी दृष्टि स देश भर म कुल 40 लाख एकड़ भूमि कागजी दान के रूप म मिली। तेलगाना से छतरगढ़ तक एक गाधी विनोबा की विद्युत द्युति चमक उठी। सरकार ने सीख नहीं ली अन्यथा ये अस्थिरता के दिन भारत को देखने ही नहीं पड़ते। अब तो देश पार्टी तत्र के दलदल म धस गया है। कोई चमत्कार ही हमारे देश की डूबती नैया को बचा सकता है। फिर भी हम आशा के सहारे सम्बल को क्या छोड़—

गगा की कसम यमुना की कसम ये ताना बाना बदलेगा।
तू खुद तो बदल, तू खुद तो बदल तब तो ये जमाना बदलेगा।।

बीकानेर क्षेत्रीय ग्रामदान—ग्राम स्वराज्य अभियान समिति, खादी मदिर (बीकानेर) के लेटर पेड पर क्र 4328 दिनाक 15 12 60 पर सलग्न एक सूची अकित थी। उसम सदस्यो के नाम पते क्रमश इस प्रकार थे—

1 श्री रघुवरदयालजी गोयल मन प्रसन्न, चौतीन कुए के पास बीकानेर।
2 श्री भैरूदानजी छलाणी गाव बड़ा दियातरा तहसील कोलायत बीकानेर
3 श्री प्रेमसुखजी तापणीवाल मत्री खादी सस्थान रानी बाजार, बीकानेर।
4 श्री देवीदत्तजी पत मत्री खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान, रानी बाजार बीकानेर।
5 श्री सोहनलालजी मोदी मत्री खादी मदिर, बीकानेर।
6 श्री मालचदजी हिसारिया नोहर श्रीगगानगर।
7 श्री कैलाशचन्द्रजी अग्रवाल कैलाश मिल्स हनुमानगढ़ टाउन।
8 श्री बनवारीलालजी बेदी गाधी आश्रम सुजानगढ़।
9 श्री रामचन्द्रजी मक्कासर हनुमानगढ़ ज
10 श्री राजादेशजी पाडे राज खादी ग्रा बोर्ड रानी बाजार बीकानेर
11 श्री मोहनलालजी सारस्वत रतनगढ़ चूरू
12 श्री रामेश्वरलालजी अग्रवाल राज खादी सघ, खादी बाग जयपुर।
13 मत्रीजी राज समग्र सेवा सघ किशोर निवास त्रिपोलिया बाजार जयपुर
14 श्री राधाकृष्णजी बजाज एस बी 93, बापू नगर नेहरू रोड जयपुर।
15 श्री बद्रीप्रसादजी स्वामी अध्यक्ष राज शाति सेना मकराना।
16 श्री रामदयालजी खडेलवाल राज गो सेवा सघ रानी बाजार, बीकानेर।
17 श्री श्यामसुन्दरजी पाडे, एडवोकेट रतनगढ़ चूरू।
18 श्री मालीरामजी वर्मा ऊनी खादी ग्रा स रानी बाजार बीकानेर
19 श्री फूसराजजी छलाणी दियातरा।

मरुभूमि का उन्नायक

■ मूगालाल सुरेका ■

भूगाल इतिहास क निर्माण म किस प्रकार योगदान दता है इसका उदाहरण श्री भैरूदानजी छलाणी का जीवन स्पष्ट प्रस्तुत करता है। कोलायत तहसील मरुभूमि का वह भाग है जहा प्रकृति ने एक सूखी जलवायु म जीवन यापन करने क लिए मानव को चुना है। दूर दूर तक मरुभूमि का दृश्य, एक ओर पीने के लिए पानी की कमी भी उस क्षेत्र की मुख्य समस्या रही है। पचायती राज प्रारम्भ होने के बाद कोलायत पचायत समिति की समाआ म मुझ सभागीय विकास अधिकारी के रूप म जाने का अवसर मिलता रहा। श्री भैरूदानजी न अपने क्षेत्र की कठिन परिस्थितियों म पचायत का नेतृत्व किया। व स्त्री शिक्षा के सशक्त पक्षपाती थे और इस सम्बन्ध म समाज का तैयार करने म भी उन्हाने एक तरह से पहल की। अकाल के दिना मे वे क्षेत्र की सेवा करते रहे। कृषि योजनाआ को प्रारम्भ करने म भी वर्षा के पानी का सदुपयोग करने के लिए खेतो मे मेड़बदी करवाने, उन्नत बीजा स फसल की पैदावार बढ़ाने के बहुत से प्रयास किये। बीकानेर खादी मदिर से बराबर जुड़ रहे और सर्वोदयी के रूप मे उनकी पहचान उस क्षेत्र म बराबर बनी रही। दियातरा ग्राम म पहले प्राथमिक स्कूल का भवन बनवाया और फिर सैकण्डरी स्कूल का भवन बनवाकर विद्यादान म उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किये है।

सात्विक व्यक्ति

■ दौलतराम सारण ■

श्री छलाणीजी एक विचारशील समाजसेवक थे और विशेष तोर से गावो के समग्र विकास के लिए वे उपयोगी, व्यावहारिक दृष्टिकोण रखते थे। इस सम्बन्ध मे उन्हाने अपन गाव दियातरा को आधार बनाकर काम करने का प्रयास भी किया था। वे प्रचार स दूर रहकर अपन सोच के अनुसार काम करने का प्रयास जीवनभर करत रहे। मुझे बीकानेर जिला और कोलायत क्षेत्र के गावो का दौरा करते हुए दियातरा जाने का अवसर मिला था। अनेक बार उनसे मिलना हुआ और विचार विमर्श करने का अवसर मुझे मिला। वे बहुत ही साधे, सरल व मधुर स्वभाव के सात्विक व्यक्ति थ। मुस्कान के साथ धीम स्वर मे बात करने का उनका ढग आकर्षक था। सादा जीवन उच्च विचार उनका आदर्श था।

ऐस मौन समाजसेवको के जीवन को समाज के सामने रखन का प्रयास प्रशसनीय है।

सामाजिक राजनैतिक चेतना के अग्रदूत

■ पूर्णाराम चोहान ■

श्री भेरूदानजी छलाणी से मेरी मुलाकात तब हुई जब वे कोलायत तहसील में सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। कोलायत तहसील की तत्कालीन समय की सबसे विकट समस्या छुआछूत थी। आपने सभी वर्गों एवं समुदायों में समानता एवं एकता की बात कही। अछूत समझे जाने वाले बन्धुओं के बीच में बैठकर आपने यह कहा कि—छुआछूत अमानवीय है। श्री छलाणीजी कोलायत तहसील के सामाजिक और राजनैतिक चेतना के अग्रदूत थे।

श्री छलाणीजी वास्तव में उच्च कोटि के मानव, कोलायत में राजनैतिक चेतना के मार्गदर्शक, सामाजिक जागृति के पुरोधा एवं कोलायत पंचायत समिति के प्रथम प्रधान रहे।

उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर जो पुस्तक प्रकाशित हो रही है जिला प्रमुख होने के नाते मुझे बेहद खुशी है कि ऐसे उच्च कोटि के मानव का जीवन दर्शन समझने का मौका मिलेगा।

दंभरहित व्यक्तित्व

■ कन्हैयालाल टाटिया ■

श्रीमान् भैरूदानजी से मेरा सम्बन्ध सन् 1955 से रहा है। जब मैं खादी मंदिर में गया तब वे वहां के उपाध्यक्ष थे। वे मुझे अत्यन्त प्रेम से सारा काम समझाने में मदद करते थे। सम्बन्ध इतने गाढ़े बन गए थे कि अन्त समय तक घर से आत्मीयता का सम्बन्ध रहा।

1957 की बात है कि हम कोलायत तहसील में भूदान पद यात्रा में गए, उस वक्त उन्होंने "धन और धरती बंट के रहेगी" इस घोष के साथ पूरा सहयोग दिया। यात्रा में भगवानदास माहेश्वरी, जेसलमेर व बालकृष्ण थानवी, फलौदी आदि भी साथ थे। उन्होंने उस समय 10% सम्पत्ति दान देने का फार्म भरा व उसे मुस्तैदी से अन्त तक निभाया।

सन् 1962 में मेरी लड़की (ऊषा) की शादी सादगीपूर्ण व सब सामाजिक कुरीतियों से ऊपर उठकर की। जिसमें उन्होंने परिवार सहित तथा रघुवरदयालजी

गोयल एक्स मिनिस्टर, बीकानेर क साथ भाग लिया और आशीष दिया। वे सादगीपूर्ण जीवन जीने वाला के साथ आत्मीयता रखते थे। उनका जीवन निष्कलक एव दभरहित था।

रचनाधर्मिता की प्रतिमूर्ति

■ मूलचन्द पारीक ■

थार रेगिस्तान के हृदय म अवस्थित सारस्वत व मरु जागल प्रदेश मे स्थित बीकानेर क्षेत्र की मगरा तहसील के दियातरा गाव म जन्मे श्रद्धेय भेरूदानजी छलाणी यद्यपि आज हमारे बीच म नहीं है, पर उनका साधनामय जीवन, राष्ट्रीय व सामाजिक उत्थान के कार्य, जीवन पद्धति एव लोकहितकारी कार्य हमे आज भी निरन्तर प्रेरणा दे रहे ह और उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाए हुए है।

कहा जाता है कि वैदिक युग मे इस क्षेत्र म सरस्वती नदी बहती थी और इस क्षेत्र मे ऋषि मुनिया के आश्रम थे और वैदिक ऋचाआ का सृजन हुआ था। इतिहासपुरुष दत्तात्रेय की तपस्थली कालान्तर मे रेगिस्तानी प्रदेश व दियातरा ग्राम बन गया। इसके आस पास का स्थल व वातावरण आज भी इसकी विलक्षणता का कुछ आभास कराता है।

ऐसे स्थल दियातरा मे पल्लवित व पोषित श्री छलाणीजी जीवनभर साधक की तरह कर्मशील रहे। शिक्षा रचनात्मक कार्यो, गो सेवा समाजहित रूढ़िया के उन्मूलन सदाचार एव राष्ट्रहित के लिए वे सदा प्रयत्नशील रहे। व्यापार के लिए वे आसाम म रहे, पर वहा भी राष्ट्रीय आदोलन मे सक्रिय रहे। स्वतत्रता आदोलन से जुड़े लोगा व कार्यक्रमा मे उन्हाने मदद की व उनम भाग लिया। कोई स्वार्थ नहीं कोई दिखावा नहीं। बीकानेर रियासत मे प्रजा परिषद की स्थापना होने पर वे उसके सस्थापक बाबू रघुवरदयाल गोयल के सम्पर्क मे आए व उन्हे पूर्ण सहयोग दिया। प्रजा परिषद के एक कार्यकर्ता के नाते मेरा भी उनसे सम्पर्क हुआ व सदा उनका आशीर्वाद मिलता रहा। उस समय ऐसे विचार रखना भी अपराध था पर गावा मे जन जागरण म उनका सदा योगदान रहा।

स्वाधीनता प्राप्ति एव राजस्थान बनने के बाद स वे बराबर रचनात्मक कार्यो एव सामाजिक चतना कार्यक्रम से जुड़े रहे। खादी व ग्रामोद्योग कृषि व गोसवा कृषि अनुसधान तथा अकाल के समय गोधन की रक्षा गोसवर्धन एव पीड़िता की मदद मे उनकी शक्ति लगी रही। उन्होने स्वय ने तन मन धन से योगदान दिया व लोगो को

मदद हेतु प्रेरित किया। गाधीजी व सर्वोदय के मूल व आध्यात्मिक विचारो के गूढार्थ को समझकर उन्हाने सादगी से आडम्बरहीन जीवन व्यतीत किया। उनका घर तीर्थ की तरह रहा जहा हर सार्वजनिक कार्यकर्ता व नेता व कायशील अधिकारी को सत्कार प्रेम, अपनापन व अधिक सेवा करने की प्रेरणा मिली। उन्होने ग्राम पचायत व कोलायत ब्लाक के निर्विरोध अध्यक्ष रहकर शिक्षा महिला जागरण व विकास कार्यो को आगे बढ़ाया। उनका पूरा परिवार सात्विक भावनाओ से ओत प्रोत रहा व उसका असर पूरे गाव व आस पास के इलाके पर रहा। गाव व समीपस्थ इलाको के लोग उनके पास आकर अपने विवादो को सुलझाते थे और वे निर्विकार भावना से निष्पक्ष रहकर लोगो को सद्मार्ग दिखाते व उस पर चलने की प्रेरणा देते थे। शिक्षा प्रसार एव नारी जागरण तथा ग्राम स्वावलम्बन की दिशा में उनके कार्य सदा प्रेरणा देते रहेगे। उन्नत कृषि, देशी खाद निर्माण, गोबर गैस का उपयोग, गोसवर्धन कार्य तथा खादी के माध्यम से बीकानेर जिले में रोजगार विस्तार में उनका सहयोग उल्लेखनीय है। वो खादी मदिर ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान आदि से जीवनभर जुड़े रहे। राजस्थान गोसेवा सघ के कार्यो में सहयोग देकर बीकानेर व जैसलमेर क्षेत्र के कार्यों में रुचि ली। दलित वर्ग की सेवा व पीड़ितो की मदद उन्होने सदा की। उन्होने सदा अपने को प्रचार, दिखावे, प्रदर्शन व प्रशसा से दूर रखा एव गाधी व विनोबा के उपदेशो को आत्मसात् कर साधक व सेवक का जीवन जिया।

मुझे भी अनेक बार बीकानेर व दियातरा में उनके सम्पर्क में आने व सहयोग लेने का अवसर मिला। कोशिश करके भी मै अपने जीवन में वैसी सात्विकता तो नहीं ला सका पर उनके प्रति निरन्तर श्रद्धाभाव बढ़ता गया और उनके शात स्वभाव व नपे तुले शब्दो का मेरी सोच भावना व कार्यो पर प्रेरणात्मक असर पड़ा।

उन्हे शत् शत् प्रणाम।

सात्विक वृत्ति के सज्जन

■ सत्यनारायण पारीक ■

श्री भैरूदानजी छलाणी से मेरा प्रथम परिचय उनके देहावसान के 7 8 वर्ष पहले हुआ था। यू मै उनके बारे में, सन् 1952 से सार्वजनिक जीवन की विभिन्न गतिविधियो के बारे में सुनता आ रहा था। उनमे खास तौर से उनके अपने ग्रामीण क्षेत्र में रचनात्मक सेवाओ की बड़ी सराहना की जाती थी। समाज के पिछड़े हुए वर्गो

क प्रति उनकी विशेष सहानुभूति थी। उनके उत्थान का वे कोई अवसर हाथ से नहीं जान देत थे।

सन् 1952 म उनका एक विधायक के रूप म चुनाव मे खड़ा होना हमारे लिये बड़े कौतूहल का विषय था क्याकि वे तो वणिक वर्ग के एक अच्छे व्यापारी थे। उनका राजनीति से क्या लना दना? पर जब यह मालूम हुआ कि वे बाबू रघुवरदयालजी गोइल क विश्वासपात्रा और सहयोगिया मे से है ता मन ने यह माना कि हो न हा ये सज्जन राजनीति के दल दल स ऊपर उठकर रचनात्मक भावना के वशीभूत होकर ही खड़ हुए है।

हुआ भी यही। हालाकि वे चुनाव हार गये। परन्तु अपने क्षत्र स कभी मुह नहीं मोड़ा और क्षत्र के विकास के लिये रचनात्मक कार्या और सार्वजनिक सेवा म जीवनपर्यंत लगे रहे।

एक बार उनक गाव दियातरा जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। इनके पुत्र भवरलालजी, जो भारतीय विद्या मदिर की शैक्षणिक प्रवृत्तिया से जुड़े हुए थे का आग्रह रहा कि हम एक दो दिन उनके खेत म जाकर ग्रामीण जीवन का अनुभव प्राप्त करे। वहीं पर छलाणीजी के प्रथम बार दशन हुए। उनकी सात्विक मनावृत्ति और सुसस्कृत शिष्ट व्यवहार की मन पर बहुत गहरी छाप पड़ी।

बाद के वर्षो म, विशेषकर गोयलजी के स्वर्गवास के बाद खादी मदिर की प्रवृत्तिया के सचालन मे छलाणीजी के सलाह मशविरे की चर्चाए सुनने मे आती तो मन को यह विश्वास हाता कि उनक रहते सस्था म एसी किसी बात के हाने की सभावना नहीं है जा उद्देश्य से हटकर हा।

राजस्थान के एक तरह से गाधी ही कहिये, श्री गोकुल भाई भट्ट और छलाणीजी की घनिष्टता और आत्मीय व्यवहार इस पीढ़ी के लोगा मे सार्वजनिक हित के प्रति गहरी निष्ठा के दृश्य देखने मे आये।

श्री छलाणीजी की कथनी और करनी मे कोई अन्तर नहीं था। वे सत्यनिष्ठ एव व्यवहारकुशल व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व की सर्वाधिक प्रभावित करने वाली विशेषता थी उनका व्यवहारशुद्धता म अचल विश्वास और सात्विक वृत्ति। ऐसे सात्विक वृत्ति के सज्जन पुरुष के प्रति सिर स्वत ही झुक्ता है।

निष्काम रचनात्मक सेवक

■ हीरालाल शर्मा ■

मै सन् 44 मे श्री रघुवरदयाल गोइल के सम्पर्क मे आने के बाद बीकानेर रियासत की राजनीति मे सक्रिय हुआ। उदयपुर आल इंडिया स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेन्स से हम लौट कर जयपुर आये। श्री गोइलजी अपने निर्वासन काल मे जयपुर मे थे। वहीं पर चौमू मे बीकानेर के कार्यकर्ताओ का ट्रेनिंग सेन्टर बनाने की योजना बनाई गई। उसमे आर्थिक मदद की आवश्यकता पड़ी। उसमे श्री गोइलजी ने बताया हम प्रवासी राजस्थानियों का सहयोग लेना है उसमे श्री भैरूदानजी छलाणी से भरपूर सहयोग मिलेगा। उस समय श्री भैरूदानजी तेजपुर असम मे व्यापार करते थे। श्री मालचन्द हिसारिया को इस काम मे लगाया गया जिन्होने प्रवासी राजस्थानियो से सम्पर्क किया। कलकत्ता असम प्रवास मे श्री छलाणीजी से भी अर्थ प्राप्त कर लौटे। श्री छलाणीजी प्रजा परिषद की सक्रिय राजनीति मे तो नहीं आये परन्तु आजादी के आन्दोलन को बल व सहयोग प्रच्छन्न रूप मे हमेशा देते रहे।

श्री छलाणीजी की गाधीवाद मे पूर्ण आस्था थी। उन्होने अपने जीवन मे सिद्धातो को उतारा। वे सादगी सरलता से समृद्ध आदर्श जीवन के धनी थे। जब मै उनके गाव दियातरा गोइलजी के साथ गया तो उनका जीवन प्रत्यक्ष देखा। वे सदैव गरीबोत्थान दलितोत्थान समाज सुधार खादी ग्रामोद्योग कार्यों मे लगे रहते। वे जीवन पर्यन्त खादी सस्थाओ खादी मदिर ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान के क्रिया कलापो मे प्रमुख सहभागी रहे।

दियातरा को एक स्वावलम्बी और आदर्श गाव बनाने की उनकी हार्दिक इच्छा थी। यही ललक लिये निरन्तर प्रयासरत रहे। उनके रचनात्मक कार्यों की छाप दियातरा और खादी सस्थाओ में दृष्टव्य है।

भूदान आन्दोलन, सर्वोदय, शराबबन्दी आन्दोलन मे उनका सक्रिय भाग रहा। इसके साथ साथ गो सेवा, अकाल के समय मनुष्य गाय व अन्य जीवो की सेवा मे तन मन धन से जुटे रहते थे। ये मूक सेवक थे। सेवा मे दिखावा और अहम नहीं था। त्रस्त जन समाज और सस्था की निष्काम भाव से सेवा करते रहे।

खादी मदिर की स्थापना मे इनका सक्रिय सहयोग रहा। खादी के प्रचार प्रसार मे इनकी सदा आत्मिक रुचि रही। इनका सदा विचार रहा–दो हाथो को काम मिलना चाहिये जिसका मूल स्रोत खादी ग्रामोद्योग ही है। जिसके द्वारा ग्राम्य जन को अकाल और सामान्य समय मे भी काम और दाम दोनो ही मिलते रहेगे। इसी कार्य

द्वारा ग्राम्य जन को दो जून रोटी का साधन सदैव उपलब्ध होता रहेगा। खादी ग्रामोद्योग ही ऐसा कार्य है जो राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का अभिन्न अंग है। जिसके फलस्वरूप ही आज लाखों जन कत्तिन बुनकर कामगार कार्यकर्ताओं को कार्य उपलब्ध है। विश्व के उद्योगों में खादी व ग्रामोद्योग ने अपना स्थान बनाया है।

शिक्षा प्रसार, दलितों के उत्थान में इनकी बड़ी रुचि थी। जब वे अस्वस्थ थे तब श्री सोहनलालजी मोदी के साथ इनके पास जाने का सुन्दर अवसर मिला। ऊनी खादी ग्रामोद्योग संस्थान के संचालक मंडल की मीटिंग भी इनके गांव दियातरा में अनेक बार हुई। इनके आतिथ्य में बड़ा आत्मीयभाव रहता था। आतिथ्य सत्कार में अपना दिल बिछा देते थे। अतिथि देवो भव की भावना का मूर्त रूप इनमें देखा। संस्था की बैठकों में श्री जवाहरलाल जैन, श्री रामवल्लभजी श्री शिवभगवानजी बोहरा, श्री मूलचन्दजी पारीक आदि विशिष्ट जन होते थे। श्री छलाणीजी बोलते कम और बात सुनते अधिक थे। समस्याओं का समाधान सहज, सरल, संक्षेप में प्रस्तुत कर देते थे। इनका विचार सबको मान्य होता। बड़े मधुर भाषी थे।

इनका ग्राम्य जीवन बड़ा ही भव्य था। इनका कृषि फार्म एक आश्रम की ही तरह था। इनका गोइलजी के प्रति प्रगाढ़ स्नेह था जिनकी स्मृति में इन्होंने अपने फार्म में गोइल कुटीर बना रखी थी। इसमें ही संस्थाओं की बैठकें होतीं सार्वजनिक गोष्ठियां समय समय पर गीता रामायण आदि का पठन कार्यक्रम, भजन प्रार्थना सभाएं, सत्संग आदि के कार्यक्रम होते रहते थे। इस स्थल को एक आश्रम सी दिव्यता दे रखी थी। जहां निवासस्थल अतिथिशाला भोजनशाला शौचालय सब अलग अलग, सब कुछ स्वच्छता सफाई और सुन्दरता से परिपूर्ण और शोभा बढ़ाता हुआ था। भोजन भी सादा सुस्वादु बनता था।

इनके जीवनकाल में गांव में शिक्षाशाला छात्रावास, औषधालय विद्युत लाइन आना, कुआ खादी कृषि गोपालन आदि कार्यों का विकास हुआ। गांव ही नहीं, पूरे मगरा क्षेत्र के विकास के लिए आपने पंचायत प्रधान के रूप में तथा बाद में भी पूरे जीवनकाल में पद, प्रतिष्ठा और प्रचार से दूर रहते हुए दिन रात लगे रहे।

ऐसे निष्काम रचनात्मक सेवक को प्रणाम।

निर्विवाद व्यक्तित्व

■ लक्ष्मीचन्द सेवग ■

मेरा छलाणीजी से सन् 1951 नवम्बर मे प्रथम आम चुनाव मे दियातरा परिचय हुआ था। उनका सादगीपूर्ण जीवन सर्वोदय विचारधारा से ओत प्रोत और वे राजनीति म भी दिलचस्पी रखते थे।

वे स्वतन्त्रता सेनानी स्व रघुवरदयालजी गोयल के अनन्य भक्त थे। उन राजनीतिक विचारा से प्रभावित थे।

सन् 1951 दिसम्बर म आम चुनाव थे। छलाणीजी भी नोखा निर्वाचन क्षेत्र निर्दलीय उम्मीदवार थे। इस निर्वाचन क्षेत्र मे नोखा तहसील मगरा तहसील शामि थी। कोलायत तहसील की उस समय तेइस हजार जन सख्या और दस हजा मतदाता थ दस पोलिग बूथ थे। चुनाव दिनाक 4 12 51 से प्रारम्भ होकर दिनाव 20 12 51 को समाप्त होने थे। एक ही निर्वाचन अधिकारी तहसीलदार श्री अर्जुनसि कोलायत मे थे (उस समय इस तहसील का नाम मगरा था) उक्त निर्वाचन क्षेत्र म चार उम्मीदवार थे— स्व रामरतन कोचर (काग्रेस) स्व कानसिह (रामराज्य परिषद) स्व भैरूदान छलाणी (निर्दलीय) श्री मनीराम विश्नोई (निर्दलीय) स्व रामरतन कोचर और हम लोगो न छलाणीजी को नाम वापिस लेने का निवेदन किया था तो उनका उत्तर था महाभारत मे पाडव पाच और एक करण (कुन्ती पुत्र) हुये है। मै हार गया तो पाडव पाच होगे और आप हार गये तो भी पाडव ही रहेगे। इस प्रकार वे उम्मीदवार रहे ओर चुनाव लड़ा था।

इस प्रथम चुनाव म रामराज्य परिषद के उम्मीदवार श्री कानसिह रोड़ा विजयी हुए। मगरा तहसील (कोलायत) मे श्री कानसिह को दो हजार मत मिले ओर काग्रेस को एक हजार के लगभग मत मिले श्री छलाणीजी को बारहसौ के लगभग मत मिले थे।

प्रथम आम चुनाव के बाद हमारी अलग अलग विचारधारा होते हुए भी जब भी हम दियातरा जाते तब श्री छलाणीजी के यहा ही ठहरते। छलाणीजी बड़े प्रेम मे हमारा अतिथि सत्कार करते थ। इस के अलावा कन्या बन्धे मे हम खेत पड़ौसी थे। छलाणी जी के झोपड़े मे ही ठहरते थे इनके यहा खेत म ही भोजन होता था क्योकि मेरे खेत मे ठहरने का स्थान नही था। छलाणीजी के सरल स्वभाव तथा प्रेम से म अभिभूत हो जाता था। इस प्रकार वर्षों सिलसिला चलता रहा था। वर्ष 1955 म ग्राम पचायतो का गठन हुआ। दियातरा पचायत का चुनाव होना था चुनाव मे छलाणीजी सरपच के उम्मीदवार थे। पचायत मे माणेरा आदि (लगभग 6) ग्राम सम्मिलित थे

हमारी तरफ से श्री रूपसिह उम्मीदवार थे। उस समय पचायत का चुनाव बाड़ाबन्दी करके हाथ उठाकर मत से चुनाव होता था। पचायत चुनावो के चुनाव अधिकारी श्री बलवतसिहजी, पचायत निरीक्षक थे।

श्री छलाणीजी की पैरवी के लिये श्रीनारायणजी एडवोकेट आये हुये थ। वकील साहब न एक प्रार्थना पत्र छलाणीजी की ओर से पेश किया कि खतोलाइ, लोहिया आदि गाव से मतदाताआ को सम्मिलित किया जाये, तब चुनाव अधिकारी न मत देने क लिये शामिल करने स इनकार कर दिया। उन्हे शामिल नहीं किया जाता तो हमारा उम्मीदवार विजयी हो जाता परन्तु मैंने पुरजार शब्दो म चुनाव अधिकारी से आग्रह किया कि इन्ह भी मत दन का अधिकार दिया जाना चाहिये। मेरे इस आग्रह पर चुनाव अधिकारी द्वारा मत देने म शामिल करना स्वीकार कर लिया। तब छलाणी जी क चाचाजी स्व अमोलखजा ने मुझ से कहा कि प्रेषित प्रार्थना पत्र हमें वापिस दिला दे तब चुनाव अधिकारी को सिफारिश करके प्रार्थना पत्र वापिस दिलवा दिया था। उक्त विषय म हमार कायकर्त्ताओ ने मुझ से बहुत नाराजगी जाहिर की। मैंने उन्हे समझाया कि एसे निष्ठावान व्यक्ति के विरुद्ध अन्याय होना बरदाश्त नही कर सकता। इस प्रकार हमारे आपसी सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ होते गये थ।

इस के बाद सन 1959 मे पचायत समिति सदस्यो के चुनाव होन थे तब मेने स्वतन्त्रता सेनानी श्री रघुवरदयालजा से बीकानेर म निवेदन किया कि छलाणीजी क्या चाहते है? उन्हे समझा कर मेरे स बातचीत करवा दे। छलाणीजी बीकानेर आये हुए थे। गोयलजी ने कचहरी मे छलाणीजी को कहा कि आप व लक्ष्मीचन्द चुनाव सम्बन्धी वार्ता करल। छलाणीजी ने कहा कि अच्छे आदमियो का चुनाव म मनोनयन हाना चाहिये। मने उनस कहा कि तीन व्यक्तियो को आप नामजद कर द। उस म आप चाहा जिस को हम नामजद कर दे। मैंने उनके बताये तीना नामा को स्वीकार कर लिया था।

पचायत समिति प्रधान का चुनाव होना था। मेरा पचायत समिति म पूर्ण बहुमत था और मेरा निर्विरोध प्रधान चुना जाना निश्चित था परन्तु सरपच चौधरी श्री छा'ाराम न मीटिग म कहा कि मेरी राय है छलाणीजी का प्रधान बनाने के लिए तुम्ह त्याग करना पड़गा। वेसे पचायत समिति का कार्य ता तुम्ह ही करना है। मैंन कहा कि छलाणीजी का निष्ठावान व्यक्तित्व है, बहुत सुलझे हुए विचारा के है। म काग्रेस पार्टी को मजबूत करना चाहता हू अ'ार छलाणीजी काग्रेस पार्टी म शामिल हा जाए ता मैं उन्ह निर्विराध प्रधान बनाने के लिये खुशी खुशी रजामन्द हू। छलाणाजी काग्रेस पार्टी म शामिल हा 'ाये और निविराध कालायत पचायत समिति प्रधान निर्वाचित हा गये थ।

छलाणाजी सन् 1960 तक प्रधान रहे और सन् 61 म नये चुनाव हुय थ। उस क बाद सन् 1965 म पचायत समिति क नय नियमा क अन्तर्गत चुनाव हुए जिन्म म

काग्रेसी उम्मीदवार श्री पृथ्वीसिह राव बसलपुर प्रधान के रूप म विजयी हुए थ और काग्रेस का चुनाव कार्यालय दियातग म श्री छलाणीजी क यहा ही था और कायकर्त्ता पच सरपचा क ठहरने और खाने पीने की व्यवस्था श्री छलाणीजी के ही सुपुर्द रही थी।

सादा जीवन उच्च विचार

▪ वीरसेन पुगलिया ▪

श्री भैरूदानजी छलाणी का स्मरण मुझ खादी मदिर बीकानेर की स्थापना क समय से ही जुड़े हुए एव बाबू रघुवरदयाल गोइल के घनिष्ठ सहयोगी व परम मित्र क रूप मे सदेव होता है।

मेरा प्रथम परिचय सन् 1968 म छलाणी वूलन मिल्स म हुआ था। लेकिन वास्तविक सम्पर्क बढ़ाने का सिलसिला सन 1972 मे हुआ जब मै बाबू रघुवरदयाल गोइल के साथ वकालत क काम म सहायक बना। उन दिना छलाणीजी दिनहटा आते जाते रहते थे। उनका पत्र व्यवहार गोइलजी से निरन्तर चलता रहता था। उनक पत्र लेखन म एक अलग ही आकर्षण था। कभी कभी गोइलजी उनके पत्र मुझे भी पढ़ने को द दते थ।

एक बार म किसी कार्य म व्यस्त था छलाणीजी अपने गाव दियातग से बाबूजी स मिलने बीकानेर आये। उस समय सर्दी का मौसम था। उनके वस्त्र खादी के थे। उन्होने आजीवन खादी पहनी। उस समय छलाणीजी स रूबरू बात करने का मुझे मौका मिला। उन्हाने मेरे से पूछा कि क्या बाबूजी से मिलकर मेरी बात हो सकेगी? मैन बाबूजी के अनुशासन और उनक स्वभाव को ध्यान म रखते हुए तुरन्त एक ही जवाब दिया—अभी तो मिलना और बात करना सभव नहीं होगा। छलाणीजी क दुबारा आग्रह करने पर मै अन्दर गया और बाबूजी से कहा कि छलाणीजी उनसे मिलना चाहत हैं। मुझे आशका थी कि उनकी दिनचर्या म विश्राम के समय म मेरे द्वारा व्यवधान डालन पर वे मुझे टोकगे। परन्तु मेरा इतना कहना था कि बाबूजी तत्काल उठकर बरामद मे आये और छलाणीजी से मिलकर बहुत खुश हुए। म देखता और सोचता रह गया लेकिन इतना तो मै समझ गया कि गोइलजी के छलाणीजी से सम्बन्ध व अन्य लोगो से परिचय म अन्तर जरूर है जो बाबूजी ने अपना नियम तोड़कर भी उनसे मुलाकात की। मैन जब उनका मिलना देखा तो आश्चर्य म पड़ गया कि छलाणीजी के प्रति गोइलजी का कितना आदर था। इस प्रसग क बाद मैने महसूस किया कि छलाणीजी वास्तव म कोई महापुरुष है जिनको बाबू रघुवरदयाल गोइल सम्मान देते थे।

कुछ समय बाद मैने खादी मदिर म जब काम करना शुरू किया तो छलाणीजी के निकट आने का और भी अवसर मिला। बाबूजी के स्वर्गवास के बाद वे खादी मदिर के अध्यक्ष बने। समय समय पर खादी मदिर की मीटिंग के सिलसिले म वे जब भी आते तब अपना पीने का पानी भी अपने साथ लाते थे, यानि खादी मदिर उनकी नजरो म त्याग और तपस्या का स्थान था जहा कुछ देना ही है पर लेना नहीं। छलाणी जी की अध्यक्षता म दरिद्रनारायण की वास्तविक सेवा हुई।

जीवन जीने की कला के महत्त्वपूर्ण सूत्र

एक बार उन्होने मुझे कहा कि अगर लम्बी उम्र तक जीना है तो मिताहारी मितव्ययी और मितभाषी बनने का प्रयास करो। उनके विचार तो उच्च श्रेणी के थे ही उनका रहन सहन बिलकुल ही सादा था किसी प्रकार का कोई आडम्बर नहीं। एक बार मै उनके गाव दियातरा भी मिलने गया तो वहा उनके रहने के तरीको से बहुत ही प्रभावित हुआ। उनके यहा खान पान वही ठेठ गाव का। मोटे अनाज का बना पकवान और दूध, घी की प्रचुरता।

अन्न जैसा मन वाली कहावत छलाणीजी पर पूरी तरह चरितार्थ होती थी। वे निष्कपट और परोपकारी थे। वे गरीबो और असहायो के प्रति कितने व्याकुल रहते थे यह तो खादी जगत् से जुड़ा हुआ एक एक व्यक्ति जानता है। जहा तक मै समझ पाया हू कि सेवाभाव और समर्पणभाव की तराजू पर पूरा और खरा उतरने के कारण बाबू रघुवरदयाल गोइल जैसे दृढ़ और कठोर अनुशासन वाले व्यक्ति की श्रद्धा के पात्र वे बन सके थे।

आचार्य श्री तुलसी का आशीर्वाद

एक विशेष रूप से उल्लेखनीय संस्मरण है जो छलाणीजी के प्रति मेरी श्रद्धा को दुगुना कर देता है। तेरापथ के आचार्य श्री तुलसी के श्रावको मे छलाणीजी विशिष्ट स्थान रखते थे। अनेक धार्मिक कार्यक्रमो म मेरा भी आना जाना रहा है। गगाशहर चातुर्मास सन् 1978 म हुआ तब श्री छलाणीजी आचार्य तुलसी की सेवा मे पधारे। सयोगवश मै भी वहा पर मोजूद था। गुरुदेव ने फरमाया आपको सच्चे श्रावक की प्रेरणा लेनी है तो श्री छलाणीजी आपके सामने बैठे है। मै इनकी सेवा भक्ति को देखकर बहुत ही गद्‌गद् हू। हजारो श्रावको की भीड़ म छलाणीजी के प्रति आचार्य तुलसी के ये वचन बहुत महत्त्वपूर्ण थे। धार्मिक सस्कारवान श्रावक के रूप मे उस दिन से भैरूदानजी के प्रति मेरी श्रद्धा अधिक बढ़ गई। उसके बाद तो मै जब भी उनसे मिलता तो बड़े ही आदरभाव से मिलता, फिर तो वे जब भी खादी मदिर पधारते तो मै स्वय उनकी सेवा मे जुट जाता। किन्तु वे तो हर बार मुझे यही कहते कि आप अपना कार्य करे, मुझे कोई आवश्यकता होगी तो मै बुला लूगा। ऐसी आदर्श मूर्ति को नतमस्तक होकर मेरा नमन है।

वे दिन, वे दौर

■ राईचरण देवनाथ ■

जिस महापुरुष के बारे में दो चार बाते लिखने की चेष्टा कर रहा हू, पहले पहल उन्हें ही मेरा श्रद्धा सहित प्रणाम। जिनकी स्मृति में लिख रहा हू उनका नाम है श्री भैरूदानजी छलाणी।

1969 ईस्वी में जब मैं दिनहाटा आया तब मुझे उनके दर्शन हुए, दूर से ही देखा। यह केवल दर्शन ही था। उनके साथ मेरी कोई बातचीत नहीं हुई। मेरी भी उस समय ऐसी कोई आवश्यकता भी नहीं थी। कारण यह था कि वे ठहरे एक विख्यात व्यापारी मैं ठहरा एक शिक्षक। उस समय मैं उनके समाज सेवा के कार्यों के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। उनके साथ घनिष्ठता होने का दूसरा भी कोई कारण बना नहीं। वे थे एक लम्बकाय (दीर्घ देही) पुरुष। एक विशेष वस्तु के कारण उनके प्रति मेरी दृष्टि खिचती और वह थी उनके नाक में सोने की बाली। बाद में उनके पुत्र श्री भवरलाल छलाणी से ज्ञात हुआ कि वह बाली मार परवा सोने से बनी हुई थी।

श्री भवरलाल छलाणी के साथ मेरे परिचय का कारण भी अद्भुत ही था। फिर वही परिचय हमारे बीच घनिष्ठता का कारण बना। घटना थी—एक दिन जैन सन्तो के विभिन्न प्रकार के अक गणित प्रश्नो के सहज समाधान के कार्यक्रम में उपस्थित होकर देखा कि बड़ी बड़ी सख्या को बड़ी सख्या से गुणा तथा सात अको की सख्या चार अको की सख्या से गुणा करने का प्रश्न था। इस तरह के प्रश्नो को किसी रूप में गुणा न करके छलाणी ने बाईं तरफ से लिख कर उत्तर मिला दिया। इस तरह अक गणित के अनेक प्रश्नो के उत्तर लिखना देखकर मैं चकित भी हुआ। उसके बाद श्री छलाणी के साथ मेरा परिचय और सम्पर्क बढ़ता रहा। चूकि हम दोनो विद्यालयो के प्रधान शिक्षक थे। अत सम्पर्क बढ़ कर घनिष्ठता में बदल गया। इसी घनिष्ठता के कारण ही भवरलालजी की लड़की यानी भैरूदानजी की पोती के विवाह का निमत्रण पाकर मैं मेरी पत्नी एव छोटी लड़की बीकानेर जिले के दियातरा गाव में उनके घर पहुचे।

वहा 10 12 दिन रहना हुआ। इसी समय स्वर्गीय भैरूदानजी छलाणी के साथ मेरा अच्छी तरह परिचय व वार्तालाप हुए। दियातरा में कई लोग है जिनका दिनहाटा में व्यापार व सम्पर्क रहा। अत उनसे मेरा परिचय था। एक दिन कुछ जनो के आग्रह का सम्मान देते हुए उनके घर खाते समय कुछ अधिक खा लिया गया जिससे पेट में गड़बड़ हुई। मेरी यह हालत देखकर छलाणीजी बोले यदि अधिक खाना चाहते है तो कम खाइये और यदि कम खाना चाहते है तो अधिक खाइये। मैं इसका मर्म न समझा और उनकी तरफ देखता रहा। उन्होने विस्तार से कहा—जो आदमी कम खायेगा वह

स्वस्थ रहकर अधिक दिन जियेगा तो मात्रा म अधिक खायेगा किन्तु जो अधिक खायेगा वह अस्वस्थ होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त होगा फलस्वरूप मात्रा मे कम ही खा पायेगा। म समझा। केवल समझा ही नही मने उनके वृद्ध अवस्था म कम खान का परिणाम भी दखा और अनुभव भी किया कि सीमित एव परिमित खाने के कारण ही वे स्वस्थ शरीर से 86 वर्ष तक जिए। वे एक कर्मयोगी थे। जवानी म वे गाधीजी के आदर्श से प्रभावित हुए। व दलगत राजनीति से ऊपर उठे हुए थ। 1952 मे कोलायत विधानसभा का चुनाव निर्दलीय रूप स लड़ा। बाद मे व दियातरा के सरपच एव कोलायत पचायत समिति के निर्विरोध प्रधान चुने गय।

वे समाज सुधारक थे। उन्होने पुत्रो के विवाह म दहेज लेना बन्द किया। उनके पुत्र भवरलाल छलाणी का नियम था कि जो लोग अपनी लड़की के विवाह म दहेज स्वरूप कुछ देना चाहेगे उनकी लड़की से शादी नही करेगे।

1959 ईस्वी मे भैरूदानजी ने दियातरा पचायत का सरपच एक हरिजन को बनवाया।

व बीकानेर के खादी मदिर के जनक सदस्यो म एक थे एव कई वर्षो तक अध्यक्ष रहे। बाद मे वृद्धावस्था के कारण अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। वे भूदान ग्रामदान आदोलन मे सक्रिय रहे। अपनी जमीन भी भूदान मे दी व अन्य लोगा से भी दिलवाई।

वे शिक्षा क्षेत्र म स्त्री पुरुष का समान अधिकार मानने वाले थ। यद्यपि वे व्यवसायी थ पर शिक्षा के प्रति खूब प्रम था। इसी कारण उनके बेटे बेटी व पोते पोतिया व दोहिते दोहितियाँ सभी उच्च शिक्षित है। और तो क्या उनकी छोटी पुत्र वधू को शादी के बाद कॉलेज भेजकर एम ए व पीएच डी करवाई। अब वह तिनसुकिया (असम) म एक कॉलेज की प्राध्यापिका है। उनकी पोती ज्योति एव पोता ललित मेरे छात्र रहे ह। ये दोनो मेधावी विद्यार्थी है और उच्च शिक्षित।

उनके ज्येष्ठ पुत्र भवरलाल छलाणी केवल अग्रेजी म ही एम ए नहीं है बल्कि वह हिन्दी बगला, अग्रेजी के अलावा उड़िया पजाबी उर्दू लिपि भी पढ़ सकते हैं। उनके पास एक एसा शब्द कोष है जिसम 35 भाषा के शब्दार्थ दिये हुए है।

भैरदानजी ने दियातरा मे विद्यालय भवन बनवाये। केवल भवन ही नहीं छात्रावास के कमरे भी बनवाये। इससे भी आग छात्रावास मे रहने वाल छात्रो का खाने पीन का खच भी देत रह है। आज भी दियातरा म सरकारी विद्यालय उनकी ही देन है।

गो सेवा उनका जीवन व्रत था। उन्होने दियातरा के आसपास के लोगो की आर्थिक स्थिति देखकर अकाल राहत केन्द्र चलाये (गायों के लिए तूड़ी आदि) जिसमे लागत मूल्यो से कम दामो म बेचकर क्षतिपूर्ति म अपना पैसा लगाते। इस

प्रकार व गरीबो की सहायता व गो सेवा म भाग लेते। यह सब मैने अपनी आखो से दियातरा म देखा।

स्वर्गीय भैरूदानजी छलाणी ने पीने के पानी की कई जगह अच्छी व्यवस्था की है। दिनदाटा म भी उन्होने अपने निजी पैसा से कई ट्यूब वेल बिठा के दिये। दियातरा मे भी कई कुआ तालाबो की कई बार मरम्मत कराई।

दियातरा म भी जो जो बड़े सरकारी ट्यूब वेल है उनके मूल म भी उनकी सहभागिता रही है। उन्होने 15 नम्बर राष्ट्रीय राज मार्ग के पास अपने खेत मे भी एक बड़ा कुआ खुदवाया तथा एक ट्यूब वैल बिठाया जिससे अकाल के समय पशुधन व गाव के लोग भी ऊट गाड़ा व अन्य साधनो से पानी ले जाकर अपनी प्यास बुझाते थे। दियातरा व उसके आसपास मरुभूमि मे इस प्रकार पानी की व्यवस्था करना कितना पुण्य का कार्य है यह अपनी आखो से देखे बिना विश्वास करना कठिन है।

व सभी के मन की बाते समझ लेते थे। एक दिन मुझे कहा कि खेत देखने चले उससे बहुत आनद मिलेगा। घर से खेत बहुत दूर नहीं है फिर भी बेलगाड़ी की व्यवस्था की। खेत गये। वहा एक बड़ा झोपड़ा है जिसका नाम गायल कुटीर रखा हुआ है। रघुवरदयालजी उनके अभिन्न मित्र थे। उनकी स्मृतिस्वरूप वह झोपड़ा बनवाया। बीकानेर राज्य म स्वतन्त्रता सग्राम म गायल साहब का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उस झोपड़े के सिवाय और भी कई झोपड़े व रहने के मकान है। चातुर्मास म घर छोड़ कर पूरा परिवार 3 4 महीने खेत म रहकर खेती म सहयोग करता था। उनकी जमीन भी देखी। यहा पर बाजरा मोठ मूग ज्वार आदि के अलावा सिचाई से गेहू व सरसो भी उपजाते है।

उन्होने बताया कि शाम को काफी हरिण उनके खेत म आते है। जगल के हरिणो को पास से देखने का लाभ न छोड़ पाने के कारण देखते देखते जब प्राय निराश हो गये और मान लिया कि जिस प्रकार दार्जिलिंग म सूर्योदय देखना कइयो के भाग्य म नही होता उसी प्रकार हमारे भी भाग्य में खुले मे विचरते हरिणो को पास से देखना लिखा नही। अर्थात् स्वतन्त्र जगली पशुओ को आनद से जगल में घूमते देखने का जो विचार था वह शायद पूरा न हो। इसी प्रकार कुछ समय व्यतीत हो गया तभी अचानक एक आदमी ने जोर से आवाज दी यह देखो यह देखो। देखा एक बच्चा हरिण कोमल कोमल घास खा रहा है। कुछ समय म ही पीछे से 5 7 और हरिण आकर आनद से विचरण करते हुए घास खाने लगे। हमने देखा। हम सतुष्ट हुए। हमारी इच्छा पूर्ण हुई। नयन सार्थक हुए।

कुछ दिन बाद भैरूदानजी छलाणी से विदाई लेकर जयपुर जाने के मतलब से बीकानेर के लिये रवाना हुए। आज बहुत समय बीतने के बाद भी उनकी बाते विशेष कर धन की प्रचुरता म भी उनका निरहकारी एव त्यागमय जीवन बार बार याद आता है।

भगवान उनकी आत्मा का मगलमय करे।

बहुआयामी व्यक्तित्व

■ निर्मल देवनाथ ■

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, सक्रिय समाजसेवी शिक्षा के अगाध प्रेमी गाधीवादी विचारो से अभिप्रेरित ओर आचार्य विनोबा के विचारो से अनुप्राणित राजस्थान के दियातरा गाव के निवासी स्वर्गीय भैरूदानजी छल्लाणी का जन्म 29 नवम्बर, 1909 को असम के शोणितपुर जिलान्तर्गत तेजपुर कस्बे मे हुआ था। आपके दिनहाटा प्रवास के दौरान मुझे आपके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आपके पितृवत् स्नेह ने मुझे दिनहाटा मे आपका अनुचर बनाया ओर इसी स्नेह से अभिभूत होकर मै दियातरा निवास पर आपकी पौत्री की शादी मे सम्मिलित हुआ। इस प्रकार दिनहाटा से लेकर दियातरा तक जहा भी आप रहे वहा राजनैतिक सामाजिक एव शैक्षणिक कार्यों मे अग्रणी रहे।

कुशल राजनीतिज्ञ

स्वतन्त्रता सग्राम के मूक सेवक के रूप मे काम करते हुए आपने 1951 मे निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे दियातरा विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा फिर दियातरा गाव के सरपच से लेकर पचायत प्रधान पद के लिए निर्विरोध चुने गए। दिनहाटा प्रवास के दौरान आपका अधिकाश समय रचनात्मक गतिविधियो मे बीता।

शिक्षाप्रेमी

आपका सारा जीवन शिक्षा से जुड़ा रहा। दिनहाटा मे आपने हिन्दी हाई स्कूल की स्थापना करवाकर हिन्दी भाषी छात्र छात्राओ की समस्याओ का समाधान किया। आपने अपने गाव दियातरा मे प्राथमिक एव सैकण्डरी स्कूल का भवन बनवाया और छात्रावास का खर्च स्वय वहन किया। स्त्रीशिक्षा के पक्षधर होने के कारण आपने अपने परिवार की लड़कियो को उच्च शिक्षा दिलवाई।

समाज सुधारक

आप सच्चे समाज सुधारक थे। आपने दिनहाटा मे पेयजल की व्यवस्था अपने खर्च पर कराई। आपने मेरे गाव मे कुआ खुदवाया एव सार्वजनिक उपयोग के लिए दो कट्ठा जमीन दान दी। दहेज एव पर्दा प्रथा का कड़ा विरोध करते हुए अपने परिवार के लड़को की शादी बिना दहेज के कर आपने आदर्श स्थापित किया। राजस्थान के दियातरा मरूस्थल मे पेयजल के भयकर सकट को दूर करने मे आप अग्रणी थे।

कृषि सुधारक

आप अपने कर कमलो से कृषि कार्य करते तनिक भी सकोच नहीं करते थे। उन्नत बीज एव उर्वरक द्वारा उपज बढ़ाने का उदाहरण आपने प्रस्तुत किया। मगरा

भेत्र मे कृषि हेतु ट्रेक्टर का प्रयाग और सिचाई हेतु ट्यूब वेल सर्वप्रथम आपने ही लगाया।

इतना ही नही, आप सच्चे साधक और मनीषा थे। आप जहा भी रहते राजस्थान के कोलायत के कुए का ही जल पीते।

अत मे एसे महान सपूत को मेरा शत शत नमन।

मगरे रा मानीजता सेठ

■ भागीरथ स्वामी ■

इस धरती पर बहुत कम ऐसे व्यक्ति होते हे जो सबको समान रूप से स्नेहपूर्वक देखते हे और हर असहाय की सहायता करने वाले हो। ऐसे महान व्यक्ति थे श्री भेरूदानजी छलाणी दियातरा निवासी मगरे रा मानीजता सेठ।

2 अक्टूबर 1959 को कोलायत पचायत समिति के पहले प्रधान बने। उनकी यह विशेषता थी कि उनके गाव मे कोई अधिकारी कोई कर्मचारी जब भी आता तो इनके घर पर ही आदर सत्कार होता था। दिन हो या रात उनके भोजन व विश्राम की व्यवस्था वही होती थी। किसी भी आगन्तुक को इनका स्नेह और सम्मान मिलता था। जिसकी जेसी आवश्यकता व अपेक्षा होती समाधान पाता था। उनके दरबार से कोइ खाली नही गया। गाव की चहुमुखी उन्नति के लिए इन्होने व इनके सुपुत्रों ने उदार एव व्यापक दृष्टि रखी। तन मन और धन लगाया। धन्य है ऐसे मा के सपूत जिन्होने अपना सारा जीवन गाव के विकास मे गाव के निवासियो की सुख सुविधा वृद्धि मे समर्पित कर दिया।

उनकी गुणात्मक बात भुलाइ नहीं जा सकती। वे कहते थे कि किसी की बुराई देखने से पहले देखो कि उसमे क्या क्या गुण हैं।

उनकी शिक्षा थी किसी का बुरा मत करो किसी की बेकार और बुरी बातें मत सुनो। बड़ो का आदर हृदय से करो वर्ना वह आदर आदर नहीं कहलाता। हम अपने से छोटो का दिल कभी नहीं दुखाना चाहिए बल्कि उनका भी आदर और प्रशसा करनी चाहिए। किसी को भी ऊच नीच की दृष्टि से मत देखो। उसके आचार और स्वभाव को समझो। अपनी गलतिया देखो और स्वय को सुधारो।

वे कहा करते थे--- अकड़ कर आदमी दो सीढ़ी नही चढ़ सकता झुक कर वह हिमालय पर्वत पर चढ़ सकता है।

निर्दोष वही होता है जो अपने दोष निकालता है।

हम उनकी शिक्षाए कभी भी भूल नही सकते। हमारे जीवन मे वे हमे सही दिशा देने वाले एक देवता के समान दिव्य पुरुष बनकर आए थे क्योकि उन्होने उपदेश नही दिये। अपने आचरण से स्वय उदाहरण बन गये। उनकी कथनी एव करनी मे एकता थी। मन मे करुणा और प्रेम हृदय मे विशालता और उदारता स्वभाव मे विनम्रता और सेवाभाव था। उन्होंने दिया खूब दिया, सबको दिया।

वे हमारे बीच मे से स्थूल रूप से उठ गए है लेकिन सूक्ष्म रूप से हमेशा विराजमान रहेगे। हमारे विचारो मे आते ही रहेगे। वे हमेशा सही कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहे है, करते रहेंगे।

शत शत नमन, शत शत नमन, शत शत नमन ऐसी महान विभूति को जिन्हे हम भूल कर भी भूल नही सकते।

एक बच्ची की कविता की पक्ति इसमे जोड़ रहा हू—

लाईफ इज ए स्टेशन, ए ट्रेन पासिग थ्रू, कैरिइग ए मैसेज वी विल आलवेज रिमेम्बर।

Life is a station a train passing through carrying a message we will always remember

शान्त योगी, विलक्षण विभूति

■ वैद्य दयाल स्वामी ■

बीकानेर मे दादूपथी सम्प्रदाय मे मेरे गुरु स्वामी किसनदासजी महाराज अपने समय के माने हुए प्रतिष्ठासम्पन्न वैद्य थे जिन्होने धनवन्तरी औषधालय, बीकानेर की स्थापना की थी। सयोग से अपने किसी इलाज के निमित्त से भेरूदानजी छलाणी श्री किसनदासजी महाराज के सम्पर्क मे आये। छलाणीजी मे गुणों की परख और गुणों की ग्राहकता कूट कूट कर भरी हुई थी। सिद्ध और साधक का योग बनते देर नहीं लगी और श्री किसनदासजी महाराज और आयुर्वेद मे जो निष्ठा बनी वह जीवन के आखिरी समय तक बनी रही।

एक बार टाइफाइड के तेज बुखार ने छलाणीजी को जबरदस्त घेर लिया। छलाणीजी ने अपने पुत्र भवरलाल को गनोगत एक तेज तर्राट ऊट पर बीकानेर भेजा। हालत चिन्ताजनक थी लेकिन स्वामीजी का निदान अचूक था। ऊट तेजी से वापस गाव आया। दवा ने असर किया। गाव मे कहावत चल पड़ी कि वैद्यजी मरता ने जीवन दव।

मेरे गुरुदेव के बाद जब छलाणीजी मेरे सम्पर्क म आए तो मुझ भी उन्हान अपनी अटूट निष्ठा का परिचय दिया। छलाणीजी के पाचन सस्थान तथा कफ और कास सबधी बीमारी मे बहुत समय तक मेरा इलाज चलता रहा। मरे बताये हुए नियम खाने पीने मे सयम, पथ्यापथ्य का ध्यान जैसा मैने छलाणीजी म देखा तो दग रह गया। जीवनभर दृढ़ता से इतना सयम और नियम मुझ अन्य किसी व्यक्ति म नजर नही आया। आयुर्वेद के ऐस आज्ञाकारी नियमपालक, धैर्यवान, दृढ़निष्ठावान रोगी (पेसेट) चिकित्सा क्षेत्र मे खाजने पर भी नहीं मिलते। अत छलाणीजी जैसे आरोग्यार्थी को पाकर मेरा चिकित्सक हृदय उनके आगे नत मस्तक था किन्तु छलाणीजी की सम्मान भावना भी इतनी ऊची थी। मेरी छोटी उम्र होते हुए भी वैद्य के नाते वे मुझे बहुत आदर देते थ। ऐसा चिकित्सार्थी चिकित्सक के लिए सहयोगी और सहायक माना जाता है। मै आज भी अपने ऐसे प्रतिबद्ध स्वास्थ्य साधक के प्रति गौरव का अनुभव करता हू।

जब एक बार छलाणी जी अपने अपच रोग और क्षय रोग का इलाज कराने मेर औषधालय मे भर्ती हुए तब इलाज के दौरान रोग की स्थिति नियत्रण म रहते रहते अचानक असामान्य हो गई। हालत गभीर हो गई थी छलाणीजी का पूरा परिवार वहा मौजूद था। मै भी एक बार घबरा गया। क्षय रोग के स्पेशलिष्ट डाक्टर स सलाह लने की बात चली, परिवार के सब लोगो मे चिन्ता व्याप्त हो गइ। क्षय विशेषज्ञ की सलाह का वातावरण बन गया। जैसे ही छलाणीजी को इसका आभास हुआ तो उन्हाने मुझे जितनी दृढ़ता और निष्ठा के साथ यह कहा कि वैद्यजी आप दवा चालू रखिए मुझे विश्वास है कि म इस स्थिति से उबर जाऊगा उतना दृढ सकल्प लिया हुआ निर्भय व्यक्ति और स्वय चिकित्सक को चिन्ता से ऊपर उठने का अवसर उत्साह और शक्ति देने वाला आरोग्यार्थी अन्य कोई नहीं मिला। सब से ज्यादा स्मरणीय एव अनुकरणीय बात तो यह थी कि जितन समय तक छलाणीजी का उपचार चला तब तक उनके परिवार महित मेर औषधालय में एक ऐसा पारिवारिक वातावरण बना रहा जिस म सत्सग अध्यात्म चर्चा, रामायण पाठ भजन कीर्तन आदि की धाराए बहती रही। सारे तीज त्योहार परिवार की तरह औषधालय मे मनाये जाते रहे। ऐसा लगता था मानो कोई रोगी नहीं बल्कि कोई स्वास्थ्य साधक शान्त योगी चारपाई पर लेटा हुआ शान्ति और आनन्द बिखेर रहा है। औषधालय मे भर्ती अन्य रोगी तथा उनके परिवारजन भी इनके साथ मिलकर आनन्द उठाते थ। जब रुग्णावस्था से निकलकर स्वस्थ अवस्था आयी तो उस वर्ष होली का त्योहार सारे औषधालय ने मिलकर इतने आनन्द और उल्लास के साथ मनाया जिसका वर्णन करना मुश्किल है। हमारे औषधालय के इतिहास का यह एक सुनहरा पृष्ठ है।

मेरे व्यक्तिगत जीवन के सस्मरणो मे छलाणीजी की गो सेवा और गो भक्ति का एक प्रसग कभी भूला नहीं जा सकता। एक बार बहुत बड़ा अकाल पड़ा। छलाणीजी न एक बात मुझे इतने प्यार से और सहज भाव से कही कि वैद्यजी काल

बड़ा भयकर पड़ा है। आपके दखन मे जो भी भूखी प्यासी गाय आए आप मेरी तरफ से उनकी व्यवस्था कर देना, गाव भिजवा सक तो गाव भिजवा देना, शहर म हा व्यवस्था बने ता यहा बना देना, सारा खर्चा मै वहन कर लूगा परन्तु गाय माय को मरने तड़पन मत देना। ऐसा गो सेवक कहा मिलगा?

मरी दृष्टि म भेरूदानजी छलाणी एक सुलझे हुए व्यक्ति थे, सच्च सलाहकार सत्य, प्रेम, करुणा और परोपकार की जीवन्त मूर्ति थे। अन्न क्षेत्र चलाने की उनकी अभिरुचि अद्वितीय थी।

मेरी चिकित्सा के दौर म उन के इन सब गुणा के अलावा जो सबसे बड़ा गुण उभर कर देखने को मिला वह था—सर्व धर्म समभाव। व स्वय जैन धर्म के थे लेकिन किसी भी धर्म और सत् साहित्य के प्रति उनकी श्रद्धा थी। मुझ से उन्हाने दादू ग्रन्थावलिया को मगवाया और उनका गहराई से अध्ययन किया। उनके इस धार्मिक समादर भाव के लिए मेरे दिल म जा ऊचा स्थान बना वह भुलाए नही भूलता। मै ही नहीं बल्कि कोई भी चिकित्सक अपने जीवन म एसी विलक्षण विभूति की चिकित्सा का अवसर पाकर निहाल हो जायेगा।

सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति

▪ वेद्य ठाकुरप्रसाद शर्मा ▪

श्री भैरूदानजी छलाणी से मेरा सर्वप्रथम परिचय उनके गाव दियातरा में सन् 1941 42 म हुआ था। इन दिनो मैं माहता आयुर्वेद औषधालय श्री कोलायतजी म चिकित्सक पद पर कार्यरत था। कोलायतजी से दियातरा पाच कोस की दूरी पर स्थित है। यातायात के साधन ऊट या बैलगाड़ी ही उन दिना थ। बस या मोटर कवल कोलायतजी तक ही आती जाती थी। मे इनके काका श्री अमोलखचन्दजी की धर्मपत्नी की चिकित्सा के निमित्त गया था तभी इनसे मेरी पहली मुलाकात हुइ थी।

मगरा क्षेत्र मे उन दिनो तीन व्यक्ति अपनी अलग पहचान व प्रभाव के कारण चर्चित थे—श्री रामबगसजी पुरोहित बीठनाक कोलायत अमोलखचन्दजी छलाणी दियातरा तथा हमीरजी भाटी सिडा, परन्तु भैरूदानजी के पिता सेठ हजारीमलजी छलाणी की एक सम्पन्न व्यापारी के नाते विशेष ख्याति थी। दीनहट्टा (बगाल) एव तेजपुर (असम) म इनका तम्बाखू, कपड़े तथा रूई का व्यवसाय था। साधन सम्पन्न होने के बावजूद भैरूदानजी का रहन सहन बहुत सादा था। मोटी खादी के वस्त्र और

सिर पर खादी की पगड़ी इनका परिधान था। खान पान म चटपटी एव मिर्च मसाला से इन्ह परहेज था। वे वास्तव मे सादा जीवन उच्च विचार क जीवत प्रतीक थे।

दो तीन बार दियातरा जाने आने के साथ उनस मेरे निकट सम्ब ध बन गए। और फिर तो सदैव उनका आग्रह रहता कि मै सायकाल पहुचकर रात भर दियातरा रुका करू ताकि साथ प्रात के भ्रमण म आपसी विचार विमर्श हा सके। दियातरा से दक्षिण म महाराजा बीकानेर की कोठी और तालाब थे, कभी हम उधर निकल जाते, तो कभी पश्चिम की ओर खेता की तरफ चले जाते। दियातरा से कोलायत जी बीकानेर मार्ग पर लगभग एक डेढ़ मील के फासले पर रास्ते के किनारे पर एक घना जाल का पेड़ था। हम लोग भ्रमण करते हुए इस पेड़ तक आकर वापस दियातरा लौटते थे। इस दरमियान बातचीत का विषय स्वास्थ्य खादी एव ग्रामोद्योग तथा मरुभूमि का आर्थिक दृष्टि से विकास रहता था। मन उनम गाधीवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव परखा। आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा म उनकी गहरी आस्था थी।

मेरे वहा जाने से कुछ वर्ष पहले किसी चिकित्सक ने उन्होने भिलावा खाया था इसका उन पर घातक प्रभाव तो नहीं हुआ परन्तु इसके दुष्प्रभाव का प्राय जिक्र किया करत थे।

इनके काका अमोलखचन्दजी को जहा अच्छे ऊट रखने का शौक था वहीं इन्हे अच्छे बैल रखने का शौक था। एक बार इनक यहा नागौरी बैलो की एक जोड़ी आई थी जिसकी कीमत लगभग चार सौ रुपये थी। जबकि सामान्य बैलो की जोड़ी की कीमत सो सवा सौ उन दिनो म थी। आसपास के लाग इन बैला को देखने आते थे। ये दोड़ने म इतने तेज थे कि एक बार दियातरा से कोलायतजी आकर मुझे गजनेर के लिए रेल पकड़नी थी परन्तु पौन घटे मे ये रेरुले (एक प्रकार की इक्केनुमा गाड़ी) को खींचते हुए कोलायत आ पहुचे।

मरे बीकानेर आने के बाद भी इनका मिलना जुलना या चिकित्सा सम्बन्धी परामर्श बराबर जारी रहा। जीवन की साध्यवला म य क्षयग्रस्त हो गये थे। परन्तु सयमित जीवन के कारण उस पर इन्होने काबू पा लिया। मनोबल इनका बड़ा दृढ था। कम से कम बोलत थे परन्तु जो कुछ कहत बोलते थ उसम अर्थगाभीर्य रहता था भाव प्रवणता भरी रहती थी। व स्वय प्रचार प्रसार स दूर रहत थे। किन्तु व्यक्ति का कृतित्व कब छिपा रहता है। इन्ह जब याद करता हू तो सस्कृत की यह उक्ति स्मरण हो आती है।

यदि सन्ति गुणा पुसा विकसन्त्यव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिका मोद शपथन विभाव्यत॥

भला कस्तूरी की महक कब छिपी रह सकती है? वह तो आसपास ही नहीं दूर दूर तक के वातावरण को सुवासित कर देती है। आज छलाणीजी की स्मृति मात्र शष है। परन्तु उनकी साधुता निश्छल व्यक्तित्व एव सादगी की छाप तो हृदय पटल पर अमिट है।

ग्राम्य ऋषि

■ वैद्य महावीरप्रसाद शर्मा ■

श्री भैरूदानजी छलाणी के साथ दियातरा और दियातरा के साथ श्री भैरूदानजी तुरन्त स्मृति पटल पर उभर आते हैं। दोनो में कौन संज्ञा कौन सर्वनाम यह विभेद कर पाना मेरे जैसा के लिए कठिन है।

सर्वप्रथम आजादी के बाद सन् 1949 50 के लगभग श्री दाऊलाल व्यास, द्वारका प्रसादजी पुरोहित एवं श्री बिरजू भा के साथ दियातरा गया था। हम सब एक जीप में सवार होकर श्री कोलायतजी से चले और मार्ग में 3 4 गांवों के लोगों से मिलते हुए सायंकाल दियातरा पहुचे। मार्ग में देशभक्ति के गीत गाये जाते रहे। दियातरा नजदीक आने पर श्री भैरूदानजी के सादगी सदाचार व तपस्वी आदर्श ग्राम्य जीवन की चर्चाएं चलीं। मै सब ध्यान से सुनता रहा और ऐसे मनस्वी व्यक्ति के दर्शनों की जिज्ञासा बढ़ती रही और हम दियातरा में श्री छलाणीजी के घर पहुच गये। रामा सामा की औपचारिकता के पश्चात् परस्पर परिचय हुआ और श्री छलाणीजी के आग्रह पर भोजन विश्राम दियातरा में ही रहा।

रात्रि में 15 20 ग्रामीण एकत्र हुए और आजादी के पूर्व देश की दशा दिशा और वर्तमान में ग्रामीण जनता की शासन में आशा अपेक्षाओं पर चर्चाएं चलीं। इन चर्चाओं में ग्राम विकास के सुखद व सुन्दर स्वप्न सजोये जा रहे थे। मुझे ये बातें बहुत अच्छी लग रही थीं। इसलिये मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा था। साथ ही उपस्थित ग्रामीणों के प्रमुख श्री छलाणीजी में क्या विशेषताएं हो सकती हैं यह जानने के लिए सतत सतर्क भी था। इस बीच मैंने देखा कि जहा हमारे शहरी नेता सामन्ती शासन की आलोचना के साथ लोगों को अधिकारों के लिये संघर्ष को तैयार रहने के लिये उकसा रहे थे वहा श्री छलाणीजी बड़ी गम्भीरतापूर्वक अधिकारों के प्रति जागरूक रहने के साथ और अधिक कर्मठ बनने का कर्त्तव्यबोध कराना भी नहीं भूलते थे। ग्राम सभा बड़े उत्साहप्रद वातावरण के साथ सम्पन्न हुई। रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रात हम बीकानेर आ गए।

दूसरी बार श्री गंगादासजी रंगा के साथ श्री कोलायतजी से ही दियातरा जाना हुआ। उन दिनों श्री कोलायतजी में मै मेरे मामाजी के साथ उनके औषधालय में काम करता था और वहा श्री दाऊलालजी मगरा तहसील प्रजा परिषद् के मन्त्री थे। प्रजा परिषद् का कार्यालय रेलवे स्टेशन के समीप ही एक धर्मशाला के एक कमरे मे था। श्री दाऊलालजी ने परिषद् का पुस्तकालय प्रतिदिन दो घंटे खोलने के लिये मुझे प्रेरित किया और मैने पुस्तकालय खोलना शुरू कर दिया था। श्री रंगाजी देहातों मे

सम्पर्क के लिये श्री दाऊलालजी का पत्र लेकर मेरे पास आये। साथ मे उनकी धर्मपत्नी भी थीं। वहा के एक पटवारी के सहयोग से हम कुछ गावो मे होते हुए दियातरा गए थे। इस बार दिन का समय था। इसलिए श्री छलाणीजी के दर्शन अच्छी प्रकार हुए और उन्होने हमे अपने विशेष प्रकार के विशाल झोपड़े व निर्धूम चूल्हे भी दिखाए। जिनकी चर्चाएं कई बार की गई थीं। पिछली बार रात का समय था और गाव मे बिजली न होने के कारण लालटेन की मद रोशनी मे कुछ भी देखा नहीं जा सका था। इस बार श्री छलाणीजी के ऋषि तुल्य वन जीवन की झाकी देखकर उनके प्रति मेरे मन मे एक मधुर श्रद्धा ने घर कर लिया जो अभी तक स्थायी रूप लिये रही और बार बार उनसे मिलने की लालसा बनी रही।

मेरी स्वास्थ्य सदाचार गो सेवा, ग्राम विकास आदि विषयो मे रुचि रहती थी। आजादी के पश्चात् तुरन्त हुए कश्मीर सघर्ष ने मेरे मन मे सीमा पर बसने वाले गावो और उनकी रक्षार्थ सतर्क रहने वाले सैनिक जीवन की जानकारी की जिज्ञासा बढ़ती रही थी। चाह जहा राह की उक्ति चरितार्थ हुई और श्री दाऊलालजी के सम्पर्क से मै सात वर्ष पूगल रहा और वहा मिल्ट्री जीवन का गहराई से अध्ययन किया। उस समय उस क्षेत्र मे आर्म्ड (सशस्त्र) पुलिस और गगा रिसाला, दो सुरक्षा एजेन्सिया थीं, बाद मे आर्मी की चोकिया भी स्थापित हो गई थीं। सात वर्ष के पूगल प्रवास मे मैने भी गो सवर्धन व ग्राम जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव किया। क्योकि इस क्षेत्र मे गो वश की भरमार थी। शहर से दूर बियाबान जगल मे 10 10, 15 15 कोसो की दूरी पर गाव (नाममात्र) थे जिनके गगाजली व सियासर चौगान नाम प्रभावित करने वाले है पर उन दिनो वहा झुग्गिया व झोपड़ो के 5 10 घरो की आबादी के अलावा कुछ नहीं था और वे भी पानी के अभाव मे वर्ष मे आधे समय गैर आबाद ही रहते थे। खेती का नाम नहीं था। मात्र पशु पालन के पेशे के आधार पर इस क्षेत्र के ग्रामीण खानाबदोश जीवनयापन के लिये मजबूर थे। फिर भी बड़ी सादगी व सन्तोष का जीवन दिखाई देता था। आजादी के बाद डाकू दस्युओ का आतक कभी कभी अवश्य शकित किये रहने लगा था।

उन्हीं दिनो श्री गगादासजी कौशिक ने बीकानेर से पूगल एक बस चलाई जो सप्ताह मे एक या दो बार अनियमित रूप से चला करती थी। सड़क नहीं थी। पूगल क्षेत्र के विख्यात धोरो के उतार चढ़ाव मे बड़ी कठिनाइ होती थी। पचास मील का मार्ग तय करने मे 8 10 घटे लग जाते थे। कभी कभी तो बस धोरो मे फस जाती तब रात वहीं धोरो की मिट्टी मे खड्डे करके सोकर गुजारनी पड़ती थी। पानीरहित निर्जन वन के प्रत्यक्ष अनुभव होते थे। बारह कोस की बावनी उजाड़ के किस्से प्रत्यक्ष जीवन मे घट रहे थे और साथ साथ स्मरण होता रहता था दियातरा मे हुई ग्राम जीवन के विकास की चर्चाओ का। इस क्षेत्र मे नहर आने के पूर्व की स्थिति और नहर की कल्पना का लोगो द्वारा कपोल कल्पना माना जाना कई बातें है जो रोचक होते हुए भी यहा प्रसगोचित नहीं है। यहा तो श्री छलाणीजी के साथ की स्मृतिया का प्रसग है।

सन् 57 से 70 तक सामाजिक कार्यो की लगन मे ही चुरू, गगानगर व बीकानेर जिला के विविध स्थानो का भ्रमण करत हुए स्वास्थ्य बिगड़ा और बीकानेर म डा दवन्द्रजी क पास प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की शरण मे आया और गत 30 वर्षा से यहीं स्थाई निवास बन गया है। बीकानेर निवास के प्रारम्भिक दिना म ही श्री छलाणी जी के दर्शनो की तीव्र इच्छा हुइ और श्री सोहनलालजी मोदी क माध्यम म गगाशहर म कई अर्स क बाद श्री छलाणीजी के दर्शन कर सका। इस बार मे एक चिकित्सक था और छलाणीजी मरे पेशेन्ट। व बीमार होकर अपने दामाद श्री रतनलाल चौपड़ा के घर गगाशहर उपचार हेतु आय हुए थे। उनकी रुचि आयुर्वद व प्राकृतिक चिकित्सा म होने के कारण श्री मोदीजी मुझे उनके पास ले गए। इस बार उनस प्रत्यक्ष लम्बी वार्ता हुई। जिसमे उनका स्पष्ट गाधीवादी व्यक्तित्व सामने आया। वे गाधीजी के सिद्धातो मे पूर्ण आस्था रखते थे और गाधीजी क ग्राम स्वराज्य को ही दश के ग्रामीण विकास का सही हल मानते थे। उन दिना उनका यह विश्वास था कि केन्द्र व प्रान्तो की काग्रेस सरकार गाधाजी के विचारो के अनुरूप ही कार्य विस्तार करगी। पर साथ ही उनका यह पक्का विचार था कि गाव गाव मे वहा क स्थानीय लोगा का भी अपन गावो क विकास के लिए सामूहिक रूप से चिन्तन और कठिन श्रम करना चाहिए।

इसके पश्चात् तो उन्हाने मुझे अपने पारिवारिक चिकित्सक के रूप म मान्य कर लिया था। वे जब भी बीकानर मे खादी मदिर की मीटिग आदि म आते तो प्राय गगाशहर म ही अपनी लड़की के घर ठहरा करत और मुझ सूचना मिलते ही मै उनसे मिलता और घटा बात चीत चलती साथ ही बच्चो सहित पूरे परिवार के स्वास्थ्य की जाच व उपचार का कार्य भी सभालता। उन्हे गाधीजी की सभी 18 19 प्रवृत्तियो की जानकारी थी और व कहते कि गाधीजी राजनीति से हटते जा रहे थे और सभी प्रवृत्तिया का कन्द्र प्राकृतिक चिकित्सा को मानते थे और प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से प्राकृतिक जीवन अपनाकर वे मनुष्य के तन, मन एव आत्मा सहित मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। श्री छलाणीजी भी गाधीजी की प्रवृत्तिया (स्वच्छता गो पालन मद्य निषध, खादी ग्रामाद्योग अस्पृश्यता, परिवार नियोजन वना की रक्षा, साक्षरता आदि सभी) का समन्वय एक एक का प्राकृतिक चिकित्सा क साथ बड़े तार्किक ढग से समझाते और व चाहते थे कि शहरो म, प्रत्येक कस्बे म और गावा म प्रत्येक पचायत केन्द्र पर प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी हेतु व्यवस्था हो ताकि ग्रामीण जनता प्राकृतिक साधनो व अपने आस पास ही उपलब्ध जड़ी बूटिया क द्वारा बिना किसी खर्च व बिना किसी औपचारिक आडम्बरा क अपने परिवार का स्वस्थ व सुखी बनाए रख सक। इस कार्य मे स्वयसेवी सस्थाआ के साथ सरकार से भी सहयोग की अपेक्षा रखत थे। पर बाद म दिनादिन पाश्चात्य सभ्यता के फैलाव स ऊबकर व सरकार की आर से निराश हो चुक थ।

श्री छल्लाणीजी का स्वप्न पूर्णरूपेण कब साकार होगा यह तो आज नहीं कहा जा सकता परन्तु उनके स्वर्गीय आशीर्वाद से हमारे चिकित्सा केन्द्र में इडोर रोगियो में 60 % से भी अधिक सख्या ग्रामीण रोगियो की रहती है और गावो में प्राकृतिक चिकित्सा व जड़ी बूटियो का प्रचार हो रहा है। यह प्रसन्नता की बात है। हम सब मिलकर उनके विचारो का प्रचार प्रसार करें। इन्हीं शब्दो के साथ मै उस ग्रामीण जीवन की पवित्र आत्मा के प्रति अपनी स्मृति श्रद्धाजली अर्पित करता हू।

सच्चे गाधीवादी

■ डॉ कालीचरण माथुर ■

मेरा भी उनसे एक लम्बे समय तक सम्पर्क रहा है। यद्यपि प्रारम्भ से अत तक चिकित्सक के नाते ही रहा है फिर भी विविध विषयो पर चर्चा हो जाती थी।

उनका आयुर्वेदिक चिकित्सा मे अटूट विश्वास था यहा तक कि मेरे बहुत समझाने पर भी वे मेरी बताई हुई एलोपेथी की औषधिया लेने को तैयार नहीं हुए, तब उनके ही आयुर्वेदिक चिकित्सक के माध्यम से मुझे उन्हे अपनी औषधि (केवल गोली) देनी पड़ी। कुछ समय स्वास्थ्य लाभ करने के बाद उनको सब कुछ बता दिया गया। उसके बाद तो उनकी मुझ मे इतनी आस्था हो गई कि किसी प्रकार की भी व्याधि हो वह सर्वप्रथम मुझ से परामर्श करते थे। एक बार तो मुझे उन्हे देखने दियातरा जाना पड़ा।

सादा जीवन आत्मीयता की भावना वर्तमान राजनीति से घृणा, सच्ची आस्था सदैव हसमुख रहते हुए शात एव गम्भीर रहना। ये सब उनके गुण थे। वे विचारो मे सच्चे गाधीवादी थे।

ईमानदार और अच्छे चिकित्सक के रूप मे कार्य करना ही सच्ची समाज सेवा है। यह उनकी मान्यता थी। जिससे मुझे भी कुछ प्रेरणा मिली।

मगरे के युगपुरुष

■ गोरधनसिह यादव ■

आजादी के तुरत बाद जब अग्रेज देश छोड़कर चले गये तो देश की सारी देखभाल हमारे कधो पर आगई। हम लोग भी बड़ी निष्ठा से अपने अपने कार्य मे जुट गये। सुदूर गावो के विकास के लिए अनेक सद्भावी एव कर्मठ समाज सुधारको ने सेवा व्रत लिया। कोलायत मे श्री भैरूदानजी छलाणी एक युग पुरुष के रूप मे अवतरित हुए। वे गोसेवा सघ, खादी प्रतिष्ठानो एव पचायत राज सस्थाओ के माध्यम से जन साधारण की सेवा मे जुट गए। श्री छलाणी कोलायत तहसील के लोक जागरण के अगुआ बन गए। जहा तक मेरी जानकारी है वे आधुनिक मगरे के भाग्य के निर्माता रहे। ऐसे सद्भावी पुरुष को शत शत प्रणाम।

कर्मशील व्यक्ति

■ डा मनमोहनसिह यादव ■

इस जगत मे आम मानव कर्मफल के पीछे दोड़ता है। उसे लगता है कि वह सब कुछ प्राप्त कर लेगा। प्राप्ति की अधी दौड़ मे वह फल को प्राथमिक और कर्म को गौण कर देता है। इस जगत में कुछ मनुष्य ऐसे भी होते है जो कर्मफल के पीछे नहीं दोड़ते। वे तो तटस्थ भाव से केवल कर्म ही करते है, फल जो भी हो परवाह नहीं करते। श्री भैरूदानजी छलाणी ऐसे ही कर्मशील व्यक्ति थे। वे कर्म करने मे तत्पर रहते थे। लोक कल्याण ही उनका मूल मत्र था। पशु सेवा पशु सवर्धन के मसीहा कृषक हितो के अग्रदूत एव खेत खलिहान के उद्भट प्रवक्ता श्री भैरूदानजी खादी एव कुटीर उद्योग की स्थापना के जीवट वाले प्रचारक थे। पचायत राज सस्थाओ को जिस रूप मे मगरे (कोलायत) मे खड़ा किया वह अनुकरणीय है।

मेरा कोटि कोटि अभिनन्दन।

मगरे का भामाशाह

▪ आसुराम उपाध्याय ▪

सेठ श्री भैरुदानजी से मेरा सम्पर्क और संसर्ग रहा उसका मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मुझे अपने जीवन में कहीं अंधेरा लगता है तो उनके व्यवहार के संस्मरण से रोशनी मिलती है। मेरा रास्ता सरल हो जाता है।

सबसे अधिक गहरी छाप छोड़ने वाला उनका हर किसी की मुश्किल में सहायता देने का दानशील स्वभाव था। उनके यहां जो भी सहायता और सलाह लेने पहुंचा उसकी आवश्यकता की पूर्ति हुई।

दूसरे गांव के बच्चों को दियातरा में पढ़ने और रहने के लिये अपने घर में स्थान दिया और परिवार के साथ रखकर पढ़ाई की व्यवस्था की।

अकाल के समय उनके यहां जो भी सहायता के लिये पहुंचे उनको राशन पशुओं को चारा और फसल के समय खेत बुवाई और खेती के लिये मुक्त हस्त से सहायता की।

सहायता करने वाले दानवीर या प्रथम कोटि के गोभक्त कहलाना और उनकी दानवीरता के बखान उनको पसन्द नहीं थे।

एक बार अकाल के समय किसी ने चारे की चोरी करली। उसका पता लग गया उसकी शिकायत सेठजी से की गई। फिर भी सेठजी ने चोरी करने वाले को भी चारा केन्द्र से चारा देते रहने की छूट दी। कहा चारा गाय ही खायगी उनका पेट तो भरेगा आदमी तो चारा खायगा नहीं।

उन्होंने मगरा क्षेत्र के किसानों की पैदावार बढ़ाने के लिये महाजन होते हुए भी खेती पर बेहिसाब 'बाढ़' की तरह खर्च किया। ट्रेक्टर कुआ नई नई फसलों के नये नये बीज खाद आदि आदि के खर्चीले प्रयोग किये। वे खुद खेत पर काम करते। बारानी मगरा क्षेत्र में सिंचित खेती से सर सब्ज खेती और भरपूर फसल लेने वाले बीकानेर जिले में प्रथम किसान थे। उन्होंने अपने खेती के अनुभव और लगन से सभी किसानों को अधिक पैदावार करने के लिये रास्ता खोल दिया। उनकी राय मशविरा लेकर खेती से ज्यादा लाभ कमाने की हिम्मत पाई।

उनको अपनी जमीन और लोगों से सच्चा प्रेम था। शिक्षा के प्रचार के लिये उन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय का भवन बनवाकर गांव को समर्पित किया। शिक्षा के प्रचार से नई पीढ़ी को तैयार करने के साथ पुरानी पीढ़ी में चेतना जगाने और समाज सुधार के लिये दहेज पर्दाप्रथा और कुरीतियों का विरोध किया।

अपने घर से ही सुधार शुरू किए। स्त्रियो को ऊची शिक्षा दिलाकर व पर्दाप्रथा से मुक्त कराकर बराबरी का दर्जा दिलाने वाले वे प्रथम ग्रामीण थे।

गावो के लोगो की भलाई गरीबो की सहायता, गायो की सेवा और शिक्षा के प्रचार और खेती मे सुधार के द्वारा गावो के लोकमानस मे छवि 'मगरा के सेठ और दानवीर भामाशाह जैसी थी।

पचायती राज के शुरू होने के समय चुनाव खुले रूप मे हाथ उठाकर होता था। आज की तरह गुप्त मतदान नहीं था। उस समय तहसील के लोगो ने उनको निर्विरोध सरपच और पचायत प्रधान चुना।

उनका रहन सहन बहुत ही सादा था। वे हमेशा अपने खेत या मगरे की बाजरी की रोटी खाते और श्री कोलायत का ही पानी पीते थे। वे गाधीजी, विनोबाजी के आदर्शो के पालने वाले, श्री गोकुल भाई भट्ट के सहयोगी और परमपूज्य स्वामी 1008 श्री नारायणदासजी महाराज के शिष्य थे।

मगरे के दानवीर भामाशाह को शत शत प्रणाम।

जीवन्त गाधी बापूजी

■ डा धर्मचन्द्र ■

श्री भैरूदानजी छलाणी के प्रथम दर्शन मुझे दियातरा मे हुए। श्री छलाणीजी से भेट करने बस से दियातरा गाव पहुचते रात हो गई थी। दियातरा मे उस समय बिजली, टेलीफोन सुविधायें नहीं थी। अधिकाश कच्चे मकान एव झोपड़िया थीं। उनके बीच छलाणी परिवार के पक्के मकान थे। साफ सुथरे मकान की बैठक मे दुबली सावली देह, नाक मे बाली, खद्दर का आधी बाहो का कमीज व ऊची धोती पहने स्वच्छ धवल गद्दे पर बैठे सौम्य ग्रामीण पुरुष के दर्शन मद मुस्कान के साथ हुए। प्रथम दृष्टि मे ही गाधीजी के जीवन्त स्वरूप की छवि चित्त पर अकित हो गई और समय के साथ सम्पर्क सवाद, सान्निध्य और सम्बन्धो की प्रगाढ़ता निरन्तर बढ़ती रही और अकित चित्र सतत गहरा और प्रखर ही होता गया।

मेरा सौभाग्य रहा कि मेरा उनसे मात्र परिचय ही नहीं रहा अपितु उन्होने मुझे और मेरे परिवार को अपने ही परिवार का आत्मीय अग बना लिया। उनका पितृवत् प्रेम मुझे सदैव मिला।

दियातरा म श्री छलाणीजी से भट का हेतु श्री छलाणीजी के कनिष्ठ पुत्र श्री पृसराजजी से मरी बहन के सम्बन्ध की समावना देखना था। सगाई की यह घटना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जो उनकी अन्तर आत्मा मे व्याप्त अहिंसा, प्रेम ओर सत्याग्रह की सहज स्वाभाविकता उनकी ऋजुता उदारता ओर विशालहृदयता को प्रकट करती हे। जिस परिस्थिति म सामान्यत सम्बन्ध टूट ही नहीं जाते बल्कि गहरी कटुता उत्पन्न हा जाती है वही उन्होने प्रगाढ़ आत्मीयता स सम्बन्ध स्थापित किए। यह उनके व्यक्तित्व की सहज सामान्यता के अवगुण्ठन मे चरित्र की अति असाधारणता को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती है। मे उस घटना का साक्षी ही नही अपितु एक घटक रहा हू।

सन् 1965 68 म मै राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर मे रसायन विज्ञान का शोध छात्र एव अध्यापक रहा। 1967 मे मेरे तथा मरे छोटे भाई के सगाई सम्बन्ध तय हो गए। मरी बहन सुन्दर जो एम ए कर चुकी थी उसके लिये सम्बन्ध करने का प्रयास चल रहा था।

हमारे कस्बे लाडनू म हमारा परिवार अपक्षातया शिक्षा एव समाज सुधार कार्य म सक्रिय रहा। विशेष रूप स निम्न मध्यम श्रेणी की आर्थिक स्थिति (मेरे पिताजी श्री जोहरीमलजी भसाली रमेश कॉटन मील मोर्वी गुजरात में नोकरी करत थे) के बावजूद परिवार की बालिकाओं को भी उच्च शिक्षा के लिये जयपुर, वनस्थली भजने का साहस करके कन्या शिक्षा की पहल की। अत बहन के सम्बन्ध के लिये समाज सुधारक सस्कार वाले शिक्षा प्रेमी परिवार के रूप मे श्री भैरूदानजी छलाणी की चर्चा श्री रायचन्दजी बोकड़िया ने की जिनका दीनहट्टा में व्यापार था और छलाणी परिवार से परिचय था। हमने मन के सकोच को श्री बोकड़ियाजी क सामने रखा कि छलाणी सम्पन्न व्यवसायी परिवार है, हम तो सामान्य नोकरीपशा है—सम्बन्ध कैसे सभव हागा। श्री बोकड़ियाजी ने कहा कि श्री छलाणीजी से दियातरा गाव जाकर मिल। श्री छलाणीजी अत्यन्त सरल सादे एव उच्च विचार के पुरुष है। सकोच की आवश्यकता नहीं है। वे गुणग्राहक है। याग्यता शिक्षा ओर सस्कार ही उनके लिये सगाई सम्बन्ध का मापदण्ड है।

मेरे पिताजी मेरे से पहले एक बार इसी सदर्भ मे लाडनू से बीकानर हाते हुए दियातरा आए थे। उनको श्रीकोलायत स श्री छलाणीजी अपने ट्रेक्टर मे बैठाकर दियातरा लाए थे। रास्ते म मगरा क्षेत्र गाव खेत घर परिवार, व्यापार व्यवसाय की खुलकर जानकारी दी ली थी। पिताजी न उनको बताया मै कार्यकर्त्ता नहीं हू, पेटभर्ता ही हू। नौकरी की सामान्य आय क भरोसे ही बच्चे बच्चियो की शिक्षा पर ही ध्यान द पाया हू। यही मेरा धन है।' श्री छलाणीजी ने कहा था सम्बन्धा का आधार परस्पर स्नेह सहयाग और सम्मान ही होते है। सम्बन्धा म उनकी दृष्टि कभी धन पर नही रही।

मार्च 1967 में मैं जयपुर से बीकानेर आया। मेरे मित्र श्री कृष्णकान्तजी शर्मा के साथ छलाणी वुलन मील गया। उस वक्त मील छलाणी परिवार का संयुक्त अभिक्रम था जो श्री छलाणीजी की सूझ बूझ एवं दूरदृष्टि का ही परिणाम थी। बीकानेर कच्चे ऊन की एशिया प्रसिद्ध मण्डी रहा परन्तु ऊनी उत्पादन के उद्योग व खादी क्षेत्र में पहल करने वालों में छलाणीजी प्रमुख रहे हैं।

श्री पूसराजजी उन दिनों विधि स्नातक अन्तिम वर्ष के छात्र थे। अध्ययन के लिए जस्सूसर दरवाजे के बाहर किराये के मकान में निवास कर रहे थे। इनके साथ अपने व गाँव के अन्य छात्रों के आवास एवं अध्ययन की व्यवस्था थी। श्री पूसराजजी की शिक्षा, ग्राम्य सहजता, सरलता और सादगी से मैं प्रभावित हुआ। श्री छलाणीजी से भेंट करने उसी दिन बस से दियातरा गाँव पहुंचते रात हो गई।

रातभर तथा दूसरे दिन दोपहर बाद तक मैं दियातरा में रहा। घर खेत गाय तथा परिवारजन से परिचय हुआ। सारा परिवार सुसंस्कारित बच्चियां भी सब अध्ययनरत तथा घर में गाय, बैल खेती, ट्रेक्टर सारी सम्पन्नता के साथ सादगी सहजता और स्नेह का सुन्दर संयोजन पाया। दियातरा से मैं लाडनूं आया। छलाणी परिवार व पूसराजजी की शिक्षा संस्कार और सम्पन्नता तथा ग्राम्य परिवेश से परिजनों को अवगत करा दिया। श्री छलाणीजी को जच जाये और बहन की सहमति हो तो मेरी दृष्टि में सम्बन्ध अवश्य ही करने योग्य था। मेरे पिताजी उस समय मोर्वी में थे। श्री भैरूदानजी छलाणी दूसरे या तीसरे दिन ही लाडनूं घर पर पधारे। उनके साथ उनके साले (शायद श्री भैरूदानजी या श्री चम्पालालजी बैद गंगाशहर) थे। वे [illegible] आने में रसोई तक सहज भाव से आये। बहन से मिले। उन्होंने सम्बन्ध की स्वीकृति दे दी। मेरे अपने घरवालों को कहा कि पूज्य भाईजी (मेरे पिताजी) के [illegible] के लाडनूं आने पर बहन की पूरी इच्छा जानकर ही सम्बन्ध तय करें। मैं जयपुर चला गया। पिताजी की अनुपस्थिति में पूज्य दादोसा व नानोसा आदि ने सम्बन्ध तय कर दिया। सात सुपारी की रस्म हो गई। श्री भैरूदानजी अप्रैल में लाडनूं और और [illegible] भाइयों व बहन की शादियों की तिथियां तय हो गई। मेरे [illegible] की शादियां 17 मई 67 को लाडनूं में होनी थी तथा श्री छलाणीजी [illegible] दियातरा से बरात लेकर लाडनूं आने वाले थे। इन शादियों [illegible] 19 [illegible] 67 को [illegible] बरात जोधपुर जाना था जिसमें श्री छलाणीजी को भी [illegible]।

पर उसने विवाह मे ही अनिच्छा व्यक्त कर दी। मेरे पिताजी और परिवार के समक्ष धर्मसकट की स्थिति हो गइ। उदार व कोमल हृदय पिताजी छलाणीजी से प्रभावित थ सम्बन्ध चाहत थ दूसरी तरफ बेटी की इच्छा विपरीत थी।

उसी दिन श्री धनराजजी छलाणी विवाह की कुकुम पत्री एव भट लेकर आये थ बहन ने उनसे मिलना भी नहीं चाहा। पिताजी ने मेरे सम्बन्ध में ही भाई साहब श्री अभयराजजी जो उच्च शिक्षित व कलकत्ता म उच्च व्यवसायिक पद पर थे, तथा मेरे छोटे भाई प्रसन्न को जीप से दियातरा भेजा। वे शहर के वासी मगरा क्षेत्र का उजाड़पन एव दियातरा ग्राम का जीवन उनको विकट लगा कि शहर म शिक्षित लड़की ऐसी परिस्थितियो मे कैसे रह पायेगी! उन्होने श्री फूसराजजी से भी कइ सवाल पढ़ाई व आगे के कार्य व्यापार के सम्बन्ध म किये। श्री फूसराजजी का सहज उत्तर था कि अभी तो पढ़ रहे हे फिर जेसा सभव होगा करेंगे। उन्होने (हमारे भाई साहब व भाई) उसी रात श्री छलाणीजी से यह सगाई सम्बन्ध तोड़ने का कठोर निर्णय दे दिया। मै उसी दिन जयपुर से लाडनू विवाह के निमित्त सप्ताह भर पूर्व आया।

छलाणीजी से सगाई सम्बन्ध तोड़ देने की बात से मै सुन्न हो गया। मैं कल्पना करके ही सिहर उठा कि एक सज्जन पुरुष और परिवार के साथ कैसा व्यवहार किया गया है। कुठाराघात ही हुआ है। कुकुम पत्रिका बट जाये और तभी लड़के का सम्बन्ध लड़की वाला की ओर से तोड़ दिया जाये। कैसी विकट स्थिति छलाणी परिवार के लिये हमारे द्वारा पैदा कर दी गइ है। मै उस सम्बन्ध का कारण रहा हू। अपने विवाह की खुशी के स्थान पर मुझे भारी क्षोभ एव दु ख हुआ। मन में यही होता रहा कि कैसे पश्चाताप होगा।

मेरे पिताजी के दिल पर जो गुजरी उसे भी मै अनुभव कर रहा था। उन्होने कन्याओ को भारे कष्ट उठाकर शिक्षित किया। उनकी हैसियत के लोग उस समय लड़कियो को तो दूर लड़को का भी गाव से बाहर पढ़ने का खर्च वहन नहीं करते। अपनी लड़की की स्वतन्त्र इच्छा के लिये उन्होने अपने दिल पर पत्थर रखकर यह कठिन निर्णय लिया। गम को पी गये।

श्री भवरलालजी छलाणी सही स्थिति की जानकारी लेने दूसरे दिन लाडनू आये। मेरे पिताजी और मेने बहुत शर्मिन्दगी व्यक्त की। हम विवश है बहन सुन्दर ने विवाह ही नहीं करने का निश्चय कर लिया है।

इधर श्री छलाणीजी व उनकी धर्मपत्नी का दृढ़ निश्चय था कि श्री फूसराजजी की शादी इस मुहूर्त पर ही करनी है। उनका सकल्प सिद्ध हुआ। फूसराजजी की शादी बीकानेर निवासी श्री गोपीचन्दजी नाहटा की तीसरी सुपुत्री चन्द्रा के साथ 17 मई 67 को ही सम्पन्न हुई। श्री गोपीचन्दजी मइ माह म ही अपनी दूसरी लड़की शान्ति की शादी करके आगरे से लौटे ही थे। चन्द्रा तो उस समय पढ़ रही थी और कल्पना म भी

कि चन्द्रा की शादी अचानक ही हो जायगी। विस्मयकारी संयोग ही है। सच
विवाह स्वर्ग मे तय होते है और धरती पर सम्पन्न होते है।

मैं छलाणी परिवार से सगाई सम्बन्ध टूटने के अपराध बोध से आक्रान्त
रहता। परन्तु श्री छलाणीजी ने स्वय को हुए दुख और कष्ट को रचमात्र भी
रखा। बाद मे वे अपने साले श्री भैरूदानजी बैद के साथ लाडनू घर पर आये।
पहले हमारी शादी सानन्द सम्पन्न होने पर बधाई एव आशीर्वाद दिया और
कि फूसराजजी की शादी भी सानन्द बीकानेर के श्री गोपीचन्दजी नाहटा की
चन्द्रा से उसी मुहूर्त पर सम्पन्न हो गई। साथ ही यह कहा कि 'आप किसी
का विचार मन मे नहीं रखें। आपकी बहन सुन्दर से सम्बन्ध का संयोग नहीं
रन्तु अब अपना नया सम्बन्ध तय है। सौ चन्द्रा आपकी बहन है।' उनकी
ता से विस्मित रह गया, मै नतमस्तक हो गया। यह सामान्य मनुष्य नहीं
ारण पुरुष है। सम्बन्ध तोड़ना हमारी विवशता, हमारा अपराध। परन्तु टूटे हुए
ड़ देना उनकी उदारता और क्षमा। वह भी बिना किसी अहं भाव के, सहज
भाव से।

सौ चन्द्रा और मेरा बहन भाई का सम्बन्ध श्री छलाणीजी ने शाश्वत कर
मेरे अपराधबोध को आत्मबोध से धो दिया। आत्मीयता का अटूट सम्बन्ध
त कर दिया।

1967 68 मे मै अपने पढ़ रहे भाई बहनों एव समस्त परिवार के साथ जयपुर मे
नगर मे रहा। श्री फूसराजजी व सौ चन्द्रा भी जयपुर मे उच्च अध्ययन हेतु आये
बापू नगर मे समीप ही मकान लिया। हमारा सम्पर्क सम्बन्ध निरन्तर बढ़ता ही
यहीं से सौ चन्द्रा की हिन्दी मे एम ए के पश्चात पीएच डी उपाधि हेतु शोध
की भूमिका प्रारंभ हुई। श्री छलाणीजी जब जब जयपुर आते हमारे आवास पर
र सबको सभालते। हम सब बच्चो को उनका स्नेह और सरक्षण मिला।

1968 मे मेरा शोधकार्य पूरा होने पर राजस्थान विश्वविद्यालय मे व्याख्याता
कार्य मिल गया था। राजस्थान लोक सेवा आयोग से चयन के पश्चात मेरी प्रथम
युक्ति डूगर महाविद्यालय बीकानेर मे हुई। इस सत्र मे अपने मित्र श्री
काान्तजी शर्मा के साथ रहा। अगले सत्र 1969 70 मे एक वर्ष तक सरावगी
ल्डिंग, कोटगेट मे रहा। उस समय श्री फूसराजजी व सौ चन्द्रा बीकानेर आ गये
सौ चन्द्रा का शोध अध्ययन चल रहा था। उनकी ही पहल और प्रयास से वर्ष
70 71 मे हम खजाची बिल्डिंग, रागड़ी चौक बीकानेर मे साथ रहे। मै सकोच कर
ा था परन्तु मेरी अनुपस्थिति मे मेरा सारा सामान फूसराजजी वहा ले आये। हमारा
बका भोजन एक साथ ही बनता था। पूज्य श्री भैरूदानजी एव उनकी धर्मपत्नी
ीमती जठीदेवीजी का सामीप्य सान्निध्य और वात्सल्य भरपूर मिला। मेरे लिये वे
ापूजी और मा हो हो गये। इसी मकान मे रहते सौ चन्द्रा ने अपने शोध प्रबन्ध को

पूर्ण किया। जब सौ चन्द्रा को पीएच डी की उपाधि प्राप्त हुई। विवाह के पश्चात् अपनी बहू चन्द्रा को बापूजी और मा द्वारा सुविधा, अवसर और आशीर्वाद से ही सौ चन्द्रा डॉ चन्द्रा छलाणी बनी और जो आज कन्या महाविद्यालय, तिनसुकिया (असम) मे हिन्दी की प्राध्यापिका है।

श्री छलाणीजी ने सौ चन्द्रा को डाक्टरेट मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की थी कि भाई (मै) और बहन (चन्द्रा) दोनो डॉक्टर हो गये। गुण वृद्धि और गुण ग्राहकता उनका सहज स्वभाव था।

प्रथम भेट का चित्र मेरे स्मृति पटल पर आज भी स्पष्ट अंकित है। प्रथमबार जब दियातरा गया रात हो गई थी। दूसरे दिन दोपहर तक मै वहा रहा। अपनी बैठक मे बैठे बापूजी (श्री भैरूदानजी छलाणी) को प्रणाम करके बैठ गया। मै रसायन शास्त्र का शोध छात्र विश्वविद्यालय मे था। खद्दर के कपड़े ही पहनता था। पजामा कुर्ता पेण्ट बुशर्ट भी। तेजाब व रसायनो के छींटो से उनमे छेद हो जाते थे। मुझे उन्होने बाद मे बताया कि जब मै दियातरा बहन के सम्बन्ध के सन्दर्भ मे आया था तब भी जो कुर्ता पाजामा पहने था उसमे छेद थे। इसी बात से वे प्रभावित हुए थे। उन्होने पूज्य पिताजी व घर परिवार के समाचार पूछे। घर की बच्चिया (पुष्पा ऋता आदि) ने आकर प्रणाम किया। घर के सदस्यो से परिचय हुआ।

भोजन के लिये घर की रसोई मे गिद्दी बाजोट लगाकर बैठाया और स्वय बापूजी और पू माताजी (श्रीमती जेठीदेवीजी) ने पास बैठकर गाय के शुद्ध घी से बना हलवा आदि अपने हाथो से परोसा। आतिथ्य का उनका यही तरीका सभी के साथ होता था और इस अकृत्रिम आत्मीयता से हर अतिथि अभिभूत हुए बिना नहीं रहता था।

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ यह देखकर कि गाव के घर की रसोई बैठक की तरह सजी हुई साफ एव सुथरी है। उसमे चित्र लगे हुए थे। भोजन चूल्हे पर उपला लकड़िया से ही बन रहा था फिर भी रसोइ मे धुआ और कालिख नहीं थे। गाधी आश्रम मे विकसित किये मगन चूल्हे का प्रयोग श्री छलाणीजी ने अपने घर अन्य परिवारो एव खेत मे गाव की आवश्यकताओ के अनुरूप और सुधार करके किया। मुख्य चूल्हे से एक सुरगनुमा खाई को रसोई के बाहर लगी चिमनी से जोड़ दिया गया और उस खाई पर आवश्यकतानुसार एक दो मुह बनाये गये जिनका ढक्कन खोलकर बर्तन रखे जा सकते थे और हर समय दूध व पानी कम आच मे ही गर्म होते। ईंधन मे उपलब्ध ताप का पूरा उपयोग होता और रसोई भी धुआरहित रहती। इस चूल्हे को बनाने के लिये लोहे के ढाचे का डिजाइन बीकानेर के एक लोहार को दे रखा था जिसका कोइ भी उपयोग कर सकता था।

भारतीय परम्परागत ज्ञान और अनुभव के आधार पर आवश्यकता के अनुरूप स्थानीय ससाधनो के द्वारा शोध प्रयोग और विकास की गाधी दृष्टि के व्यावहारिक

योक्ता श्री छलाणीजी थे। वे शास्त्रीय रूप में शिक्षित भले नहीं थे परन्तु उनकी प्रज्ञा प्रखर थी। देशज प्रतिभा के प्रत्यक्ष प्रमाण थे।

ग्रामीण जीवन व्यवहार में श्रम की बचत एवं आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था मितव्ययिता के साथ करने की कुशलता उनमें थी। शहरी अतिथियों की सुविधा के लिये उन्नत चल शौचालय का निर्माण उन्होंने करवा रखा था। जमीन में गढ्ढे पर एक छोटी गुमटी पर पानी की टंकी, उसमें टूटी तथा चीनी मिट्टी का आधुनिक शौचपात्र लगा हुआ जिससे मल गढ्ढे में चला जाता था। गुमटी के चार पहिये लगे हुए थे जिससे दूसरे गढ्ढे तक स्थानान्तरित किया जा सकता था। स्वच्छ सुविधाजनक शौचालय तथा मल के खाद रूप में परिवर्तन का सफल प्रयोग वहां देखा।

घर का आंगन व पीछे का हिस्सा परम्परागत मिट्टी गोबर की लिपाई में स्वच्छ सुन्दर देखकर चित्त प्रसन्न हुआ।

घर में सुन्दर स्वस्थ गाय, बछड़े उन्नत सांड व खेती के लिये बैल गाड़ी तथा उनके रहने के लिये स्थान साफ सुथरे, व्यवस्थित और उनकी देखरेख के लिये ग्राम और अञ्चल के जरूरतमन्द स्त्री पुरुष परिवार व कई लड़के वहीं रह रहे थे। उनमें कई तो विद्यार्थी थे जो विद्यालय में अध्ययनरत थे एवं उनके रहने, खाने और पढ़ने की व्यवस्था घर के सदस्य के रूप में थी। वे भी घर के कार्यों में सहर्ष हाथ बटाते।

सुबह सूर्योदय से पूर्व उठते ही खेत दिखाने के लिये श्री छलाणीजी बड़े प्रेम से खुद बैलगाड़ी हांकते हुए ले गये। गांव की दो दिशाओं में दो खेत जहां वर्षा पर आधारित खेती करवाते थे। फसल के पोधों पर ओस की मात्रा देखकर बताया कि फसल प्यास करने लगी है। उनके द्वारा धुराले में (सड़क के पास वाले जेठी देवी छलाणी कृषि फार्म) खेत की ढलान में पाल बांधकर खडीन पद्धति से वर्षा का पानी रोक लिया जाता व सर्दी में गेहूं चने की भी खेती की जाती।

चातुर्मास में सपरिवार खेत में ही रहते। जब फसल पूरी जवानी पर होती तब अपने सगे सम्बन्धियों एवं सार्वजनिक कार्यकर्ताओं, मित्रों को खेती और ग्राम के प्राकृतिक जीवन का आनन्द मनाने आमंत्रित करते। मुझे वहां खेती का आनन्द लाभ करने का अवसर कई बार मिला।

इसी खेत में रहने के लिये खूब हवादार और प्राकृतिक रूप से ऋतु अनुकूल गोलाकार झोपड़े किसी भी सितारा होटलों के महंगे कमरों की तुलना में कहीं अधिक आनन्ददायी और बहुत कम लागत में निर्मित हुए। अब तो शहरों में कृत्रिम ढाणियां और बनावटी गांव व ग्रामीण भोजन पर्यटन व्यवसाय के साधन हो रहे हैं। परन्तु श्री छलाणीजी ने तो अपने ही सुख को बांटा और बांटकर बढ़ाया।

धनाढ्य वणिक होते हुए भी उन्होंने कृषि में नये नये प्रयोग किये। उनका कृषि का अनुभवजन्य ज्ञान किसी भी कृषि वैज्ञानिक से अधिक सार्थक था।

श्री छलाणीजी ने खेत पर बाद म अपने परम मित्र बीकानेर के स्वाधीनता सेनानी बाबू रघुवरदयाल गोयल की स्मृति म रघुवर कुटीर का निर्माण कराया। यह उनके निस्वार्थ प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक है।

श्री छलाणीजी ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र म ट्रेक्टर खरीदकर उसका खेती म प्रयाग किया परन्तु बैल और हल को भी नही छाड़ा। अल्प वर्षा के इस क्षेत्र मे सिचित खेती के लिये बाद मे अपने खेत पर पहले खुला कुआ खुदवाया। उनकी दृष्टि यह रही थी कि गाव के मजदूरो को ही मजदूरी मिले। इस खुले कुए म गहराई म भी कम पानी निकला तो खुदाइ मशीन से खुदाई (बोरिग) करवाई और पम्प लगाकर सिचाई के प्रयोग किये। अन्तत उनका निष्कर्ष रहा कि मगरा क्षेत्र और मरू प्रदेश की बारानी खेती के लिये बैल से खेती गोबर कम्पोस्ट व देशी खाद देशी उन्नत बीज ही आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है। ट्रेक्टर द्वारा खेती, कृत्रिम खाद बीज, इस क्षेत्र म अधिक लागत के कारण क्षतिकारी है और इससे बैल को खेत स और गाय को घर से निकाल कर कसाई खाने की ओर धकेल देने की उनकी आशका अब समस्या रूप मे प्रस्तुत हो रही है।

गाय बैला के प्रति उनकी आत्मीयता केवल भक्ति पूजा की नहीं अपितु सेवा की थी। उनके प्रति भावनात्मक लगाव था। गाय व बछड़ो की नस्ल सुधार के लिये उत्तम साड तैयार किये और अचल के गावो म उपलब्ध कराये। दुष्काल के समय सरकारी सस्थाओ की प्रतीक्षा किये बिना ही अपनी ही पहल प्रयास व साधन स्रोतों से चारे पानी की व्यवस्था स्वय करते थे। अकाला के समय मुझे उनके द्वारा चलाये गये चारा केन्द्र और पशु शिविर देखने का सौभाग्य मिला।

वे गाय और गाव के ऐसे प्रेमी और भक्त नहीं थे जा केवल शहरों में रहकर गाव पर भाषण और गो रक्षा की बात तो करते है पर स्वय गाव म नही रहते और घर म गाय नहीं पालते। श्री छलाणीजी असम बगाल मे रहकर व्यापार व्यवसाय द्वारा खूब धन उपार्जन करने और नगर के जीवन की सारी सुख सुविधाये भोगने मे समर्थ समृद्ध थे परन्तु स्वेच्छया गाव म रहकर गाव के जन और जमीन स स्वभाविक जुड़ाव रखा, स्वेच्छा से किसी विवशता से नहीं। ग्रामो के देश म वास्तविक स्वराज्य की स्थापना और ग्रामो क सर्वांगीण विकास के लिए गावो म बस कर रचनात्मक कार्य करने के गाधी विचार को अपने ही जीवन द्वारा घटित किया।

जीवन की आवश्यक सुख सुविधाओ की स्थितिया गाव मे ही वहीं की साधन सामग्री स विकसित करने का अभिक्रम किया। गाव के विकास और समृद्धि के लिये गाव के जीवन को आत्मसात् करना उनकी भारतीय तत्व दृष्टि की व्यावहारिक समझ को प्रमाणित करता है।

आजादी से पूर्व युवाकाल मे ही तेजपुर (असम) म उन्होने खादी पहनना और खुले रूप म बेचना प्रारभ कर दिया था। दिसावर को छोड़कर देश (दियातरा) म ही रहना स्वीकार किया। उस समय बीकानेर रियासत म स्वतत्रता सग्राम की चेतना जाग रही थी। बाबू रघुवरदयालजी गोयल के साथ खादी मन्दिर की सस्थापना की। गोयलजी के देहावसान के बाद वे खादी मन्दिर क अध्यक्ष बने। डूगर महाविद्यालय म सरकारी पद पर होते हुए भी मुझे खादी मन्दिर के न्यास मण्डल म सदस्यता उनकी पहल व प्रेरणा स प्रस्तावित एव स्वीकृत की गई थी। मुझ खादी सस्था व सावजनिक कार्य से जुड़ने का अवसर उन्हीं के कारण मिला। वे स्वाभाविक रूप से समाज कार्य के कार्यकर्त्ताओ के पुरस्कर्ता और सस्कर्ता थे।

उनके अध्यक्षकाल में खादी मन्दिर मे ऊना उत्पादन, लोहारी, सुथारी, साबुन, खाद्य तेल चूना व क्रॉकरी उद्योगा का विस्तार और बहुमुखी प्रगति हुई। मन्दिर क कायकत्ताओ के योग क्षम की चिन्ता और व्यवस्था की दृष्टि से समय समय पर वतन सशोधन, खूब सहानुभूति एव विवेकपूर्वक किया जाता। इस विषय की समितिया म व मुझ रखते। खादी मन्दिर की विविध गतिविधिया एव कार्यक्रमा म कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करने का अवसर मुझे देते।

खादी मन्दिर मे उनक प्रति खादी कार्यकर्त्ताओ, कर्मचारियों का स्नेह और श्रद्धा अगाध थी। उनकी सस्थागत और व्यक्तिगत, पारिवारिक समस्याओ का समाधान बहुत ही सूझ बूझ व आत्मीयतापूर्ण ढग से व करते। किसी भी विवाद या मतभेद क बिन्दु पर वे मौन रहकर सबकी सुन लेते एव आवश्यक होन पर अपनी निष्पक्ष, निस्पृह सम्मति देत जो सर्व समाधानकारी होती। किसी को भी शिकायत का अवसर कदाचित ही मिल पाता।

खादी मन्दिर मे मेरीनो वेस्ट को मेरीनो ऊन के रूप मे काम लेने तथा मानव भारती विद्यालय को एकमुश्त एक लाख रुपये तथा नियमित अनुदान देने के विषय मे मत्री श्री इन्दुभूषणजी गाइल स मेरी मतभिन्नता रही। परिणामत मुझे बिना सूचना दिय ही न्यास मडल से हटा दिया गया। अध्यक्ष श्री छलाणीजी से मैने शिकायत की। मुझ खादी मन्दिर बीकानेर के न्यास मडल की सदस्यता का प्रस्ताव किया गया था, मैने उसक लिये आवेदन नहीं किया था। किसी प्रकार का कोई लाभ मैने नहीं लिया, अपना समय ही लगाता रहा हू। इस पर बिना कारण बताये गुपचुप न्यास मडल से हटाना और उसकी सूचना तक नही दना खादी की रीति नीति के अनुकूल नही है। श्री गाइलजी या मुझे कुछ भी नहीं कहा परन्तु उन्होने स्वय ही अध्यक्ष पद से निवृत्ति ले ली। यह उनकी अहिसक सत्याग्रह की वृत्ति थी। अस्वस्थता की स्थिति मे भी उनकी चेतना प्रखर थी। उन्हान 75 वर्ष की उम्र के पूर्व 1981 से वानप्रस्थ स पूर्ण निवृत्ति की ओर प्रयाण प्रारम्भ कर दिया। कर्म के द्वारा ही पूर्ण निवृत्ति की ओर अग्रसर होत रहे।

अक्टूबर 1985 मे जब अड़ियल बैल की मार से उनके कूल्हे की हड्डी टूट गई थी और काफी उपचारो के बाद भी ठीक नही हो पाई जीवन के अन्तिम समय तक उस टूटी हड्डी के ठीक नही हो पाने के कारण गादी मे उठाकर ही इधर उधर ले जाना होता था उस अवस्था मे भी कृषि, गो सेवा और खादी का काम पूरे मनोयोग से करते रहे। खादी मन्दिर के न्यास मडल की बैठक दियातरा मे होती। उनमे भी मुझे भाग लेने का अवसर मिला। गाव और गरीब के प्रति पीड़ा की उनकी अनुभूति और उसे कम करने की उनकी निष्ठा प्रकृति प्रदत्त थी।

1969 70 गाधी शताब्दी वर्ष था तथा इस वर्ष राजस्थान के इस प्रदेश मे भीषण अकाल था। मनुष्यो के लिये पानी और पशुओ के लिये चारे का दुष्काल था। उस समय मुझे काल की भीषणता का प्रत्यक्ष ज्ञान कराने के लिये लूणकरणसर क्षेत्र मे जीप में साथ ले गये थे। ग्रामीण जन की स्थिति अत्यन्त दारुण थी। उनको घर बैठे सम्मानपूर्ण कार्य देने के लिये खादी मन्दिर बीकानेर के द्वारा कताई बुनाई की व्यवस्था करने के लिये छलाणीजी मई जून की भीषण लू मे भी गाव गाव घूम रहे थे। अपने गाव दियातरा मे उन्होने पशुओ के लिये अपने स्तर पर ही चारा केन्द्र चलाया तथा राज्य सरकार के अनुदान व राजस्थान गो सेवा सघ के माध्यम से क्षेत्र मे चारा केन्द्र और स्थान स्थान पर पशु शिविर लगाने मे सक्रिय रहे। इस कार्य मे छलाणी परिवार के सभी सदस्य व बच्चिया तथा ग्रामजन हाथ बटाते थे।

भारत की प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी अकाल क्षेत्र का दौरा करने आई तब दियातरा मे श्री छलाणीजी द्वारा किये जा रहे पेयजल और अकाल राहत के कार्यों से ग्रामवासियो ने अवगत कराया था। श्रीमती गाधी ने सन्तोष व्यक्त करते हुए श्री छलाणीजी का धन्यवाद दिया। उस समय मै वहा उपस्थित था। इसी दिन तत्कालीन राष्ट्रपति के दिल्ली मे देहावसान के कारण श्रीमती गाधी को दौरे के बीच ही वापिस जाना पड़ा था।

श्री छलाणीजी का गो वश से लगाव आत्मभावमय था। जब भी अकाल की स्थिति आती वे राहत कार्य मे जुट जाते थे। सरकारी मदद की प्रतीक्षा नहीं करते थे।

शिक्षा के प्रति उनका प्रेम घर के बच्चे बच्चियो को उच्च शिक्षित करने तक सीमित नही था परन्तु गाव व अचल के बालक व बालिकाओ की शिक्षा के लिये वे तन मन और धन से समर्पित थे।

दियातरा मे पहले प्राथमिक शाला व छात्रावास आपने ही बनवाया था। माध्यमिक स्तर के विद्यालय का भवन श्री छलाणीजी की ही पहल और छलाणी ट्रस्ट के अनुदान से बना। उसमे सभी समर्थ इच्छुक लोगो का सहयोग लेकर जोड़ा। माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नयन होने पर विद्यालय एव भवन का उद्घाटन तत्कालीन राजस्थान सरकार मे उपमत्री श्री मनफूलसिह भादू के हाथो कराया गया। इस समारोह मे भी मै उपस्थित था। समारोह तथा सत्कार की सारी व्यवस्था

श्री छलाणीजी द्वारा ही की गई थी। परन्तु वे मच पर नहीं आय। व कार्य म ही विश्वास करत और प्रचार से सर्वथा दूर रहते। राजकीय हाते हुए भी विद्यालय म साज सामान के साथ छात्रा जरूरतमन्दा के शुल्क पुस्तका व वस्त्रा की व्यवस्था, छात्रावास एव अध्यापका की सुख सुविधा, आवास व्यवस्था की सदैव चिता रखत थ। हर छात्र, अध्यापक और गाव म आये किसी भी सरकारी या गैर सरकारी कर्मचारी अधिकारी के लिये उनके आतिथ्य का द्वार खुला ही रहता था। उनका पितृवत वात्सल्य सभी को अयाचित ही मिलता था।

1969 में बीकानेर आने पर मुझे व अपने समधी समाज भूषण श्री छोगमलजी चोपड़ा (श्री छलाणीजी की पुत्री सौ मीनादवी क श्वसुर, दामाद श्री रतनलालजी चोपड़ा के दादा) स मिलाने ले गये थे और मेरा उनसे परिचय कराया था 'लाडनू के भसाली है, डाक्टरेट हैं, बीकानेर में प्रोफेसर बनकर आये है। सौ चन्द्रा क धर्मभाइ है।' श्री चोपड़ाजी का हमारे परिवार मे घनिष्ठ परिचय रहा। श्री चौपड़ाजी क साथ मेरे पूज्य बाबासा श्री पन्नालालजी भसाली ने जैन श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसघ की खूब सेवा की। बाद म सैद्धान्तिक मतभेद के कारण तेरापथ धर्मसघ म विद्रोही हो गये थ परन्तु चौपड़ाजी स उनके सम्बन्ध पारिवारिक एव घनिष्ठ बने रहे। श्री चौपड़ाजी का भी छलाणीजी की तरह ही खद्दरधारी सौम्य सरल एव उच्च आदर्शों से प्रेरित ध्येयनिष्ठ जीवन था। जिनकी तेरापथ धर्मसघ की सेवा की परम्परा ही बन चुकी है। पुन श्री गोपीचन्दजी व तीसरी पीढ़ी मे श्री रतनलालजी धर्म सघ की सेवा म लगे हुए है। श्री चोपड़ाजी ने उस समय कहा था 'अपनी योग्यता का उपयोग समाज के लिये होना चाहिये।'

विनोबा, जयप्रकाश के ग्रामदान आन्दोलन के सन्दर्भ म खादी मन्दिर के अध्यक्ष श्री रघुवरदयालजी गोइल मत्री श्री सोहनलालजी मोदी एव श्री छलाणीजी की अगुवाई में दियातरा मे ग्रामदान सम्मेलन एव कार्यकर्ता शिविर का आयोजन हुआ था। सम्मेलन का स्थल छलाणीजी द्वारा निर्मित विद्यालय भवन था। इसमे सभाग के सर्वोदय एव खादी कार्यकर्ता पूरे उत्साह से सम्मिलित हुए थे। बीकानेर जिलादान का कार्यक्रम यहा बनाया गया था। इस सम्मेलन मे बाबू रघुवरदयालजी गोइल की कार म ही दियातरा उनके साथ ही जाने का अवसर मिला। यह सम्मेलन श्री छलाणीजी की प्रेरणा, प्रेम और सर्वोदय विचार मे उनकी आस्था का परिणाम और प्रमाण था।

वर्ष 1977 म जनता पार्टी शासन के दौरान ग्रामो मे आर्थिक स्वावलम्बन एव समग्र विकास के लिये व्यावहारिक योजना वास्तविक ग्रामीण परिस्थितियो मे ही विचार करने के लिय खादी ग्रामोद्योग बोर्ड क अध्यक्ष, स्वतन्त्रता सेनानी सर्वोदयी नायक श्रद्धेय श्री गोकुल भाइ भट्ट की अध्यक्षता म एक बैठक श्री छलाणीजी के धुरान (दियातरा) स्थित खेत म गोइल कुटीर म बुलाई गई थी जिसम श्री सोहनलालजी मोदी, विधायक श्री रामकिसनदास गुप्ता के साथ इस बैठक में

श्री छलाणीजी ने मुझे भी आमन्त्रित किया था। सबका छलाणीजी का आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य तो मिला ही, साथ म दुष्काल की चपेट म रहने वाले इस क्षेत्र की यथार्थ परिस्थितियो का ज्ञान भी श्री छलाणीजी से मिला। उन्होन अपने खेत म किय प्रयोगा बीजा उत्तम नस्ल के गाय बछड़ा व स्थानीय साधन सामग्री व शिल्प स उत्पादन का प्रत्यक्ष दर्शन कराया। उस समय उन्हाने उनके द्वारा उत्पादित उच्च गुणवत्ता वाले काले बीजा के मतीरा का आस्वादन भी कराया था। मतीरा के बीज जापान से मगाकर इस मगरा भूमि मे उन्हाने प्रयाग किया। कम पानी म ज्यादा उत्पादन के लिये मोर्वी (गुजरात) स एरण्ड के बीज मगाकर खेत म लगाकर उत्पादन के साथ खेत की बाड़ क रूप म सुरक्षा का प्रबन्ध किया।

श्री छलाणीजी म परम्परा और आधुनिकता के तार्किक वैज्ञानिक समन्वय का अप्रतिम विवेक था। उन्हाने किसी भी बात को बिना प्रयोग किय स्वीकारा या नकारा नहीं। उन्होने सारे प्रयोग अपने स्तर पर किये। सुधार स्वय व स्वय के घर परिवार से प्रारभ किये और प्रयोग व अनुभव से सिद्ध निष्कर्ष निकाले जा सभी के हितार्थ उपलब्ध कराए।

मुझे उनके यहा पारिवारिक प्रसगा शादिया सभा सस्था की बैठको एव सार्वजनिक आयाजना म दियातरा और बीकानेर म सम्मिलित होने के खूब अवसर मिल। पुष्पा व ऋता की शादिया के अवसरा पर आर्शीवाद एव परस्पर परिचय के समारोहा के सयाजन का दायित्व मुझे दिया। श्री मूलचन्दजी नौलखा दियातरा के निवासी और छलाणी परिवार के घनिष्ठ सम्बन्धी है। उन्हाने बताया कि परिवार के प्रसगो के जब आमत्रणो की सूची बनती है श्री छलाणीजी श्री गोइलजी के साथ आपका (धर्मचन्द) नाम पहले स्मरण करते है। वे जब बहुत अस्वस्थ थे छाती मे कफ बहुत था छलाणी मिल म बीकानेर आकर रहे। मुझे स्मरण कर बुलाया होम्योपैथिक दवा देने के लिये। मने दवा दी परन्तु यक्ष्मा मे दवा काम नही आ सकी।

उनकी डायरी मे 27 11 75 को लिखा है— धर्मचन्दजी के भेजे पेन म स्याही भर कर लिखना शुरू किया। यह मेरे प्रति उनके अतीव प्रेम की अभिव्यक्ति है। मरे भाइयो का मोर्वी मे एबोनाइटपेन का कारखाना था। वे यही पेन प्रयोग म लेते थ। मेरे स पेन मगवाते भेट कभी नहीं लेते, उसके दाम मुझे देते, म लेना नही चाहते हुए सकोच करते हुए भी उनको मना नहीं कर सकता था।

वे तो सदैव सबको देते रहे, किसी से लेने का नाम नही लिया। देकर ही खुश होते। बदले म वे दिल ले लेते थ।

मुझे स्मरण आता है जिस कुटीर म श्री गोकुल भाई भट्ट विराज थे म भी उनके पास बैठा था। उस कुटीर के प्रागण की दीवार की लिपाइ पुताइ के साथ सुन्दर

माण्डणा किया हुआ था। जब भी कोई प्रसग होता, स्वजन स्नेही अतिथि आते, वे मे सफाई सजावट मे माण्डण करवाते और रात्रि मे अच्छे भजन गायन का कार्य रखवाते। उस कुटीर के आगन की दीवार पर बड़े बड़े अक्षरो मे उपनिषद् का वाक्य लिखा था।

ईश्वावास्य ईद सर्वम् त्येन त्यक्तेन भुजीथा

श्री गाकुल भाई ने कहा यह अपूर्ण है। इसका अगला अश है---

मा गृध कस्यस्विद् धनम्

किसी के भी धन की लालसा न रखू।

महात्मा गाधी के साध्य और साधन की शुद्धता और एकता के मूल सिद्धान्त का दार्शनिक आधार यह ईशापनिषद् का मत्र है। श्री छलाणीजी ने इस के इस अश का भी मानस पटल मे अकित और जीवन मे घटित किया। विज्ञापन क नही किया। आत्मगोपन किया। श्री छलाणीजी का सादा जीवन व्यवहार शु साध्य और साधन की शुद्धता एव अपने धन साधन को सर्वार्थ हित साधन का स समर्पित अनुपम उदाहरण है।

गाधीजी के दर्शन का अवसर मुझे नही मिला। उनके जीवन दर्शन और व को यत्किञ्चित जानने का प्रयास किया। मुझे बापूजी श्री भैरूदानजी के सम्पर्क अ सान्निध्य का सौभाग्य मिला। मुझे उनमें गाधी के जीवन्त दर्शन होते है।

जीवन्त गाधी बापूजी को प्रणाम।

गरीबो के मसीहा

■ श्रीमती तारादेवी बाठिया ■

श्री भैरूदानजी छलाणी सादा जीवन एव उच्च विचार के प्रतीक थे। वे बहु मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। हर एक गरीब की कठिनाई सुनते अपनी तरफ मदद कर उस की समस्या हल कर देते थे। जिन गरीबो के गाव मे खेती व काम ध नही होता उन की रोटी रोजी के साधन के लिए अपने खेत पर काम पर रख लेते तथ अन्यत्र उस के लायक काम दिलाने की व्यवस्था कर देते थे। किसी को भूखा प्यास नही सोने देते। इस प्रकार गरीबजन उन्हे अपना मसीहा मानते थे।

स्त्री शिक्षा मे उनकी गहरी रुचि थी। उन्होने अपने परिवार की सभी लड़किय को उच्च शिक्षा दिलाई। दियातरा एक छोटा सा गाव वहा कोई कालेज आदि

नहीं था अपनी प्रगाढ़ रुचि कुशल व्यवस्था स सब को उच्च शिक्षा की अधिकारणी बना दिया। आज उनकी लड़की ग्रेजुएट होने के कारण अपने पैरा पर खड़ी है। इस का श्रेय आपको ही है।

जब जमाना अच्छा होता खेत म फसल अच्छी होती काकड़िया मतीरे खूब होते तब हम पत्र देकर बुलाते और बड़े प्रेम से वहा की चीजा का रसास्वादन करात और उससे आप बहुत ही आनन्दित होते। वो आनन्द के क्षण याद कर हम आज भी आनन्द विभोर हो उठते है। उनका प्रेम मेरे मानस पटल पर अभी भी अकित है। जब वे वृद्ध हो गये टाग के फ्रैक्चर के कारण चलने फिरने म अशक्त हो गये तब मोटर म बेठकर मेरे से मिलने आए। मैं भी नीचे जाकर मिली इससे बहुत ही आनद मिला।

व कर्मठ और गहरी सूझबूझ के धनी थ। जिस काम को हाथ म ल लेते उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। अपने परिवार मे उनका सम्मान और प्रेम बहुत था। पूरा छलाणी परिवार जैसा वो कहते थे वैसा ही करते थे। आप गाधीजी के पक्षधर थे हमेशा खादी पहनते थे। खादी मदिर के अध्यक्ष रहे थे। वे सम्प्रदाय के पक्षधर नहीं थे वे राम कृष्ण, बुद्ध महावीर सब के ही अनुयायी थे। हर एक देवी देवता मे विश्वास करते थे। वे कला के प्रेमी थे। अपने घर म तरह तरह के माडणे मडवाते। बूर स सजावटी घमले बनाते। ग्रामीण लोककला और सस्कृति का मनमोहक दृश्य घर की सजावट में अपना श्रेष्ठ स्थान बनाये रहता था। ऊखली, मूसल, घट्टी को बड़े सुन्दर ढग से सजा सवार रखा था। गृहशोभा देखते ही बनती थी। सजा सुथरा गृह सुशिक्षित बच्चे घर का अनुशासन देखते ही मन प्रभावित होता था। उनका परिवार एक आदर्श परिवार है। उन का परिवार उनके पदचिह्नो पर चले यही आशा है।

सच्चे समधी

▪ चनणमल गोलछा ▪

सेठ भैरूदानजी छलाणी का नाम तो बहुत वर्षो से सुन रखा था एव उसक साथ साथ उनकी ख्याति एव सम्पन्नता भी पर उनस परिचय और सम्बन्ध होने के बाद उनके गुणो के जो अनुभव हुए उन्हे कलम म कैद कर देना भी दिन मे दीपक दिखाने की सी बात है। फिर भी दो शब्द लिख देना कोई दोषपूर्ण बात नही है।

मेरी बड़ी लड़की भवरी जब विवाह योग्य हुई तो मैने मेर झझू निवासी बहनोई श्री रामबक्शजी सेठिया से योग्य वर के लिये पूछा तो उन्होंने श्री भैरूदानजी के लड़के (श्री भवरलालजी) का नाम बताया। सेठ साहब की सम्पन्नता की बात ज्ञात

थी तो मैने उन्हे कहा कि उनके साथ हमारा मेल कैसे बैठेगा। तो बहनोईजी ने कहा कि वे मेरे ममेरे भाइ है एव सीधे सरल है। सम्पन्नता की बू तक नही है। मिल कर तो देखे।

स 2004 मे उनके छोटे भाइ पाचीलालजी के लड़के कुदनमलजी की शादी गगाशहर के डागा टिकमचन्दजी की लड़की मे थी। ये (डागा) भी हमारे रिश्ते मे थे। अत उस मौके पर मै एव भाई करनीदानजी उनसे मिलने गये। उन्हे देखकर हम अवाक् रह गये। कहा सम्पन्नता की ख्याति और कहा एक सीधा सरल व्यक्ति। उस समय उनके चाचाजी श्री अमोलखचन्द जी सेठ उनके साथ थे। भैरूदानजी अमोलखचदजी सा के प्रति पूर्ण समर्पित रहते थे। सम्बन्ध आदि की बात प्राय उन्हीं की अगुआई में होती थी।

अत हमने सम्बन्ध की बात कही तो उन्होने सिर्फ इतनी ही बात कही कि बरात ऊटो पर आयगी सो यह व्यवस्था हो सके तो बात सेठ श्री रावतमलजी बैद से करे। रावतमलजी सा भैरूदानजी सा के श्वसुर थे। आगे बात बैदजी से की और थोड़े दिनो में ही सगाइ की बात पक्की हो गई।

हमारी जो धारणा छन्नाणीजी के बारे मे थी वह ठीक उससे उलटे, नम्र व सज्जन निकले। वे सम्पन्नता, सरलता और समर्पण की प्रतिमूर्ति थे।

'सगा सग की जड़'—यह कहावत बहुत प्रचलित है, बाकी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण श्री भैरूदानजी सा थे।

बात यह है कि मेरी लड़की की शादी होने के बाद उन्हे किसी तरह पता लगा कि कलकत्ता के मूलचद तोलाराम का हम पर आठ हजार रुपय का कर्ज है। उन्होने ये रुपय हमे बिना बताये अपने साले भैरूदानजी बैद द्वारा मूलचन्द तोलाराम का दे दिये। अत कुछ समय बाद जब हम उन्हे रुपये लौटाने गये तो उन्होने बताया कि आपके ये रुपये तो भैरूदानजी सा ने जमा करा दिये।

दूसरी घटना मेरी तीसरी लड़की की शादी के समय की है। इस शादी से पहले दूसरी लड़की की शादी तथा मा बाप के कारज पर हम काफी खर्च कर चुके थे। सेठ साहब ने सोचा कि इस समय हमे पैसो की आवश्यकता हो सकती है। अत शादी से पहले सहायता के लिये अपने भाइयो को लेकर आये और रुपये लेकर भी। मुझे रुपये दिये तो मैने कहा कि व्यवस्था है, तो भी जोर करके रुपये थमा दिये एव जितने समय वे रुपये हमारे पास रहे उसका ब्याज नहीं लिया।

मेरा बड़ा लड़का सतोक देश मे पढ़ता था। जब माताजी पिताजी का देहान्त हो गया और हम भाई भाइ भी अलग हो गये तो हमारा दिसावर जाना भी तय हो गया। अत लड़के की पढ़ाई की समस्या सामने आई। भैरूदानजी साहब ने लड़के को अपने यहा रख लिया और पढ़ाया हालाकि उस समय मेरी लड़की (उनकी पुत्रवधू) का देहात हो चुका था। फिर भी वही प्रेम और वही आत्मीयता।

मेरी पाचवीं लड़की की शादी के समय सेठ साहब बगाल के दिनहाटा मुकाम मे थे। कुछ अस्वस्थ भी थे पर शादी के समय सपरिवार सीधे बगाल से हमारे घर पधारे। उनका अपनत्व निःस्वार्थ चिर और असीम था।

सच्चे समधी का उदाहरण और क्या हो सकता है।

प्रेरणा–पुञ्ज

■ सन्तोकचद गोलछा ■

मै अपने आप को बहुत गौरवान्वित अनुभव करता हू कि मुझे श्री भैरूदानजी छलाणी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। हालाकि मै दो वर्ष के लिए ही इनके पास दियातरा मे रहा। मेरे माताजी पिताजी बगाल जलपाईगुडी रहते थे इसलिए उन्होने मुझे अपने पास दियातरा रख लिया। भैरूदानजी मेरी सबसे बड़ी बहन के श्वसुर थे। यह तो सभी जानते है कि बच्चो का मन एकदम साफ होता है। बचपन मे जो सस्कार बालक के मानस पटल पर अकित होता है वह सदैव रहता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। वो सदैव ही मुझे पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करते रहते थे। हालाकि मै दो वर्ष ही उनके पास रहा फिर भी पत्राचार के माध्यम से वे मुझे प्रेरणा देते रहे। एक तरफ इजीनियरिंग मे प्रवेश लिया दूसरी तरफ मेरे पिताजी अस्वस्थता के कारण राजस्थान चले आये इसलिये दुकान के काम का सारा बोझ मुझ पर आ पड़ा। एक दफा तो ऐसी नौबत आ गयी कि पढ़ाई करू या दुकान ही सम्भालू। ऐसी विषम परिस्थिति मे जिन लोगो ने मुझे पढ़ाई जारी रखते हुए दुकान सभालने की प्रेरणा दी उनमे भैरूदानजी भी एक थे। समय समय पर वो जलपाईगुड़ी आ कर मेरा उत्साहवर्धन करते रहे। अतिम बार जब वे दिनहटा से विदाई लेकर राजस्थान जाने वाले थे तब मेरे अनुरोध पर दो घटे के लिये वो जलपाईगुड़ी सपत्नीक आये। उस समय मेरी परीक्षा होने वाली थी। साथ ही मेरी छोटी बहिन शशि का विवाह होने वाला था। मैने उनसे कहा हो सकता है कि मै परीक्षा के कारण शशि के विवाह मे ना पहुच पाऊ। इस पर उन्होने कहा ठीक है आप पढ़ाई करे मै जाऊगा। हुआ भी यही मै परीक्षा के कारण नही जा पाया पर भैरूदानजी अपने वादे के अनुसार सपत्नीक विवाह मे शरीक हुए। जबकि उस समय अधड़ के कारण बीकानेर नोखा मार्ग बाधित था।

भैरूदानजी गाधीजी के व विनोबाजी के सच्चे अनुयायी थे। आजीवन उन्होने खद्दर के वस्त्र धारण किये। वे बहुत ही सुलझे हुए मृदुभाषी अल्पभाषी दूरदर्शी, परहितैषी दयालु व्यक्ति थे। वे अकाल मे मनुष्यो के साथ साथ पशुओ की भी बहुत चिता करते थे। न जाने कितने ही लोगो की उन्होने गुप्त रूप से सहायता की थी।

उनके बारे मे कुछ भी कहना सूरज को रोशनी दिखाना है।

महामना

■ श्रीमती वसन्ती भसाली ■

एक तरह से तो म उनकी कुछ नहीं होती थी परन्तु पूज्य श्री भेरूदानजी और उनके परिवार ने ऐसा बाध लिया जैसे उनके ही परिवार की सदस्य हू, वह भी ऐसी कि उनका बापूजी के सिवाय कोई अन्य सम्बोधन मुह से निकलता ही नहीं।

वास्तव म मेरी शादी से पहले मेरी ननद सुन्दर बाई से श्री फूसराजजी के साथ सगाई हुई थी। शादी की निश्चित तिथि 17 मई, 1967 के कोई आठ दस दिन पूर्व सम्बन्ध तोड़ देने की अप्रत्याशित स्थिति बन गई था। तब पूज्य श्री भेरूदानजी अपने किसी सम्बन्धी के साथ मेरे पीहर मे मेरे बाबासा श्री रिखबराजजी कणावट के पास सम्बन्ध के प्रयास म जोधपुर आये थ। तब प्रथम बार उनको देखा। सर्वोदय, शराबबन्दी एव खादी के कार्यकर्ताओ के नाते मेरे बाबासा तथा बापूजी की मित्रता थी। वे उनकी सरलता, सादगी, सेवा, समाज सुधार के गाधीवादी रचनात्मक कार्यो स बहुत प्रभावित थे।

मेरी शादी के बाद मेरे पति देवर, ननद और मै परिवार सहित पढ़ाई के निमित्त से 1967 68 मे जयपुर रहे। उसी समय श्री फूसराज जी और चन्द्रा बाइ भी अध्ययन के लिए जयपुर म बापू नगर मे रहे तब उनसे परिचय हुआ। सगाइ सम्बन्ध टूटन के सन्दर्भ में मन म बहुत सकोच झिझक स्वाभाविक रूप से हम सब परिजनियो क मन म रहती थी लेकिन श्री छलाणीजी का जब भी जयपुर आना होता तब हमारे परिवार को समालन अवश्य आते। उनके मन म सहजता और स्नेह का भाव ही सदैव रहा। ऐसा होना सामान्य व्यक्ति मे ता सभव नहीं, किसी महामना मे ही सभव हैं। श्री छलाणीजी महामना थे। उन्होने सगाइ टूटन को भी आत्मीय सम्बन्ध बनाने का निमित्त बना लिया।

सयोग से 1969 मे मेरे पति (डा धर्मचन्द्रजी) की नियुक्ति बीकानेर म ही डूगर महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप मे हो गई, तब छलाणी परिवार स सम्बन्ध प्रगाढ स प्रगाढ़तर ही होते रहे। 1969 70 म मुझे बी ए की पूरक परीक्षा देनी थी। मेरा बेटा किराट अगस्त म हुआ था। बीकानेर म अन्य कोई सम्बन्धी नहीं था। श्री फूसराजजी की प्रेरणा और हिम्मत देने तथा सौ चन्द्रा बाई के सहयोग से बी ए की परीक्षा दे सकी। मै बी ए हो गई, यह श्रेय उन्हीं का है।

1970 71 म सौ चन्द्रा बाइ को पीएच डी की उपाधि का शोध कार्य करने के लिए बीकानेर म रहना हुआ। रामड़ी चौक म राजाजवी बिल्डिग किराये पर ली तब साथ ही रहने का उनका आग्रह ऐसा था कि गर्मी की छुट्टियो मे हमारी अनुपस्थिति मे ही श्री फूसराजजी सारा सामान उस मकान मे ले गये। हम वहा साथ रहे। कइ महीनो तक खाना ...ार ही नहीं करने दा। पूज्य बापूजी और मा के साथ रहने का पूरा

अवसर मिला। तब मै उनका खानपान रहन सहन और बात व्यवहार देखकर चकित रह गई। इतनी सम्पन्नता के बावजूद गाव म रहना खेती करना गाया को पालना। कोई गर्व गुमान नहीं कोई दिखावा नही अपने पराये का कोइ भेद नहीं।

अपनी पुत्रवधू (हमारी ननद सो चन्द्रा बाई) की पढ़ाई के लिए ही इतनी सारी व्यवस्थायें की। वे ता पढ़ाई म व्यस्त रहती। घर, परिवार और अतिथिया का आना तो लगा हो रहता। पूज्य मा श्रीमती जठीदवीजी ही सबकुछ सभालती। ऐसे सास ससुर भाग्यशाली औरत को ही मिलते है। उनके अ शीर्वाद से चन्द्रा डा चन्द्रा छलाणी बन गई और प्राध्यापक भी।

बीकानेर म रहते हमे तीस वर्ष हो गये। जब भी पूज्य बापूजी का बीकानेर आना होता—वुलेन मील खादी मन्दिर या गगाशहर—हमारे यहा बिन्नाणी बिल्डिंग म अवश्य आते। मेरे सास ससुर परिवार तथा मेरी ननद सुन्दर बाई एव व्यापार व्यवसाय और स्वास्थ्य के हालचाल पूछते। वे अपने पीने का पानी साथ लाते जो कोलायत का होता था। मोर्वी (गुजरात) म स्याही भरकर लिखने वाले विशेष प्रकार के एबोनाईट के फाऊण्टेन पन का कारखाना था। वे हमेशा वहीं से पेन मगवाने का कहते और उन्ही पेनो को काम लेते। हमे बहुत प्रसन्नता होती। उनका लगाव बहुत गहरा था। उसके फलस्वरूप फूसराज जी और चन्द्रा बाई स तो सम्बन्ध उन्हाने बनाया ही पूरे परिवार से ही हमसे ऐसा प्रेम सम्बन्ध रखा है कि उसका शब्दा मे बाधना कठिन है। उन्होने कभी महसूस नहीं होने दिया कि हमारे द्वारा सम्बन्ध तोड़ा गया उसकी खराच भी कहीं है। पूज्य श्री छलाणी जी की उदारता और आत्मीयता से सारा परिवार सस्कारित है।

1975 म पुष्पा बाई की शादी म दियातरा गई। उस शादी का आशीर्वाद समारोह अपूर्व था। पूरा मच सजा स्नेह सम्मेलन हुआ। सभी का परिचय मिलन भावपूर्ण वातावरण मे हुआ जो अन्यत्र नहीं देखा। उनके यहाँ शादिया पारिवारिक प्रसगा और गॉव के सार्वजनिक कार्यक्रमा म सम्मिलित होना जरूरी ही होता। चौमासे म खेत पर जाने और प्राकृतिक परिवेश ओर बापूजी के स्नेहमय आतिथ्य का आनन्द अविस्मरणीय है। ग्राम्य जीवन कितना आनन्दमय सुन्दर और सुरुचिपूर्ण होता है परिवार म सस्कार कितने सुन्दर होते है—इन सबका प्रत्यक्ष अनुभव उनके यहा यथार्थ और स्वाभाविक रूप मे होता है।

श्री भैरूदानजी एव श्रीमती जेठी देवीजी से बापूजी और मा क रूप म मुझ और परिवार का मिला स्नेह और सान्निध्य हमारी अमूल्य निधि है। उनका प्रेम कवल परिवार सम्बन्धियो तक सीमित नही था वह पूरे गाव और जगत के जीवा के प्रति समान रूप से था।

उनका वेश साधु का नहीं परन्तु वृत्ति ओर व्यवहार स वे गृहस्थ सन्त ही थे।

बापूजी के दर्शन से तृप्ति होती थी। उनके स्मरण से शान्ति का सचार होता है। उस महामना का नमन।

दयामूर्ति काकाजी

■ धूड़चद वेद ■

बचपन में म बहुत अस्वस्थ रहता था। मेरे 3 भाई व मा चल बसे थ। इससे पिताजी घबराते थे। एक बार हम गाव दियातरा गय ता पिताजी ने काकाजी से कहा कि धूड़चद का स्वास्थ्य ठीक नही रहता मुझे चिता रहती है। काकाजी न कहा कि गाव म गाव क ही भाणजे सिद्ध पुरुष बाबा नरायणदासजी आय हुए है। उनके साथ मेरा अच्छा सम्पर्क है। अत हम उनके पास चलकर आशीर्वाद ल। पर पिताजी को कुछ कम जच रहा था। पर काकाजी जोर दकर उन्हे बाबाजी के पास ले गय एव मुझे उनकी गाद म डालकर कहा कि बाबाजी यह मेरे मोसेरे भाई का एकमात्र लड़का बचा है, यू मेरा भाणजा भी है सा इस गाव का भाणजा है। अत आप इसे आशीर्वाद द। बाबाजी न थाड़ा ध्यान धरकर मेरे शरीर पर सब तरफ हाथ फेर कर पिताजी को सौपते हुए कहा कि यह आप का पुत्र आपका पूरा सन्मान करेगा। लम्बी उम्र पायेगा। बड़े बड़े कार्य करेगा। आपका कोई तकलीफ नहीं देगा। यह मेरा आशीर्वाद है। मन भैरूदानजी की यह बात रख दी। आप भी इसे अच्छा आशीर्वाद द एव इसके कभी कोई तकलीफ हो ता मेरे पास बिना सकोच आय।

इस आशीवाद क फलस्वरूप आज मेरे पास कोल्ड स्टोर है। सभी लड़के काम धन्धा मे लग हुए है। 15 ट्रको का मालिक हू। यह सब उन तीन जना—बाबा नरायणदास जी पिताजी एव काकाजी के आशीर्वाद का ही फल है।

श्री भेरूदानजी काकाजी मेरे पिताजी के मासेरे भाई थ। दानो मे खूब घनिष्ठता थी। पिताजी बड़े थे। पिताजी का व बहुत सन्मान करते थ एव यहा दिनहटा आते तो दिन मे दो एक बार मिलने आते थे। दिनहटा म अपनी दुकान खरीदने मे पिताजी की पूरी सलाह लेकर काम किया। उनका अन्त करण दया से परिपूण था एव भविष्य की रूपरेखा सोचकर ही काम करते थे एव बड़ो की सलाह को शिरोधार्य करते थे। यहा जब दुकान लेन की बात चली तो पिताजी ने सलाह दी कि अच्छी जगह लेओ ताकि भविष्य म बच्चो के काम आय। उन्हाने उसे शिराधार्य कर कम कीमत की जगह न लेकर अधिक कीमत की जगह खरीदी।

यहा खेती की जमीन खरीदने से पहले हमारे यहा आकर किसाना से सलाह लेकर खरीदी। यह जमीन कम कीमत मे ही मिल रही थी किन्तु उन्होन अधिक पैसे देकर इसलिय खरीदी कि गरीब जरूरतमद का दबाना नही चाहिये। इससे उनकी दयावृत्ति का परिचय मिलता है।

काकाजी (श्री भैरूदानजी) की इच्छा गरीब लोगा का पीने का पानी मुहैया कराने की रहती। यहा आस पास गाव मोहल्ले मे पानी का अभाव था जिसकी पूर्ति

ट्यूब वेल द्वारा हो सकती थी। इस बारे मे वे मेरे पिताजी से सलाह करने आते थे। पिताजी ने जहा जहा अति आवश्यकता बताई वहा वहा उन्होंने कई ट्यूबवेल बिठाये थे।

उनका पिताजी के साथ कितना अपनत्व था यह बात इसमे ज्ञात होती है कि उनकी ससुराल वही होने के बावजूद भी घर म थोड़ी चीज की भी कभी जरूरत पड़ जाती तो यही कहते कि यह वस्तु भाईजी नथमलजी के वहा से लाओ और कही से नहीं लाना।

काकाजी की दयावृत्ति की एक झलक इस बात म है कि एक बार मेरे काका नानाजी मेघराजजी ने अपना धन तीन मौसियो म बाट दिया जिसमे पाना मासीजी के रुपये पिताजी ने काकाजी को सोपे। उस समय ब्याज दर चार आना सेकड़ा थी पर वे पाना मासीजी को आठ आना सैकड़ा ब्याज देते रहे। पिताजी ने पूछा तो कहा एक तो इनको कोई सहारा नहीं दूसरे मेरे रिश्ते म बहिन भी है। कम से कम 20 साल तक दुगुना ब्याज देते रहे।

साधारण की असाधारणता

▪ रतनलाल चोपड़ा ▪

प्रत्येक जीव जीवन जीता है। उसकी अपनी क्रिया चलती रहती है। चाहे वह स्वाभाविक क्रिया म जीवन जीता है या विपरीत क्रिया म। आज विपरीत क्रिया में चलने की होड़ चल पड़ी है। हो सकता है यह होड़ अनादि काल से चल रही हो। इसलिए अखबारो, पत्र पत्रिकाओ मे विपरीत क्रिया म चलने वालो की प्रमुखता देखने को मिलती है।

एक समय था जब स्वाभाविक क्रिया को प्रोत्साहन दिया जाता था। उनकी चर्चा होती थी। उसी शृखला की श्रेणी म आने वाले व्यक्तियों के जीवन को जानना कठिन हो रहा है। यह एक दुर्लभ प्रयास कुछ व्यक्तियो के हाथो म है। एक साधारण व्यक्ति जिनका सोच कितना असाधारण था छोटे से गाव म रहते हुए भी कितने महान् व्यक्तियो के दिल म एक अमिट छाप छोड़ गए यह वर्णनातीत बन गया। वह व्यक्ति देश के सूखे क्षेत्र राजस्थान की बीकानेर रियासत मे कोलायत तहसील के दियातरा गाव का वासी था। माता पिता से प्राप्त सस्कारो का वहन करते हुए आसाम के समृद्ध क्षेत्र तेजपुर पहुचा।

व्यापार मे प्रामाणिकता सहयोगियो के प्रति सहानुभूति एव देशप्रेम का बीज निरन्तर विकसित होता गया।

स्वाधीनता सग्राम नमक आन्दोलन आदि गाधीजी के विचारो ने उनकी सोच को प्रशस्त किया। गाधीजी, विनोबाजी नहरूजी आदि कार्यकर्त्ताओ के समीप रहने का जो उन्हे अवसर मिला कार्य को जीवन का अग बनाने मे भी कारगर बना।

राजस्थान मे भी आप श्री रघुवरदयालजी गोयल आदि अनेक स्वतन्त्रता सग्रामी व्यक्तियो के सहयोगी बने रहे। शिक्षा के क्षेत्र मे महिला विकास के क्षेत्र म नशामुक्त ग्राम बनाने, कृषि विकास एव गो रक्षा आदि अनेक कार्यो को आप पूरी जिम्मेदारी के साथ करते रहे।

इस सारे इतिहास को उजागर करने की अपेक्षा इसलिए बढ़ जाती है कि देश समाज एव व्यक्ति के निर्माण मे सही दिशा दर्शाने वाले आदर्श जीवन जीने वाले व्यक्तियों को उनके जीवन से प्रेरणा मिलती है।

आपका जीवन देश के निर्माताओ से कम नहीं था। जोड़ तोड़ करना नही सीखा था। सही एव नेक सलाह देकर जन जन के कल्याण मे अपने जीवन को सार्थक बना लिया।

ऐसी पुण्य आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धाजली।

बापूजी

■ कमल पुगलिया ■

हम घर परिवार के लोग सभी उन्हे बापूजी कहा करते थे। हम लोगो ने उन्हें जीवनभर खेत और खेती से जुड़ा हुआ पाया। हम प्रसन्नता और गौरव इस बात पर है कि समाज म ज्यादातर सेठ साहूकार लोग या शहरी जीवन के लोग खेत और खेती की जमीन खरीद कर उसे अपना फार्म हाउस बनाते है जो उनकी अधिक सम्पत्ति के प्रदर्शन की भावना का परिचायक होता है। लेकिन बापूजी ने शहरी जीवन की सब सुविधाओ और सामर्थ्य सभावनाओ के होते हुए भी खेत और खेती को अपना स्वधर्म समझा। स्वय खेतो मे काम किया, स्वय खेती के प्रयोग किये और दूसरो के भरोसे खेतो को छोड़कर अपना लाभाश लेकर खेती को मात्र अतिरिक्त आय (साइड इनकम) का स्रोत नहीं बनाया।

योजनाबद्ध खेती कार्य

कृषि बापूजी के जीवन का आवश्यक एव अभिन्न अग थी। व ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ करन के लिए वैज्ञानिक एव व्यवस्थित पद्धति स कृषि विकास म सलग्न रह। भूमि सुधार, उन्नत बीज सिचाई की व्यवस्था सही ढग से समय पर बुवाइ खाद आदि के मगरा क्षेत्र के सर्वप्रथम सजग प्रयोगक्ता थ। मेड़बन्दी सिचाई के लिए कुआ ट्रेक्टर से जुताई बुवाई करने वाले प्रथम वणिक कृषक थ। उन्हाने ट्रेक्टर के अधाधुध प्रयाग को अवैज्ञानिक व अहितकर पाया।

वे पूरी व्यवस्था तथा योजना के अनुसार खेती की तैयारी करत थ तथा पूरी जमीन की बुवाई की व्यवस्था करते थे। वे कहते थ कि थोड़ी भी जमीन है तो हम उसे बानी चाहिये अन्यथा इक्कीसवी सदी म हम लोगा को एक समय खाना खाने की आदत डालनी पड़ेगी अन्यथा एक अरब आबादी को अन्न के लाले पड़ेगे। बापूजी खेती के काम को अपनी व्यावसायिक दृष्टि से तो करते ही थे लेकिन उनकी व्यावसायिक सोच के साथ एक राष्ट्रीय सोच भी जुड़ी हुई थी इसका अन्दाज हम उनकी बाता से लगता था।

मैने उनको खेती क काम को खूब परखते देखा। वे अपने नाक म सोने की नाथ पहनत थे वैसी ही ग्वार फली वे बोते थे जिससे बीज पेदा होता उसकी पूरी छटाई करत। इतनी मेहनत करने क बाद जो फली पैदा हाती बहुत ही उच्च गुणवत्ता की हाती थी। इसे मुरकिया ग्वार कहते है। खाद खराइ तथा पानी को रोककर कुशलता पूर्वक गेह, चना दाला आदि की फसले अच्छी से अच्छी प्राप्त करते थे। काला ग्वार ता सेकड़ो बीघा म वे पूरी योजना के साथ बोया करते थे। इस ग्वार की किस्म उन्होने खुद चयन करके तैयार की थी।

अच्छे कृषि सलाहकार

बापूजी के विचार कृषि कौशल के बारे मे बिल्कुल साफ थ। खेती के कार्यक्षत्र म उनके अनुभव स्वानुभूतिपरक थ। वे मगरा क्षेत्र म प्रमुख कृषि पडित माने जाते थ। वे गाव मे हर व्यक्ति का खेती के लिए सलाह देते थ। गाव का किसान कड़ी मेहनत करता है, परन्तु बीज, खाद तथा अन्य आवश्यक जानकारी एव साधना के अभाव में कम उत्पादन ले पाता है। जब जब खेती की कल्चर और उच्च क्वालिटी के बीज मगाने के लिए निर्मलजी को दिल्ली जयपुर भेजते तो बताते थे कि उन्होने पूसा बाजरी म भी कल्चर का प्रयोग किया था। बापूजी बताया करते थे कि ग्वार की बढ़िया फसल होने पर उसकी फलगट 400 मन तक हो सकती थी उस समय उसकी बिक्री दर 60 00 रुपया मन हुआ करती थी। इसकी बोवाई से किसान का खेती खर्च सन्तुलित बन जाता था। उनका कहना था कि किसान के लिए ग्वार की फसल रीढ़ की हड्डी के समान होती हे। उनका मानना था कि ग्वार ही पश्चिमी राजस्थान म

किसान को बचायेगा क्योकि यह फसल एक या दो वर्षा मे ही अच्छी हो जाती है तथा इसका दाना फली, फलगट सब काम आता है। उनके खेतो का ग्वार विशेष किस्म का होता था जो पूरे बाजार मे अपनी पहचान अलग ही रखता था।

कढ नाम के गाव के खेत मे उन्होने पहले कुआ बनाने की योजना बनाई। दुर्योग से वर्षा मे लापरवाही के कारण रुका हुआ पानी कुए मे जाने से 'धस' गया। एक बड़ा लोहे का कड़ाव उस कुए मे रह गया। उनकी इच्छा थी कि ओपन कुआ खुदवाया जाए परन्तु लोहे का कड़ाव फस जाने से उनकी इच्छा पूरी नही हो सकी। आर्थिक नुकसान काफी हुआ लेकिन खेत और खेती के मामले मे ऐसे नुकसान को वे अनदेखा कर देते थे।

खुले कुए की तीन सौ फुट खुदाई के बावजूद भी पानी बहुत कम मात्रा मे प्राप्त हुआ तो बोरिंग मशीन से नलकूप की खुदाई प्रारम्भ की। इस कार्य के लिए उन्होने जमीन मे पानी बताने वाले सुगनी के साथ ही भू गर्भ विशेषज्ञो की राय का भी उपयोग किया। अनेक कठिनाइया एव भारी खर्च होते हुए भी अतत उन्होने कुआ तैयार करवाया और सिचित खेती प्रारम्भ की। कृषि सबधी प्रयोगो मे लगे श्रम और धन को व्यय नही अपितु निवेश मानते थे। धुराले स्थित यह कुआ उनके दृढ सकल्प धैर्य हृदय और बुद्धि की गहराई का ही प्रतिरूप है।

सन् 1975 मे मेरा विवाह हुआ था उस समय इनके यहा दो ऊट थे। ऊट से खेती भी करते थे। उनकी दिनचर्या मे फुर्ती जबरदस्त थी। हम लोग सवेरे उठते तब तक तो वे ऊट गाड़ी पर बैठकर खेत देखने निकल जाते और वापिस आ जाते। कभी कभी भाणे के गाव व कढ खेत पैदल ही जाकर वापस आ जाते।

गाव के प्रति चिन्ता और चिन्तन

बापूजी की चिन्ता और चिन्तन का विषय हमेशा यही रहता था कि आज ग्रामीण व्यवस्था मे धन का सदुपयोग करने वाले उन भामाशाहो की जरूरत है जो गाव की ओरण और गाव के तालाबो को प्रदूषण से बचाये तथा ग्रामीणो को शहर की तरफ जाने से रोके। गाव के लोगो का पलायन नही हो तभी गाव का विकास होगा। इसलिए वे अपने अत समय तक पूरे गाव के होकर रहे। कहावत है— मोर ककर चुगकर अपना निर्वाह कर लेते है पर मगरा नहीं छोड़ते। मुझे यह सस्मरण लिखते समय इस बात का खेद है कि बापूजी का ससुराल कन्या गाव अब उजड़ गया है जहा कभी ओसवालो की बस्ती थी। मै आशा करता हू कि बापूजी के उत्तराधिकारी अपने पूर्वजो की परपरा को बनाये रखेगे और उजड़ने वाले गावो की रक्षा करेगे। उन्होने अपनी स्वय की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के माध्यम से उत्तम ढग से खेती पशुओ का विकास शिक्षा के प्रसार तथा सामाजिक सुधार द्वारा हमारे ग्राम्य गणतत्र की अवधारणा को पुष्ट किया।

बापूजी का मानना था कि उद्योग भले ही छोटा हो लेकिन उसमे ज्यादा से ज्यादा श्रम लगे। छोटे बड़े सभी उद्योगो का विकास राष्ट्र व ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के लिए जरूरी है। उनका विचार था कि महत्त्वपूर्ण उद्योग इस्पात और जहाजो का निर्माण तथा बिजली का काम आदि सार्वजनिक क्षेत्र करे तथा छोटे धन्धे ग्रामीण स्तर पर हो।

खादी कार्य

मैने अपने विवाह के बाद जब बापूजी का निकट सम्पर्क पाया तो आश्चर्यचकित हुआ कि दियातरा जैसे छोटे से गाव मे अपना सारा जीवन खेत और खेती मे बिताने वाला व्यक्ति देशभक्ति से भरा हुआ आजादी से सबधित कार्य कलापो मे शहरी गतिविधियो से भी जुड़े हुए थे। आसाम मे आजादी से पहले बापूजी पहले व्यक्ति थे जिन्होने खादी बेचने की खुली हिम्मत की थी।

बीकानेर के स्वाधीनता सेनानी श्री रघुवरदयाल गोइल के साथ खादी मदिर की स्थापना की। खादी के माध्यम से स्वाधीनता सेनानियो के कार्य मे सहयोग एव गावो के आर्थिक स्वावलबन और राजनैतिक सामाजिक जागृति का रचनात्मक कार्य किया। खादी मदिर के अध्यक्ष के रूप मे वर्षो तक कुशल नेतृत्व दिया। उनके कार्यकाल मे खादी उत्पादन लकड़ी व लोहा फर्नीचर चूना साबुन मसाला तेलघाणी पाटरी आदि का अपूर्व विस्तार हुआ। उस समय खादी कार्यकर्ताओ प्रबधको के मध्य सम्बन्ध बहुत मधुर रहे खूब प्रगति हुई। खादी मदिर ने राजस्थान की अग्रगण्य खादी सस्था के रूप मे प्रतिष्ठा स्थापित की। यह सब उनकी विश्वस्त वृत्ति और प्रेमाधारित प्रबधकीय कुशलता का ही परिणाम था।

लोकमान्य न्यायाधीश

उनकी मान्यता थी कि पूरा गाव समाज ही परिवार है। लोगो मे परस्पर प्रेम और सहयोग से ही उन्नति हो सकती है। परस्पर के झगड़ा मे थाना अदालत से बर्बादी और वैमनस्य ही बढ़ता है अत गावो के झगड़ो का निपटारा गाव मे ही हो जाना चाहिए। उन्होने दियातरा और आसपास के क्षेत्र मे लोकमान्य न्यायाधीश की भूमिका निभाई। आपसी झगड़ो का निपटारा वे कर देते थे वह सबको मान्य हो जाता था। इस कारण से लम्बे समय तक दियातरा थाने मे बहुत कम प्रकरण दर्ज हुए। परिणामत रियासती जमाने से चला आ रहा पुलिस थाना मात्र चौकी मे बदल दिया गया। यह उनकी न्यायबुद्धि सत्यनिष्ठा और लोकप्रतिष्ठा का द्योतक है।

दरिद्र व दलित के हितैषी

वे जातिगत ऊच नीच के भेदभाव के विरोधी थे। सभी समाजो के लोगो का समान आदर करते थे। विशेष रूप से मेघवाल नायक तथा आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े माने जाने वाले लोगो के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध प्रयास किया। दरिद्र

दलित समाज व नारी शिक्षा के प्रति उनके कायो के प्रमाण पचायत म मेघवाल को निर्विरोध सरपच बनाना, दियातरा गाव के विद्यालय तथा उनके घर की उच्च शिक्षित लड़किया व बहुए है।

गाधी विनाबा निष्ठा

बापूजी का जीवन दर्शन और दैनन्दिन का समूचा व्यवहार गाधी विनोबा के सर्वोदय विचार का वास्तविक उदाहरण था। ग्रामो के आथिक स्वावलबन एव सामाजिक उत्थान के लिए उन्होने अपने धन साधन शरीर एव बुद्धि का उपयोग कृषि, गो सेवा, खादी, शिक्षा के द्वारा सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय अत्यत ही नि स्पृह भाव से लोकेषणा से दूर रहकर किया। गाधी निष्ठा की वे जीवत प्रयोगशाला थे।

गो सेवक बापूजी

सन् 1987 मे अपने ही बलबूते पर 1100 गायो का नि शुल्क गो शिविर लगाया था। उस समय चारे के सरकारी भावो म कमी कराने के लिए प्रधानमत्री राजीव गाधी से बापूजी ने जो पत्र व्यवहार किया तो राजीव गाधी ने घास के भाव 40 रुपया मन करा दिए। उनके इस व्यवहार से बापूजी बहुत खुश हुए और उन्हे श्री कृष्ण स्वरूप ही मानने लगे। बापूजी नेहरू परिवार के बहुत प्रशसक थे।

उस गो शिविर मे बापूजी ने मुनीम को यह अधिकार दे रखा था कि जिस पशु पालक के पास पैसा चुकाने का दम न हो तब भी उसे बही खाते म लिखे बिना ही उसके पशु के लिए चारा दे दिया जाए जिससे पशु भूखा नहीं मरे।

गाव म गायो की अच्छी नस्ल के लिए बापूजी एक साड पालते थे और उसका अलग से विशेष तौर पर पालन पोषण किया जाता था। उनका कहना था कि हर पचायत स्तर पर गाव मे एक अच्छा साड होना चाहिए। खाद के दुरुपयोग को लेकर तथा गोबर को जलाने से रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आप पत्राचार करते रहे। उनकी मान्यता थी कि उपलो को जलाना और ट्रेक्टर का प्रयोग ही मगरा क्षेत्र म पशुओ के लिए घास चारे के अभाव का कारण है।

आज भी प्रासगिक

बापूजी का विचार था कि भारत का विकास गावो के विकास से ही होगा। अत ग्रामीणो म जितनी तरक्की होगी हम उतने ही मजबूत होगे। राजनीति का हथियार समाज सेवा म लगाये तो मानव मात्र सुखी होगा। हमारी जीवन व्यवस्था म मितव्ययिता की अहमियत है अत खर्च पर काबू रखा जाए। अनिवार्य जरूरत पर ही खर्च किया जाए, हमे अपनी जरूरत कम करके गाव के विकास मे लगाना होगा। इसलिए ग्रामीण व अर्ध शहरी क्षेत्रो की तरफ विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

भेरूदानजी छलाणी के सम्पर्क में जितना रह सका उतने मात्र से ही मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूं कि उन्होंने केवल परिवार के लिए नहीं बल्कि पूरे ग्रामीण समाज के लिये लम्बे समय तक सर्वांगीण विकास कृषि गो सेवा व संवर्द्धन, शिक्षा प्रसार सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिये रचनात्मक राजनैतिक एवं सामाजिक सुधार सेवा के कार्य किये उनकी तुलना किसी गांधी से ही की जा सकती है। आजादी के पूर्व स्वतंत्रता सेनानियों के सहयोगी रहे तथा स्वाधीनता के बाद सच्ची गांधी निष्ठा के अनुरूप गांधी विनोबा की गांधीवादी ग्रामीण अर्थरचना के कार्य में कृषि, खादी व गो सेवा में लीन रहे। हम उनके शब्दों को आज भी प्रासंगिक तथा प्रेरणादायक पाते हैं। हमारा प्रयास है कि उनके विचारों से हम समाज देश में ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ कर सकेंगे। •

ऐसे पिता सबको मिले।

■ श्रीमती पुष्पा पुगलिया ■

मेरे पिताजी स्वर्गीय भैरूदानजी छलाणी के इस स्मृति ग्रंथ को मैं भी अपनी कुछ स्मृतियों से सजोना चाहती हूं। मेरा और मेरे पति श्री कमल पुगलिया का काफी निकट सम्पर्क पिताजी के व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन से रहा। अतः मेरी दृष्टि से पिताजी के बारे में जो भी संस्मरण मैं प्रस्तुत करूंगी तो मेरा सौभाग्य होगा। मेरी तो हार्दिक कामना यही है कि 'ऐसे पिता' सबको मिले।

सबके बापू

पिताजी को हम सभी परिवार के लोग बापूजी कहा करते थे। केवल मेरे परिवार में ही नहीं बल्कि गांव के जन जीवन में भी उनका सम्बोधन 'बापूजी' के रूप में सर्व परिचित था और सबकी जबान पर था। यद्यपि महात्मा गांधी का यह सम्बोधन सर्वविदित है लेकिन हमारे पिताजी के लिए यह सम्बोधन स्वाभाविक रूप से हम लोगों की जबान पर आया था। महात्मा गांधी के सम्बोधन द्वारा पिताजी की ख्याति बढ़े ऐसे किसी विचार द्वारा यह सम्बोधन शुरू नहीं हुआ। वस्तुतः सारे छलाणी परिवार में तथा बीकानेर, तेजपुर दिनहट्टा आदि सभी स्थानों पर पिताजी का आचरण विचार और व्यवहार सबके प्रति पितृतुल्य रहा। जिसे तहेदिल से महसूस करने के कारण सबने उन्हें बापूजी कहना आरंभ कर दिया।

गाव ही परिवार

हम उस समय छोटे छोटे बच्चे थे। हमारे घर परिवार म कोई शादी या उत्सव होता तब भी कई बार ऐसे मोके आए जब बापूजी ने मागलिक गाजा बाजा गीत गाना आदि बद कर देने का आदेश दिया। हम लोग बहुत ही कसमसाते थे, लेकिन उनकी आज्ञा के आगे नत मस्तक थे। परतु व गाजा बाजा बद करने का कारण समझा कर मानसिक रूप से हमे तैयार करते थे कि गाव म या जाति बिरादरी मे किसी की मृत्यु हो जाने के कारण हम अपनी खुशी पर भी सयम रखना सीखना चाहिए। वे हमे महसूस कराते थे कि गाव भी एक परिवार है। हम सब उसके सदस्य है। उन दिना मे हम वैसा महसूस हुआ हो या नही हुआ हो किंतु अब यह महसूस हो रहा है कि बापूजी की पारिवारिक और सामाजिक चेतना कितनी विस्तृत और विकसित थी।

गाव के दु ख मे बापूजी जितना साथ देते थे उतना सुख और आनद म भी कमी नहीं छोड़ते थे। गाव के हर मेले मगरिये म पूरी रुचि लेते थ और हर पर्व उत्सव को बड़ी प्रसन्नता से मनाते थे। हमे बुलाते आर गाव की खुशियो मे शामिल होने को भेजते थे। गाव म नाटक मडली आती तो रामलीला जरूर करवाते। गाव वालो के साथ मिलकर हम बच्चो को साथ लेकर अपने पूरे परिवार के साथ राम लीला का आनद लेते थे।

लोक सगीत के प्रेमी

बापूजी को सगीत स भी बहुत लगाव था। लोकगीत और लोकवाद्य दोनो मे उनकी रुचि था। लोक कलाकारो को बड़ा आदर देते थे। खेत म लोक कलाकारो से पड़ नाम का वाद्य बजवाते थे। हम इन सब गतिविधियो मे खुलकर आनद लेते थे। क्योकि बापूजी की रुचि के कारण हम लोग अधिकारपूर्वक यह सब आनद लेते थे। बापूजी गाव मे होली के अवसर पर रम्मत' भी करवाया करते थे। क्योंकि रम्मत हमारे राजस्थान की लोक सस्कृति की विशेष अग रही है।

शरद पूर्णिमा

हमने बचपन से देखा था कि शरद पूर्णिमा को बहुत महत्त्व दिया जाता था। बापूजी मतीरा के विशेषज्ञ तो थे ही। शरद पूर्णिमा के दिन खीर की परपरा के साथ खेत मे उगाए हुए उनके विशेष मतीरे शरद पूर्णिमा के महत्त्व का दूना कर देते थे। चद्रमा की चादनी मे रात भर रखी गई खीर और रखे गये मतीरो को दूसरे दिन परिवार वालो के साथ तथा विशेषकर बुलाए गए मेहमानो के साथ मिल बैठकर खाने खिलाने म बापूजी को बड़ा आनद आता था। वह किसी स्वर्ग के सुख से कम नहीं था और उस सुख के हम भी भागीदार होते थे। हमारा सौभाग्य भी कम नहीं था।

मासिक सत्संग

बापूजी को सत् साहित्य से बहुत अनुराग था। इस सत् साहित्य पढ़ने की सदैव प्रेरणा देते रहते थे। स्वाध्याय के साथ साथ उनका मासिक सत्संग चलता रहता था। हर महीने एक सत्संग करवाते जिसमें पूरा गांव शामिल होता था। सामूहिक सत्संग उनके जीवन कर्म का अंग था।

रामायण गीता के मर्मज्ञ

पूरी रामायण उनको कंठस्थ थी। रामचरितमानस में उनकी पैठ गहरी थी। उनकी बहुत ही प्रिय चौपाइयों को वे हम बच्चों से खूब बुलवाया करते थे। गीता का भी उन्हें गहन अध्ययन था। यही कारण था कि जैन साधुओं साध्वियों के अलावा सनातनी साधु संत भी बापूजी को अपना आशीर्वाद खुले दिल से देते थे और बापूजी भी उनकी कृपा के पात्र बने रहते थे। गांव में गीता और रामायण के प्रसंग में विद्यालय स्कूल के अध्यापकों के अनुभव भी मार्मिक रहे हैं।

अभय प्रकृति

हम सब बच्चों को बापूजी निर्भय रहने का संदेश देते थे। स्वयं भी निडरता से काम करते थे। रात को निगरानी करने के लिए तथा अन्य कार्यों से वे रात आधी रात चाहे जब हिम्मत के साथ निकल पड़ते थे। डर क्या होता है यह कह कर वे हम निडरता की शिक्षा देते थे। गांव की आंधी वर्षा तूफान तथा अकाल की भयंकर स्थितियों में वे सार्वजनिक कार्यों के लिए अंधेरी रात में भी निकल पड़ते थे। तब गांव में बिजली नहीं थी।

रीति रिवाज और परंपरा

यद्यपि बापूजी ने कुरीतियों का विरोध किया था, किन्तु रीति रिवाज और परंपराओं के विरुद्ध वे बिल्कुल नहीं थे। इस दृष्टि से आचार विचार और व्यवहार का उन्होंने संतुलन साध रखा था। शादी विवाह तथा तीज त्यौहारों पर मित्रों और रिश्तेदारों को बुलाना और उनके यहां आना जाना, रीति रिवाज निभाना उन्हें अच्छा लगता था। शादी विवाह के रीति रिवाज में आनंद लेते थे। मेरी शादी बड़ी धूमधाम से की गई। पूरे समय हाथ में थाली लिए खड़ी रहती थी और साथ में गीत भी गाया जाता था— म्हारो पलसड़ले रो खड़कवियो ए गोपीचंदसा, रतनलालस्या आविया ए म्हारा गिड़द सुधारने आविया ए, म्हारी जान निभावण आविया ए। इस आदर सत्कार के साथ साथ रीति रिवाज के अनुसार एक माह तक अलग से गीतों का कार्यक्रम भी चलता रहा था। अलग अलग लोगों की तरफ से गीत गवाए जाते थे। बापूजी इन सब गतिविधियों में व्यक्तिगत रुचि और आनंद लेते थे लेकिन जिन बातों का विरोध आवश्यक होता था उनमें कोई समझौता नहीं करते थे। जब मेरी सगाई की बातचीत चली तब उन्होंने चार बातें रखी थीं—। दहेज का लेन देन न

हो, 2 औरता की स्वतत्रता हो, 3 लड़का उद्यमी हो 4 लड़का व्यसनी न हो। इस प्रकार हमने बचपन से ही अपने पिताजी से रीति रिवाज, परपरा और रूढ़ि के बीच फर्क करना समझा।

मा का सहयोग

हमारे पिताजी ने जिस तरह का जीवन जिया उसका श्रेय बहुत कुछ हमारी मा को भी जाता है। मा ने उनकी प्रत्यक रुचि, कार्य, गतिविधि निर्णय और आज्ञा का ज्या का त्या पालन किया। हम सब भाई बहना को अच्छी तरह ध्यान है कि मा ने किसी बात का कभी भी विरोध नहीं किया था, वरन् बापूजी जिस तरह लोगो का सहज विश्वास करके औघड़दानी की तरह दान दे कर तथा अपनी धुन के पीछे सब कुछ लुटा कर चलते थे उसमे चाहे कितनी ही सहनशील नारी हो लेकिन कहीं न कहीं विराध और टकराहट हुए बिना नहीं रहती लेकिन हमारी मा का स्वरूप हमने अलग ही देखा। बापूजी खुद कहा करते थे कि तुम्हारी मा लोहे की बनी है। आराम का तो नाम ही नहीं। दुनिया म मैने एसी औरत नहीं देखी जिसे रुपए पैसे का मोह नहीं और यह अपने पास एक पैसा भी नहीं रखती।'

परपराओ से प्रेम

पिताजी चार महीने चौमासे म खेत म ही रहते थे। खेत मे घर ओर झोपड़ बने हुए थे। जब दीपावली आती तो उससे पहले लाल ओर सफेद मिट्टी से घर व झोपड़े सजाये जाते थे। खेत के घर मे बड़ा सा आगन है उसके बीचो बीच चार या पाच स्वस्तिक चिह्न बनाए जाते थे और आगन के किनारे लाल पट्टी पर सफेद मिट्टी के रुपए अकित किए जाते थे। दीवारो पर पिताजी अपने हाथ से रामायण की चोपाइया लिखते। इन गतिविधिया म कितनी सरलता, सहजता और स्वाभाविकता होती थी उसकी स्मृति मुझे आह्लादित और प्रमुदित करती है। अब हम शहर की चकाचौध म कहा के कहा खोते जा रहे है, तब ये स्मृतिया हमारी चेतना की मार्गदर्शक बन जाती है। हमारी मा भी दीवाली के सारे दौर म पूरा साथ निभाती थी। बापूजी के ग्राम्य जीवन की सही अर्थो मे चिर सगिनी और जीवन सगिनी बन चुकी थी—हमारी मा।

गाव, गाय, खेत और खेती

बापूजी का ध्येय हमेशा बजर भूमि का विकास करना था। उनका कहना था कि जमीन पर घास उगना जमीन की गुणवत्ता का बैरोमीटर होता है। खाद जमीन, गाव गाय खेत और खेती के बारे मे उनका अपना सोच ज्ञान और अनुभव था। वे कहते थे कि पश्चिमी राजस्थान मे वर्षा कम होती है तथा मगरा क्षेत्र म तो सारा क्षेत्र धूल और ककड़ का है इसलिए यहा घास का विकास ही आसानी से हो सकता है और उसका विकास किया जाना चाहिए जिससे किसान की आर्थिक स्थिति मे सुधार हो सकता है। मगरे का मोर ककर खा कर ही जीवन बिताता है। इसलिए घास को यहा

की जमीन पर बोना और विकास करना जरूरी है। उनका यह शोध था कि पशु जो मल उत्पन्न करता है उसे जमीन म रह जाने दना चाहिए क्योकि चौमासे म पशुआ का जा मल जमीन मे रहने दिया जाए तो उससे घास उग सकती है जिसम किसान साल भर की घास इकट्ठी करके रख सकता है, जो पशु पालन के लिए उपयुक्त साधन बन सकती है।

इसी तरह बापूजी का अनुभव था कि ट्रेक्टर ज्यादा जमीन की बुवाइ ता कर सकता है लेकिन वह जमीन के बीज का समाप्त कर देता है। इसके अलावा हमारे राजस्थान की जमीन मे नमी नही है तो भी ट्रेक्टर से बड़े क्षेत्रफल की बुवाई हम कर देते है जो खेती के लिए ठीक नहीं रहती। ऐसी स्थिति मे किसान खर्च ज्यादा कर देता है। जिससे छोटे किसान कमजार हाते है और वह लाभ नहीं उठा पाते। ट्रेक्टर आर ईंट भट्टा ने कोलायत गजनेर और मगरे की 33 प्रतिशत जमीन खराब कर दी है। भट्टा के लिए लकड़ी कट गयी है। जगल समाप्त हो गए है। जा गोबर खाद के काम आता था वह उपले बन कर जल गया है। इन सब आधारो पर अपनी चिता व्यक्त करते हुए बापूजी ट्रेक्टर के अधाधुध प्रयाग के विरोधी थे। राजस्थान का फोग वृक्ष समाप्त सा हो रहा है। जिसकी उन्हे बहुत चिता थी। फोग के वृक्ष जमीन को रोककर रखते थे। वे स्पष्ट कहते है कि बीसवी सदी मे डीजल तेल किसान के बजट से बाहर हो जाएगा। इसलिए व ट्रेक्टर का प्रयोग कम से कम लेने के पक्ष मे थे। अपने इन्हीं विचारो क बल पर पिताजी ने अपने खतो म ट्रेक्टर खरीद कर अनुभव किया आर बहुत जल्दी उसे वापिस बेच दिया, लेकिन इस सार प्रसग से इतना तो स्पष्ट है कि खेत और खती और अपनी राजस्थान का जमीन के बारे मे उनके विचारो मे ठोस आधार था परिपक्वता थी और स्पष्टता थी।

गो सेवा म मेरा सहयोग

यह मेरा सोभाग्य मानती हू कि अकाल क समय उनका सारा काम मने सभाला था। चूकि पिताजी का अधिक समय बीकानेर ओर दियातरा के बीच आने जाने मे लग जाता था। कलक्टर बीडीओ और न जाने कितने कितन लोगो से सम्पर्क उन्हाने साधे होगे, लेकिन फिर भी मुझे उनके गाव लोटते ही उन्हे सब रिपोर्ट देनी पड़ती थी। गाया को क्या रोग हो गया है गाय चर रही है या नहीं तथा बीमार गाय का उपचार चल रहा है या नहीं आदि सब बातो का वे व्यक्तिगत ध्यान देते थे। गाया को कीड़े न पड़ आर कौए घाव को गहरा न कर दें इसकी चिता उन्ह बहुत सताती थीं। उन्हे इन सब बाता की सही जानकारी देनी पड़ती थीं। गा सेवा सघ द्वारा उनके खेत (फार्म) पर सन् 1986 मे ग्यारह सो गायो का कैम्प चला था।

गो मास का विज्ञापन

एक बार दिनाक 12 7 88 को दिल्ली से जनसत्ता अखबार मे गो मास सवर्द्धन विभाग का एक विज्ञापन आया 'गोवा सरकार के बूचड़खाने म गा मास

वैज्ञानिक पद्धति से तैयार किया जाता है। बूचड़खाने से ग्राहक क हाथा मे पहुचने तक सफाई और गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह मुलायम और जायकेदार है। इस प्रकार के विज्ञापनो को पढकर बापूजी की आत्मा तिलमिला उठती थी। वे ऐसे विज्ञापन को देश की सस्कृति पर कुठाराघात मानते थे। रेडिया और टेलीविजन पर अण्डो के विज्ञापन पर भी उन्ह क्षोभ उत्पन्न हाता था। राधाकिशनजी बजाज के साथ गाव ओर गाय के बारे मे उनके प्राय विचार विमर्श होते रहते थ। हमारे पिताजी भैरूदानजी इस मामले मे स्वास्थ्य ओर खाद्य पदार्था का चार्ट बनाकर रखते थ, जिसम अण्डा की तुलना मे सोयाबीन और मूँगफली मे दुगुने से लेकर चौगुने तक प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट ओर ऊर्जा का अन्तर प्रमाणित करत थे। प्रत्यक्ष मेडीकल आधारो पर वे अण्डा खाने के और गा मास खान के विरोधी थ। एक बार राजस्थान से सन् 1987 [illegible] मे दुधारू पशु अवध रूप से ओरगाबाद भेजे जा रहे थे। इसकी सूचना युवा लोक दल के अध्यक्ष उज्जैन के श्री अब्दुल सदीक गाधी न दी तब बापूजी ने उज्जेन तथा सोजत के चेक पोस्ट पर अवैध कार्य को रोकने के प्रयास किये।

सस्कार प्रशिक्षक हमारे पिताजी

हमारे बापूजी भैरूदानजी स्वय कोई डिग्रीधारी या भाषाविद् और लेखक नही थे। किंतु घर परिवार के बच्चो म उत्तम सस्कार और नैतिक शिक्षा देने का उनका अपना तरीका था। लोकोक्तिया लाकगीत मुहावरे ओर लोक कथाओ के माध्यम से वे हम सस्कारित किया करते थे।

जब कभी खेत या अन्यत्र कही आने जान का काम पड़ता तो रास्ते मे उन गीता को गाते हुए चलने का कहते जिनमे भाव और सस्कार भरे हुए होते थे। बापूजी भाईचारे और इसान को इसान क प्रति कितना प्रेम होना चाहिए तथा मित्रता की दृढ़ता धन से नहीं तुलती बल्कि मन से मिलती है—इस प्रकार के सस्कार डालने के लिए हमे बागजी बारठजी नाम क दो दोस्तो की कहानी सुनाया करते थे। इसी तरह कभी कोई कहता कि तुम्हारा नाम अच्छा नही हे ये क्या नाम रखा ह? तो बापूजी कहते कि नाम तो आदमी की पहचान के लिए होते हैं। इसमे अच्छा और बुरा क्या होता है? तब व हम लटूरिया नाम के एक आदमी की कहानी सुनाकर खूब हसाया करते। मनोरजन करते हुए हमारा अनायास ही प्रशिक्षण कर दिया करते थे जिसका महत्त्व हमे अब समझ म आ रहा है।

खान पान ओर पोशाक

हमारे पिताजी का खान पान बहुत ही मर्यादित था। दिन मे दो बार लाल बकरी का दूध लेते थे। चाय बिल्कुल नहीं पीते थ। दवा रूप म कभी हिमालय कागड़ी की चाय ले लिया करते थे। भोजन मे गेहू के फुल्के (चपाती) बाजरी की रोटी

सब्जी मे उबाला हुआ घीया और पालक मूग की दाल, चावल या खिचड़ी रुचि के अनुसार ले लिया करते थ। नमक के स्थान पर जवाखार या सेधा नमक लेते थे। गुड़ बहुत पुराना लेते थे। दूध मे शहद लिया करते थ। चीनी बिल्कुल नहीं खाते थे। मोसमी मतीरा या अनार पसद करते थे। पिछले दस वर्षो मे तो घी का प्रयोग बिल्कुल छोड़ ही दिया था। दवा के रूप मे च्यवनप्राश वासावलेह तथा ज्वार माहरा लिया करते थे। उनके मर्यादित खान पान के अनुसार अस्सी वर्ष की उम्र मे भी उनकी आख का चश्मा नहीं था और नकली दात नहीं थे। वे प्राकृतिक चिकित्सा के हिमायती थे। खासी या कफ की शिकायत होने पर दूध में लहसुन उबालकर ग्रहण करते थे। गुर्दे की सफाई के लिए कुल्थी की दाल लेते थे। प्राकृतिक चिकित्सक महावीर प्रसादजी वैद्य के साथ उनकी प्राय चर्चा होती रहती थी। उनका पक्का विश्वास था कि शारीरिक मेहनत और मर्यादित खान पान तथा प्राकृतिक पर्यावरण ही हम इक्कीसवीं सदी मे भी हृदय रोग से बचाएगा। आज हृदय चिकित्सा पर लाखो रुपए का खर्च आता है और वह भी बार बार इलाज करवाने पड़ते है और बाईपास सर्जरी भी वापिस करानी पड़ जाती है। इसकी बजाए बेहतर है कि हम भाग दौड़ की जिन्दगी, प्रदूषित वातावरण तथा तनाव से मुक्ति पाकर मर्यादित भोजन योग और ध्यान से अपने हृदय रक्त सचालन को स्वस्थ रखना सीख ले।

पोशाक मे वे खादी का ही प्रयोग करते थे। सफेद धोती चोला पहिनते थे। सर्दियो मे खादी के कपड़े का कोट और एक धोती (सूती धोती) व खेस रखते थे। लोग उन्हे मगरे का गाधी कहते थे। मागलिक कार्यों मे पगड़ी पहना करते थे। नाक मे मोर पख के निकाले हुए सोने का नाथ पहनते थे। यह नाथ उनकी निजी पहचान भी बन गई थी।

घरेलू उपचार एव नुस्खे

बापूजी के साथ हम भी घरेलू उपचारो और नुस्खो का अच्छा ज्ञान और अनुभव हो गया। गाव के जीवन मे परम्परागत घरेलू उपचार और नुस्खों का बापूजी को बहुत ही सफल अनुभव था। जिसके प्रमाण यहा दिए जा रहे हैं—

1 तेज खासी—पेड़ की जिस डाली पर सोहन चिड़िया (सगुन चिड़ी) बैठती थी उस डाली को तुड़वाकर मगवा लेते थे। उस डाली को पीसकर देने से तेज खासी ठीक हो जाती थी।

2 इक्कीस अगुलिया की करामात—जिनके पित्ती उछल जाती थी वे जब बापूजी के पास इलाज कराने आते तो बापूजी का हाथ फेरते ही पित्ती शात हो जाती थी। इसका कारण वे बतलाते थे कि उनके हाथो मे इक्कीस अगुलिया थी। इक्कीस अगुलियो का ऐसा चमत्कार जब हमने आखो से देखा तो हम प्रत्यक्ष विश्वास करना पड़ा।

3 गाया का जोया राग—गाया मे जोया राग हा जाए तो उस पर खजूर की गुठली जलाकर घी म मिला कर लगाने मे ठीक हो जाती है। कई बार घी आर हल्दी भी लगाने से ठीक हो जाती है। इस रोग म गाय दूध देना बद कर दती है तथा इससे गाय का थन खराब हो जाता है।

4 सूखा सिदूर—गाय के कहीं भी घाव हो गया हा तो सूखा सिदूर लगाने स कीड़े नहीं पड़ते और कौए उस घाव को नहीं छेड़ते।

5 तारपीन का तेल—यदि ऊट आदि पशुआ के खुर म कीड़ पड़ जाए तो तारपीन का तेल लगान से ठीक हो जाता है।

6 मुहाड़ा रोग और इलाज—गायो म मुहाड़ा नाम का रोग हो जाता है जिसमे गाय कुछ खा नहीं पाती। उस समय मोठ की दाल को तिलो का तेल लगाकर दने से या माठ की रोटी बनाकर उस पर तेल लगाकर देने से ठीक हा जाता है। तिल्ली का तेल पशुआ को एक बार दने से पशु कमजोर नहीं होते।

7 मतीरे का हडूला—बापूजी लक्ष्मी के पूजन के मतीरे का हडूला रखते थे। उस परपरा को हम आज भी निभाते हैं। दीपावली पर कुछ मतीरा मे रात भर तल का दीपक जलाया जाता है। उन मतीरो के सूखने पर उसके टुकड़े टुकड़े कर जितने पशु हाते है उन्हे खिलाया जाता है इसस मुहाड़ा रोग नहीं होता। इस रोग म पशु मरता ता नही है लेकिन खाना पीना छोड़ कर कमजार हा जाता है।

8 जौ की घाट—गर्मियो मे गाया का दूध कम हो जाता है। उस समय जौ और गेहू की, विशेषकर जौ की घाट बनाकर देने से गाय म गर्मी कम हो जाती है और दूध ठीक दने लगती है।

9 भैस का गोबर—एक बार मेरे सीने मे गाठ हो गई थी। कई दिन दवाइया ली पर ठीक नहीं हुआ। डॉक्टर ने ऑपरेशन का कहा, तो मैने मना कर दिया। मै दियातरा गयी। बापूजी ने देखा। उन्हाने भैस का गोबर गरम करके उसमें नमक डाल कर गाठ पर लगाया। दो तीन बार लगाते ही ठीक हो गया। उसके बाद मने कई जना पर यह प्रयोग किया जो सफल भी रहा।

10 बरसाती धमासीया—मेरे हाथ मे फोड़ जैसा कुछ हो गया था। दवाइयो से ठीक नही हुआ। बरसात के दिना म धमासिया खूब होता है। बापूजी ने उस पीसकर लगाया तो मेरा फोड़ा ठीक हो गया।

11 मतीरे का बीज—मेरी बेटी के पेट मे दर्द रहता था। मतीरे के बीज की गिरि बनाकर मिश्री के साथ देने से दर्द ठीक हो गया। अभी पिछले दिना मेरी दोहिती पर भी यह नुस्खा मैने आजमाया जा सफल रहा।

12 स्वमूत्र चिकित्सा—बापूजी स्वय मूत्र चिकित्सा भी करवाते थे। चाचाजी के पाव मे घाव हो गया था। पाव गलने लगा। दवाइया काफी ली पर आराम नहीं

मिला तब उनके अपने पेशाब से घाव को धुलाया। कुछ दिन तक धोते धोते घाव ठीक हो गया।

कार्यकलापो की झलकियां

हम बचपन से ही अपने पिताजी श्री भैरूदानजी छलाणी के दैनिक जीवन की करीब करीब सभी गतिविधियों में साथ रहते थे। वे भी हम परिवार के लोगों को कार्यक्रमों में साथ रखना पसन्द करते थे। हमें उस समय की अनेक झलकियां आज भी याद है जिनको याद करके हमें प्रेरणा मिलती है।

आक के फूलों की माला

गांव में आक के पौधे बहुत पनपते रहते है और यह रेगिस्तानी जलवायु की देन होती है। इसमें दूधिया फूल उगा करते हैं। एक बार अकाल के दौरे में और पोकरण परमाणु विस्फोट स्थल को देखने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी आयी थीं। उनका पोकरण जाते हुए दियातरा गांव की सड़क के स्टेण्ड पर ठहराकर आक के फूलों की माला पहनाकर स्वागत किया गया। उस समय बापूजी के साथ हम परिवार के सदस्य तथा गांव के अनेक लोग मौजूद थे। दृश्य देखने लायक था। हम आज भी उस दृश्य को भूल नहीं सके।

अकाल की भूख का अहसास, तूम्बे के बीज की रोटी

हमने कहावतों में तो सुना था कि करेला के उपर नीम चढ़ा और फिर तूम्बा चढ़ा क्योंकि तूम्बा तो नीम और करेले से भी ज्यादा कड़वा और खारा होता है। फिर यदि अकाल की भूख से बिलबिलाते लोगों को तूम्बे के बीज की रोटी खानी पड़े तो उस स्थिति को कौन महसूस करेगा? जब भारत सरकार के खाद्य मंत्री जगन्नाथ पहाड़िया एक अकाल के दौरे में दियातरा गांव में रूके तो उनके भोजन और निवास की व्यवस्था दियातरा स्कूल में की गई। पहाड़ियाजी के भोजन के साथ कांटेदार भुरट के बीज की रोटी तूम्बे के बीज की रोटी और लाल ज्वार की रोटी के भी नमूने रखे गए। गांव के लोगों की भूख की विभीषिका उन्हें दर्शायी गई, तब पहाड़ियाजी बहुत दुःखी हुए और गेहूं आदि भिजवाने की व्यवस्था करवाई। दियातरा के लोग जो उस समय के अभी जिंदा है वे उस दृश्य को याद करके आज भी दो आंसू रो लेते है।

विनोबा के साथ सपरिवार

एक बार विनोबाजी की अजमेर पदयात्रा में दियातरा से अजमेर तक बापूजी भी शामिल हुए। इस बार हमारी पूज्य मां और मेरी बहिन मीना देवी और मै सब साथ में थे। इस निमित्त से हमें विनोबाजी से निकट सम्पर्क का सौभाग्य मिला।

अजमेर भूदान आंदोलन का दाग

इस दौर मे लालूजी मेघवाल आदि भी साथ में थे। इस यात्रा में एक विचित्र घटना घटी। अजमेर से आगे की यात्रा में रास्ते में कीड़ी नगरा आ गया। वह कीड़ी

नगरा करीब तीन किलोमीटर तक फैला हुआ था। बापूजी भैरूदानजी और विनोबाजी दोनो ही अहिंसा के प्रेमी और पुजारी थे। तुरन्त फैसला बदला। बड़ा घुमाव खाकर दूसरी तरफ से रास्ता बदलकर अगले पड़ाव पर पहुचे। हम बच्चो ने उस बात का प्रमाण पाया जो विनोबाजी के लिए कहा जाता था कि बाबा चींटी को भी दखल नहीं देते। हमारे बापूजी और हमारी टोली के लोग उस यात्रा के अतिम पड़ाव तक साथ मे रहे। उस समय हमे यह अच्छी तरह महसूस हो गया कि हमारे बापूजी पर विनोबाजी का बहुत प्रभाव था। विनोबाजी के प्रिय भजन वे हमसे गवाया करते थे। हम उस समय तो बच्चे थे, लेकिन आज जब वे सारी यादगारे रील की तरह आखो के आगे आ रही है तो हम महसूस हो रहा है कि हमारे बापूजी ने गाधी और विनोबा के विचारो को व्यावहारिक आचरण के साथ अपने जीवन को कितनी अच्छी तरह अनुप्राणित कर रखा था।

काग्रेस अध्यक्ष के साथ भैरूदानजी

एक कार्यक्रम का उद्घाटन करने के लिए पास के झझू गाव मे काग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री कामराज नाडार पधारे। उनके साथ बापूजी श्री भैरूदानजी भी उस कार्यक्रम मे शामिल थे। मगरे के सभी गावो का नेतृत्व और प्रतिनिधित्व करते हुए श्री भैरूदानजी उस समय श्री नाडार के ग्रुप फोटो मे शामिल हुए। बचपन के वे क्षण स्मरणीय है।

आस्थाए, विश्वास, इष्ट और शकुन अपशकुन तथा ज्योतिष की रहस्यमयी झलकिया

मा का जीवन दान

एक बार मा बहुत अस्वस्थ हो गई थीं। उन्हे बीकानेर ले गए। बड़ी अस्पताल मे भर्ती कराया गया। पर स्थिति ऐसी बनी कि इलाज डाक्टरो के नियत्रण से बाहर हो गया। डॉक्टरो ने साफ कह दिया कि स्थिति गभीर और चिताजनक है। बापूजी को नारायण महाराज पर बहुत आस्था थी। उन्हे तुरत बुलाया गया। नारायण महाराज ने आते ही मा को एक इलायची खिलाई। मा थोड़ी होश मे आई आखे खोली और उनके थोड़ी आवाज भी निकली। महाराज ने पूछा— क्या खाओगी? मा ने धीमी वाणी मे कहा कि अगूर खाऊगी। तुरत अगूर लाने के लिए एक व्यक्ति दौड़ा। पर उसे कहीं अगूर नहीं मिले। बेचारा खाली हाथ निराश लौट आया। उसे देखकर महाराज बोले— बाहर जा कर देखो गाड़ेवाला खड़ा है, अगूर मिल जायगे। अस्पताल से बाहर आकर देखा तो वास्तव मे गाड़े वाला खड़ा था जिसके पास थोड़े अगूर रखे हुए मिले। नारायण महाराज ने अपने हाथ से मा को अगूर खिलाए। मा ने खुशी प्रकट की और स्वस्थता महसूस की। मा को जीवन दान मिला। हम लोग तो आश्चर्य ही कर सकते थे। समझ तो नहीं सके आज तक कि वह सब क्या था? क्यो और कैसे हुआ? कितु आखो देखा सत्य था। अत इकार नहीं कर सकते।

एक बार बापूजी को टाइफाइड हुआ। वैद्य स्वामी किशनदासजी महाराज की दवा चालू हुई। थोड़ा आराम मिला तो कुछ खान की इच्छा जागने पर बापूजी ने खान के लिए विशेष आग्रह किया। उनकी मा न थोड़ी खीर खिला दी। इससे टाइफाइड बिगड़ गया। छ माह तक बीमार रहे। वैद्य की दवा चालू थी किंतु टाइफाइड पर नियत्रण नहीं हो सका और दिना दिन स्थिति बिगड़ती गई। उन दिनों 'सीड़ा के स्याम' के नाम से नारायण महाराज प्रसिद्ध थे। गायत्री सिद्ध, सर्वहितैषी, बाल ब्रह्मचारी अलौकिक पुरुष थे। उनको दियातरा बुलाया गया। महाराज आए। आशीर्वाद दिया और बोले— तेरा सारा कष्ट प्रभु कृपा से कट गया है। जब तक तू ठीक नहीं होगा मैं यहीं पर हू। थोड़ी देर बाद बापूजी ने महाराज को कहा—मुझे बहुत भूख लगी है। पास म ही बैठे हुए नारायण महाराज ने अपना अगूठा उनके मुह में दे दिया। बापूजी उनका अगूठा चूसते रहे। उनकी भूख मिट गई। उन्हें बड़ा आराम मिला और अन्दर ही अन्दर आनद की अनुभूति भी हुई। उसी क्षण से बापूजी स्वस्थ और प्रसन्नचित्त हो उठे।

इस प्रकार बापूजी और मा दोनों को नारायण महाराज ने जीवनदान दिया। यह सब बापूजी की अगाध श्रद्धा का परिणाम था। दिनाक 30 जून 1961 को बापूजी ने नारायण महाराज के प्रति अपनी भावना प्रकट की थी। जिसकी चार पक्तियां उल्लेखनीय है—

> द्वैत गयो दुख देवनहारो
> चित चमक्यो अद्वैत उजारो
> स्थिर करो सिड़ा रा श्याम
> भैरू करे लाख प्रणाम'

दियातरा में गुरूजी नारायण महाराज का ननिहाल है। उनका मदिर भी बना हुआ है। आज भी हमारे घर से रोज दूध का प्रसाद चढ़ाया जाता है। शुभ वेला मे उनका स्मरण करते हुए आज भी हमारे घर मे उनके गीत गाए जाते है।

आस्था और इष्ट

यद्यपि जैन होने के कारण पिताजी की निष्ठा और आस्था जैन तीर्थंकरों के प्रति थी, लेकिन आस्थाओ के मामले मे उनका खुला दिल और दिमाग था। आगे चलकर सत्य साईं बाबा पर भी उनकी आस्था जमी। इस प्रसग में एक रहस्यवादी घटना मुझे याद आ रही है। बापूजी के एक मित्र (श्री दुर्गाप्रसादजी बगड़िया) जो सत्य साईं बाबा के श्रद्धालु थे, उन्होंने एक पत्र बापूजी को लिखा। बापूजी ने जब वह लिफाफा खोला तब पत्र के साथ उसमें भस्म की एक पुड़िया भी मिली। पिताजी ने अपने मित्र को धन्यवाद देते हुए उस पत्र का जवाब दिया। वापिस उसके जवाब मे

पिताजी के मित्र ने लिखा कि उन्होने तो केवल पत्र ही लिखा था लेकिन वह भस्म की पुडिया कैसे पहुची—यह समझ म नही आया। यह रहस्य हम बच्चो के लिए आज तक भी बना हुआ है। बापूजी इन सब बातो को अधविश्वास नही मानते थे। वे आस्था और मन की शक्तियो का परिणाम मानते थे। हो सकता है ऐसी ही किसी आस्था के कारण वे अपने हाथ मे सोने का गालिया (कड़ा) तथा नाक मे एक नाथ पहनते थे जिसे उन्होने मोर के पखो को जलाकर उसमे से सोना प्राप्त करके अपने लिए विशेष तौर पर बनवाई थी।

स्वप्न दृष्टात

हम और हमारे परिवार के सदस्यो को इस बात मे कोई सदेह नहीं रह गया था कि बापूजी को उनके स्वप्न मे उन बातो का आभास हो जाता था जो भविष्य मे घटित होने वाली होती थी। बापूजी भैरूदानजी सपनो का सही अर्थ निकाल लेते थे और इस कारण अशुभ घटनाओ से बच जाते थे और परिवार को भी आने वाले सकटो से बचा लेते थे। हम लोग आज भी यह निश्चय नही कर पाते है कि वह सब क्यों और कैसे सभव होता था? आज भी जब हम आपस मे चर्चा करते है तो इतना ही कह कर रह जाते है कि बापूजी के लिए वह सब शायद इसलिए सभव होता था क्योकि उनका हृदय बहुत ही निर्मल और निश्छल था।

बाबा रामदेवजी का इष्ट

बापूजी जैन धर्म के होते हुए भी सभी धर्मो का आदर करते थे। साधु सत किसी भी सप्रदाय का हो परतु उनके लिए तो पूजनीय होता था। एक बार एक चौमासे के समय कोई ग्यारह साधु हाथी लेकर गाव आ गए। बापूजी ने उन्हे अपने खेत मे रखा और खुद भी वहीं रहने लगे। चार पाच दिन तक वे साधु रुके रहे। तब तक उन सब के खाने पीने का प्रबध हमारे ही घर से हुआ था और उनका हाथी भी हमारा मेहमान था। बापूजी पूजा पाठ मे पूरा विश्वास करते थे। तीर्थयात्रा मे भी उनकी आस्था थी। वे हरिद्वार भी गए। हम लोगो को भी उन्होने तीर्थयात्राए करवाइ। गाव के पाच सात जनो को साथ लेकर हम दो छोटे भाई बहिन को लिए हुए बद्रीनाथजी की तीर्थयात्रा की। कोलायत मे तो हर साल सपरिवार जाना उनके स्वभाव का अग था। ऐसी मानसिकता वाले बापूजी रामदेव बाबा से दूर कैसे रह सकते थे? कई बार वे पैदल चलकर रामदेवरा जाते रहे। रामदेवजी को उन्होने इष्ट रखा था। एक बार उनके गले मे गाठ हो गई थी तब रामदेवजी की मनौती मानकर उन्होने गले की गाठ से मुक्ति पाई। आज भी हमारे परिवार मे बाबा रामदेव का इष्ट है।

गाव मे जो मन्दिर बापूजी ने बनवाया वह श्री लक्ष्मीचदजी बाबाजी के आखो मे रोशनी आने पर आस्था स्वरूप बनवाया।

पिताजी श्री भैरूंदानजी की कुछ पारिवारिक झलकियां

हम परिवार वालो को भी कई बार यह आश्चर्य हुआ है कि हमारे बापूजी जैस व्यक्ति जो अपने गाव गाय और खेत व रेतो की दुनिया म, सामाजिक और राजनीतिक महमानो की खातिरदारी म चौबीसो घट व्यस्त रहते थ और अपने ध्यान म मस्त रहत थ वह व्यक्ति घर परिवार की छोटी छोटी बातो से अनजाना या अनमना नहीं रहते थे—यह उस जैसे व्यक्ति के लिए कैस समव होता था? हमार लिए तो आज भी यह आश्चर्य है। पिताजी अपने पत्रो म पूरा विवरण लिखत थे। हर सदस्य के बारे म जानकारी रखते ओर देते थे। घर परिवार के मनभेद और मतभेद के समाधान मे भी अपनी ऊची और बड़ी भूमिका निभात थ। शादी ब्याह म बरात आदि की व्यवस्था की पूरी चिता रखते थे। मेरे रिश्ते के लिए श्री कमल पुगलिया को दियातरा बुलाने क लिए जो पत्र पिताजी न मेरे ससुर साहब को लिखा उस पत्र म लिखा कि वे दियातरा कहा रुक, उसका पूरा समय लिखा। दिनाक 13 5 91 क पत्र स मालूम होता है कि बापूजी अपने परिवार के हर हफ्ते के समाचार जानने क लिए कितने सजग रहते थ।

बटवारा भी प्यारा

यह प्रसग हमारे परिवार का अतरग प्रसग है, किंतु सस्मरण लिखते समय इस प्रसग को हम अछूता नहीं छोड़ सकते। बापूजी ने जब महसूस किया कि भाइयो भतीजो पुत्रो और पुत्रियो के अधिकारो का उचित समय पर बटवारा हो जाना चाहिए तो दियातरा बीकानेर ओर असम आदि सब जगह की भूमि खेत मिल और दुकाने तथा अन्य चल अचल सम्पत्ति आदि सब का बटवारा भी इतने प्यार और न्याय क साथ किया कि किसी को एक शब्द भी आपत्ति उठाने का नहीं मिले। बटवारा करने का विषय गाव और शहर म चौपाल चर्चा का विषय भी नहीं बना यानी घर परिवार की गरिमा को उन्होने गजब का बनाए रखा। इस सारे प्रसग म बापूजी का एक जबर्दस्त गुण उभर कर आया कि उन्होने सदैव स्वय हानि को स्वीकार करके दूसरे को प्रसन्न रखा। बापूजी पारिवारिक सफलता के लिए जीवन म थोड़ी प्रतिकूलता आना भी ठीक समझते थे। व मानत थे कि इससे हमारा स्वभाव ज्यादा समभाव का बन जाता है।

प्रतिकूलता और हानि के क्षणो मे वे अपनी दृढ़ता धैर्य और लगन को बनाए रखते थ। इस दृष्टि से बैजनाथजी से हिम्मत नहीं हारने के लिए उन्होने कहा। जब तीस हजार का पप खोलने के बाद सही नहीं बैठ पाया तब पचास हजार का खर्च मोटर पर लगा। फसल भी नहीं हुई, लेकिन पिताजी ने अपनी जबान से कुछ भी नहीं कहा बल्कि खेत पर काम करने वाले बैजनाथजी को केवल यही कहा कि— हिम्मत मत हारो। ऐसे ऐसे प्रसग हमारी स्मृतियो को झकझोर देते है। अपने आवेश और आवेग की सीमा रेखा म बाधते हुए पिताजी कहा करते थे कि कढ़ाई मे दूध गरम हो रहा है तो उबाल तो आएगा लेकिन उफान बाहर नहीं निकलना चाहिए। उसी तरह

घर परिवार और समाज मे तनाव या कड़वाहट आए तो इतना नही कि मनभद हो जाए या सबध ही टूट जाए यानी उबला दूध तपेली क बाहर नही आए। कविवर जयशकर प्रसाद की पक्तिया को वे प्राय गुनगुनाते थ—

औरो को मनु हसते देखो हसा और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ

गाधी–विनोबा की प्रतिमूर्ति मेरे श्वसुर

▪ श्रीमती रतनी देवी छलाणी ▪

बात उन दिनो की है जब मेरी सगाई की बाते चल रही थी और मेरे पिताजी के साथ मुझे देखने लोग आया करते थे। एक दिन मै जब खिड़की से बाहर झाक रही थी तो मैने देखा कि पिताजी के साथ खादी की मोटी धोती कुर्ता एव बड़ी पगड़ी पहने एक आदमी आ रहा है। वे लोग मेरे बनेचदजी दादाजी की नई हवेली मे विराजित साध्वियों के दशन करने अन्दर गये तो मैने मा को कहा कि मा मा पिताजी के साथ एक गाव के जाट जैसा आदमी आया है। मा ने कहा आया होगा कोई तुझे देखने।

फिर वे जब घर मे आ गये तो पता भी चल गया कि वे अपने भतीजे के लिये मुझे देखने आये है पर मैने उन्हे देखकर यही दुआ की कि यह सबध न हो तो ही अच्छा क्योकि नोहर मे एक ओसवाल था जो गरीब था एव मोटे कपड़े पहनता था तथा खेती करता था। अत मेरा यह मानना था कि गरीब ही खेती करता है एव मोटे कपड़े पहनता है। इसलिये मैने चाचाजी मुन्नीलालजी से कुछ भी शर्म लाज न रखी सोचा ऐसा करने से सबध नहीं होगा। मा कई बार कहती कि बाजरी की रोटी बनानी सीख लो। सभव है खेतीहर वाली ससुराल मिल जाए। पर मेरा विचार यह था कि खेती और गरीबी पर्यायवाची शब्द है। अत मै तुनक कर कहती कि मुझे एसी ससुराल क्या मिलेगी और मैने रोटी बनानी नही सीखी। मेरे भाग्य स मुझे ऐसी ससुराल ही मिली जो खेती प्रधान परिवार था।

मेरी दादीजी पिताजी से पूछती कि यह दियातरा कहा है छोरी को कहा दी है तो पिताजी कहते मा मैने आपकी पोती को मगर के राजा के बेटे को दी है तब मेरा मन टिकता था। पर काकाजी के मोटे पहनावे से, घर के लोगो की कल्पना स मन दुखी होता था। परिवार का यह पहनावा तथा सादगी की बात मेरे श्वसुरजी की ही दन

है। घर परिवार मे उनका मान देखते ही बनता था। यह बात तो शादी के समय ज्ञात हुई।

सगाई तय हो जाने पर मेरे देवर श्री गणेशमलजी सिन्जारा (शृगार वेश आदि) देने व डोरा बाधने आये तो मेरे नाम से इन (श्री भवरलालजी छलाणी) का पत्र था जिसमे मुझे लिखा था कि अगर बिना दहेज सादगी से शादी करनी पसद हो तो डोरा बधवाना। मेरे लिये तो यह अनहोनी बात थी, सो मैं रोने लग गई।

मा ने कहा रोती क्या है तो मैने कागज थमा दिया। मेरी मा उस जमाने मे स्कोलरशिप लेकर 2 4 क्लास पढ़ी हुई थी सो पत्र पढ़कर कहा रोने की क्या बात है। वे जैसा कहगे वैसा हम कर देगे।

विवाह से 2 3 दिन पहले श्वसुरजी का पत्र आया कि शादी खुले मुह होगी। इस पर मेरी दादी मा ने कहा---- मालू (पिताजी) ऐसा क्या सबधी देखा है जो कभी कहता है दहेज नहीं लेगे, कभी कहते है खुले मुह शादी होगी ऐसा कभी होता है क्या मना कर दे। तब पिताजी ने समझाया कि मा अपने को क्या, वे अपनी बहू को जैसे रखे। आप अपने पोता की बहुओ को जैसा चाहो रखना। तब दादी समझी।

बरात ट्रेन द्वारा आई। न बेंड बाजा, न और कुछ। मात्र 25 30 आदमी। गानेवाला एक ढोली। जो पेटीबाजा बजाता व गाता।

मेरे पिताजी अपनी हठ के पक्के आदमी थे। व गलत बात पर झुकना तो जानते ही नहीं थे। अत नाहर का ओसवाल समाज उनसे नाराज सा था और सोचता था कि लड़की की शादी मे इनसे नाक रगड़वायेगे। किन्तु श्वसुरजी की सादगी और मगा सगे की जड़ की बात ने उन लोगो की आशा पर पानी फेर दिया।

श्वसुरजी बरात को डेरे मे रुकवाकर मेरे घर आ गये एव दादीजी से खूब बात की एव पिताजी को कहा कि हम सुबह 11 बजे व शाम को 6 बजे खाना मिल जाना चाहिये एव खाने की जगह बता दीजिये। पिताजी ने उन्हे खाने की जगह बता दी एव समय पर खाना तैयार करने की व्यवस्था कर दी। सुबह शाम बरात खाना खाने आती तो आधे आदमी खाना परोसते एव आधे खा लेते। मेरे पिताजी के आड़त की दुकान थी सो आड़तिये बहुत थे वे सामान पकड़ा देते। इस प्रकार श्वसुरजी के प्रताप से पिताजी की अकड़ कायम रह गई।

अब सुनिये सादगी व अनुशासन की बात। कहते है बराती बराती होते है। उच्छृखलता होती ही है। खाने मे बरबादी। यानि कई तरह से मेजबान को तग करना बरातियो का धर्म माना जाता है और बरात लाने वाला उन्हे रोक भी नहीं पाता। स्नान आदि मे पानी का बुरी तरह अपव्यय। पचायत भवन मे बराते उतरती थीं, वहा से पानी का नाला गाव के बीचो बीच कुई तक चला जाता था। पर मेरी बरात मे तो पानी पचायत भवन से 10 फुट तक ही गया। बरात के लिये तेल की शीशिया व नहाने धोने की साबुने दीं तो श्वसुरजी ने सिर्फ 1 तेल की शीशी एव 2 4 साबुन बटी रखी एव

बरात रवाना हुई उससे पहले बचा सामान घर पहुचा दिया। इस प्रकार मेरा विवाह व बरात नोहर के इतिहास म अजूबा ही था। लोग भी हक्के बक्के थे। पर यह सब श्वसुरजी की सादगी एव अनुशासन का ही प्रताप था। मेरी मा जिन्दा रही तब तक कहती थी कि ऐसा सगा कहा मिलता है।

मे जब ससुराल पहुची तो वहा का माहौल दखकर और ही दग रह गई। श्वसुरजी चार सगे भाई एव दो चचेरे भाई थे वहा 6 भाइया का परिवार था। जो लगता था कि एक ही भाई का परिवार है। पता नहीं लगता कि कौन साथ हे, कौन अलग। खुले मुह की (बिना पर्दे की) गाव दियातरा मे यह पहली शादी थी इसलिये गाव की औरता के झुण्ड के झुण्ड देखने आए। मर साथ नोहर से एक औरत 'ओलर्णी' आई थी।

घर पहुची ता दखा कि बाड़ मे सैकड़ा गाय बछड़। फिर खेत देख। तब मेरी समझ म आया कि खेती करना गरीब का ही काम नहीं धनवान भी खेती करते ह। यह बात भी समझ म आई कि हाथ से काम करना छोटा काम नहीं है चूकि मेरी ससुराल म श्वसुरजी तक हाथ से गाय दूहना गायो का पूजालना (सहलाना) स्वय करते थे। सादगी तो यहा तक थी कि अपने कपड़ा को कभी इस्तरी नही करवाते थे। बिना मिर्च मसाले की सब्जी रोटी खाना उनका नियम था। घर पर काम काज के लिय हाली बालदी के होते हुए भी हाथ से काम करते देखकर मेरे साथ आई औरत को तो बहुत ही अचभा होता था। उसे यहा दस दिन रहना पड़ गया। अत उसने सब कुछ देखा।

जब हम वापिस नोहर गये तो पचा ने उस ओरत को बुलाकर मेरे ससुराल के बारे म पूछा ता उसने कहा— मे आज तक जितनी लड़किया क साथ गई जितना कुछ देखा पर ऐसा घर व माहौल कहीं नहीं देखा। वहा तो रामराज्य है रामराज्य। रतनी के श्वसुरजी को देखने से तो ऐसे लगते हैं मानो कोई साधारण सा आदमी है। पर उनका दिल कितना बड़ा है यह तो उनके घर जाने से ही ज्ञात होता है। वे काम करने वालो को छोटा नहीं मानते। सबको जीकारे से बोलते है चाहे वह दस साल का बच्चा भी क्या न हो। तब सभी ने कहा कि मालचद आदमी का पारखू है।

पर मेरे भाग्य म ससुरजी स प्रत्यक्ष बातचीत करना अल्पकालिक ही रहा। चूकि सामाजिक व पारिवारिक दबाव के सामने मुझे वापिस घूघट निकालना पड़ा व उनसे बातचीत करना बद करना पड़ा पर उनके क्रिया कलाप व रहन सहन तो मेरे सामने ही होते थे। मेरा अहोभाग्य था कि मुझे ऐसे श्वसुरजी मिले जिन्हे मैं किस नाम से पुकारू—सत पुरुष कहू या गाधी विनोबा की प्रतिमूर्ति समझ मे नहीं आता।

इस बारे मे मेरी देवरानी चद्रा बहुत कुछ बता पायेगी चूकि वह पढ़ी लिखी होने के अलावा उस जमाने मे आई जब श्वसुर एव नई बहुओ को बातचीत करने की आजादी को सामाजिक पारिवारिक मान्यता काफी हद तक मिल चुकी थी।

उन महापुरुष को शत शत प्रणाम।

दैदीप्यमान नक्षत्र

■ श्रीमती नयनतारा छलाणी ■

हम जिन्दगी जीत है कर्म करते है पाते है खाते भी है। अपने ही परिवेश म इतन व्यस्त हो जाते है कि भान नहीं होता कि हमारे अपने निकट और आसपास भी कुछ ऐस व्यक्ति और व्यक्तित्व है जिनसे हम सचमुच कुछ सीख सकते है, कुछ पा सकते है और अपने जीवन को अच्छा बना सकते है। एसा ही व्यक्तित्व था पिताजी श्री भैरूदानजी छलाणी का जो दिखने म सादगीपूर्ण साधारण लगते थे, परन्तु सम्पूर्ण रूप से समाज के लिय गाधी क आदशा क लिय गा रक्षा क लिय समर्पित थ। इसके साथ साथ उनका एक ओजस्वी व्यक्तित्व था एक पारिवारिक मुखिया के रूप म भी। उनके गाधीवादी विचार, अटूट आत्मविश्वास जीने की और लगातार काम करने की तीव्र उत्कठा सबको प्रभावित करती थी। वैस ही परिवार के प्रमुख क रूप म भी उन्हाने अपनी जिम्मेदारिया बखूबी निभाई ही नहीं सबके लिय ऊर्जा और प्रेरणा के अक्षय स्रोत बने रहे।

अपने चार सगे भाइया और दो चाचाजी क लड़का म वे सबसे बड़े थे। अपने भाई दयालचन्दजी की असमय मृत्यु के उपरात उनके परिवार का सम्पूर्ण दायित्व देखभाल बच्चा का विवाह एव व्यापार मे सबको साथ लेकर चलना यह सब उनको पारिवारिक जिम्मेदारी का पूर्ण अहसास होने का प्रमाण था। भाई आसकरणजी के परदेश म जलवायु न मानने पर उन्हाने कभी उन्ह व्यवसाय के लिये दिसावर जाने पर विवश नहीं किया। अपन रचनात्मक और सामाजिक कार्या क साथ साथ व्यापार भी सम्भालते रह। परिवार के विस्तार होने पर बच्चा क लिये नये व्यापार के लिय श्रीगगानगर म अनाज का व्यापार दीनहटा (प बगाल) म तम्बाकू का व्यापार फिर 1962 म भारत चीन युद्ध के समय जब भारत क लिय तेजपुर (पुराना फार्म) खाली करने की नौबत आ गयी और जरूरत आ पड़ी तब नया ही साहसिक उद्यम प्रारम्भ किया। बीकानेर म ऊन का धागा बनाने की मील लगाइ। इसी तरह सामूहिक व्यापार क माध्यम स पूर परिवार को जाड़ कर एक आदर्श बृहद परिवार का सचालन किया जिसक मुखिया वह स्वय थ। आज के घोर व्यक्तिवादी प्रवाह म यह अकल्पनीय लगता है। समाज म छलाणी परिवार एक आदर्श सयुक्त परिवार के रूप म जाना जाने लगा।

सिर्फ व्यापार ही नहीं, आत्मीय भाव स परिवार क सदस्य एक दूसर स जुड़ थ। उनका प्रत्येक निर्णय परिवार क लिय महत्त्वपूर्ण हा जाता था। निश्चय ही वे अपने विचार आरोपित नहीं करते थे। पर यह उनका प्रभाव था कि भाईजी (श्री भैरूदानजी) का निर्णय अतिम माना जाता था।

उनके साथ सम्पर्क के कुछ क्षण ऐसे है जो आदश के रूप मे सदा मेरे मानसपटल पर अकित है। मे ओर मर पिताजी आसाम से चार दिन के लम्बे सफर से बीकानेर आये थ स्नान आदि से अभी निवृत्त हुए ही थे कि सुना श्री भेरूदानजी व आसकरणजी (मेरे श्वसुर) आये है। मेरे रिश्ते की बात पत्रो द्वारा चल रही थी उन दिनो लडकी वाल के घर लड़के वालो का बिना आमन्त्रण आना वह भी तब जब अभी रिश्ता तय होना बाकी था, अटपटा सा लगता था। पर उनकी सादगी और समभाव देख कर मेरे पिताजी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। आपसी रिश्ता मे दभ का भाव त्याग कर उन्होने जो मधुरता कायम की सगाई मे सगुन के रूप मे सिर्फ दो रुपये व नारियल स्वीकार कर फिर पूर्ण सादगी किन्तु अति आत्मीय भाव से मुझ अपने परिवार की पुत्रवधू बना कर लाये उन सब का प्रभाव मुझ पर व मेरे पिताजी पर सदा बना हुआ रहा है।

पूज्य भैरूदानजी गाधीवादी ग्रामोन्मुखी विकास व सादगी के पक्के समर्थक थे। ग्राम सस्कृति मे पले बढ़ थे खादी पहनते थे जबकि मेरे पिताजी बड़ आधुनिक विचार, पाश्चात्य व भारतीय सस्कृति का गहन अध्ययन व उनकी तुलनात्मक उपयोगिता को आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे देखन वाले थे पर सदाचार व नैतिक मूल्यो म अपन विचारो के प्रति दोनो म समान रूप से दृढ़ता थी और यही एक दूसरे को प्रभावित करती रही।

जैसा मैने दखा लडकियो की शिक्षा के प्रति वे बड़े जागरूक थ। मै पहली पुत्रवधू उनक घर आई जो ग्रेजुएट थी। किन्ही कारणवश मेरे लिये आगे पढ़ाई जारी रखना सभव नही हो सका तो वे इसका मेरे सामने अफसोस किया करत थे। जब देवर फूसराजजी का विवाह हुआ देवरानी चन्द्रा आई तो उन्होने मेरे श्वसुरजी से दोनो का एक साथ एम ए मे प्रवेश दिलाने की बात की। मेरे लिये यह सभव नही हो सका पर वे उच्च शिक्षा के लिये सदा प्रेरणा देते रह। ज्ञान के प्रति उनकी तीव्र उत्कठा थी। यह बात मेरे मन को और अधिक प्रभावित कर गयी जब कई ऐसे क्षणो मे मैने उनका सहयोग पाया जहा मन अपन को असहज महसूस किया। बात उन दिनो की है जब रेडियो मे सुना, अखबारो मे पढ़ा यूरी गागरीन व वेलेन्तिना तेरिश्कोवा ने चाद पर कदम रखा है। यहा गाव के माहोल मे मैने यह बात उत्साहपूर्वक सबको सुनाई तो इसे मेरी अज्ञानता मान कर उपहास किया गया परन्तु उन्होने मेरी सराहना की।

उनकी कुछ स्मृतिया ऐसी है जो उनके दृढ़ व्यक्तित्व के रूप मे सदा मुझ प्रभावित करती है वह थी उनकी कर्मशील रहने की तीव्र इच्छाशक्ति जो उनक घोर शारीरिक कष्ट म भी अटूट रही। एक बार जब उनक कूल्हे की हड्डी टूट गई और व अपना इलाज कराने दियातरा से बीकानेर आये व करीब डेढ़ महीना हमारे घर पर ठहरे। उन कष्टदायक दिनो मे भी वे सदा कहते थे कि मुझे जल्दी ठीक होना है मुझ काम करना है या कि मेरा अमुक काम बाकी है। बुढ़ापा व बीमारी म भी उनकी यह

सकारात्मक सोच उनके जीवन जीने और काम करने की तीव्र जिजीविषा की ओर इंगित करती थी। हड्डी टूटने के साथ साथ अनेक शारीरिक व्याधियों से भी वे ग्रस्त थे। जब कभी अपने को अधिक अशान्त महसूस करते, रामायण का पाठ करते थे। राम के प्रति उनकी इतनी अटूट आस्था थी कि कभी कभी वे रात रात भर रामायण का पाठ करवाते। बिस्तर पर पड़े पड़े ही सही, अपनी सामर्थ्य का उन्होंने भरपूर उपयोग सामाजिक सेवाओं के लिये किया और अध्ययन में अपने को लगाये रखा।

पूज्य बापूजी इधर सच्चे समाजसेवी के रूप में क्रियाशील थे तो मा भी अन्नपूर्णा की तरह मेहमानों की आवभगत, सेवा सुश्रुषा एवं पारिवारिक रिवाजों को आत्मीयता से निभाने में लगी रही। कहीं कहीं कुछ सामजस्य न होने पर भी वे एक दूसरे के पूरक थे पर ऐसे अवसरों में बापूजी का फैसला ही अतिम हुआ करता था। पुत्रवधू चन्द्रा को डाक्टरेट करवाने का फैसला उनका अटल था।

इसी तरह अपनी शारीरिक व्याधियों के इलाज में देशी दवाईयों का प्रयोग करना उनका अपना दृढ़ निश्चय था। वे देशी इलाज के प्रबल पक्षधर थे। एक बार जब वे क्षयरोग से आक्रान्त हो गये। उनके पुत्र, भाई आशाकरणजी के आत्मज डॉ धनराज (मेरे पति) और मा आदि सबने समझाया ऐलोपैथी इलाज के लिये। हालत बिगड़ती देखकर ऐलोपैथी इलाज का निर्णय लेना पड़ा। हालत सुधरने लगी पर बाद में एक दिन उन्होंने कहा जानते हो धनराज मैंने एक सपना देखा पहले में जैसे जमीन पर चल रहा था और अचानक एक गहरे कुए में डूब गया। शायद यह उनकी आस्थाओं से विचलित होने की मजबूरी की एक पीड़ा थी। परन्तु आस्था टूटी नहीं थी।

मेरे मन में शुरू से ही उनकी एक दृढ़निश्चयी आडम्बरहीन, परिग्रह के प्रति अनासक्त एवं सग्रह के लोक मगल के लिये उपयोग की दृष्टि से सम्पन्न अति सरल व्यक्तित्व में असाधारण नैतिक आध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण चिन्तक एवं समाज सेवक की बहुआयामी दैदीप्यमान छवि है। जब जब भी उनके दर्शन हुए, मिलना हुआ सान्निध्य मिला, इस छवि में निरन्तर निखार ही आता गया। मेरे मन में उनके प्रति श्रद्धा और भी अधिक सघन होती गयी। मेरे परिवार का वह वयोवृद्ध महापुरुष जाते जाते एक सदेश सबके लिये छोड़ गया कि—

> इन्सान तुम जो चाहो सो पा सकते हो,
> जरूरत नहीं मागो तुम भगवान से।
> नेकी हौसला सब्र को बनालो साथी
> गर जीना चाहते हो मेहनत और शान से।

दैदीप्यमान नक्षत्र को नयनतारा का प्रणाम।

बापूजी मेरे श्वसुर

■ डॉ (श्रीमती) चन्द्रा छलाणी ■

उन्हें सब गांधी बापूजी कहते थे। बात 16 मई, 1967 की है। मेरे विवाह की बातचीत उनके कनिष्ठ पुत्र के साथ हुई। उन्हीं दिनों उन मील में मुझे बुलाया गया एवं पहले मिलते ही उनके पुत्र के साथ विवाह पक्का हो गया। वह क्षण आज भी मेरे स्मृति पटल पर तैरता है। वे लम्बे, पुष्ट, श्यामवर्णी थे। उन्होंने मोटी खादी की सफेद कमीज एवं धोती पहन रखी थी। उनके नाक में मोटा सा तिल भी था। मुझे उनका व्यक्तित्व कुछ अनोखा सा लगा, मेरा माथा सहसा उनके चरणों की ओर चला गया। मेरे कानों में इतना शब्द ही पड़ा— अच्छा तो बात पक्की। मैं सुनकर हतप्रभ रह गई क्या कह रहे हैं? मैं शब्दों में अर्थ की तलाश रही नहीं। उनके मील का घरेलू वातावरण भी एकदम साधारण एवं आत्मीय लगा। कहीं कोई औपचारिकता नहीं। थोड़े समय पश्चात् मुझे बताया गया कि ये मेरे श्वसुर श्री भैरूदानजी छलाणी हैं ऊन एवं तम्बाकू के व्यवसायी।

दूसरे दिन (17 मई 1967) में ही सामान्य औपचारिकता से मेरा विवाह सम्पन्न हो गया। अत्यंत सादगीपूर्ण ढंग से। बिना बाजे के बारात आई। दालान में कच्ची रसोई बनायी गई। बाराती भी सभी सहज सामान्य, दिखावट का कहीं नाम नहीं। मेरी बरी की साड़ी सफेद रंग की थी जिसे बापूजी लाए थे। मेरे परिवार के लोगों ने कहा परिवार सादगीपूर्ण है अन्यथा बरी कहां सफेद रंग में आती है। मैं प्रसन्न थी कि चलो पहनावा पौराणिक परंपरा का नहीं है। शायद यहां भी रूढ़िवादिता नहीं होगी। बहू की सामान्य अगवानी के पश्चात् बड़े रूप में स्वागत समारोह किया गया। उसमें सभी प्रकार के वक्ता थे। सामाजिक कार्यकर्ता, राजनैतिक नेता, महाविद्यालय के प्राचार्य, अध्यापक, ग्रामीण अंचल के सामान्य जन, पारिवारिक सदस्य, सामान्य कार्यकर्ता। मुझे आभास हुआ इस परिवार का परिवेश अलग है। परिवार में घूंघट तो था ही नहीं। प्रीतिभोज की भोजन व्यवस्था भी एकदम सामान्य थी। गुड़ का हलुआ, पकौड़ी, सब्जी, पूड़ी इत्यादि। कहीं भी दिखावा या आडंबर नहीं। चूंकि चीनी कंट्रोल में मिलती थी, इसलिए काले बाजार से सामान लाकर मिठाई बनवाने के पक्ष में मेरे श्वसुरजी नहीं थे। सादगीपूर्ण भोज का एक अनुपम उदाहरण था वह आयोजन।

मेरी बी ए की परीक्षा का परिणाम आ गया था। आगे पढ़ने की मेरी इच्छा देखकर स्वीकृति दे दी गई। बापूजी स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे। मैंने उनकी प्रेरणा एवं इच्छा से ही एम ए, पी एच डी की। उनके गांधीवादी विचारों के कारण घर के सभी सदस्य भी उच्च शिक्षा के पक्ष में थे। हमारे परिवार की सभी लड़कियां बी ए से अधिक पढ़ी हुई हैं।

मेरे श्वसुरजी समय समय पर मेरे साथ गाधी साहित्य एव उनके सिद्धात और आदर्शों की भी चर्चा करते थे। चर्चा परिचर्चा मे पौराणिक कथा प्रसगो एव रामकथा एव महाभारत आदि की घटनाओ का उल्लेख किया करते थे। इसके अतिरिक्त वे जैन एव बौद्ध धर्म की बातो का उल्लेख भी करते रहते थे। इसका कारण था कि बापूजी स्वान्त सुखाय अध्ययन करते ही रहते थे। पुस्तक हाथ मे कोई भी आ जाए उसको पढते थे। कितनी ही पाक्षिक, मासिक, अर्द्धवार्षिक एव वार्षिक पत्रिकाओ के सदस्य थे। प्राय ये पत्रिकाएँ या तो धार्मिक होती थीं अथवा गाधी जीवन दर्शन एव स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित। पुस्तके तो खरीदते एव मगवाते ही रहते थे। उनका निजी पुस्तकालय था जिसमे विभिन्न विषयो की किताबे सगृहीत थीं। अध्ययन उनका व्यसन था। वे रेल में बस मे गाड़ी मे पढते ही रहते थे। समाचार पत्र सदैव पढते थे। पढ़ने के पश्चात् वे उन पर समयानुकूल प्रतिक्रियाएँ भी व्यक्त करते थे। तत्युगीन युवा पीढ़ी की मानसिकता पर भी अपनी समीक्षा प्रकट करते थे। पुस्तके उनको आकर्षित करती थी। यही कारण है कि 1985 से 1995 तक का लम्बा समय उन्होने बिस्तर पर निकाला किन्तु कभी ऊबे नहीं। नित्य प्रति डायरी लिखने की उनकी आदत थी। दैनन्दिनी लिखते थे। उनके जीवन के प्रसगो का उल्लेख उनकी दैनन्दिनी मे मिलता है। अच्छी पुस्तको के प्रसगो का उल्लेख भी उसमे लिखा मिलता है। कभी कभी वे हम परिजनो को वह सुनाते भी थे और इस प्रकार उन प्रसगों के माध्यम से शिक्षा देते थे।

विवाह के थोड़े समय पश्चात मेरे पति पानीझरा की व्याधि से पीड़ित थे। वैद्य की सुश्रुषा थी ठीक होने मे समय अधिक लगा। मेरे पति कमजोर बहुत हो गये। दो माह छुट्टी लिए हुए हो गये पुन अध्ययन के लिए जयपुर जाना था। विश्वविद्यालय खुला था परीक्षाएँ पास आ रही थी। बापूजी हमे जयपुर जाने के लिए स्टेशन छोड़ने आए। मार्ग मे महात्मा गाधी की बीमारी का प्रसग सुनाया एव किस प्रकार बा ने बापू की बीमारी मे अत्यत ही धीरज एव सयम से सेवा की यह बताया।

कथा कहने एव सुनने मे उनकी रुचि थी। सत महात्मा एव विशिष्ट व्यक्तियो की सभाओ मे जाते ही रहते थे। भेटवार्ता के लिए आए हुए व्यक्तियो के साथ कथा प्रसगो का उल्लेख करते ही रहते थे। धैर्यपूर्वक उनकी कथाओ को सुनते थे। रोचक प्रसगो पर हसते भी थे। बच्चो को साहस की कहानिया भी सुनाते थे।

लोक उक्ति, बातो एव विश्वासो का उल्लेख भी बापूजी हमेशा किया करते थे। अपने चौखले मे हुए किसी महापुरुष अथवा विशिष्ट व्यक्तित्व की बात हमेशा सुनाया करते थे। उनमे एक थे नारायणदासजी बाबोजी। उनके द्वारा दिखाये गये चमत्कारो का वर्णन भी करते थे। नारायण गुरु के प्रति बापूजी में अपार श्रद्धा थी। वे सुगनी (जो सुगन देखता है) को मानते थे एव ज्योतिष मे भी उनकी पूर्ण आस्था थी। ग्रह नक्षत्रो के प्रभावो पर विश्वास करते थे किन्तु अन्धविश्वासी नहीं थे। वे मेहनत मे

विश्वास करत थ। कृषि कार्य के लिए शुभ वला नक्षत्र दखत थ। पचाग क ज्ञाता थ। मुहूर्त्त दुघड़िया आदि स्वय ही बतात थ। गहुकाल इत्यादि म कार्य करन का निषध करत थ। नया पचाग जन्त्री हमशा समय स पहल ही मगवा लत थ।

आस पास क गावा क एव दूर दराज क लाग बापूजी स मिलन आत थ। व लाग विभिन्न सम्प्रदाय, जाति, वर्ण, धर्म एव वर्ग क हात थ। व सभी का पूरा सम्मान दत थ। सभी क अनुरूप एव अनुकूल बातचीत करत थ। वृद्ध बालक युवक सभी स खूब बात करत थ। रातिहर स खती की व्यावसायिक स व्यवसाय की महिलाआ स उनक क्रिया कलाप एव वहा की स्थिति क बार म नवयुवका स उनकी याजनाआ क बार म, बच्चा स उनकी दिनचर्या क बार म एव विद्यालय, महाविद्यालय म क्या हा रहा है उसक बार म पूछत थ। व अद्यतन जानकारिया रखत थ। इसलिए कभी आउट आफ डट नहीं हुए। बाजार की स्थिति का पूर्ण ध्यान रखत थ। व्यावसायिक काय छाड़न क पश्चात् भी भाव, मूल्य व्यवस्था आर्थिक स्थिति पर खूब चर्चा करत थ। बजट पूरा सुनत पढ़त एव फिर उस पर टिप्पणी भी करत थ। व व्यापार जगत की तत्कालीन मनावृत्तिया स परिचित थ। बाजार की भाव व्यवस्था पर भी सोचत रहते थ। श्रमिक स श्रम क बार म पूछत साग भाजी कपड़ा सिलाई उनकी दिनचर्या अध्ययन रल भाड़ा क्या ह बस भाड़ा क्या है बाजार की स्थिति क्या है। इन पर चचा करत थ। भावा का प्रभाव जीवन पर किस प्रकार पड़ेगा पूछत थ प्रभाव कहा तक आया, लाग अपना खर्चा किस मद पर ज्यादा करन लगे एसी अनेक बाता पर बराबर चर्चा करत थ। यह मानना पड़ेगा कि व कुशल व्यापारी थे जिनकी दृष्टि आथिक प्रभावा एव परिणामा पर रहती थी।

समाज की स्वस्थ परपराआ पर ता उनका विश्वास था किंतु रूढ़ि निर्वाह हतु अनावश्यक पैसा खच करना उन्ह अखरता था। इस हतु जो लोग खर्च करते थे उनकी आलोचना सीध सरल मन स सहज भाव स करते थे। सामाजिक रीति रिवाजा का बढ़ाने म उन पर पैसा व्यय करने पर विश्वास नहीं करते थ। इसलिए दहेज छूछक सीख जैसी रूढ़िया का अपने परिवार म बहिष्कार किया। मितव्ययी थे अपरिग्रही थ। सच्च अथा म जैन धम के सिद्धाता म विश्वास करत थ एव इन्ह जीवन म अपनात थ। वे सही मायने म अणुव्रती थे। वैसे अपने आपको किसी एक सम्प्रदाय का नही मानकर कवल मानव ही मानत थ। धर्म म मानव धर्म का ही श्रेष्ठ समझत थ। शेष सभी का मनुष्या की ठेकेदारी कहते थे। व आवश्यकता होने पर ही वस्तुआ को खरीदने पर बल देत थ। उन्हाने इस नियम का पालन भी यथावत किया। हमारे घर म कोई अनावश्यक वस्तु देखने का नहीं मिलती थी परतु जिस वस्तु की आवश्यकता दैनिक जीवन म पड़ती थी उसका अभाव उनको सहनीय नही था। घर म दूध के लिए अच्छी गाय हमेशा रह इस बात का खयाल रखते थे। इसके लिए अच्छा साड पालते थे। उन्हे कुतर नीरा शुद्ध मिलता रहे इसके लिये खेती करते थ। खान पान शुद्ध

सात्विक रहे शरीर को पौष्टिक तत्त्व मिलते रहे—वे इस बात का ध्यान भी सदैव रखते थे। इसलिए हमारे यहां भोजन में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक खाद्य पदार्थों का प्रयोग बहुत कम था।

वे पेट भर खाने में तो विश्वास रखते थे परन्तु पेटू की तरह खाने के लिए खाने में उनका विश्वास नहीं था। बच्चों के लिए हमेशा कहते थे, कि उनके साथ जबरदस्ती नहीं करें जब उनको भूख लगेगी स्वतः ही खाना मांग लेंगे। निरर्थक मनुहार करके ठूस ठूस कर खिलाने में उनका विश्वास नहीं था। परन्तु अपने यहां से किसी को भी भूखा भी नहीं जाने देना चाहते थे। उस वक्त आने वाले से कहते थे कि भोजन का समय है भोजन कर के जाये। अपना ही घर समझे। इसलिए सासूजी पूरे ही दिन रसोई के कार्य में ही व्यस्त रहती थीं।

गांव के लोग छाछ लेने आते थे तो किसी को भी मना नहीं करते थे। जिस दिन छाछ नहीं होती थी तो कहते दही दे दो, क्योंकि इसके घर में लगावण की आवश्यकता है इसके बच्चे प्रतीक्षा कर रहे हैं। गांव के सभी परिवार गाय रखें, उसका घी दूध खायें उसकी सेवा करें यह उनकी इच्छा रहती थी। उन्होंने अपने परिवार की सभी बेटियों को विवाह के समय गाय ही दान में दी। गऊ दान के नाम पर थोड़ी सी नकद राशि देकर परंपरा की लीक नहीं पीटी।

वे सभी का विशेष आदर करते थे। अपने सगे संबंधियों को बुलाना उन्हें अच्छा लगता था। यहां तक कि गांव में भी किसी का समधी (सगा) आता था तो उनका मन उनका आदर सत्कार करने का करता था। वे उसे घर पर बुलाते, खिलाते पिलाते खेत दिखाते। यही नहीं उनको और अधिक रुकने का आग्रह करते थे।

बापूजी बड़े उदारवादी दृष्टिकोण वाले थे। मुझे उस घटना का स्मरण होता है जब बापूजी ने काले ग्वार का विशेष बीज विकसित किया था। उसकी योजनापूर्वक फसल लेते थे। उनके ग्वार की बाजार में अलग ही पहचान थी। एक बार ग्वार की 40 बोरियां चोरी हो गईं। परन्तु ग्वार की अलग पहचान के कारण चोर का पता लग गया। वह उनके यहां खेत पर काम करने वाला व्यक्ति ही था। उसके यहां ग्वार नहीं मिला। वह बेचकर रुपये खर्च कर चुका था। उन्होंने फिर भी पुलिस में रपट नहीं लिखाई। वे किसी कार्यवाही के पक्ष में नहीं थे परन्तु उनके समधी के राजनैतिक दबाव से पुलिस ने कार्यवाही की व चोरी के बदले में जमीन जब्त करवाली तथा बापूजी को सुपुर्द करनी चाही परन्तु बापूजी ने उसे लेने से इन्कार कर दिया एवं कहा मेरी चीज तो गई जमीन लेने पर उसकी आमदनी का जरिया भी बंद हो जायेगा तब और अधिक चोरी करने को विवश हो जायेगा। अगर उसके पास जमीन की सुविधा होगी तो कभी न कभी स्वतः ही चुकारा कर देगा। उन्होंने जमीन स्वीकार नहीं की। अपना अहित होते हुए भी अहित करने वाले के हित की चिंता करने वाला उदात्त दृष्टिकोण कहां मिलता है।

तिनसुकिया मे एक बार हमारे यहा चोरी हुई। हजारो रुपया के वी सी आर केमरा आदि कीमती चीज चोर ले गये। बापूजी को पत्र द्वारा सूचना भेजी सोचा था सहानुभूतिपूर्ण पत्र आयेगा या कहेगे कि तुम लोगो ने ठीक से ध्यान नहीं रखा इसके स्थान पर उनका पत्र आया कि शायद तुम से ज्यादा उसको इन सबकी जरूरत थी इसलिए ले गया। इसलिए अपनी आवश्यकता कम से कम रखनी चाहिए। वे अनावश्यक परिग्रह के विरोधी थे और सम्पत्ति का महत्व समाज के हित मे उपयोग मे ही देखते थे।

चूकि वे मृत्युभोज पिडदान इत्यादि कर्मकाडो म विश्वास नहीं करते थे इसलिए अपने मा पिताजी का श्राद्ध नहीं करके उन्होने इस परपरा को तोड़ने का प्रयास किया। वे भीरु नहीं थे। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए झूठा दिखावा नहीं करते थे।

मृत्यु के पश्चात् आत्मा पुन जन्म ले लेती है इस पर वे विश्वास करते थे। उम्र प्राप्त कर मृत्यु पाने पर दु ख का अनुभव कम करते थे। एक्सीडेंट द्वारा मृत्यु होने पर आज की व्यवस्था को कारण मानते थे। विज्ञान की उन्नति के समर्थक तो थे किन्तु यह अध प्रगति विध्वस अवश्य करेगी इस बात को भी वे मानते थे। इसलिए सामान्य जीवन जीने के लिए दिखावारहित जीवनशैली रखने के पक्ष म थे।

बापूजी सादगीप्रिय होने के कारण आभूषणो, सोने चादी एव विलासिता की सामग्री से परहेज करते थे। जो लोग इन सब वस्तुओ का प्रयोग करते थे उनके लिए कहते थे कि ये लोग सामतवादी विचारो से जुड़े है। उनका सोच था सामतीवादी भावना से समाज टूट जाएगा बिखर जाएगा।

उन्होने अपने छोटे पुत्र को अपने बहुत बड़े व्यवसायी मित्र (श्री द्वारकाप्रसाद जी बगड़िया) के यहा व्यवसाय सीखने भेजा। साथ म पुत्रवधू (मै) भी गई। पुत्रवधू को समझाया कि सभव है उनका परिवार बहुत ऐशोआराम की जिन्दगी जीता हो किंतु तुम्हे अपना जीवन सादगीपूर्ण रखना है। उनकी अच्छाइयो को ग्रहण करना। देखा देखी नहीं करनी है। उनकी यह सीख मेरे जीवन म बहुत काम आई। मेरे मन से हीन भाव निकल गया। जिससे मेरे व्यक्तित्व मे ठोस विश्वास पैदा हुआ।

वे कहते कि आवश्यक आभूषण ही नारी को धारण करने चाहिए क्योकि सोना हमारे शरीर को छूता है जिससे कितने ही रोगो का निवारण होता है, नाड़ी तत्र दबा रहता है इसलिए पहनना चाहिए। स्वय भी अपनी नाक म मयूर पख के सोने की बाली पहनते थे। जिससे श्वास रोग न हो।

वे नारी स्वतत्रता के परम समर्थक थे। इस कारण उस समय म भी उनकी बहुए बिना पर्द के रहती थीं। वे अपनी बहुओ से हर विषय म खुलकर बात करते थे। उनको सत् साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देते थे। आगे पढ़ने का अवसर देते थे। मुझे भी आगे

अध्ययन करने का अवसर मिला। मेरी शिक्षा की पूर्णता म उनका पूर्ण सहयोग था। मुझे नौकरी करने की स्वीकृति भी दी। मै 1972 से असम के तिनसुकिया शहर म हिन्दी प्राध्यापिका के रूप म कार्यरत हू। यह उनकी ही गरिमा थी। वे अपने घर म कार्य करने वाली महिलाओं का पूरा ध्यान रखते थे कि उनके घर म दोनो समय चूल्हा जलता है या नहीं बच्चे स्वस्थ है या नही उन्हें खान पीने की चिंता तो नहीं है। अपने यहा कार्य करने वाली कई महिलाओं के बच्चो को अपने यहा रख कर पढ़ाया। उन्हें उच्च शिक्षा दिलवायी। उनमें से कुछ आज अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं। कुछ शिक्षा के क्षेत्र म भी गये।

पहले पढ़ने की सुविधा ग्रामवासियो को नहीं मिलती थी। प्राय गावो म स्कूल नहीं थे अत उनका पढ़ना नहीं होता था। ऐसे बच्चो को बापूजी अपने घर रख कर पढ़ाते थे। और उन्हे अपने परिवार का ही सदस्य मानते थे। उनके साथ एक ही चौके म खाना खाते थे। आज वे सभी लोग उनको भूल नहीं पा रहे है। उन बच्चो मे से कितनो को शहर म रखकर भी उनको उच्च शिक्षा दिलवाई। रचनात्मक सहायता किसी भी तरह की हो वे सदैव इस हेतु तत्पर रहते थे। घर म काम करने वाली महिलाए उनको बड़े भाई साहब के नाम से ही सम्बोधित करती थीं।

उन्हे ग्रामीण संस्कृति से विशेष लगाव था। भारत की आत्मा गाव म बसी है वे इस बात को मानते थे। इसीलिए उन्होने अपना स्थाई निवास गाव म ही रखा। शहर मे आना जाना होने पर भी शहर म घर नहीं बनवाया। अपने व्यवसाय के लिए मिल बनवाई वह भी बीकानेर शहर से बाहर। शहरी वातावरण म मनुष्य मानसिक एव शारीरिक पगु हो जाता है वे ऐसा मानते थे।

इसी सोच के चलते राजस्थान व सुदूर आसाम बगाल म उन्होंने छोटे कस्बो मे ही अपना व्यवसाय फैलाया। उनके व्यवसाय के सम्बन्ध म यह भी जानने योग्य बात थी कि उन्होने अपने सभी भाइयो की समान हिस्सेदारी रखी। सयुक्त कुटुम्ब की भावना के अनुरूप कम या अधिक प्रतिभासपन्न म कोई भेद नहीं किया।

बापूजी के खान मे एकदम सादगी थी। वे बिना लाल मिर्ची की सब्जी खाते थे। उसम घी तेल भी कम होता था। गरिष्ट भोजन नहीं करना चाहिए यह उनका कहना था। वे सुपाच्य भोजन लेने के पक्षधर थे।

त्यौहारो पर अनावश्यक गरिष्ट भोजन बनाने के पक्ष म नहीं थे लेकिन जो वस्तुए आवश्यक होती है उनको बनाते रहना चाहिए ऐसा उनका मानना था। क्योकि इससे बच्चो को भोजन वैविध्य का भी पता चले। वे बाजार का बना हुआ चटपटा एव अखाद्य भोजन नहीं करते थे। जीवन के बाद के वर्षो म, आत की तकलीफ होने पर वे बकरी का दूध काम म लेते थे। भोजन विषयक उनकी बात तर्कसगत होने के कारण सभी को प्रभावित करती थीं।

शारीरिक दृष्टि से बापूजी स्वय हृष्ट पुष्ट थे। युवावस्था मे तो एक हाथ से बलिष्ठ बैल को भी पकड़ सकते थे। एक बार ऐसा हुआ भी कि एक बहुत हृष्ट पुष्ट बैल किसी के काबू मे नही आ रहा था—बैल को सम्हालने वाले हाली ने आकर कहा कि बापूजी बैल पकड़ मे नही आ रहा है, इसे बेच दीजिए। यह बहुत उछल कूद कर रहा है। बापूजी ने वहा जाकर देखा, उसको पुचकारा एव लपक कर उसकी नाल पकड़ ली। बैल काबू मे आ गया। वे अच्छी नस्ल के बैलो व पशुओ के प्रेमी थे। इसलिए नागौर के पशु मेलो मे अवश्य जाते थे एव वहा से अच्छी नस्ल के पशु (गाय, बैल व ऊट) लाते थे। वे अच्छी नस्ल का साड रखने के पक्षधर थे। ताकि गाय की नस्ल भी अच्छी रहे। स्वय की ही नहीं वरन गाव की सुविधा के लिए भी अच्छी नस्ल का साड रखते थे।

उनका गायो पर विशेष प्रेम था। घर की सभी गायो की पहचान नाम व रग से थी। वे प्रात काल उनके बीच मे जाकर उनके स्तनो पर लगे हुए चिचड़ (कीड़) उतारते थे। उनके बदन पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरते थे। गर्मी के दिनो मे उन्हे स्नान करवाते थे। कई बार कमजोर दिखने वाली गायो के लिये विशेष ध्यान रखने की हिदायत भी देते थे। सर्दी मे गायो के ओढ़ने व बैठने की समुचित व्यवस्था का ध्यान रखते थे। वे इस बात का भी ध्यान रखते थे कि उन्हे चारा समय पर डाला जा रहा है। चारे को हाथ लगाकर देखते थे कि साफ है या नहीं। इन सब बातो मे वे बहुत ही नियमित थे। गो मूत्र का प्रयोग अपने पर करते थे। वे कहते थे यह अमोघ दवा है। उसका प्रयोग करने के लिए सबको कहते थे। एक समय तो उनकी गोशाला मे 100 से अधिक गायें हो गई थी। उन्हे गाय के रोगो की पहचान भी थी और वे उनका इलाज भी बताते रहते थे। उनके पास गाव के एव आस पास के व्यक्ति गायो की नस्ल के बारे मे राय लेने आते थे। गाये भी उनसे बहुत स्नेह करती थी। उनको देखते ही उनके पास आ जाती थीं। उनसे सटकर खड़े रहना चाहती थी। हाथ फिरवाने के लिए अपना माथा झुकाती रहती थी। उनको देखकर बापूजी प्रसन्नता का अनुभव करते थे। वे सच्चे गौ भक्त थे। वे गाय की सेवा करना धर्म समझते थे। जीवन पर्यत उनकी गोशाला मे गाय व पशु भरे रहे। सन् 1985 मे एक बैल द्वारा टक्कर लगा देने पर वे गिर पड़े एव उनके दाये कूल्हे की हड्डी टूट गई। वह ठीक से जुड़ नहीं पायी। इस चोट के बाद वे कभी ठीक से चल नही पाये किन्तु फिर भी उनके मन मे उस बैल को लेकर रोष नही आया। वे कहते थे बैल मेरे निकट आ रहा था, जिससे मुझे टक्कर लग गई। मै गिर पड़ा। उन्हे ऊट एव बकरी से भी विशेष प्रेम था। वे ऊट की नस्ल के भी अच्छे जानकार थे। चौखले मे किसी के पास भी अच्छी नस्ल के पशु होते थे तो स्वय जाकर देखकर आते थे। हमारे यहा अच्छी नस्ल की 20 25 बकरिया भी थीं। वे बकरी के बच्चो को भी गोद मे बैठाते थे। वे भी नि सकोच होकर बैठ जाते थे।

खेती उनका जीवन कर्म था। अच्छे बीज स्वय ही छाट छाट कर तैयार करते थे। बुवाई समय पर हो जाये इसका ध्यान रखते थे। ज्योतिष के आधार पर शकुन

इत्यादि पर विश्वास करते थे। मौसम का ज्ञान भी उन्हे था। खेती की तैयारी समय से पहले ही करके रखते थे। खेत मे निनाण करवा कर उसे खूब साफ रखते थे, जबकि यह कार्य आर्थिक दृष्टि से महगा पड़ता था। खेत मे काम करने वाला के खान पीने की व्यवस्था का पूरा ध्यान रखते थे। सकर बाजरा एव टिंडी फली के बीजो को मगरे क्षेत्र मे बापूजी ही लाये थे। उन्नत खेती हेतु कृषि सबधी साहित्य पढ़ते रहते थे। साथ ही इस बात की भी जानकारी रखते थे कि उन्नत बीज एव सामग्री कहा मिलेगी। केवल अपने लिए ही नहीं वरन् गाव के किसी भी उत्सुक ग्रामीण को उसकी सुविधा प्रदान करते थे। अच्छे बीज ज्यादा मात्रा मे मगवा कर ग्रामीण भाइयो मे वितरित करते थे। ताकि उनकी फसल अच्छी हो सके। एक सामान्य किसान की भाति खेती को देखकर खूब प्रसन्नता का अनुभव करते थे। हम सभी को लेकर दो माह खेत मे ही प्रवास करते थे ताकि खेती की देखभाल सही हो सके एव हम लोगो को भी खेतिहर जीवन का अनुभव हो सके। साथ ही हम सभी भी शुद्ध वातावरण मे रह सके। सभी का खेत मे रहना अच्छा ही लगता था। उस समय वे खूब लोगो को बुलाते थे एव इस बहाने हम सबको भी उनसे मिलने का मौका मिलता था। उनके कारण ही अनेक बार राजनैतिक कार्यकर्ताओ खादी सस्थानो से जुड़े लोगो एव भूदान आदोलन के व्यक्तियो से साक्षात्कार हुआ। श्रीमती इन्दिरा गाधी श्री जाकिर हुसैन एव श्री कामराज जैसे लोग भी उनके कारण गाव मे आये।

वे कोलायत के मेले मे विशेष चाव से जाते थे एव वहा दो तीन दिन रहते थे। इससे सभी लोगो से मिलना हो जाता। उनके साथ हम भी बहुत आनन्द आता था। बापूजी जीवनपर्यंत अनेक सस्थाओ से जुड़े रहे। पहले कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे। राजनीति मे भाग लिया। उस काल मे स्वतत्रता सग्राम मे तेजपुर मे स्वतत्रता सेनानियो की सहायता किया करते थे। मुझे ये बाते उनके मित्र श्री द्वारकाप्रसादजी बगड़िया ने बताई। बाद मे स्वतत्रता के पश्चात् प्रथम ग्राम पचायत के सरपच और मगरा पचायत समिति के प्रथम निर्विरोध प्रधान बने। उन्होने एम एल ए के लिये भी चुनाव लड़ा।

दादा श्वसुर 'बापूजी'

■ श्रीमती दिव्या छलाणी ■

मैने उन्हे जितना देखा है उससे अधिक सुना है। जब मै शादी हो कर आई और दादी मा के चरण छुए तो उन्होने कहा— अब गाव चलो बापूजी उडीक रह्या है। शादी मे आए लोग जब जाने लगे तब स्टेशन पर सबसे यही आशीष पाया कि अब जल्दी से गाव आ जाओ और अपने दादा दादी की सेवा करो।

मे कभी गाव ही नही गई हुई थी। गाव के नाम से सोचती थी—लम्बा सा घूघट, दकियानूसी बाते, ससुर जेठ के सामने से गुजरते ही एकदम से किनारे हो जाना, सभी बड़ो के शाम को पाव दबाना। पर वहा ऐसा कुछ न पाया।

करीब दो महीने बाद सास ससुर, (श्री फूसराजजी डा चन्द्रा) हम दोनो एव देवर (गुञ्जन) सब गाव गए। तब तक मम्मी पापा (फूसराजजी चन्द्रा) से गाव की काफी बाते सुन चुकी थी। करीब सभी गाव वालो के बारे मे पापाजी ने बता दिया था। जैसे ही गाड़ी गाव के अन्दर पहुची, बहुत सी महिलाओ का गीत गाते सुना। इतना भव्य स्वागत हुआ जैसे कल ही शादी हुई हो। विवाह के बाद के सारे नेग फिर से हुए। मैने जोड़ से आशीर्वाद लिया। खुश रहो का आशीष मिला। मे काफी देर तक सहमी हुई उनके कमरे मे बैठी रही। उन्होने कई बार मुझे आख उठा कर देखा मगर मेरी हिम्मत नहीं हुई। मेरी नजर उनके कमरे मे रखी गाधीजी की मूर्ति पर टिकी हुई थी। एक काच के बक्से मे अध लेटे गाधीजी की। जो बिलकुल बापूजी से मिल रहे थे। वही छवि मेरी आखो मे आज भी बसी है।

दूसरे दिन दादीजी किसी को कह रही थीं कि बापूजी बोले है बीनणी तो फूठरी है। मैंने उन्हे अकेले बहुत ही कम पाया। उनका कमरा हर समय गाव वालो से भरा रहता था। पापाजी बापूजी के किस्से खेत की कहानिया अपनी बचपन की बात हर वक्त बताते रहते थे। मै सुबह जब पाव छूने जाती तो हमेशा उन्हे रेडियो सुनते पाती। कुछ समय वहा बैठी रहती। वे रेडियो पर आ रही न्यूज सम्बन्धित बाते पूछते। कमरे मे लगी तस्वीर के बारे मे बताते, दादी मा की सेवाओ के बारे मे बताते। कलम की महत्ता बताते। कुछ ही देर बात होतीं कि कोई गाव वाला आ जाता तो वे कहते जाओ कुछ खा लो।

मैने दादी मा को हमेशा उनके पैर दबाते हुए देखा है। चाहे रात के दो बजे हो या सुबह के चार। कभी भी उन्हे सोया नहीं पाया। दादाजी के कमरे मे घण्टी थी। वे जब भी उसे बजाते सभी एक साथ दौड़ के जाते। बापूजी बुला रहे है एक साथ स्वर गूज उठता। दौड़ने वालो मे उनकी देख रेख करने वाले केषजी सब से अग्रिम रहते।

असम लौटने के बाद ऐसा कोई दिन नही जाता था जब पापाजी बापूजी की बात नहीं बताते हो। उनके स्वतत्रता आदोलन की बाते उनके व्यापार से सम्बन्धित बातें। उनके गाव मे शिक्षा प्रचार की बाते इत्यादि। उनकी बाते सुन कर मुझे हमेशा यही लगता कि व्यक्ति को ऐसा ही होना चाहिए। जीते मरते तो सभी है पर बखान तो उन्हीं का ही होता है जिनमे कुछ आदर्श हो।

तब से आज तक शायद ही कोई दिन होगा जब पापाजी ने उनके बारे मे न कहा हो। हर त्यौहार पर उनसे सम्बन्धित बाते पापाजी बताते रहते है। ये सब बापूजी के प्रेम से ही हुआ है। बापूजी का प्रेम सदेव सबके साथ साथ साये की तरह चला।

पापाजी बताते है कि बापूजी सदा कहा करते थे 'खर्च कम मत करो कमाई बढ़ाओ'।

उनकी मृत्यु बहुत ही शुभ क्षण मे हुई। दोनो बेटे तथा छोटी बहू उनके पास थे। हम वहा दूसरे दिन पहुचे थे। गाव का गाव कस्बे का कस्बा उनके शोक मे बिलखते हुए आते थे। धन्य है वह आत्मा जिनके जाने पर इतने लोग अनाथ हो गए। वो 19 दिसम्बर का प्रात हम लोगो के लिए सबसे कष्टप्रद समय था। हम हर 19 तारीख को भजन कीर्तन कर उनका स्मरण करते है। मैने पापाजी को आज भी छुप छुप कर बापूजी के लिए रोते देखा है। कितने महान थे वो बापूजी जिनके स्मरणमात्र से पापाजी अपने आपको असहाय समझते है।

मै तो अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझती हू कि मेरा विवाह इतने प्यार भरे परिवार मे हुआ। मै ही सिर्फ भाग्यशाली पौत्रवधू हू जिसने बापूजी का स्नेह एव आशीष पाया। मेरे प्रथम पुत्र नमो ने भी अपने पड़दादा का आशीर्वाद पाया है। यही मेरी जिन्दगी की अनमोल धरोहर है।

दादीजी के पास कई बार अकेले रहने का मौका मिला। वे रात मे दो बजे तक अपने बचपन के किस्से सुनाती थी। उनका विवाह 9 वर्ष की अवस्था मे हो गया था। उनके किस्सो से पता चलता है कि वे बापूजी से थोड़ा भी असतुष्ट नहीं थी।

बापूजी एक पूर्णरूपेण सफल बेटे थे पति थे पिता थे बड़े भाई थे ससुर थे दादा थे नाना थे व्यवसायी स्वतत्रता सेनानी थे, समाज सुधारक थे, आदर्शवादी थे परोपकारी थे। ये सब मैने सबो से सुना देखा जाना और समझा है।

मेरे प्यारे समधी

■ गोपीचन्द नाहटा ■

भारतीय समाज मे किसी भी बेटी का बाप धन्य धन्य हो जाता है जब बेटी को ससुराल मे वह प्यार मिल जाय जो बाप भी न दे सका हो। ऐसा समधी यदि प्यारा नहीं लगेगा तो कौनसा समधी प्यारे शब्द का धनी होगा? मुझे आज वह दिन याद आ रहा है और मै अतीत मे खोया खोया उस घड़ी मे पहुच गया हू जब मेरी बेटी चन्द्रा को छलाणी परिवार मे फूसराजजी की बहू बनाकर मैने भेजा। मेरी बेटी ने बी ए पास किया था लेकिन उस की इच्छा थी कि वह एम ए पीएच डी करे। अपनी बहू की भावना को पूरा करने के लिए सासूजी और ससुरजी दोनो ने पूर्ण सहयोग दिया। नाहटा परिवार की इस बेटी ने छलाणी परिवार की बहू बनकर दोनो परिवारो का नाम

। किया है। तिनसुखिया गर्ल्स कालेज म पढ़ाने की स्वीकृति उस जमान म
गी परिवार से मिली। बेटी चन्द्रा ने पढ लिखकर भी अपने परिवार क सेवा
ार को नहीं भुलाया बल्कि तन मन से सेवा करके सास ससुर व पूरे छलाणी
ार का आशीर्वाद व स्नेह प्राप्त किया और नाहटा परिवार का गौरव बढ़ाया है।

मेरे समधी भैरूदानजी की सादगी धन शरीर और मन स मनुष्य मात्र की
ृत्ति दानवीरता और उनका गो के प्रति हार्दिक प्रेम अनुपम था। वह पुण्यवान
ा थी जिसम करुणा, सब सन्तो की सेवा और गाव गाव से घर आये दीन दुखी
ण सहारा देने का भाव बहुत गहरा और सहज था। यह उनका स्वाभाविक धर्म
अपना खुद का जीवन त साधु की भांति ही बिताते थे। शरीर के कर्मों के कष्ट
शान्ति से भोगने। भगवद्गीता के श्लोक उन्ह याद थे, आत्मा से शरीर को भिन्न
र, कष्ट मे ध्यान, ज्ञान और समाई द्वारा मन को तल्लीन रखते थे। सम्यक् दृष्टि
ाराधना करते रहते थे। उनको आत्मा स भिन्न शरीर का मोह नहीं था। वे तो
ा गये पर हम सब उनके लिए रोते रहे। छोटी उम्र मे उनके पिताजी का स्वर्गवास
पर अपने भाइयो को व्यापार म लगाया, परिवार को पूरा स्नह जीवन मे दिया,
ा सारा परिवार धनाढ्य है ओर सवा भावी है।

मेरे प्यारे समधी का स्मरण मुझे भावविभोर कर देता है, अभिभूत करता है। वे
नेही सदा स्मरणीय है। उनको बार बार नमन।

अच्छे समधी

■ श्रीमती चपाकुवर नाहटा ■

सुनते हैं भैरूदानजी की उदारता की कहानिया।
भूल नहीं सकते कभी उनकी महरबानिया।।

भैरूदानजी छलाणी मरी बेटी चन्द्रा के ससुर थे। उनसे मेरा परिचय मेरी बेटी
शादी क बाद हुआ। कारण शादी एकदम अचानक हुई पहले से जान पहचान
ीं थी। अचानक ही एसा सयोग बैठा। मेरी बिना इच्छा के ही ब्याह करना पड़ा।
ी इच्छा उसको एम ए कराने की थी। बोले हम भी पढ़ाई करा दग। उसक बाद
ा ए कराया बाद मे पीएच डी कराई, उसके बाद प्रोफसर भी बनवा दिया। उनके
ार विचार विशाल हृदय से हम सब प्रभावित हुए। उनकी बातचीत म अपनापन
। सार परिवार का दिल जीत लिया।

उनकी सादगी उनके उच्च विचार से गली गवाड़, सगा सबधी सब जन आश्चर्य करते थ। उनके परिवार वाले भी सबसे अलग विचार वाले सहज, बिना दिखावा करने वाले थे। हमारे से पूरी तरह अपनापन रखते है।

उन दिना चन्द्रा के पिताजी का एक्सीडेन्ट हुआ तब चन्द्रा के बाद तीना लड़के पढ़ाई कर रहे थे। मै अपने आप को बहुत अकेली असहाय महसूस कर रही थी। उस समय भैरूदानजी ने मुझे बहुत हिम्मत बधाई। उन्हाने मुझे कहा— आप किसी बात की चिन्ता मत करो हम सब सभाल लगे। उन्हाने सभाल भी लिया। इसके बाद हमारे बीच वाले लड़के राजेन्द्र के कैरियर की बात आई तब भी उन्हाने मेरी हिम्मत बधाई और कहा—'आप लाग राजेन्द्रजी की चिन्ता मत करो, हम सब सभाल लेगे। भैरूदानजी साहब ने जैसा कहा वैसा ही किया। उन्हाने अपने आशीर्वाद से राजेन्द्र के कैरियर की नीव रखी। उसने अपने जीजाजी (फूसराजजी) के सहयोग से मेहनत करके सफलता पाई है।

मेरे जवाई साहब फूसराजजी छलाणी भी अपने पिताजी के पदचिह्नो पर चल रहे है। उन्होने वही उदारता, उच्च विचार और वही सादगी आदि सब अपने पिताजी से विरासत मे पाये है। मुझे अपने जवाई पर गर्व है। भगवान से प्रार्थना करती हू कि उस महान आत्मा का अपने परिवार पर आशीर्वाद बना रहे उनका परिवार खूब फले फूले और ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करे।

मेरी बेटी चन्द्रा भी अपने ससुरजी की इच्छा के अनुसार ही बड़ा दिल रखती है। अपने पीहर व ससुराल के कुटुम्ब परिवार का पूरा ध्यान रखती है। बड़ो की इज्जत करती है और छोटो को प्यार देती है। अपनी पढ़ाई का उसे जरा भी घमड नहीं है। वैसे ही हमारे दोहिते है वे भी अपने घर की परपरा के अनुसार ही चलते है मेहनत से घबराते नहीं है तथा मेहनत करने में छोटा महसूस नहीं करते। हमारे दोहिता की बहुए भी उनके ही विचारो के अनुसार मिल गई। आज के आधुनिक माहौल को देखते हुए भैरूदानजी का घराणा सबसे अलग ही दिखता है। सादा जीवन उच्च विचार उनका मूल मत्र था। उनके घर परिवार वाले भी वही अपना रहे है। यह उस महान आत्मा की पुण्याई है। मै उस महान् आत्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती हू।

अलख पुरुष की आरसी

■ श्रीमती इन्दिरा छाजेड़ ■

अलख पुरुष की आरसी, साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं मे तू लख ले।

हिमालय से उच्च विशाल हृदय वाले, अप्रतिम प्रतिभा के धनी, कर्मशील दूरदर्शी, असाधारण व्यक्तित्व वाले सत, महापुरुष परोपकारी नानाजी जिन्हे हम बापूजी पुकारते है, परमात्मा के साथ एकरूप हो गए है, इन ब्रह्म साक्षात्कारी महापुरुष की देह एक दर्पण के समान है, जिसमे हम अलख पुरुष (परमात्मा) के दर्शन कर सकते है। उन्हे शत शत नमन।

अपनी पावन भारत भू को सुशोभित करने वाले इस कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति मे सयम, सदाचार, साहस, शक्ति, मुस्कराहट प्रसन्नता जैसे दैवी गुणो का समावेश था। परेशानी के समय मे आज भी उनकी बात और गुण हमारा पथ प्रशस्त करते है। अत उनका स्मरण होना तो अवश्यम्भावी है।

कर्मभूमि पर इनका व्यक्तित्व अनासक्त था। इनमे न सत्ता की लिप्सा थी ओर न अर्थ विस्तार की लालसा। भौतिक लिप्सा से दूर रहे। कहा करते थे—अतीत का भार मत ढोओ भविष्य चाहे कितना भी सुन्दर हो विश्वास मत करो। जो कुछ करना है उसे अपने पर विश्वास रखकर सिर्फ वर्तमान मे करते चलो।

आपका व्यक्तिगत जीवन बहुत ही शान्त सहज और सरल था, परन्तु सामाजिक स्तर पर जीर्ण शीर्ण, अर्थ शून्य परम्पराओ के प्रति क्रान्तिकारी थे। समाज मे उत्पन्न पर्दाप्रथा दहेजप्रथा के विरोधी थे। बेटो एव पोतो का दहेज न लेकर ही शादी करने के व्रत का कठोरता से पालन किया।

आतिथ्य सत्कार के साथ साथ उनके प्रति अपनत्व का भाव रखने के कारण कोई भी व्यक्ति द्वार पर आया, न खाली लौटा और न निराश होकर। गाव वालो के तो वे तारक ही थे। स्वय दौड़ धूप कर गाव की उन्नति हेतु कार्य करते। गाव मे कुआ खुदवाने का मूल कारण यही था कि मनुष्यो और पशुओ के लिए पानी की कभी कमी नहीं हो।

व्यक्ति की पहचान उसका चेहरा नही अपितु उसका चरित्र होता है। ऊचा चरित्र हमेशा श्रेष्ठताओ के साथ जीता है। समाज मे प्रतिष्ठित गाव के सरपच मगरे के राजा कहे जाने वाले बापूजी सम्पन्नता के बीच पल पोषे होकर भी वे आम आदमी की कठिनाइयो को समझते थे। प्राणिमात्र के प्रति प्रेम सेवा सुश्रुषा करना उनका

सहज कम व स्वाभाविक धर्म था। पशु पक्षी तथा मूक प्राणिया के प्रति बहुत प्रेम रखते थे। उनको मारना तो दूर कभी गुस्सा भी नहीं करते थ।

गृहस्थ धर्म का निर्वाहन करते हुए स्वाध्याय उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष था। खाली समय का क्षण क्षण का उपयोग सत्साहित्य अध्ययन म लगाते थे। पुस्तक मित्र रूप म सग रहती थीं।

दर्जे उत्तीर्ण न करने पर भी उर्दू, बगाली सस्कृत हिन्दी का ज्ञान था। रामचरितमानस तो पूर्ण कठस्थ थी। गणित म कम्प्यूटर दिमाग था। प्रकृति के प्रति अनूठा प्रेम था। खेतो पर स्वय अपने हाथो से कार्य करते, पेड़ पौधो को पानी देते थ। धरती मा की माटी से उन्ह बहुत ही प्यार था।

आपका जीवन सादगीपूर्ण एव सद्व्यवहारी था। खादी के धोती कुर्ताधारी थे। आपकी रसनेन्द्रिय म दो विशेष गुण थे पहला वाणी सयम व मृदुभाषी दूसरा विवेकपूर्ण खाद्य सयम।

सादा जीवन उच्च विचार के ही प्रेरक थे। स्वदेश प्रेमी होने के कारण कभी विदेशी वस्तुओ का प्रयोग नहीं किया। खान पान तो क्या विदेशी वस्तुओ को छूआ तक नहीं। चाय काफी चखी तक नहीं।

अपने सम्पर्क को जीवन्त बनाये रखने के लिए पत्र व्यवहार की उनमे अद्भुत क्षमता थी। सगे सबधियो के प्रति समर्पण व प्यार का भाव था। ऊच नीच अमीर गरीब का भाव तनिक भी न था। आज जो कुछ भी हमने सीखा है उनका ही मार्गदर्शन है। मै अपने आपको बहुत ही सौभाग्यशाली समझती हू कि मेरा बचपन एक ऐसे व्यक्ति के सान्निध्य म गुजरा—उन्होने ऐसे बीज सस्कार के बोये है जिनके कारण हर परिस्थिति म सामजस्य पैदा करने की भावना आई।

शिक्षा के प्रति लगाव था। निरक्षर को साक्षर गाव व मगरा क्षेत्र के बच्चो को उच्च शिक्षा व उच्च पद के योग्य बनाना उनका लक्ष्य था। असहाय व गरीब बच्चो की फीस व पुस्तको का शुल्क स्वय देकर ज्ञानार्जन करवाते। उनके प्रयास व प्रेरणा से अनेक छात्र छात्राए जीवन म कुशल व उत्तम कार्य कर रहे है। हम सभी को पढ़ाने का श्रेय भी इनको तथा हमारे दादाश्री को है।

गो सेवा खादी कृषि शिक्षा के रचनात्मक कार्य और सर्वोदय ही बापूजी की जीवनशैली थी। उन्ह नाम का शौक न था काम का शौक था।

बापूजी आज दैहिक रूप से विद्यमान नहीं है पर अन्तर्मन से दूर नहीं है। उनके बताये मार्ग को प्रखर व प्रशस्त बनाये विचारो को धूमिल न होने दे सपनो को साकार कर, यही सच्ची श्रद्धाजली है।

मधुर वाणी के धनी

■ श्रीमती उषा वाठिया ■

बापूजी, हा यही सबोधन। हालाकि वो हमारे दादाजी थ किन्तु घर म सभी सदस्य उन्ह इसी सबाधन से सबाधित करते थ।

समता, शाति, सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति। एक महान पथ प्रदर्शक। सीधा स्वभाव, मधुरवाणी के धनी, 'सादा जीवन उच्च विचार मानव जीवन का शृगार यह उनके जीवन, उनके व्यक्तित्व पर पूर्णत चरितार्थ थी।

ऊच नीच, जाति पाति का भेदभाव हमन कभी नही देखा। घर के नौकर चाकर मुनीम गुमाश्ते सभी को घर का सदस्य मानना, यह उनकी एक बहुत बड़ी खूबी थी। कभी ऊची आवाज म बालते नही दखा।

खाने म चटपटी चीजे तो दूर की बात कभी मिर्च नमक, मसाला भी खाते नही देखा। स्वाद विजय क अद्भुत व्यक्ति। उबली सब्जी खिचड़ी, दूध दूध मे शहद, गेहू या बाजरे की रोटी बस यही खाना था। गाधीजी के विचारो की छाप उनके व्यक्तित्व पर थी।

कृषि, गो सेवा, गरीबो की सहायता उनके जीवन क अभिन्न अग थे। भीषण अकाल म पशुधन के लिए किए उनके कार्य अविस्मरणीय है। आज लाग इन्ही कारणा से उस व्यक्तित्व की बहुत कमी महसूस कर रहे है। हालाकि उनक परिवार मे यानि दोनो बेटा पर उनके सस्कारो की छाप वैसी ही दिख रही है। सादगी जीवन का शृगार यह बेटा म भी है। यह सब उनकी देन है।

उस महान आत्मा, व्यक्तित्व का अश्रुपूर्ण भावभीनी श्रद्धाजली।

उनके प्यार की याद

■ श्रीमती लीला चोरडिया ■

हमारे पूजनीय दादाजी सबसे निराली प्रकृति के थे। वे कभी किसी की देखा देखी नही करत थे। किसी के कहन सुनने पर ध्यान नही देते थे। उन्हे जो अच्छा लगता उसे ही करते थ। वे नाक म साने की नथ पहना करते थे।

उन्हे पढ़ाइ म विशेष रुचि थी। उन्हीं की बदौलत पूरे परिवार मे अच्छी शिक्षा हो पाइ। कोइ लड़की पढ़ाइ छोड़न क लिए कहती तो सोधा उत्तर होता था तब तुम्हारा ब्याह कर दगे जो पढ़ाई करता है उसको पढ़ायगे उसका ध्यान रखग। उन्हे गाव तथा खती बाड़ी से बहुत लगाव था। नय जवाई आदि के दियातरा आने पर उन्हे बहुत खुश होकर बैल गाड़ ऊट गाड़ पर घुमाकर खेत खलिहान दिखाते। ग्रामीण खाना खिलाते। कहते शहरी लोग गाड़ी मे घूमते ही हैं यहा तो गाव की तरह रह कर देखो कैसा लगता है। सचमुच वहा का माहौल उनके प्यार से बेहद सुखद हो जाता।

जीवन्त तीर्थ

▪ जयदीप छलाणी ▪

पूज्य श्री भैरूदानजी छलाणी मेरे दादाजी थे। मै उन्हे बापूजी ही कहता था। उनकी छवि मेरे मन मस्तिष्क मे कपिल सरोवर को उतारती है। ऐसा सरोवर जिसकी सतह पर अहअभिमान की तूफानी लहरे नही लोभ और क्रोध के खड्ड जिसक तल म नहीं सरलता और समता सा समतल अतस्तल है। जिसम विचार वाणी और व्यवहार का पारदर्शी जल है। जिसम निभय हो उतरने का मन हो जाए। उस तीर्थ म अवगाहन कर धन्य धन्य हो जाए।

उस कपिलायतन स पावन शान्त निमल तलदर्शी इस सरोवर क स्नेह जल से मेरे तन मन जीवन का सिचन पल्लवन और पोषण हुआ है। उसका स्पर्श पाकर सहजता स्वस्थता और शान्ति का अनुभव किया है।

सहज स्वाभाविक स्वस्थ और स्वाश्रयी व्यक्तित्व क निर्माण के मर्मज्ञ बापूजी थे। उनके चितन और चर्या की स्मृति और अनुभूति मुझे हर क्षण प्रेरित और आह्लादित करती है।

मेरी मा बताती है कि मेरा जन्म अस्पताल मे हुआ। मुझे बहुत दस्ते होती थीं और पट दद से रोता था। बापूजी मेरे पास ही बैठे रहते। मेरा मूत्र चम्मच भरकर मेरे मुह मे डाल देत थे। वे ओषधियो के पक्ष म नहीं थे। आवश्यक होने पर प्राकृतिक और सामान्य उपलब्ध घरेलू जड़ी बूटी तथा सही रहन सहन और खान पान से ही स्वस्थ रहने का सस्कार देते। वे स्वाश्रयी जीवन के हामी थ। इसलिए मुझे बकरी का दूध पिलाते उसमे शक्कर नहीं मिलाते शहद मिलाते। चूने के निथरे पानी की बूद डलवा देते। दूध भी बोतल से नही प्याले चम्मच से पिलवाते। मा बताती है कि मेरे

दात खूब आराम से बिना तकलीफ के आये। वे पिलाने और खिलाने मे बच्चे के साथ जबर्दस्ती करने या मनाने और मनुहार करने से मना करते। बच्चा भूख लगने पर खुशी से खा लेगा।

वे छोटे बच्चो को तग कपड़े और ज्यादा कपड़े पहनाने से रोकते थे। कम से कम कपड़े शरीर पर हो, बच्चे को खुली हवा रोशनी मिले। वे पोतड़ा बाधने के भी पक्ष म नही थे। वे कहते पोताले सिकुड़ते है, उसका अर्थ है बच्चा स्वस्थ हो रहा है। बच्चा स्वाभाविक रूप मे रहे, हाथ पाव चलाये उसमे कोई बाधा विघ्न कपड़ो से नही पड़ने देने से शरीर स्वत मजबूत होता है। सर्दी में भी टोपा मौजे पहनाना ठीक नहीं समझत थ उससे सर्दी से प्रतिरोध की शरीर की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए मुझ खुले मे नग धड़ग रख सुलाकर खूब खेलने देते थे। कहते टाबरा को सी तो बकरिया चर'।

वे बच्चो को हव्वा दिखाकर या भूत है कहकर डराने धमकाने नही देते इससे मन मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ता है, बच्चा भीरू और डरपोक हो जाता है। मन कमजोर हो जाता है। बच्चो को सारे काम मनमर्जी से करने देते, रोकते टोकते नही। कहते अपने आप सही गलत का ज्ञान हो जायेगा। स्वत ही गलत काम छोड़ देगा।

मैं जब थोड़ा बड़ा हुआ, चलने दौड़ने लगा और कुछ कुछ बोलना सीख गया तब बैल गाड़े पर बैठाकर खत मे ले जाते और खुला छोड़ देते। दौड़ने का कहते। चलते दौड़ते गिर पड़ता तो कहते इससे शरीर पक्का होता है। भय और हिचक मिटते है। वे चाहत थे बच्चे खूब खेले। उसके खेलने मे व्यवधान न पड़े। चाहे खाना नहीं खाये, खेलना नहीं छोड़े। नगे पाव मिट्टी म चले उससे ऊर्जा का सचार होता है, कैल्शियम की पूर्ति होती है। खेत मे मुझे चिड़िया, कबूतर, गाय, बकरी, ऊट भैस और पेड़, पौधो, फसल, कीट, पतगो को दिखाते। उनके बारे म बाते बताते। खेत मे मतीरा अपने हाथ से फोड़कर मुझे खिलाते। फल सब्जी को सीधे दात से काटकर चबाने का कहते। मुझे आज भी सेव या कोई फल चाकू से कटा हुआ पसद नही आता। सीधे खाना ही पसद करता हू। खाना खाते समय बीच बीच म पानी पीने से मना करते।

गाय बकरी आदि जानवरा को छून, उन्हे सहलाने का कहते। मुझे जानवर बहुत अच्छे लगते। गाय या बकरी को दूहते समय थन से सीधा दूध चूगने का कहते मुझ डर लगता।

मै जब थोड़ा समझने लगा तब वे मुझे कहानियाँ सुनाते। रामायण के प्रसग और गाधीजी क जीवन की घटनाये बतात। मुझ परिवार और गाव के बच्चा के साथ खूब खेलन देते। वे चाहते थे कि गाव से लगाव और बच्चा से हेल मेल बढ़। ऊच नाच का भाव ही पैदा नहीं हो। भाइचारे का भाव गहरा हो।

मुझे अपने मा पिताजी के साथ तिनसुकिया (असम) म रहता पड़ता था। परन्तु मेरा मन गाव के खुले वातावरण और दादाजी के साथ ही रहने का ही करता था। शाला की छुट्टियो म गाव आता ता वापिस जाने का मन ही नही करता था। जी करता था बापूजी मुझे गाव म अपने पास ही रख ल। दादाजी मरे लिये अमोघ अस्त्र और अचूक औषधि थे।

असम म रहने के कारण म मारवाड़ी नही हिन्दी बोलता था, ता बापूजी भी मरे साथ हिन्दी मे बात करते। नये नये शब्द सिखाते नई नई बाते बताते। असम की बिगड़ती स्थिति म चौथी कक्षा से ही भवन्स स्कूल बड़ोदरा म मुझे पढ़ने भेज दिया गया। जहा मै छात्रावास म रहा। शिक्षा का माध्यम अग्रेजी और सारा रग ढग गाव से अलग और शहरी था। बापूजी अच्छी शिक्षा चाहते थे अत कोई आपत्ति ता नहीं की परन्तु परिवार से दूर रहने से पारिवारिक और सामाजिक सस्कारो से कट जाने की चिंता वे करते। मेरे सस्कार निर्माण के लिये वे खूब सजग और सचेष्ट रहे। मुझे हिन्दी मे एक दिन छोडकर एक दिन पत्र लिखते। पत्र म मेरी शाला, पाठयक्रम पढ़ाई के बारे मे शिक्षको और साथी छात्रो के बारे म पूछते।

उनके पत्र लिखने का ढग निराला था। अक्षर सुन्दर थ। पत्र म खूब सारी बाते बहुत थोड़े म ही लिख देते थे। गाव म वर्षा हुई खेत मे बुवाई हुई फसल अच्छी है खेत पर कौन कौन काम करते है, कौन घर पर आया कब जायगा। जो भी त्योहार आता उसके बारे मे लिखते कैसे मनाते है क्यो मनाते है। घर पर जो भी होता उसका विवरण लिखते। गाय बछड़े के समाचार देते। ऐसा चित्र मेरे मन म खिच जाता कि मै उसी म खो जाता जैसे उनके पास ही सब देख रहा हू। उनके पत्र का मुझे इतजार रहता। यह भी प्रतीक्षा रहती कि वे लिख दे कि अब खेत म काकड़िये मतीरे खूब हो गये है गाव चले आओ।

सभी से जुड़ाव रखने के लिये मुझे कहते सप्ताह म समय निकाल कर एक दिन सबको पत्र लिखू। छात्रावास मे खाना सबके साथ बैठकर खाने की बात से वे खूब खुश होते। सम्बन्ध और समानता का भाव पक्का करना जरूरी समझते थ। रेडियो पर वे खुद रोज समाचार सुनते थ मुझे भी लिखते बच्चो को रेडियो पर समाचार अवश्य सुनने चाहिये परन्तु ज्यादा समय रेडियो पर नहीं लगाना चाहिये, उससे पढ़ाई मे एकाग्रता नहीं आ पाती।

ग्राम्य जीवन, शहरी भोगवादी सुविधाओ से भी ज्यादा आनन्ददायी होता है। सामूहिकता मे जो सुख और सुरक्षा है समृद्धि है वह व्यक्तिवादी जीवन म नहीं है।

वे अपने पत्रो म झुण्ड के झुण्ड लोगो के पैदल रामदेवरा तीर्थ यात्रा का वर्णन चाव से करते। उनके साथ रामदेवरा के दर्शन करने का मेरा चाव भी बना। मेरी लोक देवता रामदेवजी मे श्रद्धा बनी। श्री कालायत के मेले म मुझे अपने साथ बैलगाड़ी मे ले जाते थ। वहा गाव गाव के लोगो से मेरा परिचय कराते। मुझे बहुत अच्छा

लगता। मेले मे आने वाले अच्छे अच्छे बैल, ऊट आदि दिखाते। मुझे गाव के लोगो की तरह पगड़ी धोती, कपड़े, जूते पहनना खूब अच्छा लगता। घर के हाली बालदियो की पगड़ी जूते पहनता, वे खूब खुश होते। होली पर वे गाव के लोगो के साथ खूब रग लगवाते चग पर गाने सुनते और खुद भी गाने गाकर सुनाते स्वाग चले खूब खुश होते। दीवाली पूजन करते मतीरे काचर आदि पूजन मे रखते। ज्यादा पटाखे छोड़ने को वे समाज के धन का नुक्सान कहते।

मैं हिन्दी मे 'ताऊजी ताईजी सम्बोधन करता था। उन्होने लिखा अपने यहा 'बाबोसा , 'बड़ियाजी का सम्बोधन है। उनका राजस्थानी सस्कृति तीज त्योहार पारिवारिक सस्कार और सम्बन्ध गाव की सामूहिकता से जुड़ाव के भाव सुदृढ़ करने का सतत प्रयास रहता।

व्यक्तित्व के सहज स्वाभाविक विकास स्वस्थ तन और चिन्तन के निर्माण के कुशल सस्कर्ता दादाजी थे। मेरे स्वतन्त्र व्यक्तित्व के सृजन मे उनका स्नेहिल आशीर्वाद मुझे खूब मिला। मे जब युवा हुआ, मने अपने जीवन साथी के रूप मे अपना ओसवाल जाति से भिन अग्रवाल जाति की लड़की पसन्द की। उनकी उत्सुकता इस परिप्रेक्ष्य मे थी कि जातीय सस्कारो की भिन्नता के कारण सामजस्य का दायित्व विशेष रहेगा। उन्होने अपनी सहमति दी लिखा विवाह एक दायित्व है समझपूवक पूर्ण करने का महत्त्व है। जिस परिवार की लड़की आ रही है उसे प्रसन्न रखना और सस्कारित करना। वे अस्वस्थता के कारण स्वय तो नही आ सके परन्तु अन्य सबको विवाह मे सम्मिलित होने के लिये असम भेजा। जब पति पत्नी के रूप मे हम जयदीप दिव्या उनका आशीर्वाद लेने गाव आये तो खूब प्रसन्न हुए। स्वागत मे सारे नेगचार सम्पन्न करवाए। गीत सगीत हुआ। उत्सव मनाया। प्रपौत्र (नमन) के होने पर सोने की नसैनी चढ़ने के समारोह मे दादाजी दादीजी को अपार प्रसन्नता हुइ। सुधार का खुलापन और परम्परा के पोषण का सुमेल दादाजी मे था। सहजता स्वस्थता स्वाभाविकता के जीवन्त तीर्थ को नमन।

सेवा एव सादगी के प्रतीक

■ श्रीमती पूर्णिमा पारख ■

मेरे ही नही वरन् सबके पितृतुल्य बापूजी जिनकी गोदी मे मै पलकर बड़ी हुई। इस मायने मे मै अपने को इतनी भाग्यशाली मानती हू कि इतना प्यार उनसे मुझे मिला है। उनके हृदय की उदारता को प्रेम और करुणा से भरपूर—कठिन है

इन्हे शब्दो की परिधि मे बाधना। फिर भी मै मन के भावो को प्रषित कर रही हू—

उन मनस्वी चिर यशस्वी का विमल अभिषेक।
मौन आस्था के अधर पर नितर आए बोल।।

बापूजी के चिन्तनवाणी और कार्यप्रणाली म अलौकिक चैतन्य है इसीलिए महापुरुष की परिभाषा से विभूषित है। उनके व्यक्तित्व मे बुद्ध की करुणा ईसा का प्रेम और महावीर का सत्य आभासित है। वे समाज सुधारक और उद्धारक है, तपस्वी और मनस्वी है।

उनका पुलकित चेहरा हसती आखे, वाणी मौन है। भौतिकता की चकाचौंध से दूर, कृत्रिमता से परे, सयम से भरपूर सत्य और अहिंसा की डगर पर चलने वाले सेनानी है। जिस व्यक्ति के मन म पशु पक्षियो के लिए इतना प्यार हो तो प्राणी के लिए क्या कहना। जब बापूजी को बैल ने गिरा दिया था और उनका पाव फ्रेक्चर हो गया तब भी वे सुबह शाम उस बैल को चौकी के पास बुलवाकर उसके हाथ फेरते।

उनकी साक्षरता के लिए जो लगन थी उससे कितने घर रोशन हुए। बच्चो के लिए स्कूल खोलना छात्रवृत्तिया देना प्रोत्साहित करना व अपने घर मे आश्रय देकर पढ़ाना—

ज्योतिदीप ले कर मे तुमने
कितने उजड़े पथ दिखाए
आत्मदीप बन जले निरन्तर
नहीं कभी थककर सुस्ताए

एक बार की बात है जब मै लाइब्रेरी सायन्स मे डिप्लोमा कर रही थी हमारी रविवार को ट्रेनिंग होती थी जो बीकानेर म दी जाती थी। मुझे दियातरा से बीकानेर आना जाना पड़ता था। मुझे अकेले म आने जाने म झिझक लग रही थी क्योकि कभी काम नहीं पड़ा था तब उन्होने मेरे मनोबल को बढ़ाया कि तुम डरती क्यो हो आज सब पदो पर लेडिज है विदेश तक अकेली यात्रा करती है और उन्होने मुझे अकेले भेजा। आज मुझे अब किसी बात का डर नहीं लगता।

उनकी बात सभी को कोशिश करने के लिए हिम्मत नहीं हारने के लिए याद आती है। उनकी शुरू से ही अपने गाव को चमन बनाने के लिए कुआ बनाने की इच्छा रही, लेकिन सयोग ऐसे बनते कि कुआ सफल नहीं हो पाता। लेकिन कोशिश करने वाले की हार नहीं होती। वो ही हुआ।

पख लगा सपनो के आपने मनचाही हर मजिल पाई।
हर मजिल पर खड़ा सामने नया स्वपन लेकर अगड़ाई।

नहीं उदासी मायूसी म, डिगा कभी विश्वास आपका
सघषा स बतियाने मे नहीं कभी भी पौरुष हारा
युग के सूने गलियारो म मुस्कानो की हाट लगाई
पख लगा सपनो के आपने, मनचाही हर मजिल पाई।

उन्ह बच्चा से बेहद लगाव रहा है, उनका कहना था कि बच्चो के साथ कभी जबर्दस्ती मत करो, बच्चा को निमाण व सुसस्कारित करना माता पिता का ही काम है।

उनकी नृत्य सगीत सास्कृतिक कार्यक्रमा म भी रुचि थी। भगवान म आस्था थी। सब धर्मो को मानते थ। किसी भी धर्म का व्यक्ति या सत क्यो ना हो वे सभी का आदर देते थे। जब उनके पाव मे फ्रेक्चर हुआ था, तब हनुमान चालीसा का पाठ करवाते, कोई भी उनसे मिलने आता तो कहते कि पूर्ण हनुमान चालीसा सुनाओ। गाव मे कोई साधु सत पधारते उनकी सेवा करते। मानव धर्म सर्वोपरि था।

इनकी शिक्षा, उनका प्यार उनका आशीर्वाद आज भी मेरे पास है। मुझ कभी यह अहसास नही होता कि बापूजी नही ह बल्कि यही लगता है कि बापूजा हर समय मुझे दिशा निर्देश करते ह।

बापूजी के सान्निध्य मे

■ टोडर चोपडा ■

स्व भैरूदानजी छलाणी मेरे नानाश्री थे। वैसे तो नाना दोहिते का सम्पर्क जन्म से ही होता है। परन्तु आपस म समझने की तथा बीती हुई घटनाओं को जीवन मे आने वाले प्रसगो के साथ महसूस करते हुए जब म उन घटनाआ को याद करता हू तब नाना दोहिते का सम्पर्क अपना एक निराला स्वरूप लेकर सामने आता है।

कृषि एव गो सवर्धक

नानाजी गावा के किसाना के प्रति बहुत जागरूक थे, वे स्वय खेती करते थ और खेती म अनुसधान करते रहते थे। मुझे याद है जब म छोटा था तब सुबह सुबह चार बजे उठकर घर से दूर अपने खेत तक नानाजी पैदल जाते थे। म भी बहुत बार उनके साथ जाता था। उनका कहना था कि हर पोधे के पास किसान का पैर होना चाहिए अर्थात हर पौधे की निराइ गुडाइ तथा सार सभाल होनी चाहिए। वर्षा के पानी का अधिकाधिक उपयोग हो सके इसके लिए खेता म मेडबन्दी को वे प्राथमिकता देते

थे। इसी उद्देश्य से सर्वप्रथम भाणका गाव मे अपने खेत मे मेड़बन्दी कराकर किसानो को बताया।

किसानो को उन्नत बीज उपलब्ध करवाने मे नानाजी तत्पर रहते थे। कम पानी मे अधिक पैदावार हो ऐसा जो बीज उनकी नजर मे आता तो उन बीजो को मगवाकर पहले खुद अपने खेत मे देखते फिर अगले वर्ष मगवाकर किसानो को देते। अपनी फसल से स्वस्थ पोधो के बीजो का सचयन करते थे। उन बीजो मे मुरकिया गवार और कालीकानी बीज का मतीरा प्रमुख है। इन दानो का खान मे लोग बहुत पसद करते थे। मतीरा खाने को तो दूर दूर से लोग आते थे और मतीरे का बीज भी खूब ले जाते थे। नानाजी ने हरिद्वार से बीज लाकर मतीरा यहा लगाया जिसका वजन करीब 10 15 किलोग्राम होता था।

खेत मे गोबर की और मल मूत्र की खाद डलवाने को वे बहुत उपयोगी समझते थे। केमिकल खाद के शुरू से ही वे खिलाफ थे। उन्होने अपने खेत मे दीवारो पर लिखा था

रवार दयो मल मूत्र की उपजे लाख सवाय।
उजाग पाछो देवा कोठा लेवा भराय।

नानाजी का स्वय का खेती से पैसे कमाने का उद्देश्य नहीं था। उनका खेती का मुख्य उद्देश्य किसानो को हर तरह की जानकारी देना और गरीब किसानो को रोजगार देना था जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है भाणका गाव व दियातरा खेत मे खुला कुआ खुदवाना और बाद मे दियातरा खेत मे ट्यूब वैल खुदवाकर खेती करवाना।

नानाजी के बीमार रहने की वजह से खेती और गोसेवा का कार्य उनके सान्निध्य मे मैने सन् 1984 से शुरू किया जो 1995 तक रहा। इस समय खेती के साथ साथ दो बार अकाल पड़ने पर गोचारा डिपो और गोशाला का काम करने का मुझे अनुभव हुआ। गायो के चारे के लिए गोसेवा सघ स्पेशल डिपो स्वीकृत कराकर काम किया क्योकि उस समय गाव मे राठी ट्रस्ट द्वारा डिपोचारा सचालित था परन्तु चारे की पूर्ण पूर्ति नहीं होने की वजह से गोवश का नुकसान न हो इसके लिए कलक्टर द्वारा गोसेवा सघ की मारफत स्पेशल चारा डिपो और गोशाला स्वीकृत करवाकर नानाजी ने गाव की सेवा की। इस डिपो पर हर समय चारा उपलब्ध था। कोलायत तहसील के वासियो को यह विश्वास था कि यदि सेठ साहब ने चारा डिपो खोल दिया है तो अब तहसील मे चारे की कमी नहीं आयेगी। और हर क्षेत्र के लोग वहा से चारा ले सकेगे।

खेती व गोरक्षा हेतु श्री सोहनलालजी मोदी मादरिया महाराज तथा गोसेवा सघ से हर समय नानाजी अपना सम्पर्क बनाये रखते थे। वे गोसवर्धन के प्रति जागरूक थे। दूध की मात्रा मे बढ़ोतरी तथा अच्छी नस्ल की गाय बैल की बढ़ोतरी के

लिए नानाजी ने गाव को एक अच्छा साड उपलब्ध करवाया। उस साड के पालन पोषण और रख रखाव के लिए उन्होंने खुद जिम्मेदारी ली।

शिक्षा और समाज सुधार म रुचि

कृषि और गो सेवा के साथ साथ नानाजी ने शिक्षा का बहुत प्रचार किया। विशेषकर नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया। दियातरा की सेकण्डरी स्कूल नानाजी की देन है। व पर्दा प्रथा के घोर विरोधी थे। घर आये अतिथि की सेवा में तत्पर रहते थे।

इन सभी गुणो का एक व्यक्ति मे समावेश होना ही अपने आप म पूजनीय है। इन्हीं सब विशेषताओ के कारण नानाजी मगरे के राजा कहलाये।

नररत्न महाजन

■ हीरालाल नोलखा ■

दियातरा के दानवीर सेठ श्री भेरूदानजी, महात्मा गाधी और आचार्य विनोबा भाव के अनुयायी थे। उनके विचारो को अपने आचरण और व्यवहार म लाने वाले महाजन थे।

एक सफल और समृद्ध व्यवसायी होते हुए भी अपनी तरुणाई और युवाकाल म ही असम म काग्रेस के कार्यक्रमो म भाग लिया और खादी पहनने के साथ खादी बेचने का काम किया। गाधीजी के सच्चे भक्त के रूप म जवानी म ही गाव म रहना शुरू कर दिया। मगरा के लोगो की अत्यन्त दरिद्र स्थिति से द्रवित होकर उन्होंने खेती, गो पालन, गो सेवा को अपनाया। वणिक होते हुए भी वे बारानी खेती मे पैदावार बढ़ाने के लिये खर्चीले और साहसिक प्रयोग करके खूब पैदावार करने वाले प्रथम महाजन कृषक बने। मतीरे के काली किनारी के बीज और आण्टकी गवार आज भी भेरूदानजी के बीजो के नाम से पहचान रखते है।

गायो की सेवा करना उनका धर्म ही था। अच्छी नस्ल की गाय और साण्ड तैयार किये और लोगो को उनकी सेवाय दीं। बार बार पड़ने वाले अकालो के समय एक एक गाय और गो पालक को बचाने की व्यवस्था प्राणप्रण से करते थे। सेवा के काम में अपने स्वास्थ्य अपने ताता और खर्च की परवाह नहीं करते थे। अकाल के इस कठिन समय म लोग उनको याद करते है कि भेरूदानजी होते तो हम बेहाल नहीं होते।

गाव के गरीब जरूरतमद और दलितो की आर्थिक कठिनाइयो, बीमारी और सामाजिक प्रसगो म खुले हाथ सहायता करते थे।

दियातरा गाव म विद्यालय भवन, छात्रावास बनवाया और गावा के लोगा म शिक्षा क लिये चतना जागरण का काम किया। उनक ही लगाय शिक्षा बीज स बना वृक्ष बढ़ रहा है फल दे रहा है। लोहिया ग्राम म कुआ, अनक स्थाना पर प्याऊ धर्मशाला आदि बनवाई।

दहेज पर्दा प्रथा और ओसर मौसर आदि कुरीतिया का हटान का कार्य अपन ही परिवार स शुरू किया और स्त्री शिक्षा के प्रचलन के लिय घर की लड़किया का भी उच्च शिक्षा दिलाई। व ग्रामीण क्षेत्र म सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे।

उनका भोजन बहुत सादा, पहनावा खादी का। अपनी आवश्यकताय बहुत कम रखते थे और घर परिवार मे सम्बन्धिया मित्रा और कार्यकताओं का खूब आदर सत्कार करते थे। उनका घर सबके स्वागत के लिय खुला रहता था। अपना धन लाकहित के कामो मे खूब उदारता से खच करते थ परन्तु अपना नाम नहीं आने दते थे। उन्हे आडम्बर दिखावा और प्रचार अच्छा नहीं लगता था। व सच्चे महाजन थे। महाजन वही जो जन जन का हित साधन करता हो।

दियातरा गाव के हर वग के लाग उनस सहायता आर मार्ग दर्शन प्राप्त करते थ। सामूहिक हित के कामा के लिये ही वे दिन रात समर्पित रहे। गावो के भले के लिय वे पचायत की राजनीति म भाग लते थ। गावा क ससाधना तथा अपनी सरकार द्वारा किये जा रहे विकास काया म तालमेल करके जन सहयोग आर भागीदारी से ज्यादा से ज्यादा विकास कार्य कराने और गरीब से गरीब का पहले लाभ पहुचाने के लिय अपनी पूरी क्षमता स जीवन पर्यन्त लगे रहे। पचायत की रचनात्मक राजनीति म भाग लेना वे आवश्यक मानते थे। उनका हमेशा निर्विरोध, सर्व सम्मति से सबको साथ लेकर काम करने का भाव प्रबल था। पचायत चुनाव और पचायत कार्य मे पूरी रुचि लेते थे। अच्छे उम्मीदवार जीते भले लाग पचायत म पच सरपच बने और न्यायपूर्वक सेवा कर इसके लिय पूरा प्रयास करते आर सहयोग दते थ। वे दलगत राजनीति से सदा ऊपर रहे सवर्ण और दलित सभी वर्गो क अच्छे लोगों को गाव के सामूहिक कार्यों आर पचायत म भाग लेने के लिय प्रोत्साहित करते थे। जब पचायत चुनाव 14 12 81 का हाना तय हुआ तब गाव के कुम्हारो आर खेतोलाई के राजपूतों तथा कुछ मडाल के लोगो ने मुझे उम्मीदवार बनाना चाहा। मेर पिताजी श्री घेरूलालजी सहमत नही हुये। तब लोगा न श्री भैरूदानजी से आग्रह किया कि वे राजी करे। उन्होने मेरे बड़े भाई श्री मूलचन्दजी नौलखा को सहमति देने के लिये लिखा— चुनावो म काइ खड़ा हा वह ता दूसरो बात होती है पर वोटर लोग खुद आग्रह कर तब नटना मुश्किल पड़ता हे।

मेर ख्याल से लोगो ने चाहकर के हीरालाल को खड़ा किया है तो आपको मजूरी दे दनी चाहिये। सफलता मिलने से तो सन्मान ही बढ़ेगा क्वचित सफल न होवे तो घर का काम करेगा ही। (भैरूदानजी का पत्र दिनाक 4 12 81)

मैन दो बार सरपच का चुनाव लड़ा। उनके आशीर्वाद से दियातरा का सरपच बना। उस काल म मेरे सरपच के रूप मे कार्य करने मे सही राय और पूरा सहयोग श्री भरूदानजी से हमशा मिलता रहा। 1990 91 मे गाववालो से मेरा मतभेद ओर तनाव हो गया तो उन्होने ही विश्वास दिलाकर गाववाला को आश्वस्त किया। उनकी राय और निर्णय सबको मान्य होते थे। उनके प्रति लोगा का अगाध विश्वास और आदर था।

हमारे नौलखा परिवार से उनका गहरा सम्बन्ध रहा। मेरे पिताजी घेरूलालजी ने उनके यहा तेजपुर मे मुनीम का काम किया था। पिताजी उनको हमेशा बाबू ही कहते। उनका हमारा सम्बन्ध सेठ मुनीम का नहीं पारिवारिक अपनत्व का गहरा सम्बन्ध है। हमारे नौलखा परिवार के मार्ग दर्शक ओर निर्माता श्री भैरूदानजी हैं। उन्ही के मार्ग दर्शन और सहयोग से आज हमारा परिवार वास्तव म नौलखा से भी ऊपर सुख समृद्धि की स्थिति म है। यह उन्हीं का आशीर्वाद है। वे मनुष्यो को घड़ने वाले शिल्पी थे। उन्होने पत्थरो से हीरा और लाल बना दिये।

नर रत्न महाजन श्री भैरूदानजी छलाणी को नौलखा हीरालाल का प्रणाम।

पिताजी प्यार भरा समुद्र

■ श्री भवरलाल छलाणी ■

पूज्य पिताजी के बारे मे कुछ भी लिख पाना मेरे लिये दुष्कर कार्य है। क्योकि उनका रहन सहन 35 वष की आयु तक तो मेरे सामने प्रगट नहीं था। कारण था तत्कालीन परम्परा के अनुसार मै अपने दादाजी के पास गाव मे ही रहता था। वे जब गाव आते तो भी वे मेरे से दूर रहते और मै भी उनके पास नही जाता था। सन् 1936 37 से मा भी तेजपुर आन जाने लगी थी। सवत् 1999 (सन् 1942 43) म दादाजी दादीजी के देहावसान के बाद हा पिताजी के पास उठने बैठने लगा। जब जब मै उनके पास रहा जो कुछ देखा उनसे व ओरा से सुना उसे भी शब्दो म बाध पाना मेरे लिय कठिन है।

गुणज्ञता कृतज्ञता

पिताजी क गुणा को पूरा पूरा लिखना तो सभव नहीं है। फिर भी उनका वात्सल्य मुझे आज भी अभिभूत कर देता है। मै बचपन से हा उनसे दूर रहा जो उस समय की परपराओ के अनुकूल ही था, किन्तु फिर भी मेरे प्रति उनका कितना स्नेह

और प्यार था उसका एक दृश्य मरे सामन तब आया जब मैं पहली बार बीकानेर से तेजपुर के लिए रवाना हुआ। वे मुझे रलवे स्टेशन पर छोड़ने आये थे। जब ट्रेन छूटने वाली थी तो मैंने खिड़की से देखा कि पिताजी रो रहे हैं। यह दृश्य हजारो बार आखो म घूम जाता है। दूसरी घटना थी जब मेरी पहली पत्नी की मृत्यु हुई। पिताजी इस बात पर विश्वास करते थे कि मैं जब किसी को झूठ नहीं बोलता, तो दूसरा भी मेरे सामने सत्य ही कहेगा। इसी आधार पर घर पर खबर उन्हे जो भी मिलती उसे वे पूर्ण सत्य मानते थे। घर म मा आदि तो चली आ रही प्रथाओ पर विश्वास करती थी। अत वे पिताजी को मेरी पत्नी की बीमारी की उतनी ही जानकारी देती जितनी वे जान पाई और अन्दर ही अन्दर झाड फूक का इलाज करवाया। बीमारी ने भयकर रूप ले लिया तब उसे बीकानेर लाया गया। डाक्टर वैद्यो ने उसे बचाने के लिये खूब प्रयत्न किये पर सब बेकार। उसकी मृत्यु पर पिताजी जो दु ख कर रोये वह दृश्य आज भी याद आता है तो उनके अन्तर म प्यार का झरना झरता हुआ नजर आता है।

अतिम समय म जब वे बीमार पड़े तो मैं कलकत्ता म था। खबर मिलने पर रवाना हुआ। मै पहुचा उससे पहले मेरे बारे म उन्होने कई बार पूछा कि वो आया? वो आया नहीं? मै पहुचा तो आख खोलकर देखा। लगता था उनकी इच्छा पूरी हुई। 19 दिसम्बर 1995 पोष बदी 12 सम्वत् 2052 को देहबद्ध आत्मा मुक्त हो गई। प्यारभरे अथाह समुद्र के धारक को शत शत प्रणाम।

काव्यांजलियाँ

भैरूदान छलाणी

■ कुमारी सोनिका जैन ■

भै– भैरूदानजी के गुण बतलाये
रू– रू रू म गाधीजी के विचार ममाये
दा– दानी थे वे बड़े उदार
न– न था कोई क्रोध उनमे
छ– छल कपट से दूर थे वे
ला– लालसा नहीं थी मन म
णी– नीच ऊच का भेद मिटाया, भाई चारे का पाठ पढ़ाया।

मगरे के 'गाधी'

■ रामदयाल खण्डेलवाल ■

श्री भैरूदानजी छलाणी की पावन याद म

लाखों ही आये गये कर जीवन बरबाद।
कुछ ही ऐसे होत है, रहती जिनकी याद।।
रहती जिनकी याद सफल उनकी जिदगानी।
उस ही श्रेणी म आत है, श्री भैरुदान छल्लानी।।
कह दयाल इस युगदृष्टा मे थी विचार की आधी।
जिसके कारण ही कहलाये वे मगरे के गाधी।।

सादा जीवन सग जिये, उच्च विचार के साथ।
सदा गरीबा पर रहा जिनका करुणा हाथ।।
जिनका करुणा हाथ सदा ही रह उनक प्रतिपालक।
गा सेवा के लिए आजीवन, बने रहे गापालक।।
कह दयाल' बेहाल निराश्रिता को आशाए बाधी।
वे ही थे सच्चे जनसेवक, थ मगरे क गाधी'।।

म्हारा भैरूदानजी

■ ईशरदान चारण ■

सन उगणीसे नव बीचै है गुणतीस नवम्बर जान।
छलाणी छीब दियातरे जनम्यो भेरूदान।।1।।

राजनीति मे रचरया तेजपुर आसाम।
आजादी मग्राम मे भेरू कीनो काम।।2।।

सन उगणिसे इकावन भारत भय चुनाव।
निरदलिय कोलायत स भैरू लड़्या चुनाव।।3।।

लाकसभा गोयल लड़्या भैरू राजस्थान।
काग्रेस सगठन को भयो चुनाव महान।।4।।

जिला अध्यक्ष गायल भये भैरू तहसील प्रधान।
पचायत चुनाव भया सन इठावन जान।।5।।

दियातरा पचायत का सरपच भरूदान।
गाव क्षेत्र पचायत मे भयो विकास महान।।6।।

समिति कोलायत प्रधान को घोषित नया चुनाव।
सन गुनसठ म मिल कियो निरविराध चुनाव।।7।।

काग्रेसी चुनिजीया, भेरूदान प्रधान।
पायो पद प्रधान को कियो न मन अभिमान।।8।।

यात्रा भत्ता नहि लियो किया जु जनहित काम।
पद प्रधान गरिमा रखी, किये विकास के काम।।9।।

तन मन धन से जिन करी गो सेवा भरपूर।
कुआ तालाब खोदाय के, जल सकट किये दूर।।10।।

विद्यालय निर्माण कर, कियो ग्राम विकास।
छात्रो को अनुदान दे, घर घर किया प्रकाश।।11।।

गाधी विचार दृढ़, समाज सुधार चाह।
टीका दहेज छुड़ा दिया, रोके बाल विवाह।।12।।

नारी शिक्षा दिलाय के घूघट परदा हटाय।
जाति पाति नहीं भिन्नता छुआछूत मिटाय।।13।।

उतम खाद रु बीज दे, अधिक अन्न उपजाय।
भैरू दिखाय दी उत्तम कृषी की राय।।14।।

आद्रस कृषि फार्म कियो मध्य दियातरा जान।
ट्यूब वैल खोदाय के, सीचित फसल महान।।15।।

ग्राम भलाई काम मै, आगे भैरूदान।
ग्राम शान्ति सद्‌भावना, राखी भैरूदान।।16।।

चावो किनो दियातरो छलाणी भैरूदान।
आयो को आदर घणा, सुख सुविधा सनमान।।17।।

ऊच नीच समभावना, शत्रु मित्र ईकसार।
दृढ़ निस्चै भैरूदान का सद्‌गुण सदा अपार।।18।।

सन उगणीसे पिचाणवे, अठारह दिसबर जान।
भैरूदान भू छोड़कर, किनो श्रग पयाण।।19।।

सब कुटम्ब करुणा करन कर करके गुणगान।
बीस दोहे श्रद्धा सुमन, कहे जु ईशरदान।।20।।

'मिनखा देही मे देव हा बे'

■ धूड़ाराम प्रजापत ■

मिनख री दही म देव हा दुनिया भेरू याने याद करे।
थारै आच्छे कामा रो आ दुनिया बेठी बखाण करे।।

(1) गाव दियातरा म जलम लिया थे वश छलाणी उजाळ दियो।
गऊ वश की सवा करके, ऊचो पुण्य कमाय लियो।।
ऊच नीच नै कदै न जाणी इण रो भद मिटाय दियो।
निर्धन जन की सेवा करके अमर पद थे पा लियो।।
मिनख री देही म देव हा ।।

(2) सत्य अहिसा रा सच्चा पुजारी रस्ता जग ने दिखा गया।
दया ममता भाईचारे रो सब ने पाठ पढ़ाय गया।।
बुझता दीप जळा दिया थे कइया ने मिनख बणाय गया।
म्हारै हिवड़ै रा साचा प्रेमी सुर्ग माही सिधार गया।।
मिनख री देही म देव हा ।।

(3) शिक्षा रा प्रेम पुजारी हा थे नुई नुई जोत जगाय गया।
शिक्षा दीप जळा करक अन्धकार ने मिटा गया।।
आच्छै आच्छै कामा सारू पद अमर थे पा गया।
दुनिया थाने याद करेली, मिनखा रै दिल मे छा गया।।
मिनख री देही म देव हा ।।

(4) मर्‌या नही बे अमर होग्या सुर्गो माही राज करे।
कृपा हस्त बणाय रखना, धुड्ड थाने याद करै।।
मिनख री देही मे देव हा दुनिया भेरू थाने याद करे।
थारे आच्छै कामा रा आ दुनिया बेठी बखाण करे।।

'गाधीजी के प्रतिबिम्ब'

■ डॉ प्रेमसुख मरोठी ■

मैने
महात्मा गाधी को
नहीं देखा
परन्तु
सुना, पढ़ा और जाना
मैने
भैरूदानजी छलाणी को
देखा, जाना
और थोड़ा
पहचाना
बीसवीं सदी के
महामानव का
प्रतिबिम्ब
कपिल मुनि आश्रम के पास
'दियातरा' ग्राम म
अवतरित हुआ
और
दिया तार
कुल और जन जन को
उस भव्यात्मा को
कोटि कोटि
वदन

बापूजी रो प्रिय भजन

■ प्रस्तुति वेगी सुखाणी ■

बराबर बाट म्हे लेस्या गरीबी ने अमीरी ने
सरासर दखसी दुनिया, विदा होती गरीबी ने।

1 सभी हा एक का बेटा बड़ो कुण और कुण छोटो
सभी भाई हा आपस म अरे कुण पातलो कुण मोटो। बराबर

2 कोई सुख नीद म सोवे, कोई काटै दुखी राता
कटारी सी चुभै दिल मे करा तकदीर की बाता। बराबर

3 कियो घर म ही सब सौदो सौर कर मैल की पूजी
भूल गया बात भाई की और घर का बन्या मूजी। बराबर

4 बण्या है धर्म की मूरत करा जप जाप मदिर म
मगर नित झूठ पाखड से भरा दौलत तिजारी म। बराबर

5 अरे आ राम की परजा मती लूटो थ कोई ने
फर भी आ ही सोचा हा पता नहीं लागसी बीने। बराबर

6 बड़ी गफलत म आपा हा हुओ परगट कदी को वो
सदेशो दे रहो वितरण को विनोबा सत बनकर वो। बराबर

7 भिखारी रूप मे आयो जमीधन दान मागे है,
बण्यो दीन बन्धु दीन को सनमान मागे है। बराबर

8 जमी माता सभी की है सभी सतान आपा हा
बण्या क्या फेर पति बीका बड़ा हैवान आपा हा। बराबर

9 करा सेवा जमीं की म्हे बराबर पेट भर खास्या
न राखा एकने भूखो सभी मिल खेत म्हे बास्या। बराबर

10 बाट लेस्या सभी सुख दुख बड़ाई तुच्छ भेदान
सरासर एक हा जास्या मिटाकर पाप खेदान। बराबर

पत्र खण्ड

पत्रम् पुष्पम्

■ फूसराज छलाणी ■

अपने पिताजी के बारे म लिखना बहुत कठिन काम है, कारण भावना को शब्दा म लिखना आसान नहीं है। उनकी कथनी करनी म एकता थी। जब वे प्रथम प्रधान, पचायत समिति कोलायत के थ, उस समय सरकार की तरफ से पचायत समिति के प्रधाना को खूब सुविधा थी—जीप दे रखी थी किन्तु अपने काम के लिए उपयोग नहीं करते थे। हम बच्चे कभी कहते थे तो उनका उत्तर होता था कि यह राष्ट्र के काम के लिए है सो जिस उद्देश्य के लिए है उसी म काम लाई जायेगी। मीटिगा मे भी गाव से पैदल जाते थे या ऊट पर। उनका मानना था कि किसी भी चीज का अपने लिए कम से कम उपयोग करे व समाज के लिए जितना हो सके करे।

मै भी गाव मे रहता था तब वे यही कहते थे कि सबके साथ एक जैसा व्यवहार करो। घर मे खेती का काम करने वाले लोग है। उनके साथ एक थाली म बैठकर खाना खाओ। हम लोग ऐसा ही करते थे। कारण कि आपस म बड़े छोटे का भेद भाव नहीं आए—ऐसा मन नहीं बने कि यह हमारे काम करने वाले है सो इनके साथ व्यवहार नौकर जैसा हो।

जो भी रहने वाले काम करने वाले होते—उनको घर के सदस्य की भाति रखते व अपने घर वाला से उनको ज्यादा मानते।

धुराला हमारा खेत है उसमे अतिथिशाला बनाई उसम उन्हाने अपने हाथ से लिखा—

प्रभुता तज प्रभु किन्ही सनेहू, आज पवित्र भया यह गेहू

वो अतिथि सत्कार को सबसे ज्यादा महत्त्व देते थे।

मै अपनी शिक्षा पूरी करके 1970 ई में मेरे पिताजी भेरूदानजी के परम मित्र श्री दुर्गाप्रसादजी बगड़िया के उद्यम स्टीलबर्थ' प्रा लि मे कार्यरत हुआ। उनके निर्देशन म उद्याग और व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहीं रहते हुए स्वय के व्यवसाय एव उद्योग (वुड प्लाई प्रा लि तथा कॉमर्सवर्थ, ट्रासफोर्मर आदि) का प्रारम्भ और विस्तार किया। मेरे निर्माण म पूज्य पिताजी के जीवन दर्शन शैली और विचारा का जो योगदान है इसे मेरे शब्दा म व्यक्त करना मेरे लिए समव नहीं। पिताजी ने 36 वर्ष की उम्र के बाद असम को छोड़कर हमारे पैतृक गाव दियातरा मे ही रहना प्रारम्भ कर दिया था। ग्रामीण जीवन का उन्हाने स्वाभाविक रूप से अगीकार

किया एव कृषि गो सेवा खादी, ग्रामोद्योग के द्वारा ग्रामो के आर्थिक विकास एव सर्वांगीण पुनर्रचना के शोध प्रयोग एव व्यवहारिक कार्य किये। साथ ही दूरस्थ व्यवसाय का निर्देशन व सचालन बहुत कुशलतापूर्वक किया। घर, परिवार समाज व सस्थाओ से सम्पर्क सवाद व सबध निर्वाह की उनकी अद्भुत वृत्ति थी। पत्राचार की प्रवृत्ति प्रबल थी। पत्रो मे मात्र समाचार ही नहीं होते थे बल्कि परिवार गाव देश, काल और परिस्थिति का सजगता के साथ सटीक वर्णन होता था तथा जीवन के लिए उदात्त चिन्तन सहज व सरल रूप मे प्रकट होता था। उनकी कथनी करनी म अन्तर नही था एकता थी। उनका चिन्तन जीवन व्यवहार के द्वारा परीक्षित होता था। अत उनके पत्रो म अनुभवसिद्ध आत्मदर्शन ही बोलता है।

मेरे व मेरी धर्मपत्नी चन्द्रा के नाम उनक पत्र नियमित आते थे। उनके कुछ पत्रो के अशो को यहा प्रस्तुत कर रहा हू। ये अधिकाश पत्र 1980 से 1986 वर्ष के मध्य के है। वे 1975 मे ही गृहस्थ से वानप्रस्थ और सन्यस्त जीवन की ओर बढ रहे थ। निष्काम कर्म उनका साधन था। इन पत्राशो मे उनकी जीवनदृष्टि औद्योगिक एव व्यावसायिक दृष्टि स्वास्थ्य खादी शकुन, ज्योतिष आदि के सम्बन्ध मे उनका दशन स्पष्ट होता है। उन्होने कृषि कर्म को अपना जीवनकर्म और जीवनधर्म ही बना लिया था। कृषि उनकी आत्म साधना का साधन बनी। गाव की बारानी खेती को आर्थिक दृष्टि से लाभकारी बनाने के लक्ष्य से जमीन सुधार कुआ ट्रेक्टर बीज, बुआई निदान आदि के नये नये प्रयोग उन्होने दृढ आस्था और सकल्प के साथ किये। उनके लिये कृषि ही सात्विक जीवन का आधार थी। गो सेवा और खादी उनकी सहज वृत्ति थी।

पत्राश

दियातरा
दिनाक

प्रिय फूसराज चन्द्रा

आशीष।

स्नेह
भैरूदान

जीवन दृष्टि

दिनाक 29 11 83

राव की बही म मेरी जन्मतिथि मिगसर बदी 2 सवत् 1966 सन् 1909 की 29 नवबर है। इस तरह अबकी (29 11 83 को) मिगसर बदी 2 को 22 11 रही। हमारे यहा वर्षगाठ का रिवाज नहीं है कोई विशेषता भी नहीं। ससार म कालचक्र मे सब समा जाता है।

× × ×

दिनाक 29 11 80

मेरी आयु के 72 साल म प्रवेश हुआ। पिछली पीढ़िया म पिताजी 71 मे प्रवेश कर पाये। य एक विवेचन ही है हर्ष शोक की बात नहीं।

× × ×

दिनाक 22 8 84

मै तो खादी मानस का ही था। सक्रिय भाग तो आसाम म खादी बेचता था, तब लेता था। वहा मे काग्रेस के नेताओ मे आना जाता था। कइयो स अच्छी दोस्ती थी। गाधीजी, नेहरूजी आते तब श्री द्वारकाप्रसादजी* व मै वहा के लोगो के बराबर कार्यक्रमो मे हिस्सा लेते थे। धन्धे वाले थे सो जल जाने की जोखम से तो बचते ही थे।

* श्री द्वारकाप्रसादजी बगड़िया असम के प्रसिद्ध उद्योगपति पिताजी के अभिन्न मित्र।

× × ×

दिनाक 18 6 86

मै तो कुती के इन वचनो को ही ज्यादा धारने योग्य मानता हू—

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहू निरवाण।
जनम जनम हरिपद भक्ति यह वरदान न आन।

× × ×

दिनाक 17 12 81

मै आश्रम व्यवस्था का हामी हू तथा यह भी मानता हू कि मनुष्य शरीर 75 साल का हो जाये तो सर्वकर्म त्यागी यानि सन्यास ले लेना चाहिये। वह सन्यास शास्त्र सम्मत भले न हो व्यक्ति के मन सम्मत तो होता ही होगा। वानप्रस्थ मे मैने मन से खेती और समाजसेवा पर मन लगाने का तय किया था उसमे हिसाब रखना आवश्यक था। दो कारणो से वह सधा नहीं—अस्वस्थ शरीर और दो नम्बर का साधन। ऐसे ही मन के सन्यास का क्या हाल रहेगा पर कल्पना यह है कि ईश्वर चिन्तन मे ही ज्यादा समय लगाऊ तथा सारे झमेलो से बरी हो जाऊ।

× × ×

दिनाक 29 11 83

भारत के वर्णाश्रम मे 75 साल की आयु बाद सन्यास वृत्ति का महत्त्व माना गया है। महाभारत काल मे तो इसे पालने वाले लोग गृह त्याग करके वन मे चले

जाते थे। शेष आयु वन में ही बिताते। अस्वस्थ तन में आ लगे जाने में उसी में गुप जाते थे। गांव वालों व घर वालों पर उनका दबाव या बोझ नहीं होता था। वन में फल फूल प्रचुर मात्रा में होते जिससे निर्वाह हो जाता था पर आज वह व्यवस्था चल नहीं सकती। हां मानसिक सन्यास तो हो ही सकता है और उसके लिए 75 साल की उम्र की हद भी जरूरी नहीं है। सन्यास में तो देना अधिक लेना कम मुख्य है। अनुभव का लाभ दिया जाये तो नई पीढ़ी का उत्साह बढ़ता रहता है

× × ×

दिनांक 17 12 81

भवर (बड़ पुत्र) ने मेरी मंशा का जिक्र तुझे भेजा और तूने (कुसराज) हिसाब न लिखकर चला लेने का लिखा ये सारे अच्छे संकेत है। इसमें भाइ भाई में आदर की भावना और मेरे प्रति दोनों की श्रद्धा ही झलकती है जिससे मुझे पूरा सन्तोष है।

× × ×

दिनांक 22 12 ■

भवर के पत्र में था कि तिनसुखिया का हिसाब पाकर आपकी चिन्ता कुछ कम होना चाहिए। मुझे ऐसी कोई चिन्ता है नहीं। यह उम्र तो बच्चों से और आसपास के लोगों से आदर पाने में ही ठीक प्रकार से बीतती है जो मुझे भरपूर मिल रहा है। जगह जगह सब है। इधर विवेकानन्दजी के साहित्य का पढ़ने से आत्मदर्शन की तरफ भी बढ़ा हू। मानव योनि में और क्या चाहिए। आर्थिक रुग्य (तंगी) तो आज दुनिया भाग रही है उसके देखते तो अपना हाल सन्तोषजनक ही है।

× × ×

दिनांक 10 11 83

भाई श्री द्वारकाप्रसादजी बगड़िया का 5 11 83 का पत्र अभी आया है। उन्होने भी कैलाश* के आश्रम हो आने का जिक्र किया है। उन्हें साईं बाबा के सान्निध्य में परम सन्तोष है। यह अच्छा ही है। इस आयु में सबसे ज्यादा आवश्यकता सन्तोष की है।

---

* श्री द्वारकाप्रसादजी बगड़िया के पुत्र

दिनाक 11 11 83

श्री द्वारकाप्रसादजी का मन श्री साईबाबा मे रम गया है इस से कैलाश को भी सतोष होगा। बाबा का आश्रम बेगलोर से 100 मील पर है। एक कमरा इन्हे आश्रम मे दे दिया है अब वह ज्यादा वहा रहेगा। बंगलोर का आना जाना भी रखेगा। इस आयु म कैस भी सतोष हो जाये वह अच्छी बात है। 75 के आसपास की आयु सन्यास जीवन म ही शाति, सतोष देती है। हालाकि हमारे समाज का गठन व्यापक उदारता पर नहीं हुआ है। देश की अभावग्रस्तता या लबे समय की गुलामी भी कारण है। फिर भी अच्छे घरो म वासनामुक्ति तक पहुचने की चाल रहनी चाहिए।

× × ×

दिनाक 16 11 86

पिछले दिना बाबा (सत्य साई बाबा) की 60 वी जयन्ती हुई थी उसका वणन करते द्वारकाप्रसादजी ने लिखा था कि देश विदेश के आठ दस लाख लोग इकट्ठ हुए थे। बाबा मे लोगो को चमत्कृत करने की खूबी है। हाथ हिलाने से भभूति झड़ती है, पर इससे फायदा क्या है, समझ म नही आया।

× × ×

दिनाक 15 11 83

मै कुछ होना चाहता हू किताब मे युवाचार्यजी (आचार्यश्री महाप्रज्ञ) ने एक प्रवचन म बताया है कि तीन दुर्बलताए होती है मनुष्य म—क्रूरता विषमता और स्वयम् को हानि पहुचाने की प्रवृत्ति। ये तीनो बाते हकीकत म एक ही कारण से है— समझ की कमी पर समझदारी का तो कोई निश्चित मापदड होता नहीं है। रामायण मे काकभुसडजी ने गरुड़जी से कहा है— तुमही लागी अरु मशक प्रयन्ता नभ उड़ाही नही पावही अन्ता साधारण बोलचाल मे कहते हे— ज्ञान ध्यान का छेड़ा नहीं बाकी मनुष्य अपनी कमियो को समझने की कोशिश करने लग जाय तो कुछ भला बनने का मार्ग खुल जाता है।

अवगुणा के बाबत रामायण मे ही कहा है— जाने ते छिजही कछु पापी नाम न पावहि जन परितापी मनुष्य को अहकार या वासनाए गिराती है अन्तरमुख होने से इसमे कमी हा सकती है।

× × ×

दिनाक 27 3 84

अभी मे आचार्यश्री तुलसी का सकलन बीती ताहि विसारदे दख रहा हू। मनुष्य ही बीती का ज्यादा याद करता है बाकी तो सारा जगत विकास ही विकास

करता है। पशु पक्षी पौधे सारे आगे ही आगे बढ़ रहे हैं। मनुष्य के लिए भी मार्ग तो वही है पर वासनाओ व आवेगो मे आकर, वह विगत पर रुक जाता है। हम जैसे किसी सीढ़ी पर चढ़े तो ऊपरी पगथिये को छोड़ना ही होगा नहीं तो रुक जायेंगे। और शोध की दृष्टि से पीछे हुए काम का सहारा लेकर मनुष्य को आगे बढ़ने की सुविधा भी है।

× × ×

दिनाक 20 2 84

हम लोगो के किसी के तिनसुखिया न आने से तुम्हारे मन मे सताप की भावना बढ़ जाती है ऐसा समझना वाजिब नहीं है। मेरा स्वास्थ्य ही इन चार सालो मे खेचल (हलचल) सहे ऐसा नहीं है फिर दो दस दिन आ जाय, कोई किसी का क्या सहारा करेगा? स्नेह का सवाल तो दूर नजदीक मे है नहीं। अच्छा है तुम सब तरह से विकास कर रहे हो। बडेरो की रीति नीति को आगे बढ़ा रहे हो यही सतोष के लिए भरपूर है।

× × ×

दिनाक 7 4 84

हमारे भारतीय मानस का स्त्री को पिए ही पियारी होऊ का शुभाशीर्वाद ही सर्वोच्च है पर दुलीचन्द के जैसे दोनो जोड़े बनेगे उनमे लड़कियो को भाग्यशालिनी हो के आशीर्वाद की जरूरत है।

दुनिया मे दोनो (भाग्य और पुरुषार्थ) की बात होती है प्रयास और समझ से होती है उसका मिठास दूसरा ही होता है भाग्य से होता है उसका दूसरा।

× × ×

महापुरुषो के प्रति भाव

दिनाक 26 12 83

महाराज (नारायणदासजी सिडावाला) की बरसी 7 1 84 को अबके अपने यहा भी करेगे आजकल प्रसाद मे ही दो तीन हजार लग जाते होगे कहते है कोई खाकर राजी होता है, कोई खिलाकर राजी होता है। जैनो मे तेरह पन्थ का असर होने के बाद खिलाकर, राजी होने की बात प्राय लुप्त सी हो गई है। इस पद्धति (खिलाने की) से मानवीय स्नेह तो बढ़ता ही था। पहले वक्त मे मा पिताजी ऐसे अनुष्ठान करते थे।

जासी फूल झड़, वास न जासी बागजी'

(ये पंक्तियां भारत के पूर्व रक्षामंत्री श्री जगजीवनरामजी के निधन पर लिखी

श्री जगजीवनरामजी ने लगन से जो प्रयास किय और सफलता पाई उसकी
अर्से तक फैली रहेगी। अब वह वयोवृद्ध हो गय थे। पचहत्तर साल की आयु
के बाद वयोवृद्ध भारतीय दर्शन मे माने जाते है। कई लोग इस अवस्था म गृह
भी करते थे। कल (7 7 86) को श्री जगजीवनरामजी की अंत्येष्टि के दिन
री प्रतिष्ठान बन्द रहे। डाक भी आई गई नहीं।

श्री जगजीवनरामजी भारत के रक्षामंत्री थ तब कालायत आये थ। उस दिन
साथ मच पर अपने घर के लोगो को मौका मिला था।

× × ×

दिनाक 30 5 84

27 5 84 (पुण्यतिथि) को नेहरूजी पर प्रकाशित ग्रंथ को देखा। साथियो से
लेने की या शासक बनने पर साथियो को ओहदा देने की लगन और सूझ
हनेयोग्य थी। आज जिसे भाइ भतीजावाद कहते है, वह तो विरोधियो ईर्ष्यालुओ
नारा है। भरोसे स काम लेना हो तो सम्पर्क वालो से व रिश्तेदारो से ही लिया जा
ता है।

× × ×

र्थ दृष्टि

दिनाक 2 11 83

'उत्तम ठाम खर्चे वित्त करे उपकार सदा मन चित्त।'

मैं बचपन से ही पिताजी के (द्वारा) बोले जाने वाले स्तवन मे यह वाक्य
नियोग करता था इसका असर भी जीवन म हुआ। सरसरी तोर से तो पिछले 60
सालो म इसका असर ही हुआ। व्यवहार मे कम बुराइ आई परिवार अपेक्षाकृत
सज्जनो की श्रेणी म रहा। हा साधारण कार्यकर्ताओ की तरह अर्थोपार्जन मे सजगता
व ढिलाई दोनो रही जिससे खूब सम्पन्नता नहीं आई या यू भी मान सकते हैं कि अर्थ
की खच (खींच) ही रही तो भी अच्छी जगह खर्च करना अन्यो का उपकार करना
होता रहा। आय से खर्च कम करने का मजबूत पक्ष हमारे घर म ढीला रहा है इसी से
आज की परशानी है। हमारा काफी खर्च गो पालन पर हुआ, जमीन पर, खेती पर
हुआ वह (खर्च) तो कीमत बढ़ने से सम्पत्ति म बदल गया है।

दिनाक 10 11 83

जमीन स उत्पादन करना देश के लिए जगत् के लिए भला काम है। इस म महनत ज्यादा और आय कम तो रहेगी ही। हा इसम कुशल अकुशल सब को काम मिल जाता है। कपट फरेब कम स कम होता है।

× × ×

दिनाक 19 4 85

आज जोधपुर की पट्टी (पत्थर पट्टी) 40 व 42 रुपये नग पड़गी। अब कोई भी चीज चालीस गुणा स कम है ही नहीं काफी वस्तुए साठ गुना (भाव) तक हैं। मतलब हुआ सौ का नोट दो रुपये का ही है। अब इस अनुपात म जिन्होन आय बढ़ाली है वही सुख से रह पायेगा। सतावन साल पहले 1985 विक्रमी म अपने तजपुर म पन्द्रह हजार खर्च बाद स आय हुई थी तब सारे लोग खुश थे।

उसी साल हमने यहा नागौर से चारसौ रुपये म बैल जोड़ी मगाइ थी तब मैंने यह मणा (व्यग्य) लोगों स सुना था कि ऐसे बैल अपनी कोई कमाई से तो लेता नहीं अपने बाप की कमाइ है। यू ये मणा (कटाक्ष) तो नहीं था सच बात थी।

उस वक्त मे उन्नीस वष का था और व्यापार म पूरा रस लेता था। गोदामो म बोरो के ढिग लगाना सफाई करना मोटारामजी के साथ मैं बराबर करता था। साल के अत म कच्चा चिट्ठा मिलाकर ही सोते थ। काम तो यू छोटा था। मल एक लाख बीस तीस हजार का था पर आज दर्वे तो यही सल एक करोड़ क पास पहुचेगा। हम हर प्रकार की चीज लहसुन प्याज मसाला रखते थ। पिताजी की लगन थी कि ग्राहक मागे वह वस्तु दुकान म होनी ही चाहिए।

और भाव भी तब तुलनात्मक मन्दे थे। तम्बाकू पाच रुपये मन अब तो ऊपर म सात सौ नौ सौ रुपया मन तक हो जाती है। उस वक्त ही सोना ले सकते थ। पिताजी ने सवत् 75 स 85 क बीच हजार भरी सोना ले लिया होगा। बीस हजार की वैल्यू थी आज तो तइस चौबीस लाख रुपया हो गया है। हा कुए म भरपूर पानी आ जाये तो हमारा यह फार्म बीस लाख की वैल्यू का जरूर हो जायेगा।

× × ×

दिनाक 15 11 83

बेदाना आने लगा है। उन्नीस रुपए किलो है। फल और सब्जी के दाम इस एक साल म ड्योढ़े दुगने हो गये। चाय म भी ऐसा ही हुआ। यह एक तरह का दुष्चक्र है। रुपये क मूल्य गिरना असुविधाजनक ही है। खादी धोती 10 15 रुपया म आती थी तब भी बहुत महगी लगती थी। अब मुन्नीलाल (छोटाभाई) कहता है 100 120 रुपये

तक का भाव है। लगता है सोने के भावों का अनुक[illegible]

बोझ आया तो कीमत फिर बढ़ जायगी।

× × ×

दिनाक 29 11 83

जमाना अच्छा होकर भी भाव तो मन्द नहीं हुए बल्कि तेज हुए है सो घास फूस भी तेज ही रहेगा।

× × ×

दिनाक 29 12 83

राजस्थान म तो यह पहला साल होगा जिसम सारे जिला म उपज हुई है। इसस अगले 5 7 साल तक असर रहगा। अपने इलाके म तारामीरा से लोग स्ठ (सतृप्त) गये है।

इस साल सरकार का काफी कर्ज भी चुक जायगा। ब्याज न भरना पड़े उस म बहुत लाभ है। मगर धन्ध वाला तो ब्याज न भरने की अवस्था को सोच ही नहीं सकता। उसे तो कर्ज म ही अपना फर्ज अदा करते रहना होगा।

× × ×

दिनाक 17 12 81

भवर को लिखे पत्र म आशका के मूल म यह भावना काम करती रहा है कि इतना जल्दी कर्ज से छुटकारा न हो तो मुश्किल आ सकता है। ज्यादा फर्क तो व्यापार हो डाल सकता है। कभी कभी खेती भी पाढ़िया का कर्ज धो देती है, हो वह कर्ज कम मात्रा म होता है। व्यापार मे भी सहारा न लगे तो उम्र भर भी नहीं लगता। पर लगना हो तो अपन सवत् 2028 साल की तरह लाख सवालाख का टोटा 8 10 महीना मे लाख दो लाख की बचत म बदल गया था। उसमे भी माल बेचन म मै देश आ गया था भवर के हाथो ही बिक्री हुई थी। अब वापस व्यापार तो मै कर नहीं सकता। पहले भी ढीले ढग स धन्धा करता रहा हू। मन पर अच्छे चरित्र व किसी को कष्ट न पहुचाने की भावना का असर ही छाया रहा है।

उद्योग, उद्यम व व्यावसायिक दृष्टि

(हर वक्त कोई न कोई नया कार्य (उद्योग) व्यवसाय करने की उनकी मनसा रहती थी। सन् 1973 मे हमारे सबधी दियातरा निवासी श्री मूलचदजी नवलखा, बीकानेर निवासी श्री मूलचदजी बड़ेर तेजपुर के बड़े उद्योगपति एव व्यवसायी के साथ पिताजी के उद्योग लगाने का प्रसग चला था। इस सदर्भ के श्री मूलचदजी को लिखे

पत्र म उनकी उद्यमी प्रवृत्ति एव व्यावसायिक दूरदृष्टि एव सूझबूझ व्यक्त होती है उनका उल्लख कर रहा हू।)

दिनाक 8 11 73

श्री मूलचद जी नवलखा

स्नेह

आपका आज 8 11 73 का पत्र मिला। आपन श्री मूलचदजी बडेर से मिलकर सारी हकीकत लिखी सो ठीक है। जो मशीन लगी हुई है उनसे कितना उत्पादन हो सकेगा? वहा (अनूपगढ) की आवक देखते कितने की मशीन और बढानी होगी, पूरी मेहनत करने से 30 प्रतिशत तक तो आय होनी ही चाहिए। श्री मूलचदजी जाते तो भी दाम बढने की समावना तो क्या थी अभी भी वह दाम तो कस कर ही लेते है। श्री मूलचदजी को देखने का आग्रह करें। मेरे को तो वह चलकर देखने का कह रहे थ। कोई चीज बराबर पहले जाच ली जाए तो बाद म उसने का तो सोचना नहीं पड़े। और आप जाए तब हो सके तो सयल साहब (श्री रामप्रसादजी सहल बीकानेर के प्रसिद्ध ज्योतिषी) से दुघडिया दिखा लेवे। हमारे उनके बताये वेला पुल म सब कार्य ठीक होता रहता है। फूसराज का 13 11 को न भेजकर 18 11 तक रोका जा सकता है फिर तो एक बार जाना है ही। मै जरूरत होने पर आता जाता रहूगा। दामा म जितना कश लगाया जा सके लगावे।

× × ×

दिनाक 29 11 80

फूसराज चन्द्रा

आशीष

यहा के उद्योग यानि गम फैक्ट्री की प्राथमिक जानकारी में यह पाया गया कि इतने में सौ बोरी ग्वार रोज दला जा सकेगा। काम करना आवश्यक है। परोटने की बात है। इस बार में अच्छी उक्ति (युक्ति) और दृढ निश्चय चाहिए। रकम की खच (कमी) न रह तो साल भर मे काम चालू हो जायगा।

उद्योग मे पहले दो तीन साल तो कठिनाई रहती है। इसम (ग्वार गम) शायद कम हो क्योकि इसका मार्केट तैयार है। भावो मे ही उतार चढाव रहता है। तम्बाकू का सा खेल है। इसलिए सयोग हो तो जल्दी ही सफलता मिल सकती है। महगाई से ही लागत बढ गई है। अपना घर कराया तब काठ (स्लिपर) 5 रुपये नग मे आया था। अब 250 रुपये नग का है। आगे भी सस्तीवाडा होता दीखता नहीं है तो जैसा करना हो समाचार देवे।

दिनाक 10 11 83

अपना इस वर्ष का कलाजिग अच्छा रहा होगा। अपना कलकत्ता का पुराना हिसाब तय हो गया होगा और शर्माजी का कार्य अच्छी गति से बढ़ता होगा। आजकल बम काड बहुत होते हैं सो इन्श्योरन्स की सावधानी रखना।

× × ×

दिनाक 11 11 83

दिनेशजी (श्री द्वारकाप्रसादजी बगड़िया के पुत्र) तो अब कलकत्ता रहने लगे हैं। तिनसुखिया के धन्धे की सभाल पूर्ण रूप से किसके जिम्मे आ गई है? तुम्हे तो नागालैंड आदि का काम भी देखना होता है। काम की परेशानी नहीं लानी चाहिए, फिर तो काम भले कितना ही बड़ा हो इसलिए व्यवस्था मुख्य है।

सेठियाजी, शर्मा साहब, अनाप (ये तीनो हमारे तिनसुखिया के व्यवसाय के भागीदार) अच्छी रुचि लेते होंगे। राजेन्द्रजी (मेरा साला) का टाउर (मेरा भानजा) को भी व्यवस्थित होने मे सलाह देते रहना चाहिए।

× × ×

खादी के प्रति दृष्टिकोण

दिनाक 22 8 84

खादी मदिर के सदस्य तो बरकरार रहें यह तो हमारे खादी अनुराग पर है। खादी विचार के लोग तो कम रह गये और अब खादी भी विचार की चीज न रहकर व्यापार की चीज बनती जा रही है। फिर भी कम पूजी में ज्यादा नोकरी देन की ताकत इसी काम मे है।

× × ×

दिनाक 10 11 83

खादी मदिर का काम उन्नति पर ही है, उद्योग भवन (खादी मदिर का औद्योगिक कार्य परिसर) का काम बढ़ा है। मोदीजी (श्री सोहनलालजी मोदी) के भी चलता है। खादी सस्थाओ म अब नियम कर दिया है कि एक आदमी दो सस्थाओ मे अध्यक्ष नहीं हो सकेगा। सो कई सस्थाओ म अध्यक्ष की दिक्कत आयेगी, मत्री भी एक का ही रह सकेगा। श्री भगवानदासजी, श्री गोकुलभाईजी दो से ज्यादा में हैं।

दिनाक 2 11 83

श्री रामचन्द्रजी जैन (भवरलालजी छलानी की सुपुत्री श्रीमती रीता के श्वसुर गगानगर निवासी वकील, स्वतन्त्रता सेनानी) का पत्र है। उनके अभी श्वास की तकलीफ दो तीन माह से रहती है। स्वास्थ्य का ख्याल तो पहले से ही रखने पर तोहमत कम होती है। इसका पहला साधन है दीर्घ श्वास। जिससे भीतरी अवयव सचेत रहते है पाचन ठीक रहता है दूसरा मनोबल का विकास फिर शरीर बल तो सहज मे बढ़ सकता है।

× × ×

दिनाक 20 2 84

स्वास्थ्य बिगड़ जाना तो हमारी दिनचर्या की ढिलाई का ही परिणाम है। मैं तो फिर भी परहेज से 75 साल तक पहुच गया हू। चेचक मे रही खराबी शरीर मे 64 साल से चल रही है। मनुष्य शरीर के लिए सम श्वास का बड़ा महत्त्व है परन्तु इस प्रकार की जानकारी सब को कहा है? युवाचार्य (आचार्य महाप्रज्ञ) ने बताया है कि बालपने मे तो श्वास सम ही रहता है। आयु बढ़ने के बाद क्रोध माह जैसे आवेगो मे श्वास छोटा हो जाता है जिससे हृदय के कोशो मे कई अवरोध आ जाते हैं। श्वास प्रेक्षा यानि ध्यानपूर्वक दीर्घ श्वास से (श्वास) सम की जा सकती है। दीर्घ श्वास का अभ्यास तो सब कोई कर सकते है इससे फायदा ही है।

× × ×

दिनाक 7 4 84

मेरे पाचन मे गिरावट चालू है। इधर कुछ मौका ही ऐसा हो गया तो चैकप कराने मे आलस्य हो गया है। अभी भी भवर आ जाये तो इलाज शुरू करना है। गगाशहर मे भी परीक्षा की तैयारिया है। इधर छोटी की शादी मे गाव रहना जरूरी है। यू फिक्र करने जैसा कुछ नहीं लगता। पाचन मन्द पड़ना रुक जाय तो चलता रहेगा। पाचन के मन्देपन मे यही मुश्किल है दवा, खाद्य व सूई कुछ भी लें असर देर से व कम होता है। मेरे असर तो होता है पर थोड़े वक्त मे असर मिट जाता है।

× × ×

दिनाक 7 7 86

मेरे यथावत है या यू कहे अपगता है। क्योकि खड़ा होने पर पेर शरीर का बोझ नहीं सभालता है। सो नागौर की तरफ के देशी तबीब को लाकर दिखाना होगा।

कहते है वह हड्डा सही जगह लाता है जिसस चला फिरा जा सकता है। अब ठड रहा है। अखरोट की गिरी लेता हू। इस तेल म दिमागी ताकत देन की कुव्वत होती मानत है। एस दिमागी नई कोई खराबी ता नहीं लगती।

× × ×

शकुन, अक, ज्योतिष

दिनाक 8 11 73

आप (मूलचदजी नवलखा) जाए तब हा सक ता सयल साहब (श्री रामप्रसादजी सहल, बीकानेर के प्रख्यात ज्योतिषी) स दुघड़िया दिखा लव। हमारे उनक बताये वेला पुल म सब कार्य ठीक हाता रहता है।

× × ×

दिनाक 29 11 83

कोलायत मेले से आते वक्त भवर ने बताया था। स्कूल म उनकी जन्मतिथि 10 11 है और हकीकत यानी मिगसर सुदी एकम विक्रम सवत 1987 का 22 11 रहा है। राव की बही में मरा जन्मतिथि मिगसर बदी 2 सवत् 1966, सन् 1909 की 29 नवबर इस तरह अबकी मिगसर बदी 2 को 22 11 रही। हमारे यहा वर्षगाठ का रिवाज नहीं है, कोई विशेषता भी नहीं। ससार म कालचक्र म सब समाजाता है।

अक शास्त्र से हमार को तीन, छ, नौ क अक अनुकूल पड़त हैं, एसा अनुभव आया है। हम तीना के उम्र क अक एक मेल के ही हैं। तुम्हारे 36 वा, भवर का 54 वा, मेरा 75 वा साल आज से शुरू है। जो अमल अक्टूबर तक तो चलगा ही। इस म कोई विशष उपलब्धि हो जाए तो सबल बढ़गा ही।

× × ×

दिनाक 13 4 85

नये वर्ष का आशीष। आसाम में बिहु, पजाब म लोहड़ी यहा मेष सक्राति है। सूर्य सिद्धान्त स यह मल बिठाया हुआ है। इसम घटत बढ़त नहीं होती। 365 दिन का ही साल हाता है। अग्रेजी तारीखो मे मेल है हर साल या सन् 13 अप्रल को ही मेष सक्रान्ति हाती है।

आज सुबह नया बैल उत्तर की तरफ मुह करके एक पैर आग करके बैठा था यह शकुन किसान क लिए बढ़िया स बढ़िया माना जाता हे सा उज्ज्वल भविष्य की कामना करनी है।

दिनाक 26 12 83

बड़े दिन का आशीष। दूज के चाद का महत्व है, वैसे ही दिन बड़ा होते रहने का महत्व है। वसत आते आते वाराय नया रूप ले लेता है। जमीन का रस भी घिर (बद) जाता है। दहधारियो की चेतना बढ़ती है। बड़े दिन को हमारे उत्तरायण कहते है। सूर्य उत्तर की तरफ बढ़ रहा है जो 21 जून तक चढ़ता ही जायेगा।

चादनी बाबत तुलसीदासजी ने कहा है 'सम प्रकाश तम पाख दोहू नाम भेद विधि कीन शशि सोषक पोषक समुझि जश अपजश दीन । सूरज की गर्मी दोनो छ माहा मे बराबर ही रहती है।

× × ×

दिनाक 29 12 83

बी बी सी वाले दुनिया के सर्वेक्षण म आन वाले सन् 1984 के साल को भारत के लिए आशावान गिना है, जबकि पश्चिम के राष्ट्र निराशायुक्त है। ये जनमत का सर्वेक्षण सट्टो की तरह ही होता है। आज के विनाशकारी आविष्कारो मे यू तो कोई मुल्क सुरक्षित नहीं है फिर भी जहा सामाजिक कम उग्रता है मानसून अच्छा रहता है, वहा के लोगो का आशामन्द होना स्वाभाविक है।

× × ×

कृषि दृष्टि

दिनाक 10 11 83

जमीन से उत्पादन करना देश के लिए, जगत के लिए भला काम है। इस मे महनत ज्यादा और आय तो कम रहेगी ही। हा इसमे कुशल अकुशल सबको काम मिल जाता है। कपट फरेब कम होता है।

रात रामनाथजी 25 आदमी लेकर आय 20 पहले थे, अब शायद रोज एक मुरबे की कटाई हो जायेगी। सारे 36 मुरबे बोये हुए है। सिद्ध (रामनाथ) स्वभावगत ठीक है सो इतने लोगो से काम ल लेते हैं। अबके हरिजन ज्यादा है सो बीड़ी वगैरह का खर्च ज्यादा है। अब मजदूरी भी पहले से बढ़ी है। शुरू में 5 रुपये मे लाते थे, पार साल 6 रुपये हुए अबकी 8 रुपये या 9 रुपये होगे। 900 1000 बीघा की एक साथ तो (खेती) फिर भी सभल जाती है पर अलहद अलहदे बोने काटने खले निकालने का तो सभव नहीं होगे। इसम भी उपज म तो कमी रहती है क्योकि निदान करना तो वश की बात नहीं।

× × ×

दिनाक 11 11 83

रामनाथजी आदमी ले आये है। ग्वार कटाई का काम चारो तरफ जोरो पर है। एक डेढ़ महीना ज्यादा काम रहेगा। बाजरी पचास बोरी निकाल ली है। साल भर

खाने को तो हो गई। ग्वार अन्दाज मे चार सो पाच सो बोरी हो सकता है। सिद्धो (रामनाथ सिद्ध) आने के बाद अपनी ओर गाव की जमीन का अच्छा उपयोग हाने लगा है। अबके तो अपनी पचायत ही जिले मे सबसे ज्यादा उपज मे रहेगी।

× × ×

दिनाक 11 11 83

अबके दुष्काल नही है। सो गायो के राहत का काम है ही नहीं। अब आगे गायो का काम डेरी वालो के कब्जे म ही रहेगा और मशीन होने से गायो की सख्या भी घट जायेगी। और चारागाह रहा नहीं है।

× × ×

दिनाक 29 11 83

मजदूर कढ (कढ गाव का खेत) कटाई करने गये है। वक्त हुआ ता 2 बजे तुम्हारी मा और मै कढ जायगे।

जमाना अच्छा होकर भाव तो मन्दे नही हुए बल्कि तेज हुए है। घास फूस भी तेज ही रहेगा।

धुराल (गाव स्थित खेत) की सरसो के बाड़ होने से रुखाली होती मगर होनी मुश्किल है। सरसा 40 बीघो मे है। बीज निगम का बीज है। कैसा फलेगा सो तो फलन से ही पता चलेगा। (आशका) देशी बीज से दो तीन क्विटल बीघे तक हा जाती है (विश्वास)। सरसो मे चपा रोग लगता ही है। इसमे छिड़काव से बचाव है पर अपन तो औषधि पानी दोनो की कमी है। कुआ हाने से ही दोनो जुटेंगे।

× × ×

दिनाक 26 12 83

धुराल जाना तो शाम को 3 बजे ही करूगा। इस समय धूप ठीक रहती है। यू विशेष काम तो नहीं है। थोड़ा जा आने से फुरती ही रहती है। कुआ खुदना शुरू हान पर तो उसे सभालने जाना आना रहेगा ही।

× × ×

दिनाक 26 12 83

भूमि सुधार म मेड़बन्दी आदि का काफी काम है। इतना और कैसे होगा भविष्य ही बतायेगा। मेड़बन्दी का ज्यादा असर तो वर्षा का पानी इकट्ठा हान म होता है। अबके खेत तैयार होता तो एक साल म ही सुधर जाता। रामनाथजी आदमी लायगे ता कुछ हो जायेगा।

दिनाक 29 12 83

दो दिन से ठड चल रही है। पर सरसो पर ज्यादा असर नहीं है। यू अन्तिम वर्षा 22 अगस्त को हुई थी सो जमीन म गहरी सील नहीं रही फिर भी जहा पानी ठहरा है वहा फसल ठीक ठाक है।

× × ×

दिनाक 20 2 84

कल थोड़ा झड़ सा था। आज धूप है तो भी हवा म ठड है। हिमालय म बर्फ गिरने स ऐसा हो जाता है। और सरसो 10 15 दिन म कट जायगी। अबके इस दुष्काल पड़ने वाल जिला म भी फसले अच्छी हुई। लोग सुख का अनुभव कर रहे है।

× × ×

दिनाक 27 3 84

सरसो कट गई है। 22 बारी निकाल ली है। कुछ हरी काटने स रग म फर्क भी आयेगा। आगे के लिए ध्यान रखना होगा। तिल सरसो ही क्या कोई भी अनाज कच्चा काटने से कमजोर तो रहता ही है। इस म तेल की मात्रा भी घट जाती है।

इस दफा गाव की गाय छूट जाने से गेहू चना सरसो वालो को रुखालना पड़ा फिर भी कुछ नुकसान भी हुआ। उजाड़ के डर स जल्दी भी काटना पड़ा। अपने तो सिचाई होने के बाद तार काटा लगाना ही होगा।

अपने कुए के लिए तो भूमि विकास बैक से ही (व्यवस्था) करना होगा। वहा से सबसीडी भी मिलती होगी। यह सब होगा पानी आने के बाद।

× × ×

दिनाक 30 5 84

सरसो म 50 रु की तेजी आई है। पर अपन ने तो पहले ही दे दी थी। उपज का भाव लेने के लिए स्टोरेज की सुविधा होनी जरूरी है। कुआ होने पर तो 800 1000 क्विटल उपज होने लग जायगी। तब स्टोरेज की सुविधा होनी चाहियगी। क्योकि 20 रुपया 50 रुपया क्विटल तो प्राय बढ़ते ही है।

× × ×

दिनाक 16 8 86

कढ की 100 (एक सौ) एकड़ की आज बुवाई हो जायेगी। धुराल पर वर्षा कम है। वर्षा होने पर ही बुवाया जायेगा। धुराला भी 100 एकड़ का ही बोने योग्य है। शेष तो मेड़बन्दी रास्ता ढाणी मे है।

यहा अभी 150 रुपये एकड़ पर खर्च मानते ह और 400 रुपये की उपज होती है। अच्छी मेहनत ठीक भाव रहे तो 1000 रुपया एकड़ तक आय हो सकती है। कढ पर अच्छी मेहनत की है तो ऊपरी आय तक पहुचने की उम्मीद है।

बेजनाथजी के अभी 9 ट्रेक्टर आये हुए ह। 2 खुद के है शेष गाव के ह। इनका यहा होना बुवाई म खूब सहारा होता हे। खुद के ट्रेक्टरा से तो 30 000 (रुपये) तक की बचत हो जाती है। दूसरे तो 5 10 दिन म दो दो तीन तीन हजार ले जायेगे।

25 के वी के ट्रान्सफारमर रिपेअरिंग स आने से दगे सो 5 7 दिन का (बिजली विभाग) कह रहे ह। नये तो देते नही है, सेकिन्ड हैन्ड म दिक्कत होती है तो जैसा पल्ले पड़ेगा सहना होगा। अपने किसी को पैसा तो दिया नहीं सो चाहकर अच्छा माल देगा? कलक्टर तक गये तो रजिश भले रखे यू कुए के काम म आज तक दिक्कत नही आई सो भली चीज भी मिल जाये देरी से (ट्रासफारमर) मिलने से सिचाई म देरी होगी।

× × ×

दिनाक 13 4 85

कुतर 200 मन मिलने से लेनी है, कुतर के भाव 25 रुपये से 27 रुपये के बीच चल रहे है। फलगट के भाव 36 रुपये से 40 रुपये तक है तो कुतर मिल जाए तो फलगट बेच देगे।

बैजनाथजी कुए बाधने के पत्थर का तय करके ही आयगे। बेक के काम म चेष्टा की थोड़ी कमी तो है पर दीपचन्द राका (भाणजा) से कह रखा है तो पार पड़ जाना चाहिये कारण भूरो (दीपचन्दजी भूरा, देशनोक) की ऑफिस बैक के सामने ही है तथा वह भी जमीन पर कर्ज इसी बेक से लगे।

गाये चार दुहाती हे। पुष्पावाली का दूध एक वक्त का बैल को दे रहे है शाम का हाली खा लेते हैं। बिलौने म रलायेगे (मिलायगे) तब घी आने लग जायेगा। पुष्पा के (गाय) मगायेगे तो भेज देग यहा तीन दुहाती रहगी।

सुबह पालबधे जा आता हू जहा डढ़ फिट तक मिट्टी कड़ी है। नीचे सफेद नरम मुरड़ आ जाता है। यह गेहू सरसो के लिए अच्छा है। ओर 1000 (हजार) नींबू के पेड़ लगा ले तो अच्छे फले तो एक लाख रुपये की सालाना आय हो सकती हे। तब खर्च निकल आयेगा फसल बचत म रहेगी। नीबू का बाजार बीकानेर है ही। और अब पत्र नये पते स (वुड प्लाई इन्डस्ट्रीज प्रा लि , माकूम रोड, तिनसुखिया) ही देता हू। हिन्दी म किया पता पहुचता होगा।

× × ×

दिनाक 19 4 85

ओर सब ठीक ठाक ह। बैजनाथजी अब आखातीज क बाद ही आयगे। बेल गाय साड सब ठीक ह किसी बात की फिकर न करना।

पत्रम् पुष्पम् समर्पयामि।

श्री भैरूदानजी छलाणी के पत्र

▪ मूलचन्द नवलखा ▪

श्री भैरूदानजी छलाणी की सम्पर्क एव सवाद की प्रवृत्ति प्रबल थी। जहा कहीं भी स्नेही सम्बन्धी होते, तो उनके घरेलू प्रसगों पर उपस्थित होते। बिना किसी विशेष प्रसग के भी मिलने सभालने के लिए लम्बी यात्राए करते। पत्रो के द्वारा सम्बन्धो को तरोताजा रखते।

उनके पत्रो की शैली बहुत ही सरल, सरस और प्रभावोत्पादक है। पत्रों म समाचार केवल सदर्भित व्यक्ति या विषय तक ही सीमित नहीं होते थे अपितु देश काल, परिवेश परिवार एव समाज के प्रति सजगता और सवदनशीलता बहुत ही सटीक रूप से व्यक्त हुई है। विविध विषयो पर उनके विचार पत्रो में प्रकट हुए है।

श्री मूलचन्दजी नवलखा मूलत दियातरा निवासी तथा नवलखा उद्योग समूह के सचालक है। छलाणी परिवार से उनके पारिवारिक घनिष्ठ सबध रहे हैं। वे एक कुशल व्यवसायी अच्छे विचारक और लेखक भी हैं। इनके द्वारा दीपावली, नव वर्ष बधाई पत्र व क्षमापना पत्रो म विचारपूर्ण सग्रहणीय सामग्री सकलित होती है। उनके द्वारा इस स्मृति ग्रन्थ हेतु श्री भैरूदानजी छलाणी द्वारा ज्येष्ठ पुत्र श्री भवरलालजी को लिखे तीन पत्र तथा स्वय मूलचन्दजी को लिखे चार पत्र उपलब्ध कराए गए है।

इन पत्रो म श्री छलाणीजी के जीवन दर्शन विचार व्यवहार व्यक्तित्व और चरित्र की सुन्दर झलक उन्हीं के शब्दो म प्रकट हुई है। श्री नवलखाजी द्वारा पत्रो मे दिये गए टिप्पण उन्हे और भी स्पष्टता प्रदान करने वाले है।

इन पत्रो के साथ श्री नवलखाजी का सम्पादक को लिखा पत्र भी है जिसम श्री भैरूदानजी के व्यक्तित्व और उनके प्रति श्रद्धा तथा स्मृति ग्रन्थ के सम्बन्ध मे उनक भाव उजागर हुए है। ये पत्र अविकल रूप म प्रस्तुत है।

— सम्पादक

नवलखा गम एण्ड दाल मिल
रानी बाजार बीकानेर
दिनाक 25/09/98

आदरणीय,

श्री धर्मचन्दजी साहब, सादर नमस्कार। आपका क्षमतक्षामणा का पत्र मिला था। आप हमे सदैव याद करते रहते है, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

पूज्य भैरूदानजी बहनोईजी के स्मृति ग्रथ के लिए आपने लिखा सो मेरे पास उनके कुछ पत्र मेरे नाम से तथा बधु श्री भवरलालजी छलाणी के नाम से लिखे गये रखे हुए मिले है। उनकी छाया प्रति आपको भेज रहा हू। ग्रन्थ मे छापने से ग्रन्थ की शोभा बढ़ेगी, मुझे भी रेवेन्यू मिलेगी।

अपने मिलने वाला से सम्बन्धिया से उनके प्रशसको से और समाज के विशेष व्यक्तियो से इस ग्रन्थ के लिए बार बार सम्पर्क किया है और करता रहता हू। पूज्य श्री बहनोईजी भैरूदानजी के बारे मे जितना लिखा जाए उतना ही कम है। आपसे तो कुछ छिपा हुआ नहीं है।

भैरूदानजी विशेष व्यक्तित्व के धनी थे। उनका प्रभाव और आकर्षक व्यक्तित्व वर्षो तक समाज व चौखले पर छाया रहा। वे जीवन पारखी प्रतापी पुरुष और समाज के जागरूक प्रहरी थे। उनका बुद्धिबल अनूठा था। वे विलक्षण बुद्धि के विवेकवान ओर धैर्यवान प्रभावशाली व्यक्ति थे। इन्ही गुणा के कारण वे लम्बे समय तक या यू कहू कि जीवनभर समाज के चौखले के सम्माननीय बने रहे और अपनी निरन्तर सेवाए देते रहे। दीन दुखी उनके द्वार से खाली नही गए। जब कभी भी अकाल की छाया पड़ी है गाव और चोखले को इस महापुरुष ने विचलित नही होने दिया।

उनके व्यक्तित्व का निर्माण न्याय के पावन स्रोतो दृढ़ता के अनन्य भावो प्रेम और एकता के अनुदानो और कल्याण के अनुरूप सकल्पो से हुआ था। वे दीन दुखिया के दर्द निवारक स्तम्भ थे। चोखले के इतिहास मे उनके जैसा चमक वाला व्यक्तित्व ढूढ़ने पर भी मिलेगा इस पर सदेह है या यू कहू कि मिलेगा ही नहीं।

अधिक बोलना पसन्द नहीं था पर बड़े प्रेम के साथ सभी की बात सुनते थे। हमारे परिवार के प्रति उनका अपार स्नेह था। ज्यादा क्या लिखू उनके बाबत लिखते जाए तो पोथिया भर दी जाए। आप बड़े समझदार और बुद्धिमान है। यह स्मृति ग्रथ देर से भले ही छपे पर वजनदार पुरुष का स्मृति ग्रथ भी वजनदार होना चाहिए।

इति।

आपका

मूलचन्द नवलखा

पिता का पत्र पुत्र के नाम

पत्र क्रमांक—1

श्री भैरूदानजी छलाणी द्वारा दियातरा से तेजपुर में ज्येष्ठ पुत्र श्री भंवरलालजी छलाणी को लिखा पत्र। पत्र में उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार से हैं—

1 श्री भैरूदानजी छलाणी की ज्योतिष व शकुनों में आस्था तथा शकुनों द्वारा वास्तविक भविष्य का अनुमान करने का उनका ज्ञान।
2 आजादी के तीन चार वर्ष पश्चात् 1950 1951 में ही राजकाज व व्यापार में जनहित की उपेक्षा एवं स्वार्थ साधन की पनप रही कुप्रवृत्ति की परख।
3 गांधीजी के स्वास्थ्य संबंधी विचारों की जानकारी।
4 घर के साथ साथ देश की चिंता आसाम में भूकंप से नुकसान व राहत कार्य की जिज्ञासा व चिंता।
5 शिक्षा के साथ व्यवसाय कार्य भी बूते के अनुसार करना।
6 गणेश आशू छोटे भाई पूनमचंद काकाश्री अमोलकचन्दजी के लड़के भाइ, आभा श्री छलाणीजी की बेटी जो छोटी उम्र में दिवंगत हो गई।

दियातरा
भादवा बदी 3
2007 विक्रमी

चिरजीव भंवर

तेरा पत्र सावन सुदी 12 भादवा वदी 2 का मिला। डाक हमेशा एक सी रफ्तार से नहीं आती। आज बड़ी तीज है। पतड़े के हिसाब से आज के वर्षा के योग से मडान होना चाहिए था और मामूली हो भी रहा है। वर्षा हो गई और टिड्डी को टाल दिया। उस जगह धान हो जाएगा। धान का होना कितना महत्व रखता है इसे तू जानता ही है। आज मनुष्य जीवन के आधार इस धान की कितनी कमी है, सो किसी से छुपी नहीं है। हमारी राजस्थान सरकार ने चना खुला करके एक नया तूफान मोल ले लिया है क्योंकि चणा का भाव 9 (नौ) रुपये से सीधा 12 (बारह) रुपये मण्डियों में हो गया। तब स्थानीय दुकानदारों ने अपने पास के सारे चने दबा लिये और बीकानेर में धाड़ वालों को आखिर हड़ताल करनी पड़ी। अब सुनता हूं कि समझौता हो गया है। मतलब साधन का रवैया सब जगह चलता दिखता है।

और गणेश को यहां आने से नुकसान तो है ही क्योंकि यहां कोई शिक्षा नहीं मिलेगी पर अगले का बाप है जहां भेजे वहां भेजेगा ही। और मोटारामजी शायद यहां आयेंगे क्योंकि गणेश उनके साथ आया जब तो यहां पहुंचाना ही होगा। और भाई पूनमचंद तेजपुर आ गया सो जाना। इनके पिताजी की राय निजी काम करने की बिल्कुल नहीं दिखती। यह तो कहते हैं कि एक बार नौकरी कर लेना ही ठीक है। काम

करने से नुकसान लग जाए तो और कारोबार म कोई निश्चित बता नही सकता कि नफा ही होगा। फिर पूनमचद खुद अपनी मर्जी से करे तो बात अलदा है। यहा से रुपया पैसा भेजने का विचार नहीं हे। इस सारी हकीकत को देखते भाई पूनमचद को वहा किसी के यहा रहकर ही काम सीखना चाहिए। अपने यहा तो कामकाज विशेष है नहीं तो सीखेगा क्या? ओर मूलचन्दजी ने चाय के बाबत लिखा सो चाय पीने म नुकसान तो हे ही, बाकी अभी ब्रह्मपुत्र का पानी बिगड़ा हुआ हे सो पानी शुद्ध पीने की गरज स चाय जैसा उबला पानी पीना अच्छा रहेगा। ओर स्वास्थ्य के नियम जानने म तो हमारे सामने कठिनाई है ही नही, क्योकि पूज्य गाधीजी के विचारो की जानकारी हम है ही। हा, पालन म जरूर कठिनाई हे ओर जितना पाल सकेगे उतना ही फायदा उठाएगे।

और असम के भूचाल से कहा कहा क्या क्या हर्ज हुआ और अब राहत का काम कौन कौन किस किस ढग से करते है लिखना ओर तेरे मास्टर साहब को मेरा स्नेह कहना। सभल सके उतनी शिक्षा लेकर मेट्रिक पास की तैयारी करना ह। दूसरी दुकान की प्रवृत्ति म भी कुछ ध्यान देना ह और वहा के वातावरण को भी समता स चलाना हे लेकिन अपने बूते मुजब, बूते से ज्यादा नहा ओर कम तो नहीं ही। आभा अब ठीक है, शरीर की त्वचा पसीजने लग गयी है पैर का दर्द भी कम है। पाच सात दिना म चलने लग जाएगी। आशू की सीनी गाय को सुल्तानजी पहुचा आया है।

आशीष स
तेरा पिता
भेरूदान

पत्र क्रमाक 2

यह पत्र दियातरा से आसोज बदी 13 स 2007 का लिखा गया। इस पत्र म उल्लेखनीय है—

1 व्यवसाय पर पुत्र के स्वास्थ्य व शिक्षा को वरीयता।
2 गायो के प्रति पारिवारिक सदस्य की तरह स्नेह।
3 व्यापार के साथ चोखले म खेती व असम मे भूकम्प की चिन्ता।
4 खान पान (बड़े भोज आयोजन एव उनमे भोजन) सम्बन्धी नियमो से अधिक दैनन्दिन बर्ताव की शुद्धता का महत्व।
5 गणेश कुन्दनमल भाइयो के लड़के पूनमचन्द चचेरा भाई।
6 श्री रघुवरदयालजी गोइल स्वाधीनता सेनानी राजपूताना के तत्कालीन प्रथम खाद्य मत्री छलाणीजी के अभिन्न मित्र।

चि भवर

अबकी पत्र म तेरा लिखा नहीं आया। पत्र आसोज बदी 8 का था। भाई पूनमचद गोहाटी स चीनी वगैरह लाता है लिखा सो यह सब लेवा बेची क्या दलालों स होती है या दूसरे तरीके से और भवरलालजी राका पहुच गए होग। कहीं नौकरी रखवाने की कोशिश करना और तेरे लिए पहले सेहत को सभालना दूसरा परीक्षा के लिए तैयार होना मुख्य काम है। दूसरे सब काम इसके बाद कर सक तो, नहीं तो छोड़ देना और यहा सब कुशल है। यहा की तरफ कोई फिक्र न करना। और आसोज सुदी 3 को बाबू रघुवरदयालजी गोईल देशनोक पधारेंगे सो म भी आसोज सुदी 2 की शाम को जाऊगा और टोकी गाय 5 7 दिनों म बच्चा देगी। दूसरी सब को ब्याने म अभी देरी है और चौखल मे खेतो म धान किसी क पूरे किसी क आधे माल का होगा, कोई कोई कोरा भी रह जाएगा। टिड्डी अभी तक फिरती है सो जहा रात भर खेत मे रह जाती है उसक तो नुकसान पूरा कर देती है दिन म उड़ती रहती है।

यहा पर सबक स्वास्थ्य अच्छी तरह ह और अब वहा भूकप का धक्का लगना बद हो गया होगा। दिरहट्टे का पत्र यहा आता है। कुदन गणेश खानगी पत्र देते है सो पहुचते होंगे और तैने जिन नियमो को रखन की सलाह मागी, सो हकीकत रूप में रखने अच्छे ह पर नियम रूप म रखने से कोई खास असर नहीं होता। इसलिए मेरी तो अब यही राय बन गई है कि खान पान बाबत कड़े नियमो स उतना फायदा नहीं होता उससे रात दिन क बर्ताव को शुद्ध रखने स होता है। मान लो कहीं पाच सौ आदमियो का खाना हुआ और मौका आ गया तो खा लिया उससे विशेष कुछ नुकसान नहीं पर ऐसे खानों का मौका ढूढते रह और आयोजन करते रह तथा फिर न खाए तो क्या फायदा? और इसी तरह हम अपनी कमजोरी को हटाना है। नियम व्रतो के चक्कर म पड़ने स शायद बड़े मकसदो को गौण (गौण) समझने लग जाय।

जीवन साहित्य आता है। अबकी गाधी डायरिया निकलेगी सो दो प्रति मगाई है। मास्टर साहब बराबर आते होग।

तेरा पिता

आसोज बदी 13

पत्र क्रमाक—3

यह पत्र सम्वत् 2007 म दियातरा से तेजपुर लिखा गया। इस पत्र में उल्लेखनीय है—

1 छलाणीजी गोइलजी के भक्त और गोइल साहब छलाणीजी के भक्त। तत्कालीन राजपूताना क खाद्य मत्री का दियातरा मे विश्राम उनका सत्कार, दिनचर्या व्यवस्था और राजकीय ठाठ।

2 अच्छ भजन व गाना की रुचि।

3 पुत्र को शिक्षा के लिये सचेत करना—बिना पढ़े देश की सेवा भी नही हो सकती। पढ़ाई का लक्ष्य देशसेवा।

4 चतुर्भुजजी चचेरे भाई काका साहब श्री अमोलकचन्दजी छलाणी।

5 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन जयपुर 1951।

2007 विक्रम

चिरजीव भवर,

मै श्री कोलायत से पत्र लिखकर भवरलालजी बेद को डाक मे डालने को कह आया था। बाद मे यहा से एक कार्ड माननीय रघुवरदयालजी गोइल के यहा विराजते वक्त दिया था, पहुचा होगा। कल शाम को साढ़े तीन बजे यहा वापिस पधार गए और तो उनके लिए हम क्या बन्दोबस्त कर सकते थे? तिबारी के उत्तर पश्चिम कोने मे जयपुर अधिवेशन मे बनायी जैसी टट्टी (शौचालय) बनवा दी थी और बाथरूम अपने नोरिये वाला ही काम मे आया। बाबूजी की दिनचर्या इस प्रकार थी। सुबह शौच हो आने के बाद कुछ देर हरिस्मरण करके फिर चरखा कातते और हजामत बनाते फिर स्नान करके अति सादा भोजन करते है। फिर मुलाकात करते और फल भी ले लेते है। शाम को आठ नो बजे भोजन करके कुछ दूध पी लेते है दस बजे सो जाते है। हिंद के बड़े बड़े नेता आराम करने के लिए जैसे वर्धा व पिलानी जाते है इसी तरह आराम करने के लिए बाबूजी (ने) हमारे गाव को चुना था। साथ मे श्री मेघराजजी परीख और छोटूलालजी व्यास और तीन मोटर ड्राईवर थे। एक कार तो स्वर्गीय महाराजा सार्दुलसिहजी की मगाई हुई बहुत बढ़िया रोलस थी जो तीन साल पहले ही 21 हजार मे खरीदी थी। दूसरी जीप कार थी क्योकि कच्चे रास्ते मे यही काम देती है। एक दिन झझू, कोलायत घूम आए। एक दिन गड़ियाले की तरफ और झझू की तरफ तो मै अकेला ही उन लोगो के साथ गया था। गड़ियाले की तरफ काका साहब भी साथ थे और रवाना होते वक्त चिरजीव मीना ने तिलक करके तुलसीदल की बनाई हुई माला पहनाई और एक नारियल भेट किया। गाव के ढोलिया को गाने के लिए कहा पर वे राजी नहीं हुए, इससे गाना बजाना कुछ नही हुआ। औरते गा सकती थी पर अच्छे गीत व भजन कोई जानती ही नहीं हैं क्या गाए? भाई गोपीचद उन लोगो के साथ ही जीप मे चला गया, चतुर्भुज कल जाएगा और खेत मे कुछ काम हो रहा है। काकड़िये मतीरे कुछ कुछ अभी तक हैं और तेरी पढ़ाई अच्छी तरह होती होगी परिश्रम करके मैट्रिक देनी है फिर आगे भी पढ़ना है। बिना पढ़े देश की सेवा भी नही हो सकती सो ध्यान रखना।

आशीष से

तेरा पिता

श्री मूलचन्द नवलखा के नाम पत्र

पत्र—1

श्री भेरूदानजी छलाणी द्वारा विक्रम सवत् 2023 को लिखा गया पत्र का अश प्रस्तुत है।

इस पत्र म उल्लेखनीय है कि—

1 सयुक्त परिवार क व्यापार व्यवसाय की देखरख तथा विस्तार परिवार क मुखिया के रूप म श्री भैरूदानजी छलाणी करते रह। किसी ने काम किया, कम किया, नहीं किया इसका विचार या भदभाव किय बगर सबकी आवश्यकताओ का ध्यान समान रूप स रखते। परिवार म वृद्धि क साथ समुचित रूप से बटवार का समयोचित विचार किया।

2 विशेष ध्यातव्य है—बटवारे म स्वय का हिस्सा स्वय ही कम कर दना फिर भी काम सभालत रहने का दायित्व वहन करत रहना।

3 तथ्य है कि छलाणी परिवार के व्यवसाय का बटवारा अद्भुत प्रेम व औचित्य के साथ हुआ। सबसे छाटे को हिस्सा चुनन म प्राथमिकता (उछल पाती) दी एव सबसे कमजोर को अपने साथ रखा।

पत्राश

मै अनुभव करता हू कि भविष्य के लिये हमे फिर साचना चाहिये। सवत् 1999 से आज 25 वर्ष तक सारे काम काज की ऊपरी देख रेख मेने ही की है और जेसा भला बुरा मे कर पाया करता रहा हू और उस बाबत आय म का 10 ⁄ प्रतिशत ज्यादा लेता आया हू तथा घर पर गाय भैस खेती का कार्य इस साल से पहले तक परोपकार के दध (धधे) म गिनकर करता रहा हू। पर अब हमारी जो आय है उससे मैं देखता हू कि मेरे बढ़े हुए परिवार का खर्च नहीं निकलगा। अत मुझे इसके लिये कहीं आय का साधन और जुटाना होगा। ओर उस वक्त मै आज जेसा मनोयोग वर्त्तमान आय के साधनो पर पूरी तरह स नही दे पाऊगा इसलिये स 2024 की चैत सुदी 8 के बाद होने वाली आय पर 10% ज्यादा लेने का हकदार नहीं रहूगा। यह आप सबो को मान लना चाहिये मैने यह फैसला जान बूझ कर ही किया है। और इसके मानने म आप मे स किसी को सकोच करने की कोई बात नहीं। वर्तमान काम मे एक आदमी हमारा देखभाल करने को रहेगा ही और मै भी यथासाध्य निगाह रखता रहूगा। इसकी कानूनी कार्यवाई सबके सहूलियत के मुजब हो जायगी।

भैरूदान

पत्र 2

यह पत्र 27 2 1955 का है। इस पत्र म

1 कर्मस्य कौशलम्' का अर्थ—जो जिस काम म लगा है उसी म प्रवीणता प्राप्त करे, बताया गया है।

2 श्री छलाणीजी के समाज सुधार के सम्बन्ध म गभीर विचारो के साथ व्यावहारिक दृष्टि प्रकट हुई है।

3 श्री छलाणीजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री भवरलालजी ने अपनी दूसरी शादी के बाद पर्दा प्रथा उन्मूलन के आग्रह के लिये प्रतिज्ञा कर ली थी कि उनकी पत्नी श्रीमती रतन देवी अगर पर्दा रखेगी तो उनको अपना मुह नहीं दिखायेगे। समाज म उस समय सस्कारगत रूप म मुह ढकना आदर का सूचक माना जाता था।

4 सामाजिक दोषो के सुधार म श्री छलाणीजी स्वेच्छया सुधार के पक्षधर थे। दबाव व जबर्दस्ती को उचित नहीं मानते थे। प्रेमविहीन दबाव डालकर होने वाले सत्याग्रह को दुराग्रह मानते थे।

5 गाव म रहने वाले इस महापुरूष का सही मूल्य आका नहीं जा सका।

काई मोती अनमोल समुद्र तल समावे।
अथक नीर जठे कुण जाय सरावे।।

श्री मूलचन्दजी

दिनाक 18 2 का पत्र आज देखा।

उस दिन चौपड़ा की जान म श्रीगगानगर गया था। श्री मालचदजी छाजेड़ के साथ अभी आया हू। आपने अपने बारे म लिखने बोलने म फर्क बताया सो स्वाभाविक ही है। कर्मस्य कौशलम् का यह मतलब है कि जो जिस काम म लगा रहे उसी मे प्रवीणता से काम करता रहे। परदा बाबत आपने लिखा जो शब्दो से जो कुछ कहे नहीं, तो असल म हमारी स्त्रिया परदा नहीं करतीं बल्कि मुह ढकती है और सो भी थोड़ी देर। और मुह ढकना कलक का विषय नहीं बल्कि आदर का है ऐसा लोग मानते है। भवर को मैने आगाह किया कि तू किस रास्ते पड़ा है वह व्यक्ति स्वार्थ का है। जिसकी हम भरपेट भर्त्सना करते आए है, क्योकि इससे आखिर यही होने वाला है कि यह तेरी विवाहिता पत्नी है जिसका तू चाहे जो उपयोग करेगा लेकिन सकीर्णता इससे आगे नहीं जाती सो, समाज का निगाह रखकर ही कोई कदम उठाना श्रेयस्कर होगा। पर न जाने क्यो उसको यह सीधी सादी बात गले नहीं उतरी और आखिर उसने यह हठ किया कि मेरी पत्नी खुले मुह नहीं फिरेगी तब तक मै उसे अपना मुह नहीं दिखाऊगा जिसका सीधा अर्थ है कि या तो वह मुह ढकना छोड़े या मेरी आशा नहीं रखे लेकिन जरा सोचिये तो सही कि 5 7 दिन के सहवास के बाद कोई पति या साथी किस बूते पर यह धमकी जायज बता सकता है। सद्भाग्य है कि

यह लड़की शान्त स्वभाव की है नहीं तो इस दबाव के कारण क्या नतीजा भविष्य के जीवन पर हो सकता है? यह मनमानी करने का तरीका अगर समाजवाद का या लोकहित का कोई मानता है, तो समाज का सद्भाग्य आने का नहीं है। और इन हठो मे कोई स्त्री स्वतत्रता देखता है तो मै तो यही कहूगा वह अपने हृदय मे देवत्व के भ्रम मे शैतान को पनपा रहा है, जो कभी भी भयकर स्थिति मे डाल सकता है। भवर की बहू का मुह ढकने की हम किसी ने आज्ञा नहीं दी है तो भी वह सारो के साथ ढके तो हम फर्जियात रूप से मुह खोलने का दबाव नहीं दे सकते क्योकि विवाह की शर्तो मे परदा नहीं था। हा ऐच्छिक शर्त जरूर थी पर वह पूरा पाला नहीं गया था। बाद मे यह गगानगर रहीं जब लड़को ने ही इससे मनचाहा करवाया और आप कह सकते हैं कि किसी का नियम कोई कैसे तुड़वा सकता है पर दरअसल नियम लेने मे सावधानी न बरती गई हो और दूसरो से सम्बन्ध रखने जैसा कोई नियम ले तो क्या वह नियम कहला सकता है? कोई कह सकता है कि मुझे मोक्ष जाना है इसलिए अमुक सख्या मे रोजाना जीव मारूगा तो क्या वह नियम होगा या सत्याग्रह होगा? इसी तरह किसी पर प्रेम विहीन दबाव डालकर होने वाला सत्याग्रह दुराग्रह मात्र है। तर्क और व्यावहारिकता, समन्वय कायम रखे बिना तर्क का गाड़ा बहुत दूर जाए ऐसा मै तो नहीं मानता। हमारी तरफ से तो भवर की बहू का मुह खुला रखने की छूट है लेकिन भवर इस छूट का उपयोग न करे तो शोभनीय माना जाए।

दियातरा — आपका

27 2 55 — भैरूदान

पत्र 3

इस पत्र मे निम्नलिखित बाते उल्लेखनीय हैं—

1 आयुष्य के सम्बन्ध में विज्ञानसम्मत दृष्टि।
2 गरीबो के प्रति सवेदना तथा गरीबी की चिता।
3 सामाजिक सरोकार एव व्यवसाय—व्यवहार मे विश्वस्त वृत्ति।
4 गाव मे रहते हुए कारोबार के प्रति सजगता मार्गदर्शन और दूरदृष्टि।
5 नवलखा परिवार के प्रति उनका अथाह स्नेह था। आपके आशीर्वाद का ही फल है कि आज हम कुछ बन पाए है। वे बिगड़ी को बनाने वाले शिल्पी थे।

दिनहट्टा
25 5 71

श्री मूलचदजी,

स्नेह।

आपका 25 5 का पत्र आज मिला। मील का भी इसी तारीख का पत्र आज मिला है। कल गाव से पत्र था। श्री सार्दुलमलजी का देशनोक में देहावसान हो गया।

आउखा इतना ही था—इस बात को आज विज्ञान चुनौती देता है। मनुष्य जाति की अच्छी परवरिश से आयु बढ़ गई है। वह तो गरीबी की घोर चिंता से छूटे। अब बच्चो के प्रति समाज की कसौटी है। मेरे खयाल से सार्दुलजी जैसा असहाय परिवार अपनी तहसील म नहीं था। खुद बीमार, स्त्री अधगली बच्चे बेचेत और यह सब सयाग या इत्तफाक से बन गया था, किसी का खास कसूर नहा था। हम कह सकत है कि भोली स्त्री से विवाह नहीं होता तो यह परिवार कुचक्र म नहीं फसता। पर समाज मे इससे गेले भोले भी किसी न किसी सहारे से निभ जाते है। अब भी किसी के राम रिदे (हृदय) म बेठे और बच्चे भूख के शिकार न बन तो अच्छी बात है। कभी कभी भगवान एसा कर देता है।

आपने छो र को पहले पत्र दिया उसका जवाब नहीं मिला। आजकल उनकी गद्दी शायद ही खुलती है क्याकि श्री भूरसिहजी गोहाटी आ गए है। अजीतमलजी कलकत्ते ह जरूर, मगर वह ऑफिस आते नहीं, बाड़ी रहते है।

यू वे लोग भी कारोबार म मने गने अलदे (अलहदा) हुए है। देने किस किस के किनके हिस्से आये यह अभी तक स्पष्ट नहीं कर पाये हैं। दो चार माह म हो जायेगा। हुण्डी वापिस आ जाए, तो कोई विचार नही करे। यहा से समाचार मगा लेते तो मै गोहाटी या मद्रास से पूछ लेता। खैर हुन्डी आ भी जाये तो रख लेवे। रकम का कोई डर नहीं है।

भवर 27 5 को गया। भेरूदानजी के घर से भी अमरचद सिवा सब देश गये है। यहा हम सब अच्छी तरह है। तम्बाकू 2300 मण का स्टॉक हो गया है। हमारे चलती का माल ले रहे है। गत वर्ष सब स्टाक 2500 (मन) का हुआ था। अब तीन (3000 मन) तक कर लेना है। चिरजीव फूसराज चन्द्रा तिनसुकिया चले गये है। यहा दो गाय दुहाती हैं। मीना ओर मीना की मा के पूरा आराम है। दवा कविराज की चलती है और मेरा स्वास्थ्य भी ठीक है। मै जून म तेजपुर आ सकू।

आपका

भैरूदान

पत्र 4

इस पत्र मे निम्नलिखित बात उल्लेखनीय है—

1 मेरे (मूलचन्द नवलखा) भाई हीरालाल को सरपच के चुनाव मे खड़ होने बाबत उनकी राय व्यक्त हुई है।
2 खादी मदिर बीकानेर का अध्यक्ष के नाते या गाधी विचारधारा के नाते बराबर सभालते रहे।
3 दलीय राजनीति से परे ग्राम समाज के हित साधन के लिये चुनावा म रचनात्मक दृष्टि एव सक्रिय रुचि प्रकट होती है।
4 श्री घेरूलालजी हीरालाल नवलखा के पिताजी।

तजपुर
4 12 81

श्री मूलचदजी नवलखा

स्नेह।

भारत म हाली के त्यौहार की धूम रहा करती थी। अब चुनाव भी उसी कोटि के है। अभी पचायता का चुनाव 14 12 को हाना तय हुआ है। अपनी पचायत क उम्मीदवार म पहले भागीरथनाथ फिर ईशूदानजी व सूरताराम मेघवाल बन। पर अपने गाव क कुम्भारा ने और खेतालाई के राजपूतो ने इन तीना उम्मीदवारा को चुनना पसद नहीं किया। कुछ मडाल के लोग और य लोग मिलकर खूब आग्रह करके हीरालालजी को उम्मीदवार बनाया है। श्री घरूलालजी सहमत नहीं हुए। आपकी राय लेने का सुझाया है। चुनावो म कोई खुद खड़ा हो वह ता दूसरी बात होती है पर वाटर लाग खुद आग्रह करं तब नटना मुश्किल पड़ता है।

अभी गोपजी वगैरह भाटी तथा आपक पिताजी यहा आए थ। दानो का यही कहना है कि आप सहमत रहे। एसे तो अब चुनाव 30 साला स हो रहे हैं। अपना अपना मत होता है। मेरे खयाल से लोगा ने चाहकर के हीरालालजी को खड़ा किया है ता आपको मजूरी दे देनी चाहिए। सफलता मिलने से तो सनमान ही बढ़ेगा। कदाचित सफल न होवे ता घर का काम करेगा ही। आजकल सरपच की कई जिम्मेदारिया ग्राम सेवक निभाता है सो सरपच के ज्यादा जाखिम है ही नहीं। मे 6 12 को खादी की मीटिग मे बीकानेर आता हू उस शाम को आपसे मिलूगा।

स्नेह

भैरूदान

× × ×

पिता के पत्र पुत्री के नाम

■ श्रीमती पुष्पा पुगलिया ■

दियातरा
दिनाक 1 6 90

पुष्पा

देह धरे यह फल भाई।
भजिय राम सब काम विहाइ।।

हमारी कामनाय (आवश्यकताये) जितनी कम होगी हमारे मन को उतना ही सुख रहगा।

× × ×

दियातरा
दिनाक 9 2 80

श्री निर्मलकुमारजी

14/2 का विमला बेन ठाकरे जसलमेर स 8 10 साथिया सहित यहा आयेग रात भर रुकगे। उस इन्तजाम ओर सहवास क लिय 13/2 की शाम की बस से पुष्पा को और कमलचन्द का भेज देव

× × ×

दियातरा
दिनाक 12/1/75

श्री निर्मलकुमारजी

पूज्य बाठियाजी से मेने रिश्ते बाबत पूछा था तब मैने चार बाता का जिक्र किया था। परिवार मे स्त्री स्वतत्रता हो गरीबो के प्रति आदर हो लड़का निरव्यसन हो, उधमशील हो।

(यह पत्र पुत्री पुष्पा की श्री कमलचन्द पुगलिया से सगाई के सन्दर्भ म उनके बड़े भाई श्री निर्मलकुमारजी पुगलिया को श्री भैरूदानजी छलाणी द्वारा लिखा गया)।

× × ×

दिनाक 24/6/80

पुष्पा, बेगी

विमान दुर्घटना स सजय की मोत नेहरू परिवार मे जहाज डूबने जैसी ही घटना हुई। सयोग प्रबल होता है।

यहा तलाई म कुछ मछलिया ही बची बताते है एक दो दिन म वर्षा हो गई तो जीव सब मरेग नहीं कुए पर तगाई है, टेकर वाले गडियाले से ही लाकर सप्लाई करते ह, मछलियो की कौन देखे।

× × ×

दियातरा
दिनाक 28/1/85

श्री प्रकाशकुमारजी

जेवरा ने हमारी महिला वर्ग का मन से और दिल से कमजोर बनाया है सा हमे जेवरा के आकर्षण को बढ़ावा नही देना है।

मै 26/1 का खादी मदिर की क्ताइ क्लास म रहकर शाम को घर आ गया था।

गाव का बच्चा का खेला नाटक देखन नहीं आये और आपके गोशाला क कृप निर्माण की क्या प्रगति हुई है? टयूबवेल के बजाय खुले कुए ज्यादा मुफीद रहग।

× × ×

दियातरा

दिनाक 11/3/83

पुष्पा बेगी

हर चीज म अनुमान स खर्च ज्यादा लगता है इसम भी जिस गति से (कुआ) खुदता है, खर्च ज्यादा ही आयगा।

× × ×

दिनाक 6 5 77

पुष्पा

पूनमचन्द रूपचन्द कानमल न अपनी सम्पत्ति का बटवारा कर लिया है पूनमचन्द ने किसाना की उगाही अपने तरफ रखी है अच्छा ही हुआ। एक मा क थे, लड़ नहीं थाड़ा कम बेशी हुआ ता किसी दूसरे क ता गया नहीं। धन के लिय लड़ना भी कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। जेन मत म पड़ोसी स प्रम करने का ता कोई आधार नहीं दीखता क्याकि यह मत व्यक्तिवादी है। धन के लिये न लड़ यही अपरिग्रह वृत्ति का सबूत हा सकता है।

भैरूदान

× × ×

आवतन खादी धारी

दियातरा

19 9 43

श्री व्यवस्थापकजी

खादी मदिर बीकानर

मान्यवर

म करीब सात साल से आदतन खादी व्यवहार कर रहा हू और भविष्य म खादी व्यवहार करने का निश्चय है सा मेरा नाम खादी मन्दिर क स्थायी ग्राहका म लिखन की कृपा कर।

भवदीय

आपका

भैरूदान

Phone No DTA II

Chhalani Stores

GENERAL TOBACCO DEALERS & ORDER SUPPLIERS

Tobacco Licence No. L2 & L3/1/55

P O DINHATA (COB)
N F RLY

Dated, ६/१ 196८

चि चन्द्रा पुष्पा

स्नेह

तुमारा ३१/१२ का कल पत्र मिला जिस की पहुंच कल पहले ही लिख रखे पत्र मे दे दी थी मिला होगा। महाराज साहब से चर्चा का मौका मिला होगा।
जीव जगत मे मनुष्य देह इन्द्रियों में ही ज्यादा विकसित हैं और तजुरबा कर कर के मन से भी विकास कर लिया हैं और जिस के जरिये कर्मेन्द्रिया को अच्छे बुरे कामों मे लगा सकता हैं जब कि अन्य देह धारी की चेतना इतनी स्ववस नही हुई हैं। अध्यात्म कहे जाने वाला ज्ञान यही से शुरु होता हैं लेकिन मनुष्य शरीर मे कुवासना भी साथ साथ पनपती रहती हैं जिससे श्रेय प्रेय का सवाल सामने आयाहैं

अभ्यास से मनुष्य चाहता हो जिधर बढ़ता है
चाहने मे उनपर देश काल सोहबत का असर हुवे
बिना नही रहता अनेक प्रयोगो से यही चक्र चलता
आया है हमेशा दूरगामी दृष्टी रख कर किये जाने
वाले कार्य का ठीक उज्वल आया है हम को चाहिये
कि हम भी समाज के शुभ तत्व मे वृद्धि करे और
आनन्द मय जीवन के रास्ते चले यद्यपी वर्तमान
कार गुजारे।। मनुष्य जीवन को खूब मखौल
नही है और इसे भी ध्यान मे रखना होगा पर इस को
अनिती मूलक जंजाल में फसना अच्छा नही है

भैरव की मां का स्वास्थ्य यू भी साधारण ही रहता
आया है तो भी शरीर और मन से कार्य मे रहना
हासील की है जिस से कार्य अधिक का बोझ तो
इतना असर नही करता हा मेरे खयाल से लम्ब
अर्शों से एक वक्त को भोजन देने मे कृषता लाता होगा
इस की पूर्ति हमे स्नेह और सेवा के जरिये करनी चाहिये
हमारी प्रगती हमारे विचारो की एकता मे और एक जुट
से कार्य प्रणाली को बढ़ावा देने से होगी आशीषस

भैरदान

श्रद्धांजलियाँ

अखिल भारत कृषि गो सेवा सघ
गापुरी, वर्धा

6 1 96

जीवन का क्षण क्षण उन्हान सार्थक किया। हर राज नई नई सूझ, देशसेवा की, समाजसेवा की। उनकी कमी महसूस हाती है। सदा प्रयोग करते ही रहते थे।

कई बार उनस मिलने का मोका मिलता था। हर बार ही उनको देख कर नई स्फूर्ति हाती थी।

आशा है कि सारा विधि विभाग पूरे हा गय हाग। भगवान गतात्मा को शाति दे तथा उनके सभी परिवार का इस वियाग दु ख क सहन की शक्ति दे। घर म सबका यथायाग्य कह।

शुभेच्छु
राधाकृष्ण बजाज

× × ×

स्वागत समिति
33वा अ भा सर्वोदय समाज सम्मलन, जैसलमेर राजस्थान
जिला सर्वोदय मण्डल (खादी परिषद) जैसलमेर 345001

31 12 95

जयपुर कार्यालय
राजस्थान समग्र सेवा सघ दुर्गापुरा जयपुर

स्व बापूजी आपके पिता ही नहा हमारे जैसो क भी सही माने म बापू थे। उन्हें भूल पाना और उसकी पूर्ति होना असभव है। किन्तु विधि के विधान को टालना भी मानव के हाथ म नहीं है। इसलिये धैर्य धारण के अलावा कोई उपाय नहीं है।

रामदयाल खडलवाल

राजस्थान खादी ग्रामोद्योग सस्था सघ
बजाज नगर, जयपुर

6 1 96

आपके पूज्य पिताजी श्री भैरूदानजी छलाणी क निधन क समाचार जानकर बहुत दुख हुआ। ईश्वर की इच्छा पर किसी का वश नहीं है।

श्री छलाणीजी जीवन भर खादी व रचनात्मक कार्य करत रह। उनक निधन स इन कायो को भी बहुत आघात पहुचा है   दुखद अवसर पर हम सब की ओर से हार्दिक सवदनाए स्वीकार कर।

आपका
रामवल्लभ अग्रवाल

× × ×

खादी मदिर, बीकानर
(सस्थापक—स्व श्री रघुवरदयाल गोयल स्वतन्त्रता सेनानी)

श्रद्धेय भैरूदानजी छलाणी के आकस्मिक निधन के समाचार सुनकर बेहद दुख हुआ। स्वर्गीय छलाणीजी गाधीवादी व्यक्ति थ। उनक जीवन म सादगी कूट कूट कर भरी थी। उन्होने वर्तमान दिखाव मे कभी भी विश्वास नहीं रखा। उनक निधन स अपूरणीय क्षति हुइ है। ससार चक्र मे आत्मा आती जाती ह लकिन उसके द्वारा किय गये कार्यो को हमेशा याद किया जाता है।

सस्था का सचालक मडल यह प्रस्ताव पास करता है कि सस्था श्री छलाणीजी द्वारा बताये मार्ग पर अग्रसर हो। परमपिता परमात्मा स प्रार्थना करत ह कि स्वर्गवासी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवारजनो को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

इन्दुभूपण गोइल
मत्री

× × ×

ऊनी खादी ग्रामाद्योग सस्थान, बीकानर

20 1 96

श्री छलाणीजी गाधी युग एव स्वाधीनता आदोलन युग के पुरुष थ। उनक सादे जीवन व उच्च विचार तथा लोक कल्याण की भावना से सारा इलाका सुपरिचित ह और लोग उनकी बात का सम्मान करते थे। गो सवर्धन, अकाल निवारण व खादी तथा पीड़िता की सहायता म वे जीवन पर्यन्त लगे रह। ऊनी खादी ग्रामाद्योग सस्थान एव खादी मदिर के विकास मे उनका महान योगदान रहा है। सभी रचनात्मक कार्यकर्त्ता उनक घर व परिवार के आतिथ्य को सदा याद रखग। उनके चले जाने से सार्वजनिक जीवन को गहरा आघात लगा है। ईश्वर की मर्जी व समय के

आगे किसी का जोर नही है। उनकी आत्मा व कार्य सदा नई पीढ़ी को प्रेरणा देते रहेगे। भगवान उनकी आत्मा को शाति एव हम सबको उनके सात्विक मार्ग पर चलने की शक्ति दे।

मूलचन्द पारीक
मत्री

× × ×

स्व साह भैरूदानजी छलाणी से मेरी मुलाकात गगाशहर मे उनकी पोत्री ज्योति का विवाह मेरे पुत्र जिनेन्द्र के साथ हुआ तभी हुई थी। उनका आग्रह गाव ले जाने का रहा। बाकी समयाभाव के कारण हम लोगो का गाव जाना न हो सका। उस समय उनके साथ हुए वार्तालाप से उनकी सादगी एव अपनत्व की भावना जो देखने को मिली वह अपूर्व थी। पर जब उनके देहावसान के बाद गाव पहुचा तो लोगो को देखकर लगा कि उनका जो रूप वार्तालाप के समय आया वह तो वास्तविकता का एक अश मात्र था। उस महामानव को शत् शत् प्रणाम

बालचन्द चौपडा
बकानी निवास (पौत्री ज्योति के श्वसुर)

× × ■

नागौर जिला खादी ग्रामोद्योग सघ, नागौर

आपके पत्र दिनाक 19 12 95 से श्री भैरूदानजी छलाणी के स्वर्गवास का पढ़कर दुख हुआ। महान समाज सेवी गाधीवादी सर्वोदय विचार धारा की अप्रतिम विभूति को खो दिया है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

अर्जुनदास

× × ×

समर्पित महिला सस्थान
V/125 इ गा न प बस्ती बीकानेर

स्वर्गीय छलाणीजी एक सच्चे गाधीवादी और समाजसेवक थे। वे हमेशा सादा जीवन के हामी रहे है। उन्होने वतमान मे दिखावे की प्रवृत्ति मे कभी भी विश्वास नहीं रखा। ऐसे महापुरुष के निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। ससारचक्र मे आत्मा आती है और चली जाती है लेकिन उसके द्वारा किये गये कार्यो को हमेशा याद रखा जाता है। हमारी सस्था का सचालक मडल यह प्रस्ताव पास करता है कि स्वर्गीय छलाणी द्वारा बताये गये मार्ग पर अग्रसर हो। उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर ही उनको सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

कुसुम गुप्ता
सचिव

ग्रामोद्योग संस्थान, मलकीसर बीकानेर

स्वर्गीय छलाणीजी एक सच्चे गांधीवादी एवं समाजसुधारक थे। उनके जीवन में सादगी कूट कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने वर्तमान के दिखावे में कभी विश्वास नहीं रखा। उनके निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है। संसारचक्र में आत्मा आती है और चली जाती है लेकिन उसके द्वारा किये गये कार्यों को हमेशा याद किया जाता है। हमारी संस्था का संचालक मण्डल यह प्रस्ताव पास करता है कि स्व श्री छलाणी द्वारा बताये मार्ग पर अग्रसर हो।

मोतीचन्द आरी
अध्यक्ष

× × ×

म न 1088, चौड़ा रास्ता, जयपुर
28 12 95

श्रीमान भैरूदानजी के निधन का समाचार मिला। जानकर बहुत दु ख हुआ। भगवान से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एवं आप सब लोगों को इस वियोग को सहन की क्षमता प्रदान करे।

आपका
सिद्धराज ढड्ढा

× × ×

स्वामी सदन मकराना राजस्थान
28 12 95

आज अचानक मेरे अनन्य मित्र व साथी श्री भैरूदानजी छलाणी के स्वर्गवास की सूचना मिली। एक नेक सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले अहिंसा के पुजारी व रचनात्मक सेवक साथी हमारे बीच से चले गये। इसकी तो कमी अवश्य ही खलती रहेगी। परन्तु उनका आदर्श जीवन सदा याद रहेगा। मुझे विश्वास है कि आप हम सब उनके सद्विचार सादगी व संयम को अपने जीवन में अपनायेंगे। यही उनकी सच्ची स्मृति होगी।

आपका ही
बद्रीप्रसाद स्वामी

× × ×

गोकुल दुर्गापुरा, जयपुर
29 12 95

श्री भैरूदानजी सा के निधन के समाचार पढ़कर बहुत ही दु ख हुआ। श्री छलाणी सा बहुत ही सुलझे हुए विचारों के लगनशील व्यक्ति थे। उनकी रचनात्मक कार्यों में बहुत ही रुचि थी। ऐसे लगनशील बुजुर्ग व्यक्ति समाज में यदा कदा ही होते हैं।

आपका
तिलोकचन्द जैन

भगवानदास माहेश्वरी

जैसलमेर
26 12 95

भाई भेरूदानजी के निधन का समाचार जानकर दु ख हुआ। ग्रामजन कैसा होना चाहिए, व आत्मविश्वास लिये उसके प्रतीक थे कार्यकर्ता वत्सल, निश्छल मित्र व सादगी की प्रतिमूर्ति उन्हे खोकर आज सूना सूना सा लगता है। हमे मिलकर कभी भी आनन्द अनुभव होता, म आपका घर कार्यकर्ता छावनी मानता। प्रभु दिवगत आत्मा का शाति प्रदान करे।

नम्र
भगवानदास

× × ×

नन्दकिशोर भाटिया

खादी परिषद
जैसलमेर
26 12 95

बड़े सज्जन पुरुष थे। खादी जगत के ज्ञाता व आपके बुजुर्ग, हमारे भी बुजुर्ग थे, आपके यहा पर आने पर महसस् होता था।

भगवान क आगे किसी की भी नही चलती। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे। आपका दुख सहन करने की ताकत द।

नम्र
नन्दकिशोर भाटिया

× × ×

रामचन्द्र मकासर

हनुमानगढ़
28 12 95

अव्यक्तोऽयमऽ चिन्त्याऽयमऽविकार्योऽमुच्यत।
दव विदित्वैन नानुशोचितुमर्हसि।।

स्व भैरूदानजी छलाणी का मरे हृदय म बड़ा ऊचा स्थान है। व शाति और कर्त्तव्य क अवतार थ। परमपिता परमात्मा उन्ह उन्नत पद स सुशोभित कर। हम उनक नाम स एक मगलकारी ट्रस्ट बनाय एसी सद्भावना है।

विनीत
रामचन्द्र मकासर

अशाक गहलोत

ससद सदस्य (लाकसभा) अध्यक्ष राजस्थान प्रदेश काग्रस कमेटी
3, त्यागराज मार्ग, नइ दिल्ली 110011 क्माक/आर/23
3 1 96

प्रिय श्री भवरलालजी

आपका पत्र मुझे आज ही प्राप्त हुआ। यह जानकर गहरा दु ख हुआ कि श्री भैरूदानजी छलाणी का 19 12 95 का देहावसान हा गया। ईश्वर इच्छा सर्वोपरि है, यही सोचकर हम सभी को सब्र करना पड़ता है।

परमपिता स मेरी प्रार्थना है कि वह स्वर्गीय आत्मा का चिरशाति तथा आप एव शोकाकुल परिजना को यह आघात सहन की शक्ति प्रदान कर।

हार्दिक सवदनाआ सहित

आपका
अशाक गहलोत

× × ×

मनफूलसिह भादू

23 फिराजशाह रोड नई दिल्ली
ससद सदस्य (लाक सभा) बीकानेर
27 12 95

श्रीमान् भवरलालजी जयहिन्द!

आपक पिता श्री भैरूदानजी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर बहुत दु ख हुआ। यह बड़े सज्जन व्यक्ति थ। मै दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करता हू और भगवान से प्रायना करता हू कि वाह इनकी आत्मा का शान्ति प्रदान कर तथा आपको तथा आपके परिजना को यह दारूण दु ख सहने की शक्ति प्रदान कर।

सधन्यवाद।

भवदीय
मनफूलसिह भादू

× × ×

दाऊदयाल आचार्य (एडवाकट)
स्वतन्त्रता सेनानी

सुराणा का मोहल्ला
बीकानेर
29 12 95

श्री भैरूदानजी के स्वर्गवास हान का शाक सदेश अभी अभी मिला। बड़ा गहरा दु ख हुआ। ऐसे महापुरूष जल्दी स पैदा नहीं हात है और दिना दिन इन क

प्रस्थान से समाज गरीब होता जा रहा है—किन्तु मृत्यु का यह सहज प्रहार एक दिन तो सहना ही पड़ता है। आपके साथ ही हम सबका उस महापुरुष के प्रस्थान से बड़ा घाटा हुआ है जिसे सहज भाव से सहन के सिवाय कोई उपाय नहीं है।

आप और हम सभी का उनके सार्वजनिक सेवा में लगे रहने के पथ पर चलते रहना ही उनको सच्ची श्रद्धांजली है। ईश्वर आपको सहनशक्ति और दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। ओम की तरफ से भी समवेदना स्वीकार करें।

आपका

दाऊदयाल आचार्य

× × ×

भवरलाल कोठारी आसवाल कोठारी मोहल्ला बीकानेर

4 1 96

पूज्य पिताजी के स्वर्गवास का समाचार मुझे प्रवास से लोटने पर मिला। अन्तिम दर्शन की अभिलाषा मन में ही रह गई।

वे आदर्श मनीषी व ऋषि थे। गाधीवादी स्थितप्रज्ञ कर्मयोगी थे। उनका सादगीयुक्त शुद्ध सामाजिक जीवन प्राणीमात्र के लिए करुणा वात्सल्य का भाव दीन दु खी को आत्मीयता से सहारा देने की वृत्ति उन्हे सर्वोत्कृष्ट श्रेष्ठ मानव की सर्वोच्च श्रेणी में प्रतिष्ठित करता है। उनका स्मरण ही हमारे लिए प्रेरणादायक है। उन्हे मेरा श्रद्धायुक्त नमन्।

उनके पुत्र, वशज व आत्मीय होना हमारा सौभाग्य रहा। वे मुक्तात्मा थे। मुक्त हो गये। अमर बन गये। पर पारिवारिक जनो के लिए विछोह की पीड़ा वेदना होना स्वाभाविक है।

वेदना की इस घड़ी मे मेरी सवेदना स्वीकार करें।

आपका

भवरलाल कोठारी

× × ×

लक्ष्मीचन्द यति बीकानेर

चि श्री भवरलाल चि फूसराज,

समस्त परिवार से शुभाशीष। श्री भैरूदानजी के स्वर्गवास का दु खभरा पत्र मिला, हृदय को भारी आघात लगा पर काल चक्र के आगे किसी का जोर उग्र चलता नहीं। श्री शातिनाथ भगवान सद्गत आत्मा को शाति प्रदान करें। यही हार्दिक प्रार्थना है।

भवदीय

लक्ष्मीचन्द यति

लक्ष्मीचन्द छाजेड नगर पार्षद वार्ड न 9

नौहर

बड़ साहसी इस दुनिया म नहीं रह श्री विनाबा भावे के बाद म कोई विनोबा थे ता श्री भेरूदान छलाणी ही थे उन्ह कभी अपनी चिन्ता नही थी वे हमशा कमजोर और गरीबो से ही जुडे हुए थ। उनके दुश्मन हा सकते ह मगर उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। समाज म भी अपना से लगाव था हर रिश्तदार स पोस्टकार्ड के माध्यम से असीम समय तक जुड़ रहे उनके सक्षिप्त समाचार ही पूरी जानकारी दे जाते थे हमारा परिवार भी उनकी साख और इज्जत पर गर्व करता था।

आपका अपना

लक्ष्मीचन्द छाजेड

× × ×

आर के रगा डी 252 राम कुटिया

मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

28 12 95

आपके सम्माननीय पिता श्री महर्षि भैरूदानजी साहब के स्वर्गवास से म पीड़ा अनुभव करता हू। उनके साथ जिये क्षण जीवन के सुनहरे स्मरणीय क्षण मरे लिये रहे है। व त्याग तपस्या सादगी और स्नेह क स्रोत थे। व गरीबनवाज थ। उनकी समस्त जीवनशैली गाधी विनोबा को स्मरण कराती थी। जयपुर बीकानेर गगानगर से जो भी उनके सम्पर्क मे आया प्रभावित हुआ। यह सन्ताष की बात है कि आप उनके पुत्र ही नहीं—गाधी के शिष्य विनाबा है तथा उनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग का प्रशस्त करत रहगे। भाई पी आर (फूसराज) एव माताश्री को मेरी सवेदना से अवगत करायें।

भवदीय

आर क रगा

× × ×

उपध्यानचन्द्र कोचर

एडवाकेट राजस्थान हाई कार्ट बीकानेर

आदरणीय भैरूदानजी के दहावसान पर हार्दिक सवेदनाए मेरे तथा परिवार की तरफ से।

समाज सेवा के क्षेत्र म उन्हाने जा उल्लेखनीय कार्य किया वह अविस्मरणीय है। खादी सेवा ता उसका एक अग था। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकाण बहुत स्वस्थ और अनुकरणीय था।

आपका

उपध्यानचन्द्र कोचर

जिनेन्द्र कुमार

प्रधान सम्पादक

यगलीडर, अहमदाबाद

दु ख और तकलीफ तो आप लोगो जितनी ही मुझे है। मैं तो हमेशा ही उन्हे अपना पूजनीय एव आदर्श व्यक्ति मानता रहा हू इस कारण मानसिक वेदना होनी स्वाभाविक ही है। आपश्री (छलाणीजी) के गुण सदैव स्मरणीय रहेगे और हर समय मे वे ही हम सबका मार्गदर्शन करेगे।

आपका अपना

जिनेन्द्र कुमार

× × ×

प्रताप सिह बैद

महावीर आटो पार्ट्स

श्रीलाल मार्केट, सिलिगुड़ी 734401

27 12 95

अभी पत्र मिला—पढ़कर आखे भर आई। भाइजी भैरूदानजी का स्वर्गवास हो गया। उनका मार्गदर्शन, तेजपुर म बचपन, जवाना बिताइ सो एक एक कर याद आने लगी। उनकी उस 55/60 वष पहले की शिक्षाये आज भी याद आती रहती है। उन्होने तेजपुर मे युवको के जीवन का निर्माण किया।

भाईजी के जीवन के उपदेशो को जरूर तुम लिखना, जिससे आगे वाली पीढ़ी के काम आए।

पूज्य भाईजी की आत्मा के भावी अध्यात्मिक विकास की शुभकामना करता हू।

प्रतापसिह बैद

× × ×

सुमतिलाल बाठिया सुपुत्र

स्व चम्पालाल बाठिया

भीनासर (बीकानेर)

श्रीमान भैरूदानजी सा से हमारे स्व पूज्य पिताजी श्रीमान चम्पालालजी बाठिया के बहुत ही आत्मीय एव घरेलू सम्बन्ध थे। हमारे पूरे परिवार को कई बार उन्हाने दियातरा खेत पर बुलाया था और बड़े प्रेम से पास बैठ कर खाना खिलाया था जो हमशा याद रहेगा। श्रीमान भैरूदानजी बहुत ही मृदुल स्वभावी एव मिलनसार गाधीवादी व्यक्ति थे। उनका अचानक स्वर्गवास हो जाना एक अपूरणीय क्षति है।

आपका

सुमतिलाल बाठिया

विलासपुर
21 12 95

सगार्जी एक असाधारण मनुष्य थे जिनके आदर्श हम सभी के जीवन को एक पथ प्रदर्शक क रूप मे है। आज वो नही रहे पर उनका आदर्श हमेशा यहा मौजूद रहेगा। उनका हमेशा उनके अलग व्यक्तित्व के लिए याद किया जायेगा।

द्रोपदी हमराज

× × ×

मोतीलाल राका के सी भूरा एण्ड क
करीमगज (आसाम)

मेरा जन्म उन्ही के हाथो म हुआ। मेरा बचपन उन्ही की छत्रछाया म बीता व मेरा घर ससार भी उन्ह की ही देन है। मैने हमेशा उनक आदर्शो का अनुसरण किया व भविष्य म करता रहूगा।

मोतीलाल राका

× × ×

रामप्रसाद सहल मिलन
महात्मा गाधी मार्ग बीकानेर

श्री भैरूदानजी छलाणी के स्वर्गवास के समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुख हुआ। उनके तथा छलाणी परिवार के साथ एक लम्बे समय अर्से से मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अत आपके दुख का मै अहसास कर रहा हू। व तो एक दिव्य आत्मा थे। सादा जीवन व उच्च विचार उनकी थाती थी। पिछले कई अर्से से अस्वस्थ थे पर जब तक थे एक सहारा एक श्रेष्ठ निर्देशक की पूर्ति करते थ। यह सब जानते है कि यह पार्थिव शरीर तो जायेगा ही पर मन को सन्तोष नही होता। उनकी यश काया सदैव अमर रहेगी। आप धैर्य रखे। उनकी परम्परा को सही रूप मे जीवित रख।

जन्म लेते ही मरण का विधान तो साथ ही उत्पन्न हो जाता है।
पर मरण नहीं जीवन का अवसान वही देता नव जीवन दान।।

अब तो उनकी याद ही रहेगी। एक तपस्वी चला गया। उनके तप के आलोक को जीवित रखना हम सबका कर्त्तव्य है। परमात्मा उनकी आत्मा को अक्षय शान्ति तथा छलाणी परिवार के समस्त सदस्यो को अपूर्व धैर्य दे। चि भवरलाल फूसराज से विशेष रूप से धैर्य की आशीष के साथ।

रामप्रसाद सहल

× × ×

सोभागमल सिघवी नाथद्वारा

श्री भैरूदानजी साहब राजस्थान क ही नही भारत क गाधीवादी विनोबाजी क अनुयायी अपने आप मे एक व्यक्तित्व एक सस्था थ। उनक द्वारा बताये गये मार्ग दर्शन पर चलने से व्यक्ति का यह भव परभव सुधरेगा। सत्य अहिसा प्रेम दया के सागर थे। सोभागमल सिघवी

डायरी खण्ड

डायरी का महत्व

गाधी युग म जीवन को नियमित, सयमित ओर सवहिताय समर्पित करने तथा व्यवहार म पतिक्षण सजगता एव दिन के हर क्षण के सदुपयोग क लिए दैनन्दिन कार्या का लेखा जोखा डायरी के रूप में लिखने की प्रवृत्ति प्रबल रही है।

महात्मा गाधी ने डायरी क महत्त्व के बारे म लिखा है।

हमे सच्चा बनना होगा। इसके अभाव मे डायरी खोटे सिक्के सी हो जाती है। इसम यदि सत्य हो तो यह सोने की मुहर से भी कीमती हो जाती है।

किये हुए दोषो का इसमें उल्लेख होना ही चाहिए। इस पर आलोचना की जरूरत नही है। आलोचना, अध्याहार, रूप मे होगी ही। अपनी स्तुति भी न लिखी जाए। किए काम और दोषो का उल्लेख होना पर्याप्त है। दूसरो के दोषो का उल्लेख डायरी म नही होना चाहिए। डायरी रूपी प्रतिबन्ध आत्म शुद्धि मे सहायता करता है। (महात्मा गाधी)

श्री भैरूदानजी छलाणी का जीवन दर्शन और जीवन कर्म यथार्थ रूप म गाधी विचार की साधना का ही प्रयोग है। जीवन के चार पुरुषार्थो की सिद्धि उनका ध्येय है। उनके व्यक्ति रूप म जीवन की सारी दिशा व्यापक सामूहिक हित साधन की है। अपने स्व को उन्होने निरतर सर्व म समाहित करने का ही प्रयास किया। उनके कार्या पत्रो और डायरी लेखन म कहीं पर भी आत्म ज्ञापन नहीं आत्म गोपन ही दृष्टिगत होता है।

वे डायरी लिखते थे। उनकी सारी डायरिया उपलब्ध नहीं हो सकीं। इन्हीं वर्षों 1956 59, 60 से 64, 1969, 73 75 77 से 81 85, 88 और 1990 की (18) डायरियाँ ही उपलब्ध है। अधिकाश गाधी डायरियाँ है। श्री छलाणीजी की औपचारिक सस्थागत शिक्षा नही हुई परन्तु उनका ज्ञान अध्यवसाय अनुभव और चेतना जन्य था प्रखर था। भावो की अभिव्यक्ति सक्षिप्त और सटीक है। चेतना की अनुभूतियाँ स्वाभाविक है।

डायरिया म कहीं भी आत्म स्तुति नहीं है। यहाँ तक की उनक द्वारा किय गय हित क कार्या का वणन भा नहा है। घटनाआ का सहज उल्लख मात्र किया गया है। डायरी म किसी क भी दाष का नाम मात्र भी जिक्र नही मिलता है।

व्यक्तिया स मिलन अतिथिया क आगमन व सस्थाआ की बैठका का सर्वत्र उल्लेख मिलता है जो उनक अतिथि सत्कार म हार्दिक प्रसन्नता क स्वभाव का परिचायक है। बड़ लोगा से भट व सस्थाआ की बेठका विशष रूप से खादी मदिर व खादी व गो सवा सर्वादय ग्रामदान की सस्थाआ पचायत और विकास सम्बन्धी विवरण घटना रूप ही उल्लिखित है। उनमे किय गय वार्तालाप और विचार अथवा उन पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की गई है।

कृषि कर्म को कवल सिद्धान्त रूप म नहीं अपितु व्यवहारिक रूप म जिया है अत हर दिन कृषि कुआ जमीन मौसम, बीज, पानी तथा किये गय प्रयागा का भरपूर उल्लख हुआ है।

अपने स्वप्ना एव शकुना का वर्णन किया गया है। तीर्थ यात्राआ भूदान यात्रा और अन्य यात्राओ का ब्यौरा मिलता है। सभी सम्प्रदाया (जैनेतर जेन सनातनी आदि साधु सन्ता के पदार्पण दर्शन रामायण पाठ देव दर्शन एव अन्य अनुष्ठाना का उल्लेख किया है। बाबा नारायणदासजी के प्रति विशष श्रद्धाभाव रहा है। कई स्थला पर रामचरित मानस के दोहे उद्धृत किये गये है। सार्वजनिक घटनाओ का विशेष रूप से क्षेत्र की ग्राम पचायता के चुनाव पच सरपच आदि का नामा सहित विवरण तथा वर्ष 1977 78 मे हुए सत्ता परिवर्तन जनता शासन आने आदि का वर्णन प्रयाप्त मात्रा म किया गया है। राष्ट्र के हित अहित की दृष्टि स टिप्पणी भी कहीं कहीं की गई है।

डायरी के स्मरण पृष्ठ पर बहुत महत्त्वपूर्ण लगने वाली घटनाआ का बिन्दु रूप मे उल्लेख मिलता है।

पारिवारिक घटनाओ शादी ब्याह जन्म मृत्यु का यत्र तत्र उल्लख हुआ है। श्री रघुवरदयालजी गोयल क प्रति श्रद्धा और अनन्य मित्रता क भाव की अभिव्यक्ति गोयल कुटीर और उसमे किये जाने वाले कार्यक्रमा के उल्लेख से प्रचुरता के साथ हुई है।

उनकी डायरियाँ किसी विचारक लेखक की तरह साहित्यिक कृतियाँ नहीं है अपितु एक निस्पृह कर्मयोगी साधक की आत्मा साधना का मृदुतापूर्ण सार सक्षेप है।

उनकी जीवन दृष्टि जीवन कर्म, मिलन भट, कृषि आदि से सम्बन्धित डायरिया के अश विषयानुसार सकलित किये गये है। उनके अपने ही शब्दा मे उनके व्यक्तित्व व कृतित्व का एक आशिक सा रेखाचित्र प्रस्तुत है। जिससे कदाचित सर्वांग पूर्ण चित्र का सकेत मिल सके।

दृष्टि

1960 कापीनुमा डायरी के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है

अरथ न धरम, न काम रुचि, गति न चहऊ निरवान।
जनम जनम हरिपद भगति, यह वरदान न आन।।

60—सग्रह और समान वितरण

विचारकों का मत है कि वस्तुए सबके उपयोग जितनी ही होती हैं। और उसमे एक ज्यादा सग्रह करे तो दूसरे को तगी मे रहना पड़ता है। इसमे यह दलील नहीं है कि अनन्त ससार मे अनन्त वस्तुए है, एक के सग्रह या त्याग से क्या होगा क्योकि सम वितरण मे यह माना गया है कि वर्त्तमान मे जितनी सामग्री है सबकी वासना व सबका किसी न किसी रूप मे फर्ज अदा करके हक लगा हुआ है। अगर एक बिना वजह ज्यादा लेना चाहे तो उतनी कमी दूसरे को सहनी ही।

भैरूदान छलाणी

वरी 1961—डायरी लेखन

सत्याचरणी पुरुषो की राय को मान्य करते हुए और किसी घटना को बार बार रटने से विचारो पर पड़ने वाले दबावो को टालने के लिये तथा हाथ मे आये पैसो का दैनिक हुए इस्तेमाल का ब्योरा रखने के लिए इसमे (डायरी मे) नोन्ध जायगी।

64—सकल्प मुक्ति की युक्ति

हम चाहिये कि अच्छे और ऊचे सकल्प करते जाए और उनकी पूर्ति मे कोई कार्य बाकी न रखे, चाहे देह भी छोड़नी पड़े। सकल्प मुक्ति की युक्ति यही है कि य सकल्प करते जाए।

7 75—निवृत्त जीवन सकल्प

मिथुन सक्रान्ति दिवस जेठ सुदी 6, 2032 वि यह पूर्व कल्पित दिन सम्बल र खुशी का कारण हो।

मानसिक दृष्टि से मै आज से निवृत्त जीवन जीने की कोशिश करूगा।

78 गुल प्रथम पृष्ठ से

ममता तू न गई मेरे मन से
पाके केश जन्म के साथी
ज्योति गई नयन से।।ममता।।

नाक 21 6 60—स्वायत्त शासन की आधारभूत—पचायत

(1) चुनाव सर्व सम्मति से हो।

(2) सदस्य रचनात्मक प्रवृत्ति का हो।

(3) पचायत को पुलिस का कम स कम सहारा लेना है।

(4) समानता और स्वतन्त्रता की रक्षा होनी चाहिये।

21 6 60—अच्छे प्रशासनिक गठन की विशेषताये

(1) विवेक युक्त कार्य हो।

(2) कह ही सत्य प्रिय वचन विचारी।

(3) लाक कल्याणकारी शासन।

25 6 60—हमारी नीति क निर्देशक तत्व

(1) आर्थिक समानता (2) जीविका के साधन सुलभ (3) सभी का रोजगार (4) मुफ्त विद्या (5) पर्याप्त मजदूरी (6) पचायतो का गठन (7) मद्य निषेध (8) सहकारिता को प्रोत्साहन।

26 6 60—ग्राम और कृषि

(1) कर्त्तव्यपरायणता गावो मे है।

(2) खेती बाड़ी का धन्धा ही एक ऐसा है जिसमे नैतिकता से जीवन यापन किया जा सकता है।

(3) जीवन को रसपूर्ण बनाने के लिये भी खेती सर्वोपरि है।

(4) मानव शरीर के लिए भी गाव जीवन मुफीद है।

वैयक्तिक एव पारिवारिक जीवन की घटनाये

1 जनवरी 63—मगल कामना के साथ दिन शुरू हुआ। पत्नी की दो सोने की चूड़ियाँ जिसे गुम हुई जानते थे मिली।

18 जून 64—सुबह 8 30 की बस से नागौर साण्ड देखने गये। रात का वापस आये। नोखा मण्डी मे बोथरो के वहा ठहरे तथा एक सोनार की दुकान पर नाक मे छेद करवाया।

1973 खुले स्मरण पृष्ठ से—ब्लड प्रेशर को सम रखने क लिये नाक के दाये नथुन म मयूर पख से निकाले सोने की कड़ी रखी है।

27 फरवरी 1975 गुरुवार—सुबह की बस से रामचन्द्रजी जैन और उनकी पत्नी आये। 3 बजे बरात आई। रात को गुरामा आये। पुष्पा की शादी सम्पन्न हुई।

27 मार्च 1975 गुरुवार—कल जैन साहब का पत्र आया। रीता की शादी 18 5 को होनी तय मानी।

18 मई 1975—गीता की बरात ट्रेन म आइ ग्रामभारती (बीकानेर) तक कारो स लाय। गाधूलि फेर हुए।

12 मार्च 1977—दिन म तीन बज काका साहब का देहावसान हा गया। फोन करने पर मिल स टीकमचन्द, लूणकरण आय। गगाशहर स मुन्नीलाल आया। दाह सस्कार 5 बजे हुआ।

31 मार्च 77 स्मरण पृष्ठ स—

काकाजी अमोलकचन्दजी की मृत्यु पर रचा गया दोहा

मगर सेठ सुहावनो नाम अमालक चन्द।
सूना हुयग्यो दातरो आख करता बन्द।।

22 जून 1977—मिल वाले गाव आये और गणेशमल टीकमचन्द धनराज ने अपनी तरफ से (छलानी वुलेन मिल, बीकानेर की) कीमत लगाई और लूणकरण ने अपनी तरफ से। ज्यादा गणेशमल की तरफ से होने से मिल इनके रही। लूणकरण को पान्ती के रुपये मिल जायग। मुन्नीलाल, भँवर साथ था।

27 नवम्बर 77 रविवार, मार्गशीर्ष कृष्णा 2 2034—आज धमचन्दजी के भेजे पेन म स्याही भर कर लिखना शुरू किया। तिथि के हिसाब से आज मेरा 69 वाँ जन्म दिन है। तारीखो स 29 11 को है। नक्षत्र से 28 11 को होता है यानि मिगसर बदी 2 1966 की आर्द्रा नक्षत्र सन् 1909 की 29 नवम्बर था। चन्द्र वर्ष म हर तीसरे साल प्राय समान समय हो जाता है।

1 दिसम्बर '77, गुरुवार—सोनार से कड़ी पहनी, 1=(डेढ़ आना) भर सोने की है। एक तीन मुखा रुद्राक्ष है। और 11 की बस स गाव आया।

3 अक्टूबर 78 मगलवार—काकाजी का देहावसान कल 1 बजे हो गया। 2 30 बजे की बस स गगाशहर गया।

4 अक्टूबर 78, बुधवार—मिलने वाले आये। सयारे की चर्चा खूब रही। असल म शरीर अन्न पानी मागता न हो तो उसका त्याग बेमानी और मजाक सा है।

परचावनी (शाक समाचार का पत्र) के कार्डो म इसका (सयारे का) जिक्र था इसलिये मैने अपना नाम नहीं रखने दिया। चतुरभुज का ही रखा।

29 नवम्बर 78, बुधवार—आज तारीखो से मेरा 70 वाँ जन्म दिन भी है।

4 अगस्त '85 रविवार—सुबह 9 बजे कुए पर पूजन करके पानी को बधाया मढ मन्दिर म चढ़ाया। पानी मीठा है। श्री कनीरामजी ब्राह्मण ने चखकर देखा फिर अन्यो ने चखा। कुए पर पीपल की पौध लगाई।

13 अक्टूबर 1985 रविवार—कुल्हे की हड्डी टूटना (श्री छलाणीजी ने दोहिती पूर्णिमा से लिखवाया)

सुबह नीम वाले बाड़े म बैल के सींग म गानी फसी हुई थी उसको निकालन का प्रयत्न करते बैल ने झटका दिया, दाहिने पैर पर गिर गया। उस वक्त जाघ की नाड़ पर बेहद खिचाव हुआ। सूरजाराम से मगाकर ल लोटा पानी पिया। वहीं से गोद करके गुज्जार आगे वही लाया। थोड़ी देर म खादी मन्दिर की गाड़ी आ गई। खेत देखने बुलाया था। वहाँ से एक पट्टे पर बैजनाथजी व सूरजाराम ने बिठाकर अन्दर की रसोई म सुला दिया। महमानो का नाश्ता देकर कद्द (खेत) देखन भज दिया। दर्द की जगह शुरू से ही बण्डेज लगा दिया। बीकानेर से आये लोग 3 4 बजे वापस रवाना हुए। रात को दर्द म कमी नहीं आयी। इसलिये टोडरमल ने फोन करके (डॉक्टर) धनराज (छलाणी) को बुलाया। रात को 12 बजे आये। जाच परख कर दूसरे दिन गाव म ही एक्सरे लने का तय करके वापस चला गया।

14 अक्टूबर 1985, सोमवार—हड्डी विशेषज्ञ डा भार्गव, बिन्नाणी एक्सरे वाले को एक्स रे के लिये साथ लाये। मशीन से एक्स रे लेकर 4 बजे वापस बीकानेर गये। फ्रेक्चर होने की सभावना से टोडर को खादी मन्दिर की गाड़ी वास्ते साथ भेजा। एक्स रे की रिपोर्ट म साधारण फ्रेक्चर होना लगा। सो रात को ही गाड़ी लेकर आ गया।

15 अक्टूबर 1985 मगलवार—बड़े सवेरे गाड़ी (मोटर) से बीकानेर आ गये। घर खेती सूरजाराम अमरजी को सभालते रहने का कह आये। डा भार्गव 5 बजे साथ आये और ट्रेक्शन पाँव के दिया। रात को खादी मन्दिर से इन्दुजी वीणाजी मिलने आये।

17 अक्टूबर 1985 गुरुवार—ट्रेक्शन से मन चाहा लाभ हुआ नहीं दर्द म भी कमी आई नहीं और पैर भी टेढ़ा होता रहा। गगाशहर से पुराने चावल मगाकर खिचड़ी ली।

18 अक्टूबर 1985 शुक्रवार—डॉ माथुर (आर एन) साहब से पलास्तर बन्धवाया।

5 नवम्बर '85 मगलवार—आज सुबह 8 30 बजे तिनसुकिया से फूसराज आया।

8 दिसम्बर 85 रविवार—डॉक्टर की इजाजत से खादी मन्दिर की गाड़ी से गाव आया। साथ म मिल से गणेशमल लीला की मा टोडर आये। 54 दिन मिल (छलाणी वुलेन मिल्स, बीकानेर) म रहना हो गया।

13 दिसम्बर '85, शुक्रवार—मीना, बेगी, गौतम (दियातरा) आये 2 बजे ट्रक्टर से टोकले गये एव रात का जम्मा लगाया। छोटा गाव होते हुए भी अनेक लोग इकट्ठा हो गये थे। रात 9 बजे से सुबह 8 बजे तक गीत बजाते रहे।

14 दिसम्बर '85 शनिवार— टोकले से चाय दूध करके रवाना हो गये 10 बजे घर आ गये। मेरे कोई तकलीफ नहीं हुई पर गाने बजाने म नींद नहीं आई सो आझके का असर हुआ।

30 मार्च '88 गुरुवार—ज्यादा बीमार होने से दो माह की डायरी नहीं लिख सका।

2 अप्रल 88 शनिवार—बहनोईजी श्री दीपचन्दजी भूरा देशनोक से (बीकानर) आये। डॉक्टर को लाये। एक माह की दवा दे गये।

4 अप्रल '88, सोमवार—खादी मन्दिर की गाड़ी से 5 30 बजे गंगाशहर से रवाना होकर गाव आया। गाँव मे लाइट न होने से मोमबती जलाई। इससे भवर की माँ के ओढ़ने मे आग लग जाने से ओढ़ना जल गया। इनके शरीर को कोई आच नहीं आई। यह चमत्कार ही माना जायेगा। रात अच्छी तरह बाती।

6 अप्रेल '88 बुधवार—पूनमनाथ कण्ठबेल का झाड़ा दे गया।

वर्ष 1990 स्मरण पृष्ठ से

राजन राऊर नाम यश सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महीप मनी अभिलास तुमार।।

गाधी दर्शन भूदान यात्रा

सन 1956

13 9 56—5 30 बजे वर्धा पहुँचे, स्नान पान करके श्री जमनालालजी रचित श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर देखा जैन दिगम्बर मन्दिर देखा श्वेताम्बर मदिर देखा।

14 9 56—अल सुबह उठकर, सेवाग्राम का रास्ता लिया, वहा बापू कुटी, तालीम सघ और गौशाला देखी। फिर पानार परम ग्राम गये। विनाबाजी का आश्रम देखा। परमधाम नदी का स्नान किया। फिरते नागपुर वर्धारोड से आये। कुष्ठाश्रम देखा, नागपुरी आये।

14 9 56/15 9 56— दिनाक 14 9 56 के रात गाड़ी मे बिताकर अल सुबह पचवटी पहुचे। स्नान के बाद भोजन कर तपोवन गये। सीता गुफा देखी। 12 बजे त्र्यबक (ब्रह्मगिरी) गये। गोमती का उद्‌गम शकर जटा, गोरख मछदर गुफा और गोमती का तलहटी कुड देखा।

16 9 56 से 24 9 56—यात्रा विवरण, पाडव गुफा देखी, पाडव की गुफा मे 20 कोटड़े 2400 फीट का आगन। दूसरी 23 गुफाये भी छोटी बड़ी सब पहाड़ काटकर बनाई हुई हैं देखने योग्य है।

साबरमती आश्रम

साबरमती के किनार पर पक्की ईटो से खपरेल के छत से बना हुआ है, खूब विशाल और सुदर तरीके से बनाया है। काफी खेती होती है। स्त्री पुरुष झूलो मे आराम करते है। भव्य दृश्य है।

द्वारका धाम

बेटद्वारका चारो तरफ पानी म घिरी हे। आबादी 2 हजार की हे। आध नाविक हे जा मछली मारन आधे खेत का काम करत है।

ओखा स्टेशन से भाटिया आये वहा से लोरी नही जाती है ता बैलगाड़ी का रास्ता पथरीला और उबड़ खाबड़ 20 मील म पूरे हैरान हुए। रात बारह बजे हर्षदेवी पहुचे। धर्मशाला म साये।

हरसिद्धि देवी

भाटिया स्टेशन से लारी न होने स 20 मील बेलगाड़ी स आये। रास्ता पथरीला उबड़ खाबड हाने से शरीर की रगरग दरक गई। मर छाती म दर्द खासी कफ हो गये तकलीफ रही सुबह तक आराम हुआ पर जूनागढ़ सोमनाथ आबू न जाने का तय रखा।

कीर्ति मन्दिर

महात्मा गाधी का जन्म घर तो ज्या का त्या है उस स सटाकर मदिर निर्माण किया है उस पर 9 लाख लगे हे। उसमे 5 लाख तो एक व्यापारी न दिए। मदिर म बापू की मशा के अनुकूल सब धर्मों की कला का समावश है।

वर्ष 1961

29 4 61 शनिवार—श्री गायलजी से मिला सायं 9 बज की गाड़ी से कलकत्ता के लिए रवाना। श्री छलाणीजी की विनाबा की पदयात्रा म शामिल हाने के लिय रवानगी।

1 5 61 शुक्रवार—काशी पहुँच कर सर्व सेवा सघ के प्रकाशन आफिस म गय श्री राधाकिसनजी बजाज स मिल।

5 5 61 शुक्रवार—11 बज दीनहट्टा पहुचा।

12 5 61 शुक्रवार—दिनहट्टा स तजपुर क लिए रवाना।

13 5 61 शनिवार—शाम का तेजपुर पहुच।

14 5 61 रविवार—पदयात्रा की शुरूआत

सुबह 9 बज तेजपुर स श्री द्वारकाप्रसादजी की कार म रवाना हाकर दिन क 3 बज पदमपुर पहुचा, श्री सतापजी वापस गय। श्री किसनभाई काकोनी क सहयाग से यह बाबा का दल बढ़ रहा है। 4 बज आम सभा हुइ रात का प्रार्थना म बहिने वाली पुरुष मौन रह।

15 5 61 सामवार—भार 2 बज उठन की घटी बजी, 3 बज दूसरी घटी बजन क साथ पदयात्री रवाना हो गय। बाबा ने 40 पदयात्री तक का नियम कर रखा है पर असाम म कुछ ज्यादा हात हैं। यह पदमपुर (लक्ष्मीपुर) क पड़ाव स नारायणपुर गय बीच म शकरपुर सुबह का पड़ाव किया।

16 5 61, मगलवार—गुसाई गाव पहुच यहा भूमिदान म 97 दाताओ स 124 पुड़ा जमीन मिली।

17 5 61 बुधवार—विहपुरिया पड़ाव पर पहुच। गीता प्रवचन की हिन्दी की 4 प्रति बाबा क हस्ताक्षर स ली और शाम का जाड़हाट पीचा क वहा ठहर।

छलाणीजी की पदयात्रा समाप्त

18 5 61 गुरुवार—जाड़हाट स डिब्रूगढ़ हात हुए बस द्वारा तिनसुकिया श्री लाधुरामजी क वहा दिन म 2 बजे पहुचे।

वर्ष 1985

11 सितम्बर '85, बुधवार—विनोबा जयती का बाबा का सुमरन किया।

स्वप्न शकुन ज्योतिष

वर्ष 1960

18 10 60, मगलवार— भारउावटे 4 बजे करीब गाडू म सोया हुआ मल भक्षण का स्वप्न देखा और बच हुय का रत म गाड़त वक्त फलता बढ़ता देखा फिर आख उघड़ गई।

19 10 60 बुधवार—दीपावली की राशनी अच्छी हुई हवा नहीं थी और साझ को सियार उत्तर की तरफ जल्द बाल सो आगामी साल भी वर्षा जल्द होगी और पूजन 9 15 बजे बाद किया।

वर्ष 1973

24 8 73 शुक्रवार—दिन म वर्षा उतरादे तरफ हुई।

25 8 73 शनिवार—रात आसार अच्छे लग। व्यापार खेती सब उन्नति होनी चाहिए।

वर्ष 1975

14 मार्च 75 शुक्रवार—भखावटे 4 बजे मिल म स्वप्न म तलाई भरी देखी।

12 अप्रेल 75, शनिवार—विक्रम सवत् 2032 आरम्भ नवरात्र आरम्भ। नय साल के सूर्योदय म चन्द्र स्वर चला।

20 अप्रेल 75 रविवार—सुबह छोटा साड पूर्व की तरफ मुह करके अगला पेर निकाले बैठा था यह शुभ है, दक्षिण की तरफ चारा लिया था।

वर्ष 1977

12 जनवरी 1977 बुधवार—भाखावटे पके घाटो का जल से भरा स्वप्न **में सुन्दर** तालाब देखा।

मगर

21 जून '77 मगलवार—स्वप्न मे लगा कि नाक की कड़ी खोलकर अन्य का सोपी हे।

15 अगस्त 77, सामवार—तवे पर रोटी पर राटी पड़ी। यह शुभ मानी जाती है।

13 सितम्बर 77 मगलवार—आज धुराले म अड़वे घाले ई। फसल का किसी का मुह न लग जाय।

24 सितम्बर '77 शनिवार—भाखावटे स्वप्न म मोटारामजी जोशी को मेले कपड़ा और प्रसन्न बदन से आये देखा। मन के उल्लास से आओ कहा चित्त म यह भी आभास था कि यह गुजर गय थे कैसे आ गय। फिर घर के अदर इन से भिड़कर मिला खूब कसा, दो बार कसा तो इनका शरीर ठोस लगा। मन म यह भी लग रहा था कि यह शरीरधारी नही हे तो कोई नतीजा आयेगा। तीसरी बार जोर से कसा तो शरीर लुप्त हो गया और मेरी आख उघड़ गई।

4 नवम्बर 77 शुक्रवार—रात को स्वप्न म सोने का बिछावन दून से ज्यादा लम्बा देखा।

10 नवबर '77 गुरुवार—दोपहरे 4 28 बजे दीपक जलाया, बुझा नहीं सो अगली साल ठीक होगी। रात को दीपोत्सव अच्छा हुआ।

11 नवबर 77, शुक्रवार—दीपावली का राम राम हुआ।

वर्ष 1978

21 3 78 मगलवार—उद्योग भवन (खादी मदिर) मे गायलजी का 90 वा जन्म दिन मनाया। कताई हुई फोटू लिये गये। तसवीर (गायलजी की) से माला गिरी। यह अच्छा सकेत माना गया।

8 4 78 शनिवार—विक्रम सवत 2035 प्रारम्भ नवरात्रारम्भ गुडी परिवा नया साल चन्द्र मे शुरू हुआ। साड बाहर से घर आया।

10 5 78 बुधवार—अक्षय तृतीया को चन्द्र स्वर रहा। साड बाहर से आया वडूका नहीं।

24 9 78 रविवार—भाखावटे स्वप्न म देखता हू, तेजपुर की गद्दी म हू और कुछ लोग अप्रिय खबर बताने की शकल म आ रहे है। उन्हे देखते ही माना मे क्या हो गया? क्या हो गया कह कर रुदन करता हू। स्वप्न म रोना अच्छा माना गया है।

31 10 78 मगलवार—दीपावली तीन बजे भाखावटे चवदस अमावस की सधि म दीप जलाया था। हवा थोड़ी पूर्व की थी, पश्चिम उत्तर की बाती बुझी पूर्व दक्षिण की जलती रही।

2 नवबर 78 गुरुवार—भाखावटे स्वप्न म पक्के भीतो की गोशाला म एक आदमी देखा। गायो के गोबर की कई ढिगलियाँ थीं पर पशु एक भी नहीं था। मुझे लघु शका

की हाजत हुई पर करने जाने पर हुई नहीं। गोबर देखकर मन मे हुआ कि यहा से दा गाडा गोबर ले जाने से निपाई अच्छी तरह से हो जायेगी।

वर्ष 1981

1 जनवरी 81, गुरुवार—अल सुबह काकदोड की बोली सुनाई दी। मोसम खूब साफ, राष्ट्रीय पक्षी मोर मीठी आवाज म बोला।

9 मार्च '81, सामवार—घोड़ की गाय अमावस की ब्याहने से गोकुलराम को दी

20 मार्च '81, शुक्रवार—होलिका दाह होली की झल उगुनी गई।

29 7 '81, बुधवार—माखावटे स्वप्न म देखा पानी पर नाव दाहिने हाथ स खेता हू नाव किनारे लग गई।

वर्ष 1985

18 फरवरी 85 सोमवार—गई रात स्वप्न म देखा खदेड़े मे पानी इकट्ठा होकर नाले में बह रहा है। यह पानी उत्तर पूर्व से बहता आता हे। मन म सोचा अब फूसराज को लिख सकता हू शिवजी ने गगा भेजी है। तन मन से तैयार रहे। जगाने पर तैयार रहने का अर्थ यही लगाया है कि तन मन से पवित्र रहे।

13 अप्रेल '85, शनिवार—वैशाखी की भोर बैल उत्तर की तरफ मुह करके एक पैर आगे निकाल कर बेठा। यह कृषि के लिये शुभ शकुन है।

22 अप्रेल '85, सोमवार—'परशुराम जयन्ती अल सुबह बैल उत्तर की तरफ मुह करके पैर आगे निकाल क उगाली कर रहा था। यह शकुन कृषि के लिए अच्छा होता है।

23 अप्रेल, 85 मगलवार— अक्षय तृतीया सुबह बादला से बूदा बादी हुई फिर रात को आधी और छाटे हुइ।

15 अगस्त '85 गुरुवार—स्वाधीनता दिवस इस 38 वे स्वाधीनता दिवस पर सुबह बाड़े मे नेवले का दर्शन हुआ यह अच्छे सकेत का द्योतक हे। कढ़ म ग्वार तिल बीजना शुरू किया।

वर्ष 1988

15 जनवरी 88 शुक्रवार—बच्चा को दूध पिलाती गाय का उत्तम शकुन हाता है आज कुत्ती बच्चा को दूध पिलाती का शकुन परिणाम स जाना जायगा।

16 अप्रेल '88 शनिवार—भाजी (गाव की साधक महिला) ने दक्षिण सिराना करक सान की मनाई की सो पूर्व सिराना करके सोया।

17 अप्रेल 88 रविवार—आज उठत ही अगल कमर म आ गया। साइ यावा गि फोटू अगले कमर म गाधीजी की मूर्ति ऊपर लगाई।

मार का

19 अप्रल 88—टाउर आया मा [illegible] मिगारगम [illegible] हाल डाला। हनुमानजी की जात की।

कृषि सम्बन्धी दृष्टिकोण एव प्रयोग

वर्ष 1964

30 मई '64, शनिवार—भारावट कढ़ जाकर 7 30 उपरात गुवार की नींव श्री चूनारामजी पुरोहित न फुसु (फूसगगा) के द्वारा लगाई।

19 सितबर '64 शनिवार—बीकानर चूरू जिल के कृषि अधिकारी व श्री आत्मसिंहजी आय। कढ़ भी गय।

कढ़ कुए का विवरण

1973—डायरी म कढ़ म कुए खुदाइ और ट्यूबवेल का ब्यौरा व प्रतिदिन विवरण दिया है। कढ़ खत म कुए की खुदाई। जनवरी 73 स प्रारम्भ हुई और 18 अप्रल 73 को पूरी हुइ। खूब पानी आया। खुदाई की गहराई क नाप मिट्टी क रग आदि का उल्लेख किया है। राज खुदाई देखन जात थ। खुदाई के समय खुद भी अन्दर उतर कर देख आय। कुए की खुदाई की अनुमति की अर्जी व एस डी एम से अनुमति ली तथा एक वेगन सीमेण्ट का परमिट मिलन का उल्लख किया है।

कृषि कार्य म उनकी लगन और सिचाई स खती की साच प्रकट हाती है।

23 8 73 गुरुवार—मुरकिया ग्वार बोया।

24 8 73 शुक्रवार—दिन म वर्षा उतराद तरफ हुई।

25 8 73 शनिवार—रात आसार अच्छे लग। व्यापार खेती सब उन्नति होनी चाहिए।

26 8 73 रविवार—ऊट गाड़े म मुरबा गया। कढ़ गया, कुआ जैसे भर गया।

27 8 73 सोमवार—धुराल म दशी मूग व बाजरी बाई।

वर्ष 1975

6 8 75 बुधवार—धुराल में सब्जी वाला गुवार क कुछ पौधा के लाल डोरा बान्धा। य पौध बीज के वास्ते छाट है।

21 8 75 गुरुवार—मुरबो म गुवार बान गये। पैदल कढ़ गया। लक्ष्मीचन्द सवग के मुरबे म अपनी पाल ताड़कर पानी निकाला। करीब 20 बीघो म एक फीट खड्डा पानी था फसल म नुकसान हाता।

15 9 75 सोमवार—सुबह खूब धवर आई बाद म कढ़ गये कढ़ म ज्यादा पानी स फसल खराब हुइ है आदमी निदान कर रह है।

वर्ष 1977

9 जनवरी 77 रविवार—सुबह इसोबगाल लकर पैदल धुराले गया गहू, चणा मटर क लगत फल ही तार खा रहा है। सरसा तक पहुचती नहीं। सा सरसों भल ही हाथ आय। झाल आज फिर पाला लान गई।

8 जुलाई 77 शुक्रवार—शाम का अच्छी हलवा वषा हुइ रात को झड़ सा रहा। उट गाइ म धुराला गया, बोई बाजरी सार्ग उग आइ है भदोइ से आये मतीर के बाज भिगाकर बुवाय चाभाय रूप से। ऊट क एक बड हल से काला गुवार बोना शुरू किया।

11 जुलाई '77 सामवार—रात की वषा हाने से लालालाइ टूटी धुराला टूटा।

14 जुलाई '77 गुरुवार—उट गाड़ पर धुराले गया जो पाले टूटी है ऊदरा के बिल से टूटा है तथा बीच का फाटक न खाल सकने स टूटी है। अगर य दोनो कार्य हा जाते तो रात का नुकसान न हाता। बाड फसल मे बहुत कम बचा है। आज काला गुवार दुबारा बाना शुरू करग। धुराले का ताड़ बाध रहे है।

15 जुलाई 77, शुक्रवार—इशुदानजी (सरपच) आय तलाई सार्वजनिक के तोड़ बाधन की चचा हुइ रात म गाव म हेला करान का तय हुआ।

लालालाई का बूकिया आज पूर्णदान जी न बधाया।

16 जुलाई '77, शनिवार—रात को ताड़ बधान का हेला किया था, मगर लोग आय नहा।

24 जुलाई '77 रविवार—उट गाड़ से कढ गुवार सामान ल गये 5 बोरी गुवार। तिल ट्रक्टर की तवी क आग छिड़कते ह।

पूनमराम के साथ मार्वी से भज अरड के बीज की 1 थैली आई यह हाइब्रिड है इसकी उपज बीज स सौ गुणी मानते है। यह कढ म बाया। छाट आकार के बीज है जनवरी म पकत ह। अगर पाला पड़ा ता जलन का डर है, लाइन म बोन स 4 फिट और 3 फिट की दूरी चाहिए।

1 अगस्त 77, सामवार—धुराल म नागार क लाय बिना सूला क अरड क बीज बाय।

6 अगस्त 77, शनिवार—कढ़ की फसल आध पर दी श्री हर्मारनाथ मिध पा गार बिरलाका रीवसर, नागार का।

26 दिसम्बर 77 सामवार—10 बजे नीम का पेड़ श्री महन्त साहब (श्री रामप्रसादजी) द्वारा रोपा। 12 बज की बस स भवर और महन्त साहब गय।

वर्ष 1978

29 मई 78 सामवार—जोधपुर स महनाइजी का पत्र आया। ... पथर मताग मे ... आय।

16 जुलाई 78 रविवार—जापान के मतीरे के बीज 30 घमला म 12 7 78 को 3 बजे बोय थे उस म सुबह तक 17 उग आय।

18 जुलाई 78 मगलवार—जापानी मतीरा के बीज 12 7 को बोय थे। 16 7 को उगने लगे। आज उनके तने प्राय ढाई तीन इच लम्बे हो गये। इससे एक जोखिम यह हो गई कि थोड़ से झोके या झटके से तना कहीं से टूट सकता है। दो चार दिन देख कर ही रोपना है।

24 जुलाई 78, सोमवार—जापानी मतीरे के सात बेल घमला से निकाल कर धुराल म झोपड़े के सामने के रुख म बोई। 3 बीज युक्त और 4 बीज बिना की।

26 जुलाई 78, बुधवार—जापानी मतीरे की बेल घमला म से धुराल म लगाइ। बेल नष्ट होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि घमला म भेड़ा की अग्गार्णी की खात ही भर दी थी। मट्टी नहीं थी, चूक हो जाती है। अब 10 खाद देकर बोयग।

29 जुलाई 78, शनिवार—सरकारी प्रदर्शन की बाजरी आसुराम खेतपाल के हल से बुवाई।

31 जुलाई 78 सोमवार—भवर के पत्र म 50 हार्स पावर का नामचारा बागान म मसी ट्रैक्टर बिकाउ का अखबार की खबर पर फुसराज को देखकर खरीदने को लिखा है।

1 अगस्त 78 मगलवार—प्रदर्शन वास्ते बोई बाजरी आज दिखने लगी है।

6 अगस्त '78 रविवार—श्री शिवरतन सोनी पटवारी फूलासर पहली बस से आया। फूलासर के पास मेन कनाल पर मुरबा प्लाट वास्ते बात की 12 फार्म मगवाये। प्लाटमेन्ट अभी चल रहा है।

19 अगस्त 78 शनिवार—जापानी मतीरा के बीज बोये। पहले लगाई बेले सारी नष्ट हो गई हैं।

वर्ष 1981

9 जनवरी 81, शुक्रवार—कालायत से बैक मेनजर श्री गणेशदासजी आये। बैक लोन बाबत बात हुई।

16 अक्टूबर 81 शुक्रवार—गुवार के 1 पौध को पानी दिया। रूसी गवार की किसम का है।

वर्ष 1985

1973 मे कद्द खेत म कुआ खुदवाया। अचानक अधिक बरसात से कुआ मिट्टी से भर गया और एक कढ़ाव उसमे फस गया। ट्यूब वेल ही काम करता रहा। सब तरह की बाधाओ के बावजूद।

जनवरी 1985—मे धुराले म नया खुला कुआ खुदवाना शुरू किया। खुदाई क माप मिट्टी के रग आदि का डायरी म प्रतिदिन उल्लेख किया है। 4 अगस्त 1985 को कुए स पानी निकला। निकले पानी की मात्रा खेती के लिए पर्याप्त नही होन स उस और गहरा करने का कार्य दिसम्बर 85 तक चलता रहा। उसके बाद बोरिग का कार्य रुक गया।

13 अक्टूबर, '85—को दाय पेर के कुल्हे की हड्डी टूट गई। यह पेर जीवन पर्यन्त ही ठीक नही हुआ। खड़े होना चलना सभव नही था, गोदी म उठाकर ही इधर उधर ले जाना पड़ता था। इस अपग स्थिति म भी कृषि कार्य कुआ गौ सेवा और खादी सस्थाओ का कार्य करते रहे।

1988—म पुन कुए की गहरी खुदाई बन्धाई व बोरिग कराने का कार्य प्रारभ किया। जिसम एक के बाद दूसरी कठिनाई और बाधाये भारी खर्च वित्तीय कठिनाई के होते हुए भी धैर्य और दृढ़ सकल्प के साथ बोरिग का काम करवाया। कुए पर बिजली पम्प मोटर आदि का काम 1990 मे पूरा होने तक चला। इन सब का विवरण डायरियो मे प्राय हर तिथि म किया गया है।

19 जनवरी 85, शुक्रवार—कुए की खुदाई शुरू की।

21 जनवरी '85 सोमवार—टाडर कोलायत गया तहसील से नान ओब्जेक्शन सर्टिफिकेट लाया कुए पर लाइट की माग बाबत।

6 फरवरी 85 बुधवार—कुए की खुदाई हो रही है। पटवारी से लिखवा कर बिजली का कनेक्सन वास्ते रिपोर्ट भिजवाई।

28 फरवरी '85, गुरुवार—रामचन्दजी कुमार से कुए के पानी बाबत जात कराई। अभी 35व पुरस मे खुदाई चलती है। 45 मे पानी आ जायगा। 43 पर मटी कड़ी आयगी।

5 जून '85 बुधवार—बैलगाड़े से अगराराम वाली खेजड़ी काटने भूरजी खींवजी को लेकर गया। खोदाई शुरू कराकर आया। खेजड़ी के मोली बाध कर कह दिया कि इसम कोई (प्रेत देवता) वास करता हो वह अन्यतर चला जाये हम इसे ब्यार क लिए काटते है।

3 जुलाई, 85 बुधवार—कुए मे ब्यारा 11 बजे बिठाया। फूसराज चन्द्रा ने पूजन किया।

30 जुलाई 85 मगलवार—रामनाथजी भूरजी से आखा दिखा आए एक पुरष मे पानी आ जायगा का कहा।

3 अगस्त, 85 शनिवार—कुआ आज खुदने से 50 वी पुरस म । फिट खुद जायेगा 50 पूरा खुदने से पानी आने का भूरारामजी सूगे ने बताया है। साय 5 बजे कुए म 294 फिट के नीचे पानी आया।

20 जनवरी '90, शनिवार—मोटर पप से ठीक पानी आने लगा पर शाम को डी पी के फ्यूज उड़ गये वापिस लगाने पर भी काम नहीं हुआ।

21 जनवरी 90 रविवार—टोडर कोलायत जाकर एक्स ई एन से बात कर आया। कल डी पी बदल देगे।

22 जनवरी 90 सोमवार—श्री बैजनाथजी ने कोलायत से डी पी लाकर बदली।

23 जनवरी 90 मगलवार—अब ट्यूब वैल ठीक पानी देता है।

24 मार्च 90 शनिवार—टोडर कोलायत जाकर बिजली के ट्रासफारमर का चार्ज तय कर आया।

30 मार्च '90 शुक्रवार—टोडर वाल्व ठीक कराने गया। बिजली के ट्रासफारमर का बिल भी भराने गया।

24 अप्रेल 90 मगलवार—श्री नारायणजी बीकानेर से आये उनको ट्यूब वैल के पैसे दिये।

7 जुलाई '90 शनिवार—साय 5 बजे हलवा वर्षा हो गई। कृषि विभाग वाले आये थे। 2 किलो जडीय मोठ दे गये।

16 अगस्त 90 गुरुवार—ट्यूब वैल पर सिचाई चलती है।

श्री रघुवरदयालजी गोइल
खादी मन्दिर व खादी सस्थाए

वर्ष 1960

4 10 60 मगलवार— सीडा से गडियाला होता हुआ, मडाल होकर आया। शाम को श्री रघुवरदयाल गोइल, श्री मनोहरलाल मितल, श्री रिड़मलदानजी श्री सोहनलालजी कार से आए। भवर ऊट लेकर कोलायत गया व रात को वापस आया।

वर्ष 1961

19 1 61, गुरुवार—श्री लेलेजी (खा ग्रा कमीशन) साथ झझू, कोलायत आया कालासर अकासर रास्ते मे ठहरा।

वर्ष 1962

26 जनवरी 62 शुक्रवार—खादी मदिर के काउन्सिल की बैठक के लिए बीकानेर पहली बस से गया।

वर्ष 1963

12 जनवरी 63, शनिवार—सुबह मिटिंग म गया श्री जयनारायणजी व्यास आदि ने चर्चा की।

13 जनवरी 63, रविवार—दोपहर तक बैठक हुई शाम को गाडिया से सब गये।

वर्ष 1964

7 जून '64, सोमवार—सुबह ऊट से बीकानेर आया खादी मदिर की बैठक मे।

18 जुलाई '64, शनिवार—बड़े भोर ट्रक से बीकानेर गया खादी मदिर की बैठक हुई। 4 30 बजे दिन के खादी मदिर के सारे ट्रस्टी आये।

27 सितम्बर 64 रविवार—10 बजे दिन स खादी मदिर क ट्रस्टियो की बैठक कढ़ के खेत म हुई। शाम को बीकानेर गये। और फोटू खिचवाया।

वर्ष 1973

8 फरवरी 73, गुरुवार—5 बजे बरात भिवानी के लिए रवाना हुई 12 बजे भीवानी पहुची।

28 मार्च '73, बुधवार—ऊनी खादी सस्थान की मिटिग हुई।

वर्ष 1975

17 फरवरी '75, सोमवार—(गोयल कुटीर स्थापना)

श्री सोहनलाल मोदी आये, इन के हाथा गोइल कुटी के झोपड़े की नीव रखवाई।

गोयल कुटीर की भींत की चुनाई हुकमाराम ने छाया मे शुरू की। 6 अप्रेल की भीत समाप्त हुई।

18 अप्रेल '75, शुक्रवार—गोयल कुटीर की नींव खुदाई सूरजाराम ने चालू की।

19 अप्रेल 75, शनिवार—झोपड़े की नीव 8 45 बजे पूनमराम ब्राह्मण, सूरजाराम कुभार ने दी।

31 मई '75 शनिवार—खादी मदिर बैठक म गुप्ताजी (हरिकृष्ण) का राजी नामा (त्याग पत्र) मजूर किया।

11 जून '75, बुधवार—खादी मदिर स हटाये गये कार्यकर्ताओ की यूनियन वाला से बात हुई, कोर्ट मे चल रहे केस की तारीख लेनी है एक कमेटी के फेसले को मान लने पर रजा मदी हुई।

4 जुलाई 75 शुक्रवार—बीकानेर आये खादी मदिर के जिन कार्यकर्ताओ के साथ लेबर कार्ट म केसेज है उस की सेटल की बात चल रही थी, मगर मोदीजी गिरफ्तार हो जाने से बात आग नहीं बढ़ी।

2 अगस्त 75 शनिवार—बीकानेर गया रात की गाड़ी से इन्दूर्जी के साथ गगानगर गया।

3 अगस्त '75, रविवार—विनोबा बस्ती, गगानगर म खादी सस्था की मिटिग हुई। शाम को श्री रामचन्द्रजी जैन क यहा ठहरा।

15 अगस्त 75, शुक्रवार—खादी मदिर इन्डस्ट्रीयल एरिया म जल्स म शरीक हुआ। रात को गाव आया।

26 अगस्त 75, मगलवार—सुबह धुराले म झापड़े म श्री गोयलजी के पवित्र अवशेष सगमरमर की चौकी म स्थापित किया। श्री कमलजी पुष्पा प्रकाशजी उपस्थित थे।

11 सितम्बर 75, गुरुवार—श्री गोयलजी का फोटू झापड़ में लगाया।

13 सितम्बर 75, रविवार—हम सब रुणचे गये रात को वापस आये श्री धर्मचन्दजी रात को नहाके, खाके सोये।

14 सितम्बर 75 रविवार—रात को धर्मचन्दजी झापड़े म आकर साये।

10 अक्टूबर 75 शुक्रवार—ऊनी खादी सस्थान की मीटिग म श्री निलोकचन्दजी गोलछा आये।

वर्ष 1977

7 1 77, शुक्रवार—श्री मनोहरजी खादी मदिर से आये चैका पर सही ले गय।

18 2 '77 शुक्रवार—मे ऊनी खादी ग्रामोद्योग सस्थान की बैठक म गया।

26 7 '77 मगलवार—खादी ग्रामोद्योग सस्थान के कार्यकर्ता आये चेका पर सही ले गये।

27 7 77 शनिवार—खादी मदिर गया गोयलजी क घर भी। श्री मोदीजी वहा आये ग्राम समितिया बाबत चर्चा हुई।

26 10 77, बुधवार—श्री मूलचन्दजी नालखा अपनी कार से आये। श्री गोकुल भाई भट्ट तथा खादी मदिर के सदस्य गण और खादी कमीशन क निर्देशक श्री माधोदासजी आये।

27 10 77 गुरुवार—खादी मदिर की मीटिग हुई इसम बाहर के लोक भी उपस्थित थे। श्री उदारामजी व श्री रामकिशनदासजी गुप्ता दोना विधायक आये थ। इससे लाग अपनी समस्या सुनाने आये तथा तबादले बगैरह के काम भी। शाम को सब वापस गये।

माधोदासजी (खा ग्रा कमीशन के निर्देशक) के हाथो एक बछड़े को साड बनाने क कुकुम के निशान लगाये।

16 दिसम्बर 77, शुक्रवार—श्री गायलजी की चौथी पुण्य तिथि पर झोपड़े में पुष्पा ने दीप सजाया।

वर्ष 1978

30 1 78, सोमवार—कुष्ठ निवारण—दिन को गायलजी के झोपड़े में दीपक जलाया।

12 2 78, रविवार—श्री इन्दुजी से फोन पर उनके अस्वस्थता के बारे में जाना।

13 2 78, सोमवार—खादी मंदिर के सदस्यों की बैठक इन्दुजी के घर पर की। खादी कमीशन के निर्देशक डा माधोराम भाई आये थे। श्री हीरालाल माथुर की शिकायतो का लंबा चौड़ा जवाब करते साय 5 बज गया। श्री श्यामसुन्दरजी भी पहुंच गये थे।

14 2 78, मंगलवार—आज उन्हीं खादी संस्थान की बैठक बुलाई गई थी पर अचानक श्री तापनीवाल जी बीमार हो जाने से बैठक हुई नहीं।

20 3 78 सोमवार—पहली बस से बीकानेर गया। लालाजी (श्री ईश्वरदयालजी) से सलाह होकर 21 3 की छुट्टी (खादी मन्दिर में) नहीं रखने का तय हुआ।

21 3 78, मंगलवार— उद्योग भवन में गायलजी का 90वां जन्म दिन मनाया। कताई हुई। फोटू लिये गये, तस्वीर से माला गिरी यह अच्छा संकेत माना गया। रात को गंगाशहर सोया।

28 4 78 शुक्रवार—गंगानगर संघ की बैठक हुई। तलपट में संस्था न घाटे में न फायदे में। जैन साहब से मिलकर हनुमानगढ़ होता हुआ बीकानेर आया।

13 6 '78, मंगलवार—जयपुर की गाड़ी से श्री गोकुलभाई भट्ट सोहनलालजी मोदी आये। श्री रामचन्द्रजी मकासर वाले भी आये। अनौपचारिक बैठक होकर शाम को सारे अपने अपने स्थानो को रवाना हुए।

11 7 '78, शनिवार—सुबह खादी मंदिर की मेटाडोर से बीकानेर आया। फूसराज साथ था। खादी ग्रामोद्योग संघ की बैठक थी। श्री मास्टरजी से पी एच वी बाजरे की 5 थैली मंगाई। रात को गंगाशहर सोया।

13 7 78 गुरुवार—श्री गोकुलभाई भट्ट आये बाद में साय 3 बजे खादी मंदिर में राजस्थान समग्र सेवा संघ की बैठक हुई।

16 12 78 शनिवार—श्री गोयलजी की 5वीं पुण्य तिथि। झोपड़े में घी का दिया किया।

23 12 78 शनिवार—श्री मनोहरजी साथ श्री गिरधरलालजी वैद्य भादाणी आये। दवा का नुक्शा लिख कर दे गये।

वर्ष 1985

27 जनवरी 85 रविवार— खादी मंदिर स इन्दूजी आदि बैठक करने गाव आय। शाम को मै भवर की मा इसी गाड़ी स गगाशहर गय।

21 मार्च '85 गुरुवार—श्री गायलजी के 78वें जन्म दिवस पर नय बैल का गाड जात कर झापड़ गया। घी का दीपक सजाया।

25 मई '85 शनिवार—सुबह बीकानेर गया तब श्री इन्दूजी क भाई प्रवेशजी की पोलैंड स यायरलेम म इन्तकाल की खबर आई और रात का घर गया।

28 जुलाई '85 रविवार—खादी मंदिर की प्रबध समिति की बैठक गाव म हुई इन्दूजी, स्वामीजी आये।

वर्ष 1988

13 अप्रैल 88 बुधवार— वैशाखी—शाम को गायलजी के झापड़ गय। पूनमनाथ साथ गया। दीपक जोत की।

27 अप्रैल '88 बुधवार—खादी मंदिर की बैठक श्री मालचन्दजी (हिसारिया) की अध्यक्षता, दियातरा म हुई।

वर्ष 1990

20 जुलाई 90 शुक्रवार—10 बजे इन्दूजी उदारामजी आदि आए। प्रबध समिति की बैठक हुई। शाम का 4 बजे गय।

पचायत, सार्वजनिक रचनात्मक कार्य, मुलाकाते, आतिथ्य, अकाल

वर्ष 1960

टिप्पणी— वर्ष 1960 मे हुए ग्राम पचायत चुनावा म जीते कोलायत पचायत समिति के पचायतों के सरपच व पचा के नाम जाति ग्राम सहित पूरा विवरण डायरी म अकित किया हुआ है। उनकी पचायत कार्य म गहरी रुचि और बारीकी से जानकारी रखन की वृत्ति प्रकट हुई है।

1 10 '60—ग्राम पचायत दियातरा के बैठक म जाना।

29 9 '60—शाम को 4 बजे करीब श्रीमान कमिश्नर साहब अतिरिक्त डायरेक्टर शिक्षा विभाग, जज साहब जे डी ओ साहब बी डी ओ साहब आये। 3 4 घटा खेत म रहे।

4 10 60—सीडा स गड़ियाला होता हुआ मण्डाल हाकर आया। श्री गायलजी रघुवरदयालजी मनोहरलालजी, श्री रिड़मलदासजी और मोहनलालजी कार से आय। भवर ऊंट लेकर कोलायत गया।

7 10 60—11 बजे से जिला परिषद बीकानेर की मिटिग शुरू हुई। श्री बद्रीप्रसादजी वर्मा पधारे उन्होने मल मूत्र की खाद बनाने पर जोर दिया और बताया कि खेत मे

हल चला कर उस लकीर मे मल मूत्र की क्रिया कर पाट देने से 7 रोज म अच्छी खाद बन जायेगी।

8 10 60—2 बजे जिला परिषद की बैठक म श्री चिरजीलालजी स बात हुई बाद म स्टेट बोर्ड की बैठक म गया। श्री अजीतभाई, श्री रामेश्वरलालजी श्री भगवानदासजी आदि उपस्थित थे।

10 10 60, सोमवार—भोर ही गाव से ऊट पर मगे को साथ लकर गाव होता हुआ कोलायत आया। कोलायत स जीप से विकास अधिकारी के साथ बीकानेर जिला परिषद की बैठक टाऊन हाल म पहुचा। ससद सदस्य श्री रघुवरदयालजी की अध्यक्षता म 3 बजे आय। 2 30 घटे तक बातचीत हुई। म शाम की बस से कोलायत जाकर रात को भवरसिह को साथ लकर झझू गया।

12 10 60, बुधवार—(पचायत) समिति की बैठक ठीक 11 बजे शुरू हुइ और शाम को 5 बज उठी। श्री सुरेका (एम एल सुरेका अतिरिक्त जिलाधीश विकास) साहब की गाड़ी से रवाना हुए। बजू रात 10 बजे पहुच।

13 10 '60, बृहस्पतिवार—सुबह 8 बजे बजू से चलकर गिराधी मिठड़िया पेथड़ा की ठाणी, ाड़ियाला, मडाल, दयातरा होता हुए 1 5 पर कोलायत पहुचे और कोलायत मेला व्यवस्था के लिए मीटिग शुरू की। पहले बनी हुई मेला कमेटी कायम रहते हुए उस के अध्यक्ष का चुनाव कराना तय रहा। शाम को भवर ऊट लाया रात को घर पहुचा।

19 10 60, सोमवार—अल सुबह बागडदेसर के 3 वार्ड तय करके बजू पहुचे। यहा स्नान भोजन करक तीना वासा को 4 वार्डो म विभक्त कर मानकासर पहुचे। यहा दो वार्ड किये। मानकासर के कुछ लोगो ने बरसलपुर राव साहब को काफी रुपये थोड़े अर्से पहले दिये थे और न देने वालो ने बताया कि हम राव साहब डकैतो से उठवा दगे या और कोई नुकसान पहुचायगे। देने वालो म एक ऊट राते रग का भी दिया है। 2 बजे करीब मोढ़ायत पहुचे। मोढ़ायत के वार्ड बनाकर गाडू के वार्ड बनाये फिर रणजीतपुरा गये। वहा 3 वार्ड बनाकर वापस गाडू आकर सोये।

20 10 60, गुरुवार—(दीपावली) सुबह से मिला भिटी शुरू हुई। 10 बजे गाव गये। इस साल फिर से कुभार अपने यहा आये बिछुड़े मिले जैसा हर्ष हुआ। दोहपहरे भागता की कोटड़ी गये वहा मिडल स्कूल का भवन बनाने के लिए चदा माडा। सात हजार के करीब लिखा गया। इन्तजामिया कमेटी का गठन किया जो निम्न है—

श्री अमोलखचन्दजी छलाणी, श्री गगादान चारण श्री उकारमल ब्राह्मण

श्री ईशरदानजी, लखेसर कुभार, श्री लालुराम मेघवाल।

22 10 60, शनिवार—बाला का कुआ देखने गया कुए का काम जोरो स चल रहा है पानी पीने लायक अच्छा है। श्री जीवराजजी बाले के घर ठहरा रूपाराम ऊट सवार के ऊट स गया था।

II 10 '60, रविवार—भोर म ही घर स चला। 8 बजे कोलायत पहुचा। मेला कमटी की स्थाई समिति का चुनाव होना था। परचा ।। बज भरना था। आपस म तय हाकर परचा श्री भारमल का भरना तय हुआ फिर भी श्री लक्ष्मीचन्दजी सेवग न अपनी स्त्री क दा परचे भर। परचे वापस लेन को श्री भारमल को कहा गया मगर नहीं लिया ता इचरजी दवी क परचा को श्री लक्ष्मीचन्द न उठा लिय। चुनाव निर्विरोध हुआ। पर बात का मठ मार दिया।

27 10 '60 गुरुवार—सुबह 8 बजे की बस से बीकानेर से कोलायत आया। 2 बजे दुकान के जमीन की नीलामी शुरू हुई जो शाम तक होती रही, शातिपूर्वक सारा काम हुआ। 2567 87 पैसे आय हुई। रात को गाव चला गया।

29 IU '60, शनिवार—दिन भर दुकाने नीलाम की और मेल म दुकान आई।

30 10 60, रविवार—आफिस पनिया की धर्मशाला क पास आई। माईक स स्वच्छता का ऐलान किया। रात को विकास अधिकारी बीकानर गये। आज वार्ड तय हो रहे है।

1 11 60 मगलवार—मले म कई लोग आये, खेतारामजी खाड लाने गये वह आये नहीं, ट्रक पर खाड मगाने की श्री कलक्टर साहब को सूचना लिखी।

3 11 60, गुरुवार—सुबह श्री दौलतरामजी सारण साहब को चाय पार्टी दी मेला कमेटी की बैठक नहीं हो सकी। श्री सुरेखा साहब आय दोपहर के भाजन मे शरीक थे।

12 11 60 शनिवार—पचायत समिति की बैठक करके रात को (कोलायत से) पैदल घर आया।

14 11 60 सोमवार—बाल दिवस पर प्रभात फेरी हुई बच्चो को इनाम बाटा गया।

20 11 '60, रविवार—सुबह गाव जाकर ग्राम पचायत के सरपच के लिए कानीराम को तय किया।

वर्ष 1961

3 1 '61 मगलवार—मगरे म तहसील स्तर पर एक सगठन बनान का विचार आया।

5 1 61, गुरुवार—गाव मे आकर सर्वोदय नवयुवक मडल के जलसे म शामिल होकर शाम को वापस कोलायत गया। पशु मले का निरीक्षण किया।

7 1 '71, शनिवार—श्री भीमसेनजी के घर जाकर दानों जने सुरेखा साहब से मिले। 11 बजे जिला परिषद की बैठक हुई।

12 1 61 गुरुवार—सुबह ऊट से कोलायत गया। पचायत समिति के प्रधान का चुनाव था। श्री चन्द्रसिहजी और श्री भूरसिहजी खड़े हुए ज्यादा मत श्री चन्द्रसिह को मिले।

19 1 61, गुरुवार—श्री लेलेजी (खादी ग्रामोद्योग आयोग) के साथ झझू, कोलायत आया कोलासर अकासर रास्ते मे ठहरा।

28 1 '61, मगलवार—कोलायत गया पचायत समिति म आध्रा के प्रधानो का दल यहा की विकेन्द्रित व्यवस्था को देखने आये

वर्ष 1962

1 जनवरी '62 सामवार—सुबह ही श्री इशुदानजी के साथ नय बैला की गाड़ी जोड़ कर मडाल पाठशाला के सालाना उत्सव पर मडाल गया। श्री बृजलालजी सेठिया पहले दिन तिल वजन कराने पहुचे हुए थे। रात को अकेला गाड़ी पर वापस आया। श्री इशुदानजी विकास अधिकारी की जीप से आये।

12 1 62, शुक्रवार—जिला स्तरीय अधिकारी के आदेश से पशु पालको की कान्फरेन्स मे बैल गाड़ी से कोलायत गया। भारमलजी मिले रात को वापस आया जियासिह साथ था।

21 1 62, रविवार—भोर म ट्रक से कोलायत और वहा से 1 बजे की बस से बीकानेर गया। प्राकृतिक चिकित्सा के सालाना बैठक पर श्री गोकुल भाई भट्ट श्री यज्ञदतजी उपाध्याय आये उनके साथ मिला।

29 1 62, सोमवार—दिन के 4 बजे चुनाव प्रचार को श्री नेहरूजी बीकानेर स्टेडियम आय। रात का श्री गोयलजी के घर श्री माणकचन्द सुराणा आय बाद मे देश की पुरानी बाते होती रही।

वर्ष 1962

6 2 '62, मगलवार—शाम को कोठी पर श्री करणसिहजी एम पी से गाव वाला क साथ मिलने गया।

8 2 62, गुरुवार—दोपहर बाद श्री मोतीचन्दजी खजाची की जीप से मडाल गड़ियाले गिराधी गिराछर नाखड़े होता हुआ रात का कोलायत सोया।

9 2 62 शुक्रवार—श्री दाऊदयालजी आचार्य के साथ भवर आया। चक बीठनाक क बाबत कार्रवाई की तथा विकास अधिकारी से लोहिय कुए की सीमट बाबत मिला।

1 माच 62, गुरुवार—देशनाक से भैरूदानजी कार से गगाशहर आया। धवल समारोह (जैन श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसघ का द्विशताब्दी समारोह) म जाकर रात का जान (बरात) की लारी से गाव आया।

14 मार्च, 1962—सुजानगढ़ से नीमोद पचायत का गोबर गैस पलाण्ट देखकर कुचामन गया। वहा से रात की ट्रेन पकड़ी।

6 अप्रल 62, शुक्रवार—माखावट बैलगाड़ी स कोलायत जाकर लोहिय कुए क लिय 200 बोरी सीमण्ट का विकास विभाग स परमिट लिया।

वर्ष 1963

26 अप्रल '63, शुक्रवार—ऊट स कोलायत फमिन कमटी म आया। 26 मन्दरा म काम शुरू हान का तय हुआ।

10 मई '63, शुक्रवार—मिडिल स्कूल की नींव दिन का 11 बजे श्री द्वारकादास जाशी क हाथा मागीलालजी चलवा, श्री रिद्धकरणजी भादाणी द्वारा रखी गई।

6 जुलाई 63, शनिवार—पाचू म भूराजी बरड़िया व 2 जाट तथा आस पास मे 15 16 लोग तप्त से चल बसे।

14 जुलाई 63, रविवार—श्री भोगीलाल पाडया आदि सूर्योदय पर ही पधारे।

27 7 63, शनिवार—श्री ढेबरभाई व गाकुल भाई आये कृषि गो सवा समिति की बैठक हुई। दुष्काल की छाया की ही ज्यादा चर्चा थी।

28 7 63 रविवार—भाई कलैक्टर साहब से मिला, पानी के इन्तजाम के लिए। सिघवी साहब पर लिख कर दिया 5 बजे की बस से नायब साहब आय।

30 7 63 मगलवार—चेलासर (कुआ) जोत कर एक पहर चलाया और शाम को वर्षा हुई जिससे 5 7 दिन का पानी तालाबा म आया। कद्द पर 6 7 आगुल वर्षा हुई।

वर्ष 1964

27 मई '64, बुधवार—दिन के 3 बजे के रेडियो प्रसारण स नेहरूजी के देहावसान की खबर मिली।

सुनहु भरत जस पिता तुमारा।
भयहुन अस को हान ही हारा।।

28 5 '64 गुरुवार—बीकानेर के लोगा ने अपने मन से काम काज बद रखा।

8 जून 64 सामवार—कोलायत 8 की बस से आया श्री दौलतरामजी सारण से मिला।

27 सितम्बर 64 रविवार—10 बज दिन से खादी मन्दिर के ट्रस्टिया की बैठक कद्द खेत म हुई। शाम का बीकानेर गये। फाटो खिचवाया।

6 अक्टूबर 64 मगलवार—श्रीमान जिलाधीश महादय सपरिवार खत मे पधारे साथ मे श्री हिम्मतसिहजी थे।

25 अक्टूबर 64 रविवार—श्री चम्पालालजी बाठिया साहब सपरिवार कद्द के खत पधारे। धुराल भी आये।

26 अक्टूबर 64 सोमवार—श्री गोपीचन्दजी (चोपड़ा) व श्री चनणमलजी मेहता पधारे। रात झापड़े मे साय चार बहिने साथ थीं। भवर रात को खादी मदिर की जीप लेकर आया।

वर्ष 1973

25 जनवरी 73, गुरुवार—शाम का अकाल सहायता की मीटिग मे गा सेवा सघ बीकानर के दफ्तर म हुई, फिर जूती बदल गई।

10 फरवरी 73, शनिवार—गो सवा सघ गया। साय गीता रामायण पाठशाला मे मीटिग थी। जिलाधीश आये।

24 फरवरी 73, शनिवार—तलाइ की रेत निकालनी शुरू की। 1 कड़ाही पर 2 कौड़ी 100 कड़ाही पर 1 रुपया तय किया।

15 मार्च 73—कोलायत गया, शाम का वापस आया। पचायत समिति की बैठक म गोशाला का चलाना तय हुआ, नाजिम सरकार की तरफ से चलायेगा।

वर्ष 1975

5 जनवरी '75, रविवार—श्री भोगीलाल पान्ड, श्री गोकुलभाई श्री माहेश्वरीजी 4 बजे की ट्रेन से आये। अध्यक्ष श्री सोहनलालजी मोदी को एक राय से बनाया।

6 जनवरी '73, सामवार—सुबह इन्दूजी से मिला 12 बजे की बस स गाव आया श्री बद्रीनारायणजी सोढ़ाणी जैसलमेर जाते गाव से गुजर।

8 जनवरी '75, बुधवार—सुबह झड़ सा था, धूप हुई और स्कूल के लिए 30 थैला सिमेन्ट का भवर कालायत से परमिट लाया।

30 जनवरी '75, गुरुवार—गाधी निर्वाण दिवस 11 बजे 2 मिनट की मौन श्रद्धाजली हुई रसोई मे भी सब कार्य स्थगित रखे।

3 अप्रेल 75 गुरुवार—गीता प्रेस का 1 बोरी जौ 2 बोरी आलू आये भाणा के गाव मे बाटने का है।

12 अप्रेल 75 रविवार—9 15 की बस से बीकानेर जाकर शाम का छत्रगढ़ गया। श्री सिद्धराजजी ढड्ढा शिविर म आय।

13 अप्रल '75 रविवार—श्री ढड्ढाजी के साथ शाम को बीकानेर आया रात को गगाशहर सोया।

25 अप्रेल '75 शुक्रवार—बगड़िया ट्रस्ट से पाच हजार रुपये गो सेवा सघ के लिये आय।

वर्ष 1977

जनवरी 77 स्मरण पृष्ठ—इस माह की विशेष घटना—म ससद का भग करना और बदियो की रिहाई। तथा चुनाव की घोषणा।

फरवरी 77, स्मरण पृष्ठ—इस माह की खास घटना मे—श्री राष्ट्रपति फखरुद्दीन अहमद के अचानक 11 2 77 को देहावसान तथा चुनाव दौर म श्री जयप्रकाश नारायण का अस्वस्थ हो जाना।

12 मार्च 77, शनिवार—श्री ढेबरभाई के देहावसान की खबर सुबह क रेडियो प्रसारण मे सुनी।

19 मार्च 77 शनिवार—सुबह 8 बजे लोकसभा क चुनाव म वोट पड़न शुरू हुए मैंन अपना वोट जनता पार्टी चुनाव चिह्न हलधर म दिया। दिन भर शाति म चुनाव होता रहा लागो ने अपने मत का प्रयोग धीमे मन म ही किया।

20 मार्च 77, रविवार—प्रातः 9 बजे के रेडियो प्रसारण में सम्पूर्ण में पहला नाम इन्दिराजी के बजाय बाबू जगजीवनरामजी का आया है फिर श्री मोरारजीभाई का। इसलिये यह मान लेना चाहिये कि भारत के प्रधानमंत्री बाबू जगजीवनरामजी ही होंगे। 7 10 बजे।

रात को चुनाव परिणाम आने लगे दक्षिण भारत में कांग्रेस को उत्तर पश्चिम भारत में जनतापार्टी को समर्थन मिल रहा है।

21 मार्च '77 सोमवार—रात 3 बजे के प्रसारण में रायबरेली का परिणाम आया। श्री इन्दिराजी प्राय 50 हजार मतों से पराजित घोषित की गई। अमेठी से 70 हजार मतों से श्री संजय गांधी पराजित हुआ। कुछ घंटों बाद भारत में लगी आंतरिक आपात स्थिति को कार्यवाहक राष्ट्रपति ने उठा लिया।

22 मार्च '77, मंगलवार—अखबारों पर लगी सेंसरशिप उठा ली गई। बंदियों को छोड़ दिया गया फिर प्रधान मंत्री ने अपना व मंत्रि मंडल के सदस्यों का इस्तीफा दे दिया जो मंजूर कर लिया।

23 मार्च '77 बुधवार—छठी संसद के गठन की अधिसूचना स्वामीनाथन ने प्रसारित की है।

30 अप्रैल 77, शनिवार—आज का दिन भारत के इतिहास में अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा। लोकनायक श्री जय प्रकाशजी के समक्ष सैकड़ों तस्करों ने अपना जीवन सुधारने का व्रत लिया।

विपक्ष शासित 9 विधान सभाओं में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। और चार पार्टियों का कानूनी दृष्टि से एकीकरण हुआ।

1 मई '77, रविवार—जनता पार्टी का अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर हुए। श्री मुरारजी भाई देसाई भारतीय गणराज्य के प्रधानमंत्री रहे। बाबूजी श्री जगजीवनराम ने अपनी प्रजातांत्रिक कांग्रेस का जनता पार्टी में विलय का निश्चय सुनाया विधिवत कार्रवाई 5 5 को करेंगे। यह सारी हकीकत भारत के लिए अच्छे शकुन हैं।

21 मई '77 शनिवार—श्री जयप्रकाश बाबू अमरीका से स्वदेश आये इलाज सफल रहा।

28 मई 77 शनिवार—जनता पार्टी की जीप में भंवरजी माली आदि आये श्री रामकिसनदासजी गुप्ता के प्रचार में।

30 मई 77, सोमवार—मैं और इन्दू 10 की बस से बीठड़ी के लिए गए 2 बजे पहुंचे तीन की गाड़ी से श्री रिषभराजजी करनावट कन्हैयालाल टांटिया भी पहुंच गए मीटिंग हुई रात को वहां सोये।

2 जून 77 गुरुवार—श्री उदाराम हठीला प्रचार में आये झंडा व कुछ सामान दे गये।

13 जून '77, सोमवार—चालायत क्षेत्र का नतीजा था। गंगाशहर का निर्दलीय उम्मीदवार झवरलालजी बोथरा सीट हथियाने के लिये अगरणा तक पहुंच गये शराब तक पहुचाई।

14 जून '77, मंगलवार—शाम तक चुनाव परिणाम आने शुरू हुए बीकानेर की गंगा सीट (विधानसभा) जनता पार्टी को मिली।

21 जून '77 मंगलवार—प्रान्तों के मुख्य मंत्रियों का तय हुआ।

3 जुलाई '77, रविवार—सर्वोदय सम्मेलन में शरीक होने पुष्पराज को साथ लेकर बीकानेर गया। बिश्नोई धर्मशाला में बैठक हो रही थी रात को गंगाशहर गया।

4 जुलाई '77, सोमवार—सुबह ट्रेन पर स्टेशन आया और साथ गंगाशहर में आये गोकुल भाई भट्ट, सिद्धराजजी ढढ्ढा आये।

5 जुलाई '77 मंगलवार—श्री राममूर्तिजी आये इनका आज भाषण हुआ।

6 जुलाई '77, बुधवार—बीकानेर पर उषा हो जाने से पार्क में पानी भर गया था जिससे कुछ असुविधा रही पर सम्मेलन मोटा मोटी अच्छी तरह संपन्न हो गया। श्री राममूर्तिजी को विदाई के लिए स्टेशन गया। रात को खादी मंदिर में सोया।

जुलाई '77, स्मरण पृष्ठ—दिनांक 4 से 6 तक बीकानेर में राजस्थान प्रांतीय (सर्वोदय) सम्मेलन हुआ। घर के सारे लोग सम्मेलन में गये।

14 अगस्त '77, रविवार—स्वतंत्रता दिवस की पूर्व सध्या पर राष्ट्रपति महोदय ने भारत की जनता के नाम संदेश में अपने त्याग का ब्यौरा भी दिया। वह अपना वेतन दस हजार माहवार की जगह तीन हजार ही लेंगे इस पर भी मामूली नागरिक जैसा इन्कम टैक्स कटायेंगे। सादे और छोटे घर में रहेंगे।

15 अगस्त '77 सोमवार—मैकड्री स्कूल में ध्वजारोहण सुबह 8 बजे हुआ। पुष्पा वेणी, इन्दू साथ थे। समारोह के बाद बुक बेंक धन इकट्ठा किया गया। रात को बच्चों ने नाटक खेला।

10 अगस्त '77, बुधवार—दिन को बीकानेर गया। धीरेन्द्रभाई से मिला। पुष्पा कमल साथ थे। मोदीजी और इन्दूजी से मिला। रात को बाठियाजी चम्पालालजी के वहां गया।

5 सितम्बर '77 सोमवार—लाडनू वालों को धुराल ले गया तथा जैन विश्व भारती के लिए नोलखा के घर सदस्य भराये। यह लोग 10 बजे वापस चल गये। 36 रुपये में किताबों का सेट दे गये। काका साहब के नाम से 501 रुपये रूपचन्द की सदस्यता फीस का दिया।

5 अक्टूबर '77 बुधवार—पहली बस से बीकानेर गया। सपूर्ण क्रांति शिविर में आनन्द निकेतन में शरीक हुआ। श्री नारायणभाई देसाई (महादेवभाई के पुत्र) मुख्य अतिथि थे। श्री बद्रीप्रसादजी स्वामी आये थे। रात को गंगाशहर सोया।

दिसम्बर '77 के स्मरण पृष्ठ—इस वर्ष की सबसे बड़ी उपलब्धि कांग्रेस के हाथ से सत्ता निकल कर जनता पार्टी के हाथ में आना है।

18 जनवरी 78 बुधवार—पचायत चुनाव वास्त मीटिग हुई गाव व चाखले के लोगा ने पूनमचन्द छलानी का सरपच क लिए निर्विराध चुन लिया। वार्ड पच का भी चुनाव निर्विराध हागा।

28 जनवरी '78 शनिवार—दापहर को गुटर महाराज (श्री कृष्ण गापालजी शर्मा, स्वतन्त्रता सनानी) के वहा मिलने का गया। नाहटाजी (श्री गोपीचन्दजी) वहा भी गया।

30 जनवरी 78, सामवार—कुष्ठ निवारण दिवस दहली म राजघाट पर आज से अखड ज्याति शुरू हुई।

6 फरवरी '78, सोमवार—वार्ड पच चुनने के लिए कुमारो की मीटिग धुराले म हुई। भामाराम जैसाराम को निर्विराध किया।

8 फरवरी 78, बुधवार—पचायत चुनाव क परच भरे गय। वार्ड न 1, न 2, न 5 चुनाव निर्विराध हा गया।

9 फरवरी 78, गुरुबार—वाटिग हुई 85% मतदान हुआ। रात को गणना पूरी होने पर यह सफल उम्मीदवार घोपित किय गये। (पूरी सूची दी हुई है)।

18 फरवरी 78 शनिवार—धुराले स गाव आय। पचायत की पहली बैठक म गया। वार्ड पचो का शपथ दिलाई गई। पचायत क्षेत्र के कई लोग इकट्ठे हुए थे।

23 फरवरी 78 गुरुवार—श्री मोदीजी उदारामजी रात को 8 बजे बाद आये खाना खाकर वापस गय। श्री जयप्रकाशजी के अमृत महात्सव के धन सग्रह की एक हजार की कूपने यहा ली।

3 मार्च 78 शुक्रवार—पचायत की बैठक मे गया। बध म मारी कराने का पुक्ता किया। लूणाराम ने अध्यक्षता की आर जेठीबाई को शपथ दिलाई।

18 मार्च 78 शनिवार—पचायत बैठक हुई। चोथे थारी के खत बावत आम दस्तखत लिये गय।

20 अप्रेल 78 गुरुवार—स्कूल मास्टरा का 24/4 को गोठ देने का तय किया। यह गोठ गणेश की तरफ से होगी।

26 अप्रेल 78 बुधवार—शिक्षको को भोज दिया।

6 अक्टूबर '78 शुक्रवार—सैकण्डरी स्कूल के उद्घाटन म आये लाग शाम तक वापस गये।

1 नवम्बर 78 बुधवार—दीपावली के राम राम हुए। मै अशक्तता के कारण गाव नहीं गया। लाग ढाणी म ही आये।

वर्ष 1981

3 जनवरी 81, शनिवार—श्री भवरलालजी कोठारी, मघारामजी आदि जैसलमेर जोधपुर जाते आय। खाना यहीं खाया। पशु पोषण आहार कन्द्र 9 फरवरी से यहा चलायग।

18 फरवरी 81 बुधवार—नारायण राम पशु पोषण केन्द्र का कागजात लाने बीकानेर गया।

12 मार्च 81, गुरुवार—श्री यज्ञदत्तजी उपाध्याय आये भूदान के काम मे प्रवास कर रहे है।

20 जुलाई 81, सोमवार—तूड़ी ट्रक आई 15 रुपये मन से बेचने का पत्र आया।

14 जुलाई 81, मंगलवार—नारायण को बीकानेर चूरी लाने भेजा। बाबूलालजी ट्रक लेकर 135 बोरी चूरी पहुचा गये। चूरी बाटनी शुरू की 65 बोरी गुजार मे 90 बोरी केन्द्र पर उतारी।

28 जुलाई 81 मंगलवार—भादरिया महाराज आये। 501 रुपये का साहित्य दे गये। 12 बजे वापस गये।

2 सितम्बर 81, बुधवार—श्री मोदीजी से फोन पर बात हुई। दुष्काल की स्थिति भयानक लगती है।

1 नवम्बर 81 रविवार—सारे जने धुराले गये। अमरजी घर पर रहे, गो सेवा संघ की तूड़ी 25 दिन से बिकती रही है।

19 नवम्बर 81, गुरुवार—श्री सोहनलालजी मोदी कल आये थे। तूड़ी का ट्रक भी आया 4560 रुपये का पेमेंट यहा किया।

13 दिसम्बर 81, रविवार—ग्राम पचायत के चुनाव के पर्चे भरे गये।

14 दिसम्बर '81, सोमवार—वोटिंग हुई 1580 वोट डाले गये। रात 8 बजे से गिनती होगी।

रिजल्ट सुरताराम की तरफ रहा।

15 दिसम्बर '81, मंगलवार—पचायत का सहवरण होकर गठन हुआ—

सरपच—श्री सुरताराम मडाल, उप सरपच—श्री रुशुदानजी दियातरा सहित 8 वार्डो के पचो की सूची दी गई है।

25 दिसम्बर '81, शुक्रवार—पचायत समिति कोलायत के प्रधानो के परचे भरे गये वापस लेने के बाद राव साहब कांग्रेस की तरफ से और उम्मेदसिहजी जनता पार्टी व अन्य पार्टियो की तरफ से खड़े रहे।

26 दिसम्बर '81, शनिवार—चुनाव मे जनता पार्टी विजय हुई। श्री उम्मेदसिहजी प्रधान बने।

वर्ष 1985

9 मार्च 85 शनिवार—राजस्थान सरकार मे कांग्रेस पार्टी का नेता श्री हरिदेव जोशी को चुना।

15 अगस्त स्वाधीनता दिवस गुरुवार—छनेरी वाले श्री सरसिहजी आये कोई 10 साल बाद मिले है।

कर दी गई। हत्यारे पकड़े लिये गये।

25 अगस्त 85 रविवार—प्रधानजी व मानीसिहजी आये। मोबर गैस दिखान लड़की को लाये।

11 सितम्बर 85 बुधवार—विनोबा जयन्ती को बाबा को सुमरन किया।

21 सितम्बर 85 शनिवार—शाम को श्री सुन्दरलालजी बहुगुणा सोहनलाल मोदी कई अन्य लोग घास देखने जैसलमेर जाते हुए आये।

वर्ष 1988

11 जनवरी 88 सोमवार—गो शाला की तार बंदी हो गई।

19 जनवरी 88 मंगलवार—टोडर ने कैंप के रजिस्टर भरा।

29 जनवरी 88 शुक्रवार—कैंप व डिपो में चारा आना कम हो जाने से सभागीय आयुक्त श्री राजेन्द्रपालसिहजी को लंबा तार किया। चारे के अभाव में गाय मर रही है। नाथूसर (नोखा) कैंप में भूख से कुछ गाय मरी देखकर आये लोगो ने बताया।

30 जनवरी 88 शनिवार—गांधी निर्वाण दिवस शहीद दिवस—भाई द्वारकाप्रसादजी को पत्र दिया। शहीदों में गोकुलभाई को याद किया।

कैम्प में गाय 1600 हो गई है। श्री राजेन्द्रपाल सिहजी को तार भेजा।

31 जनवरी 88 रविवार—गन्ना कम आने से रोजाना लाने जाना पड़ रहा है। कल्ला साहब को पत्र भेजा।

31 मार्च 88 गुरुवार—ज्यादा बीमार रहने से 2 माह की डायरी नहीं लिख सका।

28 अप्रेल 88 सोमवार—तेजपुर से भागवती झा असम के स्वाधीनता सेनानी केन्द्रीय मंत्री का पत्र आया। फूसराज तिनसुखिया से आया।

13 मई '90 रविवार—टोडर सामान लेकर आया। कल जिले के शिक्षा प्रसार अधिकारीगण का खाना है।

14 मई 90, सोमवार—शिक्षा अनुदेशकों का दोपहर का भोजन अच्छी तरह हो गया गर्मी तो खूब थी।

31 जुलाई 90, मंगलवार—गायो बैलो ऊंटो के चारे की व्यवस्था करने तहसीलदार, कोलायत को पत्र दिया।

4 अगस्त 90, शनिवार—दुष्काल बाबत कलेक्टर को पत्र दिया। श्री धर्मचन्दजी भसाली रूणेचे जाकर आये।